आफ़ताबे आलम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
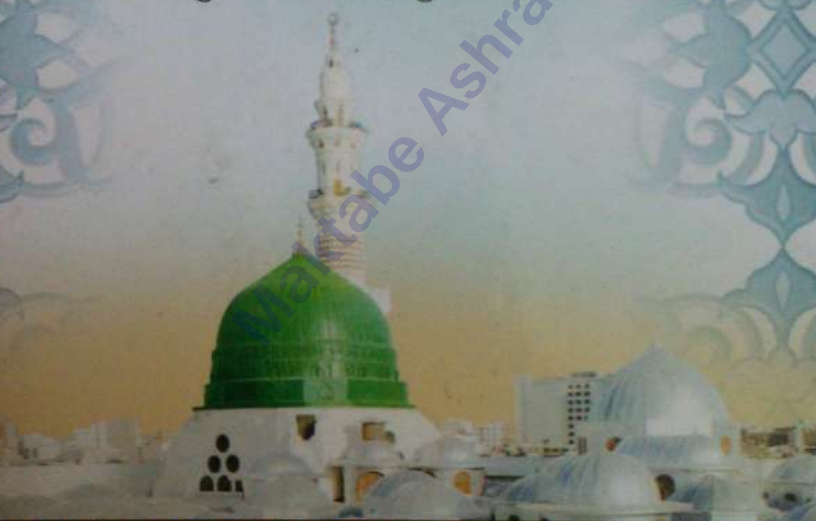
सादिक़ हुसैन सरधन्वी

हज़रत मुहम्मद सल्ल०
की ज़िंदगी के हालात

आफ़ताबे आलम

भाग : 1

लेखक
मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

आफ़ताबे आलम (भागः 1)

लेखक

मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Aaftab-e-Aalam (Vol. 1)

Author:

Maulana Muhammad Sadiq Hussain Sardhanvi Marhoom

Edition : **2015**

Pages: **86 + 126 + 130 + 140 = 482**

प्रकाशक

فرید بُکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

अनुक्रम

दूसरा हिस्सा

तीसरा हिस्सा

चौथा हिस्सा

अपनी बात

मौलाना सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम को कौन नहीं जानता ?

मौलाना क़लम के धनी और एक अच्छे मुसन्निफ़ हैं, इस में शक की गुंजाइश नहीं है। नावेल लिखने में उन का कोई जवाब नहीं। उन के नावेल तारीखी होते हैं, तारीख के मशहूर किरदार पर नावेल के अन्दाज़ में लिखना और पूरी शख्सियत को नुमायां कर देना यह उन का महबूब काम है।

इस लिहाज़ से देखा जाए तो 'आफ़ताबे आलम' उन में सब से बेहतर किताब है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्ल० की मुबारक ज़िन्दगी को नावेल के अन्दाज़ में लिखना उन्हीं का काम है। नावेल के अन्दाज़ में सीरत पर लिखी गई यह किताब एक अछूती किताब है, जिस की मिसाल सीरत की किताबों में नहीं मिलती। नावेल के अन्दाज़ में लिख कर मौलाना ने इसे दिलचस्प भी बना दिया है और सब के लिए पढ़ने के लायक़ भी। एक बार अगर इसे कोई पढ़ना शुरू करे, तो पढ़ता ही चला जाए और जब तक ख़त्म न कर ले, रुकने का नाम न ले।

वैसे हुज़ूर सल्ल० की सीरत के हर पहलू पर मौलाना ने बहस की है, इस पहलू से यह एक मुकम्मल किताब भी है। इस्लाम से पहले की ज़िन्दगी कितनी भयानक थी, इस का नक़्शा बड़े अछूते अन्दाज़ में पेश किया गया है।

फिर इस्लाम की किरणें फूटती हैं। रोशनी और अंधेरे की कशमकश शुरू होती है। कुफ़्फ़ारे मक्का ने ज़ुल्म व सितम की आंधी चला दी है। एक-एक मुसलमान का जीना दूभर कर दिया गया है। तरह-तरह की साज़िशें हो रही हैं, क़त्ल की धमकियां दी जा रही हैं, इल्ज़ामात लगाये जा रहे हैं।

तंग आकर मुसलमानों को हब्शा की ओर हिजरत करने की इजाज़त दी जाती है, लेकिन वहां भी कुफ़्फ़ार पीछा नहीं छोड़ते, परेशानी और बढ़ती है तो मदीना की ओर चले जाने की इजाज़त मुसलमानों को मिल जाती है। हुज़ूर सल्ल० के क़त्ल की साज़िश होती है, आप अल्लाह के हुक्म से हिजरत कर जाते हैं।

मदीने में इस्लामी रियासत क़ायम होती है, लड़ाइयां होती हैं। अलग-अलग भी और क़बीले के क़बीले मुसलमान हो जाते हैं, इस तरह तेईस साल बीतते-बीतते पूरे अरब में इस्लाम फैल जाता है। ये तमाम बातें नावेल के पन्नों में बिखरी पड़ी हैं।

पूरा नावेल हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ व किरदार का आदर्श भी पेश करता चलता है। हमदर्दी, मुहब्बत, इख़्लास, ख़िदमत वग़ैरह ख़ूबियों से भरे वाक़िआत जगह-जगह मिलते हैं, जो पढ़ने वाले के मन में इन की अहमियत बिठा देते हैं और उन्हें इस पर तैयार करते हैं कि तुम अगर अल्लाह के रसूल सल्ल० से मुहब्बत करते हो, तो तुम भी अपनी ज़िंदगी में इन ख़ूबियों को अपनाओ।

ज़ुबान प्यारी, साफ़-सुथरी और दिल को मोह लेने वाली है।

ये हैं इस नावेल की ख़ूबियां। नावेल उर्दू में होने की वजह से अब तक हिन्दी जानने वाले इस के पढ़ने से महरूम थे। उन की महरूमी दूर करने के लिए हम इस का तर्जुमा हिन्दी में पेश कर रहे हैं। उम्मीद है हिन्दी जानने वाले भी इस से फ़ायदा उठा सकेंगे।

मोहम्मद अली

अजीब रोशनी

रात गुज़र चुकी थी। सितारे झिलमिला कर आसमान में डूब रहे थे। उजाला फैलने लगा था। दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा चमक उठा था, पत्ता-पत्ता तरो ताज़ा हो गया था। दूर तक फैले हुए रेगिस्तान की ओस से भीगी हुई सफ़ेद रेत बड़ी प्यारी लग रही थी। लगता था रात का समुद्र लहरें ले रहा है।

रेगिस्तान होने की वजह से अरब में ज़्यादा गर्मी भी पड़ती है। ज़हरीली हवा वहां चलती है, जो इंसानों को देखते-देखते ज़हर में घोल कर मार डालती है। सारे देश में रेत के इतने बड़े-बड़े टीले हैं कि मीलों हरियाली नहीं दिखायी देती। एक भी नदी नहीं। रेत के टीलों की भूल-भुलैयां मुसाफ़िरों को अपने दामन में ऐसा छिपा लेती है कि फिर उनका पता ही नहीं चलता। अगर अर्से के बाद पता भी चलता है, तो उनकी हड्डियों का, जो रेत के नीचे दबी हुई उस वक़्त सामने आती हैं, जब तेज़ हवा रेत को एक जगह से उठा कर दूसरी जगह फेंक देती है, यही वजह है कि दुनिया की सैर करने वालों को अरब के अन्दरूनी हिस्से में जाने की इजाज़त नहीं होती। लेकिन यही रेगिस्तान जो दिन में दोज़ख का नमूना होता है, रात को अच्छा मालूम होने लगता है और सुबह के वक़्त उसकी रौनक़ और बढ़ जाती है।

हमारे नावेल की शुरूआत सन् ६११ ई० से होती है। उस वक़्त पूरा हिजाज़ और सारे अरब में बुतों और सितारों की पूजा की जाती थी। तमाम अरब का हर क़बीला, क़बीले का हर आदमी बुतों और सितारों का पुजारी था, लेकिन यह अजीब बात है कि वे बुतों और सितारों को पूजते हुये भी हश्र और नश्र और बदले के दिन के क़ायल थे। मुर्दों को दफ़्न करते थे। क़ब्रों में ऊंटों को इसलिए ज़िब्ह करते थे कि उन का अक़ीदा था कि वे हश्र के दिन इस ऊंट पर सवार हो कर चले जाएंगे। वे तौहीद के क़ायल थे, ख़ुदा को कायनात का पैदा करने वाला मानते थे, बुतों को अल्लाह के दरबार में शफ़ाअत करने वाला समझ कर उनको पूजा करते थे।

सुबह हो चुकी थी, ठंडी हवा चल रही थी। मुस्कराता हुआ आसमान ऐसा रोशन हो गया था, जैसे हसीना मुस्कराने लगे और मुस्कराने से उसके चांद से चेहरे पर हुस्न को लहरें दौड़ कर उसके चेहरे को इतना रोशन कर

दें कि वह हुस्न का खजाना बन जाए।

उस वक़्त मक्का के एक कोने से बहुत ही हल्की सुरीली आवाज़ पैदा हुई जो धीरे-धीरे बढ़ने लगी और बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ी कि मक्का शहर की गली-गली, कूचे-कूचे, घर-घर में इसकी आवाज़ सुनी गयी।

आज अरबों की ईद थी। वे बहुत सवेरे जाग चुके थे और आवाज़ को सुन-सुनकर मर्द और बच्चे बैतुल हराम के तरफ़ दौड़ने लगे। मक्के की गली-कूचों में हलचल शुरू हो गयी और लोगों के गिरोह के गिरोह तेज़ी से लपकते नज़र आने लगे।

सुरीली आवाज़ अभी तक बुलन्द हो रही थी। बड़ी लुभावनी आवाज़ थी। ऐसा लग रहा था, जैसे कोई सुरीला बाजा बज रहा है। लोग शहर के चारों ओर से तेज़ी के साथ बैतुल हराम की ओर दौड़ रहे थे, वे चमचमाते कपड़े पहने हुए थे और पीले पटके बांधे हुए थे। वे अरबी लिबास में थे।

बैतुल हराम यानी खाना काबा बीच शहर में वाक़ेअ था। यहां वह हरम शरीफ़ है, जिस की बुनियाद हज़रत इब्राहिम अलै० ने रखी थी। मुद्दतों तक यह एक खुदा के मानने वालों की पनाहगाह थी, अब बुत-परस्तों के क़ब्ज़े में था।

अरब बड़ी तेज़ी से दौड़-दौड़ कर आ रहे थे। खाना काबा के चारों तरफ़ खड़े होते जा रहे थे।

खाना काबा की इमारत पत्थर और चूने से बनायी गयी थी, बड़ी मज़बूत और शानदार इमारत, चारों तरफ़ ऊंचे-ऊंचे शानदार दरवाज़े थे।

खाना काबा के नीचे एक कुंआ था। कुंए की मन पत्थर की और मन कुछ छोटा था। यही कुंआ दुनिया में ज़मज़म के नाम से मशहूर है। कुंए की मन के क़रीब-क़रीब इधर-उधर बड़े-बड़े दो बुत थे। इनमें से एक बुत किसी खूबसूरत औरत की मूर्ति थी, ऐसा लगता था, जैसे कोई परी खड़ी मुस्करा रही हो। उस बुत का नाम नाइला था।

दूसरा बुत एक भारी भरकम इंसान की शक्ल का था। ऐसा लगता था जैसे कोई पहलवान अपने मुक़ाबले के आदमी को चित करके खुश हो रहा हो। उस बुत का नाम असाफ़ था। तमाम अरब इन हर दो बुतों का एहतराम करते रहे और इनके सामने आते ही सज्दे में गिर जाते रहे।

बाजा अभी तक सुरीली आवाज़ से बज रहा था, ऐसा लगता था, जैसे हरम शरीफ़ के अन्दर बज रहा हो। खाना काबा के तमाम दरवाज़े अब तक बन्द थे। वजह यह थी कि अरब में आम तौर से और मक्के में खास तौर से क़ुरैश का क़बीला ही सरदार माना जाता था। क़बीला क़ुरैश के

सरदार जनाब अब्दुल मुत्तलिब थे। उनका इंतिक़ाल हो चुका था। अब्दुल मुत्तलिब के दस बेटों में से सिर्फ़ हमजा, अबू तालिब, अबू लहब और अब्बास जिंदा थे, बाक़ी मर चुके थे। क़बीला क़ुरैश ने अबूतालिब को अपना सरदार मान लिया था। उनका इतना रौब था कि किसी को उनके सामने बोलने की हिम्मत न होती थी। बैतुल हरम की कुंजी उन्हीं के पास रहती थी, जब तक वह दरवाजा न खोलते, कोई आदमी बैतुलहराम में दाखिल न हो सकता था।

जब अरब के तमाम क़बीले आ चुके, तो अबूतालिब अपने भाइयों के साथ आये। अबू तालिब ने आते ही दरवाजा खोला, पहले खुद अन्दर गये, फिर भाई और क़बीले के दूसरे लोग अन्दर गये। फिर हरमे पाक के तमाम दरवाजे खोल दिये गए और अरब के तमाम क़बीले झुंड के झुंड अन्दर दाखिल हो गये।

बैतुल हराम की इमारत अन्दर से भी बहुत शानदार थी। उसके ठीक बीच में बैतुल्लाह था और बैतुल्लाह के चारों ओर काले परदे लटक रहे थे। ऊपर छत पर एक बहुत बड़ा बुत रखा हुआ था, बड़ी डरावनी शक्ल का, काले पत्थर का बना हुआ। इसका नाम हुबल था, जिसकी पूजा हर एक के लिये जरूरी थी।

बैतुल हराम में इतनी भीड़ हो गयी कि तिल धरने की जगह न रही। हर क़बीला अपने-अपने चहेते बुतों की ओर दौड़ा। वहां बुत भी सैकड़ों थे। अलग-अलग जगहों पर वे रखे हुए थे। अजीब-अजीब शक्लों के थे काले, लाल, सफ़ेद।

बाजा अभी तक बज रहा था। अब घंटे, शंख और झांझ भी बजने लगे थे। हर बुत पत्थर के चबूतरे पर गड़ा था और हर बुत के सामने उसका पुजारी बैठा था। तमाम बुतों के सामने बहुत से लोग सज्दों में पड़े हुए थे। अबूतालिब, अबू लहब, हमजा और अब्बास खाना काबा की छत पर चढ़कर हुबल के सामने जा पड़े थे। बुतपरस्ती का ऐसा मंजर शायद ही किसी की नजर से गुजरा हो।

अभी ये लोग सज्दे ही में पड़े हुए थे कि तेज हवा के झोंके चलने लगे। हवाएं रेत के जर्रों को उठा-उठा कर उड़ाने लगीं।

अब सूरज निकल कर कुछ ऊंचाई पर जा चुका था। धूप हर चारों तरफ़ फैल गयी थी। पर आज धूप में वह तेजी, वह चमक और वह गर्मी न थी, जो हर दिन होती थी, बल्कि रोज से भी ज्यादा धूप फीकी-फीकी सी लग रही थी।

लोगों ने सज्दे से सिर उठाया और ख़ामोश हाथ बांधे खड़े हो गये। अभी ये लोग खड़े ही हुए थे कि हवा में और तेज़ी आ गयी। सभी ने घबरा कर आसमान की तरफ़ देखा। आसमान लाल अंगारा हो रहा था जैसे उसमें आग लग गयी हो और आग के शोलों ने उसे लाल बना दिया हो। लोग हैरत और डर से आसमान को देखने लगे। देखते ही आसमान का रंग लाल स्याही में बदलने लगा, बिल्कुल उस तरह जिस तरह आग के बाद धुएं के ग़ोल के ग़ोल माहौल को अंधेरा बना देते हैं।

इस मंज़र को देखकर अरबों के हवास जाते रहे। वे एक बार फिर अपने बुतों के सामने सज्दे में गिर गये। सभी घबराये हुए थे, डरे और सहमे हुए थे।

पुजारियों ने थोड़ी बुलन्द आवाज़ से कहा, रोओ, गिड़गिड़ाओ, बुतों के पुजारियों! ख़ूब रोओ, बुतों से इस बला को दूर करने के लिए दुआ मांगो।

रोने की एक आम आवाज़ बुलन्द हुई। लोग चीखने और चिल्लाने लगे। रो-रोकर बुतों से इस बला से बचे रहने की इल्तिजाएं करने लगे।

हवा इतनी तेज़ हो गयी थी कि खड़े हुए झटका खाकर गिरने लगे थे। सूरज जैसे छिप गया था, दिन रात में बदल चुका था। कोई चीज़ नज़र न आती थी। हवा के तेज़ झोंके रेत के ढेर ला-ला कर उलट देते थे। अबू-तालिब और उनके भाई, जो ख़ाना काबा की छत पर थे, चबूतरे के नीचे पड़े हुए थे। अबू लहब न जाने कैसे उन से अलग हो गया! हवा ने उसे उठाया और छत से नीचे गिरा दिया। उसने ख़ौफ़नाक चीख़ मारी, पर उसकी आवाज़ चीख़ों की आवाज़ में गुम होकर रह गयी।

मक्के पर क़हरे इलाही नाज़िल हो रहा था। बच्चे और बूढ़े सब के सब चीख और चिल्ला रहे थे। रो-रो कर अपने माबूदों से इल्तिजाएं कर रहे थे, पर उनके माबूद पत्थर के थे, वे कुछ सुनते ही न थे। लोगों की घबराहट बढ़ रही थी, उनके दिल कांप रहे थे, यहां तक कि वे चीख-चीख कर रोने लगे।

ख़ुदा को उनकी आवाज़ पर रहम आया। तेज़ हवा के झोंके कम होने लगे। अंधेरा छटने लगा, उजाला बढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में हवा थम गयी। गर्द और धूल छट गयी। सूरज चमकने लगा। अरबों की जान में जान आयी। वे उठ खड़े हुए।

अभी ये लोग खड़े हुए थे कि पश्चिम की ओर से एक अजीब क़िस्म की रोशनी और चमक देखी। लोगों की हैरानी बढ़ गयी। इससे पहले

उन्होंने ऐसी रोशनी न देखी थी और न ऐसी चमक।

अभी वे हैरान ही हो रहे थे कि एक बूढ़े ने बुलन्द आवाज़ से कहा—

'ऐ शरीफ़ अरबो ! तुमने इस रोशनी और चमक को देखा। आओ, मैं तुम्हें बताऊं कि क्या बात है ?'

सब लोग उस तरफ़ दौड़ पड़े।

बूढ़ा एक ऊंचे चबूतरे पर बैठ कर कहने लगा, सब ख़ामोश हो जाओ, ऐसे ख़ामोश कि मेरी कमज़ोर आवाज़ तुम में से हर आदमी सुन सके।

ख़ामोशी के साथ खड़े सब उस बूढ़े को तकने लगे।

इस बीच अबू तालिब और उनके भाई भी ख़ाना काबा की छत से उतर कर बूढ़े के क़रीब आ खड़े हुए।

उस वक़्त बैतुल हराम में मरघट जैसी ख़ामोशी छायी हुई थी। हर आदमी चुप-चाप खड़ा बूढ़े को देख रहा था।

अबू लहब जो ख़ाना काबा की छत से नीचे लुढ़क गया था, उसके पांवों पर चोट आ गयी थी, वह भी लंगड़ाता हुआ चल कर अबू तालिब के पास आ खड़ा हुआ और बूढ़े को ग़ौर भरी नज़रों से देखने लगा।

काहिन अबरश

बूढ़ा आदमी अजीब शक्ल व सूरत का इंसान था। उसका चेहरा लम्बोतरा, गाल पिचके हुये, हड्डियां उभरी हुई, माथा तंग, आंखें छोटी, अन्दर को धंसी हुई थीं। सिर के बाल सफ़ेद और लम्बे थे, जो औरतों की लटों की तरह खजूर के रेशों से बंधे दोनों ओर सीने पर पड़े थे। दाढ़ी नाफ़ तक लम्बी थी, मोछें दाढ़ी से मिल गयी थीं, लबों इतनी बढ़ी हुई थीं कि मुंह को ढक कर दाढ़ी से जा मिली थीं। इस शक्ल व सूरत को देखते हुए बूढ़ा किसी बन मानुष से कम नहीं लगता था।

उसके बायें हाथ में इंसानी खोपड़ी थी और दाएं हाथ में किसी इंसान के हाथ की हड्डी थी। गले में हड्डियों की माला थी। पहनावा भी अजीब था। एक लंबा जुब्बा था, जिसका नीचे का हिस्सा ऊंट के ऊन का था। सिर से कम्बल लपेटे हुए था। उसकी छोटी-छोटी आंखें भीतर को धंसी हुई, आंखें चिंगारियों की तरह चमक रही थीं।

उस बूढ़े का नाम अबरश था।

बूढ़ा काहिन[1] भी था और आराफ़[2] भी। तमाम अरब उसे जानता था। उसे लोग पहुंचा हुआ इंसान समझते थे। उसकी बातों पर यक़ीन रखते थे।

अबरश ने चमकती आंखों से चारों ओर देखा। हर ओर इंसान ही इंसान नजर आ रहे थे। सब खामोश खड़े थे, उसकी ओर नजरें गड़ी थीं।

अबरश ने तेज़ आवाज में कहा, ऐ लात व हुबल के पूजने वालो! शायद तुम को याद होगा कि आज से पूरे चालीस साल पहले इसी तरह की रोशनी और इसी तरह की चमक एक बार पहले भी देखी जा चुकी है। जिस तरह आज हम-तुम सब हैरान हैं, वैसे ही उस दिन भी हुए थे। मुझ से उस दिन पूछा गया था कि यह चमक और रोशनी कैसी है? उस दिन मैं चुप हो गया था, इसलिए कि मेरे इल्म ने जो बात उस दिन बतायी थी, वह मैं बयान नहीं कर सकता था और आज मैं बिना पूछे खुद ही बयान करता हूं।

लोग बड़े ध्यान से उस की बातें सुनने और विचार करने लगे।

अबरश ने कहा, देखो, मेरे हाथ में यह इंसान की खोपड़ी है और यह हाथ की हड्डी है। मैं ने इन्हें उस मैदान में पाया था, जहां बनू बक्र और और बनू तग़लब जैसे ज़बरदस्त क़बीलों की लड़ाई पूरे चालीस साल तक जारी रही। मुम्किन है कि दुनिया इस लड़ाई को जहालत का करिश्मा बताये, लेकिन अरब जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि यह जिहालत की लड़ाई न थी, बल्कि खुददारी और इज्जत और नामूस की हिफ़ाज़त के लिए लड़ी गयी लड़ाई थी। यह सही है कि हमारे क़बीलों में एका नहीं है, वे बिखरे हुए हैं। हर गांव, क़स्बे और शहर का हाकिम अलग है, मगर हमारा एका भी मुनासिब नहीं है। जब हम एक हो जाएंगे, तो हमें एक दूसरे से दबना पड़ेगा, इस से हमारी खुद-दारी को धक्का लगेगा और यह बात हमारी रिवायतों के खिलाफ़ है।

अबरश तक़रीर कर रहा था और लोग बड़े ग़ौर से सुन रहे थे। उस ने आगे कहा, ऐ अरब के सपूतो! इस खोपड़ी की ओर देखो। इस खोपड़ी ने मुझे आगे की बातें बता दी हैं। दुनिया करवट लेने वाली है, एक बड़ा इन्क़िलाब होने वाला है। हमारे माबूदों को रुसवा किया जाने वाला है। ग़ैरतमंद अरबो! क्या तुम अपने खुदाओं की जिल्लत पसन्द करोगे?

---

१. पीछे की बातें बताने वाले को काहिन कहते है।

२. आगे की बातें बताने वाले को आराफ़ कहते हैं।

हर ओर से आवाजें आयीं, कभी नहीं, हरगिज नहीं ! जिंदगी की आखिरी सांसों तक नहीं।

अबू लहब के पैर में चोट आ गयी थी, तक्लीफ़ थी। वह अच्छी तरह खड़ा न हो सकता था। हम्ज़ा के कंधे पर हाथ रखे खड़ा था। उस ने चिल्ला कर कहा, हम अपने माबूदों को जलील करने वालों के सिर तोड़ देंगे, मर जाएंगे, पर अपने ख़ुदाओं की जिल्लत गवारा न करेंगे।

अबरश ने कहा, यही होना चाहिए। जिन माबूदों को हम और हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं, क्या हम ऐसे ही बेहिस, ऐसे ज़लील कमीने हो जाएंगे कि उन की जिल्लत गवारा कर लेंगे। लात व उज्ज़ा की क़सम ! हर गिज नहीं ! सच्चे माबूदों के पुजारियो। सुनो आज से चालीस वर्ष पहले रात को ऐसी चमक और रोशनी देखी गयी थी, जैसी आज देखी है। वह रात बड़ी डरावनी थी। उस रात को हमारा माबूद हुबल मुंह के बल गिर पड़ा था, जब हम सब ने उठा कर उसे क़ायम किया, तो वह खड़ा न रह सका और फिर गिर पड़ा। हम ने फिर उसे खड़ा किया, लेकिन वह फिर भी न खड़ा हुआ और तीसरी बार भी गिर पड़ा। ये सब बातें आप सब लोगों को अच्छी तरह याद होंगी।

अबू लहब ने कहा, अच्छी तरह याद है। तमाम हिजाज़ और सारे अरब पर उस दिन हैबत छा गयी थी। उस रात को आसमान पर बहुत ज्यादा ग़ैर-मामूली तौर पर सितारे टूटते हुए देखे गये थे। आसमान में अजीब क़िस्म की रोशनी और चमक भी देखी गयी थी। उस रात को सुबह सवेरे हमारा सब से बड़ा ख़ुदा ख़ुद मुंह के बल गिर पड़ा था। जब हम ने उसे उठा कर खड़ा किया, तो वह कांप कर फिर गिर पड़ा। एक दो बार नहीं, पूरे तीन बार गिरा था।

अबरश ने कहा, मेरा मक़सद उस वाक़िए को याद दिलाना था। सुनो, उस रात को सुबह सवेरे वह हस्ती वजूद में आयी, जिससे हमारे माबूद ज़लील व रुसवा होंगे। आज उस की उम्र पूरे चालीस साल हो गयी है। इस खोपड़ी ने मुझे यह बताया है कि अब तक वह इंसान गुमनाम था, अब वह ज़ाहिर होगा, बुतों के ख़िलाफ़ तक़रीरें करेगा, बुतपरस्ती से मना करेगा, ख़ुदापरस्ती की तलीम देगा। आओ, रोओ, ख़ूब दिल खोल कर रोओ। हमारे माबूद भी हम से रूठ जाएंगे, दुनिया अनदेखे ख़ुदा के सामने झुक जाएगी, कैसा होगा वह ज़माना !

अबरश की आंखें भीग गयीं। मज्मे में से अक्सर लोग रोने लगे। अबू जहल ने कहा, मुक़द्दस हुबल की क़सम ! मैं हर उस आदमी को क़त्ल

कर डालूंगा, जो अनदेखे ख़ुदा को सज्दा करेगा।

अबरश ने कहा, काश! तुम ऐसा कर सकते। पर यह खोपड़ी कहती है कि ऐसा न कर सकोगे। देखोगे अपनी आंखों से अपने माबूद की ज़िल्लत!

हम्ज़ा ने पूछा, है उपाय उस से बचने का?

अबरश ने कहा, है क्यों नहीं? पहले तो आपस के झगड़े बन्द करो, तमाम क़बीले एक हो जाओ, और वायदा करो कि ख़ुदा को मानने वाले की ज़ोरदार मुख़ालफ़त करोगे, चाहे वह कोई भी हो, किसी क़बीले का हो, उस को सताने में कोताही न करोगे और कोशिश कर के उसे क़त्ल कर डालोगे।

अरब में यों तो बहुत से क़बीले थे, लेकिन उन में से कुछ ही थे, जिन का ज़्यादा एहतराम किया जाता था। इन में भी बनी हाशिम की सब से ज़्यादा इज़्ज़त होती थी। चूंकि ख़ाना काबा का एहतिराम तमाम क़बीले करते थे। हर क़बीले का माबूद बैतुल हराम में था। काबा मक्का में था। मक्का में बनी हाशिम की हुकूमत थी, इस लिए भी यह क़बीला और क़बीलों से मुम्ताज़ माना जाता था। अब्रश को यह ख़्याल हुआ था कि उन के माबूदों को ज़लील करने वाला अगर बनी हाशिम में से हुआ तो बनी हाशिम के दबदबे और रौब की वजह से कोई इस तरफ़ देख न सकेगा, इस लिए उस ने यह चाल चली कि बैतुल हराम में सब से इक़रार लेना चाहा। अरबों की एक ख़ास बात यह भी थी कि जो अह्द व इक़रार वे कर लेते थे, उस से पीछे न हटते थे, चाहे उस में कितना ही माली और जानी नुक़्सान क्यों न हो।

तमाम अरबों ने झुक-झुक कर अपने माबूदों का नाम ले कर अह्द व इक़रार किया कि वे अपने माबूदों को बुरा कहने वालों को क़त्ल किये बिना न छोड़ेंगे, चाहे उन का ताल्लुक़ किसी क़बीले से हो।

सब के बाद में अबू लहब ने कहा, काहिन! तुम शायद क़बीला बनी हाशिम की ओर इशारा कर रहे हो। मैं वायदा करता हूं कि अगर ऐसा हमारे क़बीले में होगा, तो सब से पहले मेरी तलवार उस के सर पर चमकेगी।

फिर अब्रश ने बताया, मेरा ख़्याल नहीं, बल्कि मुझे खोपड़ी बता रही है कि माबूदों को बातिल क़रार देने वाला बनी हाशिम में से होगा। देखो सब देखो, उस का नाम भी खोपड़ी में लिखा हुआ है। अब्-रश ने खोपड़ी मज्मे के चारों तरफ़ घुमायी। सब ने देखा, खोपड़ी पर

साफ़ लिखा हुआ था, 'मुहम्मद'। सब इस नाम को देख कर हैरान रह गये।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अब्दुल्लाह के बेटे, अब्दुल मुत्तलिब के पोते अबू लहब, हम्ज़ा, अब्बास और अबू तालिब के भतीजे थे। आप २२ अप्रैल ५७१ ई०, तद० ६ रबीउल अव्वल सन् आमुलफ़ील, सोमवार के दिन, सूरज निकलने से पहले बहुत सुबह-सवेरे पैदा हुए थे। आप की उम्र ४० वर्ष थी। लोग जानते थे और अच्छी तरह जानते थे कि आप से ज़्यादा सच्चा और अमानतदार कोई नहीं। बहुत कम बोलते, तंहाई पसन्द करते, कभी-कभी पहाड़ों पर चले जाते, कई-कई दिन वहां रहते, लेकिन अभी तक उन की ओर से कोई ऐसी बात न हुई थी, जिस से यह गुमान किया जा सकता कि वह बुतों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाले हैं। आप के वालिद का इंतिक़ाल आप की पैदाइश से पहले ही हो चुका था। जब आप छः साल के हुए, आप की वालिदा का इंतिक़ाल हो गया। इस तरह आप बचपन ही में बाप और मां के साए से महरूम हो गये।

मां-बाप की वफ़ात के बाद आप दादा की निगरानी में रहे। जब आठ वर्ष दो माह दस दिन के हुए, तो आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब भी इस दुनिया से सुधार गये।

अब आप के चचा अबू तालिब आप के वली हुए। आप उन के पास रह कर चालीस साल की उम्र को पहुंचे। यों तो पूरा अरब आप के अच्छे अख़्लाक़ और बर्ताव की वजह से आप को मानता था, लेकिन सब से ज़्यादा अबू तालिब आप को मानते थे।

अबू तालिब ने कहा, अबरश! क्या तुम प्यारे भतीजे पर इल्ज़ाम लगा कर कोई फ़िला खड़ा करना चाहते हो? हरगिज़ ऐसा न करो, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

अबरश ने कहा, हुज़ूर! मैं मुक़द्दस हुबल की क़सम खा कर कहता हूं कि मैं अपनी ओर से न कुछ कह रहा हूं, न कर रहा हूं। मेरा इल्म इस खोपड़ी के ज़रिए से, जो मुझे बता रहा है, वही कह रहा हूं।

अबू तालिब ने जोश में आकर कहा, तुम झूठे हो, तुम को हमारे ख़ानदान से कोई दुश्मनी है। इस दुश्मनी को ग़ैबदानी के परदे में निकाल रहे हो।

अबरश ने नर्मी के साथ कहा, ऐ मक्का के सरदार! मेरी यह हिम्मत नहीं है कि हुज़ूर के ख़ानदान पर कोई इल्ज़ाम लगाऊं। हुज़ूर के ख़ानदान का पला हुआ हूं, नमक खा रहा हूं। मेरे दिल व दिमाग़ में दुश्मनी

का ख्याल तक नहीं आ सकता। ज़रा सब्र कीजिए और देखिए, खोपड़ी क्या कहती है ?

अबू तालिब खामोश हो गये। अब रश ने खोपड़ी घुमानी शुरू की, इतनी घुमायी की वह गोल दायरा और फिर गोल दायरे से सिर्फ़ एक बिन्दी बनकर रह गयी। अब्रश ने कहा, देखिए, खोपड़ी एक बिन्दी बनकर रह गई है, पर देखिए और ध्यान से देखिए, यह बिन्दी खुदाओं को ज़लील करने वाले का नाम बन कर चमकेगी। सब ने बिन्दी को ध्यान से देखा, बिन्दी फैलने लगी, फैलते-फैलते नाम बनी और निहायत आब व ताब से चमकने लगी। सब ने देखा, ध्यान से देखा, हैरत से देखा, साफ़ और मोटे हर्फों में 'मुहम्मद' लिखा हुआ था।

अब्रश ने कहा, तुम ने देख लिया, अब सुनो, अगर तुम अपने माबूदों को खुश कर लो, तो जो फ़ित्ना पैदा होने वाला है, वह दब जाए।

अबू लहब ने पूछा, माबूदों को खुश करने का तरीक़ा कौन-सा है ?

अबरश ने कहा, यह खोपड़ी जवाब देगी।

खोपड़ी अभी तक घूम रही थी। अब नाम ग़ायब हो गया था और सिर्फ़ बिन्दी ही बाक़ी रह गयी थी। लोग इस बिन्दी को बड़े ध्यान से देख रहे थे, बिन्दी फिर फैलनी शुरू हुई और देखते-देखते लफ़्ज़ बन गयी। सब ने पढ़ा, चमकदार लफ़्ज़ों में लिखा था, 'क़ुर्बानी'।

सब डरे हुए और सहमे हुए थे।

अबरश ने कहा, तुम्हारे माबूद क़ुर्बानी चाहते हैं। क़ुर्बानी दे कर आने वाले फ़ित्ने से अपने को बचा लो। उमर अबरश के सामने खड़े थे। उन्हों ने कहा, किस चीज़ की क़ुर्बानी दें हम ? अबरश ने कहा, इस का जवाब भी खोपड़ी देगी।

लोगों की निगाहें फिर खोपड़ी की तरफ उठ गयीं। उन्हों ने देखा कि क़ुर्बानी का लफ़्ज़ सिमट कर फिर बिन्दी बन गया है।

खोपड़ी बराबर घूम रही थी और वह सिर्फ़ बिन्दी मालूम हो रही थी। बिन्दी फिर बढ़ने लगी और बढ़ कर दूर तक फैल गयी। लोग अब भी डरे और सहमे हुए थे। यकायक मोटे लफ़्ज़ों में लिखा हुआ नज़र आया, 'एक दस साल की खूबसूरत लड़की।'

सब यह देख कर ताज्जुब में पड़ गये।

अबरश ने कहा, आप ने देख लिया, अब खोपड़ी अपना घूमना बन्द करती है।

अबरश के इतना कहते ही लफ़्ज़ सिमट कर ग़ायब हो गये और

खोपड़ी अबरश के हाथ पर आ पड़ी। अबरश ने खोपड़ी को बोसा दिया और आम लोगों को खिताब कर के कहा, मेरे इल्म ने मुझे यह बताया है कि वह आदमी अपनी लड़की को क़ुर्बान करे, जो पहले अपनी नौ लड़कियों को ज़िंदा गाड़ चुका हो।

अरबों में लड़कियों को ज़िंदा गाड़ देने की रस्म आम थी। संगदिल और बे-दर्द बाप अपनी मासूम बच्चियों को ज़िंदा गाड़ देते थे और इस पर बड़ा घमंड करते थे। अक्सर लड़कियां तो पैदा होते ही क़त्ल कर डाली जातीं या ज़िंदा दफ़न कर दी जातीं, पर कभी-कभी ऐसा भी होता कि जब लड़की बड़ी हो जाती, मीठी बातें करने लगतीं, तो बे-दर्द बाप पहले गढ़ा खोद आता और फिर लड़की को अच्छे कपड़े और ज़ेवर पहना कर बस्ती से बाहर ले जाता। उस को गढ़े के किनारे पर खड़ा कर के धक्का दे देता, लड़की चीखती-चिल्लाती खुशामदें करती, पर ज़ालिम बाप उस की आवाज़ पर तनिक भी ध्यान न देता, बल्कि ऊपर से ढेले मार-मार कर मिट्टी डाल देता और इस तरह अपने कलेजे को ज़िंदा गाड़ देता और वापस लौट आता और इस संगदिल रस्म पर बड़ा घमंड करता।

अबरश की बात सुन कर एक अधेड़ उम्र का आदमी बोला, आज मैं पूरे फ़ख्र से कहता हूं कि मैं अपनी नौ लड़कियों को ज़िंदा गाड़ चुका हूं। खुशक़िस्मती से मेरी दसवीं लड़की मौजूद है। उस की उम्र परसों दस वर्ष की हो जाएगी, तब उसे दफ़न कर दूंगा। क्या वह लड़की क़ुर्बानी के लिए मुनासिब है ?

अबरश ने उस बद्दू को देख कर कहा, क़ैस! तुम वाक़ई खुशक़िस्मत हो कि अपनी दस साल की बेटी को ज़िंदा दफ़न कर के अपने मांबूदों को खुश कर लोगे और तुम्हारे इस कारनामे पर दुनिया रश्क करेगी।

क़ैस बिन आसिम का बनी तमीम क़बीले से ताल्लुक़ था। वह बड़ा संगदिल था, अपनी नौ लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देने के बावजूद वह दसवीं लड़की को ज़िन्दा गाड़ देने पर तैयार हो गया था। उस ने सीना फुला कर कहा, परसों मैं अपनी लड़की को गाड़ दूंगा, बस्ती के बाहर लोग जमा हो जाएं। इस क़ुर्बानी के बाद कोई डर बाक़ी न रहेगा।

यह सुन कर लोगों को तसल्ली हुई।

—०—

संगदिल बाप

जिस ज़माने का ज़िक्र हम कर रहे हैं, उस ज़माने में अरब के कोने-कोने में बुतपरस्ती का चलन था। हर गांव और क़स्बे में बुतख़ाने थे। बुतों की पूजा ज़ोर-शोर से होती थी। बहुतों ने तो ऊंट की खालों के बुतख़ाने बना रखे थे। जहां जाते, इन बुतख़ानों को साथ ले जाते और बुतों की पूजा करते।

अरबों में क़ुर्बानी का चलन भी था। ज़्यादातर ऊंटों की क़ुर्बानी किया करते थे। कभी-कभी भेड़ों और दूसरे जानवरों को भी ज़िब्ह कर डालते थे। कुछ क़बीले तो इंसानों की भी क़ुर्बानी कर डालते थे, गोश्त खा लेते थे और ख़ून बुतों पर छिड़क देते थे।

अरब जिन्नों, देवियों-देवताओं और परियों के भी क़ायल थे। उन का कहना था कि जो आदमी क़त्ल कर दिया जाता है, वह इंतिक़ाम लेने के लिए भूत बन जाता है और उस वक़्त तक लोगों को सताता रहता है, जब तक कि उस का बदला नहीं लिया जाता, इसी लिए उन में बदला लेने का जज़्बा बहुत बढ़ा होता था।

शराबख़ोरी, जुआ, सट्टा, ज़िनाकारी, चोरी, डकैती, रहज़नी आम थी। लड़कियों को मार डालना ख़ूबी समझते थे, ग़रज़ यह है कि अरबों में दुनिया भर के ऐब मौजूद थे, वे निहायत ज़िल्लत व पस्ती की हालत में थे।

अरब ही की तरह दुनिया के और दूसरे हिस्सों का भी हाल था। ईरान में आग की पूजा होती थी। वहां के लोग दो ख़ुदाओं को मानते थे। आम तौर से शराब पीते थे, जुआ खेलते थे। हर छोटा आदमी बड़े आदमी को सज्दा करता था। चोरी डकैती का पूरे मुल्क में ज़ोर था।

रूम व यूनान में ईसाई धर्म का चलन था, लेकिन गिरजों में हज़रत ईसा और हज़रत मरयम की तस्वीरें रखी हुई थीं और इन तस्वीरों के सामने सिर झुकाए जाते थे। शराब पीने-पिलाने का चलन आम था। चोरी, ज़िनाकारी और धोखाबाज़ी आम चलन में थी।

मिस्र में अगरचे ईसाइयत फैली हुई थी, फिर भी ज़्यादातर मिस्री बुतपरस्त ही थे। उन में वे तमाम ऐब पाये जाते थे, जो एक ज़लील बुतपरस्त क़ौम में हो सकते हैं। नदियों को इंसानी जान की भेंट एक आम बात थी।

भारत से बौद्ध मत खारिज हो रहा था। एक चीनी पत्रकार लिखता है कि भारत का एक घर भी बुतों से खाली न था, सिर्फ़ बुतों ही की पूजा न होती थी, बल्कि सितारों, पहाड़ों, नदियों, पेड़ों, जानवरों, सांपों, पत्थरों और शर्मगाहों तक की पूजा की जाती थी। उस समय चरित्र और अख़्लाक़ बहुत घटिया क़िस्म का हो गया था।

चीनियों की हालत भी सही न थी। कनफ़्यूशस और बौद्ध धर्म के मिले-जुले ख़्यालात ने धर्म का मखौल उड़ा रखा था।

ग़रज़ यह कि दुनिया का कोई इलाक़ा बुतपरस्ती से खाली न था। हर इलाक़े में किसो न किसी तरीक़े से बुतपरस्ती का रिवाज क़ायम था।

क़ैस बिन आसिम बड़ा खुश था। खुशी की वजह यह थी कि बैतुल-हराम की भारी भीड़ में एक आदमी भी ऐसा न निकला, जिस ने अपनी नौ लड़कियों को ज़िंदा दफ़न किया हो। अब हर आदमी उसे इज़्ज़त की निगाहों से देखने पर मजबूर है। खुशी से फूला हुआ वह मकान पर पहुंचा। मकान पर पहुंचते ही उस की दस साला लड़की उस से मिलने लपकी। उस ने अपने छोटे-छोटे नाज़ुक हाथ फैलाते हुए कहा, 'अच्छे अब्बा! तुम आ गये, मैं तो तुम्हारा इंतिज़ार कर रही थी।

बाप की मुहब्बत ग़ालिब आ गयी, उस ने लड़की को गोद में उठा लिया, उस से प्यार किया। लड़की ने प्यार से उस के गले में बांहें डाल दीं। लड़की बड़ी खूबसूरत थी। उस का चेहरा गोल था, आंखें बड़ी-बड़ी, माथा चौड़ा और रोशन था। गालों पर सेब जैसी लाली थी। सिर पर बालों की स्याह लटें गुंधी हुई दोनों ओर सीने पर पड़ी थीं। होंठ मनमोहक और दांत मोतियों की तरह सफ़ेद थे।

क़ैस ने मारे मुहब्बत के उसे उठा कर सीने से लगा लिया। पर तुरन्त ही चौंका, संभला और जल्दी से लड़की को गोद से उतार दिया। ऐसे फेंक दिया जैसे इंसान किसी चीज़ के धोखे में सांप को उठा ले और पहचान कर तुरन्त फेंक दे।

लड़की गिरते-गिरते संभली। उस ने अपने बाप को देखा और प्यार भरे लहजे में पूछा; 'क्या तुम मुझ से खफ़ा हो गये? खफ़ा न हो, आप और अम्मी के अलावा मेरा इस दुनिया में है कौन?'

क़ैस की आंखों से रहम और मुरव्वत के बजाए जंगली चमक पैदा हो गयी थी। उस ने कड़क कर कहा, जमीला! क्या तुम भोली-भाली बातों से मेरे दिल को मोम बनाना चाहती हो? नहीं, मैं मोम नहीं बन सकता। चली जा! जा, मेरे सामने से दूर हो जा।

मासूम लड़की बाप के कड़े तेवर देख कर डर गयी। अक्सर बच्चों का क़ायदा होता है कि जब उन्हें घूरा-धमकाया जाता है, तो वह लाड और प्यार से मां-बाप को लिपट जाते हैं। जमीला भी बाप से लिपट गयी।

क़ैस ने उस का हाथ पकड़ कर झटक दिया और उसे तेज़ और गुस्सा भरी हुई नज़रों से घूरने लगा। जमीला ने आज तक उस की ऐसी नज़रें न देखी थीं। वह कांप कर अलग खड़ी हो गयी।

क़ैस की बीवी सलमा क़रीब ही खड़ी थी। जमीला से अपनी नज़र फेरते हुए कहा अपनी बीवी से बोला, आज जो हवा का तूफ़ान आया, तूफ़ान के बाद जो रोशनी और चमक हुई, तुम ने देखी ?

हां, देखी ! बड़ा सख्त तूफ़ान था। मैं तो समझती थी कि मकानों की छतें उड़ जाएंगी, दीवारें गिर पड़ेंगी, लेकिन हमारे माबूदों ने हम पर मेहरबानी की। तूफ़ान निकल गया, मगर रोशनी और चमक ! मैं ने अपने होश में न ऐसी रोशनी देखी और न ऐसी चमक।

बेशक ! न देखी होगी ! कुछ खबर है कि हम पर क्या बला आने वाली है ?

सलमा ने घबरा कर क़ैस को देखते हुए कहा, नहीं ! दुनिया में इन्क़िलाब आने वाला है क्या ?

क़ैश ने ग़ौर से सलमा को देखकर कहा, तुम ने तो ठीक समझा सलमा! कोई आदमी हमारे माबूदों के खिलाफ़ उठने वाला है।

सलमा ने हैरत से कहा, हमारे माबूदों के खिलाफ़......क्या उस का कोई और माबूद है ?

ज़रूर होगा।

अजीब बात है यह तो !

निहायत अजीब ! अबरश ने बतलाया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० नामी कोई आदमी हमारे माबूदों के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाला है।

मैं हज़रत मुहम्मद को जानती हूं और मैं ही क्या कौन नहीं जानता, वह मक्के के सरदार के भतीजे हैं, बड़े नेक, बड़े रहमदिल, बड़े सच्चे, बड़े अमीन ! आखिर उन्हें क्या पड़ी है कि हमारे माबूदों की बुराई करें ?

लेकिन ऐसा होगा। क्या तुम नहीं जानती कि आज तक उन्होंने किसी बुत के आगे सज्दा नहीं किया ?

सही है, मैं ने भी ऐसा ही सुना है। लेकिन इस से यह कैसे साबित हुआ कि वह बुतों के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाले हैं।

अबरश कहता है और वह झूठ नहीं बोल सकता।

मगर वह आबादी में रहते नहीं, सुनती हूं कि हिरा की गुफा में तंहा पड़े रहते हैं ।

हां, वह चार-चार, पांच-पांच दिन तक नजर नहीं आते। उसी गुफा में ठहरे रहते हैं, सिर्फ़ जौ का सत्तू रखते हैं। खैर यह तो है ही, पर...... सलमा ! आज मुझे बड़ी खुशी है। बैतुलहराम के हजारों मज्मे में मेरा सिर ऊंचा रहा।

क्या बात हुई ? मेरे सरताज !

अबरश ने आने वाले फ़ित्ने को दूर करने के लिये एक तदबीर बतायी है। उस ने कहा कि जो आदमी अपनी नौ लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर चुका हो और उस की दसवीं लड़की और हो, अगर वह उस लड़की को ज़िंदा दफ़न कर दे, तो आने वाले फ़ित्ने से निजात मिल सकती है। उस वक़्त सलमा ! उस तमाम मज्मे में एक आदमी भी ऐसा न मिला, जिस ने नौ लड़कियों को दफ़न किया हो, सब सिर झुकाए खामोश और शर्मिन्दा थे। तब मैं ने कहा कि मैं ऐसा हूं।

पूरे मज्मे ने हैरत और इज्ज़त की नज़रों से मुझे देखा। क्या फ़ख्र की बात नहीं सलमा ?

सलमा का चेहरा फीका पड़ गया। वह जमीला से बड़ी मुहब्बत करती थी। क़ैस की बातों से वह समझ गयी थी कि जिस जमीला को उसने सीने से लगाया, हज़ारों मुसीबतें उठा कर बड़े लाड-प्यार से पाला, अब उस की क़ुर्बानी का वक़्त आ गया है। इस ख्याल से उस का दिल हिल गया। कलेजा मुंह को आने लगा। आंखों में आंसू आ गये।

क़ैस ने फिर कहा, बोलो सलमा, क्या यह बात हम सब का सिर ऊंचा नहीं करेगी ?

सलमा ने ग़म भरे लहजे में कहा, सिर तो ऊंचा होगा, मगर...।

क़ैस ने चोट खाये सांप की तरह पलट कर उस को देखा। आंखों में झिलमिलाते आंसुओं को देख कर वह गुस्सा हो गया, यह क्या बात है सलमा ! क्या जमीला की मुहब्बत ने तुम को खराब कर दिया है ? बड़े शर्म की बात है।

सलमा क़ैस के गुस्से को देख कर सहम गयी। उस ने आंसू पी लिए।

क़ैस अब भी गुस्से में बोले जा रहा था, होश में आओ सलमा ! अगर ग़लती से तुमने जमीला की मुहब्बत को अपने दिल में जगह देकर इतना बढ़ा लिया है कि उस की क़ुर्बानी की खबर से उस मुहब्बत को ठेस लग गयी है, तो तुम उस की मुहब्बत को अपने दिल से निकाल दो।

सलमा अब तक तो सब्र किये रही, लेकिन अब सब्र का दामन छूट चुका था, शौहर के सामने दोनों हाथ जोड़े खड़ी हो गयी। बोली, मेरे सर-ताज ! इस इम्तिहान से मुझे बाज़ रखो। मुझ बद-नसीब के दिल में जमीला की शक्ल ने भोली-भाली बातों ने जगह कर ली है, ऐसा लगता है, मेरी ज़िंदगी उस की ज़िंदगी के साथ जुड़ी हुयी है, इसलिए मेरे प्यारे शौहर ! जमीला को मेरे लिए बाक़ी रखो।

क़ैस की आंखों से चिंगारियां निकलनी लगीं। उस ने ग़ज़बनाक लहजे में कहा, कमअक़्ल औरत ! लड़की की मुहब्बत में डूबी रहने वाली मूर्ख ! क्या जमीला को ज़िंदा रख उस की शादी करूं ? किसी को अपना दामाद बनाऊं ? क़सम है लात व उज़्ज़ा की ! ऐसा कभी न होगा !

सलमा ने रोते हुए कहा, आप जमीला की शादी ही न करें, वह तमाम उम्र कुंवारी बिता लेगी।

क़ैस ग़ुस्से से कांपने लगा, बोला, ज़लील हस्ती ! यह तो और ज़िल्लत की बात है, दुनिया कहेगी, क़ैस की बेटी को किसी ने क़ुबूला नहीं ! मैं इस ज़िल्लत को भी सहन नहीं कर सकता !

सलमा ने आंसू बहाते हुए कहा, मुक़द्दस माबूदों के लिए जमीला पर, भोली जमीला पर, मासूम जमीला पर, कमसिन और ख़ामोश जमीला पर रहम करो, उसे बचा लो !

क़ैस ने कड़क कर कहा, नहीं, हरगिज़ नहीं ! यह नादानी छोड़ो ! उठो, देखो जमीला सामने खड़ी सब कुछ देख रही है। परसों वह ज़िन्दा दफ़न की जाएगी। आज ही से उसे सजाना शुरू कर दो।

यह कहते ही क़ैस वहां से चला गया।

सलमा उठ खड़ी हुई। वह ग़म से बोझल हो रही थी।

जब क़ैस चला गया, तो जमीला सलमा के पास आयी। उसने आते ही कहा, अम्मी ! तुम ख़ामोश क्यों हो ? अब्बा के सामने हाथ क्यों जोड़ रही थीं ? आज अब्बा ख़फ़ा क्यों हैं ? वह मुझ से भी ख़फ़ा लगते हैं, क्यों ?

जमीला की बातें सुन कर सलमा बेचैन हो उठी। उस ने उसे सीने से लगा लिया, ख़ूब भींचा !

सलमा रोती जा रही थी और जमीला को भींचती जा रही थी।

उसे इस तरह रोते देख जमीला तड़प उठी, बोली, रोओ नहीं, नहीं तो मैं भी रोऊंगी।

सलमा जमीला की बात सुनते ही चुप हो गयी और ठंडी आह भर कर कहा, मेरी आंखों की ठंडक ! तू न दुखी हो, मैं अब न रोऊंगी।

कुछ देर बाद सलमा घर के काम-काज में लग गयी और जमीला खेलने लगी।

आज सलमा का दिल किसी काम में नहीं लग रहा था। जब वह जमीला को देखती या जमीला का विचार आता, तो उस के दिल में हूक उठती, जमीला अब सिर्फ़ दो दिन और जिन्दा रहेगी। आंसू जारी हो जाते। बड़ी बेचैनी से उस ने वह दिन और दूसरा दिन बिताया।

तीसरे दिन दोपहर के वक़्त जमीला को नहलाया गया, नहला कर बाल सुखाये गये, सर में तेल डाला गया, कंघी की गयी, चोटी गूंथी गयी। मासूम ज़मीला खुश हो रही थी। उसे क्या मालूम कि उसे मौत की गोद में देने की तैयारियां हो रही हैं। उस वक़्त बहुत सी औरतें घर में जमा हो गयी थीं। सभी हंस-बोल रही थीं, लेकिन सलमा का चेहरा उतरा हुआ था और ग़म से निढाल हो रही थी।

जब सूरज ढल गया तो क़ैस और उस के पीछे बहुत से आदमी उस के मकान पर आये। क़ैस के साथ जो लोग आये थे, वे सब के सब शहर के जाने-माने लोग थे। उन के साथ अबरश भी था। ये सभी सीधे जमीला के पास पहुंचे। जमीला को घेरे हुये औरतें एक ओर खड़ी हो गयीं। अबरश ने आगे बढ़कर जमीला को देखा। जमीला उस वक़्त बेहद ख़ूबसूरत लग रही थी। बूढ़ा काहिन उसे देख कर हैरान रह गया। कुछ देर उसे टकटकी लगाये देखता रहा। जमीला ने शर्मा कर सर झुका लिया।

अबरश बोला, क़ैस ! ऐसी ही बच्ची की क़ुर्बानी की ज़रूरत थी। पाक हुबल तुम पर अपनी बरकतें नाज़िल करेंगे, फिर जमीला के सर पर हाथ रखते हुए उस ने कहा, बेटा ! तेरी क़ुर्बानी हमारी मुसीबतों का खात्मा कर देगी।

जमीला उसकी बात समझ न सकी। भोला चेहरा और मासूम आंखें उठा कर उसे देखने लगी। अबरश ने क़ैस से कहा, चलो, जमीला को ले चलो !

क़ैस ने कहा, जमीला चलो।

जमीला ने पूछा, कहां चलें अब्बा !

क़ैस ने कहा, हमारे साथ !

जमीला उठ खड़ी हुयी, वह चली, उस के पीछे सब चल पड़े, पर ग़म से निढाल सलमा के एक क़दम भी न उठ सके। वह चकरायी, संभलना चाहा, न संभल सकी, ग़श खा कर गिर पड़ी।

सब जा चुके थे, मकान के भीतर कोई न था जो उस औरत को संभाल पाता।

भयानक क़ुर्बानी

क़ैस के मकान के सामने सैंकड़ों आदमी खड़े थे। बहुत सी औरतें दफ़ लिए खड़ी थीं। इन औरतों और मर्दों में हर तब्क़े के लोग थे। जिस वक़्त जमीला को उन्होंने देखा, तुरन्त 'हुबल की जय, लात की जय' के नारे बुलन्द करने लगे। औरतों ने दफ़ बजा-बजा कर गीत गाना शुरू किये। इन गीतों में बुतों की तारीफ़ थी, अरब और अरब के क़बीलों की तारीफ़ थी।

अब इस मज्मे ने जुलूस का रूप ले लिया। सबसे आगे अबरश एक हाथ में खोपड़ी और एक हाथ में हड्डी लिए, हड्डियों की माला पहने, सीना और कंधे पर बाल बिखेरे हुए जा रहा था। उस के पीछे काहिनों और आराफ़ की एक जमाअत थी। ये सभी लम्बे ऊनी जुब्बे पहने हुए थे, जो इतने लम्बे थे कि धरती पर घसिट रहे थे। उनके हाथों में भी इंसानी हड्डियां थीं। इन के पीछे पुजारियों का गिरोह था, जो घड़ियाल, शंख, और तालियां बजा रहे थे। पुजारियों के पीछे औरतें थीं, सभी तड़क-भड़क कपड़े पहने हुए थीं। अक्सर नव जवान औरतें दफ़ बजा-बजा कर गा रही थीं। इन्हीं औरतों के घेरे में मासूम जमीला थी, जिसे कुछ नहीं मालूम कि क्या होने जा रहा है। औरतों के पीछे कुछ बा-असर और दौलतमन्द आराबी थे। ये सब लोग बिल्कुल खामोश थे। क़ैस बिन आसिम भी उन के साथ था। उन के पीछे आम लोग थे, जो थोड़ी-थोड़ी देर से बुतों का नाम ले-लेकर उन की जय पुकारते थे।

इस तरह यह जुलूस चाहे ज़मज़म के सामने पहुंचा। ज़मज़म के दोनों तरफ़ नायला, असाफ़ दो बुत थे। तमाम मज्मा उन बुतों के सामने सज्दे में गिर पड़ा। थोड़ी देर के बाद जब उन्होंने सर उठाया तो सब के माथे धूल में सने थे।

अब ये लोग शहर से बाहर की ओर चले। इसी तर्तीब से यहां तक आए भी थे।

यहां आ कर मज्मा बहुत कुछ बढ़ गया था। अब इस मज्मे में बहुत से ऐसे-ऐसे लोग शामिल हो गये थे, जिन की गोदों में दूध पीती बच्चियां थीं।

बुतपरस्तों का एक गिरोह मक्का से निकल कर बाहर एक खुले मैदान

में पहुंचा। यह तमाम रेगिस्तान था। सफ़ेद-सफ़ेद रेत चमक रही थी।

अभी ये लोग मक्का से थोड़ी दूर चले थे कि सामने से एक चालीस साला खूबसूरत शख्स आते हुए नजर आए। यह अरब बहुत ही खूबसूरत थे। चेहरे से रौब व जलाल जाहिर था कि खुली आंख से न देखा जाता था जब वह उस मज्मे के क़रीब आये तो अबरश ने उन्हें देखा, मगर चेहरे पर छाये रौब की वजह से न देख सका और नजरें झुक गयी।

वह अरब बढ़ते रहे। जब वह अबू तालिब के क़रीब पहुचे, तो अबू तालिब ने मुहब्बत भरी नजरों से देख कर कहा—

'आंखों की ठंडक! तुम इस धूपमें ऐसी गर्मी के वक़्त कहां से आरहे हो?'

वह शख्स रुक गये। उन्होंने जबाब दिया, ऐ चचा ! मैं हिरा की गुफा से आ रहा हूं।

अबू तालिब ने कहा, प्यारे मुहम्मद ! चचा की जान ! तुमने क्यों अपनी जान पर इतनी मशक्क़त डाल रखी है, क्या तुम्हें अपनी सेहत का भी ख्याल नहीं ? जाओ किसी साएदार जगह में जा कर आराम करो।

यह शख्स हजरत मुहम्मद सल्ल० थे। वह अपने चचा अबू तालिब को सलाम कर के चले गये। उन्हों ने न मज्मे की तरफ़ देखा, न यह मालूम किया कि यह मज्मा कहां और क्या करने जा रहा है ?

जब आप दूर निकल गये, तो अबरश ने कहा, कितना शानदार, खूबसूरत और शरीफ़ इन्सान है। हुबल की क़सम ! मैंने पहले कभी ऐसा कोई इन्सान नहीं देखा, लेकिन उसकी तरफ़ से खानदानों के जलील होने का डर है।

एक बूढ़ा आदमी अबरश के पीछे था। उसका नाम वरक़ा बिन नौफ़ुल था। वरक़ा अरबी भाषा के माहिर थे। तौरात और इंजील का पूरा इल्म रखते थे। उन्हों ने कहा, अबरश, अन्देशा न करो। अगर हमारे खुदाओं में यह ताक़त है कि वे अपन-अपनी रुसवाई पर रुसवा करने वाले को सजा दे सकें, तो वे खुद सजा दे लेंगे, हम क्यों चिन्ता करें।

अबरश ने कहा, तुम सच कहते हो वरक़ा ! मगर मुझे डर है कि शायद वे सज़ा न दे सकें।

वरक़ा ने किसी क़दर जोश में आकर कहा, अगर वे सज़ा नहीं दे सकते तो फिर खुदा कैसे ?

अबरश ने हैरान हो कर वरक़ा की ओर देखतें हुए कहा, यह तुम कहते हो ? वरक़ा तुम भी, मुर्तद (विधर्मी) हो गये क्या !

मुर्तद नहीं हूं। तुम सब मक्का वाले सारे अरब के बाशिंदे अच्छी तरह

जानते हो कि मैं अरबी जानता हूं, तौरात और इन्जील का माहिर हूं, पर अपने मज़हब पर क़ायम हूं...पर यह मेरा एतक़ाद है कि ख़ुदाओं में इतनी ताक़त ज़रूर होनी चाहिये कि वे आपने इन्कारियों को सज़ा दे सकें और पुजारियों को इनाम दे सकें।

तुम सच कहते हो, वरक़ा !

यह तमाम मज्मा अभी तक बढ़ा चला जा रहा था, यहां तक कि वह मक्का से एक मील दूर निकल आया। चूंकि वह धीरे-धीरे चल रहा था, इसलिए बड़ी देर में वहां पहुंचा। उस वक़्त सूरज तीन चौथाई मंज़िलें तै कर चुका था। धूप में अब वह चमक और तेज़ी भी न रही थी, जो अब से तीन घंटे पहले थी।

तमाम मज्मा रेत के एक बड़े ढेर के पास रुका। पुजारियों ने यहां पहुंच कर घंटे और शंख बजाने शुरू किए।

कुछ देर के बाद एक आदमी बढ़ा। उसने कहा, ऐ ग़ैरतमन्द अरब ! मैं अपनी बड़ाई बाक़ी रखने के लिए अपनी बेटी को ज़िंदा दफ़न करता हूं। उस आदमी की गोद में तीन साल की एक मासूम लड़की थी। उस ने लड़की को ज़मीन पर बिठा दिया और दोनों हाथ से रेत हटाकर गढ़ा खोदने लगा, यहां तक कि देखते-देखते उस संगदिल बाप ने लड़की को गढ़े में फेंक, जल्दी-जल्दी उस पर रेत डालना शुरू कर दिया। लड़की चीख़ती-चिल्लाती रह गयी। रेगिस्तान का एक-एक ज़र्रा तो उस चीख़ से कांप उठा, लेकिन न पसीजे तो वे इन्सान न पसीजे, जो भेड़िए की शक्ल में वहां मौजूद थे।

फिर क्या था, इस के बाद जो लोग लड़कियां लेकर आये थे, सब ने मासूम लड़कियों को गढ़े खोद-खोद कर दफ़न करना शुरू कर दिया।

अब कई आदमियों ने मिल कर एक बड़ा और गहरा गढ़ा खोदा। जब गढ़ा तैयार हो गया, तो क़ैस जमीला को लेकर आगे बढ़ा और गढ़े के किनारे जा खड़ा हुआ। जमीला देख चुकी थी कि गढ़ों में लड़कियां दफ़न की गयी हैं। उसे इस का एहसास हो चला था कि जिस गढ़े के किनारे वह खड़ी है, उसमें वह दफ़न की जाएगी। उस ने हसरत भरी नज़रों से अपने बाप क़ैस की तरफ़ देखा, कहा, प्यारे अब्बा ! क्या तुम मुझे इस गढ़े में दफ़न करने के लिए लाये हो ?

क़ैस ने कहा, हां, जमीला ! तुमने ठीक समझा। अरब में लड़कियों के रहने-सहने और पलने-बढ़ने की गुंजाइश नहीं है।

जमीला घबरा गयी। उस ने पूछा, मेरा क़सूर क्या है ? तुम मुझे

क्यों दफ़न करना चाहते हो।

क़ैस ने कहा, हमारी खानदानी बड़ाई और निजी ग़ैरत हम को ऐसा करने पर मजबूर करती है।

जमीला रोने लगी। उस ने हाथ जोड़ कर कहा, अब्बा! प्यारे अब्बा, अगर तुम मुझे खाना और कपड़ा नहीं दे सकते, मत दो। मैं नंगी और भूखी रह लूंगी... आह अब्बा! अभी मुझे दफ़न न करो। यह कहते ही जमीला क़ैस से लिपट गयी और उसकी नर्गिसी आंखों से आंसू की धार बहने लगी।

क़ैस की दरिंदगी ने जोश मारा, उस ने कड़क कर कहा, अभी दफ़न न करू, तो क्या तुझे इसलिए ज़िंदा रखूं कि तू बड़ी होकर ब्याही जाए। कोई आदमी मेरा दामाद बने, तमाम अरब में मेरा सर ज़िल्लत से झुक जाए। कभी नहीं, हमारे खानदान में कोई लड़की ज़िंदा नहीं रखी गयी।

जमीला का खूबसूरत चेहरा उतर गया। मौत की तस्वीर उसकी आंखों में घूम गयी। वह जल्दी से अपने बाप के पांवों पर गिर पड़ी। उस ने कहा प्यारे अब्बा! मुझे बचा लो। आह! मैं तुम्हारी लौंडी बन कर रहूंगी।

बेरहम बाप ने जमीला को उठा कर गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा गहरा मगर तंग था। जमीला औंधे मुंह गिर पड़ी। क़ैस ने जल्दी-जल्दी गढ़े में रेत गिराना शुरू कर दिया। जमीला उठने की कोशिश कर रही थी, लेकिन रेत इस तेज़ी से उस के ऊपर गिर रही थी कि उसे उठ कर खड़ी होने की मोहलत न मिलती थी। लड़की चीख-चीख कर रो रही थी, लेकिन क़ैस पर उस के रोने का कोई असर न था। वह बराबर रेत डालने में लगा हुआ था। जमीला का दम घुटने लगा, वह और ज़ोर से चीखने लगी। बेरहम बाप ने और तेज़ी से रेत डालना शुरू किया। इन्सानों की उस भीड़ में एक आदमी भी ऐसा न था, जिस ने ज़रा भी रहम दिखाया हो और उस मासूम बच्ची को बचाने की कोशिश की हो। धीरे-धीरे लड़की की आवाज़ बन्द होने लगी। रेत बराबर डाली जाती रही, यहां तक कि बच्ची की आवाज़ पूरी तरह बन्द हो गयी। घंटे और शंख के आवाज़ में तेज़ी आ गयी। क़ैस उठ कर खड़ा हो गया। वह अब बहुत खुश था, जैसे उस ने कोई बहुत बड़ा और अहम काम अन्जाम दिया हो। सूरज इन्सानों की संगदिली पर मातम करता हुआ डूब चुका था। जब रात हो गयी तो सब मक्का वापस हो गये।

अरब का चमकता सूरज

अरब का सूरज हज़रत मुहम्मद सल्ल० अबू तालिब से विदा होकर मक्का में अपने मकान पर आये। मकान क्या था, कुछ कच्चा था, कुछ पत्थर का बना हुआ एक अहाता था। भीतर कुछ कमरे बने हुए थे, जिन की छत इतनी नीची थी कि खड़ा होने से छुई जा सकती थी।

जिस वक़्त आप मकान के अहाते के अन्दर दाखिल हुए तो आप की प्यारी बीवी हज़रत खदीजा दौड़कर स्वागत के लिए आयीं। वह आप के चेहरे पर जलाल देखकर हैरान रह गयीं।

आप कुछ न बोले सीधे एक कमरे में चले गये। हज़रत खदीजा भी पीछे-पीछे पहुंचीं। उन्होंने पूछा, मेरे सरताज ! आज क्या बात है ? तबियत पर क्यों बोझ महसूस कर रहे हैं ?

आपने खजूर की चटाई पर लेट कर फ़रमाया, मुझे कम्बल ओढ़ा दो, मुझे कम्बल ओढ़ा दो।

हज़रत खदीजा ने तुरन्त कम्बल ओढ़ा दिया और उन के क़रीब बैठकर चिंता में डूब गयीं।

हज़रत खदीजा को प्यारे नबी सल्ल० से बेहद मुहब्बत थी। उन्हें आप की यह हालत देख कर बड़ी चिन्ता हो गयी थी और हर क़ीमत पर जानना चाहती थीं कि क्या हुआ ? लेकिन हुज़ूर सल्ल० कम्बल ओढ़े खामोश लेटे रहे। उन्हें आप से हर बात मालूम करने की हिम्मत न हो सकी। थोड़ी देर बाद आप ने कम्बल उतारा और उठ बैठे। हज़रत खदीजा की जान में जान आयी। उन्हों ने पूछा, अब आप की तबियत कैसी है ?

हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छी है। फिर कहा, खदीजा ! आज एक अजीब बात हुई है। खदीजा ने हुज़ूर के चेहरे को ग़ौर से देखा, पूछा, मेरे सरताज ! क्या वाक़िआ है ?

आप ने फ़रमाया, मैं गुफा में बैठा था कि एक खूबसूरत शख्स, पाक कपड़े पहने हुए जाहिर हुआ। मैं बे-अख्तियार उस के इस्तक़बाल के लिए खड़ा हो गया। उस ने मेरे पास आकर कहा, 'इक़रा' (पढ़ो) मैं ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। उस शख्स ने मुझे पकड़ कर भींचा और कहा, पढ़ो। मैं ने फिर वही जवाब दिया। उस ने तीसरी बार मुझे पकड़ कर ज़ोर से

भींचा और फिर छोड़कर कहा, 'इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़॰.....

यानी पढ़ ख़ुदा के नाम से, जिस ने कायनात को पैदा किया, जिस ने इन्सान को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, पढ़, तेरा रब बड़ा करीम है, वह जिस ने इन्सान को क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया, वह जिस ने इन्सान को बातें सिखायीं, जो उसे मालूम न थीं।

मैं डर सा गया। वह शख़्स चला गया। ख़दीजा! क्या यह अजीब बात नहीं है?

हज़रत ख़दीजा ने कहा, बेशक यह अजीब बात है। पर हुज़ूर इस से परेशान क्यों हैं?

आप ने फ़रमाया, इस लिए कि मुझे अपनी जान का ख़तरा पैदा हो गया है।

हज़रत ख़दीजा ने दिल रखने के तौर पर फ़रमाया, नहीं, नहीं आप को ख़ुश होना चाहिए। ख़ुदा की क़सम! अल्लाह आप को कभी रुसवा न करेगा, क्योंकि आप हमेशा रिश्तों को जोड़ते हैं, सच बोलते हैं, ग़रीबों के ख़र्च पूरे करते हैं। आप में वे तमाम ख़ूबियां हैं जो औरों में नहीं पायी जातीं। आप मेहमाननवाज़ हैं और हक़ बात और नेक कामों की वजह से अगर किसी पर कोई मुसीबत आ जाए, तो आप उस की मदद फ़रमाते हैं।

आप चुप हो गये और सिर उठा कर कुछ सोचने लगे।

हुज़ूर सल्ल॰ से हज़रत ख़दीजा को बेहद मुहब्बत थी। आप की ख़ामोशी से उन के दिल ने बड़ा असर क़ुबूल किया। उन्होंने कहा हुज़ूर! मेरे साथ वरक़ा के मकान तक चल सकते हैं?

आप ने पूछा, किस लिए?

हज़रत ख़दीजा ने कहा, आप जानते हैं कि वह वरक़ा तौरात व इंजील का माहिर है। अरबी भाषा जानता है। बड़ा आलिम है। वह बता देगा कि क्या बात हुई? और आप पर किसी क़िस्म का अंदेशा तो नहीं है?

वरक़ा बिन नौफ़ुल हज़रत ख़दीजा के चचेरे भाई थे। तौरात और इन्जील के माहिर थे। अरबी और इबरानी भाषाओं को ख़ूब अच्छी तरह जानते थे। बड़े अक़्लमन्द और दूरंदेश थे। ईसाई मज़हब की तरफ़ रुझान था। जब मक्का में कोई अहम वाक़िआ होता तो उन से मश्विरा किया जाता था।

आपने फ़रमाया, क्या अभी चलने का इरादा है?

हज़रत ख़दीजा ने कहा, हुज़ूर! मुझे आप को देख कर चिन्ता हो गई है। बेहतर तो यही है कि इसी वक़्त तश्रीफ़ ले चलिए।

आप ने फ़रमाया, अच्छा चलो !

दोनों वरक़ा के मकान पर पहुंचे ।

वरक़ा से मुलाक़ात होने पर ख़दीजा ने वह पूरा वाक़िया, जो हुज़ूर सल्ल० ने उन से बयान किया था, बयान करना शुरू किया । वरक़ा बड़े ग़ौर और तवज्जोह से सुनते रहे । जब हज़रत ख़दीजा सब कुछ सुना चुकीं तो वरक़ा ने कहा, ऐ मुहम्मद ! मैं आप को मुबारकबाद देता हूं । यह वही नामूसे अक्बर है, जो हज़रत मूसा पर नाज़िल हुआ था ।

आप ने फ़रमाया, ज़रा इस बात को और खोलिए ।

वरक़ा ने कहा, मुहम्मद ! सुनो, तुम को ख़ुदा ने नुबूवत के लिए चुन लिया है । तुम आख़िरी पैग़म्बर होगे । तुम वह पैग़म्बर हो, जिस की ख़ुश-ख़बरी तौरात व इन्जील में मौजूद है । आप की उम्मत पूरी दुनिया में फैल जाएगी ।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या ख़ुदा मेरे ज़रिये से कोई नया मज़हब फैलायेगा ?

वरक़ा ने जवाब दिया, आप इब्राहीमी मज़हब के अलमबरदार होंगे । ऐ काश ! मैं जवान होता और उस वक़्त तक ज़िंदा रहता जब कि आप इस्लाम की तब्लीग़ करें और जब आप को आप की क़ौम आप के वतन से निकाले ।

हुज़ूर सल्ल० को यह सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ । आप ने पूछा, मेरी क़ौम क्या मुझे निकाल देगी ?

वरक़ा ने कहा, हां, दुनिया में जब कोई रसूल हो कर आया, जिस ने तौहीद की तालीम पेश की, उस के साथ ही उस की क़ौम ने दुश्मनी का बर्ताव किया है । आप के साथ भी यही होगा ।

आप ने फिर पूछा, मगर वह कौन शख़्स था, जिस ने तीन बार भींचा ।

वरक़ा ने कहा, वह फ़रिश्ता था, ख़ुदा का पैग़ाम लाने वाला जिब्रीले अमीन । वही नबियों पर आते रहते हैं ।

आप ने पूछा, इस से मुझे जान का अन्देशा तो नहीं है ।

वरक़ा ने जवाब दिया, बिल्कुल इत्मीनान रखिए । अल्लाह आप का हामी और मददगार रहेगा ।

आप को वरक़ा की बातों से इत्मीनान हुआ । आप ने कहा, अगर अल्लाह मेरा हामी व मददगार है, तो मुझे किसी चीज़ का डर नहीं ।

वरक़ा ने कहा, आप पर किताब नाज़िल होगी और जो कुछ नाज़िल हो, मुझे सुनाते रहना ।

आप ने फ़रमाया, अगर खुदा ने चाहा, तो मैं जरूर सुनाता रहूंगा।

चूंकि अब हुजूर सल्ल० की तबियत संभल गयी थी, आप को इत्मीनान हो गया था, हज़रत खदीजा की चिंता भी खत्म हो गयी थी, इसलिए हुजूर और हज़रत खदीजा दोनों उठे और वरक़ा को सलाम करके उस के मकान से बाहर निकल कर अपने घर की ओर चल पड़े।

दुखी मां

दुखी सलमा दुख से निढाल हो, ग़श खा कर गिरी थी। उसे तन बदन का होश न रहा था। चेहरा खिंच गया था, सांस ऐसी धीमी चल रही थी कि देखने वाले को शक होता था कि चल भी रही है या नहीं। जमीला के ग़म में उस की दुनिया अंधेरी हो गयी थी।

सलमा ग़श खा कर गिरी थी, तो घर में कोई न था। कौन उसे उठाता? कौन दौड़-धूप करके उसे होश में लाता? दुखी सलमा धूप में पड़ी थी, बेहोश! यहां तक कि सूरज डूब गया। दिन भर चलने वाली गर्म हवा कुछ ठंडी पड़ गयी और आसमान पर सितारे निकल कर चमकने लगे। उस वक़्त सलमा को होश आया। उस ने आंखें खोलीं, इधर-उधर देखा, घर में सन्नाटा था। वह उठ कर बैठ गयी और सोचने लगी कि वह कहां पड़ी है और किस हालत में पड़ी है।

धीरे-धीरे उसे तमाम बातें याद भी आ गयीं, जो दोपहर को पेश आयी थीं। जमीला को नहला-धुला कर दुल्हन बनाया था, उस का बाप उसे ज़िंदा दफ़न करने के लिए ले गया था। यह सोच कर उस का दिल हिल गया। कलेजा कांप गया, सीने में हूक उठी और मुहब्बत का दरिया उमंड आया। वह बे-क़रार हो गयी, कलेजा मसोस कर रह गयी, बैठा न गया। उठी, कमज़ोरी की वजह से चक्कर आ गया। दीवार का सहारा ले कर खड़ी हो गयी, देर तक खड़ी रही। दोनों हाथों से कलेजा दबाये खड़ी रही। कुछ देर के बाद दिल उमंड आया, आंसू जारी हो गये, ज़ार व क़तार रोने लगी। इतना रोयी कि आंसुओं से दामन तर हो गया।

उस ने बैन करते हुए कहा, आह! मेरी आंखों की रोशनी, क्या तू मुझ से खफ़ा हो गयी? क्या तेरे ज़ालिम और बे रहम बाप ने तुझे दफ़न कर दिया? आह, नहीं! मैं इस ग़म को बर्दाश्त नहीं कर सकूंगी, दीवानी हो जाऊंगी।

सलमा रो रही थी, ज़ार व क़तार रो रही थी। उस के गालों पर आंसू का दरिया बह रहा था। उस ने गहरी सांस ले कर कहा, आह! अरब में औरतें कितनी बेबस और बेकस हैं, कितनी ज़लील व हक़ीर हैं? किसी काम में दख़ल देने का अख़्तियार नहीं, लौंडियों की तरह सिर्फ़ काम करती हैं। मासूम बच्चियां ज़िंदा दफ़न कर दी जाती हैं, रोती हैं, तड़पती हैं, लेकिन छिपकर, सब के सामने रोने का भी हुक्म नहीं। वहशी इंसानो! तुम कितने ज़ालिम हो, बेरहम मर्दूद, तुम कितने संगदिल हो! अपनी औलाद को अपने हाथों ज़िंदा दफ़न करते हो। तुम को कब अक़्ल आएगी? तुम नहीं जानते कि औरतों को इस से कितना ग़म और कैसी तक्लीफ़ होती है।

सलमा ख़ामोश हो गयी। रोने से उस के दिल की भड़ास निकल गयी। अभी तक वह दीवार से लगी खड़ी थी। कुछ सोच रही थी बेहाल और निढाल।

वह दीवार से अलग हुई। उस ने कहा, लानत है इस मकान पर और यहां के रहने वालों पर। अब एक दम न रहूंगी, वहां जाऊंगी, जहां मेरी जमीला है। मुझे जाना चाहिए ख़ाक छानने के लिए। बग़ैर जमीला के ज़िंदगी किस काम की!

यह कहते ही सलमा घर से बाहर निकल आयी। रात का वक़्त था। अंधेरी रात थी। सितारे आसमान पर बिखरे हुए चमक रहे थे, लेकिन उनकी चमक का फ़ायदा ज़मीन वालों को हासिल न था। मक्के की गलियां और रास्ते नाहमवार और तंग थे, जगह-जगह कूड़े-करकट के ढेर लग रहे थे। सलमा ठोकरें खाती जा रही थी। गढ़ों और कूड़े-करकट के ढेरों पर गिरती जा रही थी। उस वक़्त न उस के हवास ठिकाने थे, न अक़्ल ठिकाने थी। अंधेरा कुछ देखने न देता था। वह गिरती पड़ती चली जा रही थी। बहुत देर के बाद वह बैतुलहराम के पास पहुंची।

जब वह चाहे ज़मज़म के पास आ गयी, तो असाफ़ और नाइला दो बुत उसे सामने नज़र आए। वह बेइख़्तियार उन बुतों के सामने गिर गयी। उस ने रो-रो कर कहा, मेरे माबूद! मेरे ख़ुदा! मुझ पर रहम कर! मुझ से मेरी जमीला को मिला दे। आह जमीला!

सलमा फिर रोने लगी। जमीला की याद ने उसे बेचैन कर दिया था। वह देर तक सज्दे में पड़ी रोती रही। कुछ देर के बाद उठी, दोपट्टा के आंचल से आंसू पोंछे, खड़ी हुई और चल पड़ी। ठोकरें खाती, गिरती-पड़ती मक्का से बाहर निकली। उस वक़्त वे लोग लड़कियों को दफ़न कर

के वापस आ रहे थे, वह उन्हें देख कर एक दीवार की आड़ में खड़ी हो गयी। जब सब चले गये, तो वह निकली और आगे बढ़ने लगी।

खुला मैदान, रेगिस्तान, सफ़ेद-सफ़ेद रेत चमक रही थी। यहां इतना अंधेरा न था, जितना मक्के के कूचों और गलियों में था। सलमा बढ़ती रही, यहां तक कि उस जगह पहुंची, जहां लड़कियां दफ़न की जाती थीं। वहां पहुंच कर सलमा चिल्लायी, जमीला !

उस की दर्द भरी आवाज़ रेगिस्तान में गूंज कर जबले नूर से टकरायी। दूसरी आवाज़ गूंजी। सलमा चौंकी। उसने कहा, आह ! मेरे सिवा कोई और बदनसीब भी अपनी जमीला को याद कर रहा है। वह बढ़ती रही। थोड़ी दूर चली थी कि किसी ने डांटते हुए कहा खबरदार ! कौन आ रहा है ?

सलमा डरी नहीं, बराबर बढ़ती रही। कुछ ही दूर चल कर उस ने देखा कि एक अरब बैठा ज़मीन खोद रहा था। बाल बिखरे हुए, चेहरा भयानक और खौफ़नाक ! उस ने कहा, कौन है तू ?

सलमा ने बग़ैर झिझके कहा, एक दुखी औरत !

अरब जल्दी से उठ कर खड़ा हो गया , बोला, औरत ! रात को इस भयानक जगह पर आने की वजह ?

सलमा ने डरते हुए कहा, एक बेबस मां को एक बेटी की ममता ले आयी है।

अरब ने कहा, तू कौन है ?

मासूम जमीला की मां ! आह जमीला !

सलमा ने कुछ इस दर्दमन्दी से जमीला कहा कि अरब से न रहा गया। उस ने कहा, सलमा ! तुम्हारी दर्दनाक आवाज़ तो आसमान के टुकड़े-टुकड़े कर देगी, ज़मीन को फाड़ डालेगी। मेरा दिल कांप रहा है।

सलमा अरब के ऊपर झुक गयी। उस ने कहा, आप का एहसान होगा, बड़ा एहसान ! तुम बड़े मेहरबान हो ! कौन हो तुम ?

अरब का दिल सलमा की बातों का असर ले रहा था। उस ने कहा, मैं एक ज़ालिम इंसान हूं, बेदर्द वहशी हूं, सलमा ! मैं वह बेरहम दरिंदा हूं कि जब लोग लड़कियों को गाड़ कर चले जाते हैं, तो मैं रात में उन्हें निकाल कर ज़ेवर उतार लेता हूं। जो लड़की ज़िंदा होती है, उस का गला घोंट कर मार देता हूं।

सलमा या तो उस पर झुकी हुई थी या चौंक कर खड़ी हो गयी। उस ने हैरत भरे लहजे में कहा, तुम !

अरब ने कहा, मुझे मलामत न करो सलमा ! इस वक़्त तुम्हारी हालत देख कर, तुम्हारी बातें सुन कर मेरा दिल कांप गया है। उफ़, मैं ने किस क़दर दरिंदगी की है, मगर सोचो ज़रा ग़ौर से कि क्या यह मेरी बेरहमी, यह दरिंदगी उन इंसानों से ज़्यादा है, जो इन मासूम लड़कियों को अपने हाथों से ज़िंदा दफ़न कर देते हैं।

सलमा ने कहा, नहीं मगर !

अरब ने बात काटते हुए कहा, सलमा ! मेरा दिल और मेरा ज़मीर मुझे मलामत करता है। तुम क्यों मुझे मलामत करती हो ? सुनो, अब मैं इंसान बनूंगा, आह ! जिन माओं की गोदों से लड़कियां छीन कर लायी जाती हैं, दुख और तक्लीफ़ से उन की क्या हालत होती होगी, तेरा हाल देख कर मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया है।

सलमा ने कहा, मुझे देखो, मेरी हालत को देखो, आह जमीला !

अरब ने कहा, सलमा ! तुम ख़ुशक़िस्मत हो। जमीला ज़िंदा है। जब सब लोग चले गये, तो मैं ने ऊपर से रेत हटा कर सब से पहले उसे निकाला। उस की सांस चल रही थी। मेरा ख़याल यह था कि उसे मार डालूं। फिर यह ख़्याल आया कि पहले और लड़कियों को निकाल कर उस के ज़ेवर निकाल लूं। इस का ज़ेवर बाद में उतार कर इसे मार डालूंगा, इसलिए वह बच गयी।

सलमा ने पूछा, वह कहां है ?

अरब उस का हाथ पकड़ कर ले चला। थोड़ी दूर चल कर वह एक गढ़े के किनारे पर जाकर खड़ा हो गया। उस ने कहा यह है ?

सलमा ने ध्यान से देखा, नन्हीं सी लाश गढ़े के किनारे पर पड़ी हुई थी।

सलमा बे-अख़्तियार उस के ऊपर झुक गयी। उस ने अपनी गोद में ले कर कहा, जमीला ! मेरी जमीला !

कुछ अंधेरा था, कुछ लाश रेत से अटी हुई थी, कुछ सलमा की आंखों में आंसू भरे थे। वह पहचान न सकी। उस के ऊपर झुक गयी। धूल में सने ठंडे चेहरे को बोसे लेने लगी, और अरब नन्हीं से लाश से धूल झाड़ने लगा।

वह्य का उतरना

हुज़ूर सल्ल० मय हज़रत ख़दीजा अपने मकान पर तशरीफ़ लाये। कुछ खजूरें खा कर सो रहे। सुबह जागते ही कुछ खजूरें, एक छागल में थोड़ा पानी ले कर घर से चले। चूंकि अबरश ने मक्का के तमाम बाशिदों को बता दिया था कि उन के बाप-दादा के मज़हब के ख़िलाफ़ और उन के ख़ुदाओं के ख़िलाफ़ हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही होंगे जो आवाज़ उठाएंगे, इस लिए हर अरब के दिल में हुज़ूर की ओर से ख़ौफ़ पैदा हो गया था और हर आदमी आप को गुस्से भरी नज़रों से देखने लगा था। लेकिन आप अपनी नज़रें नीचे किये चलते और इस की परवाह भी न करते कि कौन किस जज़्बे से आप को घूर रहा है।

चुनांचे आज हुज़ूर सल्ल० इस शान से निकले कि मुबारक कंधे पर एक तरफ़ सत्तू का थैला लटका हुआ था, दूसरी तरफ़ खजूरों का। बाएं कंधे पर काला ऊनी कम्बल पड़ा था। हाथ में पानी की छागल थी। साफ़ लग रहा था कि आप कहीं सफ़र पर जा रहे हैं।

लोगों ने आप को देखा, तेज़ नज़रों से देखा, ग़ज़ब भरी नज़रों से देखा, पर हुज़ूर सल्ल० ने किसी की तरफ़ भी न देखा। आदत के मुताबिक़ सिर झुकाये चलते रहे। जब बैतुलहराम के पास गये, तो तवाफ़ किया और मक्का से निकल कर जबले नूर की तरफ़ रवाना हुए। पहाड़ सामने ही नज़र आ रहा था, मक्के से तीन मील की दूरी पर।

पहाड़ सूखे थे, न कहीं पेड़, न पौधे, स्याह जला हुआ पहाड़ लग रहा था। आप पहाड़ पर पहुंच कर एक ग़ार में उतरे। ग़ार ज़्यादा बड़ा न था, लगभग पौने दो गज़ चौड़ा और चार गज़ लम्बा। एक ऊंची चट्टान ग़ार के ऊपर ऊठी हुई थी। उस चट्टान की वजह से ग़ार के भीतर न धूप की तेज़ी का पता चलता था, न वहां गर्म हवाएं पहुंचती थीं।

उस ग़ार का नाम ग़ारेहिरा था।

हुज़ूर सल्ल० का दिल आबादी से उचाट हो गया था। इस लिए तंहाई अपना ली थी। कई दिन आप उसी ग़ार में पड़े रहे। जब सत्तू और खजूरें ख़त्म हो गयीं, तो आप मकान पर तशरीफ़ ले आये, दूसरे दिन फिर सत्तू और खजूरें ले कर चले गये। कुछ दिन फिर तंहा पड़े रहे। फिर जब सत्तू और खजूरें ख़त्म हो गयीं, तो मक्का वापस हुए। अभी आप सफ़ा

और मर्व: तक ही पहुंचे थे कि वही आदमी आप को फिर मिला, जिस ने पहले आप को पकड़ कर भींचा था।

सफ़ेद कपड़ों में लिपटा वह हुज़ूर सल्ल० का रास्ता रोक कर खड़ा हो गया।

आप ने पूछा, तुम कौन हो ?

उस ने जवाब दिया, आप अल्लाह के रसूल हैं और मैं जिब्रील हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने हैरत भरी नज़रों से जिब्रील को देख कर कहा, फ़रिश्ता जिब्रील !

हां, फ़रिश्ता जिब्रील, वह फ़रिश्ता जो तमाम नबियों के पास आता रहा है। ऐ अल्लाह के रसूल ! अब मैं तुम्हारे पास भेजा गया हूं।

क्या मैं ख़ुदा का रसूल हूं ?' हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

हां, आप ख़ुदा के रसूल हैं। ख़ुदा ने आप को चुन लिया है।'

मैं तो उम्मी हूं। लिखना-पढ़ना बिल्कुल नहीं जानता।

ख़ुदा की यही मस्लहत है, जिब्रील ने कहा।

हुज़ूर सल्ल० के देखते ही देखते हज़रत जिब्रील ग़ायब हो गये। हुज़ूर सल्ल० घबराये, चेहरे पर पसीना आ गया। आप जल्दी-जल्दी चल कर अपने मकान में दाख़िल हो गये। हज़रत ख़दीजा ने आप को देखा। देखते ही वह समझ गयीं कि आज फिर कोई बात हुई है।

आप कमरे में जा कर चारपाई पर लेट गये और हज़रत ख़दीजा से फ़रमाया कि मुझे कम्बल उढ़ा

हज़रत ख़दीजा ने कम्बल ..ढ़ा दिया। अभी आप को लेटे हुए थोड़ी देर गुज़री थी कि एक जलाल भरी आवाज़ आयी, 'ऐ चादर में लिपटे हुए, उठो और लोगों को अल्लाह के अज़ाब से डराओ, और अपने रब की बड़ाई और बुज़ुर्गी बयान करो, पाकदामनी अख़्तियार करो और शिर्क व बदी की गन्दगी से बचो।

आप घबरा कर उठे। आप के देखते ही देखते हज़रत जिब्रील ग़ायब हो गये। आप ने अपनी प्यारी बीवी की तरफ़ देखा। हज़रत ख़दीजा पास ही बैठी थीं, दुखी और ग़म में डूबी हुई। आप को उठते देखा, तो कह बैठीं, मेरे सरताज क्या बात है ?

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ख़दीजा को पूरी बात बतायी, तो बोलीं, वरक़ा ने सच कहा था कि हुज़ूर पर ख़ुदा का पैग़ाम नाज़िल होगा और आप अल्लाह के रसूल होंगे।

आप ने फ़रमाया, लेकिन ख़दीजा ! मुझे अपनी क़ौम से डर है। मुझे

जो ख़ुदा हुक्म देगा, वह करूंगा, पर डर है शायद मेरी क़ौम न माने।

हज़रत ख़दीजा ने कहा, यह डर तो है, लेकिन क्या आप क़ौम के डर से ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करने से बचेंगे।

आप ने फ़रमाया, कभी नहीं। लेकिन मैं नहीं जानता कि ख़ुदा क्या हुक्म देगा और मैं किस तरह उस का हुक्म पूरा कर सकूंगा ?

हज़रत ख़दीजा ने कहा, अल्लाह ने फ़रमाया है कि लोगों को उस के अज़ाब से डराओ, उस की बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करो।

बेशक ख़ुदा ने फ़रमाया, लेकिन आज अरब का पूरा इलाक़ा बुतों को पूजता है, मेरी आवाज़ कौन सुनेगा ? यक़ीनन हर आदमी, हर क़बीला, सारा हिजाज़ और सारा अरब मेरा दुश्मन हो जाएगा। मैं तंहा किस-किस का और किस तरह से मुक़ाबला करूंगा ?

बेशक एक आदमी का नहीं, एक ख़ानदान का नहीं, एक क़बीले का नहीं, सारे अरब का मुक़ाबला करना होगा। हज़रत ख़दीजा ने कहा।

प्यारे नबी बोले—मगर कुछ हो ख़दीजा ! मैं मुक़ाबला करूंगा। ख़ुदा की मदद के भरोसे पर मुक़ाबला करूंगा। क्या ख़ुदा मेरी मदद न करेगा ?

ज़रूर करेगा, हज़रत ख़दीजा बोलीं, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ! अरब बड़े संगदिल होते हैं। जिन बुतों को वे और उन के बाप-दादा पूजते रहते थे, वे कैसे छोड़ देंगे, उन की बुराइयां सुन सकेंगे ? क्या आप को मालूम नहीं कि अबरश ने मक्का वालों के दिल में हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से बुराई पैदा कर के उन को हुज़ूर सल्ल० के ख़िलाफ़ भड़का दिया है।

मुझे मालूम है, हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मगर ख़ुदा के बन्दों तक ज़रूर पहुंचाऊंगा। इस के बाद आप चुप हो गये।

हज़रत ख़दीजा के दिल पर इस का बड़ा असर हुआ, इसलिए कि वह जानती थीं और ख़ूब अच्छी तरह जानती थीं कि हुज़ूर सल्ल० जो कहते हैं, वही करते हैं, जो करते हैं, वही कहते हैं और जो वायदा करते हैं, उसे पूरा भी करते हैं। लोग सदियों से बुतों की पूजा करते चले आरहे हैं। जिस वक़्त भी आपने बुतों के ख़िलाफ़ कुछ भी कहा, आप को कोई छोड़ेगा नहीं सब आप पर टूट पड़ेंगे और सारी क़ौम का मुक़ाबला आप को अकेले करना पड़ेगा। इस ख़्याल ने हज़रत ख़दीजा को दुखी कर दिया। वह देर तक सर झुकाए कुछ सोचती रहीं। फिर उठीं, चादर ओढ़ी और घर से बाहर निकल आयीं। सामने की गली में घुस कर चलने लगीं, चौराहे पर पहुंचीं, दाहिने हाथ मुड़ीं और कुछ दूर चलकर एक मकान के दरवाज़े पर जा

खड़ी हो गयीं। यह मकान पत्थर का बना हुआ था। आप ने ऊंची आवाज़ में कहा, मैं अन्दर आ सकती हूं।

अन्दर से आवाज़ आयी, आ जाओ, तुम कौन हो ?

हज़रत ख़दीजा मकान के भीतर दाख़िल हुईं। छोटा सा मकान था। धूप तेज़ पड़ रही थी। गर्म हवा के झोकें चल रहे थे, इस लिए आंगन में कोई न था। हज़रत ख़दीजा एक कमरे में गयीं। यहां एक बूढ़ा आदमी चटाई पर लेटा था टख़नों तक लम्बा ऊनी जुब्बा पहने था। सफ़ेद और लंबी दाढ़ी थी। यह आदमी ईसाई राहिब था, उस का नाम अदास था। वह हज़रत ख़दीजा को जानता था। हज़रत ख़दीजा को देख कर अदास ने पूछा, इस तेज़ धूप और गर्म हवा में क्यों तक्लीफ़ की ?

मैं कुछ बातें पूछना चाहती हूं।

क्यों, क्या बात है ?

बताइए, जिब्रील कौन हैं ?

अदास ने हज़रत जिब्रील का नाम सुनते ही इज़्ज़त के साथ सिर झुका लिया, फिर हसरत से हज़रत ख़दीजा को देख कर कहा, तुम ने हज़रत जिब्रील का नाम कैसे और किस से सुना ?

हज़रत ख़दीजा ने कहा, मैं सब कुछ बता दूंगी, पहले जो मैं पूछू, उस का जवाब दे दीजिए। बताइए, जिब्रील कौन हैं ?

जिब्रील वह मुक़द्दस फ़रिश्ता है, जो ख़ुदा का पैग़ाम रसूलों पर लेकर नाज़िल होता है।

क्या वह ख़ैर व बरकत लेकर नाज़िल होता है?

जिस बस्ती पर वह नाज़िल होता है, वह बस्ती ख़ैर व बरकत से भर जाती है।

अगर मैं कोई बात आप से कहूं, तो क्या आप उस की राज़दारी करेंगे?

मैं इक़रार करता हूं कि तुम्हारी बात किसी पर ज़ाहिर न करूंगा।

हज़रत ख़दीजा संभल कर बैठ गयीं। उन्हों ने कहा, आप मेरे शौहर हज़रत मुहम्मद को जानते हैं ?

जानता हूं।

आप उन्हें क्या समझते हैं ?

बनू हाशिम का ख़ानदान तमाम ख़ानदानों में सब से बेहतर है और ख़ानदान बनी हाशिम में हज़रत मुहम्मद सबसे ज़्यादा सच्चे, अमीन, नेक और अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं।

अच्छा सुनिए, हज़रत मुहम्मद कहते हैं कि उन पर जिब्रील का नुज़ूल

होता है।

अदास अपनी घुसी हुई छोटी-छोटी आंखों से हज़रत खदीजा को बड़े गुस्से से देर तक देखता रहा। कुछ देर के बाद बोला, यह वस्वसा है। अगरचे यह ठीक है कि एक नबी बहुत जल्द आने वाला है, लेकिन क्या ज़रूरी है कि वह मुहम्मद ही हों ?

लेकिन आज तक उन्होंने कभी कोई झूठ बात नहीं कही। हज़रत खदीजा ने बताया।

यह जिन्नों का हाथ मालूम होता है, डरो नहीं। यह इन्जील लाओ, यह आसमानी किताब है। अगर जिन्नों का हाथ है, तो इस किताब को देखकर तेरा शौहर परेशान होगा और अगर वाक़ई इस पर जिब्रील का नुज़ूल शुरू हो गया है, तो उस पर कोई असर न होगा और वह यक़ीनन बे-खबर है।

अदास ने हज़रत खदीजा को इन्जील दी। हज़रत खदीजा ने अदास का शुक्रिया अदा किया और इन्जील चादर में छिपा कर उठीं मकान से निकलीं और अपने घर की ओर चल पड़ीं।

जब वह अपने घर पहुंचीं तो पसीने में डूबी हुई थीं। उन्हों ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० चुपचाप बैठे हैं। हज़रत खदीजा ने चादर उतार कर एक तरफ़ रख दी और इंजील हुज़ूर सल्ल० के सामने की। हुज़ूर सल्ल० ने धीरे-धीरे सर उठा कर इन्जील को देखा। हज़रत खदीजा ध्यान से हुज़ूर सल्ल० के मुबारक चेहरे को देखती रहीं। हुज़ूर का चेहरा चमक रहा था, परेशानी नाम को न थी। हुज़ूर ने हज़रत खदीजा की तरफ़ देख कर कहा, यह कौन सी किताब है खदीजा ?

हज़रत खदीजा ने कहा मुक़द्दस इंजील ! अब भी हुज़ूर के चेहरे पर किसी क़िस्म की बेचैनी या घबराहट ज़ाहिर न हुई।

हुज़ूर ने पूछा, तुम कहां से और क्यों लायी हो ?

हज़रत खदीजा ने तमाम वाक़िआ कह सुनाया।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया, क्या तुझे यह शक है खदीजा! मुझ पर जिन्नों का असर है ?

खदीजा ने कहा अब शक न रहा, मेरे हुज़ूर ! मुझे यक़ीन आ गया आप पर जिब्रील नाज़िल होते हैं।

हुज़ूर सल्ल० मुस्करा कर खामोश हो गये। हज़रत खदीजा काम में लग गयीं।

जाने मादर

दुखी सलमा ने जमीला को अपनी गोद में लिया और सीने से लगा लिया। अरब जमीला के जिस्म से लपटी धूल और गर्द को झाड़ता रहा और सलमा बराबर प्यार करती रही। जी भर प्यार कर लेने के बाद उस ने कहा, बेटी जमीला ! आंखें खोलो ! तुम्हारी बद नसीब मां तुम्हारे पास आयी है।

लेकिन जमीला अभी तक बेहोश थी। अरब और सलमा, दोनों उसे हवा देने लगे। लेकिन हवा ने कुछ काम न दिया।

अरब ने कहा, अगर कहीं पानी मिल पाता तो उस के चेहरे पर छींटा देकर इसे होश में लाने की कोशिश की जाती।

सलमा बोली, आह ! यहां पानी कहां है ? पानी तो मक्का ही में मिल सकता है ?

अरब बोला, मुश्किल यह है कि मक्का नहीं जा सकता, क्योंकि वहां अक्सर लोग मेरे दुश्मन हैं, अगर किसी ने देख लिया, तो तुरन्त मार डालेंगे।

सलमा बोली, अच्छा, तुम यहां जमीला को देखते रहो, मैं मक्का जा कर पानी लाती हूं।

अरब और सलमा दोनों में अब परायापन बाक़ी न रहा था।

अरब ने कहा, न तुम्हारे हवास दुरुस्त हैं और न अपने क़ाबू में हो। मक्का यहां से दूर है। अंधेरी रात है, मुम्किन है कि तुम भटक जाओ और मैं तमाम रात बैठा तुम्हारा इन्तिज़ार करता रहूं।

फिर क्या हो ?

तुम अगर कहो, तो मैं जमीला को गोद में उठा कर चलूं और मक्का से बाहर छोड़ दूं। वहां से तुम अपने साथ ले जाना।

क्या मैं मक्का जा सकती हूं, क्या जमीला को उस का बेदर्द बाप घर में घुसने देगा ?

मुश्किल है।

मुश्किल नहीं, ना मुम्किन है।

फिर क्या हो ?

तुम मुझे और जमीला को यहीं छोड़ दो। मैं इसी रेगिस्तान में अपनी

बच्ची को लेकर जिंदगी बिता लूंगी।

जानती हो दिन में धूप किस क़दर तेज पड़ती है। इस रेगिस्तान का ज़र्रा-ज़र्रा भाड़ के रेत की तरह तेज़ गर्म हो जाता है। तुम दोनों इस में कैसे रहोगी ?

न रह सकूंगी तो मैं और जमीला दोनों जल-भुनकर साथ ही मर जाएंगे।

गोया इरादा कर चुकी हो कि अपने घर वापस न जाओगी।

किस तरह जा सकती हूं। अगर मेरी बच्ची को होश आ गया और मैं उस को लेकर मकान पर पहुंची, तो क़ैस मुझे और मेरी जमीला को घुसने न देगा।

यह तो है !

तो फिर मैं कैसे घर वापस जा सकती हूं।

अच्छा तो फिर मेरे साथ चलो।

आप की मेहरबानी का शुक्रिया, मगर मैं तुम पर किस हक़ से बोझ डाल सकती हूं ?

इन्सानी हमदर्दी के हक़ से। सलमा ! मैं दरिंदों जैसा एक इन्सान था। मेरे दिल में रहम व करम का नाम भी न था। मैं ने सैकड़ों बच्चों को गला घोंट कर मारा है। तुमने मुझे मेहरबानी करने का सबक़ सिखाया है। मैं तुम को अपनी बहन और जमीला को बहन की लड़की समझ कर पालूंगा।

तब ठीक है, मैं साथ रहूंगी। लेकिन यह तो बताओ, तुम क्या करते हो और कहां रहते हो ?

तायफ़ के रास्ते पर नखला से उस तरफ़ नख़लिस्तान है। उसमें हमारा क़ाफ़िला ठहरा हुआ है।

कितनी दूर है यहां से ?

शायद आठ मील है।

इतनी दूर जमीला को कौन ले जाएगा ?

मैं ले जाऊंगा, जमीला का बोझ ही क्या है !

मेरे उपकारी ! तुम्हारा नाम क्या है ?

मेरा लक़ब असद है, असली नाम हारिसा है।

असद नाम कैसे मशहूर हुआ ?

इस लिए कि हमारे क़बीलों में मुझ से ज्यादा बहादुर कोई नहीं है।

हमारा क़बीला बनी बक्र की एक शाखा है। क़बीला बनू बक्र हमारा

मुख़ालिफ़ है। एक बार उस क़बीले ने हमें तबाह किया था। फिर तंहा मैंने उनके बीस आदमी क़त्ल किये थे। उस वक़्त से मेरा नाम असद मशहूर है।

मगर बनू बक्र ख़ानाबदोश क़बीला है।

हां, हम लोग कभी एक जगह जम कर नहीं रहते। अगर ख़ानाबदोशी की ज़िंदगी पसन्द हो तो मेरे साथ चलो।

ज़रूर चलूंगी। अच्छा तुम जमीला को उठा लो।

हारिसा ने बेहोश जमीला को उठा लिया। सलमा भी उठी और दोनों तायाफ़ की तरफ़ चल पड़े। दोनों एक ख़ेमे के पास पहुंचे, हारिसा ने जमीला को सब्ज़े पर लिटा दिया। ख़ेमे के भीतर घुस कर एक कम्बल निकाला। कम्बल बिछा कर जमीला को लिटा दिया। प्याले में पानी भर लाया और जमीला के मुंह पर पानी के छींटे देने शुरू किये।

थोड़ी देर में जमीला ने आंखें खोल दीं।

ख़ास तब्लीग़

हज़रत मुहम्मद सल्ल० एक मुद्दत से तंहाई में रहना पसन्द करने लगे थे। ज़्यादातर हिरा के ग़ार में वक़्त गुज़ारते, हफ़्तों घर न आते, ऐसा लगता था, गोया हुज़ूर को दुनिया से नफ़रत हो गयी है।

हुज़ूर बचपन में अपने चचा अबू तालिब के साथ शाम देश में तिजारत के लिए तशरीफ़ ले जाते रहे। जवानी में हज़रत ख़दीजा की तिजारत का माल ले जाते थे। आप सच्चे और अमानतदार थे। कारोबार में मामला इतना साफ़ रखते थे कि किसी को भी किसी क़िस्म की शिकायत न होती। सब ख़ुश रहते। जो एक बार आप से मामला कर ले, आप पर मोहित हो जाता। सिर्फ़ मक्का ही नहीं, यमन, बसरा, शाम के मुल्क में भी हुज़ूर जहां-जहां तशरीफ़ ले गये और जिन लोगों ने आप से मामला किया, सब आप की तारीफ़ करते।

अक्सर लोग आप के साथ तिजारत का माल कर देते। आप पूरी ईमानदारी से माल बेचते और पूरी क़ीमत मालिक को दे देते। इस से आप की सच्चाई, ईमानदारी, दयानतदारी, अच्छे अख़्लाक़ की आम शोहरत हो गयी। यह शोहरत इतनी बढ़ी कि दुनिया ने आप को 'अमीन ताजिर' का लक़ब दे दिया। हर जगह आप इसी नाम से मशहूर हो गये। आप वायदे के इस क़दर सच्चे थे कि जो वायदा कर लेते, हज़ारों मुसीबतें उठाने पर

भी उसे पूरा करते। एक बार अब्दुल्लाह बिन अबिल हम्स ने तिजारत के बारे में कुछ मामला किया। अभी मामला पूरे तौर पर तै न हुआ था कि अब्दुल्लाह को किसी ज़रूरत से कहीं जाना पड़ा। उस ने कहा, मैं अभी आता हूं, आप ठहरे रहें। आप ने ठहरने का वायदा कर लिया। इत्तिफ़ाक़ से अब्दुल्लाह अपने वायदे को भूल गया और तीन दिन तक न आ सका। आप बराबर उसी जगह ठहरे रहे। तीसरे दिन अब्दुल्लाह को अपना इक़रार याद आया। चूंकि वह जानता था कि हुज़ूर वायदे के सच्चे हैं, उसी जगह मौजूद होंगे, इसलिए वहीं आया। उसे डर था कि हुज़ूर सल्ल० उसकी इस ग़लती पर उसे डांटें-फटकारेंगे। वह हांपता-कांपता वहां आया, देखा तो हुज़ूर सल्ल० वहां मौजूद थे। उस ने आते ही बहाना किया, आप कुछ न बोले, ग़ुस्सा तो दूर की बात। सिर्फ़ आप ने इतना भर कहा कि अब्दुल्लाह ! तुम ने मुझे परेशान किया। मैं तीन दिन से इसी जगह मौजूद हूं। इस के बाद मामला तै हो गया।

आप की दयानतदारी पर लोगों को इतना भरोसा था कि नक़द रुपयों के अलावा क़ीमती चीजें भी आप के पास अमानत रख जाते थे और जब ज़रूरत पड़ती, ले जाते। हर चीज़ अपनी असली शक्ल में मिलती। आप की इस दयानतदारी और अमानतदारी की शोहरत आम हो गयी। हज़रत ख़दीजा ने भी सुना, तिजारत के कामों में इम्तिहान भी लिया। आप के अच्छे अख़्लाक़, पाकबाज़ी, शराफ़त, दयानत व अमानत और शराफ़त का उन पर ऐसा असर हुआ कि ख़ुद नफ़ीया नाम की औरत के ज़रिए शादी का पैग़ाम दे दिया।

हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलद बहुत शरीफ़ ख़ातून थीं। उन का ख़ानदानी सिलसिला पांचवीं पीढ़ी से हुज़ूर सल्ल० के ख़ानदान से मिलता है। वह बेवा थीं। बहुत शरीफ़ और पाकीज़ा अख़्लाक़ थीं। लोग उन को ताहिरा के नाम से याद करते थे। दौलतमन्द इतनी थीं कि जब मक्के वालों का क़ाफ़िला तिजारत के लिए रवाना होता तो अकेला उनका सामान तमाम क़ाफ़िले के सामान के बराबर होता था। उस ज़माने में उन से बड़ा ताजिर मक्के में कोई न था।

जब उन्होंने निकाह का पैग़ाम दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने चचा अबू तालिब से मश्विरा कर के मंज़ूर कर लिया, चुनांचे निकाह हो गया। निकाह का ख़ुत्बा अबू तालिब ने पढ़ा और पांच सौ दिरहम मह्र क़रार पाया। चूंकि हज़रत ख़दीजा मालदार थीं, ख़ूबसूरत और पाकीज़ा अख़्लाक़ थीं, क़ुरैश के ऊंचे ख़ानदान से थीं, इसलिए अक्सर लोगों ने उन से निकाह

करने का इरादा किया था, पर उन्होंने तमाम दर्ख़ास्तें रद्द कर दी थीं, शायद उन का निकाह करने का इरादा था ही नहीं, पर हुज़ूर की अमानत व दयानत और सच्चाई और अच्छे अख़्लाक़ की शोहरत सुन कर ऐसी निछावर हुईं कि ख़ुद निकाह का पैग़ाम देकर निकाह कर लिया।

निकाह के वक़्त हुज़ूर सल्ल० की उम्र पच्चीस साल और हज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस साल थी। हज़रत ख़दीजा से आप के दो लड़के क़ासिम और ताहिर पैदा हुए और बचपन ही में इन्तिक़ाल कर गये। क़ासिम इस हद तक बड़े हो गये थे कि सवारी वग़ैरह पर सवार हो सकते थे। क़ासिम की वजह से आप का लक़ब अबुल क़ासिम मशहूर हुआ। हज़रत ख़दीजा से आप की चार साहबज़ादियां हज़रत फ़ातमा, हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुक़ैया और हज़रत उम्मे कुलसूम हुईं। इन में हज़रत रुक़ैया सब से बड़ी थीं। हज़रत ज़ैनब का निकाह अबुल आस बिन रुबैअ से हुआ था। हज़रत उम्मे कुलसूम का निकाह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० से हुआ था। उन की वफ़ात के बाद हज़रत रुक़ैया हज़रत उस्मान से ब्याही गयीं। इसी वजह से हज़रत उस्मान का लक़ब ज़ुन्नूरैन था। हज़रत फ़ातमा सबसे छोटी थीं।

आप के चचा अबू तालिब के तीन बेटे अक़ील, जाफ़र और अली थे, बाल-बच्चेदार थे। तंगी के साथ वक़्त गुज़रता था। एक बार जब क़हत पड़ा और अबू तालिब बड़ी तंगी में गिरफ़्तार हो गये, तो हुज़ूर सल्ल० अपने चचा अब्बास से फ़रमाने लगे कि चचा अबू तालिब तंगी की ज़िंदगी जी रहे हैं, हमें चाहिए कि हम उनकी मदद करें। एक लड़के को आप ले आएं और एक को मैं ले आऊं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने मंज़ूर कर लिया। दोनों अबू तालिब की ख़िदमत में पहुंचे और उन से अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की। अबू तालिब ने कहा, अक़ील को मेरे पास रहने दो, जाफ़र को अब्बास ले जाएं और अली को तुम ले जाओ। चुनांचे हज़रत जाफ़र को अब्बास ले गये और हज़रत अली को हुज़ूर सल्ल० ले आए और उन की परवरिश करने लगे।

हज़रत ख़दीजा के एक भतीजे हकीम बिन हिज़ाम थे। दौलतमन्द आदमी थे। वह एक ईसाई ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिस को ख़रीद लाये थे। उन्होंने ज़ैद को हज़रत ख़दीजा को भेंट कर दिया। हज़रत ख़दीजा ने हुज़ूर सल्ल० की नज़्र कर दिया। आप ने उसे अपने अज़ीज़ की तरह अपने पास रख लिया।

कुछ दिनों के बाद ज़ैद के बाप हारिस और चचा काब उसे लेने के

लिए आए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। निहायत आजिज़ी से दर्ख़ास्त की कि ज़ैद को या तो आज़ाद कर के उन के साथ कर दिया जाए या उन की मुनासिब क़ीमत लेकर आज़ाद कर दिया जाए।

आप ने फ़रमाया, अगर ज़ैद आप के साथ जाने पर तैयार हो, तो मैं उसे आज़ाद कर दूंगा। चुनांचे ज़ैद को बुलवाया गया। उन के बाद हारिस ने उन से पूछा, ज़ैद! क्या तुम हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो?

ज़ैद ने जवाब दिया, नहीं।

हारिस को बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने पूछा, किस वजह से?

ज़ैद ने जवाब दिया, अगरचे मैं ग़ुलाम हूं, मगर मैं एक ऐसे बा-अख़्लाक़ और मेहरबान की ख़िदमत में हूं, जिस की इनायत ने मेरे दिल में घर कर लिया है और मैं उन से जुदा होना नहीं चाहता।

हारिस को ग़ुस्सा आया। उस ने कहा बदबख़्त! क्या तू आज़ादी को ग़ुलामी पर तर्जीह देता है?

ज़ैद ने कहा, हज़रत मुहम्मद सल्ल० की ग़ुलामी पर हज़ारों आज़ादियां क़ुर्बान हैं। मैं ने उन में ऐसी बातें देखी हैं कि मैं सारी दुनिया पर उन्हें तर्जीह दूंगा।

हारिस और उस के चचा काब ने बहुत समझाया, पर वह किसी तरह वहां से जाने पर राज़ी न हुए। मजबूरन दोनों ख़ामोश हो गये।

हुज़ूर सल्ल० उठे और ज़ैद और उन के बाप और चचा को साथ लेकर ख़ाना काबा में आ गये और यह ऐलान किया कि लोगो! गवाह रहो कि आज मैं ने ज़ैद को आज़ाद कर दिया है और उसे अपना बेटा बना लिया है। ज़ैद के बाप और चचा इस बात से ख़ुश हो गये और ज़ैद को आप के पास छोड़ कर चले गये। आप का रसूख़ हर तब्क़े के लोगों में था, रईस, अमीर, ग़रीब, फ़क़ीर, सिपहसालार, सिपाही, ग़रज़ कि सब से आप मिलते और सब आप से मिलते थे, लेकिन आप के ख़ास ताल्लुक़ ख़ास लोगों से थे, और ज़्यादा अबू बक्र बिन क़हाफ़ा से ताल्लुक़ात थे।

अबू बक्र निहायत ख़ूबसूरत थे। ख़ूबसूरती की वजह से आपका लक़ब अतीक़ पड़ गया था। आप क़बीला बनू तमीम में से थे। ख़ून बहा और तावान का फ़ैसला करने के लिए आप हाकिम बनाये जाया करते थे। आप का फ़ैसला तमाम क़बीलों को बे चून व चरा मानना पड़ता था। बहुत अमीर थे। मिस्र व शाम को तिजारत की ग़रज़ से जाया करते थे। तमाम क़बीलों में आप का असर व रसूख़ था। छठी पीढ़ी में आप का ख़ानदान

हुज़ूर सल्ल० के ख़ानदान से मिल जाता है।

उस्मान बिन अफ़्फ़ान आप के दामाद थे। हज़रत उस्मान की नानी हुज़ूर सल्ल० के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह की सगी बहन थीं, जो हज़रत अब्दुल्लाह के साथ जोड़वां पैदा हुई थीं। इस तरह हज़रत उस्मान हुज़ूर सल्ल० की फूफीज़ाद बहन के बेटे थे। निहायत मालदार, बड़े सख़ी, बड़े शर्मीले थे। आप से भी हुज़ूर सल्ल० के ख़ास ताल्लुक़ात थे। इनके अलावा अबू सुफ़ियान, ख़ालिद, अबू जहल, सुहैब वग़ैरह से भी ताल्लुक़ात थे। हर क़बीला, क़बीले का हर आदमी आप को इज्ज़त की नज़रों से देखता था। अक्सर लोग आपसी लड़ाई के वक़्त आप को हकम क़रार देते थे, आप के फ़ैसले को मानते थे, लेकिन जब से आप हिरा की गुफा में ज़्यादा वक़्त लगाने लगे थे, उस वक़्त से आप ने लोगों से मिलना-जुलना छोड़ दिया था और जब से आप पर वह्य आनी शुरू हुई, तो आप चुपचाप रहने लगे लगे थे। हज़रत ख़दीजा को आपकी ख़ामोशी से बड़ी चिन्ता हो गयी थी। किसी काम में दिल नहीं लगता था।

हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश बैठे थे कि हज़रत अली आ गये। हज़रत अली आप ही के पास रहते थे। उम्र में बहुत छोटे थे। ख़ामोश देख कर उन्हें कुछ कहने की हिम्मत न हुई। शाम तक हुज़ूर बैठे रहे। रात को खाना खाकर आराम किया, इस के बाद वह्य आती रही।

एक दिन आप पहाड़ के दामन में बैठे हुए थे कि हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाये और उन्होंने वुज़ू किया। हुज़ूर सल्ल० ने भी इसी तरह वुज़ू किया, जिस तरह हज़रत जिब्रील ने किया था। फिर हज़रत जिब्रील ने नमाज़ पढ़ी। उस दिन से हुज़ूर नमाज़ पढ़ने लगे। आप तंहा नमाज़ पढ़ते थे, न कोई उस वक़्त तक मुसलमान हुआ था, न नमाज़ पढ़ता था। पहले तो आप पहाड़ी पर नमाज़ पढ़ते थे। फिर धीरे-धीरे मकान पर भी नमाज़ पढ़ने लगे।

हज़रत ख़दीजा, हज़रत अली, ज़ैद आप को नमाज़ पढ़ते हैरत से देखा करते थे। वह्य के आने का सिलसिला जारी रहा। एक वह्य में आया 'और तुम को जो हुक्म दिया गया है, खोल कर कह दो।'

आप रब के इस हुक्म को सुन कर परेशान हो गये। आप की परेशानी सही भी थी। उस वक़्त सभी लोग गुमराही में पड़े हुए थे, ख़ास तौर पर अरब का हर क़बीला और हर आदमी मुल्हिद था। बुत परस्ती आम थी, ख़ुदा को कोई जानता भी न था, फिर ऐसे सख़्त और सरकश लोग थे कि बुतों के खिलाफ़ एक लफ़्ज़ भी सुनने को तैयार न थे। हुज़ूर सल्ल० सोचने

लगे कि तब्लीग़ कहां से और कौन से लोगों से शुरू की जाए? ख़ुदा का हुक्म हुआ कि अपने क़रीबी ख़ानदान वालों को ख़ुदा से डराओ।

वह्य ने तब्लीग़ का रास्ता बताया। आप ने तुरन्त तब्लीग़ शुरू की।

सब से पहले हज़रत मुहम्मद ने हज़रत ख़दीजा के सामने ख़ुदा की तारीफ़ बयान की। हज़रत ख़दीजा बुतों की पूजा करती थीं, मगर वह वरक़ा से सुन चुकी थीं कि हुज़ूर सल्ल० पैग़म्बर हो जाएं तो अजब नहीं, फ़ौरन ईमान ले आयीं, कुफ़्र व शिर्क से तौबा कर के मुसलमान हो गयीं। हुज़ूर सल्ल० को उन के मुसलमान होने से ख़ुशी हुई। हुज़ूर सल्ल० तंहा नमाज़ पढ़ा करते थे, अब हज़रत ख़दीजा के साथ मिल कर पढ़ने लगे। एक दिन हुज़ूर सल्ल० और हज़रत ख़दीजा नमाज़ पढ़ रहे थे कि हज़रत अली आए। उस वक़्त आप को सख़्त ताज्जुब हुआ, अगरचे आप पहले भी हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ पढ़ते देख चुके थे, लेकिन हज़रत ख़दीजा को कभी न देखा था। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो आप ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, आप दोनों क्या कर रहे हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़ पढ़ रहे हैं।

आप ने हैरान होकर कहा, नमाज़! लेकिन सज्दा बुतों को किया जाता है और आप के सामने कोई बुत न था?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बुतों को नहीं पूजते, बल्कि ख़ुदा को पूजते हैं।

हज़रत अली यह सुन कर हैरान रह गये।

आप ने कहा, यह तो अजीब बात है, मैं ने पहले कभी नहीं सुनी।

हुज़ूर ने फ़रमाया, अली! मैं ख़ुदा का रसूल हूं। ख़ुदा का पैग़ाम मुझ पर उतरता है। आओ, तुम भी दीने हक़ में दाख़िल हो जाओ।

हज़रत अली ने कहा, मुझे सोचने दीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अली! अगर तू इसे क़ुबूल कर ले तो रात तक उसे छिपाना, ताकि ख़ुदा तेरे दिल में इस्लाम डाल दे।

हज़रत अली ने इस बात का इक़रार कर लिया।

जब रात गुज़र गयी तो हज़रत अली हुज़ूर के पास आए और कहा, मैं अब ख़ुदा के दीन में दाख़िल होना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने तुरन्त कलिमा पढ़वा कर मुसलमान कर लिया और हिदायत की कि अभी अपने इस्लाम को किसी पर ज़ाहिर न करें।

हुज़ूर सल्ल० चाहते थे कि धीरे-धीरे कुछ लोग मुसलमान हो जाएं, तब एलानिया तब्लीग़ करें और हुक्म भी यही आया था कि पहले घर

वालों को ख़ुदा से डराओ।

एक दिन आप बैठे थे कि हज़रत अबूबक्र आये। जब वह बैठ चुके तो हुज़ूर ने फ़रमाया, अबूबक्र ! तुम मुझे क्या समझते हो ?

हज़रत अबूबक्र ने कहा, बहुत नेक और बहुत बा-अख़्लाक़ !

और सच्चा भी ?

हां, सच्चा भी ! मैं ने कभी ग़लत बात कहते हुए आप को न सुना।

अगर मैं यह कहूं कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं और मुझ पर वह्य उतरती है, तो तुम यक़ीन करते हो।

बेशक यक़ीन करूंगा।

अच्छा सुनो, मुझ पर वह्य उतरती है। मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं और ख़ुदा का हुक्म है कि ग़ैर-अल्लाह की पूजा छोड़ दो। उसी को पूजो जिसने तुम को पैदा किया है और जिस के हाथ में फ़ना और बक़ा है।

मैं उस अल्लाह पर ईमान लाया।

आप को यह सुन कर बेहद ख़ुशी हुई और हज़रत अबूबक्र को सीने से लगा लिया। थोड़ी देर बाद हज़रत अबूबक्र चले गये।

कुछ दिनों के बाद आप ने ज़ैद से कहा, ज़ैद ! मैं अल्लाह का रसूल हूं। उस के भेजे दीन का प्रचार करता हूं। तुम भी अल्लाह के दीन में दाख़िल हो जाओ।

ज़ैद बोले, मेरे मालिक ! मैं आप को ख़ूब अच्छी तरह जानता हूं, इस लिए मुझे आप की बातों में ज़रा भी शक नहीं है। आप मुझे मुसलमान कर लें।

हुज़ूर सल्ल० ने ज़ैद को भी मुसलमान कर लिया।

अब तीन बहुत ही क़रीबी लोग हुज़ूर सल्ल० पर ईमान ला चुके थे। दीन की तब्लीग़ का काम बड़ी राज़दारी, ख़ामोशी और चुपके-चुपके शुरू हुआ। लेकिन यह बात छिपने वाली कब थी ? धीरे-धीरे लोगों को मालूम होने लगी। सारे मक्का में चर्चा शुरू हो गयी। कुफ़्फ़ारे मक्का ने सुना, सख़्त नाराज़ हुए और खुल कर कह दिया कि जो कोई हमारे माबूदों की बुराई करेगा, हम उसे कड़ी से कड़ी सज़ा देंगे।

अगरचे आप जानते थे कि हम तंहा हैं, कमज़ोर हैं, मक्का वालों का मुक़ाबला किसी तरह भी नहीं कर सकेंगे, पर आप न डरे, न घबराये, बल्कि पहले ही की तरह तब्लीग़ करते रहे। यह एक ऐसी दलेरी की बात थी, जिस की मिसाल तारीख़ में नहीं मिलती। एक अकेले आदमी का सारी क़ौम और पूरे मुल्क के मुक़ाबले में खड़े हो जाना बड़े दिल-गुर्दे की

बात थी, वह भी इस हालत में कि न आप के हाथ में तलवार थी और न तलवार में यह ताक़त थी कि आप लोगों को डरा-धमका सकें, न आप के पास आदमी थे कि क़ौम आप के आदमियों की धौंस खा जाती, न हुकूमत थी जिस से लोग दब जाते, न दौलत थी कि कोई लालच में आ जाए। कहने का मतलब यह है कि कुछ न था, हां, अगर कुछ था तो ख़ुदा का यक़ीन था, इसी यक़ीन ने आप में बे-मिसाल हौसला पैदा कर दिया था।

आप ख़ुदा के भरोसे बराबर तब्लीग़ में लगे रहे, मगर एलानिया नहीं, ख़ुफ़िया तौर पर। जो आप के पास आता, चाहे वह मक्के का हो, या मक्के से बाहर का, आप उस के सामने भी अल्लाह का कलाम पढ़ देते, ख़ुदा का हुक्म बयान कर देते। अगरचे शुरू में आप की तब्लीग़ का तरीक़ा यही रहा, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों का ज़िक्र घर-घर होने लगा।

आम तब्लीग़

हुज़ूर सल्ल० ने चुपके-चुपके तब्लीग़ शुरू की थी, लेकिन चूंकि हर आदमी के सामने, जो आप के पास आता, अल्लाह का हुक्म बयान फ़रमाते एक ख़ुदा को सबका पैदा करने वाला बताते, लोग सुनते, लेकिन जवाब न दे पाते, अलबत्ता अपने घरों और मज्लिसों में जा-जाकर इस नये दीन का ज़िक्र करते और मज़ाक़ उड़ाते।

इस तरह इस्लाम का ज़िक्र घर-घर छिड़ गया।

लोग सुन-सुन कर हैरान भी हो रहे थे और ग़ुस्से से दांत भी पीसते, लेकिन यह पता न चलता कि कौन-कौन मुसलमान हो गये हैं, इस लिए चुप रह जाते।

हुज़ूर सल्ल० ने एलानिया तब्लीग़ शुरू न की थी, इसलिए किसी को उन पर सख़्ती करने की हिम्मत न पड़ती थी।

हज़रत अबूबक्र का असर तमाम क़बीलों पर था, इसलिए इस्लाम अपनाने के बाद आप ने अपने हर मुलाक़ाती से इस्लाम की बात कहनी शुरू कर दी। लोग सुनते, असर क़ुबूल करते और इस्लाम अपना लेते। चुनांचे आप की कोशिशों से हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ईमान लाये। इन हस्तियों में हज़रत उस्मान काफ़ी मालदार थे कि इसी वजह से लोग उन्हें 'ग़नी' कहा करते थे।

अब हम सब लोगों ने मिल कर तब्लीग़ का काम शुरू किया, लेकिन यह तब्लीग़ अभी तक राज़दारी के साथ हो रही थी। फिर भी इन तमाम कोशिशों के नतीजे में धीरे-धीरे इस्लाम फैलने लगा।

चुनांचे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत अबू तलहा, अब्दुल असद बिन हिलाल, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत क़ुदामा बिन मज़ऊन, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत फ़ातमा, हज़रत सईद बिन ज़ैद की बीवी वग़ैरह बहुत से लोग मुसलमान हो गये। धीरे-धीरे मुसलमानों की तायदाद बढ़ने लगी।

अभी तक सब लोग मक्का के सरदारों से डरते थे, इसलिए अपने इस्लाम को छिपाये हुए थे। नमाज़ छिप कर पढ़ते थे या तो अपने घरों के कमरों में घुस कर नमाज़ अदा करते थे या पहाड़ों के दर्रों और ग़ारों में जाकर नमाज़ पढ़ते थे।

चूंकि हर आदमी अपने मुसलमान होने को छिपाता था, इस लिए मुसलमानों को भी मालूम था कि कौन-कौन से लोग मुसलमान हो चुके हैं।

कुछ दिनों के बाद हज़रत उमर, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत ज़ुबैर भी मुसलमान हो गये।

जो लोग अभी तक मुसलमान हुए, वे अपने अख़्लाक़ में सब से नुमायां थे, लेकिन मालदार बिल्कुल न थे, बल्कि अक्सर तो ग़ुलाम और लौंडियां थीं।

उस वक़्त के मुसलमान नमाज़ें भी छिप-छिप कर पढ़ते थे। हुज़ूर सल्ल० अक्सर पहाड़ी दर्रों में जा कर नमाज़ पढ़ा करते थे, कभी-कभी हज़रत अली को भी साथ ले जाते थे और अपने साथ नमाज़ पढ़ाते थे।

एक दिन हुज़ूर हज़रत अली को साथ लेकर एक दर्रे में पहुंचे। नमाज़ का वक़्त हो गया था। दोनों नमाज़ पढ़ने लगे। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अली के चचा अबू तालिब उधर से आ निकले। अबू तालिब के साथ हज़रत जाफ़र हज़रत अली के भाई भी थे। दोनों क़रीब खड़े थे। हैरत भरी नज़रों से हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अली को नमाज़ पढ़ते हुए देखने लगे। कुछ देर के बाद अबू तालिब ने हज़रत जाफ़र से कहा, हुबल की क़सम! जिस तरीक़े पर मुहम्मद नमाज़ पढ़ रहे हैं, बड़ा ही दिल लुभाने वाला तरीक़ा है। जाफ़र! तू भी अपने चचेरे भाई के बाज़ू में खड़ा हो जा।

फ़ौरन हज़रत जाफ़र दूसरी तरफ़ खड़े हो गये। नमाज़ पढ़ते देखा तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाफ़र! तुम मुसलमान हो जाओ।

हज़रत जाफ़र ने भी इस्लाम अपना लिया। हुज़ूर ने दुआ दी, अल्लाह तुझे जन्नत में दो बाज़ू दे, जिस से तू फ़िरदौस में उड़ सके। उसी दिन से आप का नाम जाफ़र तैयार हो गया।

जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो आप ने अबू तालिब को खड़े देखा। आप ने अपने चचा को सलाम किया। अबू तालिब ने पूछा, बेटे! यह तुम क्या कर रहे हो?

चचा! मैं नमाज़ पढ़ रहा था।

अबू तालिब ने हैरान होकर पूछा, नमाज़ पढ़ रहे थे? तुम्हार सामने तो कोई ख़ुदा (बुत) था नहीं?

हुज़ूर ने बताया, मैं बुतों को सामने रखकर नमाज़ नहीं पढ़ता।

फिर किस की नमाज़ पढ़ रहे थे? अबू तालिब ने पूछा।

उस ख़ुदा की, जिस ने सब कुछ पैदा किया है। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया।

नमाज़ का यह तरीक़ा तुम ने किस से सीखा? अबू तालिब ने पूछा।

चचा! जिब्रील फ़रिश्ते से! आपको बहीरा राहिब का वाक़िआ याद है?

हां, याद है?

मुझ पर वह्य नाज़िल होनी शुरू हो गयी है। अल्लाह ने मुझे पैग़म्बरी के लिए चुन लिया है।

तुम पर अल्लाह का क्या पैग़ाम नाज़िल हुआ?

आप ने क़ुरआन की तिलावत शुरू कर दी।

अबू तालिब सुन रहे थे। उन के दिल पर इन आयतों का असर हो रहा था। बदन कांपने लगा था, जब हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश हुए, तो अबू तालिब ने पूछा, यह कौन सा मज़हब है?

आप ने बताया, यह इब्राहीम का तरीक़ा है, उन्हीं का दिया हुआ यह नाम इस्लाम है और इस के मानने वाले मुसलमान कहलाते हैं।

अबू तालिब बोले, बेटे! यह तो बड़ा अच्छा मज़हब है। अल्लाह की इबादत का यह बहुत अच्छा तरीक़ा है। हमें फ़ख़्र है कि हमारे ख़ानदान में नबी पैदा हुआ। प्यारे बेटे! तुम्हारे दादा की पेशीनगोई पूरी हुई। क्या तुम जानते हो वह पेशीनगोई क्या थी?

नहीं, चचा! आप ने कहा।

मैं बताता हूं। अबू तालिब बोले, जब तुम पैदा हुए थे, तो तुम्हारे दादा ने तुम्हारा नाम मुहम्मद रखा था। लोगों ने एतराज़ किया कि आप

ने अपने पोते का नाम नया और निराला क्यों रखा ? तो आप ने कहा, इस लिए कि मेरा पोता दुनिया में सूरज बन कर चमकेगा। बेटे ! अब जब कि तुम पर वह्य आने का सिलसिला शुरू हो चुका है और अल्लाह ने तुम्हें अपना रसूल बना लिया है, तो यक़ीनन तुम हिजाज़ के नहीं, अरब के नहीं, पूरी दुनिया के सूरज बन कर चमकोगे।

अबू तालिब आप के चचा थे, सरपरस्त थे, बुज़ुर्ग थे। आप को उन के सामने ज़ुबान खोलने की हिम्मत न होती थी, लेकिन जब आप ने अबू तालिब की बातें सुनीं तो कहने की हिम्मत हुई। आप ने फ़रमाया, चचा ! आप भी मुसलमान हो जाएं।

अबू तालिब बोले, मेरा दिल तो चाहता है कि मैं मुसलमान हो जाऊं और तेरे साथ खड़ा होकर नमाज़ पढ़ू, अनदेखे ख़ुदा को पूजूं, पर बाप-दादा के मज़हब को छोड़ते हुए शर्म आती है। जब लोग कहेंगे कि अपने भतीजे का धर्म अपना लिया, तो क्या जवाब दूंगा ? शर्म वग़ैरह से कट-कट कर रह जाऊंगा। हां, मैं तुम्हारी मदद करते रहने का वायदा करता हूं। मेरे जीते जी तुझे कोई आंख उठाकर नहीं देख सकता। मेरी तलवार उस के सर पर चमक जाएगी, जो तुम को तक्लीफ़ पहुंचाने का इरादा करेगा। हां, अली और जाफ़र को मैं ने इजाज़त दी। ये दोनों तेरे मज़हब में रहेंगे।

अबू तालिब ने हज़रत अली से कहा, बेटा ! तुम मुहम्मद का साथ न छोड़ना। जो मज़हब तुम ने अपनाया है, ज़िंदगी भर उस का साथ देना।

हुज़ूर सल्ल० ने अबू तालिब का शुक्रिया अदा किया। अबू तालिब घर चले गये। हुज़ूर अली और जाफ़र को लेकर अपने मकान पर आ गये।

अबू तालिब की इस हिमायत के वायदे से हुज़ूर सल्ल० बहुत ख़ुश थे।

कुछ दिनों के बाद हुज़ूर सल्ल० सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गये और ऊंची आवाज़ से एक-एक क़बीले का नाम ले कर पुकारना शुरू किया।

हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ सुनते ही तमाम क़बीलों के सरदार, रईस, अमीर-ग़रीब जमा हो गये।

अरब में तरीक़ा था कि जब किसी को कुछ कहना होता, तो किसी ऊंची जगह पर चढ़ कर लोगों को बुलाता। जब सब आ जाते, तो जो कुछ कहना होता, कह देता।

हुज़ूर सल्ल० ने भी सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर मक्का वालों को बुलाया। जब क़रीब-क़रीब सब लोग आ गये तो आप ने पूछा, लोगो ! तुम मुझे क्या समझते हो ?

हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, आप अमीन हैं, कभी आप ने ख़िया-

नत नहीं की, आप सादिक़ हैं, कभी आप झूठ नहीं बोले।

आप ने फ़रमाया, अगर मैं तुम्हें यह ख़बर दूं कि सुबह को या शाम को दुश्मन का हमला होने वाला है तो क्या तुम मुझको सच्चा जानोगे ?

सब ने एक ज़बान होकर कहा, बेशक सच्चा जानेंगे, क्योंकि हमने आप को हमेशा बात का सच्चा पाया है।

आप ने फ़रमाया, अच्छा सुनो ! अज़ाबे इलाही नज़दीक आ गया है। तुम ख़ुदा पर ईमान लाओ, बुतों की पूजा छोड़ दो, ताकि अज़ाबे इलाही से बच जाओ।

यह सुनते ही पूरे मज्मे में शोर मच गया। अपने माबूदों के ख़िलाफ़ सुनते ही कुफ़्फ़ार झुंझला उठे, बिगड़ गये। अबू लहब हंस पड़ा। उस ने कहा, तुझ पर हलाकत हो। क्या तुमने इसीलिए जमा किया है ?

लोग इतने बिगड़ गये कि आप पर हमले का इरादा कर लिया, यह अलग बात है कि हमला करने की हिम्मत न पड़ी। हिम्मत न पड़ने की वजह यह थी कि हुज़ूर सल्ल० बनूहाशिम ख़ानदान से थे, जो क़ुरैश का सब से मोहतरम क़बीला माना जाता था और उस के किसी आदमी पर हमला करना आसान न था। इस लिए सब पेच व ताब खा कर रह गये

कुरैश की मुख़ालफ़त

हुज़ूर सल्ल० ने सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले जा कर मक्का के तमाम क़बीलों को बुला कर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और साफ़-साफ़ कह दिया कि अल्लाह का अज़ाब क़रीब आ लगा है, ख़ुदा पर ईमान ले आओ, उस ख़ुदा पर, जो सब का पैदा करने वाला है, जो पत्थर के अन्दर रहने वाले कीड़े को भी रोज़ी देता है, जो आग में और समुद्र में रहने वाले जानवरों को भी ज़िंदा रख सकता है। इबादत के लायक़ वही है, जिस ने सब कुछ बनाया है। बुतों की पूजा छोड़ दो, उन बुतों को, जिन को नादानी से तुम और तुम्हारे बाप-दादा पूजते हैं। ये बुत न ख़ुदा है, न ख़ुदा के दरबार में इन की पहुंच है। इन्हें तुम ने अपने हाथों से बनाया है। जिन्हें तुम ख़ुद बनाओ, वह तुम्हारे ख़ुदा कैसे हो सकते हैं ?

फिर ये बातें कब कहीं ? उस वक़्त, जब कि तमाम मक्का और सारा अरब और अरब का कोना-कोना बुतपरस्ती की लानत में गिरफ़्तार था। सदियों से लोग बुतों को ख़ुदा मान कर परस्तिश कर रहे थे। कभी किसी

ने बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ आवाज न उठायी थी, इस लिए कोई भी आदमी बुतों के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ भी सुनने को तैयार न था। बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ बोलने वाले की ज़िंदगी भी ख़तरे में थी। मगर आप ने किसी क़िस्म के ख़तरे की परवाह न की, इस लिए कि आप को ख़ुदा पर भरोसा था। इसी भरोसे ने आप का हौसला बढ़ा दिया था। यह हौसला हो था जब आप सफ़ा की पहाड़ी पर चढ़ कर इस्लाम की दावत दे रहे थे।

अगरचे आप उस वक़्त कामियाब न हुए, लेकिन आप को पैग़ाम पहुंचाने की ख़ुशी भी थी।

अब मुसलमानों की तायदाद बढ़ कर चालीस हो गयी थी। इस लिए आप और आप के साथी सभी इस्लाम की तब्लीग़ में लग गये।

एक दिन आप ने हज़रत अली से कहा कि दावत का सामान करो और तमाम क़रीबी रिश्तेदारों को बुला लाओ।

हज़रत अली ने दावत का सामान किया और तमाम रिश्तेदारों को बुला लाये। चुनांचे थोड़ी देर में लोग आना शुरू हो गये। अब्बास, हमज़ा, अबू लहब, अबू जह्ल, अबू तालिब, वलीद और बहुत से लोग आये।

सब के सामने खाना चुना गया। सब ने इत्मीनान से खाया। जब खाना खा चुके, तो हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए और आप ने फ़रमाया—

मेरे बुज़ुर्गो! जो कुछ मैं कहूं, उसे ठंडे दिल से सुनो और उस पर ग़ौर करो। यह ख़्याल न करो कि मेरी ये बातें तुम्हारे मज़हब के ख़िलाफ़ पड़ रही हैं या नहीं। देखो, तुम बुतों को पूजते हो और बुतों को इंसान ने बनाया है। क्या इंसान की बनायी हुई चीज़ भी इंसान का ख़ुदा हो सकती है? फिर बुत भी बहुत हैं? अगर दुनिया में इतने ख़ुदा हो जाएं, तो दुनिया का निज़ाम क़ायम नहीं रह सकता। यह ख़्याल भी सही नहीं है कि पत्थर के बुत ख़ुदा के दरबार में सिफ़ारिश करेंगे। न ये बुत बोल सकते हैं, न सुन सकते हैं, सिफ़ारिश आख़िर कैसे करेंगे? मेरा ख़्याल है, एक अल्लाह ही हम सब का माबूद है, वही आसमानों और ज़मीन का रब है, वही ज़िंदगी और मौत देता है। लोगो! तुम बहुत दिनों तक गुमराही के गढ़े में पड़े रहे, बहुत सो चुके, अब उठो, गुमराही से निकलो और एक ख़ुदा की इबादत करो।

तमाम लोग पूरे ध्यान के साथ हुज़ूर सल्ल० की बातें सुन रहे थे। अबू लहब पेच व ताब खा रहा था कि कहीं लोग हुज़ूर सल्ल० की बातों से मुतास्सिर हो कर अपने बाप-दादा का मज़हब छोड़ कर इस्लाम की

गोद में न चले जाएं। इस लिए उस ने टोका-टाकी शुरू कर दी। वह लोगों के ध्यान को हुज़ूर सल्ल० की बातों से मोड़ना चाहता था। चुनांचे ऐसा ही हुआ, लोगों की तवज्जोह हट गयी।

फिर अबू लहब उठ खड़ा हुआ। लोग भी खड़े हो गये और एक-एक दो-दो करके जाने लगे। सब से आख़िर में अबू लहब गया।

अगरचे इस दावत से भी हुज़ूर सल्ल० कोई फ़ायदा न उठा सके, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने कोई ख़्याल न किया और कुछ दिनों के बाद फिर दावत की गयी।

हुज़ूर की दावत में फिर सब लोग जमा हुए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने वही तक़रीर फ़रमायी। इस बार अबू लहब को गड़बड़ करने की हिम्मत न हुई, ख़ामोश सुनता रहा। दूसरे लोग भी ख़ामोशी से सुनते रहे। आख़िर में आप ने पूछा, कौन है मेरे इस नेक काम में मेरा मददगार? सब चुप रहे, कोई भी न बोला। हज़रत अली खड़े हुए। आप ने फ़रमाया—हुज़ूर सल्ल०! अगरचे मैं सब से छोटा हूं, कमज़ोर हूं, मगर मैं आप का साथ दूंगा, अपनी ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक साथ दूंगा।

अबू लहब हज़रत अली की बातें सुन कर हंस पड़ा। उस ने मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा, (मुहम्मद!) अली तुम्हारा साथ देगा, अब तुझे किस बात का डर?

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, तुम मज़ाक़ उड़ाते हो, तो ठीक है, कुछ दिन और उड़ा लो, फिर ख़ुद ही रोओगे-पछताओगे। (आप ने जोश में आकर कहा) सुनो और कान खोल कर सुनो, एक न एक दिन पूरा अरब बुतों की पूजा छोड़ कर रहेगा और इस्लाम का सूरज चमक उठेगा।

अबू लहब हंसता हुआ उठा और चला गया। उस के साथ ही तमाम लोग उठे और चले गये।

आज की दावत का भी कोई मुफ़ीद नतीजा न निकला।

अब आप ने यह तरीक़ा बना लिया कि जब नमाज़ का वक़्त होता, ख़ाना काबा में जाते और नमाज़ पढ़ने के बाद बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ ज़ोर-शोर से वाज़ फ़रमाते। इस से काफ़िरों में ग़ुस्सा फैल गया। हर बुतपरस्त आप का जानी दुश्मन हो गया।

तमाम क़बीलों ने मिलकर एक मज्लिसे शूरा बुलायी और यह तज्वीज़ पास की कि हुज़ूर सल्ल० को और उन लोगों को जो मुसलमान हो गये, जितनी भी तक्लीफ़ें दी जा सकें, दो।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० पर सब से पहले सख़्तियों की शुरूआत हुई।

शुरू-शुरू में बदमाश गोखरू काटेदार झाड़ लाते और रात को उस रास्ते पर बिछा देते, जिस से हुज़ूर सल्ल० गुज़रने वाले होते। चूंकि आप को गोखरू तक्लीफ़ देते थे, कांटेदार झाड़ दामने मुबारक से उलझ जाते, पर आप सब्र करते और गोखरू उठा कर कांटे समेत फेंक देते और कभी किसी से शिकायत न करते।

अरबों का ख्याल था कि हुज़ूर सल्ल० इन रोज़-रोज़ की सख़्तियों से तंग आ कर बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ जद्दोजेहद बन्द कर देंगे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० कैसे बन्द कर सकते थे। ख़ुदा का हुक्म नाज़िल हो चुका था कि एलानिया तब्लीग़ करो। आप बराबर तब्लीग़ करते रहे।

शरीर शैतानों को इस पर बड़ा गुस्सा आया। अब उन्हों ने निहायत घिनौने तरीक़े अख़्तियार किये। रात को जब हुज़ूर और हुज़ूर से मुता-ल्लिक़ लोग सोते होते, तो गन्दगी हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर, खाना पकाने के बरतनों पर, पानी पीने की छागलों पर फेंक जाते। इस से आप को बड़ी तक्लीफ़ होती।

हर दिन ख़ुद बरतनों को साफ़ करते, कपड़े धोते, नहाते, लेकिन ज़ुबान से कुछ न कहते।

जब अर्सा इसी तरह गुज़र गया, तो एक दिन इतना कहा कि, ऐ बनू अब्दे मुनाफ़ ! यह अच्छा पड़ोसी का हक़ अदा कर रहे हो ?

भला इस बात का उन पर क्या असर होता। वे बराबर गंदगी फेंकते रहे और हुज़ूर सल्ल० को हैरान करते रहे।

अब शरीर और बदमाश और गुंडे कुछ और ज़्यादा गुस्ताख़ हो गये थे। वे हुज़ूर सल्ल० के सामने हुज़ूर को बुरा-भला कहते, शाइर, मजनूं आराफ़, काहिन वग़ैरह-वग़ैरह का ख़िताब देते।

हुज़ूर सल्ल० जहां जाते, जिस मज्मे में खड़े हो कर तक़रीर करते, शरीर लोग वहीं पहुंच कर आवाज़ें कसना शुरू कर देते और किसी को हुज़ूर सल्ल० की बातें न सुनने देते, मगर हुज़ूर थे कि उन की किसी बात पर कान न धरते। बराबर हर एक मज्मे में वाज़ फ़रमाते रहे।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० ख़ाना काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे। उक़्बा बिन अबिल ऐता आ गया। उस ने आप के गले में चादर डाल कर इतना ऐंठा कि आप का दम घुटने लगा। आंखें उबल आयीं और मुबारक चेहरा लाल हो गया।

इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अबू बक्र रज़ि० उधर से आ निकले। आप उक़्बा पर झपटे और उसे धकेल कर एक तरफ़ कर दिया। इस बीच बहुत से

लोग जमा हो गये। हज़रत अबू बक्र ने बुलंद आवाज़ में कहा, क्या तुम ऐसे आदमी को क़त्ल करते हो, जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।

यह सुनते ही तमाम क़ुरैश के लोग हज़रत अबू बक्र पर झपट पड़े और उन्हें मारने-पीटने लगे। क़ुरैश के लोग ग़ुस्से से पागल हो रहे थे। इतने में कुछ नेक दिल लोग आ निकले और उन्होंने कह सुन कर हज़रत अबू-बक्र की जान बचायी।

इसी तरह एक दिन हुज़ूर सल्ल० हरम शरीफ़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। बहुत से लोग आप के पास जमा हो गये। जब आप नमाज़ पढ़ चुके, तो आप की शान में गुस्ताख़ी करने लगे। हज़रत हारिस बिन आला क़रीब ही थे। वह आ गये और उन्हों ने शरीर शैतानों को बाज़ रखना चाहा। लोग उन पर टूट पड़े और उन्हें उसी जगह शहीद कर दिया। हुज़ूर सल्ल० को उन की शहादत का बड़ा अफ़सोस हुआ। इस्लाम की राह में वह पहला ख़ून था, जिससे ज़मीन रंगीन हुई थी।

चूंकि हज़रत तंहा थे, कोई यार व मददगार न था। तमाम मक्का वाले इस बात को ख़ूब जानते थे। इस लिए शैतानों की गुस्ताख़ियां दिन-ब-दिन बढ़ती जाती थीं। एक दिन आप बैतुल्लाह शरीफ़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। अबू जह्ल भी मौजूद था। अबू जह्ल ने कहा, बाहर अभी ऊंट ज़िब्ह हुआ है। उस की ओझड़ी पड़ी हुई है। कोई उसे उठा कर लाओ और मुहम्मद के ऊपर डाल दो।

उक़्बा ने कहा, मैं लाता हूं।

चुनांचे वह गया और दो आदमियों को साथ ले कर ओझड़ी उठवा लाया। जब हुज़ूर सल्ल० सज्दे में गये, तो उस ने ओझड़ी आप सल्ल० की पीठ पर रख दी।

दुश्मन अपनी इस शैतानी हरकत पर खिलखिला कर हंसने लगे। इस मज्मे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद भी मौजूद थे। ये मुसलमान हो चुके थे। दिल में दुश्मनों की इस हरकत पर कुढ़ रहे थे, लेकिन कुछ कहने या ओझड़ी उठाने की हिम्मत न होती थी। चुपचाप खड़े रहे। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत फ़ातमा, जो हुज़ूर सल्ल० की सब से छोटी साहबज़ादी थीं, उधर आ निकलीं। आप अभी बहुत छोटी थीं। अपने अब्बा की यह हालत देख कर बहुत दुखी हुईं। उन्होंने अपने नन्हे-नन्हे हाथों से ओझड़ी को सरकाया और खड़े हो कर तमाम दुश्मनों को भला-बुरा कहा। किसी को उन से कुछ कहने की हिम्मत न हुई।

जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो आप ने हज़रत फ़ातमा की

पेशानी चूम कर कहा, बेटी ! क्यों उन्हें बुरा कह रही हो ? उन की आंखें नहीं हैं। अगर ये पहचान लेते तो ऐसी हंसी उड़ाने की बातें न करते। तुम उन को बुरा भला न कहो, बल्कि दुआ करो कि खुदा उन्हें देखने और समझने की ताक़त अता फ़रमाये।

इस के बाद आप हज़रत फ़ातमा को अपने साथ ले कर वापस चले आए। मुसीबतें यहीं नहीं खत्म हो गयीं, बल्कि दिन-ब-दिन बढ़ती ही गयीं।

धीरे-धीरे काफ़िरों को भी मालूम हो गया कि कौन-कौन से लोग मुसलमान हो गये हैं। इस लिए उन्हों ने एक बड़ी मज्लिसे शूरा बिठाने का इरादा कर लिया और तैयारियां शुरू हो गयीं।

मज्लिसे शूरा

जब तक हुज़ूर सल्ल० तंहा रहे, उस वक़्त तक न तो मक्का के कुफ़्फ़ार को कोई चिन्ता हुई और न घबराहट, बल्कि वे हुज़ूर सल्ल० की बातों का मज़ाक़ उड़ाते रहे, समझते रहे कि दो चार दिन तब्लीग़ करने के बाद खुद ही खामोश हो जाएंगे, लेकिन जब सुना कि आप की तब्लीग से बहुत से अरब मुसलमान हो चुके हैं, तो डरे, चिन्ता बढ़ने लगी और हुज़ूर सल्ल० के खिलाफ़ एक आम जोश पैदा हो गया।

इस बीच हुज़ूर सल्ल० पर वह्य नाज़िल हुई कि "(कह दो ऐ मुहम्मद सल्ल० ! कि) जिन चीज़ों को तुम पूजते हो, वे दोज़ख के इंधन होंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने सब को यह आयत बुलंद आवाज़ से कह सुनायी, इस से वे और भड़क उठे और आप पर बेजा गुस्ताखियों की बौछार शुरू कर दी। इतना तंग किया कि हुज़ूर सल्ल० का घर से निकलना मुश्किल हो गया, लेकिन आप अपनी तब्लीग़ में बराबर लगे रहे और उस में किसी क़िस्म की कोई कोताही न की।

चूंकि मुसलमानों की तायदाद में हर दिन बढ़ोतरी हो रही थी, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने ज़रूरत महसूस की कि कोई ऐसा मकान तज्वीज़ किया जाये, जिस में दो घड़ी के लिए मुसलमान हर दिन जमा हो कर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें और याद किया करें। चुनांचे अरक़म का मकान जो आबादी से एक तरफ़ था, तज्वीज़ किया गया। हुज़ूर सल्ल० उस मकान पर तशरीफ़ ले जाते, तमाम मुसलमान भी मक्का के कुफ़्फ़ार की नज़रों से बच-बचा कर एक-एक दो-दो कर के आ जाते, हुज़ूर सल्ल० के इर्शादात सुनते,

नमाज़ें पढ़ते, क़ुरआन शरीफ़ याद करते और ख़ामोशी से अपने-अपने घरों को वापस हो जाते ।

अगरचे यह सब काम ख़ामोशी से हो रहा था, फिर भी क़ुरैश वालों ने पता लगा ही लिया कि कौन-कौन मुसलमान हो गया है, ये लोग कहां जमा होते हैं और इन की तायदाद क्या है? इन बातों ने उन्हें और भड़का दिया। भड़कने की एक वजह यह भी थी कि जो लोग मुसलमान हो गये थे, उन में से ज़्यादा तर उन के ग़ुलाम थे या उन के ग़रीब रिश्तेदार थे।

इस घबराहट में उन्हों ने तमाम क़बीलों के सरदारों को मश्विरे के लिए बुला लिया। मज्लिसे शूरा का इज्लास शुरू हुआ। अबू जहल मीटींग का सरदार बना। अबू लहब ने खड़े हो कर कहा, भाइयो! आज हम सब इस लिए जमा हुए हैं कि हमारे मज़हब को ठेस लगायी जा रही है, हमारे मज़हब को बुरा-भला कहा जा रहा है। जिन बुतों को हम और हमारे बाप-दादा पूजते आ रहे हैं, अब उन को ज़लील किया जा रहा है। अब आप लोग इस की रोक-थाम का उपाय सोचें।

अबू लहब के बाद अबू सुफ़ियान खड़ा हुआ और उस ने कहा, हमारे लिए कितने शर्म की बात है कि हमारे सामने हमारे माबूदों को बुरा-भला कहा जाए और हम चुप-चाप बैठे देखा करें। क्या हम इतने नामर्द, बुज़दिल और बे-हिस हो गये हैं कि हमारे माबूदों को ज़लील किया जाए और हमारा ख़ून न खौले। अगर हमारी बे-हिसी इस हद तक हो गयी, तो हम को ज़िंदा रहने का हक़ नहीं है, या तो जोश व ग़ैरत से उठो, अपने बुतों की बुराई करने वालों का ख़ात्मा कर दो या अपने हाथ से अपने गले काट कर मर जाओ।

अबू सुफ़ियान का ताल्लुक़ बनू उमैया ख़ानदान से था। बनू उमैया बनू हाशिम के मुक़ाबले का था। यह उमवी यह कैसे देख सकता था कि एक हाशमी का असर बढ़े। हुज़ूर सल्ल० हाशमी थे, इस लिए अबू सुफ़ियान ले भड़काने वाली तक़रीर कर के लोगों के दिलों को गरमा दिया। हर तरफ़ से आवाज़ें आने लगीं, हम क्यों मरें! अपने माबूदों को रुसवा करने वालों का ख़ात्मा ही क्यों न कर दिया जाए।

हज़रत उमर ने खड़े हो कर कहा, ठहरो सोच-समझ कर बातें करो। क्या तुम यह नहीं जानते कि हमारे माबूदों को झूठा क़रार देने वाला, बुतपरस्ती की बुराई करने वाला मुहम्मद है, जो क़बीला बनी हाशिम से है। क़बीला बनी हाशिम क़ुरैश में सब से ज़्यादा इज़्ज़तदार क़बीला है।

तमाम क़बीले इस क़बीले का एहतिराम करते हैं। अगर किसी आदमी ने मुहम्मद को क़त्ल कर डाला, तो बनी हाशिम का खानदान उन का इन्तिक़ाम लेने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा देगा। हाशिमियों के साथी क़बीले उन का साथ देंगे। नतीजा यह होगा कि एक बार फिर तमाम अरब में लड़ाई की चिंगारियां भड़क उठेंगी और यह कोई नहीं जानता कि इस लड़ाई का नतीजा क्या होगा, कितने खानदान बर्बाद हो जाएंगे और कितने क़बीलों का खात्मा हो जाएगा।

अबू जह्ल ने हज़रत उमर से पूछा, तो क्या हम मुहम्मद से कुछ न कहें? अपने माबूदों की तौहीन इसी सरगर्मी के साथ करने दी जाए?

उमर बोले, कम से कम मैं यह नहीं चाहता कि वह क़त्ल कर दिये जाएं, इस से बड़े फ़िस्ने के पैदा होने का खतरा है, बल्कि मुनासिब यह है कि उन्हें समझाओ, उन पर सख्तियां करो, लेकिन क़त्ल न करो।

और जो लोग मुसलमान हो गये हैं, उन के साथ क्या व्यवहार किया जाए? अबू जह्ल ने पूछा।

वे जिन लोगों के रिश्तेदार या गुलाम हैं, वही लोग उन पर इस क़दर सख्तियां करें, वे नये धर्म से मुंह फेर कर फिर अपने माबूदों की ओर लौट आएं, उस ने मश्विरा दिया।

वलीद बिन मुग़ीरह ने कहा, मश्विरा तो मुनासिब है। मैं इस तज्वीज़ पर इतना और बढ़ाता हूं कि जो लोग मुसलमान हो गये हैं, उन पर सब के सामने सख्तियां की जाएं, ताकि दूसरों को सबक़ मिले और फिर मुसलमान होने की हिम्मत न कर सकें।

अब्बास बिन वाइल सहमी ने कहा, मेरे ख्याल में यह तज्वीज़ मुनासिब है। इस वक़्त जो लोग मुसलमान हुए हैं, उन में ज़्यादातर गुलाम और मुफ़्लिस हैं। जब उन पर सख्तियां होंगी, तो वे अपने बाप-दादा के मज़हब की तरफ़ लौटेंगे और चूंकि लोगों को उन की हालत देख कर सबक़ मिलेगा, इस लिए फिर कोई नये मज़हब को अख्तियार न करेगा।

सब ने इस तज्वीज़ की ज़ोरदार ताईद की और सब की राय से यही तै पाया कि मुसलमानों पर सब के सामने इतनी सख्तियां की जाएं कि वे मजबूर हो कर इस्लाम छोड़ दें और अपने बाप-दादा का मज़हब पकड़ लें।

इस तज्वीज़ के बाद उत्बा बिन रबीआ ने कहा, अब उन लोगों के नाम बता दिये जाएं, जो मुसलमान हो गये हैं।

अबू जह्ल ने कहा, मैं ने जहां तक हो सका, मुसलमानों की सूची तैयार कर ली है। इस में सिर्फ़ एक दो ही ऐसे असरदार बुज़ुर्ग हैं, जिन

का हम कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं, वरना सब के सब हमारे क़ाबू के हैं और हम उन पर भरपूर सख्तियां कर सकते हैं। जो नाम मुझे इस वक़्त तक मालूम हो सके हैं, मैं बताता हूं। हज़रत खदीजा, रज़ि० हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हज़रत अली रज़ि० हज़रत उस्मान रज़ि०, ये लोग क़ुरैश के शरीफ़ों में से हैं और इन लोगों पर सख्तियां करना मुश्किल है।

एक बूढ़े आदमी ने खड़े हो कर कहा, इस में से एक उस्मान है, जो मेरा भतीजा है। अगर उस ने इस्लाम न छोड़ा, तो उसे मारते-मारते मार डालूंगा।

यह बूढ़ा आदमी हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान का चचा था।

लोगों ने उस के जोश की तारीफ़ कर के उसे हज़रत उस्मान पर सख्तियां करने के लिए उभारा। जब वह जोश व ग़ज़ब से भर गया, तो अबू जह्ल ने सब के नाम बता दिये और यह कहा कि जासूस बाक़ी मुसलमानों का नाम जानने के लिए लगे हुए हैं, नाम मालूम होने पर सब को बता दिया जाएगा। फिर यह तै करने को कहा कि किस दिन से सख्तियां शुरू की जाएं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, देर करने की ज़रूरत नहीं है। कल से सब लोग सख्तियां शुरू कर दें और इस बढ़ते हुए फ़ित्ने को जितनी जल्द मुम्किन हो दबा दें।

सब ने इस तज्वीज़ की ताईद की। फिर मज्लिसे शूरा खत्म हो गयी। लोग उठे और अपने-अपने घरों को रवाना हो गये।

यह वह मज्लिसे शूरा थी, जिस ने तमाम क़बीलों में मुसलमानों के खिलाफ़ नफ़रत व हिक़ारत और जोश व ग़ज़ब की लहर दौड़ा दी थी।

मुसलमानों को इस साज़िश का पता न था। अगर उन्हें मालूम हो जाता, तो बिल्कुल मुम्किन था कि उन पर वे आज़माइशें न आतीं, जो बाद में आयीं। बहरहाल खुदा को यही मंज़ूर था, इसलिए उन्हें मालूम न हो सका।

दिल हिला देने वाले हालात

चूंकि तमाम क़ुरैश, क़ुरैश के सारे क़बीले और दूसरे तमाम क़बीले देख रहे थे कि उन के माबूदों की, जिन की वे और उन के बाप-दादा बराबर पूजा करते चले आ रहे थे, बड़ाई और इज़्ज़त मिट रही थी और बुतपरस्ती खतरे में पड़ती जा रही थी, इस लिए सब को ग़ुस्सा था और बदला लेने के लिए भरे बैठे थे। उन्हों ने तै कर लिया था कि जैसे भी

मुम्किन हो, मुसलमानों को सताकर सीधे रास्ते से फेर दें, इस्लाम छोड़ने पर मजबूर करें और फिर उसे अपने बाप-दादा के धर्म में दाख़िल कर लें।

इस ख़्याल ने उन्हें ज़ुल्म व सितम करने पर उभार दिया।

ज़ुबैर का चचा जिस वक़्त अपने घर पहुंचा, तो बहुत ग़ुस्से में था। जब हज़रत ज़ुबैर को देखा, तो लपक कर उन के बाल पकड़ कर खींचते हुए पूछा, बदबख़्त, ज़ुबैर! क्या तुम भी मुसलमान हो गये ?

हज़रत ज़ुबैर ने नरमी से जवाब दिया, हां चचा, मैं मुसलमान हो गया हूं।

चचा को बड़ा ग़ुस्सा आया। उस ने उन के सिर के बाल इस ज़ोर से खींचे कि हज़रत ज़ुबैर के आंसू निकल पड़े, बोला, ऐ ख़ानदान की नाक कटाने वाले! तुम मुसलमान क्यों हो गये हो ?

अगरचे हज़रत ज़ुबैर जवान थे, ताक़तवर थे। चाहते तो चचा को उठा कर फेंक देते, लेकिन वह अपने चचा का एहतराम करते थे, अपने बुज़ुर्ग की शान में गुस्ताख़ी की हिम्मत न हुई। धीरे से बोले, ऐ चचा! इस्लाम तौहीद की तालीम देता है। मैं अपने हाथों से तराशे हुए पत्थर के ख़ुदाओं को छोड़ कर उस ख़ुदा का परस्तार बन गया हूं, जो दुनिया का पैदा करने वाला है और जिस के हुक्म के बग़ैर ज़र्रा भी हरकत नहीं कर सकता।

उन के चचा को बड़ा ग़ुस्सा आया, उस ने कहा, सुन! कान खोल कर सुन! या तो तू इस्लाम छोड़ दे, वरना मैं तुझे ऐसी सख़्त सज़ा दूंगा कि लोगतेरी हालत पर अफ़सोस करेंगे।

हज़रत ज़ुबैर ने कहा, ऐ चचा! और जो आप फ़रमा दें, दिल व जान से क़ुबूल करने को तैयार हूं, पर इस्लाम को छोड़ दूं, यह मुझ से न हो सकेगा।

यह सुन कर उन के चचा को तैश आ गया। उस ने कहा, तेरी ऐसी जुरात-——अच्छा देखूं, तू कैसे इस्लाम को न छोड़ेगा ?

यह कहते ही बूढ़े ने हज़रत ज़ुबैर को खजूर की चटाई में लपेट दिया और ऊनी कपड़े की मशाल बना कर उसे जलाया और हज़रत ज़ुबैर की नाक में धुआं देना शुरू किया। जब तक मुम्किन हुआ, हज़रत ज़ुबैर ने सांस रोके रखा, लेकिन कब तक रोकते, आख़िर न रोक सके और धुआं दिमाग़ में पहुंचा। इस लिए आप को बड़ी तक्लीफ़ हुई। अगर आप धुएं की तरफ़ से मुंह फेरना चाहते, तो ज़ालिम चचा उन के सर के बाल पकड़ कर फिर धुएं की तरफ़ कर देता।
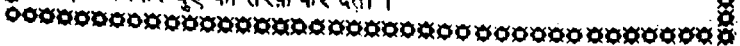
धुएं से इतनी तक्लीफ़ पहुंची कि आप पर ग़शी की हालत तारी हो गयी। उन के चचा ने उन की यह हालत देख कर आप से कहा, बदबख़्त ज़ुबैर ! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, तू तौबा कर, इस्लाम को छोड़ और अपने बाप-दादा की तरफ़ झुक।

अगरचे आप को सख़्त तक्लीफ़ हो रही थी। धुएं का ज़हर दिल व दिमाग़ में भर गया था, लेकिन इस्लाम का ऐसा नशा न था, जो इस धुएं से उतर जाता। आप ने फ़रमाया, ऐ चचा ! अगर आप मुझे धुआं दे कर मार भी डालेंगे, तब भी मैं इस्लाम को नहीं छोड़ूंगा।

बूढ़े को उन के जवाब पर ताज्जुब भी हुआ और ग़ुस्सा भी इस क़दर आया कि अपने हाथ अपने दांतों से काटने लगे। उस ने कहा, देखूंगा कि कब तक तू इस्लाम को नहीं छोड़ेगा ?

यह कह कर उस ने धुआं और नाक के क़रीब कर दिया। इस धुएं से हज़रत ज़ुबैर को इतनी तक्लीफ़ हुई कि आप बेहोश कर गिर गये, पर ज़ालिम चचा को बेहोश भतीजे पर भी रहम न आया। वह बैठ गया और बराबर धुआं देता रहा, यहां तक कि कपड़ा जल कर राख हो गया और बूढ़ा भी थक गया। थक कर उस ने ज़ुबैर को छोड़ दिया। हज़रत ज़ुबैर दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से बेख़बर बेहोश पड़े थे। न किसी ने उन्हें उठाया, न होश में लाने की कोशिश की।

जिस वक़्त हज़रत ज़ुबैर पर यह सख़्ती गुज़र रही थी, उस वक़्त हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान को उन के चचा ने बुला कर पूछा, बेटे ! क्या यह सच है कि तू भी मुसलमान हो गया है ?

हज़रत उस्मान ने जवाब दिया, हां, चचा ! यह सही है।

यह सुन कर उन के चचा को ग़ुस्सा आ गया। उस ने कहा—

कमबख़्त ! तू अनदेखे ख़ुदा को पूजता है। बेवक़ूफ़ ! अपने बाप-दादा के मज़हब को छोड़ कर नये मज़हब का पुजारी बन गया है, या तो इस मज़हब को छोड़ दे, वरना मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा।

हज़रत उस्मान ने कहा, चचा ! क्या तुम जानते हो कि जिस आदमी ने तमाम उम्र अंधेरे में गुज़ार दी और अब उसे रोशनी मिल गयी हो, वह रोशनी छोड़ कर फिर अंधेरे में जा पड़े। एक अक़्लमंद आदमी कभी ऐसा नहीं कर सकता।

उन के चचा को इस पर ग़ुस्सा आ गया और उस ने कहा, अच्छा, तू अंधेरे से उजाले में आ गया है, देख, यह रोशनी ही तेरी मौत का पैग़ाम है।

यह कह कर उस ने हज़रत उस्मान को खजूर की रस्सियों से जकड़ कर दुर्रे से बे-दरेग़ पीटना शुरू कर दिया और इतना पीटा कि आप का बदन लहूलुहान हो गया।

हज़रत उस्मान पिटते रहे, तमाम बदन ज़ख्मी हो गया। सख्त तक्लीफ़ हुई। आप ने तक्लीफ़ बर्दाश्त करने के लिए होंठों को दांतों में दबा लिया। आह तो आह, उफ़ तक भी न किया और इस्लाम को छोड़ने का वस्वसा तक पैदा न हुआ, आप ने अगर कहा तो सिर्फ़ यह कि मेरे जिस्म के टुकड़े कर डालो, लेकिन यह न होगा, हरगिज़ न होगा कि मैं इस्लाम को छोड़ दूं। मैं ज़िंदगी की आखिरी सांस तक मुसलमान रहूंगा।

उन का चचा इस बात पर और भी बिगड़े और उस ने पूरी ताक़त लगा कर हज़रत उसमान को मारना शुरू किया।

चमड़े का कोड़ा था, बदन के जिस हिस्से पर पड़ता था, खाल उधेड़ देता था। तमाम बदन ज़ख्मों से चूर था और जिस्म के मुख्तलिफ़ हिस्सों से खून का फव्वारा उबल रहा था। संगदिल से संगदिल को उन की इस हाल पर रहम आ जाता। अगर रहम न आया तो उन के ज़ालिम चचा को। वह बराबर आप को मारता रहा, यहां तक कि आप बेहोश हो कर गिर पड़े। चचा बोला, अब इसे ले जा कर एक कोठरी में बन्द कर दो, फिर उस को सज़ा दी जाएगी।

गुलामों ने हज़रत उस्मान को ले जा कर एक अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया।

दूसरे दिन फिर उन्हें निकाला और मारना शुरू कर दिया।

आप को आप के चचा ने उस वक़्त तक मारा, जब तक उस के हाथ में ताक़त रही। जब वह थक गया, तब छोड़ा।

आज तमाम मक्के में जोश था। कुफ़्फ़ार गली-गली फिर रहे थे। आज के दिन मुसलमानों पर सख्तियां होनी थीं। हर आदमी अपने-अपने मुलाज़िमों की खोज-बीन में घर से बाहर निकला था।

मुसलमान कमज़ोर थे, बेबस थे। मक्के का बच्चा-बच्चा उन का दुश्मन था। उन्होंने ख्वाब में भी यह न सोचा था कि उन पर मक्का के वहशी बाशिंदे इतनी सख्तियां करेंगे। वे दरिंदगी और बरबरता का निशाना बनने लगे और उन पर इंतिहाई ज़ुल्म व सितम किये जाने लगे।

हज़रत उमर बड़े बहादुर और बहुत सख्त थे। आप की बहादुरी कहावत बन गयी थी। तमाम क़बीले आप की बहादुरी के क़ायल थे। आप को मालूम हो चुका था कि आप की बांदी लुबनिया मुसलमान हो

गयी। आप ने गुस्से में पूछा, बदबख़्त बांदी ! किस लालच ने तुझे मुसल-मान होने पर मजबूर कर दिया। आप उस मुस्लिमा को बाल पकड़ कर खींचते हुए बाहर लाये।

लुबनिया पहले तो डरीं, घबरा गयीं, पर जब उमर ने उन से पूछा कि कौन-सी लालच से वह मुसलमान हुई है, तो उसे जोश आया। उस ने जवाब दिया, उमर ! किसी लालच ने मुझे मुसलमान होने पर नहीं उभारा। हज़रत मुहम्मद कोई मालदार नहीं हैं, बादशाह नहीं हैं, हाकिम नहीं हैं, उन के पास क्या रखा है ?

उमर ने बात काटते हुए कहा, फिर तू मुसलमान क्यों हुई ?

लुबनिया ने कहा, इसलिए कि इस्लाम सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करना सिखाता है, बुतों की पूजा करने से मना करता है।

उमर ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, बेवक़ूफ़ ! ख़्याली ख़ुदा को पूजती है ? कमबख़्त ! कमीनी ! इस्लाम को छोड़ दे।

लुबनिया ने आजिज़ी से कहा, मेरे आक़ा ! यह नामुम्किन है।

हज़रत उमर को गुस्सा आ गया। उन्होंने लुबनिया को मारना शुरू कर दिया। एक कमज़ोर औरत एक ताक़तवर मर्द की मार कैसे सह पाती। लुबनिया तड़पने लगी। चेहरा पोला पड़ गया। लेकिन सब्र के साथ सहती रही, यहां तक कि हज़रत उमर मारते-मारते थक गये। आप एक तरफ़ बैठ गये और कनीज़ से बोले, लुबनिया ! मैं ने तुझे रहम की वजह से नहीं छोड़ा, बल्कि इस वजह से छोड़ा है कि मैं थक गया हूं। ज़िंदगी चाहती है तो इस्लाम छोड़ दे।

लुबनिया ने बड़ी हिम्मत भरा जवाब दिया, ऐ उमर ! अगर तुम मेरी बोटी-बोटी उड़ा दो, हड्डियां तोड़ दो, तो भी यह नामुम्किन है कि इस्लाम छोड़ दूं। मैं तुम से आजिज़ी के साथ कहती हूं कि तुम भी मुसलमान हो जाओ।

हज़रत उमर को उस के जवाब पर बड़ा तैश आ गया। अगरचे वह बांदी को मारते-मारते थक गये थे, लेकिन उस की इस बात से उन को इतना तैश आया कि उन्हों ने फिर मारना शुरू किया।

जब लुबनिया पिट रही थीं, तो बहुत से लोग उन के चारों ओर जमा हो गये थे और हर आदमी उसे बुरा-भला कह रहा था, गालियां दे रहा था, लेकिन उन्हें न गालियों की परवाह थी, न मार की। वह बे-ज़ुबान जानवर की तरह पिटती जा रही थीं, यहां तक कि बे-दम होकर गिर पड़ीं और गिरते ही बेहोश हो गयीं।

उस जगह काफ़ी मज्मा था। लोग बड़े जोश और ग़ज़ब में भरे हुए कनीज के पिटने का तमाशा देख रहे थे कि एक तरफ़ से शोर व ग़ुल की आवाज आयी। लोग उस तरफ़ देखने लगे। उधर से सैकड़ों आदमी एक काले रंग के आदमी को रस्सी में जकड़े लाते हुए नज़र आये।

उस मज्मे ने पहली ही नज़र में पहचान लिया। यह हज़रत बिलाल थे।

हज़रत बिलाल के साथ उन के दुश्मनों की भीड़ थी। सब के सब जोश व ग़ज़ब से दीवाना बने हुए थे। वे हज़रत बिलाल को घसीटे ला रहे थे। लात, मुक्के, घूंसे, खजूरों की क़मचियां, चमड़े के कोड़े मारते आ रहे थे। कुछ लोग कंकर और पत्थर भी मार रहे थे। एक बड़ा आदमी भी उन के साथ था, यह उमैया बिन खलफ़ था। हज़रत बिलाल उस के ग़ुलाम थे। वह आवाज दे दे कर कह रहा था, मारो। इस बदबख़्त को, ख़ूब मारो ! यह मुसलमान हो गया है। यह बाग़ी और ग़द्दार है।

जब वह मारने के लिए कहता, तो लोग ज़ोर-ज़ोर से उन को मारते। हज़रत बिलाल पिट रहे थे। आप का तमाम जिस्म ज़ख़्मी हो गया था। ज़ख़्मों से ख़ून बह रहा था, मगर आप को न ज़ख़्मों की परवाह थी और न ख़ून निकलने का डर, न आप के लबों पर आह थी, न किसी का शिकवा और न चेहरे से किसी क़िस्म का ग़म और दुख ज़ाहिर हो रहा था।

जब आप के कोई पत्थर लगता या कोई घूंसा या लात मारता, तो आप नारा लगाते, 'अहद-अहद' (अल्लाह एक है, अल्लाह एक है)।

जब आप अहद का नारा लगाते तो मक्का के कुफ़्फ़ार सख़्त ग़ज़बनाक होकर उस से पहले से ज़्यादा तीरों और पत्थरों की वर्षा करते। आप कहते मारो, मुझे मारो। मैं मुसलमान हूं, एक ख़ुदा का परस्तार हूं। ख़ुदा ने मुझे इस लिए पैदा किया है कि मैं उस का नाम लूं और पिटूं। ख़ुदा की क़सम ! इस पिटने में भी लज़्ज़त है। मारो, मुझे मारते-मारते मार डालो।

इन वहशी, संगदिल, दरिंदों में एक भी ऐसा न था, जो उन पर रहम खाता, बेरहम भेड़ियों से उन्हें बचाता।

धूप सख़्त थी। रेत का ज़र्रा-ज़र्रा ख़ूब जल रहा था, इतना कि उस पर नंगे पैर चलना मुश्किल था। ये लोग हज़रत बिलाल को घसीटते हुए मक्का से बाहर ले गये। उन्हें तपती हुई रेत पर खड़ा किया, कपड़े उतार कर जिस्म को नंगा किया।

जिस से जितना मारा गया, मारा। फिर जलती हुई रेत पर लिटा

दिया गया। एक बड़ा पत्थर आप के सीने पर रख दिया गया, ताकि आप करवट लेकर रेत की तपिश से राहत न पा सकें। आप चित पड़े हुए थे। वज़नी पत्थर, जिस को कई आदमियों ने उठा कर आप के सीने पर रख दिया था, सीने पर धरा हुआ था। आप हरकत न कर सकते थे। शरीर झुलस रहा था। प्यास की तेज़ी की वजह से ज़ुबान और तालू में कांटे से जम गये थे। आप सब्र व शुक्र से ये तमाम सख़्तियां बर्दाश्त कर रहे थे। उफ़ भी न करते थे। अगर कभी नारा लगाते थे तो वही अहद-अहद पुकारते थे, यानी उस ख़ुदा को जिस की अज़्मत व जलाल के क़ायल थे और मक्का के काफ़िरों को अगर ज़िद थी तो अहद के नाम से। जब हज़रत बिलाल अहद का नारा लगाते, अल्लाहु अहद कहते काफ़िरों के तन-बदन में आग लग जाती। भड़क उठते, सीने पर हाथ रखे हुए पत्थर पर खड़े हो जाते।

उमैया चीख़ कर कहता, बिलाल छोड़ दे इस कलिमे को, छोड़ दे इस्लाम को, तुझे आज़ाद कर दूंगा, तुझे दौलत दूंगा, तुम इज़्ज़त के साथ, आराम के साथ, ऐश व इशरत के साथ ज़िंदगी बसर करना।

हज़रत बिलाल कहते, उमैया! मैं जब तक ज़िंदा रहूंगा, अहद का नारा लगाऊंगा, इस्लाम मेरी नस-नस में बस गया है। जब तक रगों में ख़ून जारी है, इस्लाम का दामन नहीं छोड़ूंगा। कोई लालच मुझे इस्लाम से नहीं फेर सकती।

उमैया ग़ज़बनाक हो जाता। वह कुफ़्फ़ार को इशारा करता और वे काफ़ी दिल खोल कर हज़रत बिलाल को मारते।

जिस वक़्त हज़रत बिलाल पर ये ज़ुल्म हो रहे थे, उसी वक़्त उन के क़रीब ही सुहैब भी रस्सियों से बंधे जकड़े पड़े थे। क़ुरैश उन को मारते थे। उन को चित लिटा कर उन के सीने पर दो पहलवान अरब उन के सीने पर खड़े थे और कह रहे थे कि सुहैब! ख़ुदा का नाम मत ले। ज़िंदगी चाहता है तो बुतों को माबूद मान, उनकी ख़ुदाई का इक़रार कर और उन ही के आगे सर झुका।

हज़रत सुहैब सख़्त तकलीफ़ में थे, जलती हुई रेत पर पड़े थे। नंगा बदन था। गर्म रेत ने पूरे बदन में जलन पैदा कर दी थी, उन्हें मारा जा रहा था, उन के सीने पर दो आदमी खड़े थे, पसलियां दबी जा रही थीं, मौत और ज़िंदगी का सवाल था, लेकिन इस्लाम ने उन के दिल को इतना सख़्त कर दिया था कि बावजूद इतनी तकलीफ़ के ज़ुबान से यही निकलता था कि मरते दम तक इस्लाम न छोड़ूंगा। तुम मारो, यहां

तक मारो कि मर जाऊं।

क़ुरैश इस नारे को सुन कर और ज़्यादा ग़ज़बनाक हुए और उन्हों ने उन के सर को पत्थरों से कुचलना शुरू किया। आप का सर फट गया, ख़ून का परनाला बह निकला। हवास ख़त्म हो गये, बेहोशी छा गयी। आप ने बेहोशी की हालत में पानी मांगा। इन दरिंदों में से एक भी ऐसा न था जो उस बेबस मुसलमान के सूखे गले में कुछ बूंदे टपका देता।

हज़रत सुहैब बेदम हो गये। उन के चेहरे पर पीलापन छा गया। आंखें गहरी धंस गयीं, जिस्म बेहरकत हो गया, मगर सांस अभी तक आ रही थी।

जिस वक़्त हज़रत सुहैब बेहोश हुए, उसी वक़्त मक्के की तरफ़ से शोर व गुल बुलन्द हुआ। जो लोग वहां जमा थे उन में हर एक ने उस तरफ़ नज़र उठा-उठा कर देखा। उस तरफ़ से सौ-सौ कुफ़्फ़ार तीन मुसलमानों और एक औरत के घसीट कर लाते हुए नज़र आए।

उन के आगे अबू जह्ल, अबू लहब, हमज़ा, अब्बास, सफ़वान, वलीद और बहुत से दुश्मने इस्लाम नज़र आ रहे थे।

उन मज़्लूम मुसलमानों में एक हज़रत अबू फ़कीह थे।

हज़रत अबू फ़कीह के पांव में रस्सी बंधी हुई थी। कुछ आदमी उस रस्सी को खींचते हुए लिए चले आ रहे थे। आप का नंगा जिस्म रेत पर घसिट रहा था। तमाम जिस्म छिल गया था। ज़ख़्मों पर रेत चिपक गया था, जो बहुत तक्लीफ़ दे रहा था।

जब इन शैतानों का गिरोह हज़रत बिलाल के क़रीब आया, तो एक गोबरैला निकल कर रेंगा। उमैया उसी जगह खड़ा था। उस ने आवाज़ देकर मज़ाक़ में कहा, अबू फ़कीह ! देख तेरा ख़ुदा यह है।

अबू फ़कीह ने सर उठा कर गोबरैला को देखा, कहा, उमैया ! मज़ाक़ न उड़ा, मेरा, तेरा दोनों का ख़ुदा वही है, जिसने मुझे और तुझे और पूरी दुनिया को पैदा किया है।

उमैया ने बिगड़ कर कहा, बदबख़्त ! बुत हमारे माबूद हैं, वे माबूद, जिन को हम और हमारे बाप-दादा और सारा अरब पूजते चले आ रहे हैं।

हज़रत अबू फ़कीह ने कहा, पत्थर के बुत अपने हाथों की बनायी हुई मूर्तियां हैं, वे कैसे ख़ुदा बन जाएंगे, ख़ुदा तो वह है, जिस के हाथ में ज़िंदगी और मौत होती है। जो पानी बरसाता है, हवा चलाता है, छिपी और खुली चीज़ों को जानता है। वह अकेला है और उस का कोई शरीक नहीं।

यह सुन कर उमैया को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह झुका और हज़रत अबू

फ़कीह का गला पकड़ कर इस ज़ोर से घोंटा कि उन की आंखें उबल पड़ीं। चेहरा तमतमा गया, सांस रुक गयी। सब ने समझ लिया कि हज़रत अबू फ़कीह का दम निकल गया।

उमैया खड़ा हो गया। खड़े हो कर हज़रत अबू फ़कीह को देखने लगा।

उस के देखते ही देखते उन की सांस चलने लगी। चढ़ी हुई आंखें ठीक हो गयीं, थोड़ी देर के बाद उन्हों ने आंखें खोलीं।

कुफ़्फ़ार उन्हें देख कर सख़्त हैरान हो गये।

उमैया ने कहा, अबू फ़कीह ! तुम्हारा ख़ुदा कौन है ?

हज़रत अबू फ़कीह ने जवाब दिया, वह जिस ने मुझे और तुझे पैदा किया है।

उमैया ने कहा, सख़्तियां सहता है और ख़ुदा के नाम की रट लगाये जाता है ?

हज़रत अबू फ़कीह ने कहा, जब तक ज़िंदा रहूंगा, जब तक मेरे दम में दम बाक़ी रहेगा, ख़ुदा का नाम लूंगा।

उमैया ने कहा, लोगो ! अभी इस का दिमाग़ ठीक नहीं हुआ है। ज़रा यह भारी पत्थर इस के सीने पर रख दो।

एक बड़ा भारी पत्थर क़रीब ही पड़ा था। पांच-छः मन का था। कई आदमियों ने मिल कर पत्थर उठाया और हज़रत अबू फ़कीह के सीने पर रख दिया।

पत्थर गर्म था, वज़नी था और इतना भारी था कि जब अबू फ़कीह के सीने पर रखा गया, तो उन की ज़ुबान निकल आयी, तड़प गये, हिल न सके और बेदम हो कर रह गये।

उमैया ने पूछा, अब बता कि ख़ुदा कौन है ?

हज़रत अबू फ़कीह बोल न सकते थे। सांस निकली जा रही थी। हरकत करने की ताक़त न थी। उन्होंने इशारे से बताया कि ख़ुदा वह है, जो नीली छत पर है।

उमैया कुछ कहना चाहता था कि क़रीब ही से दिल हिला देने वाली चीख़ सुनायी दी। सब नें गरदनें उठा कर देखा। पहली ही नज़र में दिखायी दे गया कि अबू जह्ल बरछी लिए खड़ा है और सुमैया के सीने से ख़ून का फ़व्वारा उबल रहा है। अबू जह्ल कह रहा है। कमबख़्त कनीज़ ! क्यों जान देती है ? अब भी इक़रार कर, हुबल सब से बड़ा ख़ुदा है।

मगरचे हज़रत सुमैया के सीने से ख़ून का फ़व्वारा निकल रहा था, चेहरे पर पीलापन छा रहा था। इस पर भी उन की ज़ुबान से एक ख़ुदा

की रट लग रही थी। उन्होंने कहा, हुबल ख़ुदा नहीं, बुत है, पत्थर की मूर्ति है, ख़ुदा वह है जो दुनिया को पैदा करने वाला है, आसमानों और ज़मीन का मालिक है। हर वक़्त और हर जगह मौजूद रहता है।

अबू जह्ल का चेहरा ग़ुस्से से बदल गया। उस ने चिल्लाकर कहा, ओ ख़ुदा की दीवानी! देखूं, तेरा ख़ुदा तुझे मेरे हाथों से कैसे बचाता है? बुला अपने ख़ुदा को बुला, आवाज़ दे, पुकार कर आवाज़ दे।

हज़रत सुमैया ने कहा, ख़ुदा को चिल्ला कर पुकारो या धीरे से। वह देखता है, अपने नेक बन्दों का इम्तिहान लेता है, अबू जह्ल! सोचो, क्या पत्थर की तस्वीरें, जिन्हें तुम ने या तुम्हारे बाप-दादा ने ख़ुद गढ़ा है, ख़ुदा हो सकते हैं? ख़ुदा की क़सम! नहीं। ख़ुदा वही है, जो पूरी दुनिया का पैदा करने वाला है। इज़्ज़त व ज़िल्लत, मौत और ज़िंदगी उसी के हाथ में है।

अबू जह्ल ग़ुस्से से पागल हो रहा था। उस ने ग़ज़बनाक होकर हज़रत सुमैया को ज़ोर से बरछी मारी। उन की ज़ुबान से अल्लाह का प्यारा नाम निकला। वह लड़खड़ा कर गिरीं। उन के चेहरे पर मुरदनी छा गई। आंखें बन्द होने लगीं। जिस्म में कपकपी तारी हुई और अल्लाह को प्यारी हो गयीं।

हज़रत सुमैया शहीद हो गयीं, लेकिन दरिंदों के दिल न पसीजे।

हज़रत अम्मार ने जब यह मंज़र देखा तो मां की मुहब्बत ने जोश मारा। वह लपक कर अपनी मुर्दा मां के पास बैठ गये, रोते हुए बोले, अम्मी! मैं बड़ा बदबख़्त हूं, तुम्हारी कोई ख़िदमत न कर सका। आह, मुझे भी अपने साथ ले चलती। उठो प्यारी अम्मी! उठो। आह ख़ुदा!

ख़ुदा का नाम लेना कुफ़्फ़ार चुपचाप कैसे सुनते। जब उन्हों ने ख़ुदा का नाम लिया, तमाम कुफ़्फ़ार बिगड़ गये। सब उन पर बरस पड़े। उन्हें लात, घूसों और मुक्कों से मारना शुरू किया। इतना मारा कि वह बेहोश होकर अपनी मां की लाश पर गिर पड़े।

हज़रत यासिर भी क़रीब ही खड़े थे। बीवी की मौत ने दुखी बना दिया था। बेटे के बेहोश होने से और बे-क़रार हो गये। उन्होंने कहा, बदबख़्तो! तुम में एक भी ख़ुदा का बन्दा ऐसा नहीं है, जो इस बे-गुनाह और बे-ज़ुबान मख़्लूक़ पर रहम करे।

ख़ुदा का नाम सुनते ही कुफ़्फ़ार को ग़ुस्सा आ गया। उन्हों ने उसे भी घूसों और मुक्कों से मारना शुरू किया, बोले, बेवक़ूफ़ बूढ़े! ख़ुदा का नाम लेता है। ख़्याली ख़ुदा को छोड़ और हमारे माबूदों का इक़रार कर।

हज़रत यासिर ने कहा, ना-मुम्किन है। मुसलमान उस ख़ुदा को मानता है जो सब का पैदा करने वाला है। उन का सर बुतों के सामने कभी नहीं झुक सकता।

अबू जहल ग़ुस्से से भर उठा, बोला, ओ मौत को दावत देने वाले! तुझे हमारे माबूदों के सामने सर झुकाना होगा?

हज़रत यासिर ने कहा, जब तक बदन में ताक़त और दिमाग़ में सोचने की ताक़त बाक़ी है, तब तक तो ग़ैर-मुम्किन है कि मेरा सर क्या किसी मुसलमान का सर किसी बुत के सामने झुक जाए।

अबू जह्ल बोला, इतना घमंड! अच्छा देखते हैं, तू कब तक अपनी जिद पर क़ायम रहता है।

यह कहते ही उस ने अपने दो आदमियों को दो ऊंट लाने का हुक्म दिया। लोग दौड़े हुए गये और जल्दी से दो ऊंट लाये। दोनों पर अमारियां कसी हुई थीं।

अबू जह्ल ने कहा, यासिर! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। हमारे माबूदों को ख़ुदा मान ले, बच जाएगा। न सिर्फ़ यह कि बच जाएगा, बल्कि दौलत से मालामाल कर दूंगा। कमबख़्त! ज़िंदा रह, आराम व राहत से ज़िंदगी बसर कर।

हज़रत यासिर ने कहा, दुनिया कुछ दिनों की है, आख़िरत तो हमेशा की है। आख़िरत का आराम भी हमेशा का है और जिसे आख़िरत की तक्लीफ़ पहुंची, उस ने अपना सब कुछ खो दिया। अल्लाह का फ़रमान है, 'तुम और जिन चीज़ों को पूजते हो, सब दोज़ख़ के ईंधन बनेंगे।' इस खुले डरावे के बाद हक़ीक़ी माबूद को छोड़कर बुतों के सामने सिर झुकाना मुसलमानों का काम नहीं है।

अबू जह्ल ने कहा ऐसा है, तो अब ज़बरदस्ती तुझे बुतों को सज्दा कराया जाएगा।

उस ने अपने आदमियों को इशारा किया। उस के आदमियों ने यासिर को दोनों ऊंटों से इस तरह जकड़ दिया कि एक ऊंट की अमारी से दोनों हाथ और दूसरे ऊंट की अमारी से दोनों पांव बांध दिये। इस तरह हज़रत यासिर दोनों ऊंटों के दर्मियान लटकने लगे।

अबू जह्ल ने कहा हमारे माबूदों को सज्दा करोगे?

आख़िरी सांस तक नहीं। हज़रत यासिर ने कहा।

अबू जह्ल ने ऊंट वालों को इशारा किया। उन्हों ने दोनों ऊंटों को मुख़ालिफ़ सम्तों में हांक दिया। ऊंट चले, रुके, झटका देकर फिर चले।

हज़रत यासिर के दोनों हाथ बाज़ुओं से उखड़ गये। मौत ने उन का गोद में लेकर उन की मुसीबतों का ख़ात्मा कर दिया।

समझौते की बात

मुसलमानों पर बड़े से बड़ा ज़ुल्म किया गया, इतना ज़ुल्म किया गया कि आज हम में से कोई आदमी सोच भी नहीं सकता।

यह ज़ुल्म ग़रीब, बेबस, ग़ुलामों और लौंडियों पर ही नहीं हुआ, बल्कि अमीरों और रईसों, क़बीले के सरदारों पर ऐसे ही ज़ुल्म किये गये। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम क़ुरैश के मशहूर और ताक़तवर क़बीलों से ताल्लुक रखते थे, बहादुर थे, इज़्ज़तदार थे, लेकिन मुसलमान होने पर उन्हें भी ज़ुल्म का निशाना बनाया गया। मुसलमानों ने निहायत सब्र व शुक्र से सख़्तियां झेलीं, ज़ुल्म सहे, पर एक मुसलमान भी इस्लाम से न फिरा। मुसलमानों के इस जमाव ने काफ़िरों को हैरत में डाल दिया।

चूंकि तबीयतें अलग-अलग होती हैं। कुछ लोग दिल के नर्म होते हैं और कुछ सख़्त, कुछ कुफ़्फ़ार ऐसे भी थे, जिन के दिल ज़ुल्म की इस इंतिहा पर पसीजे। उन्हों ने संगदिल ज़ालिमों को समझाना शुरू किया। वे भी मजबूर मुसलमानों पर इन्तिाई ज़ुल्म व सितम कर के थक चुके थे, कुछ नर्म पड़े। इस से मुसलमानों पर जो सख़्तियां की जा रही थीं, उन में कुछ कमी हुई।

जब अक्सर लोगों ने देखा कि मुसलमान पिटते हैं, धूप में जलती रेत पर लिटाये जाते हैं, भारी और वज़नी पत्थर उन के सीनों पर रख दिया जाता है, सारा-सारा दिन भूखे-प्यासे रहते हैं और फिर भी इस्लाम को नहीं छोड़ते, तो उन्हें ख़्याल हुआ कि ये इतने बेवक़ूफ़ नहीं हो सकते। ज़रूर इस्लाम की तालीम ऐसी अच्छी है, जिसे छोड़ना उन्हें पसन्द नहीं। इस ख़्याल ने बहुत से लोगों को मुसलमान होने पर उकसाया, चुनांचे वे छिप कर अरक़म के मकान में पहुंचे। हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मक्का के काफ़िर चाहते तो यह थे कि मुसलमान फिर काफ़िर हो जाएं, पर उलटा असर हो रहा था, कि काफ़िर आ कर मुसलमान होते जा रहे थे। हर रोज़ कुफ़्फ़ार सुन लेते थे कि आज फ़्लां शख़्स मुसलमान हो गया है और आज फ़्लां, तो बहुत बिगड़ते, ग़ुस्सा होते और हर नये

मुसलमान पर सख़्तियां करते, पर मुसलमान होने का जो सिलसिला शुरू हो गया था, वह न रुका, बल्कि बराबर जारी रहा।

यह देख कर कुफ़्फ़ार में बड़ी बे-क़रारी रही, ख़ास तौर से अबू जह्ल, अबू लहब, उत्बा वलीद, अबू सुफ़ियान, आस बिन वाइल सहमी और इसी क़िस्म के बड़े लोगों की चिन्ता बढ़ गयी। बात यह भी थी कि ये लोग न सिर्फ़ इज़्ज़तदार और मालदार थे, बल्कि इनमें से हर एक किसी न किसी ओहदे पर था, जैसे अबू सुफ़ियान क़ुरैश का अलमबरदार था, अब्बास हाजियों को पानी पिलाते थे, वलीद सवारों का अफ़सर था। हर्स बिन क़ैस ख़ज़ाने का मालिक था और अबू जह्ल अपने क़बीले का सरदार था। क़ुरैश की सरदारी इन्हीं लोगों के हाथ में थी। इस्लाम उनकी झूठी सरदारी को चुनौती दे रहा था। वे देख रहे थे कि जो आदमी मुसलमान हो जाता है, चाहे किसी भी गिरोह और तब्क़े का हो, बराबरी का हक़ हासिल कर लेता है। एक मुसलमान को दूसरे पर कोई बरतरी नहीं रहती गुलाम और आक़ा एक ही लाइन में शामिल हो जाते हैं। यह बात उन की मआशरत के ख़िलाफ़ थी। उस का तरीक़ा यह था कि ग़ुलाम सिर्फ़ ख़िदमत करते-करते ही मर जाने के लिए पैदा हुआ है। वह न अच्छा खा सकता है, न अच्छा पहन सकता है, न आक़ा के साथ उठ बैठ सकता है। वे समझ रहे थे कि अगर ग़ुलामों को आज़ादी मिल गयी, उन्हें बराबर के हक़ मिल गये तो उन की बरतरी मिट्टी में मिल जायेगी, इसलिए वे भी इस्लाम और मुसलमानों से दुश्मनी का बर्ताव करते थे, लेकिन जब उन्हों ने मुसलमानों की तायदाद बढ़ते देखी, तो घबरा गये।

अबू जह्ल ने फिर मज्लिसे शूरा बुलायी। जब सब आ गये, तो उस ने कहा कि बुतों के परस्तारो! अफ़सोस है, हम ने शुरू में जिस फ़ित्ने को मामूली समझा था, वह बढ़ कर हमारी सरदारी को चोट करने लगा है। अगर कुछ दिन और ग़ाफ़िल रहे तो अजब नहीं तमाम मक्का और सारा अरब मुसलमान हो जाए और फिर हमें भागने का रास्ता ढूंढना पड़े, या जिन लोगों पर हम हुकूमत करते रहे, उन के महकूम बन कर रहें। क्या यह बात हमारे लिए शर्म की बात न होगी? कम से कम मैं इस बात को किसी तरह सहन नहीं करूंगा। इस वक़्त तुम लोग मौजूद हो, या तो मुहम्मद के फ़ित्ने को दूर करने की तदबीर सोचो, वरना मैं साफ़ तौर पर कहता हूं कि मैं यहां से कहीं और चला जाऊंगा।

अबू जह्ल की पूरे मज्मे ने ताईद कर दी।

अबू जह्ल ने कहा, मुझे हैरत है कि मुहम्मद लोगों पर क्या जादू

करता है (नऊज़ुबिल्लाह) कि वे हज़ार सितम सहने पर भी इस्लाम से नहीं फिरते।

वलीद ने कहा, असल में वह बड़ा जादूगर है। जो आदमी उस से एक बार बात करता है, उसी पर मोहित हो जाता है।

उत्बा बहुत इल्म वाला था, उसे अपनी ज़ुबानदानी पर बड़ा नाज़ था। उस ने कहा, मेरे ख्याल में वह कुर्सी का भूखा है, इस लिए उस ने क़ौम में फ़ित्ना पैदा कर रखा है।

अबू लहब बोला, अगर वह कुर्सी चाहता है, या दौलत चाहता है या किसी औरत पर आशिक़ है, तो वह जो चाहे, उसे दे दो। अभी तो इस फ़ित्ने को किसी न किसी तरह दबा देना मुनासिब है।

आस ने मूंछों पर ताव दे कर कहा, हरगिज़ नहीं, उसे कुछ भी नहीं दिया जा सकता। अगर आज हम उस से रौब खा कर, जो मांगे, दे दें, तो कल कोई और उठ खड़ा होगा और परसों कोई और। सोचो, इस तरह से हम किस-किस को और क्या-क्या देते रहेंगे।

अबू सुफ़ियान ने कहा, बेशक हम को उसे कुछ भी न देना चाहिए। हम उस की सरदारी नहीं मान सकते। माबूदों की क़सम ! हरगिज़ नहीं। मर जाएंगे, पर उस की हुकूमत नहीं मानेंगे।

वलीद ने कहा, जो फ़ित्ना हमारे सामने है, वह मामूली नहीं। हम देख रहे हैं कि दिन-ब-दिन उस के मानने वालों की तायदाद बढ़ रही है। हम ने उन पर सख्तियां कर के देख लिया, कुछ नतीजा नहीं निकला। बेहतर यही है कि जो वह मांगे, दे दिया जाए।

थोड़ी सी बहस-मुबाहसे के बाद यह तै हुआ कि उत्बा को हज़रत मुहम्मद की खिदमत में सफ़ीर (दूत) बना कर भेजा जाए और उसे अख्तियार दिया जाए कि जिस तरह से मुम्किन हो, सुलह कर के हुज़ूर सल्ल० को हमवार करे। चुनांचे उत्बा रवाना हुआ और हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में पहुंचा। हुज़ूर सल्ल० ने उस का स्वागत किया। उसे एहतराम से अपने पास बिठाया।

उत्बा ने कहा, ऐ मुहम्मद ! मैं आज तमाम क़ुरैश की तरफ़ से सफ़ीर बन कर हाज़िर हुआ हूं, कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० उसे ग़ौर से देख कर मुस्कराये। आप ने कहा, कहो उत्बा ! तुम क्या कहना चाहते हो ?

उत्बा ने कहा, आप ने अपनी क़ौम में ऐसा फ़ित्ना खड़ा कर दिया है, जो आज तक किसी ने नहीं किया। क्या आप इसे पसन्द करते हैं कि

मुसलमानों पर रात व दिन सख्तियां की जाएं ?

आप ने थोड़ी सांस भर कर कहा, तुम नहीं जानते, मुसलमानों पर जो सख्तियां की जाती हैं, उन से मेरा दिल कितना दुखता है।

उत्बा ने कहा, फिर आप ऐसी तदबीर क्यों नहीं करते, जिस से वे सख्तियां बन्द हो जाएं ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं क्या तद्बीर कर सकता हूं। ख़ुदा की मस्लहत में कोई दम नहीं मार सकता।

उत्बा ने बुरा-सा मुंह बना कर कहा, ख़ुदा का नाम न लो। सारा फ़ित्ना इस ख़ुदा के नाम ही का है। आप को तद्बीर मैं बताता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तद्बीर है ?

उत्बा ने कहा, आप को तमाम क़ुरैश अपना सरदार बनाने को तैयार हैं। आप मक्का के बादशाह बन जाएं। तमाम ख़ज़ाना, सारी फ़ौज आप की मातहती में दे दी जाएगी। जिस औरत या जिस लड़की से आप कहेंगे, आप की शादी कर दी जाएगी। इस मंसब को क़ुबूल कर लीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, उत्बा ! अगर क़ुरैश के सरदारों ने यह समझा है कि मंसब की लालच में और हुकूमत मिलने के ख्याल से इस्लाम की तब्लीग़ कर रहा हूं, तो ग़लत समझा। ख़ुदा की क़सम ! मैं ख़िदमत ही करना चाहता हूं। मुझे मंसब की आरज़ू नहीं है। मैं हुकूमत नहीं चाहता। अगर कोई तमन्ना है, तो सिर्फ़ यह कि तुम सब मुसलमान हो जाओ। पत्थर के बुतों को पूजना छोड़ दो। उत्बा ! मैं ख़ुदा का रसूल हूं। मुझ पर ख़ुदा का पैग़ाम नाज़िल होता है।

हुज़ूर सल्ल० ने फिर आयत सुनायी, जिस का तर्जुमा इस तरह है—

'ऐ मुहम्मद! कह दो कि मैं तुम जैसा आदमी हूं। मुझपर वह्य नाज़िल होती है कि तुम्हारा ख़ुदा बस एक ख़ुदा है। पस सीधे उस की तरफ़ जाओ और उस से माफ़ी मांगो।'

इन आयतों को सुन कर उत्बा का चेहरा उतर गया। और वह हैरान हो कर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, उत्बा और सुनो, अल्लाह फ़रमाता है—

'(ऐ मुहम्मद !) कह दो कि क्या तुम लोग अल्लाह का इंकार करते हो ? जिस ने दो दिन में यह ज़मीन पैदा की और तुम ख़ुदा का शरीक क़रार देते हो। वही सारी दुनिया का पालने वाला है।'

उत्बा के चेहरे का रंग इन आयतों को सुनकर उड़ गया। वह कांपने लगा। उस ने हुज़ूर सल्ल० के मुंह पर हाथ रख कर कहा, बस, वरना मेरा

दिल उलट-पलट जाएगा और कलेजा फट जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० चुप हो गये।

उत्बा उठ कर सीधा क़ुरैश की मज्लिस में पहुंचा।

अबू लहब ने पूछा, उत्बा ! क्या रहा ?

उत्बा ने कहा, अगर मेरी बात मानो तो यही बेहतर है कि मुहम्मद से कुछ न कहो।

अबू जह्ल ने हंस कर कहा, क्या तुम पर भी उस ने जादू कर दिया है ?

उत्बा ने कहा जो तुम चाहो कहो। मेरी राय तो यह है कि उन को उन के हाल पर छोड़ दो। अगर वह तमाम अरब पर ग़ालिब आ गये, तो यह तुम्हारी इज़्ज़त है, वरना अरब ख़ुद उन को फ़ना कर देंगे।

अबू लहब ने कहा, यह नहीं हो सकता।

अबू सुफ़ियान ने जोश में भर कर कहा, हम को सिर्फ़ अबू तालिब का पास है, वरना हम ख़ुद उस का ख़ात्मा कर देते।

अबू जह्ल ने कहा, बेहतर तो मालूम होता है कि एक वफ़्द अबू तालिब की ख़िदमत में जाए और उन से साफ़-साफ़ कह दे कि या तो वह अपने भतीजे को समझा दें कि वह हमारे माबूदों की तौहीन न करें, वरना हम उसे ज़रूर क़त्ल कर डालेंगे।

सब ने इस बात की ताईद की और बात हो गयी।

इस कार्रवाई के बाद मज्लिसे शूरा बरख़्वास्त कर दी गयी। लोग अपने-अपने घरों को चले गये।

क़ुरैश का वफ़्द अबू तालिब की ख़िदमत में

अबू तालिब की ख़िदमत में वफ़्द हाज़िर हुआ।

अबूतालिब ने उन का ज़ोरदार स्वागत किया।

जब तमाम लोग बैठ गये, तो अबू तालिब ने पूछा, कहिए, आज आप लोगों ने कैसे कष्ट किया ?

अबू जह्ल ने कहा, मोहतरम बुज़ुर्ग ! क्या आप को मालूम नहीं कि आप के भतीजे मुहम्मद ने क़ौम में एक नया फ़ित्ना खड़ा कर दिया है। वह कहता है कि ख़ुदा एक है। इतनी बड़ी ख़ुदाई का सिर्फ़ एक ख़ुदा बताता है। फिर ऐसी हस्ती को ख़ुदा कहता है, जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा। हमारे माबूदों की तौहीन करता है। हम आप की ख़िदमत में

इस लिए हाज़िर हुए हैं कि आप से दरख़्वास्त करें कि आप अपने भतीजे को समझा दें कि वह हमारे माबूदों की तौहीन न करे, हमारे बाप दादा के मज़हब को बुरा न कहे और नये मज़हब की तब्लीग़ न करे। आप हाशमी हैं, बुतों के परस्तार हैं। आप का फ़र्ज़ है कि आप दिल व जान से कोशिश कर के उसे समझाएं।

आप का बहुत-बहुत शुक्रिया, जो आप मेरे पास आए। अबू तालिब बोले। मुझे ख़ुद मालूम है कि आप ने मेरे भतीजे मुहम्मद पर कितनी सख़्तियां की हैं, तक्लीफ़ें पहुंचायी हैं, उस का घर से निकलना बन्द किया है, उस के मानने वालों को ख़ूब-ख़ूब सताया है। सोचो, क्या तुम्हारे लिए यह मुनासिब है, ? माबूदों की क़सम! तुम ने ग़लती की है, बड़ी ग़लती जो तरीक़ा तुम ने अपनाया है, वह ग़लत है। जब सख़्तियां बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं रह जातीं, तो कमज़ोर से कमज़ोर इंसान भी मुक़ाबले में आ जाता है। ज़िद बुरी चीज़ होती है। तुम को यह ज़िद है कि मुहम्मद तुम्हारे बुतों को बुरा न कहें और उसे यह ज़िद है कि एक अल्लाह की तब्लीग़ करे। इस ज़िद ने काम बिगाड़ रखा है। तुम नर्मी करो, वह ख़ुद ही बाज़ आ जाएगा। मेरी इन बातों से यह न समझ लेना कि मैं ने अपने बाप-दादा का मज़हब छोड़ रखा है, नहीं मैं मरते दम तक उस पर क़ायम रहूंगा। अपने माबूदों की तौहीन मैं भी गवारा नही कर सकता, लेकिन मेरा तरीक़ा अलग है। न किसी को मैं बुरा कहूं, न सुनूं। यही तरीक़ा तुम भी अपनाओ।

हम सख़्तियां न करें, अगर वह तब्लीग़ बन्द कर दे, वलीद ने कहा।

मैं आज अपने भतीजे को बुला कर समझाऊंगा, यक़ीन है कि वह मान जाएगा, तुम भी सख़्तियां बन्द कर दो, अबू तालिब बोले।

अबू बख़्तरी ने कहा, बेशक यह मश्विरा माना जा सकता है। अगर मुहम्मद तब्लीग़ से बाज़ आ जाएं, तो हमें मुसलमानों पर सख़्तियां न करना चाहिए।

इस के बाद वफ़्द के लोग उठे और चले गये,

वफ़्द के लोग आने को तो आ गये, लेकिन अभी उन्हें इत्मीनान न हुआ था। उन्हों ने दूसरे दिन फिर अबू तालिब के पास जाना तै किया।

जब यह तै हो गया, तो अबू लहब ने कहा, कल हम अबू तालिब से साफ़ तौर से कह देंगे कि अगर मुहम्मद हमारे मज़हब में दाख़िल न हुए, तो फिर हम उन को क़त्ल कर डालेंगे।

अबू सुफ़ियान तो चाहता ही यही था कि किसी तरह हुज़ूर सल्ल०

को क़त्ल कर दिया जाए। उस ने कहा, ज़रूर यह कह देना चाहिए और अगर अबू तालिब के समझाने से भी बाज़ न आए और हमारे मज़हब में दाख़िल न हों तो हमें तुरंत उन्हें क़त्ल कर देना चाहिए।

अबू लहब ने कहा, बेशक ऐसा ही होगा। हम अबू तालिब से आख़िरी बात करेंगे।

दूसरा दिन आया,। वफ़्द ने तैयारी शुरू की। सब जमा हुए और अबू तालिब की ख़िदमत में हाज़िरी दी।

अबू तालिब ने आदत के मुताबिक़ उन की आवभगत की। जब वे इत्मीनान के साथ बैठ गये, तो अबू तालिब ने पूछा, आज कैसे तश्रीफ़ ले आए, क्या कोई नयी बात हो गयी ?

अबू लहब ने कहा, नयी कोई बात नहीं। आज हम इस लिए हाज़िर हुए हैं कि आप से कहें कि आप अपने भतीजे को हमारे सामने बुलाएं। आप भी समझाएं, हम भी समझाएं। हो सकता है, हम सब के समझाने से वह समझ जाएं।

मुनासिब है, अबू तालिब ने कहा, लेकिन उस के सामने सख़्ती से बातें न करें, क्योंकि यह मेरी तौहीन होगी और मैं इसे किसी तरह न सह सकूंगा।

इत्मीनान रखिए, ऐसा न होगा अबू जह्ल ने कहा। हम सब आप का एहतिराम करते हैं।

अबू तालिब ने अपने ग़ुलाम को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेजा।

ज़्यादा देर न गुज़री थी कि हुज़ूर इस शान से तश्रीफ़ लाये कि सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे। कंधे पर काली कमली पड़ी थी, हाथ में छड़ी थी। आप ने आते ही अस्सलामु अलैकुम कहा।

अरब में सलाम करने का यह तरीक़ा न था। सब हैरान हुए।

अबू तालिब ने कहा, मेरे चश्म व चिराग़ ! आओ, मेरे पास बैठो।

हुज़ूर सल्ल० अपने मोहतरम चचा अबू तालिब के पास बैठ गये।

बातें शुरू हुईं।

अबू लहब ने कहा, तुम जानते हो, हम सब मंसब और इज़्ज़त के मालिक हैं। क़ुरैश के बड़े लोग हैं। जो बात हम तै कर देते हैं, सारे अरब वाले बग़ैर कुछ कहे सुने उसे मान लेते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मैं जानता हूं, आप ऐसे ही हैं।

अबू लहब फिर बोला, हमें क़ुरैश और मक्का के नुमायां क़बीलों ने तुम्हारे पास भेजा है, ताकि हम तुम से कोई समझौता कर लें। प्यारे

भतीजे ! जो फ़ित्ना तुम ने अपनी क़ौम में पैदा किया है, उस फ़ित्ने से तमाम क़ौम मुश्किलों में फंस गयी है, तुम समझदार हो और क़ौम की मुश्किलों को ख़ूब समझते हो। अपनी क़ौम पर एहसान करो और उस की मुश्किलों को न बढ़ाओ।

मैं ने क़ौम को मुश्किल में तो नहीं डाला बल्कि मेरी क़ौम ने ख़ुद मेरे ऊपर सख़्तियां की हैं। मुझे कठिनाई में डाल दिया है, मगर मुझे इस की परवाह नहीं कि मुझ पर सख़्तियां की जाएं। हां, मलाल है तो इस का कि जो लोग इस्लाम क़ुबूल कर चुके हैं, उन पर हर क़िस्म का ज़ुल्म किया जाता है। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया।

अबू लहब ने कहा, बेशक ! यह हम से ग़लती हुई, लेकिन अब हम समझौते के लिए आए हैं। प्यारे भतीजे ! अगर तुम को दौलत की ज़रूरत है, तो हम सब मिल कर तुम्हारे लिए इतनी दौलत जमा कर दें कि तुम सब से मालदार बन जाओ।

हुज़ूर सल्ल० बोले. चचा ! अगरचे मैं ग़रीब हूं, लेकिन ख़ुदा की क़सम ! मुझे दौलत की ज़रूरत नहीं, न मुझे सोना-चांदी चाहिए।

दौलत नहीं चाहिए, तो क्या किसी सुन्दरी से प्रेम हो गया है ? अबू लहब ने पूछा। बताओ वह कौन परी है, जिस से तुम ब्याह करना चाहते हो ? मैं तुम को विश्वास दिलाता हूं कि वह सुन्दरी कोई भी हो, हम उस से तुम्हारी शादी करा के रहेंगे।

आप बोले, ऐ चचा ! यह बात भी नहीं है। मुझे किसी सुन्दरी से प्रेम नहीं है।

अबू लहब ने फिर पूछा, अच्छा तो किसी जाह व मंसब की ज़रूरत है ? अगर यह बात है, तो क़ुरैश तुम को अपना सरदार ज़रूर मुक़र्रर कर देंगे।

आप बोले, मुझे जाह व मंसब की भी ख़्वाहिश नहीं।

अबू लहब ने कहा, तो बस, तुम शायद हुकूमत चाहते हो। अगर यह बात है तो हम तुम को पूरे अरब का बादशाह बनाये देते हैं। सारे अरब में आप की हुकूमत क़ायम हो जाएगी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं चचा ! मैं हुकूमत नहीं चाहता।

अबू लहब बोला, बस तो तुम कुछ बीमार हो। अगर यह बात है, तो हम तुम्हारे इलाज के लिए मशहूर हकीमों को बुला कर इलाज कराते हैं।

आप ने फ़रमाया, अल्लाह की कृपा से मैं बीमार भी नहीं हूं।

अबू लहब ने कहा, तो क्या किसी जिन्न या आसेब का असर है ?

इस असर को काहिन दूर कर सकते हैं। -

आप ने कहा, किसी जिन्न या आसेब का भी असर नहीं।

फिर आख़िर क्या बात है, तुम क्या चाहते हो ?

मैं चाहता हूं कि तुम बुतों की पूजा छोड़ दो और उस ख़ुदा की इबादत करो जो पूरी दुनिया का पैदा करने वाला है और जिस के हाथ में इज़्ज़त व दौलत है, मौत और ज़िंदगी का निज़ाम है और जो हर चीज़ की क़ुदरत रखता है, जो बुज़ुर्ग व बरतर है और पूरी कायनात का बादशाह है।

इस के बाद आप ने क़ुरआन की आयतें तिलावत कीं।

वफ़्द के तमाम मेम्बर आयतों को सुन कर हैरान रह गये।

कुछ देर की ख़ामोशी के बाद अबू जह्ल ने कहा, तो गोया तुम सुलह करने से इंकार करते हो ?

आप नें फ़रमाया, इंकार मैं नहीं करता, बल्कि तुम करते हो। क्यों नहीं तुम ख़ुदा के सामने झुक जाते हो ? और क्यों झूठे ख़ुदाओं को नहीं छोड़ देते ?

अबू लहब ने बिगड़ कर कहा, इस लिए कि हम और हमारे बाप-दादा इन्हें पूजते रहे हैं। हम ख़्याली ख़ुदा की पूजा मरते दम तक नहीं करेंगे। अब तुम होशियार हो जाओ। हम न सिर्फ़ तुम्हारा मक्का में रहना मुश्किल कर देंगे, बल्कि तुम को क़त्ल कर डालेंगे।

अबू लहब को जोश आ गया था। उस ने ग़ुस्से में भर कर अबू तालिब को ख़िताब किया और कहा, सुनो अबू तालिब ! या तो तुम मुहम्मद का साथ छोड़ो, वरन। मुक़ाबले में आ जाओ। अब हम तुम्हारा भी ख़्याल न करेंगे। यह क़ौम का मामला है, मज़हब का मामला है, इस में किसी का लिहाज़ न किया जाएगा। हम आप को सोचने और ग़ौर करने की मोहलत देते हैं। अगर तुम अपने भतीजे का साथ देने से बाज़ आ गये, तो हम तुमको अपना सरदार माने रहेंगे। और अगर बाज़ न आए तो तुम पर भी सख़्तियां करेंगे। अगर तुम ने कल तक यह न कहला भेजा कि तुम मुहम्मद के साथ से हट गये हो, तो फिर तुम्हारे ख़िलाफ़ भी कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी।

अबू लहब खड़ा हो गया, उस ने जंग का एलान कर दिया था।

साथ के दूसरे सरदार भी खड़े हो गये और बिगड़ते हुए रवाना हो गये।

सब के चले जाने के बाद अबू तालिब ने कहा, प्यारे भतीजे ! तुम ने

देख लिया कि सारी क़ौम भड़क उठी है। मैं कमज़ोर हूं। मैं सारी क़ौम का मुक़ाबला नहीं कर सकता। तुम इन की बातें मान लो। मैं अकेला किस-किस का मुक़ाबला कर सकूंगा।

हुज़ूर सल्ल० अबू तालिब की इस बात से थोड़ा परेशान हुए। फिर आंखों में आंसू लाकर बोले, चचा! ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम! अगर ये लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और एक हाथ पर चांद रख दें, तब भी मैं अपने फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा, यहां तक कि या तो ख़ुदा इस काम को पूरा कर देगा या मैं इस पर काम आ जाउंगा।

आप की असर भरी आवाज़ ने अबू तालिब पर बड़ा असर डाला।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, मेरी जान। फ़िक्र न करो। मेरी ज़िंदगी में तेरा कोई बाल टेढ़ा न कर सकेगा।

यह सुन कर हुज़ूर सल्ल० की परेशानी दूर हुई। आप उठे, चचा को सलाम किया और अपने मकान की ओर रवाना हो गये।

हब्शा की हिजरत

कुफ़्फ़ारे मक्का बिगड़ कर चले गये थे। उन्होंने जाते ही तमाम लोगों को, जो उन के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे, कह दिया कि मुहम्मद सल्ल० सुलह पर तैयार नहीं हैं। हम ने अबूतालिब के सामने हुज्जत पूरी कर ली है। अबू तालिब से कह आए हैं कि मुहम्मद सल्ल० का साथ छोड़ दें, वरना उन के ख़िलाफ़ भी कार्रवाई की जाएगी। हम उन्हें ग़ौर करने के लिए कल तक की मोहलत दे आए हैं। अगर उन्हों ने अपने भतीजे को समझा दिया और वह हमारे माबूदों की मुख़ालफ़त से बाज़ आ गया, तो ठीक है, वरना फिर मुहम्मद पर, मुसलमानों पर, दूसरे साथ देने वालों पर इतनी सख़्तियां करो कि उन के लिए जीना दूभर हो जाए। एलान कर दो कि मुहम्मद ख़ाना काबा में न घुसने पाए, अपने जवानों से कह दो कि जिस जगह मुहम्मद जाएं, बाज़ार हो या सड़क या गली-कूचा, हर जगह उन के पीछे जाएं, उन्हें किसी से बात न करने दें, शोर मचाएं, मुसलमान और इस्लाम को बुरा कहें, मुसलमानों के ख़ुदा को बुरा कहें, मुहम्मद को बुरा कहें। लड़कों को इस पर उभारो कि वे हर मुसलमान पर, मुहम्मद पर, मुसलमानों की हिमायत करने वालों पर धूल फेंकें, ईंटें मारें, पत्थर बरसायें और उन्हें इतना तंग करें कि वे नये मज़हब को छोड़ दें और

हमारे माबूदों को पूजने लगें।

तमाम लोगों ने इस बात को पसन्द किया और इक़रार किया कि वे ऐसा ही करेंगे।

कुछ देर बाद यह मज्लिस बर्ख़ास्त हो गयी। लोग उठ-उठ कर अपने घरों की ओर चले गये।

दूसरा दिन आया, लेकिन अबू तालिब का कोई जवाब न आया। यह बात समझ ली गयी कि न मुहम्मद तब्लीग़ से बाज़ आएंगे, न अबू तालिब उन का साथ छोड़ेंगे।

फिर क्या था, गुंडों, बदमाशों और आवारा जवानों की कई टोलियां बन गयीं कि वे शहर के एक-एक हिस्से में मुसलमानों पर ज़ुल्म ढाने का काम शुरू कर दें।

हज़रत ज़ुबैर बाज़ार गये। गुंडे ताक में थे ही, उन के पीछे लग गये। लड़के भी साथ हो लिये। तालियां बजाने, ख़ाक उड़ाने और पत्थर मारने लगे। हज़रत ज़ुबैर जवान थे, आप को ग़ुस्सा आ गया। आप ने लड़कों को डांट-डपट दिया। फिर क्या था, जो मवाद पक रहा था, वह फूट निकला और आवारा, बदमाश लोगों का जमघट आ लगा। सब ने हज़रत ज़ुबैर को बुरा-भला कहना और गालियां देनी शुरू कर दीं। हज़रत ज़ुबैर मामले की नज़ाकत समझ गये और चुप-चाप वापस चले आये।

उस दिन तो नहीं, हां, दूसरे दिन मुसलमान ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए अपने घरों से बाहर निकले, तो बदमाशों ने उन का पीछा करना शुरू किया, उन्हें गालियां दी, उन पर ख़ाक फेंकी, उनको पत्थर मारा और उन के कपड़ों को खींच-खींच कर फाड़ दिया।

मुसलमानों को बुरा भी महसूस हुआ, लेकिन वे कमज़ोर थे, जानते थे कि अगर ज़रा भी बोले तो मार खाएंगे, क़त्ल कर डाले जाएंगे। मजबूरन सब्र किया और अपने-अपने घरों को लौट आए।

फिर यह सिलसिला गालियां देने, मार-पीट करने की हद तक न रहा, बल्कि बड़े-बड़े पत्थर रास्ते से उठा कर इन बदमाशों ने घरों में फेंकना शुरू किया। गन्दगियां डालने लगे। मुसलमान सख़्त परेशान हुए। उन का घरों से निकलना बन्द हो गया।

हुज़ूर सल्ल० काबाशरीफ़ में नमाज़ें पढ़ा करते थे आप मकान से निकल कर हरम शरीफ़ की तरफ़ चले। आवारा लड़कों और बदमाशों ने आप को देख लिया। झुण्ड के झुण्ड आप के पीछे चले। लड़कों की तो हिम्मत न हुई कि आप की शान में कोई गुस्ताख़ी कर सकें, हां, हरम शरीफ़ के

दरवाज़े पर क़ुरैशी सरदारों को खड़ा पाया। जब दरवाज़े में दाख़िल होने लगे, तो अबू सुफ़ियान ने रोक दिया। अबू जह्ल ने कहा, मुहम्मद ! आज से हरम शरीफ़ तुम्हारे लिए बन्द कर दिया गया है। तुम इस क़ाबिल नहीं कि हमारे माबूदों की ज़ियारत करो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबूजह्ल! तू दिन-ब-दिन गुमराही और शिर्क में पक्का होता जाता है मैं ख़ाना काबा में तुम्हारे झूठे माबूदों की ज़ियारत करने नहीं जाता बल्कि इसलिए जाता हूं कि वह मक़ामे महमूद हैं। हमारे और तुम्हारे दादा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का बनाया हुआ मकान है ख़ाना-ए-ख़ुदा है,ख़ुदा की नमाज़ पढ़ने जाता हूं। किसी को भी यह हक़ नहीं कि वह किसी को काबा में दाख़िल होने से रोके।

अबू जह्ल हंसा और बोला, यह तमाम क़ुरैश के सरदारों की राय है कि मुसलमानों को ख़ाना काबा में दाख़िल न होने दिया जाए। हरम शरीफ़ का दरवाज़ा हमेशा के लिए तमाम मुसलमानों पर बन्द कर दिया गया है। अब कोई मुसलमान दाख़िल न हो सकेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो क्या मुझे ख़ाना काबा में दाख़िल न होने दोगे ?

अबू जह्ल ने गुस्से में कहा, हरगिज़ नहीं।

हुज़ूर सल्ल० बोले, अगर मैं तुम्हारे रोकने से न रुकूं ?

अबू सुफ़ियान भी उन सरदारों में मौजूद था, तलवार को म्यान से खींच कर बोला, माबूदों की क़सम ! यह तुम्हारे टुकड़े कर डालेगी।

हुज़ूर सल्ल० ने दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते हुए कहा, अच्छा, तो तुम तलवार चलाओ, ख़ुदा मेरी मदद करेगा।

अबू जह्ल डरा कि हुज़ूर सल्ल० ज़रूर हरम में दाख़िल हो जाएंगे। उस ने उस मज्मे की तरफ़ देखा, जो सामने खड़ा था और कुछ इशारा किया।

फ़ौरन बदमाश बढ़ कर आए। उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० को बुरा-भला कहना और पीछे धकेलना शुरू किया। मजबूरन हुज़ूर सल्ल० को पीछे लौटना पड़ा।

उस दिन हरम का दरवाज़ा मुसलमानों के लिए बन्द कर दिया गया।

अब कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम मुसलमानों पर इतना ज़ुल्म करना शुरू कर दिया कि उनका अपने घरों से बाहर निकलना, कारोबार करना, ज़िन्दगी की ज़रूरतों की चीज़ों का ख़रीदना-बेचना मुश्किल हो गया। अब खाने वग़ैरह का सामान ही न आता, खाना कहां से मिलता। लोग भूखे

रहने लगे। आप को इस से बड़ी चिन्ता हुई, इस लिए आप ने सोचना शुरू कर दिया कि अब क्या किया जाए।

इधर जोशीले मुसलमान कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करने के लिए हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त तलब करने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं लड़ाई की इजाज़त बग़ैर खुदा के हुक्म के नहीं दे सकता। सब्र व शुक्र कर के सख्तियां बर्दाश्त करो। अभी खुदा तो हमारी आज़माइश कर रहा है। हम को इस आज़माइश में पूरा उतरना चाहिए।

लोग खामोश हो गये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद एक सहाबी थे। आप निहायत जोशीले थे। आप ने जब सुना कि मुसलमानों को हरमे मोहतरम में क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत ऊंची आवाज़ से करने और नमाज़ पढ़ने से रोक दिया गया है, तो आप को जोश आ गया। आपने फ़रमाया कि हरमे मोहतरम में जा कर खुदा का कलाम पढ़ूंगा।

मुसलमानों ने समझाया कि कुफ़्फ़ार दुश्मनी पर आमादा हैं कि वे मुसलमानों को खत्म करने की प्लानिंग कर रहे हैं। तुम्हारा हरमे मोहतरम में जाकर क़ुरआन शरीफ़ ऊंची आवाज़ से पढ़ना गवारा न कर सकेंगे, यक़ीनन मार डालेंगे, इस लिए अभी खामोश रहो। जब खुदा का हुक्म होगा, तुम ही क्या सब खाना काबा में जाकर ऊंची आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ेंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, मेरा दिल नहीं मानता कि कुफ़्फ़ारे मक्का हरम में जाकर बुतों की पूजा करें, हम वहां क़ुरआन शरीफ़ भी न पढ़ सकें परवाह नहीं कि अगर वे मुझे मार डालेंगे, मैं ज़रूर आज ही वहां जा कर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ूंगा।

मुसलमानों को बड़ी चिन्ता हुई। जानते थे कि जिस वक़्त अब्दुल्लाह क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करेंगे। फ़ौरन ही कुफ़्फ़ार उन को क़त्ल कर डालेंगे।

मुसलमानों में इस्लाम ने मुहब्बत पैदा कर दी थी। सब ने समझाया, अब्दुल्लाह चुप हो गये। मुसलमानों ने समझ लिया कि वे अपने इरादे से बाज़ आ गये हैं, इसलिए किसी ने उन की निगरानी न की, पर अब्दुल्लाह मौक़े की घात में रहे और मौका मिलतेही सीधे हरम शरीफ़ पहुंचे, कुफ़्फ़ार ने उन को रोका, पर बावजूद इस रुकावट के वह मक़ामे इब्राहीम पर जाकर खड़े हो गए और बड़ी अच्छी आवाज़ से सूरः रहमान की तिलावत करने लगे।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने जब रहमान का नाम सुना, तो बहुत बिगड़े और जब यह सुना कि सितारे और पेड़ उसको सज्दा करते हैं, तो उसे वे माबूदों की तौहीन समझे, उनके ख्याल में उनके माबूद ही उस सज्दे के क़ाबिल थे।

वे बिगड़ गये! सब के सब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के ऊपर बरस पड़े और घूंसे, लात और मुंह पर तमांचे मारने लगे, लेकिन अब्दु-ल्लाह ने उन की मार का ख़्याल भी न किया, पिटते रहे।

कुफ़्फ़ारे मक्का को इस पर बड़ा तैश आया। उन्होंने आप का मुंह नोच लिया। आप के गालों पर इतने घूंसे लगाये कि आप का चेहरा लहू-लुहान हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह जब सूरः रहमान खत्म कर चुके, तब लौटे, मगर किस शान से कि आप के तमाम कपड़े फाड़ डाले गये थे, चेहरा लहूलुहान कर दिया गया था। आप ने मकान पर पहुंच कर कपड़े बदले, मुंह धोया, घावों पर मरहम लगाया और चुपचाप बैठ गये।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने लोगों से यह भी कह दिया था कि जो आदमी ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़े, उसे मारो। अगर कोई उसे घर पर पढ़ता हो, तो उस के घर में घुस जाओ और उसे उस वक़्त तक मारो, जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना न बन्द कर दे।

काफ़िरों ने इस पर सख़्ती से अमल करना शुरू कर दिया। वे मुसलमानों के घरों के पास इसी घात में खड़े हो जाते थे कि जब वे ऊंची आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें, तो फ़ौरन उन के घरों में घुस कर उन्हें मारें और लूट लें।

हज़रत अबूबक्र क़ुरैश के रईसों में से थे। बड़े आदमी थे। जब वह मुसलमान हुए तो उनके पास चालीस हज़ार दिरहम नक़द मौजूद थे। बहुत से खादिम, ग़ुलाम, लौंडियां थीं, लेकिन कुफ़्फ़ार के डर से वे भी क़ुरआन मजीद ज़ोर से न पढ़ते थे।

इस तरह मुसलमानों का माल, इज़्ज़त-आबरू, जान सब खतरे में था। अब सही मानों में उन की ज़िंदगी तंग कर दी गयी थी। भूखे-प्यासे छिपे अपने घरों में बैठे रहते थे।

हुज़ूर सल्ल० ने यह कैफ़ियत देख कर हब्शा को हिजरत करने का हुक्म दिया। मुसलमान इस हुक्म से बहुत खुश हुए।

उस ज़माने में हब्शा का बादशाह ईसाई था। उस का नाम सहमा था। अरब उसे नजाशी कहते थे।

चूंकि मुसलमान जानते थे कि कुफ़्फ़ारे मक्का उन्हें आसानी से हिजरत

न करने देंगे, ज़रूर रोकेंगे। इस लिए उन्हों ने चुपके-चुपके तैयारी शुरू की। जब तैयारी पूरी हो गयी, तो एक दिन-रात को जब कुफ़्फ़ार सो रहे थे, चुपके से मक्का से निकले और जद्दे की तरफ़ रवाना हुए।

माह रजब सन् ०५ नबवी में यह छोटा सा क़ाफ़िला घर-बार, वतन, रिश्तेदारों और दोस्तों को छोड़ कर रवाना हुआ। इस छोटे-से क़ाफ़िले में सिर्फ़ बारह मर्द और चार औरतें थीं। मर्दों में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, मुसअब बिन उमैर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ़, हज़रत अबू सलमा मख़्ज़ूमी, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत आमिर बिन रबीआ, हज़रत अबू हुरैरह तालिब बिन उमर, हज़रत सुहैल बिन बैज़ार थे। औरतों में हज़रत रुक़ैया, हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान की बीवी, हज़रत सहला, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत लैला थीं।

यह मुहाजिरों का पहला क़ाफ़िला था जो हिजरत कर के हब्शा की तरफ़ चला।

हज़रत मुहम्मद सल्ल०
की ज़िंदगी के हालात

आफ़ताबे आलम

भाग : 2

लेखक
मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

आफ़ताबे आलम

लेखक

मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Aaftab-e-Aalam

Author:

Maulana Muhammad Sadiq Hussain Sardhanvi Marhoom

Edition: **2014**

Pages: **86 + 126 + 130 + 140 = 482**

प्रकाशक

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

दरबार

सुबह के वक़्त मक्का के कुफ़्फ़ार को मालूम हुआ कि कुछ मुसलमान हिजरत कर के हब्शा की ओर चले गये हैं। यह एक नयी बात थी। इस से मक्का के काफ़िरों में हलचल मच गयी। उन्हें ख़्याल हुआ कि मुसलमान हब्शा में जा कर हमारे माबूदों की बुराइयां बयान करेंगे। इस से उन के मज़हब की बेहद तौहीन होगी,

वे सब लोग एक जगह जमा हुए और अगले प्रोग्राम पर मश्विरा करना शुरू किया।

तै हुआ कि साठ-सत्तर बहादुर जवानों को मुहाजिरों का पीछा करने के लिए रवाना किया जाए। अगर मुहाजिर वापस आने पर तैयार हो जाएं, तो ठीक है, वरना सब को क़त्ल कर डाला जाए।

सत्तर आदमी भेज दिये गये। ये लोग ऊंटों पर सवार होकर तेज़ी से चले। लेकिन जब जद्दा पहुंचे, तो मालूम हुआ कि अब हब्शा जाने वाला कोई जहाज़ नहीं है। जो जहाज़ बन्दरगाह पर खड़ा था वह मुहाजिरों को ले कर जा चुका है।

कुफ़्फ़ारे मक्का को बड़ा ग़ुस्सा आया, पर वे कर ही क्या सकते थे? मुहाजिर उन की पकड़ से बाहर हो गये थे। यह ग़ुस्सा अब उन मुसलमानों पर और ज़्यादा निकलने लगा, जो मक्के में मौजूद थे। उन्हों ने अब उन की ज़बरदस्त निगरानी शुरू कर दी और उन पर ज़ुल्म की चक्की भी तेज़ चला दी।

दर्द भरे मज़ालिम से मुसलमान इतने तंग आ गये कि उन का मक्का मुकर्रमा में सांस लेना दूभर हो गया, इस लिए तंग आ कर चुपके-चुपके उन्होंने भी ख़ुफ़िया तौर पर हिजरत शुरू कर दी। दो-दो, चार-चार करके रोज़ाना रात को छिप कर निकल जाते और जद्दा में पहुंच कर जहाज़ों के इंतिज़ार में छिपे रहते और जब कोई जहाज़ जाने लगता, उस पर बैठ कर हब्शा रवाना हो जाते।

कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मों से तंग आ कर हज़रत जाफ़र तैयार बिन

अबू तालिब ने भी हिजरत की और वह भी अपने मुसलमान भाइयों के पास हब्शा पहुंच गये। इस तरह सत्तर-अस्सी मुसलमान हिजरत कर के हब्शा में जा पहुंचे और वे निहायत इत्मीनान से ज़िंदगी बसर करने लगे।

दुश्मनों को जब मालूम हुआ कि मुसलमान हब्शा में खुशहाली की ज़िंदगी जी रहे हैं, तो उन के सीने पर सांप लोट गया, उन्हों ने फ़ौरन मज्लिसे शूरा बुलायी। सभी बड़े लोग जमा हो गये।

ज़ोरदार तक़रीरें हुईं। इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ ज़हर उगला गया।

आखिर में यह बात तै पायी कि नजाशी के हुज़ूर में क़ीमती तोहफ़े ले कर वफ़्द हाज़िर हो, जो बादशाह के दरबारियों को हमवार कर के मुसलमानों की वापसी की मांग कराये।

मक्का के क़ुरैश और हब्शा के बादशाह नजाशी के बीच पहले तिजारती ताल्लुक़ात थे। इस लिए उन्हें पूरा यक़ीन था कि हब्शा का शाह इन बेकस व बेचारे मुसलमानों को उन के वफ़्द के साथ भेज देगा। वफ़्द तय्यार किया गया। अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को वफ़्द का सरदार बनाया गया और क़ीमती तोहफ़े और सामान दे कर उन्हें रवाना कर दिया गया।

यह वफ़्द बड़ी शान के साथ जद्दा की ओर रवाना हुआ। जद्दा से जहाज़ में बैठ कर हब्शा जा पहुंचा। चूंकि शानदार वफ़्द था, इस लिए पूरे हब्शा को इस की खबर हो गयी। मज़लूम मुसलमानों को मालूम हुआ तो वह घबरा गये और उन्हें डर हुआ कि कहीं नजाशी उन को वपस जाने पर मजबूर न करे।

उन्हों ने तै कर लिया कि हब्शा के बादशाह ने अगर हमें वफ़्द के सुपुर्द किया, तो हम किसी और तरफ़ निकल जाएंगे, लेकिन मक्का वापस न जाएंगे।

क़ुरैश के वफ़्द ने दरबारियों को तोहफ़े-तहाइफ़ देकर इस बात पर तैयार कर लिया कि देश छोड़ कर आने वाले मुसलमानों को वापस मक्का जाने पर आमादा करें। उन्हों ने वायदा भी कर लिया। इस तरह नजाशी के दरबार में वफ़्द की पहुंच हो गयी। नजाशी ने शानदार तरीक़े से दरबार सजाया।

जब वफ़्द दरबार में पहुंचा तो दरबार की सजावट देख कर हैरान रह गया। अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने बड़े अदब से झुक कर सलाम किया। उन के तमाम साथी जो वफ़्द के साथ थे, नजाशी के

सलाम के लिए झुक गये। सलाम कर के तोह्फ़े पेश किये।

नजाशी ने पूछा, अरबो ! तुम मेरे दरबार में किस लिए आये हो ? और क्या चाहते हो ?

अम्र बिन आस ने कहा, हमारी क़ौम ने एक जुट हो कर हमें आप के हुज़ूर में इस लिए भेजा है कि हुज़ूर से अर्ज़ करें कि हमारे शहर में एक जादूगर पैदा हुआ है, उस का नाम मुहम्मद है। उस ने एक नया मज़हब ईजाद किया है, ऐसा मज़हब, जो किसी और मज़हब से मेल नहीं खाता, बिल्कुल नया मज़हब। हमारे शहर के कुछ नादान लोगों ने इसे क़ुबूल कर लिया है। हम ने जब इन पर ज़ोर दिया कि इस नये मज़हब को छोड़ दें, तो वे बेवक़ूफ़ वहां से भाग कर हुज़ूर की हुकूमत में आ गये हैं। हम उन को वापस ले जाने के लिए हुज़ूर के दरबार में हाज़िर हुए हैं।

नजाशी को उन की बातों को सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ और उस ने कहा, नया मज़हब ईजाद किया है, लोग जादू के शिकार हो गये हैं। यह समझ में आने वाली बात नहीं है।

अम्र बिन आस ने कहा, जनाब ! हम को ख़ुद अफ़सोस है। मुहम्मद ऐसा जादूगर है। जो उस से एक बार बात कर लेता है, वह उस का आशिक़ हो जाता है। उस ने हमारी क़ौम में एक नया फ़ित्ना पैदा कर दिया है, नया मज़हब ईजाद किया है। हुज़ूर उन लोगों को बुला कर मालूम कर लें।

नजाशी ने कहा, मैं ज़रूर बुलाऊंगा। मुझे उन के देखने का शौक़ है। वे अपने आप को क्या बतलाते हैं ?

अम्र बोला, वे ख़ुद को मुसलमान कहते है। भला मुसलमान भी किसी मज़हब का नाम हो सकता है ?

अब वज़ीरे आज़म उठा, यह बूढ़ा आदमी था। उस ने कहा, हुज़ूर ! ये मुसलमान नये मज़हब के मानने वाले हैं। मैं इन से मिल चुका हूं। वे अजीब अक़ीदा रखते हैं, न यहूदी, न ईसाई, न बुतपरस्त। मुझे डर है कि वे कहीं अपने नये मज़हब की तब्लीग़ मुल्क हब्शा में न कर दें। इसलिए मेरे ख़्याल में उन तमाम लोगों को इस वफ़्द के साथ रवाना कर दीजिए और अपने मुल्क और अपनी क़ौम को उन की शरारतों से बचाइये।

नजाशी ने कहा, अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। अच्छा मुसलमानों को बुलाओ।

वज़ीर ने करनल की तरफ़ इशारा किया। वह दरबार से बाहर आया, कुछ सिपाहियों को साथ लिया और मुसलमानों की ओर चल पड़ा। मुसल-

मानों को पहले ही डर था। वह सहम रहे थे कि अब क्या होता है। मक्का में उन पर इतनी सख्तियां हुई थीं कि वे वहां जाने पर मौत को तर्जीह देते थे। उन्हों ने आपस में तै कर लिया था कि मर जाएंगे, मगर यहां से हरगिज न जाएंगे।

जब ईसाई सिपहसालार उन की तलबी के लिए आया, तो सब लोग उस के दरबार में पहुंचे, सब ने बादशाह को सलाम किया। नजाशी ने उन को बैठने के लिए कुर्सियां डलवायीं।

जब सब बैठ गये, तो नजाशी ने पूछा, क्या तुम ने कोई नया मजहब ईजाद किया है, जो ईसाइयत और बुतपरस्ती दोनों के खिलाफ़ है ?

हजरत जाफ़र जवाब देने के लिए खड़े हुए।

आप ने फ़रमाया, ऐ बादशाह ! ऐ लोगो ! हम लोग जाहिल थे, बुत-परस्त थे, बुतों को पूजते थे, मुरदार खाते थे, हराम-हलाल की कोई तमीज न थी, बदकारियां करते थे, पड़ोसियों को सताते थे, भाई-भाई पर जुल्म करते थे और हर मजबूत हर कमजोर को पीस डालता था, गोया दुनिया भर के ऐब हम में थे। खुदा ने हम पर रहम किया और अपने प्यारे नबी को हम पर भेजा। उस नबी की शराफ़त, दयानत और सदाक़त को हम खूब जानते थे। उसने हम को इस्लाम की दावत दी। हमें सिखाया कि हम पत्थरों को पूजना छोड़ दें, हमेशा सच बोलें, खूंरेजी न करें, यतीमों का माल न खाएं, पड़ोसियों को आराम दें। नमाज पढ़ें, रोजे रखें, जकात दें। हम ने उस की दावत मानी, खुदा पर ईमान लाये, शरारत और बुत-परस्ती छोड़ दी, बदकारियों से तौबा की। इस जुर्म में हमारी क़ौम हमारी दुश्मन हो गयी और हम पर सख्तियां करने लगी। हम पर ऐसे-ऐसे जुल्म किये गये, जिन को सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हमें मजबूर किया गया कि हम फिर तबाही के गढ़े में गिर पड़ें। हमने तंग आ कर पनाह ली। अब ये हम पर फिर जुल्म व सितम करने के लिये यहां से ले जाना चाहते हैं।

नजाशी और तमाम दरबारी पूरी तवज्जोह से हजरत जाफ़र की बातें सुनते रहे। जब खामोश हुए तो नजाशी ने कहा, जो बातें तुम ने बयान की हैं, वे तो कुछ बुरी नहीं।

हजरत जाफ़र ने कहा, आप इन से पूछिए कि क्या हम इन के गुलाम हैं ?

अब मुसलमानों की बात नजाशी के वास्ते से अम्र बिन आस से शुरू हुई।

अम्र ने जवाब दिया, इस में से एक भी ग़ुलाम नहीं है, सब के सब आजाद हैं।

हज़रत जाफ़र ने फिर पूछा, हममें से किसी ने किसी का खून किया है? तुम्हारा दामन इस इल्ज़ाम से भी पाक है। जवाब मिला।

हम में से किसी ने किसी का माल चुराया है?

नहीं।

हम में से कोई आप का या आप की क़ौम के किसी आदमी का क़र्ज़ खाये हुए है?

यह बात भी नहीं है।

क्या तुम्हारी दिली मंशा यह नहीं है कि हम तुम्हारे मज़हब में लौट आएं?

बेशक, हम यही चाहते हैं।

क्या तुम बुतों को नहीं पूजते हो?

हमारे बाप-दादा का मज़हब यही है। तुम्हारे बाप-दादों का भी यही मज़हब था, अब तुम ने नया दीन अपना लिया है।

जब नजाशी ने देखा कि बात बढ़ती जा रही है, तो दोनों को खामोश रहने का हुक्म दिया। दोनों चुप हो गये।

नजाशी ने हज़रत जाफ़र तैयार से कहा, तुम्हारे नबी पर कोई किताब भी नाज़िल हुई है?

हज़रत जाफ़र तैयार ने जवाब दिया, हां हमारे मोहतरम नबी पर क़ुरआन मजीद नाज़िल हो रहा है?

उस ने फिर पूछा, तुम्हें क़ुरआन का कोई हिस्सा याद है?

याद है।

तो सुनाओ।

तमाम मुसलमान हाथ बांध कर खड़े हो गये। हज़रत जाफ़र ने सूरः मरयम की तिलावत शुरू की। आप ने बड़ी अच्छी आवाज़ में पढ़ना शुरू किया, जिस में कहा गया था—

तेरे परवरदिगार की रहमत बन्दा ज़करिया को याद करती है। जिस वक़्त उस ने अपने पालनहार को धीरे से पुकारा। उस ने कहा, ऐ परवरदिगार! मेरी हड्डियां सुस्त हो गई हैं, मेरे सर ने बुढ़ापे का शोला मारा है और मेरे परवरदिगार! मैं तुझे पुकारने में बद-नसीब न था और मैं डरता हूं कि मेरे कोई वारिस नहीं है। मेरी औरत बांझ है। ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे अपने पास से वली बख्श, ताकि मेरा वारिस हो और ऐ

मेरे परवरदिगार ! उसे पसन्दीदा कर।

हज़रत जाफ़र तैयार इतनी अच्छी आवाज़ में क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे कि तमाम दरबार उस प्यारी आवाज़ से भर गया। नजाशी, वज़ीर, दरबारी सब सर झुकाये बैठे बड़ी तवज्जोह से सुन रहे थे। नजाशी की शान कह रही थी कि वह बहुत कुछ ज़ब्त कर रहा है, उस से न रहा गया और बेक़ाबू हो कर उस के आंसू जारी हो गये।

हज़रत जाफ़र कुछ और आयतें पढ़ कर ख़ामोश हो गये। देर तक आप की आवाज़ गूंजती रही। कुछ देर बाद नजाशी ने सर उठाया, रेशमी रूमाल से आंसू पोंछा और कहा—

ख़ुदा की क़सम ! इस कलाम से सच्चाई की बू आती है। यह ऐसा ही कलाम मालूम होता है, जैसा कि तौरात में है। मैं इक़रार करता हूं कि यह कलाम इंसान का कलाम नहीं है, बल्कि यह ख़ुदा का कलाम है।

नजाशी के इन लफ़्ज़ों से जहां मुसलमान इसलिए ख़ुश हुए कि उन्हें उम्मीद हुई कि शाह नजाशी उन्हें क़ुरैश के वफ़्द के हवाले न करेगा, वफ़्द वालों को यह डर हुआ कि शायद वे यहां से नाकाम हो जाएंगे।

अम्र बिन आस ने नजाशी से कहा, हुज़ूर ! ग़ज़ब तो यही है कि जब वह कलाम पढ़ते हैं, जो मुहम्मद (सल्ल०) उन को लिख कर देता है, तो सुनने वाले पर बड़ा असर होता है। यह कलाम ख़ुदा का कलाम नहीं है, बल्कि मुहम्मद का कलाम है।

हज़रत जाफ़र तैयार को अम्र की इस बेहूदा बात पर बड़ा ग़ुस्सा आया और ग़ुस्से की वजह यह थी कि अम्र अच्छी तरह जानता था कि हुज़ूर सल्ल अनपढ़ हैं, लेकिन नजाशी को धोखा देने के लिए अब कह रहा था कि वह लिख कर देते हैं। उन्हों ने जोश में आकर कहा, अम्र ! सच बोलो, क्या तुम नहीं जानते कि हुज़ूर उम्मी अनपढ़) हैं।

नजाशी भी बोल पड़ा, लगता है, तुम झूठ बोलते हो। जब तुम इस बात के क़ायल हो कि वह लिखना-पढ़ना नहीं जानते, तो एक अनपढ़ का कलाम इतना ज़ोरदार हो सकता है ? तास्सुब ने तुम को अन्धा कर दिया है। तुम सब कुछ जानते हुए भी अनजान बनते हो।

अम्र डर गया। उसे डर हुआ कि शायद नजाशी उसे और उस के साथियों को दरबार से न निकलवा दे। उस ने फ़ौरन कहा, एक बात कहने की रह गयी है।

नजाशी ने पूछा, वह क्या है ?

अम्र ने कहा, ये लोग हज़रत ईसा के बारे में बुरी-बुरी बातें कहते हैं।

उन्हें खुदा का बेटा नहीं मानते।

एक पादरी ने खड़े होकर अम्र के इन लफ़्ज़ों की ताईद की और कहा, यह बात बिल्कुल सही है। ये नये मज़हब के मानने वाले खुदावन्द (हज़रत ईसा) की शान में गुस्ताखी की बातें करते हैं।

यह सुन कर नजाशी को गुस्सा आ गया। उस ने हज़रत जाफ़र तैयार से कहा कि क्या यह सही है कि तुम हज़रत ईसा की शान में गुस्ताखी करते थे ?

हज़रत जाफ़र तैयार ने पूरी हिम्मत से काम लेते हुए जवाब दिया, यह बात भी ग़लत है। हम ईसा अलैहिस्सलाम को नबी मानते हैं और उन की शान में वही कहते हैं, जो खुदा ने उन की शान में फ़रमाया है।

क्या है ? नजाशी ने कहा।

हज़रत जाफ़र ने कहा, अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया, 'वह अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं और उस का हुक्म हैं, उन को मरयम की तरफ़ डाल दिया और रूह की तरफ़ से हैं।

नजाशी ने कहा, खुदा की क़सम ! इंजील में भी यही लिखा है। तुम सच कहते हो।

अब अम्र को यक़ीन हो गया कि नजाशी मुसलमानों को उन के हवाले न करेगा। उस ने कहा, बादशाह ! हमारें यह आदमी हैं, जो हम से, अपनी क़ौम से और अपने मुल्क और अपने माबूदों से बाग़ी होकर भाग आए हैं, इसलिए आप इन को हमारे हवाले कर दें, यही बेहतर है।

नजाशी को जोश आ गया, बोला, हरगिज़ नहीं, उन्हें मेरे मुल्क से कोई ताक़त नहीं लेजा सकती। तुम मुझको लालच देने के लिए ये तोहफ़े लाये हो, इनको वापस ले जाओ और क़ुरैश के सरदारों से कह दो कि हब्शा का बादशाह एक मुललमान को भी तुम्हें वापस न देगा और ऐ मुसलमानो ! तुम आज़ाद हो, पूरी बे-फ़िक्री से तुम यहां रहो। जब तक मैं ज़िंदा हूं, कोई तुम्हारा बाल बेका नहीं कर सकता।

हज़रत जाफ़र तैयार और तमाम मुसलमानों ने नजाशी का शुक्रिया अदा किया। वह नजाशी के दरबार से विदा होकर अपने ठहरने की जगहों पर चले गये।

क़ुरैशी वफ़्द तमाम तोहफ़ों को लेकर बड़ी बद-दिली से विदा हुआ और उसी दिन जहाज़ पर बैठ कर जद्दा की तरफ़ रवाना हो गया।

हज़रत अमीर हमज़ा इस्लाम की गोद में

यह वफ़्द जद्दा पहुंच कर मक्का की तरफ़ रवाना हुआ।

मक्का वालों को पूरा यक़ीन था कि हब्शा का बादशाह नजाशी मुसलमानों को वफ़्द के हवाले कर देगा। उन्हों ने तै कर लिया था कि अब तमाम मुसलमानों को क़ैद कर देंगे, ताकि वे बाहर न जा सकें, न किसी से मिल सकें। चाहते तो यह थे कि तमाम मुसलमानों को क़त्ल कर डालें, लेकिन मुसलमान किसी एक क़बीले से ताल्लुक़ न रखते थे, इस लिए उन्हें यह अंदेशा था कि अगर एक क़बीला भी किसी एक मुसलमान के ख़ून का बदला लेने के लिए उठ खड़ा हुआ, तो फिर तमाम क़बीलों में लड़ाई छिड़ जाएगी और चूंकि आए दिन की लड़ाइयों ने उन का तमाम कस-बल निकाल दिया था, इसलिए वे किसी एक लड़ाई के लिए भी तैयार न थे, जिस से कि तमाम अरब में आग लग जाए और अरब का अम्न व अमान ख़ाक में मिल जाए।

इस डर से, वे मुसलमानों को क़त्ल करने में हील-हुज्जत कर रहे थे। उन्हों ने यह तै कर लिया था कि जितने मुसलमान हैं, उन सब को एक जगह जमा कर के क़ैद कर दें और बहुत कड़ाई से उन की निगरानी की जाए।

यह ख़्याली पुलाव पका ही रहे थे कि वफ़्द आ गया और उस ने अपनी नाकामी की पूरी दास्तान क़ुरैश को कह सुनायी। वफ़्द के नाकाम आने से मक्का के तमाम काफ़िरों को बड़ा रंज हुआ। हब्शा के बादशाह नजाशी पर भी ग़ुस्सा आया, पर उनमें इतनी ताक़त नहीं थी कि हब्शा के बादशाह पर चढ़ाई कर देते और उस से तलवार के बल पर अपनी मांग मंजूर करा सकते। इस लिए ख़ामोशी को ही बेहतर समझा। उन्हें यह डर हुआ कि शायद हब्शा के मुसलमान मसीही बादशाह नजाशी को मक्के पर न चढ़ा लायें। इसलिए उन्हों ने ख़ुफ़िया तरीक़े से लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं और जद्दा में सुराग़रसां भेज दिये, ताकि जब वे ईसाई फ़ौज को आता देखें, तो मक्के वालों को ख़बर कर दें।

इस इन्तिज़ाम के बाद उन्हों ने उन मुसलमानों पर जो मक्के में रह गये थे और रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से हिजरत न कर सकते थे, इतनी सख़्तियां शुरू कर दीं कि उन्हें ज़िंदगी से मौत कहीं अच्छी नज़र आने लगी। मक्का के काफ़िरों ने यह कोशिश की कि मुसलमानों को

खाने-पीने का सामान न मिल सके, इसलिए दुकानदारों को हिदायत कर दी कि कोई चीज़ किसी मुसलमान के हाथ किसी क़ीमत पर हरगिज़ न बेचें और बाक़ी पर भी पहरा बिठाया गया। इस से मुसलमानों को बेहद तक्लीफ़ का सामना करना पड़ा। कई-कई दिन तक खाना न मिलता था और प्यास बुझाने को पानी भी हाथ न आता था, इसलिए वे घरों में भूखे और प्यासे छिपे बैठे रहते। बाहर निकलते तो आवारा और बदमाश लड़के उन के पोछे लग जाते, उन्हें मारते, गालियां देते, यहां तक कि कपड़े फाड़ डालते। मुसलमान बड़ी तक्लीफ़ और परेशानी में थे।

मगर वे ऐसे अक़ीदे के पक्के थे कि सख्तियां बर्दाश्त कर रहे थे। मुसीबतों पर मुसीबतें झेल रहे थे, लेकिन क़दम न डगमगाते थे। कुफ़्फ़ारे मक्का इस से और हैरान व परेशान रहते थे।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० लोगों की नजरों से छिप कर सफ़ा पहाड़ पर जा पहुंचे।

अस्र का वक़्त हो गया था। आप एक घाटी में नमाज़ पढ़ने लगे। इत्तिफ़ाक़ से अबू जह्ल उधर आ निकला। आप को नमाज़ पढ़ते देख कर खड़ा हो गया और ग़ैज़ व ग़ज़ब भरी नज़रों से हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखने लगा।

जब आप सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो अबूजह्ल बढ़कर आप के पास पहुंचा और गुस्ताखी के साथ बोला, मुहम्मद! तेरी ज़ात ने तमाम क़ौम और सारे अरब को बड़े फ़ित्ने में डाल रखा है। क्यों न आज मैं तेरा खात्मा कर डालूं?

आप खामोश रहे।

इत्तिफ़ाक़ से अबू जह्ल की एक लौंडी भी उधर से आ निकली। वह एक चट्टान के पीछे छिप कर देखने लगी कि अबू जह्ल मुहम्मद के साथ क्या सुलूक करता है?

जब हुज़ूर सल्ल० ने अबू जह्ल को कुछ जवाब न दिया, तो उस ने फिर कहा, मुहम्मद, तुम ने क़ौम को बेहद मुश्किलों में डाल रखा है।

आप ने फ़रमाया, अबू जह्ल! मैं ने क़ौम को मुश्किलों में फंसा दिया है या क़ौम ने मुझे और मुसलमानों को मुसीबत में डाल रखा है?

अबू जह्ल बोला, अगर तू इस्लाम की तब्लीग़ छोड़ दे, तो हम तुझे मक्के का बादशाह बना दें।

मैं बादशाही नहीं चाहता। आप ने फ़रमाया।

जितनी दौलत कहो, तुम्हें दे दें। अबू जह्ल ने कहा।

ख़ुदा की क़सम ! मुझे दौलत की परवाह नहीं है । आप ने फ़रमाया ।

ख़ुदा के नाम से काफ़िरों को चिढ़ थी । अबू जह्ल भी ख़ुदा का नाम सुनकर फुंकारें मारने लगा । ख़ूब जी भरकर आपकी शान में गुस्ताख़ी की, बुरा-भला कहने लगा ।

हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश बैठे रहे ।

अबू जह्ल का गुस्सा बढ़ता गया । गुस्से में आ कर एक पत्थर उठाया और अपनी पूरी ताक़त से खींच मारा । पत्थर आप की पेशानी पर पड़ा । ख़ून का फ़व्वारा उबल पड़ा और आप लहूलुहान हो गये । आप हाथ से ख़ून पोंछते जाते थे और कहते जाते थे कि अबू जह्ल ! तुम मुझको जितना भी सता सकते हो, सता लो । मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं ।

अबू जह्ल डर गया कि आप कहीं शहीद न हो जाएं, जिसकी वजह से बनी हाशिम ख़ानदान उस से, उस के ख़ानदान से, साथ ही उस के क़बीले से हुज़ूर सल्ल० का बदला ले ले । इसलिए वह इधर-उधर देखते हुए वहां से चल पड़ा उस के चले जाने के बाद हुज़ूर सल्ल० भी उठे और अपने मकान की ओर चल पड़े ।

अबू जह्ल की बांदी ने इस पूरे वाक़िए को अपनी आंखों से देखा । उसे अबू जह्ल पर बड़ा गुस्सा आया ।

उस वक़्त सूरज डूब गया था, अंधेरा फैल रहा था । बांदी भी ख़ाना काबा की तरफ़ चल पड़ी । वहां उसे अमीर हमज़ा मिल गये । अमीर हमज़ा हुज़ूर सल्ल० के चचा और दूध शरीक भाई भी थे । वह वही शिकार का शौक़ पूरा कर के ख़ाना काबा का तवाफ़ करने आये थे ।

बांदी ने अमीर से कहा, ऐ अमीर ! ठहर जाओ, मुझे आप से कुछ कहना है ।

हज़रत हमज़ा खड़े हो गये, बोले, क्या कहना चाहती हो ?

उस ने कहा, क्या मुहम्मद सल्ल० तुम्हारे भतीजे और दूध शरीक भाई नहीं हैं ?

क्यों नहीं ? हज़रत हमज़ा बोले ।

क्या आप को उन से मुहब्बत नहीं है ? बांदी ने पूछा ।

मुझे उन से बहुत ज़्यादा मुहब्बत है ।

अफ़सोस है, ऐ अमीर ! बांदी ने कहा, तुम्हारे भतीजे पर लोग बेजा सख़्तियां करते हैं और तुम को परवाह तक नहीं होती । अभी मुहम्मद सल्ल० सफ़ा की पहाड़ी पर बैठे थे । अबू जह्ल ने उन को सैकड़ों गालियां दीं । जब हुज़ूर सल्ल० ने जवाब न दिया, तो उस ने एक बड़ा पत्थर उठा

कर उन के सर पर दे मारा। उन का सर फट गया और ख़ून का फ़व्वारा बह निकला।

बांदी की इस बात से अमीर हमज़ा को जोश आ गया। बोले, मैं अभी उस कमबख़्त से जा कर बदला लेता हूं।

यह कह कर वह आगे बढ़ गये।

अबू जह्ल अपने दोस्तों में घिरा बैठा था।

अमीर हमज़ा अबू जह्ल के पास पहुंच गये, ग़ुस्सा तो था ही, कमान उठा कर इस ज़ोर से उस के सर पर मारी कि उस का सर फट गया, फिर गरज कर बोले, अबू जह्ल! सुन, मैं मुहम्मद सल्ल० के दीन पर ईमान लाया हूं। बोल, अगर तेरी कोई हिम्मत हो।

हज़रत हमज़ा के ग़ुस्से और जलाल को देख कर अबू जह्ल कांप गया, बोला, अमीर! मुझ से वाक़ई ग़लती हुई।

अमीर हमज़ा का ग़ुस्सा ठंडा हुआ तो हुज़ूर सल्ल० को देखने और तबियत मालूम करने आप के मकान की तरफ़ चल पड़े। वहां देखा कि हज़रत ख़दीजा और हज़रत फ़ातमा हज़रत मुहम्मद सल्ल० का सर धो रही हैं और कपड़े को घाव में भरने के लिए जला रखा है।

हज़रत अमीर हमज़ा आप के पास बैठ गये। आप ने हमदर्दी के अंदाज़ में कहा—

मेरे प्यारे भतीजे! तुम को सुन कर बहुत ख़ुश होना चाहिए कि मैं ने बढ़कर अबू जह्ल से तुम्हारा बदला ले लिया और इस ज़ोर से उस के सर पर कमान मारी कि उस का सर फट गया।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अमीर हमज़ा की ओर देख कर फ़रमाया—

ऐ चचा! मुझे इस बात से ख़ुशी नहीं हो सकती कि आप ने मेरा बदला ले लिया है, मुझे तो ख़ुशी उस वक़्त होगी, जब आप इस्लाम में दाख़िल हो जाएंगे।

हज़रत हमज़ा हुज़ूर सल्ल० की हालत और हज़रत फ़ातमा के रोने की कैफ़ियत देख कर पहले ही नर्म पड़ चुके थे, बे-अख़्तियार बोले, अगर तुम्हारी यही ख़ुशी है, तो मुझे यह भी मंज़ूर है, तुम मुझे मुसमलमान कर लो।

हुज़ूर सल्ल० इस बात से खिल उठे। आप अपने ज़ख़्म की टीसें भूल गए और मारे ख़ुशी के फ़ौरन अमीर हमज़ा की तरफ़ मुतवज्जह हुए, उन्हें कलिमा पढ़ाया और हज़रत हमज़ा मुसलमान हो गये।

यह वाक़िआ सन ०६ नबवी का है।

क़त्ल का मशिवरा

हज़रत अमीर हमज़ा जैसे निडर और बहादुर शख़्स के इस्लाम अपना लेने की ख़बर जंगल की आग की तरह मक्के के एक-एक घर में पहुंच गयी, कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए यह बड़ा धमाका था। वे बहुत तिलमिलाये, लेकिन हिम्मत न हुई कि हज़रत हमज़ा को कुछ कह सकें या उन्हें सता सकें। हां, उन के ख़िलाफ़ राज़दारी से ख़ुफ़िया मशिवरा करने लगे।

हज़रत अमीर हमज़ा के मुसलमान होने से आवारा लड़कों और गुंडों और बदमाशों के हौसले भी पस्त हो गये। सब ने यही समझ लिया कि अब अगर मुसलमानों को सताया गया, तो अमीर हमज़ा बदला लिए बिना न रहेंगे। इस लिए वे भी एहतियात करने लगे, लेकिन जब और जिस वक़्त मौक़ा पाते, सताये बिना न रहते थे।

अब फिर मुसलमान कुछ आज़ादी से बाज़ारों में आने-जाने लगे और खाने-पीने की फ़राख़ी हो गयी। लोगों से मिलने-जुलने लगे और तब्लीग़ का सिलसिला तेज़ हो गया।

हर मुसलमान जिस से भी मिलता, इस्लामी तालीम उस के सामने पेश करता, क़ुरआन मजीद की आयतें सुनाता, लोगों पर उन का असर होता। कुछ मुसलमान हो जाते और अक्सर को मुसलमानों से हमदर्दी हो जाती। इस तरह से इस्लाम धीरे-धीरे फैलने लगा।

कुफ़्फ़ारे मक्का को इस से बड़ी चिन्ता हो गयी।

उन्हों ने एक मज्लिसे शूरा बुलायी। फ़ौरन ही तमाम लोग जमा हो गये। इज्लास शुरू हुआ। इस बार अबू सुफ़ियान को सदर बनाया गया।

अबू जह्ल ने कहा, अरब भाइयो! कितने अफ़सोस की बात है कि जितना मुसलमानों को दबाने की कोशिश की गयी, उतना ही वे उभरते चले गये। जो लोग हिजरत कर के हब्शा चले गये हैं, उन की ओर से डर है कि वे कहीं हब्शा के बादशाह को मक्के पर न चढ़ा लायें। मुसलमानों का हाल यह है कि उन पर मुहम्मद का जो जादू एक बार चढ़ गया, तो वह अब उतरने का नाम नहीं लेता। न जाने मुहम्मद में कौन सा जादू है कि सब उस पर मोहित हो जाते हैं। मैं ने काहिनों से पूछा, आराफ़ से पूछा, तो वे भी इस के अलावा कुछ नहीं बताते। अबरश के पास मैं गया था, उस ने मुझे बताया कि अगर हम ने जल्दी न की और फ़ित्ने को दबा न दिया, तो सारा मक्का, बल्कि तमाम अरब, बल्कि दुनिया का बड़ा हिस्सा

मुसलमान हो जाएगा। कितने ज़िल्लत और रुसवाई की बात है यह हमारे लिए।

अबू जह्ल ने पूरे मज्मे पर निगाह डाली। हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे। हम इस ज़िल्लत को बर्दाश्त करने के लिए ज़िंदा नहीं रहना चाहते।

अबू जह्ल ने जोश में आ कर कहा, इस तरह से न कहो, बल्कि यह कहो कि हम अपनी ज़िंदगी में ऐसा वक़्त न आने देंगे।

फिर आवाज़ें आयीं, बेशक हम ऐसा वक़्त न आने देंगे।

अबू जह्ल ने कहा, जब यह बात है, तो तै कर लीजिए कि इस्लाम का ख़तरा किस तरह मिटाएं, क्या उपाय करें, जिस से इस्लाम न फैलने पाये।

अबू जह्ल बोला, लगता है कि हम इस बात से डर गये हैं कि अमीरे हमज़ा मुसलमान हो गये, और हम ने सख़्तियों में कमी कर दी, मुसलमानों की हिम्मत बढ़ गयी। हमें चाहिए कि हम फिर पहले ही की तरह सख़्तियां शुरू कर दें कि कोई मुसलमान घर से बाहर न निकलने पाये, न वे बाहर आयेंगे, न इस्लाम फैलेगा।

वलीद ने कहा, इस सिलसिले में न हम को पहले कामियाबी हुई और न अब उम्मीद है। बेहतर है कि मुसलमानों का क़त्ले आम कर के उन का ख़ात्मा ही कर दिया जाए।

उत्बा बोला, हमारा ऐसा करना, तमाम क़बीलों से लड़ाई की दावत देना है, क्योंकि जो लोग मुसलमान हुए हैं, वे हर क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं। यह नामुनासिब तज्वीज़ है।

अबू जह्ल बोला, मैं भी इसे पसन्द नहीं करता। बेचारे आम मुसलमानों का क्या क़सूर है? उस पर तो जादू कर दिया गया है, क्यों न उस आदमी को क़त्ल कर डालो, जो सब से बड़ा जादूगर है और पूरे फ़िल्ने की जड़ है।

उमर ने कहा, यही बेहतर राय मालूम होती है।

आस बिन वाइल सहमी बोला, इस बात को सोच लो कि मुहम्मद हाशिमी हैं। अगर इन के क़त्ल से बनू हाशिम ख़ानदान उठ खड़ा हुआ, तो फिर वही शक्ल होगी कि तमाम अरब क़बीलों में लड़ाई शुरू हो जाएगी।

अबू लहब ने कहा, तुम इस से मुतमइन रहो। मैं भी हाशिमी हूं। मैं अपने क़बीले को क़ाबू में रखूंगा।

वलीद ने संभल कर कहा, अगर यह बात है, तो अब कोई ख़तरा नहीं है। बस, अब मुहम्मद का ख़ात्मा ही कर डालो।

अबू जह्ल ने तमाम लोगों को खिताब करते हुए कहा, बोलो, कौन अपने माबूदों, अपने मज़हब, अपनी क़ौम की हिमायत में यह काम करने को तैयार है ?

अबू जह्ल की इस ललकार पर लोग खामोश हो गये।

उमर को जोश आ गया और उन्होंने जोशीले अन्दाज़ में कहा, मैं इस फ़िल्ने का खात्मा कर दूंगा। मेरी तलवार बग़ैर मुहम्मद (सल्ल०) को खत्म किये म्यान में न जाएगी।

मज्मा उछल पड़ा। उमर की बहादुरी की तारीफ़ होने लगी।

अबू जह्ल ने हिम्मत बढ़ाते हुए कहा, ऐ खत्ताब के बेटे उमर! मुहम्मद को जब क़त्ल कर के आओगे, तो मैं तुम को सौ सुर्ख ऊंट इनाम में दूंगा।

उमर बोले, मैं किसी लालच में नहीं, बल्कि क़ौम की भलाई में यह काम करूंगा।

अबू जह्ल तुरन्त बोला, यह तो सभी जानते हैं, मैं तो सिर्फ़ इनाम की बात कर रहा हूं।

उमर ने कहा, तो खुशी से तुम्हारा इनाम क़ुबूल करूंगा।

इस के बाद उमर उठे और हुज़ूर सल्ल० के मकान की तरफ़ चल दिये।

तमाम मज्मा उन की कामियाब वापसी का इन्तिज़ार करने लगा।

उमर मुसलमान हो गए

हज़रत उमर क़ुरैश की नस्ल से थे, जो आठवीं पीढ़ी में हुज़ूर सल्ल० से मिल जाता है। बड़े बहादुर और जोशीले थे। वह नवजवान थे, उन की उम्र २७ वर्ष की थी। गुस्सा भी उन्हें था। तमाम अरब में वह 'अरब के शेर' के नाम से मशहूर थे। आप अच्छी तरह से लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। अरबी ज़ुबान के माहिर थे। आप बहादुर भी थे और निडर भी। जब और जिस से उलझ जाते थे, वही दब जाए, तो जाए पर आप न दबते थे।

तमाम अरब जानता था कि उमर जब म्यान से तलवार निकाल लेते हैं, तो वह अपना काम कर के ही वापस म्यान में आती है। आपने तलवार म्यान से निकाल कर हुज़ूर सल्ल० को क़त्ल करने का इरादा किया था, इसलिए सब समझ रहे थे कि उमर की तलवार मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम कर के ही म्यान में वापस आएगी।

इस ख्याल से लोगों को बड़ी खु[illegible]ई। कुछ ही लम्हे में मक्का में यह

खबर बिजली की तरह फैल गयी कि उमर हुज़ूर सल्ल० को क़त्ल करने के लिए चल चुके हैं।

उमर बड़ी शान से झूमते-झामते हाथ में नंगी तलवार लिए चले जा रहे थे। जब वह बाज़ार के आख़िरी सिरे पर पहुंचे, तो उन के सामने से हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास आते हुए मिले। हज़रत साद मुसलमान हो चुके थे। उमर के हाथ में नंगी तलवार देख कर वह ठिठके। उमर को रोकते हुए कहा, खैर तो है? हाथ में नंगी तलवार कहां लिए जा रहे हैं?

मुहम्मद को क़त्ल करने। उस ने क़ौम में बड़ा फ़ित्ना पैदा कर दिया है। आज उस का ख़ात्मा कर के आऊंगा। उमर ने कहा।

हज़रत साद यह सुन कर बड़े परेशान हुए, बोले, हुज़ूर सल्ल० को क़त्ल कर के तुझे क्या मिलेगा?

उमर ने गुस्से में कहा, क्या तू भी मुसलमान हो गया है?

हां, मैं भी मुसलमान हो गया हूं। साद ने कहा।

फिर आगे फ़रमाया, पहले अपने घर की खबर लो, तो हुज़ूर सल्ल० को बाद में क़त्ल करना।

उमर ने पूछा, घर की क्या खबर लूं?

तुम्हारी बहन फ़ातमा और तुम्हारे बहनोई सईद बिन ज़ैद भी मुसलमान हो चुके हैं।

यह सुन कर उमर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

उन्हों ने जोश भरी आवाज़ में कहा, अगर यह बात है, तो पहले इन दोनों का ख़ात्मा कर आऊं।

इतना कह कर वह अपने बहनोई के मकान की तरफ़ पलटे।

हज़रत साद भी यही चाहते थे कि किसी न किसी तरह उन्हें इतना मौक़ा मिल जाये कि वह हुज़ूर सल्ल० को इस की इत्तिला करा दें। उमर के पलटते ही वह पलटे और जल्दी से क़दम उठा कर वह अरक़म के मकान की तरफ़ चल पड़े। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० नहीं थे।

उमर जोश में भरे हुए हज़रत सईद के मकान पर पहुंचे। दरवाज़ा बन्द था और किसी के पढ़ने की आवाज़ आ रही थी। आप दरवाज़े से लग कर खड़े हो गये और कान लगाकर सुनने लगे। धीमी आवाज़ की वजह से पूरा न सुन सके, लेकिन इतना अन्दाज़ा हो गया कि शायद कोई क़ुरआन मजीद पढ़ रहा है।

उमर का गुस्सा बढ़ गया, दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया। दरवाज़ा खुला और आपकी बहन फ़ातमा दरवाज़े पर खड़ी नज़र आयीं।

भाई जान ! आप हैं ? आ जाइए। हज़रत फ़ातमा ने कहा।

उमर गुस्से में भरे हुए मकान के अन्दर दाखिल हुए। सामने ही एक चटाई पर आप के बहनोई हज़रत सईद बैठे थे। वह उमर का गुस्से से भरा चेहरा देख कर सहम गये। डरते-डरते अदब के तौर पर खड़े हो गये। उमर ने बढ़कर तलवार चटाई पर रख दी और हज़रत सईद से पूछा बताओ तुम क्या पढ़ रहे थे ?

उमर इस तरह खड़े थे, गोया हज़रत सईद पर झपटने वाले हैं।

उन की बहन फ़ातमा यह देख कर समझ गयीं कि उमर को उन के मुसलमान होने का इल्म हो चुका है। चूंकि उमर बड़े जोशीले हैं, ज़रूर सईद रज़ि० को मारे-पीटेंगे, साथ ही उन को यह भी मालूम था कि हज़रत लुबनिया, उन की बांदी मुसलमान हो गयी हैं और वह उन्हें इस क़दर मारते हैं कि मारते-मारते थक जाते हैं, इस लिए वह डर गयीं और उन्होंने फ़रमाया—

भाई जान ! तश्रीफ़ रखिये। हम जो पढ़ रहे थे, आप को सुना देंगे।

उमर गुस्से में भरे हुए थे। उन्हों ने हज़रत फ़ातमा को झटका देकर अलग कर दिया और हज़रत सईद का दामन पकड़ कर उन्हें झटक देते हुए कहा, ओ गुमराह ! तू क्या पढ़ रहा था ?

हज़रत सईद डरी हुई निगाहों से उन्हें देखने लगे। कुछ जवाब न दिया।

उमर को इतना गुस्सा आया कि उन्हों ने हज़रत सईद को नीचे गिरा दिया। मारना शुरू किया, मारते जाते थे और कहते जाते थे कि कमबख़्त! तुम मुसलमान हो गये हो। अब मुसलमान होने का मज़ा चखो। इतना मारूंगा कि तुम मर जाओगे।

हज़रत सईद रज़ि० ने कोई जवाब न दिया। ख़ामोश पड़े पिटते रहे।

उमर ने कहा, ज़लील, कमीने, तुम ने इस्लाम क़ुबूल कर के हमारे ख़ानदान को बट्टा लगा दिया है। बोल, क्या तू इस्लाम छोड़ेगा ?

हज़रत सईद ने कहा, नहीं, नहीं, मरते दम तक इस्लाम का दामन हाथ से न छोडूंगा।

यह जवाब सुन कर उमर पहले से भी ज़्यादा ग़ज़बनाक हो कर बिफरे, आपे से बाहर हो गये। उन्हों ने और ज़्यादा मारना शुरू कर दिया।

अब हज़रत फ़ातमा से सब्र न हो सका।

उन्हों ने उमर का हाथ पकड़ते हुए कहा, भाईजान ! बस करो।

आखिर कब तक मारोगे ?

उमर तो गुस्से में भरे ही थे। आप ने ज़ोर से एक घूंसा मारा। फ़ातमा का सर दीवार से टकरा गया, फटा और खून बह कर चेहरे पर फैलने लगा।

हज़रत फ़ातमा रज़ि० ने जोश में भर कर कहा, हां ऐ उमर! हम मुसलमान हो चुके हैं, मुहम्मद सल्ल० के फ़रमांबरदार बन गये हैं, जो तुम से हो सके, करो।

उमर ने फ़ातमा का खून में सना चेहरा देखा, तो आप का गुस्सा धीमा पड़ गया। आप ने हज़रत सईद रज़ि० को छोड़ दिया। उठे और बहन से बोले, मुझे वह कलाम लाकर दिखाओ या सुनाओ, जो तुम अभी-अभी पढ़ रहे थे।

उमर ने यह बात संजीदगी से कही थी, हज़रत फ़ातमा ने चेहरे से ही भांप लिया था, इसलिए उन्हों ने थोड़ी हिम्मत दिखाते हुए कहा—

ऐ भाई! हम क़ुरआन पढ़ रहे थे। क़ुरआन के बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है कि इस को वही छू सकते हैं, जो पाक हैं। अगर आप नहा कर आए हैं, तो हम आप को पढ़ कर सुना सकते हैं, इस में शक नहीं कि यह खुदा का हुक्म है।

इस कहने का मक़सद यह था कि उमर नहा लें, ताकि उन्हें जो थोड़ा बहुत गुस्सा रह गया है, वह भी जाता रहे।

उमर को क़ुरआन मजीद सुनने का बहुत शौक़ था। उन्हों ने कहा, अच्छा, मैं गुस्ल कर के आता हूं।

यह कहते ही वह बाहर चले गये।

एक अरब मकान के अन्दर छिपे हुए थे। यह खब्बाब बिन अरत्त थे। क़ुरआन मजीद की तालीम देने के लिए हज़रत सईद रज़ि० के पास आते, उमर को देख कर छिप गये थे। उन्हों ने हज़रत फ़ातमा को खिताब कर के कहा, फ़ातमा! तुमने यह क्या ग़ज़ब किया कि अपने भाई को क़ुरआनी आयतों के दिखाने का वायदा कर लिया।

हज़रत फ़ातमा ने कहा, इत्मीनान रखो खब्बाब! मुझे यक़ीन है कि कलामे इलाही उमर के दिल पर असर किये बग़ैर न रहेगा।

खब्बाब ने कहा, खुदा ऐसा ही करे।

अब हज़रत सईद रज़ि० भी उठ कर खड़े हो गये थे।

उन्हों ने कहा मेरा दिल गवाही देता है कि उमर मुसलमान हो जाएंगे।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने कहा, ख़ुदा करे, ऐसा ही हो। उमर के मुसलमान होने से इस्लाम और मुसलमानों को बड़ी ताक़त मिलेगी।

हज़रत फ़ातमा रज़ि० के ज़ख़्म से ख़ून अब तक जारी था।

हज़रत सईद ने कहा, तुम अपना सर और मुंह धो डालो।

फ़ातमा ने मुंह-हाथ धोया, ज़ख़्म पर पट्टी बांधी।

इस बीच उमर नहा-धो कर आ गये।

उन्हों ने आते ही कहा, अब दिखाओ, तुम क्या पढ़ रहे थे ?

उमर को आते हुए देख कर ख़ब्बाब फिर घर के अन्दर जा छिपे।

हज़रत फ़ातमा अन्दर से कुछ पन्ने लायीं। इन पर सूरः हदीद लिखी हुई थी।

उमर ने हज़रत फ़ातमा से वे पन्ने लेकर ख़ुद ही पढ़ना शुरू कर दिया, लिखा था—

'ज़मीन व आसमान के रहने वाले ख़ुदा की तस्बीह करते हैं और ख़ुदा ही ग़ालिब और हिक्मत वाला है। वह आसमानों और ज़मीन का बादशाह है। वही ज़िंदा करता है, मारता है और हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'

उमर ने अभी इतना ही पढ़ा था कि बोल उठे, वाह! क्या मीठा कलाम है। ऐसा कलाम आज तक न मैं ने देखा, न सुना। इस का असर सी... दिल पर होता है।

आप ने पढ़ना शुरू किया। ज्यों-ज्यों आप पढ़ते जाते थे, दिल मुतास्सिर होता चला गया। जब आप ने यह आयत पढ़ी—'ख़ुदा और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और ख़र्च करो उस चीज़ को, जिसे तुम्हें पहले लोगों का जानशीन कर के दिया गया है। पस जो लोग ईमान लाये, उनके लिए बड़ा सवाब है।

इन आयतों का उमर पर बड़ा असर पड़ा और वह बे-अख़्तियार पुकार उठे, यह कलाम बहुत उम्दा है। मैं ईमान लाया इस पर।

उमर की इस तब्दीली से हज़रत सईद, फ़ातमा दोनों बहुत ख़ुश हुए। हज़रत ख़ब्बाब भी ख़ुश हो कर बाहर निकल आए। उन्हों ने आते ही उन को सलाम किया।

हज़रत ख़ब्बाब ने कहा, मैं आप के बहनोई और बहन को क़ुरआन मजीद की तालीम देने आया करता था। आप को देख कर छिप गया था। ऐ ख़त्ताब के बेटे! मुबारक हो। मुहम्मद सल्ल० की दुआ आप के हक़ में मक़्बूल हुई।

कैसी दुआ! हज़रत उमर ने पूछा।

हुज़ूर सल्ल० ने कल दुआ फ़रमायी थी, इलाही ! या उमर को मुसलमान कर दे या अबू जह्ल को। सो मालूम होता है कि तुम्हारे हक़ में दुआ मक़्बूल हो गयी ।

हज़रत उमर ने फ़रमाया, अब मुझे हुज़ूर के पास ले चलो। मैं वहीं चल कर मुसलमान हूंगा।

चुनांचे हज़रत सईद, हज़रत फ़ातमा, हज़रत खब्बाब रज़ि० उन्हें साथ ले कर रवाना हुए। हज़रत उमर ने तलवार हाथ में ले ली। उधर हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास आप की ख़िदमत में हाज़िर होकर हज़रत उमर के आने की कैफ़ियत बयान कर चुके थे। कुछ देर बाद दरवाज़े पर दस्तक हुई। लोगों ने दरवाज़े से झांक कर देखा, हज़रत उमर नंगी तलवार लिए खड़े नज़र आए।

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि दरवाज़ा खोल दो।

हज़रत अमीर हमज़ा भी मौजूद थे। उन्हों ने भी फ़रमाया, बेशक दरवाज़ा खोल दो। अगर उमर नेक इरादे से आया है, तो ख़ैर, वरना इसी तलवार से उस का सर उड़ा दिया जाएगा।

चुनांचे सहाबा किराम ने क़रीब जा कर दरवाज़ा खोला। हज़रत उमर मकान के अन्दर दाखिल हुए। जब वह हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंचे तो आप उठ खड़े हुए। आप के साथ तमाम सहाबी भी उठ खड़े हुए।

जलाल भरी आवाज़ में हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, उमर ! किस इरादे से आए हो ?

इस रौबदार आवाज़ ने हज़रत उमर को कपकपा दिया।

उन्होंने कहा, ऐ ख़ुदा के मोहतरम रसूल ! मैं मुसलमान होने आया हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुशी में पूरी आवाज़ से अल्लाहु अक्बर का नारा बुलन्द किया। दारे अरक़म और मुहल्ले की तमाम पहाड़ियां गूंज उठीं।

हुज़ूर सल्ल० उसी जगह बैठ गये। तमाम सहाबा रज़ि० आप के चारों ओर बैठ गये और हज़रत उमर सामने बैठ गये। हुज़ूर सल्ल० ने कलिमा पढ़ा कर हज़रत उमर को मुसलमान किया।

हज़रत उमर ने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद कहा, ऐ ख़ुदा के हबीब ! मैं चाहता हूं कि आज ख़ाना काबा में चल कर नमाज़ अदा कीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम्हारा यही इरादा है, तो चलो !

सब उठ खड़े हुए। दारे अरक़म से बाहर आए और ख़ाना काबा की तरफ़ रवाना हुए।

हज़रत उमर सब से आगे नंगी तलवार लिए चल रहे थे। हुज़ूर सल्ल० के सीधे हाथ पर हज़रत अबू बक्र और उलटे हाथ पर हज़रत हमज़ा और उन के बराबर हज़रत अली चल रहे थे। बाक़ी सहाबा पीछे थे।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने जब इस शान से मुसलमानों को आते देखा, तो उन को बड़ी हैरत हुई। रास्ते में अबू जह्ल मिला, उसे देखते ही हज़रत उमर रज़ि० ने कहा—

अबू जह्ल ! ख़ुदा का शुक्र है कि मैं मुसलमान हो गया हूं। मुहम्मद सल्ल० को ख़ुदा का रसूल मानता हूं।

अबू जह्ल को कुछ कहने का हौसला न हुआ और मुसलमानों ने ख़ाना काबा में नमाज़ पढ़ी, कुफ़्फ़ारे मक्का एक ओर खड़े रहे।

यह पहली नमाज़ थी, जो मुसलमानों ने एलानिया ख़ाना काबा में पढ़ी। नमाज़ पढ़ कर लोग वापस आ गये। हज़रत उमर की वजह से किसी काफ़िर को कुछ कहने की हिम्मत न हुई।

यह वाक़िआ ज़िलहिज्जा सन ०६ नबवी का है।

बाईकाट

हज़रत उमर के मुसलमान होने से कुफ़्फ़ारे मक्का में एक हंगामा मच गया। हर आदमी ने हैरत और अफ़सोस के साथ यह ख़बर सुनी। मुसलमानों ने ख़ाना काबा में नमाज़ पढ़ी, तो इसे बुतों की तौहीन समझा गया।

तमाम मक्के में ग़म और ग़ुस्से की एक लहर दौड़ गयी।

हज़रत उमर के इस्लाम ने मुसलमानों का हौसला इतना बढ़ा दिया था कि वे आज़ादी के साथ चलने-फिरने लगे, ख़रीद व फ़रोख़्त करने लगे, ख़ाना काबा में नमाज़ अदा करने लगे। किसी को उन्हें रोकने और छेड़ने की हिम्मत न होती।

इस आज़ादी की ख़बर हब्शा तक पहुंच गयी। जो मुसलमान वहां हिजरत कर के पहुंच गये थे, वे समझे कि अब क़ुरैश ने मुख़ालफ़त बन्द कर दी है और मुसलमानों को आज़ादी से रहना-सहना नसीब हो गया है। उन में से अक्सर अपने वतन लौट आए, पर जब यहां आकर मालूम हुआ कि अभी कोई आज़ादी वग़ैरह नहीं मिली, कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी ज़िद से बाज़ नहीं आए, तो फिर हब्शा वापस चले गये। इसे हब्शा की दूसरी हिजरत कहते हैं।

उस वक्त मक्के में सिर्फ़ चालीस लोग थे, जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया था। इन के अलावा ८३ मुसलमान वे थे, जो हिजरत करके हब्शा चले गये थे। इस तरह मुसलमानों की कुल तायदाद १२३ होती थी। अगरचे यह तायदाद मामूली थी, पर कुफ़्फ़ार को मुसलमानों की इस तायदाद से भी डर हो गया था कि इसी तरह अगर ये बढ़ते रहे, तो तमाम मक्का और सारा अरब मुसलमान हो जाएगा। इस ख्याल ने उन्हें बदला लेने की तद्बीरों पर ग़ौर करने के लिए फिर मजबूर कर दिया।

उन्होंने मुहर्रम सन् ०७ नबवी में एक मज्लिसे शूरा बुलायी। तमाम क़बीले के सरदारों को बुलाया गया। बड़ी शान व शौकत से इज्लास की तैयारी की गई। तमाम लोग बड़े जोश से शामिल हुए।

जब ये तमाम लोग आ गये, तो अबू सुफ़ियान की सदारत में इज्लास शुरू हुआ।

अबू जह्ल खड़ा हुआ और उस ने कहा, ऐ ग़ैरतमंद अरबो! तुम ने देखा कि जिस बात को हम ने बच्चों का खेल समझा था, वह बढ़ते-बढ़ते हमारे दीन के लिए मुस्तक़िल खतरा बन गयी है। लोग अपने बाप-दादा के मजहब को छोड़कर के नये मजहब को अपनाने लगे हैं। मुहम्मद हमारे मजहब को मिटा कर नया मजहब रिवाज देने में दिन व रात लगे हुए हैं। वह कहते हैं, आक़ा-ग़ुलाम सब बराबर हैं। पिछड़ों और ग़रीबों वग़ैरह को उन्होंने सर पर चढ़ा लिया है। मेरे ख्याल में कोई अरब, जिस में ज़रा भी खुद-दारी है, उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। इस के अलावा सब से बड़ी सब से अहम और सब से ज्यादा खतरनाक जो बात है, वह यह है कि हर मुसलमान बुतों को हिक़ारत से देखता है गोया उन की नज़रों में हमारी, हमारे मजहब की और हमारे माबूदों की कोई अहमियत नहीं है बताइए, क्या हम इस ज़िल्लत को बर्दाश्त कर सकते हैं?

हर तरफ़ से आवाजें आयीं, हरगिज नहीं।

अबू जह्ल ही ने बात और आगे बढ़ायी।

अगर नहीं बर्दाश्त कर सकते, तो फिर चुप क्यों बैठे हो? क्या सोच रहे हो? किस चीज़ का इन्तिज़ार है? तुम ने देख लिया कि बावजूद हमारी कोशिशों के मुसलमानों की तायदाद दिन ब दिन बढ़ती चली आ रही है। अगर कोई इन्तिज़ाम न किया गया, तो अंदेशा ही नहीं, बल्कि यक़ीनी बात है कि तमाम मक्का, बल्कि तमाम अरब मुसलमान हो जाएंगे। आप को मालूम है कि मुसलमानों की कितनी बड़ी तायदाद हब्शा को चली गयी है, क्या वे लोग चुपचाप बैठे होंगे? वहां जिस वक़्त उन की तायदाद

बढ़ जाएगी, यक़ीनन वे मक्के पर हमला करेंगे। कोई नहीं कह सकता कि अंजाम क्या होगा ? याद रखिए, अभी तो इस की शुरूआत है, कोशिश करने से इस की रोक-थाम की जा सकती है, लेकिन अगर कोताही की गयी, तो फिर इस बहाव पर बन्द नहीं बांधा जा सकेगा। अजब नहीं कि अरब से हमारे माबूदों को, हमारे मजहब वालों को बड़ी बे-आबरूई से निकलना पड़े, क्या तुम इसे पसन्द करोगे ?

हम इसे हरगिज, हरगिज गवारा न कर सकेंगे सब ने एक साथ कहा।

अबू जह्ल ने कहा, मुझे भी यही ख्याल है कि तुम हरगिज गवारा न कर सकोगे, मगर इस ख़तरे को मिटाने के लिए क्या उपाय किया जाए ?

कुछ आवाजें आयीं, उपाय सोचना बड़े आदमियों का काम है। हमारा काम सिर्फ़ उन पर अमल करना है।

अबू जह्ल ने कहा, निहायत ही मुनासिब बात है। आज बड़े लोग इसी लिए जमा हुए हैं कि एक राय हो कर कोई ऐसा उपाय सोचें, जिससे इस्लाम का ख़तरा मिट जाए, मुसलमानों की जड़ कट जाए और फिर हम आराम की नींद सो सकें।

उत्बा ने कहा, ख़तरा मुहम्मद सल्ल० की तरफ़ से है। जब तक वह जिंदा हैं, यह खतरा मिट नहीं सकता। मेरे ख्याल में तो कुछ लोग जाएं और उन्हें क़त्ल कर के ख़तरे को मिटा डालें।

जुबैर बिन उमैया ने कहा, सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि मुहम्मद सल्ल० हाशिमी ख़ानदान से हैं। क़ुरैश में यह ख़ानदान सब से ज्यादा इज्ज़त वाला है। इसलिए उन्हें क़त्ल करने से डर है कि ख़ाना जंगी शुरू हो जाएगी। इस के अलावा यह कैसे मुम्किन है कि मुसलमान उन्हें आसानी से मरने देंगे। वे जब तक खुद न मरेंगे, अपने नेता पर आंच न आने देंगे। इसलिए यह काम आसान नहीं है।

उत्बा ने कहा, अगर तमाम लोग मिल जाएं, तो तज्वीज बताए देता हूं।

सब लोगों ने कहा, हम सब मुत्तफ़िक़ हैं। आप बताएं।

उत्बा ने बताया, मुसलमानों का बाईकाट करो। ब्याह, शादी, लेन-देन रस्म व रिवाज, मुलाक़ात, खाना-पीना, खरीद व फ़रोख़्त वग़ैरह सब बंद कर दो। उन्हें मजबूर करो कि ये बस्ती में न रहें, बल्कि पहाड़ पर चढ़ जाएं। यह निगरानी की जाये कि खाना-पीना और किसी क़िस्म का कोई सामान उन के पास न पहुंचे। इस तरह खुद तड़प-तड़प कर मर जाएंगे और हमें किसी को मारने, उस के क़बीले को ख़ून बहा अदा करने की नौबत ही न आएगी।

इस तज्वीज को सुनकर सब खुश हो गये। खूब तालियां बजीं।

जब जरा खामोशी हुई तो जुबैर ने कहा, मेरे ख्याल में यह बहुत ही जालिमाना काम है, इस से तो बेहतर यह होगा कि उन्हें क़त्ल ही कर दिया जाए।

अबूलहब ने कहा, जुबैर इस तज्वीज को मंज़ूर कर लो, इस से हमारा मक्सद मुसलमानों को भूखा, प्यासा रख कर क़त्ल करना नहीं है, बल्कि उन्हें मजबूर कर के इस्लाम से अपने मजहब में वापस लाना है।

जुबैर ने कहा अगर सिर्फ़ इस तरीक़े से तंग और परेशान करना मंज़ूर हैं, तो मुझे कुछ उज्र नहीं। मैं शरीक हूं, लेकिन तुम इस तरह से उन्हें अगर क़त्ल करना चाहो, तो मुझे शिर्कत मंज़ूर नहीं।

हम उन्हें क़त्ल करना तो चाहते ही नहीं, सिर्फ़ उन्हें दिक़ करना चाहते हैं। अबूजह्ल ने कहा, बहुत जल्द वह परेशान होकर हमारे माबूदों के सामने आ झुकेंगे और फिर क़ौम को कोई खतरा बाक़ी नहीं रहेगा।

अबू सुफ़ियान ने कहा, यह मुनासिब है कि एक अह्द नामा तैयार किया जाए और अह्द नामा का मज़मून यह हो कि मुसलमानों से उस वक़्त तक बाईकाट किया जाए, जब तक वह इस्लाम से हटकर अपने बाप-दादा के मजहब में फिर दाखिल न हों और इस अह्द नामा पर तमाम लोग दस्त-खत करें।

उत्बा ने ताईद करते हुए कहा, बिल्कुल सही है और निहायत मुना-सिब है।

चूंकि सब इस राय से मुत्तफ़िक़ हो गये, इस लिए मंसूर बिन इक्रिमा ने अह्द नामा लिखा। सब ने दस्तखत किये और इस अह्द नामा को काबे के दरवाज़े पर लटका दिया। उस ज़माने में यह तरीक़ा था कि जब सम-झौता लिखा जाता तो काबे के दरवाज़े पर लटका दिया जाता था और जब तक वह तहरीर बाक़ी रहती, कोई अह्द के तोड़ने की जुरात न करता था।

चुनांचे अह्दनामा लटका दिया गया, तो आस बिन वाइल सहमी ने कहा, आज ही मुसलमानों को ले जा कर पहाड़ी के किसी दर्रे में घेर दो। सब ने इस राय को पसन्द किया, चूंकि उस वक़्त तमाम असरदार लोग मौजूद थे, इस से अच्छा मौक़ा और कब मिल सकता था? सब उठे और सीधे दारे अरक़म में जा पहुंचे। यहां मुसलमान जमा थे। वे अस्र की नमाज से फ़ारिग़ हुए थे कि अबूजह्ल ने उन्हें क़ौम के मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से खबरदार करते हुए कहा—

अगर तुम लोग मुहम्मद सल्ल० का साथ छोड़ दो तो तुम को आज़ादी दी जा सकती है। तमाम मुसलमानों ने एक ज़ुबान होकर कहा, मर जाएंगे, मगर ख़ुदा के प्यारे नबी सल्ल० का साथ न छोड़ेंगे।

अबूजह्ल झुंल्ला कर बोला, न छोड़ो, ख़ुद ही दर्रे में तड़प कर मर जाओगे।

अबूजह्ल ने कहा, तुम पर इतनी मेहरबानी की जाती है कि जो सामान इस वक़्त तुम्हारे पास है, अपने साथ ले जा सकते हो, मगर इस के बाद फिर कोई सामान न मिल सकेगा।

मुसलमान दारे अरक़म से निकले, चूंकि उस वक़्त तक हुज़ूर सल्ल० ने कुफ़्फ़ार से मुलाक़ात करने या लड़ने की इजाज़त न दी थी, इसलिए ख़ामोश अपने-अपने घरों को जाते रहे।

जितना सामान था, अपने साथ लिया और शोबे अबी तालिब में चले गये।

शोबे अबी तालिब एक पहाड़ी दर्रा था। यह दर्रा अबूतालिब के नाम से मशहूर था। चूंकि हुज़ूर सल्ल० के सरपरस्त अबू तालिब थे, इसलिए वह मुसलमानों के साथ जाने पर मजबूर कर दिये गये।

तमाम मुसलमान शोबे अबूतालिब में जाकर पनाह लेने वाले बन गये।

अबूजह्ल ने कुछ लोगों को उन की निगरानी पर मुक़र्रर कर के हिदायत कर दी कि कोई मुसलमान इस दर्रे से बाहर निकलने न पाये, न किसी आदमी को उन के पास जाने दिया जाए। इस तरह मुसलमान दर्रे में क़ैद कर दिये गये।

दिल हिला देने वाला ज़ुल्म

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने जो अह्दनामा तैयार कर के काबे के दरवाज़े पर लटकाया था, उस में बातें तो बहुत कुछ लिखी थीं, लेकिन ज़िक्र करने लायक़ कुछ ही बातें थीं। एक तो यह कि जब तक मुसलमान इस्लाम से फिरें नहीं और बुतपरस्ती न अपनाएं, बाईकाट बराबर जारी रहेगा। दूसरे जो लोग हुज़ूर सल्ल० के पास रहेंगे या उन का साथ देंगे, जैसे अबूतालिब वग़ैरह, उन का भी बाईकाट बराबर जारी रहेगा। क़बीला बनू हाशिम से, अबूलहब को छोड़ कर, मेल-जोल, शादी-ब्याह और लेन-देन वग़ैरह सब उस वक़्त तक बन्द रहेंगे, जब तक अबूतालिब मुहम्मद सल्ल० का साथ न छोड़ दें। ये और इसी क़िस्म के बहुत से क़ायदे उस में दर्ज थे।

काबे के दरवाज़े पर अह्दनामा लटकाये जाने से तमाम क़बीलों ने उस अह्दनामे का एहतिराम करना शुरू कर दिया। इस बाईकाट की बुनियाद पर आम ख्याल यही पाया जाने लगा कि अब मुसलमानों के दिमाग़ ठीक हो जाएंगे, वे टूटेंगे, इस्लाम छोड़ देंगे, इसलिए फ़ित्ना हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

दुनिया की तारीख़ में इस क़िस्म के बाईकाट की मिसाल इससे पहले नहीं मिलती कि खुद वतन वालों ने किसी गिरोह के लिए ज़बरदस्त बाई-काट किया हो कि लोग दाने-दाने को मुहताज हो जाएं।

दर्रा अगरचे लम्बा-चौड़ा न था, पर इस में दिलचस्पी का कोई सामान न था, न ज़रूरत न ज़िंदगी की कोई चीज़ पैदा होती थी। मुसलमान निहा-यत तंगी से मजबूरी की हालत में अपनी ज़िदगी के दिन काट रहे थे, चूंकि खाने-पीने का सामान काफ़ी था, यह मालूम न था कि बाईकाट कब तक रहेगा, इसलिए खाने-पीने में बड़ी एहतियात करते थे। मुसलमानों के साथ बच्चे भी थे, औरतें, बूढ़े और जवान भी थे। नवजवान तो भूख और प्यास बर्दाश्त कर सकते थे, पर बूढ़े और बच्चे न कर सकते थे। मजबूरी सब कुछ करा देती है। बेचारे बर्दाश्त कर रहे थे। या बर्दाश्त करने की आदत डाल रहे थे। सन् ०७ नबवी के मुहर्रम के महीने से यह बाईकाट शुरू हुआ था। अब ज़िलहिज्जा आ गया था, गोया पूरा एक साल बाईकाट जारी रहा।

मुसलमान भूख और प्यास की शिद्दत से निढाल और बे-हाल हो रहे थे। जो सामान ले आये थे, वह खत्म हो गये थे और सामान कौन लाता और किस तरह से लाता। मजबूरी से मुसलमान पेड़ के पत्ते खा कर दिन काट रहे थे।

चूंकि ज़िलहिज्जा के महीने में हज होता है। हज के दिनों में हर आदमी पर से पाबन्दियां उठा दी जातीं थीं, इसलिए मुसलमानों पर से पाबन्दियां उठा ली गयीं। घेराव उठा लिया गया। मुसलमान दर्रे से बाहर निकले इस हाल में कि तन पर फटे-पुराने कपड़े थे, भूख से कमज़ोर और निढाल थे, चलते हुए लड़खड़ाते थे। ज़ालिम से ज़ालिम आदमी भी इस हालत को देखकर रहम खा सकता था, मगर कुफ़्फ़ारे मक्का के दिल में रहम नाम की कोई चीज़ जैसे बाक़ी न रह गयी हो। वे ज़रा भी न पसीजे।

मुसलमानों ने सबसे पहले खानाकाबा में जाकर नमाज़ पढ़ी। तवाफ़ किया, हज से फ़ारिग़ होकर बाज़ारों में खरीद व फ़रोख्त के लिए गये।

अबू जह्ल साथ गया। बावजूदे कि आज हज का दिन था, कोई मनाही न थी, लेकिन वह आज भी लोगों को मुसलमानों के हाथ चीज़ें बेचने से मना कर रहा था।

तमाम कुफ़्फ़ार अबू जह्ल की तरह ज़ालिम न थे, ज़्यादातर लोगों ने मुसलमानों की हालत पर रहम खा कर उन के हाथ सामान बेचा। शाम तक मुसलमान जितना सामान ले सकते थे ले आए और इस के बाद फिर दर्रे में चले गए और पाबन्दी लग गयी।

जब तक मुसलमानों के पास खाने-पीने का सामान रहा, एहतियात से थोड़ा-थोड़ा खाते रहे, पर जब खाने-पीने का सामान खत्म होने लगा, तो फिर फ़ाक़ों की नौबत आ गयी। मुसलमान खुद कम खाते, बच्चों को अच्छी तरह खिलाते, मगर अच्छी तरह क्या खिलाते, सिर्फ़ एक वक़्त थोड़ा सा सत्तू घोल कर पिलाते थे। रात और दिन में सत्तू के कुछ घूंट क्या सहारा देते, कुछ ही घंटों बाद फिर भूख लग जाती। खाने के लिए बच्चे चिल्लाते, ज़िद करते, रोते लेकिन खाना कहां था, जो दिया जाता। उन्हें बहलाया जाता। सुबह कहते कि शाम को खाना मिलेगा, बच्चे शाम के इन्तिज़ार में चुप हो जाते, मगर जब शाम हो जाती, खाना न मिलता, भूख ज़्यादा लगती तो फिर रो कर खाना मांगते थे। उन के रोने से हर मुसलमान का दिल मुतास्सिर होता था, मगर कर क्या सकते थे? खाना कहां से लाते? कैसे उन को खिलाते? तमाम बच्चे सूख कर कांटा हो गये थे।

क़ुरैश की ज़ालिमाना पाबन्दी से मुसलमानों की ज़िंदगी अजीरन हो गयी थी। वे हुज़ूर सल्ल० से लड़ाई की इजाज़त मांगते थे और आप इजाज़त न देते थे। बग़ैर हुज़ूर सल्ल० की इजाज़त के वे काम न करते थे। सब्र व इस्तिक़्लाल से वे सख्तियां बर्दाश्त कर रहे थे।

सन् ०८ नबवी का साल सख्त गुज़रा, फिर हज का ज़माना आया और मुसलमानों के ऊपर से निगरानी उठा ली गयी। मुसलमान दर्रे से बाहर आए। इस बार वे ज़्यादा कमज़ोर और निढाल थे।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन की यह हालत देखी, तो वे हंसे और उन में से अक्सर लोगों ने कहा, मुसलमानो! क्यों इतनी सख्तियां बर्दाश्त कर रहे हो? यह क्या ज़िंदगी है? न खाने को रोटी है, न पहनने को कपड़ा, अफ़सोस है ऐसी ज़िंदगी पर। तुम हमारे भाई हो, हम को तुम्हारी हालत देख कर अफ़सोस होता है। मुहम्मद सल्ल० का साथ छोड़ दो। अपने बाप-दादा का मज़हब अपना लो। तुम्हारे लिए ज़िंदगी की ज़रूरतें पूरी कर दी जाएंगी।

मुसलमानों ने जवाब दिया, हम ने ख़ुदा को पा लिया है, उस का मज़हब अपनाया है। तुम हम पर चाहे जितना ज़ुल्म करो, खाना न दो, पानी न दो, जब तक जी चाहे, बाईकाट किये रहो, हम इस्लाम का रास्ता न छोड़ेंगे।

कुफ़्फ़ारे मक्का को यह जवाब बहुत नागवार गुज़रा और उन्होंने कहा, अगर तुम मरना ही चाहते हो, तो सिसक-सिसक कर मरो,हम कर ही क्या सकते हैं ?

मुसलमानों ने हज किया। हज से फ़ारिग़ होने के बाद बाज़ार में पहुंचे, कुछ सामान वग़ैरह ख़रीदा और फिर वह दर्रे में चले आए, फिर पहरा क़ायम कर दिया गया।

इस बार पिछले वर्षों के मुक़ाबले में ज़्यादा सख़्ती की गयी। दिन गुज़रने लगे। सन् ०६ नबवी शुरू हो गया। यह साल मुसलमानों पर बहुत सख़्त गुज़रा। खाने-पीने का सामान बहुत जल्द खत्म हो गया और फ़ाक़ों पर नौबत आ पहुंची। मर्द और औरतें तो फ़ाक़ा करते-करते घास और पेड़ों के पत्ते और छाल वग़ैरह जो मिल गयी थी, खा लेते थे, पर बच्चे ये चीज़ें न खाते थे, वे रोते थे, सत्तू के एक घूंट के लिए खजूर के एक दाने के लिए तरसते थे। भूख से बेताब हो कर बेहोश हो जाते थे। उन्हें मौत से क़रीब और ज़िन्दगी से दूर देख कर मां-बाप के कलेजे मुंह को आते थे, पर सब्र की सिल सीने पर रख कर ख़ुदा की रहमत का इंतिज़ार कर रहे थे। मुसलमानों ने अपने चमड़े के मोज़ों को पानी में भिगो कर नर्म किया फिर भून कर कर बच्चों को खिला दिया, यहां तक कि चमड़े के मोज़े भी खत्म हो गये, और बच्चे भूख से बेताब हो गये, लेकिन मुसलमान बेचारे करते भी तो क्या करते।

अक़ील उम्र में सबसे छोटा बच्चा था। भूख ने उस को इतना कमज़ोर कर दिया था कि उठ न सकता था। हर वक़्त पत्थर की चट्टान पर पड़ा रहता था। मां-बाप और उस की इस हालत को देखते, लेकिन वे करते ही क्या।

अक़ील पर ग़फ़लत तारी हो गयी। मां का कलेजा प्यारे बेटे को ग़ाफ़िल देख कर टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा था। अक़ील बीमार न था, बल्कि भूख की ज़्यादती ने उसे मौत के किनारे पहुंचा दिया था।

अक़ील ने आंख खोली, हसरत भरी नज़रों से मां को देखा। मां तड़प गयी। उस ने अपने जिगर के टुकड़े को गोद में ले कर सीने से लगाया, मुंह चूमा और बोली, बेटा अक़ील ! क्या तुम मुझे दग़ा दे जाओगे ? ऐ

अल्लाह ! मेरे बच्चे को बचा ले, आह, मेरा बच्चा भूख से दम तोड़ रहा है। लोगो ! मैं कैसे ज़ब्त करूं ?

दर्दमन्द मां ने यह कहते ही बे-अख़्तियार रोना शुरू कर दिया। जो लोग उसके पास बैठे थे, उन के भी आंसू जारी हो गये।

अक़ील ने अपनी मां के गले में बांहें डाल कर निहायत कमज़ोर आवाज़ में कहा, मां······भूख······रोटी।

अक़ील बेहोश हो गया। मां के भी आंसू जारी हो गये। उस ने सिसकियां भरते हुए कहा, आह, क्या चीज़ खाने को दूं ? हाय मेरे बच्चे ! कैसे मैं तुझे बचाऊं ? अल्लाह ! रहम कर मेरे बच्चो पर, मैं अपने बच्चो को भूख से तड़प-तड़प कर मरते हुए कैसे देखूं ?

पास ही अक़ील का बाप भी बच्चो की हालत देखकर रो रहा था।

अक़ील की हालत बद से बदतर हो गयी, आंखें बन्द होने लगीं। मां-बाप तड़प गये यह देख कर कि अक़ील का आख़िरी वक़्त आ गया है। मां ज़ब्त न कर सकी, अपना सर पत्थर पर दे मारा, ख़ून का दरिया बह निकला। दूसरी औरतों ने लपककर उसे संभाला। अक़ील का बाप अपनी बीवी की हालत पर ज़ब्त न कर सका। फूट-फूट कर रोने लगा।

तमाम औरतों और बच्चों पर इस का बेहद असर हुआ। सब ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। रोने की आवाज़ दर्रे में गूंज कर बाहर निकली। संगदिल पहरेदार रोने की आवाज़ सुन कर खुश हो गये। उन्होंने कहा, अब ये लोग मरने लगे हैं, यक़ीनन कोई मर गया है, जो ये लोग रो रहे हैं। यक़ीन है कि अब ये सब बाप-दादा के मज़हब में आ जाएंगे या भूख प्यास से मर जाएंगे।

अक़ील और उस की मां की हालत चिन्ता मे डालने वाली बनती जा रही थी।

अबू तालिब भी पास बैठे देख रहे थे। उन से ज़ब्त न हो सका। वह उठ कर आप के पास पहुंचे। हुज़ूर सल्ल० सज्दे में पड़े हुए थे। कुछ देर बाद जब आप ने सज्दे से सर उठाया, तो अबू तालिब ने कहा, मेरे प्यारे भतीजे ! अब हालात बहुत ख़राब हो गये हैं, सब्र का दामन हाथ से छूटने वाला है। बच्चे भूख के मारे मरने वाले हैं। मैं क़ुरैश से जा कर रहम की दरख़्वास्त करता हूं।

आप ने फ़रमाया, चचा ! मुझे ख़ुदा ने ख़बर दी है कि जो ज़ालिमाना अह्द नामा लिखवाया गया था, उसे कीड़े ने खा लिया है। जिस जगह अल्लाह का नाम लिखा है, वही बची है। थोड़ा और रुक जाइये, अल्लाह

यक़ीनन मदद करेगा।

अबू तालिब ने कहा, अच्छा, और मैं थोड़ी देर इन्तिज़ार करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आओ, अक़ील को देखें। मैं ने उस के लिए दुआ की है।

दोनों उठ कर चले। जब वे अक़ील के पास पहुंचे, तो वह ग़फ़लत में था। हुज़ूर सल्ल० बैठ गये। आप ने उसे अपनी गोद में उठा लिया। ठीक उसी वक़्त हज़रत ख़दीजा एक हाथ में कुछ दूध और दूसरे हाथ में कुछ खाना लिए हुए आयीं। उन्हों ने फ़रमाया, मेरे भतीजे हकीम ने यह सामान मेरे लिए भेजा है। यह थोड़ा-थोड़ा कर के सब बच्चों को खिला दो।

हुज़ूर सल्ल० ने दूध लेकर अक़ील के हलक़ में टपकाया। कुछ ही देर बाद उस ने आंखें खोलीं। हुज़ूर सल्ल० ने प्याला उस के होंठों से लगा दिया। उस ने बड़ी बे-सब्री से दूध पिया और कुछ ही घूंट में तमाम प्याला ख़ाली कर दिया।

अबू तालिब ने हज़रत ख़दीजा का खाना तमाम बच्चों में बांट दिया।

अक़ील की हालत सुधर गयी। मां-बाप की जान में जान आयी। तमाम मुसलमान बहुत ख़ुश हुए। अब हुज़ूर सल्ल० ने अबू तालिब से कहा कि आज बाईकाट ख़त्म हो जाएगा।

अबू तालिब उठ कर रवाना हुए।

दर्रे से रिहाई

जिस वक़्त अक़ील की हालत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गयी थी, मां-बाप और दूसरे मुसलमानों ने ऊंची आवाज़ से रोना शुरू कर दिया था और उन के रोने की आवाज़ से संगदिल पहरेदारों को ख़ुशी हुई थी, वे समझे थे कि अब मुसलमान भूख-प्यास से मरने लगे हैं, उसी वक़्त हिशाम मख़्ज़ूमी दर्रे के क़रीब से गुज़र रहा था। उस ने भी मुसलमानों के रोने की आवाज़ सुनी थी।

हिशाम मख़्ज़ूमी एक रहमदिल इंसान था। उसे मुसलमान और हाशिम क़बीले पर किये गये ज़ुल्म पसन्द न थे। उस ने पहरे वालों से पूछा कि यह दर्रे से रोने की कैसी आवाज़ आ रही है?

एक पहरेदार ने हंस कर कहा, इन बेवक़ूफ़ों के पास ग़ल्ला ख़त्म हो गया है। शायद कोई बच्चा भूख से तंग आ कर मर गया है।

हिशाम को पहरेदार की संगदिली पर ग़ुस्सा आया। उस ने कहा, ज़ालिम वह्शी ! तू इस लिए हंस रहा है कि कोई मुसलमान बच्चा भूखा मर रहा है।

वह फ़ौरन लौटा। उस ने इरादा किया कि आज वह काबे के दरवाज़े पर जा कर इस ज़ालिमाना अह्द नामा को फाड़ डालेगा, जिस ने मुसलमानों का जीना दूभर कर दिया है।

लेकिन यह काम आसान न था। अह्दनामे को फाड़ डालने का मतलब था तमाम क़बीलों से लड़ाई मोल लेना। इस के बाद वह अपनी नर्मी की वजह से मुसलमानों पर किये जा रहे ज़ुल्म को बरदाश्त न कर सका, वह अह्दनामा को फाड़ कर तमाम क़बीलों से मुक़ाबला करने पर तैयार हो गया।

हिशाम तेज़ी से ख़ाना काबा की तरफ़ रवाना हुआ। अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि ज़ुबैर बिन उमैय्या सामने से नज़र आया।

ज़ुबैर अब्दुल मुत्तलिब का नाती था। हिशाम ने उसे रोकते हुए कहा—

ज़ुबैर ! क्या यह इंसाफ़ है कि तुम खाओ-पियो और हर क़िस्म के लुत्फ़ उठाओ और तुम्हारे नाना और तुम्हारे ख़ानदान वालों और मुसलमानों के छोटे-छोटे बच्चों को एक-एक दाना नसीब न हो और वे भूख से एड़ियां रगड़-रगड़ कर मर जाएं।

हिशाम ! तुम नहीं जानते हो मेरे दिल पर क़ुरैश के ज़ालिमाना क़ैद व बन्द और मज़्लूम मुसलमानों की मुसीबतों का गहरा असर पड़ता है। बार-बार मेरे दिल में आया कि इस ज़ालिमाना अह्दनामा को फाड़ कर फेंक दूं, जिस से मुसलमानों पर ज़ुल्म हो रहा है, लेकिन मुझे इल्म है कि अह्दनामा के चाक करते ही तमाम क़बीले मुझ पर टूट पड़ेंगे और मेरा क़बीला तमाम क़बीलों का मुक़ाबला न कर पायेगा, इसलिए ख़ामोश हूं। अगर तुम मेरा साथ दो, तो मैं अभी अह्दनामा फ़ाड़ दूं। ज़ुबैर ने कहा।

सुनो ज़ुबैर ! हिशाम बोला, मैं इस वक़्त शोबे अबी तालिब से आ रहा हूं। मुसलमान रो रहे हैं, शायद उन का कोई बच्चा भूखा मर रहा है। मुझ से यह बात देखी नहीं जाती, मैं तुम्हारे साथ हूं। आओ, हम दोनों मिल कर अह्दनामा फाड़ दें।

चलो, ज़ुबैर ने कहा।

दोनों चले। जब बाज़ार के कोने पर पहुंचे, तो उन को मुत-अम बिन अदी और अबुल बख़्तरी मिले।

मुत-अम ने पूछा, कहां जा रहे हो ? ज़ुबैर और हिशाम तुम दुखी

क्यों दिखाई दे रहे हो ?

हिशाम ने बताया, मुसलमानों के बच्चे भूख से बिलक-बिलक कर रो रहे हैं और जान दे रहे हैं। फ़ाक़ा के मारे हुए मां-बाप अपनी औलाद को मौत के मुंह में देख कर खून के आंसू रो रहे हैं। अबुल बख़्तरी ! क्या तुम अपने बच्चों को फ़ाक़ा कर के मरता हुआ देख सकते हो ?

नहीं, नहीं देख सकते !

क्या हम इतनी सख्तियां बरदाश्त कर सकते हैं, जितनी तीन साल की मुद्दत में मज़्लूम मुसलमानों ने बरदाश्त कीं ? हिशाम ने पूछा।

कभी नहीं कर सकते। अबुल बख़्तरी ने जवाब दिया। मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम की इंतिहा हो चुकी है। हिशाम ! क्या हम इंसान नहीं, जानवर हैं, वह्शी जानवर ?

नहीं, हम इंसान हैं, मुहज़्ज़ब इंसान !

फिर यह कहां की इंसानियत है कि हम अपने क़बीले वालों को भूखा मार दें। आख़िर मुसलमान भी तो इंसान ही हैं। साल भर से तंग दर्रे में पड़े मुसीबतों को झेल रहे हैं। अब हमें उन का बाईकाट ख़त्म कर देना चाहिए।

बेशक हमें इंसानियत को शर्म दिलाने वाले इस अह्दनामे को फाड़ डालना चाहिए अबुल बख़्तरी ने कहा।

हिशाम खुश हो गया और उस ने कहा, आओ, अब हम चार हो जाएंगे। अब ज़ालिम और बेरहम क़ुरैशियों को हमारे मुक़ाबले की जुरात न हो सकेगी।

बेहतर यह है कि हम हथियारबन्द होकर चलें ताकि क़बीले समझ लें कि हर तरह से हम तैयार हैं, मुतइम ने कहा। अगर हम से कोई ज़रा भी बोलेगा, तो खून की नदियां बह जाएंगी। सब ने इस राय को पसन्द किया।

सब अपने-अपने घरों की ओर चले गये और थोड़ी ही देर में हथियार बंद हो कर आ गये। जब वह खाना काबा के क़रीब पहुंचे, तो ज़मआ बिन अस्वद हथियार लगाये नेज़ा हाथ में लिए खड़े थे।

ज़मआ ने उन लोगों को दूर से देखते ही कहा, अपने माबूदों की क़सम ! मैं तुम चारों में से किसी से नहीं डरता। क्या तुम इसलिए हथियारबंद हो कर आ रहे हो कि मैं इस ज़ालिमाना अह्दनामा को चाक न कर सकूं, जिस ने ग़रीब मज़्लूम मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ रखे हैं। वह्शी इंसानो ! आज मैं इस अह्दनामा को चाक किये बग़ैर न रह सकूंगा।

पहुंचने पर ज़ुबैर ने कहा, जमआ हम इस इरादे से आए हैं, मुसलमानों की तीन साल की सख्तियों ने हमें उन की मदद पर तैयार किया है।

जमआ ने खुश हो कर कहा, तब तो आओ, हम सब मिलकर इस नेक काम को अंजाम दें। चुनांचे ये सब खाना काबा की तरफ़ रवाना हुए।

मज़्लूम और सताये हुए मुसलमानों के हमदर्द जब खाना काबा में पहुंचे, तो उन्हों ने देखा कि बहुत से बुतपरस्त अपने खुदाओं के सामने सज्दे में पड़े हैं, उन में अबू जह्ल, अबू सुफ़ियान, उत्बा, वाइल सहमी वग़ैरह सभी मौजूद थे।

इन लोगों ने पहले खाना काबा का तवाफ़ किया, फिर एक जगह खड़े हो गये। चूंकि ये लोग कुफ़्फ़ार से डरते थे, इसलिए किसी को पहले बोलने की हिम्मत न हुई। देर तक मश्विरा करते रहे कि शुरूआत कैसे करें।

ज़ुबैर ने कहा, शुरूआत मैं करता हूं, तुम मेरा साथ देना।

सब ने इस बात का इक़रार किया।

ज़ुबैर ने ऊंची आवाज़ में कहा, ऐ मक्का वालो! यह कौन सी इंसानियत व शराफ़त है कि हम, हमारे ग़ुलाम, हमारे जानवर पेट भर कर खाएं और बनू हाशिम के ग़रीब मुसलमानों और उन के मासूम बच्चों को खाना-पीना नसीब न हो। यह ऐसा ज़ुल्म है जो किसी क़ौम ने अपने वतनी भाइयों पर न किया होगा। होशियार हो जाओ। आज मैं इस ज़ालिमाना अह्दनामे को चाक करता हूं। जिस ने हमारी शराफ़त पर दाग़ लगा दिया है।

अबू जह्ल घबरा कर उठा, झुल्ला कर बोला, खबरदार, जो अह्दनामा को हाथ लगाया। जो भी इसे छूएगा उसका सर क़लम कर दिया जायेगा।

तब तक जमआ बोल पड़ा, वह कौन मौत का प्यारा है, जो हमारे सामने आएगा, अगर कोई है, तो हमारे मुक़ाबले में आए।

अबू सुफ़ियान बढ़ा और उस ने कहा, मैं हूं। क्या कोई मेरे सामने इस अह्दनामे को छूने की जुर्रत कर सकता है।

अबुल बख़्तरी ने तलवार खींच कर कहा, अबू सुफ़ियान बकवास बन्द करो, वरना इस तलवार की धार से जवाब दिया जाएगा। क्या तुम्हारे पत्थर दिल पर अब तक कोई प्रभाव नहीं हुआ कि तीन साल से मुसलमान सख्तियां बरदाश्त कर रहे हैं, ज़ुल्म सह रहे हैं, उपवास कर रहे हैं। अगर तुम को एक समय भी खाना न मिले तो बताओ क्या हालत होगी?

जो लोग हमारे माबूदों के खिलाफ़ ज़हर उगलते हैं, हमारे बाप-दादा के धर्म को बुरा कहते हैं, हमारे बुज़ुर्गों को बेवक़ूफ़ कहते हैं, उन्हें भूख और

प्यास की तक्लीफ़ उठा-उठा कर मरने दो। अबू सुफ़ियान ने कहा।

सख्तियों की और ज़ुल्म की एक इंतिहा होती है, हिशाम ने कहा, ग़रीब व मज़्लूम बेयार व मददगार मुसलमानों ने बहुत कुछ सितम उठाये, बेहद सख्तियां झेलीं, लेकिन अब भूख और प्यास से तड़प-तड़प कर मरने के लिए उन्हें शोबे अबी तालिब में नहीं छोड़ा जा सकता। हिशाम ने कहा।

अबू जह्ल बोल पड़ा, मगर हिशाम! अह्दनामे में लिखा हुआ है कि जब तक मुसलमान अपने बाप-दादा के धर्म में दाख़िल न होंगे, बाईकाट बराबर जारी रहेगा और इस अह्दनामे पर क़ौम के तमाम बड़ों के दस्तख़त हैं

बेदर्द ज़ालिमों ने धोखे से इस पर दस्तख़त कराये हैं. ज़मआ ने कहा।

अबू सुफ़ियान को ग़ुस्सा आ गया। बोला, तुम बकवास कर रहे हो। सब ने ख़ूब सोच-समझ कर दस्तख़त किये हैं।

हम उस वक़्त भी दस्तख़त करने को तैयार न थे, ज़ुबैर ने कहा, मगर हम को बताया गया था कि इस से मुसलमानों की तंबीह मक़्सूद है, मगर वाक़िआत बता रहे हैं कि तुम सब उन को मौत के घाट उतार देना चाहते हो। यह बहुत बड़ा ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी है।

क्या ज़ुबैर! तुम यह चाहते हो कि अह्दनामा की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर के लड़ाई-झगड़े की आग भड़कायी जाए? अबू जह्ल ने सवाल किया।

ज़ुबैर ने जोश में आकर कहा, अगर तुम न मानोगे, तो ऐसा ही किया जाएगा।

अबू सुफ़ियान गरजा, अगर यह बात है तो क्यों न हम तुम्हारा ही ख़ात्मा कर दें?

हिशाम भी जोश में भर उठा। उसने घूर कर अबू सुफ़ियान को देखते हुए कहा, तुम्हारा यह हौसला हो गया है, तो तलवार निकालो और मैदान में आ जाओ।

यह कहते ही हिशाम ने तलवार खींच ली।

अबू सुफ़ियान की भी तलवार चमक उठी।

क़रीब था कि ख़ाना काबा में लड़ाई शुरू हो हो जाए, अबू तालिब आ गये। उन्होंने लड़ने की वजह मालूम की और दोनों के बीच में खड़े हो गये और दोनों को हाथ के इशारे से तलवारें झुका देने के लिए कहा।

दोनों ने तलवारें झुका दीं।

तुम दोनों बे-फ़ायदा लड़ रहे हो, अबू तालिब ने बताया, मेरे भतीजे ने

खबर दी है कि अह्दनामा कीड़े ने खा लिया है। अगर वाक़ई ऐसा है, तो अह्दनामा की पाबन्दी खुद-ब-खुद खत्म हो जाती है।

अबू जह्ल हंसा और उस ने कहा, यह नामुम्किन है। सौ वर्ष तक भी अह्दनामे को कीड़ा नहीं खा सकता।

अबू जह्ल ! मैं सिर्फ़ इसलिए आया हूं कि अगर मेरे भतीजे की इत्तिला सही है, तो अह्दनामा की पाबन्दी क़ुदरती तौर पर खत्म हो गयी, बाईकाट बन्द होना चाहिए। अबू तालिब ने कहा, और अगर यह खबर ग़लत है, तो आप बाईकाट जारी रखें, मैं शाबे अबी तालिब में रहने पर तैयार हूं।

अबू जह्ल ने कहा, यह मंज़ूर है।

बस, अह्दनामा उतार लाइए।

अबू जह्ल अह्दनामा उतारने के लिए आगे बढ़ा।

लोगों की भीड़ बढ़ गयी।

अबू जह्ल जल्दी से अह्दनामा ले आया। जब उसने उसे खोल कर देखा, तो हैरान रह गया, यह देख कर कि दीमक उस का एक-एक लफ़्ज़ चाट गयी है।

अबू जह्ल का चेहरा उतर गया।

वहां जमा भीड़ भी हैरत में पड़ गयी।

कुफ़्फ़ारे मक्का के हौसलों पर ओस पड़ गयी।

अबू तालिब को बोलने का मौक़ा मिल गया, अबू जह्ल ! मुहम्मद ने ठीक ही कहा था, अह्दनामे का एक लफ़्ज़ भी बाक़ी नहीं रहा है, इस लिए वायदे के मुताबिक़ बाईकाट खत्म हो जाना चाहिए।

अबू जह्ल झुंझला कर बोला, तुम्हारा भतीजा जादूगर है (नऊज़ु-बिल्लाह) और जादू के ज़ोर से उस ने अह्दनामा के लफ़्ज़ उड़ा दिये हैं। जब तक मुसलमान अपने बाप-दादा के धर्म में वापस न आएंगे, बाईकाट जारी रहेगा।

अबुल बख्तरी को गुस्सा आ गया, अब जो भी इस ज़ालिमाना अह्द-नामे का नाम लेगा उस की ज़बान काट दी जाएगी।

अबू सुफ़ियान भी भड़क उठा, यह तुम कहते हो ?

हिशाम बिगड़ गया, तुम्हारी क़ौम सही कहती है।

अबू सुफ़ियान बोला, तुम ज़िद छोड़ दो। अपनी बेजा ज़िद से तमाम अरब में लड़ाई की आग न भड़काओ।

अबूतालिब को दखल देना पड़ा, बोले—

ऐ लोगो ! सुनो और कान खोल कर सुनो। दबने से एक चींटी भी काट लेती है। हम तो इंसान हैं, फिर कमज़ोर इंसान नहीं, बल्कि हमारा दिल मज़बूत है, बाज़ू मजबूत हैं, ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक लड़ सकते हैं। ग़नीमत जानो कि मेरा भतीजा मुहम्मद (सल्ल०) बेहद नेक है, वह ख़ूंरेज़ी को नहीं पसन्द करता। तमाम मुसलमानों ने उन से लड़ाई की इजाज़त तलब की, मगर उन्हों ने इजाज़त नहीं दी। मुसलमान उन के हुक्म की इतनी पाबन्दी करते हैं कि सख़्तियां बर्दाश्त कर रहे हैं, बच्चों को भूख से एड़ियां रगड़ते हुए देख रहे हैं, लड़ मरने को जी चाहता है, लेकिन इजाज़त न मिलने की वजह से मजबूरन ख़ामोश हैं, मगर अब हालत बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं है। मुम्किन है मुहम्मद (सल्ल०) लड़ाई की इजाज़त दे दें और लड़ाई शुरू हो जाए। इसलिए अब यह मुनासिब है कि पहरा उठा कर बाईकाट बन्द करो और अगर इंकार करते हो, तो लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ। मैं यहां से वापस जा कर मुहम्मद (सल्ल०) को लड़ाई पर तैयार करूंगा।

तमाम कुफ़्फ़ार ने अबूतालिब की बातों को ध्यान से सुना, मश्विरा किया और आख़िर में यही तै पाया कि अह्दनामा दीमक ने चाट लिया है, तो अब उस की पाबन्दी नहीं की जा सकती।

चुनांचे फ़ौरन एलान कर दिया गया कि मुसलमानों का बाईकाट ख़त्म हो गया।

मुसलमानों ने इस ख़ुशख़बरी को सुना तो ख़ुश होकर अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया और तीन साल के लम्बे बाईकाट से उन्हें निजात मिली और वे ख़ुशी-ख़ुशी अपने-अपने घरों को लौट आए।

मेराज

मुसलमान सन ०७ नबवी में शाबे अबी तालिब में क़ैद कर दिए गए थे। सन् १० नबवी में बाईकाट ख़त्म हुआ। पूरे तीन साल दर्रे में पड़े रहे।

ये साल जिस सख़्ती, जिस मुसीबत और जिन तक्लीफ़ों से मुसलमानों ने गुज़ारे, उन का सौवां हिस्सा भी बयान करना इस ज़माने के मुसलमानों के दिलों को हिला देने के लिए काफ़ी है।

सन् १० नबवी में जब बाईकाट ख़त्म हुआ और मुसलमान अपने घरों में वापस आए, तो ख़्याल होता था कि शायद क़ुरैश की बेजा सख़्तियों और नामुनासिब और ज़ालिमाना ज़ुल्मों का ख़ात्मा हो जाएगा, वे मुसलमानों

को उन के हाल पर छोड़ देंगे। पर होने वाले वाक़िआत ने बहुत जल्द बता दिया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश पहले से भी ज़्यादा सख़्त ज़ालिम साबित हुए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० क़बीला बनी तमीम से थे। यह क़बीला क़ुरैश का इज़्ज़तदार क़बीला था। इस क़बीले का सब से बड़ा और इज़्ज़तदार आदमी ही ख़ूनबहा और तावान का फ़ैसला किया करता था, उस ज़माने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० इस ओहदे पर बिठाये गये थे। वह ख़ून के जिस मुक़दमे का ख़ून बहा या लड़ाई के जुर्माने का जो फ़ैसला फ़रमा देते थे, मक्का के तमाम लोग और सारे क़ुरैश बिना कुछ कहे-सुने उस फ़ैसले को मान लेते थे। किसी को उन के फ़ैसले की मुख़ालफ़त करने की जुर्रात न होती थी। आप मालदार भी थे और बहादुर भी और आप का क़बीला भी बड़ा था, लेकिन आप के मुसलमान होने से आप के क़बीले ने आप का साथ छोड़ दिया था।

जब आप शोबे अबी तालिब से निकले, तो अपने मकान के आंगन में एक चबूतरा बनाकर उस पर नमाज़ पढ़ने लगे और अल्लाह के कलाम की तिलावत करने लगे। चूंकि आप बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन मजीद पढ़ते थे, इसलिए आप के पड़ोसियों को यह हरकत बहुत नापसन्द थी। उन्हों ने आप को परेशान करना शुरू कर दिया। जब वे मौक़ा पाते, आप के मकान में गन्दगी वग़ैरह फेंक देते थे और तिलावत के वक़्त पत्थर और ईंटें बरसाते थे, जिन से आप तंग आ गये। एक दिन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से अर्ज़ किया कि मेरी क़ौम का ज़ुल्म अब हर दिन बढ़ता जा रहा है। वे नहीं चाहते कि मैं मक्का में रहूं। अगरचे मुझे आप की जुदाई बोझ हो रही है, फिर भी मस्लहत का तक़ाज़ा यही मालूम होता है कि मैं भी हिजरत कर के हब्शा में जा कर क़ियाम करूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अफ़सोस, क़ौम तमाम लोगों को मक्का से निकालना चाहती है। हिजरत करना तो मैं भी चाहता हूं, मगर ख़ुदा के हुक्म का इन्तिज़ार है। मैं नहीं जानता कि मुझे कहां हिजरत का हुक्म होगा। मैं ने ख़्वाब देखा है कि मक्के से रवाना हो गया हूं और बहारदार इलाक़े में पहुंच गया हूं, जहां खजूरों के बाग़ बहुत ज़्यादा है। मेरा ख़्याल है कि मुझे ऐसे ही इलाक़े की ओर हिजरत का हुक्म होगा, जहां ज़्यादा से ज़्यादा खजूरों के बाग़ होंगे।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा, बेशक! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरा ख़्याल है कि शायद वह जगह यमामा (मदीना) हो, क्यों कि वहीं खजूरों के बाग़ बहुत हैं।

मैं नहीं कह सकता कि वह कौन-सी जगह होगी ? आप ने कहा, अच्छा अबूबक्र ! तुम अगर अपनी क़ौम से इतना तंग आ गये हो कि मक्का में रहना मुश्किल हो गया है, तो ख़ुदा का नाम लेकर हिजरत करो, मगर मेरा ख्याल है कि तुम शायद हब्शा न जा सको।

हब्शा न जा सकूंगा, तो जद्दा ही में रह जाऊंगा। हज़रत अबूबक्र ने कहा, और जब और जहां हुज़ूर सल्ल० हिजरत का इरादा फ़रमाएंगे, मैं साथ देने के लिए हाज़िर हो जाऊंगा।

यह कह कर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० उठे, अपने मकान पर आए ऊंट पर सवार हुए और चल पड़े। कुछ फ़ासला तै करने पर क़बीला मक़ारा के सरदार इब्नुद्दुग़ना से मुलाक़ात हुई।

इब्नुद्दुग़ना अभी तक हालते कुफ़्र में थे। उन्होंने कहा,

कहां जा रहे हो ? अबूबक्र !

मुझे मेरी क़ौम ने इतना सताया है कि मैं ने मजबूरी की हालत में इरादा कर लिया है कि मक्के से निकल कर कहीं और चला जाऊं, ताकि आज़ादी से अपने ख़ुदा की इबादत कर सकूं।

क़ौम कितनी मूर्ख हो गयी है कि आप जैसे नेक आदमी को भी मक्के से निकाल दिया है। इब्नुद्दुग़ना ने कहा, शायद इस क़ौम की तबाही का वक़्त क़रीब आ गया है, लेकिन अबूबक्र ! आप को मक्का से न निकलना चाहिए था।

आप ही बताइए, मैं क्या करता ? हज़रत अबूबक्र ने कहा, तंहा पूरी क़ौम का मुक़ाबला कैसे करूं ? इतने बड़े शहर में एक आदमी भी मुझे अपनी हिमायत में लेने को तैयार न हुआ।

मैं आपको अपनी हिमायत में लेता हूं, इब्नुद्दुग़ना ने कहा, आप मक्का वापस चलिए और आज़ादी से अपने ख़ुदा की इबादत मक्का में ही कीजिए अगर आप को किसी ने परेशान किया तो मैं उस का सर उड़ा दूंगा।

चूंकि आप को हुज़ूर सल्ल० की जुदाई बोझ थी, इस लिए इब्नुद्दुग़ना के साथ वापस लौट आए।

इब्नुद्दुग़ना ने ख़ाना काबा में जा कर एलान कर दिया कि हज़रत अबूबक्र को मैं ने अपनी हिमायत में ले लिया है। कोई आदमी उन से छेड़खानी न करे, और अगर कोई उन को सताएगा, तो मैं उस का सर उड़ा दूंगा।

इब्नुद्दुग़ना कोई मामूली आदमी न था। क़बीले का सरदार था, इस लिए किसी को उस की बात टालने की हिम्मत न हुई और हज़रत अबूबक्र

अपने मकान में पहुंच गये। वहां पहले की तरह रहने-सहने और ऊंची आवाज़ में क़ुरआन की तिलावत करने लगे।

क़ुरआन मजीद में एक क़िस्म का खिंचाव और कशिश है कि सुनने वाले के दिल पर बड़ा असर करता है। हज़रत अबू बक्र की तिलावत जब जारी हो गयी, तो फ़ितरी तौर पर पड़ोसियों के कान में आवाज़ जाने लगी। असर पड़ने लगा और कुछ लोग तो मुसलमान भी हो गये।

यह बात कुफ़्फ़ार के लिए और ज़्यादा फ़िक्र में डाल देने वाली थी।

उन्हों ने इब्नुद्दुग़ना से शिकायत की कि अगर अबू बक्र इसी तरह क़ुरआन पढ़ते रहे, तो धीरे-धीरे पूरा मुहल्ला मुसलमान हो जाएगा, इस लिए उन को मना किया जाये कि वे ऊंची आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ न पढ़ा करें।

इब्नुद्दुग़ना ने लोगों की इस मांग को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ तक पहुंचा दिया और कहा, आप क़ुरआन मजीद ऊंची आवाज़ से न पढ़ा करें।

अगर मैं इस बात को न मानूं, तो आप मेरे साथ क्या सुलूक करेंगे? हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने पूछा।

मैं अपनी हिमायत से हाथ खींच लूंगा। उस ने कहा

तो मैं ख़ुद ही आप की हिमायत से निकल कर अपने ख़ुदा की हिमायत में पनाह लेता हूं। हज़रत अबू बक्र ने पूरे जोश से कहा।

इब्नुद्दुग़ना ख़ामोश होकर चला गया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ आज़ादी के साथ क़ुरआन की तिलावत करते रहे और नमाज़ें अदा करते रहे।

एक दिन हज़रत अबू बक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत म पहुचे। आप अपने मकान पर न मिले। अबू बक्र सिद्दीक़ बैतुल हराम की तरफ़ चल पड़े। रास्ते में अबू जह्ल मिला। उस ने मज़ाक़ उड़ाने की नीयत से कहा, अबू बक्र! तुम्हारे नबी को आज मेराज हुई है। वह कहते हैं कि उन्हों ने बैतुल मक़्दिस तक सफ़र किया था, फिर आसमान पर गये और रात ही को वापस लौट आए, क्या यह यक़ीन करने के क़ाबिल बात है?

क्यों नहीं? एक रसूल कभी झूठ नहीं बोल सकता, हज़रत अबू बक्र ने कहा।

अबू जह्ल ने हंस कर कहा, लेकिन आज यह साबित किया जाएगा कि हुज़ूर सल्ल० जो इस वक़्त कह रहे हैं, सही नहीं है। मैं उन लोगों को बुलाने जा रहा हूं, जो कि बैतुल मक़्दिस में रह कर आए हैं। वे बैतुल मक़्दिस और मस्जिदे अक़्सा के वाक़िआत पूछेंगे, देखें, तुम्हारे नबी बताते

हैं या नहीं ?

जरूर बताएंगे, तुम इम्तिहान लेना चाहते हो, ले लो, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तमाम नबियों का इम्तिहान उन की क़ौम ने लिया है, हुज़ूर सल्ल० का भी ले लो।

अबूजह्ल चला गया।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ बैतुल हराम में पहुंचे। हुज़ूर काबे के दरवाज़े के सामने बैठे थे और आप के सामने सैकड़ों कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बैठे और खड़े थे। इन में क़ुरैश के बड़े लोग भी मौजूद थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने प्यारे नबी को सलाम किया और आप के सामने बिल्कुल क़रीब बैठ गये।

अबूलहब ने मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहा, अपने नबी से आसमान व ज़मीन की बातें मालूम कर लो। रात उन्हें मेराज हुई है। अर्शे मुअल्ला पर खुदा के पास से हो कर आ रहे हैं। जन्नत और दोज़ख वग़ैरह सब देख कर आए हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा ईमान है कि हुज़ूर सल्ल० ने जो कुछ फ़रमाया होगा, वह सही है। मुझे अभी-अभी अबूजह्ल ने बताया है, इस लिए मैं भी हुज़ूर सल्ल० से वाक़िआत मालूम करने के लिए आया हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबूबक्र वाक़ई मुझे मेराज हुई है। पहले मैं बैतुल मक़्दिस गया, फिर आसमान पर पहुंचा और फिर अर्शे मुअल्ला पर पहुच कर खुदा से हमकलाम हुआ।

मैं हुज़ूर सल्ल० के एक-एक लफ़्ज़ पर ईमान लाया, गुज़ारिश है थोड़ा तफ़्सील से इन वाक़िआत को सुनाएं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने तफ़्सील से वाक़िआत सुनाये।

मौजूद लोग बहुत ग़ौर से सुनने लगे। इस मुद्दत में अबूजह्ल भी आ गया। उस के साथ कुछ और लोग भी आ गये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

मैं सो रहा था कि जिब्रील अलै० आये और ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ मुहम्मद ! खड़े हो जाओ, तुम को परवरदिगार ने बुलाया है।

मैं तुरन्त उठा। हज़रत जिब्रील अलै० को देखा।

उन्हों ने कहा, ऐ मुहम्मद ! वुज़ू करो।

मैं ने वुज़ू किया। वह मुझे अपने साथ लेकर जब सफ़ा व मर्वः की पहाड़ियों के बीच पहुंचे, तो एक मर्कब (सवारी), निहायत ही खूबसूरत,

खूब सजा व सजाया देखा। यह मर्कब खच्चर से छोटा और गधे से बड़ा था सीना याक़ूत सुर्ख से सजा हुआ था, पीठ सफ़ेद मोती से जड़ी हुई थी। दो खूबसूरत पर दोनों तरफ़ से खुले थे कि उस की पिंडुलियां नज़र न आती थीं।

हज़रत जिब्रील ने कहा, ऐ मुहम्मद ! यह बुर्राक़ है, इस पर नबी सवार होते रहे हैं, आप इस पर सवार हो जाएं।

मैं तुरन्त बुर्राक़ पर सवार हो गया।

बुर्राक़ इस तेज़ी से रवाना हुआ कि मैं हैरान रह गया। मैं ने कोई ऐसी तेज़ रफ़्तार सवारी ही नहीं देखी थी कि उस जैसा बताऊं।

कुछ ही लम्हों में मैं एक ऐसे बहारदार इलाक़े में पहुंचा, जिस में खजूर के पेड़ ज़्यादा से ज़्यादा खड़े थे। ज़मीन हरी-भरी थी। बुर्राक़ उस जगह रुक गया।

हज़रत जिब्रील ने कहा, ऐ मुहम्मद ! यह वह जगह है, जहां आप मक्का से हिजरत कर के आएंगे। इस जगह का नाम मदीना तैयिबा है। यहां ठहर कर दो रक्अत नमाज़ पढ़ लीजिए।

मैं ने फ़ौरन दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।

नमाज़ पढ़ कर मैं फिर बुर्राक़ पर सवार हो गया। बुर्राक़ रवाना हुआ।

पलक झपकते ही हम एक ऐसे पहाड़ पर पहुंचे, जो जल कर काला हो गया था।

जिब्रील ने कहा, इस पहाड़ का नाम कोहेतूर है। इस पहाड़ पर हज़रत मूसा खुदा से हमकलाम हुआ करते थे।

हज़रत जिब्रील ने अभी बात खत्म भी नहीं की थी कि हम बाबुल्लहम पहुंचे। यहां हज़रत ईसा पैदा हुए थे।

बुर्राक़ अपनी तेज़ रफ़्तारी के साथ भागा जा रहा था। तर्फ़तुल ऐन में हम एक हरी-भरी जगह पहुंचे। सामने एक बहुत बड़ा क़िला था। क़िले के पास एक आलीशान मस्जिद थी। बुर्राक़ मस्जिद के पास पहुंच कर रुक गया।

जिब्रील अलै० ने फ़रमाया, मुहम्मद ! उतरिये, यह बैतुल मक़्दिस है और यह सामने मस्जिदे अक़्सा है। मैं बुर्राक़ से उतरा। मुझे बहुत से लोग सफ़ेद पोश और नूरानी सूरत वाले नज़र आए।

उन्हों ने मुझे देखते ही 'ऐ अल्लाह के रसूल ! सलामती हो आप पर' कहा। मैं ने सलाम का जवाब दिया। वे लोग सामने से इस तरह ग़ायब

हो गये, जैसे सुबह के वक़्त चांदनी सुबह का उजाला फैलते ही ग़ायब हो जाती है।

मैं मस्जिदे अक़्सा के अन्दर पहुंचा। मस्जिद में बहुत से आदमी मौजूद थे। मैं ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। सब लोग मेरे पीछे आकर खड़े हो गये। उन्हों ने नमाज़ में मेरी इक़्तिदा की।

जब मैं नमाज़ पढ़ कर मस्जिदे अक़्सा से निकला, तो जिब्रील ने कहा, ऐ ख़ुदा के हबीब! आप ने पहचाना कि मस्जिदे अक़्सा के अन्दर वे लोग कौन थे ?

मैं ने कहा, इन में से किसी को भी इस से पहले न देखा था।

हज़रत जिब्रील ने कहा, ये तमाम नबी थे।

मैं ने कहा, तुम ने पहले ही मुझे क्यों न बताया ? आओ वापस चल कर देखें और इन से मिलें।

हज़रत जिब्रील ने कहा, अब वापस जाना बेकार है। वे जहां से आए थे, वहां चले गये।

मुझे अफ़सोस हुआ।

जिब्रील अलै० ने कहा, अफ़सोस न कीजिए, आप उन से फिर मिलेंगे। अब चलिए।

मैं बुर्राक़ पर सवार हुआ। बुर्राक़ आसमान पर उड़ने लगा था। पलक झपकते ही हम पहले आसमान पर पहुंच गये। बुर्राक़ हवा की तरह उसे पार कर गया। यहां मुझे फिर ऐसे सफ़ेद पोश नूरानी सूरत वाले बुज़ुर्ग नज़र आए, जैसे मस्जिदे अक़्सा के पास मिले थे। इन सब ने मुझे सलाम किया। मैं ने सलाम का जवाब दिया।

जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ये फ़रिश्ते हैं। इन फ़रिश्तों के दर्मियान एक बुज़ुर्ग बेहतरीन पोशाक पहने हुए तश्रीफ़ फ़रमाथे। मैं ने बढ़ कर उन्हें सलाम किया। उन्हों ने तपाक से जवाब दिया और मुझे अपनी गोद में ले कर प्यार किया।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा, यह तुम्हारे दादा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं।

बुर्राक़ पर फिर सवार हुए और पलक झपकते ही दूसरे आसमान पर पहुंच गये। यहां भी फ़रिश्ते लाइनों में खड़े थे। उन्हों ने भी मुझे सलाम किया। मैं ने सलाम का जवाब दिया। इन फ़रिश्तों के दर्मियान दो बुज़ुर्ग अच्छे कपड़े पहने गाव तकिया लगाये बैठे थे।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे बताया कि इन में से एक हज़रत

ईसा अलैहिस्सलाम रूहुल्लाह हैं और दूसरे हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम हैं। दोनों मुझ से बग़लगीर हुए।

इन से रुख़सत हो कर हम तीसरे आसमान की तरफ़ उड़े। वहां पहुंच कर भी फ़रिश्तों का जमाव पाया। उन्हों ने भी सलाम किया और मैं ने भी सलाम का जवाब दिया। इन फ़रिश्तों के दर्मियान एक नवजवान निहायत ख़ूबसूरत पोशाक पहने तकिया का सहारा लगाये बैठा था। वह मुझे देखते ही लिपट गया। हज़रत जिब्रील ने बताया कि यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं।

मैं उन से विदा होकर चला और चौथे आसमान पर पहुंचा। वहां हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। पांचवें पर हज़रत हारून से और छठे पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मुझे देखते ही रो पड़े।

मैं ने पूछा, ऐ कलीमुल्लाह ! आप किस वास्ते रो रहे हैं ?

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया, इस वजह से कि तुम्हारी उम्मत मेरी उम्मत से कहीं ज़्यादा जन्नत में जाएगी और क़ियामत के दिन तुम्हारी सिफ़ारिश सुनी जाएगी और जिस की ओर तुम इशारा करोगे वह बख़्शा जाएगा, आप ख़ुदा के चहेते पैग़म्बर हैं। काश ! मुझे भी यह मंसब मिला होता।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से रुख़सत होकर हम सातवें आसमान पर पहुंचे. इस आसमान पर इतनी रोशनी और फ़रिश्तों की भीड़ थी कि इस से पहले किसी आसमान पर न थी।

वहां एक मस्जिद नज़र आयी। उस का नाम बैतुलमामूर था, वह बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद थी। मस्जिद के चारों तरफ़ फ़रिश्ते लाइन लगाए खड़े थे, कुछ रुकूअ की हालत में थे, कुछ सज्दे में पड़े थे।

एक बुज़ुर्ग आदमी बैतुलमामूर से पीठ लगाये बैठे थे, वह मुझे देखते ही उठे और अपनी गोद में भरने के लिए आगे बढ़े।

जिब्रील ने मुझे बताया कि यह हज़रत इब्राहीम हैं। मैं भी उन से तपाक से मिला। उन्हों ने मेरा स्वागत किया और फिर रोकर कहा—

प्यारे बेटे ! तू जब तक दुनिया में रहेगा, परेशानियों का मुक़ाबला करता रहेगा। तेरी उम्मत बेहद कमज़ोर होगी, आज अल्लाह ने तुझे बुलाया है, तू अपनी उम्मत की बख़्शिश का वायदा अपने रब से करवा लेना।

मैं ने कहा, मेरे बुज़ुर्ग ! मुझे अपनी उम्मत से इश्क़ है। मैं उस की

फ़लाह के लिए रब से उस वक़्त तक अर्ज़ करता रहूंगा, जब तक वह अपनी रहमत में आ कर सारी उम्मत के बख़्शने का वायदा न कर ले।

मैं उस से विदा हो कर आगे बढ़ा और एक अजीब व ग़रीब पेड़ के पास पहुंचा। यह पेड़ जहां तक निगाह जाती थी, वहां तक फैला हुआ था। पेड़ के बीच में एक सजा-सजाया मकान था। हज़रत जिब्रील ने फ़रमाया यह सिद्‌रतुल मुन्तहा है और यह मकान मेरे रहने की जगह है।

वहां से मुझे एक पुर-बहार इलाक़े में ले गये, जिस की नज़ीर दुनिया के किसी इलाक़े में नहीं मिलती। हरा-भरा सदा बहार इलाक़ा, फूल-फल, बेहतरीन इमारतें, नहरें, ख़ूबसूरत सड़कें, सुन्दर औरतें, सभी कुछ। हज़रत जिब्रील ने बताया, यही वह जन्नत है, जिसका वायदा ख़ुदा ने मुसलमानों से किया है। अगर ख़ुदा के बन्दे अपनी ज़ाहिरी आंखों से भी एक बार जन्नत का नज़ारा कर लें, तो उम्र भर उसे दोबारा देखने की ख़्वाहिश में परेशान रहें।

जन्नत से आगे हम एक ऐसी जगह से गुज़रे, जहां आग कसरत से जल रही थी, शोले उठ रहे थे। सांप और दूसरे जानवर फुंकारें मार रहे थे। गर्म-गर्म खौलता पानी बह रहा था। ज़क़्क़ूम के कांटेदार पेड़ खड़े थे। आग की लपट दूर तक वार कर रही थी। मैं ने उस जगह को देखते ही समझ लिया कि यह दोज़ख़ है ख़ुदा के नाफ़रमान बन्दों के रहने की जगह। बे-अख़्तियार मेरी आंखों से आंसू जारी हो गये। मैं ने कहा, ऐ ख़ुदा! मेरी कमज़ोर उम्मत को इस सज़ा से बचाइए।

मेरे यह कहते ही दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो गये।

मैं हज़रत जिब्रील के साथ आगे बढ़ा। कुछ दूर चल कर जब सिदरतुल मुन्तहा की आख़िरी हद पर पहुंचा, तो हज़रत जिब्रील ठिठक गये।

मैं ने कहा, ऐ भाई! तुम रुक गये, मेरे साथ आओ।

हज़रत जिब्रील ने कहा, हम में से, कोई ऐसा नहीं है, जिस की जगह तै न हो। मेरी मजाल इस से आगे बढ़ने की नहीं है, अगर कुछ क़दम और आगे बढ़ूं तो तजल्ली इलाही से मेरे तमाम बाल व पर जल जाएंगे।

मैं ने जवाब दिया, तो मैं तंहा बढ़ूं?

अब आप को तंहा ही बढ़ना पड़ेगा, हज़रत जिब्रील ने जवाब दिया ऐ आख़िरी नबी! तशरीफ़ ले जाइए, अब क़ुदरत आप की रहनुमाई करेगी।

मैं बढ़ा, सामने एक परदा रोक था। यकायक उस परदे ने अपनी गोद में मुझे ले लिया। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम, सिदरतुल मुन्तहा

और तमाम चीज़ें मेरी नज़रों से ओझल हो गयीं, सिर्फ़ रोशनी रह गयी।

इस रोशनी में मैं आगे बढ़ा चला जा रहा था कि एक अजीब क़िस्म का हरा फ़र्श बिछा हुआ देखा, निहायत मुलायम, गहरा हरा, जिस पर चलने से दिल व दिमाग़ को ताक़त पहुंचती थी। इस फ़र्श का नाम रफ़रफ़ था। यहां एक फ़रिश्ता सूर लिए खड़ा था। उसने मुझे सलाम किया। उस फ़रिश्ते का नाम इस्राफ़ील था। यह फ़रिश्ता क़ियामत के दिन सूर फूंकेगा और इस की हौलनाक आवाज़ से ज़मीन व आसमान के टुकड़े हो जाएंगे।

ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ता था, रोशनी अजीब और दिल में उतरने वाली होती जाती थी, नूरानी पर्दे हटते जाते थे, यहां तक कि मैं अर्शे मुअल्ला के क़रीब जा पहुंचा। मेरा दिल व दिमाग़ रौबे इलाही से भर गया। अब मैं ऐसी जगह पहुंचा, जहां रोशनी न थी, बल्कि नूर था। कैसा नूर था, मेरी ज़ुबान में नूर की कैफ़ियत बयान करने की ताक़त नहीं है। न दुनिया में मैं ने कोई ऐसी चीज़ देखी है, जिस से उस नूर के बारे में कह सकूं कि वह उस जैसा है।

मैं हैरान खड़ा रह गया।

मेरे खड़े होते ही आवाज़ आयी, ऐ मुहम्मद। नज़दीक आओ।

मुझ में हिम्मत हुई और मैं आगे बढ़ा, लेकिन उस नूर के रौब से मेरा सीना भर गया।

मुझ पर मस्ती छा गयी। मैं चलते-चलते ठहर जाता। मेरे ठहरते ही आवाज़ आती, ऐ मुहम्मद ! नज़दीक आओ।

मैं फिर चलने लगता। आख़िर में चल कर एक ऐसी जगह पहुंचा, जहां तजल्ली इलाही के साए से आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई और बे-अख़्तियार मेरी ज़ुबान से निकला 'अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु।' फ़ौरन ग़ैब से आवाज़ आयी, 'अस्सलामु अलै-क-अय्यु-हन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब रकातुहू अस्सलामु अलैना व अला अिबा-दिल्लाहिस्सालिहीन।'

इस आवाज़ के सुनते ही तमाम फ़रिश्तों ने ऊंची आवाज़ से कहा, 'अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू'

अब मैं समझ गया कि अल्लाह में और मुझ में दो कमान से भी कम फ़ासला रह गया है। मैं बे-अख़्तियार सज्दे में गिर गया।

जब मैं उठा तो रौबे इलाही से मेरा जिस्म थरथराने लगा। अल्लाह

की रहमत हुई और पांच वक़्त की नमाज़ मेरी उम्मत पर फ़र्ज़ हुई।

फिर मैं ने वापसी की इजाज़त चाही। इजाज़त मिलने पर वापस हुआ। वापस लौट कर सिदरतुल मुन्तहा के पास आया।

हज़रत जिब्रील मेरे इन्तिज़ार में खड़े थे। उन्हों ने मुझे देखते ही मारे खुशी के कहा, मुबारक हो!

अब मैं उन के साथ वापस लौटा। थोड़ी दूर चला था कि एक ग़ज़ब-नाक चेहरे वाला सख्त मिज़ाज फ़रिश्ता मिला, अगरचे उस ने मेरी ताज़ीम की, पर उस की पेशानी का बल न गया और उस की हर-हर अदा से संगदिली टपकती थी।

मैं उस से विदा हो कर आगे बढ़ा, रास्ते में हज़रत जिब्रील से पूछा कि यह सख्त मिज़ाज फ़रिश्ता कौन है?

यह इज़राईल हैं; मौत का फ़रिश्ता, हज़रत जिब्रील ने बताया।

मैं ने हज़रत जिब्रील से कहा, मुझे इस से कुछ कहना है, आओ इस के पास चलें।

हज़रत जिब्रील मुझे मलकुलमौत के पास वापस गये!

मैं ने उन से कहा, ऐ ख़ुदा के मुक़र्रब फ़रिश्ते! मेरी आरज़ू है कि मेरी उम्मत के साथ किसी क़दर नर्मी और आसानी का बर्ताव करते रहना।

उस ने कहा, ऐ उम्मत के शैदाई! ऐ ख़ुदा के महबूब रसूल! मुझे अल्लाह की तरफ़ से हर दिन हिदायत होती रहती है कि मुहम्मद के उम्मती की रूह क़ब्ज़ करते वक़्त नर्मी कीजोए। मेरी क्या मजाल है कि उस के हुक्म की नाफ़रमानी कर सकूं।

मैं वहां से वापस लौटा। बुर्राक़ पर सवार हुआ। बुर्राक़ हवा जैसी तेज़ी के साथ रवाना हुआ, यहां तक कि आसमानों को पार करता हुआ मैं धरती पर आ गया। मुझे प्यास मालूम हुई। रूमा नामी जगह पर एक क़ाफ़िला ठहरा हुआ था। क़ाफ़िले वालों का ऊंट गुम हो गया था। तमाम क़ाफ़िले वाले गुमशुदा ऊंट को तलाश करने के लिए गये हुए थे। मैंने पड़ाव के पास जाकर पानी पिया।

तनुअीम में एक क़ाफ़िला आ रहा था। सब से आगे एक ख़ाक़ी रंग का ऊंट था। उस पर काला टाट पड़ा हुआ था और दो स्याह गोनें लगी हुई थीं। मैं ने क़ाफ़िले वालों को सलाम किया और उन्हों ने सलाम का जवाब दिया।

बुर्राक़ हवा जैसी तेज़ी से दौड़ रहा था, यहां तक कि मक्का आ गया।

सफ़ा और मर्वः के दर्मियान आ कर बुराक़ रुक गया। मैं उतर कर अपनी ख्वाबगाह में आया। अजीब बात यह देखी कि ज़ंजीर पहले ही की तरह हरकत में थी और बिस्तर गर्म था।

मुझे सख्त हैरत हुई कि कितनी जल्दी मैं मक्का मुअज़्ज़मा से बैतुल-मक़्दिस और वहां से आसमान के ऊपर और आसमानों से अर्शेमुअल्ला पर से हो आया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जल्दी से कहा, सच कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

उसी दिन से आप का लक़ब 'सिद्दिक़' पड़ गया।

अबू जह्ल ने हंस कर कहा, अबूबक्र ! क्या तुम ऐसी दूर की कौड़ी और समझ में न आने वाली बातों को सही समझते हो, जिसे मुहम्मद ने बयान की है ?

इस में न समझ में आने वाली बात क्या है ? अबू जह्ल !

अबू जह्ल ने कहा, क्या यह बात समझ से बाहर नहीं है कि मुहम्मद सल्ल० रात ही को बैतुलमक़्दिस हो आए। यह ग़ैर-मुम्किन है। इतनी बड़ी दूरी एक रात को तो क्या, एक हफ़्ते में भी तै नहीं हो सकती।

जो लोग उस वक़्त बैठे थे, सब इस अजीब बात पर हैरान व परेशान थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, खुदा में सब कुछ क़ुदरत है। वह ग़ैर-मुम्किन को मुम्किन कर देता है। खुदा ने जब दुनिया को पैदा करना चाहा, तो फ़रमाया, हो जा, तो वह हो गयी। जब वह ऐसी क़ुदरत वाला है, तो क्या उस के लिए नामुम्किन है कि वह अपने महबूब रसूल को मक्के से बैतुलमक़्दिस और वहां से आसमानों पर ले जाए और फ़ौरन वापस ले आए।

अबूजह्ल हंस पड़ा, मैं बेवक़ूफ़ नहीं हूं। अबूबक्र ! देखो, तुम्हारे नबी का झूठ-सच अभी खुला जाता है।

अबूजह्ल जिन लोगों को साथ ले आया, उनसे ख़िताब करते हुए कहा, हां, तुम बैतुलमक़्दिस में अर्से तक रह चुके हो। मुहम्मद से वहां के हालात पूछो। उन लोगों ने बारी-बारी से पूछना शुरू कर दिया। मसलन बैतुल-मक़्दिस पहाड़ से कितनी दूरी पर है ? मस्जिद कहां है ? उस में ताक़ कितने हैं और कितने कंगूरे हैं ? आंगन कितना बड़ा है ? और बाबुल मेराज किस तरफ़ है ?

अगरचे हुज़ूर सल्ल० ने रात को सरसरी नज़रों से बैतुलमक़्दिस और

मस्जिदे अक़्सा को देखा था, न ताक़ गिने थे, न कंगूरे गिने थे और न यह देखा था कि बैतुलमक़्दिस पहाड़ से किस तरफ़ है और कितने फ़ासले पर है, पर अल्लाह के फ़ज़्ल से इन तमाम सवालों का जवाब ऐसा तसल्लीबख़्श दिया कि सवाल करने वाले हैरान रह गये।

जवाब से सवाल करने वालों को चुप्पी अपनानी पड़ी। अबू जह्ल का गुस्सा भड़क उठा। उस ने कहा, सवाल करने वाले मुहम्मद से मिल गये हैं, इस लिए हम इन बातों पर यक़ीन नहीं करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, फिर तुम किस तरह मानोगे ?

अबूजह्ल ने कहा, अब जब उस के क़बीले वाला क़ाफ़िला आएगा और उस के लोग तुम्हारे सलाम करने की गवाही देंगे, तो यक़ीन आ जाएगा।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मुझे यक़ीन है कि वह क़ाफ़िला आएगा, मगर कल सुबह।

बस अब क़िस्सा बन्द कर दीजिए, अबू जह्ल बोला, कब जब क़ाफ़िला आएगा, तो तमाम झूठ-सच निकल आएगा।

मंज़ूर है, आप ने फ़रमाया।

आप हज़रत अबूबक्र के साथ उठ कर चले गये। थोड़ी देर में तमाम लोग उठ कर अपने-अपने घरों को चले गये।

थोड़ी देर में मेराज मुबारक की ख़बर तमाम मक्के में गर्म हो गयी।

जिस मुसलमान ने सुना ईमान ले आया और जिस काफ़िर ने सुना, वह हैरान रह गया।

सुबह सवेरे से ही लोग मक्के से निकल कर मदीना मुनव्वरा के रास्ते पर जा कर बैठे और क़ाफ़िले के आने का इन्तिज़ार करने लगे।

जब सूरज निकला और क़ाफ़िला न आया, तो कुफ़्फ़ारे मक्का बहुत ख़ुश हुए, बग़लें बजा-बजा कर कहने लगे, अब तक भी क़ाफ़िला न आया, इस लिए सब बातें ग़लत थीं।

सब ने कहा चलो, चलो, आज तो हमारी चढ़ बनी है।

ये सब लोग वापस लौटना ही चाहते थे कि धूल उड़ती नज़र आयी। तमाम लोग ठहर गये और उसी ओर नज़रें गाड़ दीं।

थोड़ी देर में क़ाफ़िले के ऊंट नज़र आने लगे। सब ने देखा कि क़ाफ़िले के आगे एक ख़ाकी रंग का ऊंट है, जिस पर काला टाट पड़ा हुआ है और उस के दोनों तरफ़ काली गोनें लदी हुई हैं।

जब क़ाफ़िला बराबर में आ गया, तो अबूजह्ल ने क़ाफ़िले के सरदार से पूछा कि मुहम्मद (सल्ल०) कल रात तुम्हारे क़ाफ़िले के पास से गुज़रे थे।

जवाब दिया, हां, गुज़रे थे। अजीब मर्कब पर सवार थे और बहुत तेज़ आ रहे थे। उन्हों ने सलाम किया। जब हम ने जवाब दिया, तो वह नज़रों से ग़ायब हो चुके थे।

अबूजह्ल ने मुंह बिसोरते हुए कहा, क्या वाहियात बात है ? कहीं तुम पर भी मुहम्मद (सल्ल०) ने जादू तो नहीं कर दिया है ?

क़ाफ़िले के सरदार ने बताया, जादू नहीं, मैं ने उन को (हुज़ूर सल्ल० को) आंखों से देखा, और उन की आवाज़ अपने कानों से सुनी है।

अबूजह्ल ने तमाम लोगों से ख़िताब करते हुए कहा, कुछ नहीं, इस क़ाफ़िले ने भी मुहम्मद (सल्ल०) से सांठ-गांठ कर ली है। आओ, इस की बातें न सुनो, वरना तुम भी बहक़ जाओगे ?

तमाम कुफ़्फ़ार क़ाफ़िले वालों का मज़ाक़ उड़ाते हुए रवाना हुए। चूंकि क़ाफ़िले वालों को मेराज शरीफ़ का हाल मालूम न था, इस लिए वे हैरत से कुफ़्फ़ार को देखने लगे। सरदार ने क़ाफ़िले वालों से कहा, ऐसा लगता है कि ये लोग कुछ दीवाने हो गये हैं। आप ही तो सवाल करते हैं और आप ही मुंह चिढ़ाते है और मज़ाक़ उड़ाते हैं।

क़ाफ़िले वालों ने कहा, इन लोगों के पागल होने में कोई शक नहीं है। न जाने ये ऐसी हरकत क्यों करते हैं ?

सरदार ने जोश में आ कर कहा, जाने दो इन पागलों को ?

क़ाफ़िला धीरे-धीरे चलता रहा, यहां तक कि वह मक्का शहर में दाख़िल हो कर ग़ायब हो गया।

गम का साल

क़ाफ़िले की तस्दीक़ के बाद कुफ़्फ़ारे मक्का का ग़ुस्सा और बढ़ गया। हुज़ूर सल्ल० के मक़ाम व मंसब को पहचानने के बजाए वे ज़ुल्म करने में और तेज़ी दिखाने लगे, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने न पहले कभी क़ुरैश के ज़ुल्म व सितम की परवाह की और न अब किसी मुसलमान को ही कुछ ख़्याल हुआ ?

तमाम मुसलमान ख़ामोशी और सुकून से नमाज़ पढ़ते, रोज़े रखते, तिजारत करते और मौक़े-मौक़े से अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को कलामे इलाही सुनाते, तब्लीग़े इस्लाम करते और जो मुसलमान होना चाहता, उसे मुसलमान कर लेते।

इस तरह धीरे-धीरे बहुत-से लोग मुसलमान हो गये।

इसी बीच अबूतालिब, जो हुज़ूर सल्ल० के चचा थे, बीमार पड़े।

अबूतालिब की उम्र अस्सी साल की थी, बहुत बूढ़े हो चुके थे। शोबे अबी तालिब में वह भी तीन साल तक भूखे-प्यासे क़ैद रहे थे। मुसलमानों को, उन की औरतों को, उन के बच्चों को भूख से एड़ियां रगड़ते देखा था। इन तक्लीफ़ों और भूख-प्यास की ज्यादती से उन की सेहत पर बुरा असर पड़ा था। वह कमज़ोर हो कर बिस्तर पर पड़ गये थे। उन पर बीमारी ने अपना पूरा क़ब्ज़ा कर लिया था।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० से अबूतालिब को बे हद मुहब्बत थी। वह हुज़ूर सल्ल० की हर हालत में मदद फ़रमाते, सरपरस्ती करते और हर तरह से हिमायत करते रहे, इस लिए हुज़ूर सल्ल० को आप से बेहद मुहब्बत हो गयी थी और आप ने उन की देखभाल में कोई कमी न की।

अबूतालिब को मक्का वाले भी इज्जत की निगाह से देखते थे। इस लिए उन के बीमार होने की ख़बर आम हुई, तो मक्के के तमाम बड़े लोग भी उन को देखने और उनके पास बैठने के लिए आने लगे।

हुज़ूर सल्ल० चाहते थे कि अबूतालिब का बाक़ायदा इलाज करायें, लेकिन कुफ़्फ़ार तो काहिनों और आराफ़ों को दिखाने के क़ायल थे, खुद अबूतालिब भी यही चाहते थे। चुनांचे उन की ख्वाहिश हुई कि अबूरश को बुलाया जाए।

अबूजह्ल ने कहा कि वह मर गया है।

अबूतालिब यह सुन कर ख़ामोश हो गये।

दूसरे दिन अबूलहब काहिनों और आराफ़ों की एक बड़ी तायदाद बुला कर ले आया।

उन लोगों ने आते ही अबूतालिब को देखा।

एक ने संगरेज़े फेंके और उन को उठा कर सूंघा, ग़ौर से देखा और गरज कर बोला, कुछ नहीं आसेब का काम है। धूनी दो आराम होगा

दूसरे ने अबूतालिब की पुतलियां ग़ौर से देखीं। पुतलियों में रोशनी थी। पास बैठने वालों की शक्लें साफ़ नज़र आ रही थीं। चिल्ला उठा, बड़े-बड़े क़ह्री जिन्नों का साया है। जब इन जिन्नों को पकड़ कर मारा जाएगा, तब सेहत होगी।

तीसरे ने तश्त में पानी भर कर देखा। देर तक देखते रहे, जब कुछ नज़र न आया, तो बोले, कोई बड़ा ख़बीस जिन्न लिपटा हुआ है, जो कि शक्ल तक नहीं दिखाता। कोई जानता हो तो बताए कि वह कौन सा जिन्न है, हम उसे पकड़ कर मार डालेंगे।

चौथे ने इन्सानी जिस्म के अंगों की हड्डियां निकाल कर फैला दीं। उन को ग़ौर से देखा। एक खोपड़ी को चर्ख दिया। जब वह गिरी, तो उसे उठा कर देखा। उस में एक तस्वीर की झलक नज़र आयी। उछल कर बोले, हां-हां, वह जिन्न यह है। इन्हीं करतबों में शाम हो गयी, इलाज बग़ैर कुछ न हुआ और मरीज़ की हालत और बुरी हो गयी।

हुज़ूर सल्ल० इन शैतानी गिरोहों को देख कर कुढ़ रहे थे। वह देख रहे थे कि मरीज़ का आख़िरी वक़्त क़रीब आ गया है। जी में आता था कि ख़ुद ही इलाज शुरू कर दें और कुछ नहीं तो थोड़ा बहुत शहद ही चटा दें, लेकिन इस में भी कुफ़्फ़ार रुकावट पैदा कर रहे थे।

अबूतालिब पर ग़फ़लत तारी हो गयी, रात बड़ी बेचैनी से गुज़री।

कुफ़्फ़ार को यह डर भी था कि कहीं मुहम्मद सल्ल० मरते वक़्त ही अबूतालिब को मुसलमान न कर लें, इस लिए वे हर वक़्त अब अबूतालिब के पास ही रहना पसन्द करते थे।

किसी तरह रात गुज़री, सुबह हुई तो अबूतालिब की हालत कुछ बेहतर नज़र आयी।

तमाम कुफ़्फ़ार उन के गिर्द बैठे थे। सब ने समझ लिया कि अब अबूतालिब बच न सकेंगे। इस लिए जब उन को होश आया, तो अबूजह्ल ने कहा—

अबूतालिब! हालात बता रहे हैं कि अब आप की ज़िंदगी का आख़िरी लम्हा आ गया है। आप अपनी ज़िंदगी में उस झगड़े को, जो हमारे और आप के भतीजे मुहम्मद के बीच है, ख़त्म कर जाएं, ताकि आप के बाद यह झगड़ा बढ़ कर भयानक लड़ाई की वजह न बने।

अबूतालिब ने उस से पूछा, तुम क्या चाहते हो?

अबूजह्ल ने कहा, हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि आप का भतीजा मुहम्मद हमारे हज़ार साला माबूदों को बुरा न कहे।

हुज़ूर सल्ल० अपने मोहतरम चचा के पास ही बैठे थे। अबूतालिब ने उन से (मुहम्मद सल्ल०) खिताब करते हुए कहा, बेटे! तुम क्या कहते हो?

हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए और आप ने फ़रमाया, चचा! मैं किसी के माबूद की तौहीन नहीं करता, सिर्फ़ यह कहता हूं कि एक ख़ुदा की पूजा करो, उस ख़ुदा की, जो कि पालनहार है, जिस ने पैदा किया है, जो मौत पर क़ादिर है, इस के बाद ज़िंदा कर के हिसाब लेगा, वह पाक है, बदले के दिन का मालिक है। उस की पूजा ही सही है। निजात उस को मिलेगी,

जो निजात देने वाले की इबादत करेगा। अपने हाथों से तराश कर बनाये पत्थर के बुत ख़ुदा नहीं हो सकते।

यह सुनते ही कुफ़्फ़ारे मक्का बहुत बिगड़े और ग़ुस्से से अबूतालिब के मकान से बाहर चले गये।

उन के बाहर जाते ही अबूतालिब ने कहा, मेरे प्यारे भतीजे! तुम सीधे रास्ते पर हो। मैं तुम को बचपन से जानता हूं और कभी किसी को सताते या झूठ बोलते और हक़ मारी करते नहीं देखा। तुम ने हमेशा सच कहा, कभी अमानत में ख़ियानत नहीं की। मैं जानता हूं और अच्छी तरह जानता हूं कि न तू जाह तलब है और न ज़र-ज़मीन और ज़न का तलबगार है, न मन्सब का दिलदादा है, न हुकूमत व सलतनत चाहता है, सिर्फ़ इस बात की तमन्ना करता है कि क़ौम हज़ारों ख़ुदाओं को छोड़ कर एक ख़ुदा की पुजारी बन जाए। क़ौम को तुझ से ज़िद है। मैं तेरे मज़हब को अच्छा जानता हूं। जब तक जिया और जहां तक मुझ से हो सका, तेरी हिमायत की। अब मर रहा हूं। नहीं जानता कि क़ौम तेरे साथ क्या सुलूक करेगी? डर यही है कि यह तेरे साथ ज़्यादती करेगी। मैं दुआ करता हूं कि ख़ुदा तुझे ज़्यादतियों से बचाए और पूरे अरब को मुसलमान होने की तौफ़ीक़ दे।

अबूतालिब की बातों से हुज़ूर सल्ल० को उम्मीद हुई कि शायद वह इस आख़िरी वक़्त में मुसलमान हो जाएं, इस लिए आप ने फ़रमाया, ऐ चचा! अगर आप इस्लाम को अच्छा मज़हब समझते हैं, तो उसे अपना क्यों नहीं लेते? आप भी मुसलमान हो जाइए ना!

बेटे! दिल से उसे मानता हूं, लेकिन ज़ुबान से इक़रार करते हुए शरमाता हूं, क्योंकि ज़माना कहेगा कि मौत से डर कर अबूतालिब मुसलमान हो गया, अबूतालिब ने कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस बात का ख़्याल न कीजिए। मरने के बाद कौन आप से कहने जाएगा? ऐ चचा! अगर आप कलिमा पढ़ लेंगे, तो ख़ुदा आप को जन्नत में दाख़िल करेगा।

अबू तालिब पर सकराते मौत तारी हो गया।

उन्होंने कहा, नहीं मेरे भतीजे! मुझे मेरे बाप-दादा के मज़हब पर मरने दो। मैं भी वहीं जाना चाहता हूं, जहां मेरे बाप-दादा हैं।

यह कहते-कहते अबूतालिब के जिस्म में अकड़न हुई। हुज़ूर सल्ल० की आंखों में आंसू आ गये। आप ने फ़रमाया कि अफ़सोस चचा! तुम मुसलमान न हुए। ख़ुदा का हुक्म है कि वह किसी मुश्रिक को न बख़्शेगा,

मगर मैं आप की मग़फ़िरत के लिए हमेशा दुआ करता रहूंगा।

अबूतालिब को एक हिचकी आयी और उस के साथ ही उन की रूह जिस्म से निकल कर परवाज़ कर गयी। उन के मरने की ख़बर पूरे मक्का में घर-घर पहुंच गयी।

मक्के में आम उदासी छा गयी।

हुज़ूर सल्ल० को अबूतालिब से बेहद मुहब्बत थी। उन के मरने का आप को बेहद ग़म था।

अभी यह ग़म बाक़ी ही था कि आप की महबूब बीवी हज़रत ख़दीजा भी बीमार पड़ गयीं। आप को उन से भी बे इन्तिहा मुहब्बत थी, इस लिए आप को बड़ी चिन्ता हो गयी और फ़ौरन दवा शुरू कर दी।

हकीम बिन हिज़ाम हज़रत ख़दीजा के भतीजे थे। उन्होंने चाहा कि काहिनों और आराफ़ों को बुलाया जाए, जैसा कि अरब का दस्तूर था, लेकिन हज़रत ख़दीजा ने सख़्ती से मना कर दिया।

दवा दी जाती रही, लेकिन उस से कोई फ़ायदा नज़र न आया।

सन् १० नबवी का रमज़ान शुरू हो गया था। मरीज़ की हालत देख कर हुज़ूर सल्ल० ग़मगीन रहा करते थे। हज़रत ख़दीजा भी इस ग़म को महसूस कर रही थीं, इस लिए वह बराबर कोशिश करतीं कि अपनी तक्लीफ़ और बेचैनी हुज़ूर सल्ल० पर न ज़ाहिर होने दें।

बहरहाल मरज़ बढ़ता गया और हज़रत ख़दीजा का आख़िरी वक़्त आ गया।

हुज़ूर सल्ल० ने सोच लिया कि अब ज़िंदगी का रिश्ता कटने वाला है, इस लिए वह हज़रत ख़दीजा के सिरहाने बैठ गये। चारों लड़कियां भी आ गयीं। हज़रत फ़ातमा सब से छोटी थीं। अपनी मां की बिगड़ी हालत को देख कर रोने लगीं। मां ने आंखें खोलीं, देखा, लेकिन इतनी ताक़त न थी कि मासूम बच्ची को समझा सकतीं। हज़रत रुक़ैया, ज़ैनब, उम्मे कुलसूम भी नज़रें बचा कर रो रही थीं।

हुज़ूर सल्ल० की आंखों में भी आंसू थे। बैठे कुछ पढ़ रहे थे।

हज़रत ख़दीजा ने एक संभाला लिया और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को देखते हुए फ़रमाया—

मेरे सरताज ! मैं आप की ख़िदमत उतनी न कर सकी, जितनी करनी चाहिए थी। मुझे अफ़सोस है। आप बड़े ख़लीक़ और मेहरबान हैं, मेरी कोताहियों को एक औरत समझ कर माफ़ कर देंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम ! तुम ने इतनी ख़िदमत की

है कि शायद ही किसी पत्नी ने अपने पति की की हो। तुम ने हर वक़्त और हर मौक़े पर मेरी मदद की और मेरे आराम और ख़ुशी को ध्यान में रखा। मुझे अफ़सोस है कि तुम मुझ से रुख़्सत हो रही हो। अपने ग़म को मैं बयान नहीं कर सकता, लेकिन क्या किया जाए, यह निज़ामे क़ुदरत है।

हज़रत ख़दीजा ने कहा, मुझे इस का एहसास है ! इस एहसास ने अब तक मुझे बेचैनी और बेक़रारी के ज़ाहिर करने से मना किये रखा। अच्छा प्यारे शौहर ! रुख़्सत, मेरी प्यारी बच्चियो ! अल-विदाअ्।

हुज़ूर सल्ल० ने झुक कर देखा, हज़रत ख़दीजा की रूह जिस्म छोड़ चुकी थी।

हुज़ूर सल्ल० की आंखों में बे-अख़्तियार आंसू छलक पड़े, ग़म से आप का चेहरा सफ़ेद हो गया। मां के मरने का असर तो चारों बच्चियों ने लिया था, लेकिन सब से ज़्यादा हज़रत फ़ातमा बे-क़रार हो रही थीं। हुज़ूर ने अपनी गोद में ले कर तसल्ली दी।

मौत की ख़बर ने सारे घर में ज़लज़ला पैदा कर दिया था।

थोड़ी देर के बाद नहला-धुला कर जनाज़ा तैयार हुआ।

लोगों की भीड़ लगी हुई थी। वे जनाज़ा मकान से बाहर लाये और निहायत शान और एजाज़ के साथ क़बीला बनी असद के क़ब्रस्तान में दफ़्न किया।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इन्तिक़ाल से हुज़ूर सल्ल० को बेहद रंज हुआ और आप ने फ़रमाया, यह साल ग़म का साल है। इसी साल अबू-तालिब की भी वफ़ात हुई है।

ये दोनों हस्तियां हुज़ूर सल्ल० के लिए ढाल की हैसियत रखती थीं। और अब इन दोनों से हुज़ूर सल्ल० महरूम थे।

डरावा

यों तो जो कोई भी मुसलमान हो जाता, आप का ख़ादिम व जां-निसार बन जाता, मगर सब से ज़्यादा हमदर्द और सब से बढ़ कर आप के हामी अबूतालिब और हज़रत ख़दीजा थीं और इन दोनों की ही वफ़ात हो गयी। हुज़ूर सल्ल० को इन दोनों की वफ़ात का बड़ा मलाल हुआ।

कुफ़्फ़ारे मक्का अबूतालिब और हज़रत ख़दीजा का बड़ा ख़्याल रखते थे, लेकिन इन दोनों के इंतिक़ाल के बाद अब कुफ़्फ़ारे मक्का को न किसी का ख़्याल रहा, न डर।

उन्हों ने तहैया कर लिया कि जिस तरह भी हो सके, अब इस्लाम और मुसलमानों को मिटा देना चाहिए, चुनांचे वे मुसलमानों को सताने और परेशान करने और उन पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ने में बहुत ज़्यादा गुस्ताख़ और सरकश हो गये। हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों के साथ बड़ी बेरहमी से पेश आने लगे।

एक ओर यह सब कुछ हो रहा था और दूसरी तरफ़ हुज़ूर सल्ल० और आप के साथी इस्लाम की तब्लीग़ के काम में भी बराबर लगे रहे। हुज़ूर सल्ल० का हाल तो यह था कि जो भी आप के पास आता, उसे निहायत मुहब्बत से बिठाते, क़ुरआन की आयतें सुनाते। अरब के किसी इलाक़े से जब कोई क़बीला गुज़रता, तो वहां तशरीफ़ ले जाते और इस्लाम की तब्लीग़ करते।

एक दिन आप को मालूम हुआ कि यसरब (इस शहर का नाम बाद में मदीना पड़ गया) से कुछ लोग आये हैं। आप उन के पास तशरीफ़ ले गये। उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० का स्वागत किया।

आप ने उन से पूछा, तुम कौन हो ? कहां से आये हो ? किस क़बीले से ताल्लुक़ रखते हो ?

उन में से एक ने कहा, हम यसरब से आए हैं, क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ है हमारा।

शायद तुम्हारा क़बीला ही औस क़बीले से टकराता रहता है ? आप ने पूछा।

जी हां, एक ने जवाब दिया।

शायद तुम मक्का वालों के भरोसे पर आये हो ? आप ने फ़रमाया।

यही बात है, जवाब मिला।

तुम बेकार में किस की मदद लेने आ गये ? आप ने फ़रमाया, ख़ुदा से दुआ मांगो, उस ख़ुदा से जो पालनहार है, जिस ने दुनिया जहान को पैदा किया है, जो मौत और ज़िंदगी पर क़ुदरत रखता है, जिसे चाहता है, इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है, ज़लील करता है।

ये यसरब से आए हुए छः आदमी थे।

ये बुतपरस्त थे, कभी ख़ुदा का नाम न सुना था। अब ख़ुदा का नाम सुन कर हैरत में पड़ गये, इस में हैरत की क्या बात है ? ज़रा ग़ौर से सोचो कि पत्थर के बुत ख़ुदा नहीं हो सकते। उन को तुम ने और तुम्हारे बुज़ुर्गों ने अपने हाथों से बनाया। जिस जगह तुम उन्हें रख दोगे, रखे रहेंगे, हरगिज़ हरकत न कर सकेंगे।

खुदा तो वह है, जिस ने कायनात को पैदा किया है, दिन-रात बनाये हैं। वह हर चीज पर क़ुदरत रखता है, उस की इबादत करो, उस के सामने झुको और उसी को सज्दा करो।

उन में से एक आदमी ने अपने साथी से खिताब करते हुए कहा, जाबिर! तुम ने सुना, यह वही नबी है, जिस का जिक्र यसरब के यहूदी करते रहते हैं। क्यों न हम इन का मजहब क़ुबूल कर लें?

जाबिर ने कहा, यह हमारी खुशक़िस्मती है कि यह खुद हमारे पास आ गये। यसरबी लोगों से पहले हमें इस्लाम क़ुबूल कर लेना चाहिए।

चुनांचे वे छः के छः आदमी मुसलमान हो गये।

हुजूर सल्ल० को इस वाक़िए से बड़ी खुशी हुई। आप सब को साथ ले कर अपने मकान पर आए और जितना भी उस वक़्त क़ुरआन नाजिल हुआ था, वह उन्हें बताते हुए कहा, तुम यसरब चले जाओ और वहां इस्लाम की तब्लीग करो।

वे सब के सब उसी दिन यसरब चले गये।

चूंकि यह वफ़्द यसरब से मक्का वालों के पास मदद हासिल करने के इरादे से आया था और मक्का के सरदारों से मुलाक़ात किये बिना वापस चला गया, इस लिए मक्का वालों को बड़ा ताज्जुब हुआ। उन की समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ?

उन्हें यह मालूम न था कि वे मुसलमान हो कर चले गये, फिर भी उन्हें कुछ शक गुजरा।

उस वक़्त तक कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की बेरहमी और जुल्म काफ़ी बढ़ गया था। वे जब मौक़ा पाते, हुजूर सल्ल० को सताते, पर आप थे कि सब्र व शुक्र के साथ अपना काम करते रहे और मिशन को आगे बढ़ाते रहे।

एक दिन हुजूर सल्ल० तशरीफ़ ले जा रहे कि किसी जालिम ने पीछे से आ कर मुबारक सिर पर खाक डाल दी और भाग गया। आप उसी हालत में घर तशरीफ़ लाये। आप की साहबजादी हजरत फ़ातमा ने देखा, तो पानी ले कर आयीं और आप का सर धुलाने लगीं।

वह सर धुलाती जाती थीं और रोती जाती थीं।

हुजूर सल्ल० की नजर उठ गयी। आप ने हजरत फ़ातमा को तसल्ली दी और कहा, जाने पिदर! रोओ नहीं, खुदा तुम्हारे बाप को बचा ले गा।

फ़ातमा ने रोते हुए कहा, लेकिन ये कुफ़्फ़ार आप को सताते क्यों हैं?

आप ने कहा, फ़ातमा! उन की आंखें हैं, मगर देखते नहीं। यह नहीं

जानते कि मैं कौन हूं ? जिस दिन ये समझ जाएंगे, उसी दिन ज़ुल्म व सितम छोड़ देंगे। मेरी बेटी ! हमेशा हर दौर में हर नबी पर उस की क़ौम सख़्तियां करती रही है। तू रंज न किया कर, क्योंकि ये सख़्तियां कुछ दिनों की हैं।

हज़रत फ़ातमा ख़ामोश हो गयीं।

इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त आ गये।

यह वही ख़ब्बाब थे, जिन पर क़ुरैश ने बहुत सख़्तियां की थीं। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। आप ने सलाम का जवाब दिया।

वह हुज़ूर सल्ल० के पास बैठ गये और पूछा कि हुज़ूर सल्ल० ! मुबारक सर क्यों धोया जा रहा है ?

आप ने फ़रमाया, किसी ने मेरे सर पर ख़ाक डाल दी है, इसलिए धो रहा हूं।

उन्हों ने फ़रमाया, आप से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क़ुरैश सख़्तियां करने में हद से आगे बढ़ गये। आप इन बद-बख़्तों के लिए बद-दुआ क्यों नहीं करते ?

यह सुन कर आप का मुबारक चेहरा लाल हो गया।

आप ने फ़रमाया, ख़ब्बाब ! क्या अपनी ही क़ौम की सख़्तियों से तंग आकर बद-दुआ करूं कि अगले लोगों की तरह मेरी क़ौम भी बर्बाद हो जाये ? अल्लाह की क़सम ! मैं हरगिज़ बद-दुआ न करूंगा। यह ख़ुदा का काम है, ख़ुद पूरा करेगा, यहां तक कि एक ऊंट सवार सुनआ से हज़रे मौत तक निडर होकर सफ़र करेगा, उस को ख़ुदा के अलावा किसी का डर न होगा।

हज़रत ख़ब्बाब चुप हो गये।

आप ने मुबारक सर धो कर हज़रत फ़ातमा को गोद में ले लिया और तसल्ली दी और थोड़ी देर बैठ कर चले गये।

एक दिन हुज़ूर ख़ाना काबा तशरीफ़ ले गये। वहां बहुत से मुश्रिक व कुफ़्फ़ार बैठे थे। अबू जह्ल, उत्बा, अबूलहब और अबूसुफ़ियान भी मौजूद थे।

हुज़ूर सल्ल० को देख कर अबूजह्ल ने मज़ाक़ उड़ाने की ग़रज़ से कहा, ऐ अब्देमुनाफ़ ! ऐ हाशमियो ! देखो यह तुम्हारा नबी आ गया।

उत्बा ने खिल्ली उड़ाने के लिए कहा, हमें क्या इंकार है कोई नबी बन बैठे या कोई फ़रिश्ता बन जाए।

यह सुन कर तमाम मुश्रिक और काफ़िर ठट्ठा मार कर हंसने लगे।

हुजूर सल्ल० ने ये बातें सुन ली थीं। आप ने उत्बा को ख़िताब कर के कहा, उत्बा ! तू बड़ा सरकश हो गया है। तू ने कभी ख़ुदा और उस के रसूल सल्ल० की हिमायत न की। हमेशा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा मगर सुन ले कि तेरे हंसने का ज़माना ख़त्म होने के क़रीब है।

इस के बाद आप अबू जह्ल की तरफ़ मुख़ातब हुए। आप ने फ़रमाया अबूजह्ल ! तेरे लिए वह वक़्त आ रहा है कि तू हंसेगा कम और रोयेगा ज़्यादा।

फ़िर आप ने वलीद से फ़रमाया, वलीद ! तुझे अपनी बहादुरी पर नाज़ है, लेकिन शायद हज़रत उमर और हज़रत हमज़ा को भूल गया है। अल्लाह की क़सम ! ये दोनों शेर हैं, मुझ से लड़ाई की इजाज़त मांगते हैं। अगर मैं इजाज़त दूं तो वह मक्का के कूचा व बाज़ार को ख़ून से रंगीन कर दें। तू जो बढ़-चढ़ कर बातें बनाता है, डर कर घर में जा घुसेगा, शुक्र कर कि मैं उन्हें लड़ने की इजाज़त नहीं देता।

इस के बाद आप तमाम मुश्रिकों से मुख़ातब हुए और फ़रमाया कि ऐ अरब ! आज तुम जिस दीन का मज़ाक़ उड़ाते हो, वह वक़्त क़रीब आ गया है, तुम उसी दीन में दाख़िल होगे, ज़बरदस्ती नहीं, बल्कि अपनी ख़ुशी से।

हुजूर सल्ल० का जलाल भरा चेहरा देख कर तमाम अरब रौब में आ गये, गोया किसी को कुछ कहने या जवाब देने की हिम्मत न हो सकी।

हुजूर सल्ल० भी तवाफ़ कर के वापस तश्रीफ़ ले गये।

आप के तश्रीफ़ ले जाने के बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, लोगो ! अब एहतियात करो, वाक़ई हमज़ा और उमर को बहादुरी में किसी को कलाम नहीं है। अगर मुहम्मद सल्ल० ने इन दोनों को लड़ने की इजाज़त दे दी, तो मक्का में ख़ून की नदियां बह जाएंगी, सैकड़ों बच्चे यतीम और औरतें बेवा हो जाएंगी।

वलीद ने कहा, बेशक तुम सच कहते हो। हम को आगे से एहतियात करना चाहिए। मुसलमान जब तक ख़ामोश हैं, ख़ैर है, जब तंग आ कर मरने-मारने पर तैयार हो जाएंगे, तो लड़ाई की आग भड़क उठेगी।

अबूजह्ल ने कुछ जोश में आ कर कहा, यह डरना बेकार की बात है। मुसलमान हमारा क्या कर सकते हैं। हमज़ा हों या उमर, हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।

अबूलहब ने कहा, यह बात नहीं है। मुसलमान जिस दिन लड़ाई के लिए उठ खड़े हुए तो ग़ज़ब हो जाएगा। मुनासिब यही है कि उन पर

सख़्तियां न की जाएं, हां, जिस को पाओ, उसे ख़ामोशी से मार डालो, ऐसी ख़ामोशी से कि किसी को ख़बर न होने पाए।

कुछ देर तक और बातें करने के बाद तमाम कुफ़्फ़ार उठे और ख़ाना काबा से निकल कर चले।

तायफ़ वालों की गुस्ताख़ियां

मक्का के सरदार कुफ़्र व शिर्क में हद से ज्यादा बढ़े हुए थे। वे उन ग़रीबों को जिन के दिल इस्लाम की तरफ़ झुक गये थे, मुसलमान होने से रोकते थे और जो मुसलमान हो गये थे, उन्हें लालच देकर, धमकी दे कर अपने बाप-दादा के मज़हब में वापस लाने की कोशिश करते थे। मगर जो लोग मुसलमान हो गये थे, वे किसी डर या लालच से भी डगमगाने वाले न थे। मुसलमान होने के बाद तो वे और पक्के हो जाते थे।

इन हालात में हुज़ूर सल्ल० ने एक बार सोचा कि तायफ़ जाकर इस्लाम की तब्लीग़ की जाए।

तायफ़ मक्का से सिर्फ़ तीन मंज़िल यानी ६० कोस की दूरी पर आबाद एक शहर था। मक्के के मुक़ाबले में वहां की आब व हवा अच्छी थी। मक्के के ज्यादातर धनी-मानी लोग गर्मियों में तायफ़ चले जाते थे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ज़ैद को साथ लिया और नंगे पांव तायफ़ रवाना हुए।

हुज़ूर सल्ल० को यह उम्मीद न थी कि तायफ़ वाले ईमान लाएंगे, इस लिए कि तायफ़ वाले मक्के वालों से कम कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला न थे। वे लात के पुजारी थे। बीच शहर में एक बड़ा मंदिर था। उस मंदिर में लात का बुत रखा हुआ था, पर हुज़ूर सल्ल० को चूंकि ख़ुदा का यह हुक्म हो चुका था कि ख़ुदा का पैग़ाम ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचाओ, चाहे वह कहीं का हो चुनांचे आप तायफ़ वालों को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने के लिए रवाना हुए।

रास्ता बहुत कठिन था, गर्मी का मौसम था। सूरज निकलते ही हर चीज़ तपने लगती। हवा के गर्म गर्म झोंके सुबह से शुरू होते, तो दिन छिपे तक चलते रहते। ऐसी हालत में दिन में सफ़र करना बहुत मुश्किल होता था, पर हुज़ूर सल्ल० हर कठिनाई पर ग़ालिब आना चाहते थे।

चुनांचे आप पैदल दिन में सफ़र करते थे, रात को अगर कोई नख़लि-

स्तान मिल जाता तो खुले मैदान में क़ियाम फ़रमाते। एक दिन आप दोपहर की चिलचिलाती हुई धूप में रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे, हवा बन्द थी, गर्मी सख्त पड़ रही थी, हुज़ूर सल्ल० के माथे पर पसीने के क़तरे चमक रहे थे। पाक जिस्म पसीने से शराबोर था। रेत के सफ़ेद ज़र्रों की चमक आंखों को तक्लीफ़ दे रही थी। साथ में ज़ैद भी पसीने में डूबे हुए थे और गर्मी से परेशान थे।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किय, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं बहुत ज़्यादा थक गया हूं। गर्मी ने अलग परेशान कर रखा है और इजाज़त हो तो कहीं बैठकर थोड़ी देर आराम कर लें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे मालूम है कि तुम थक गये हो और प्यास ने तुम्हें बे-हाल कर दिया है, लेकिन यहां कोई ऐसी जगह नहीं नज़र आती, जहां बैठ कर हम ज़रा सस्ता लें। थोड़ी देर और चलें, शायद आगे कोई ऐसी जगह मिल जाए, जहा ठहर कर दम ले सकें।

चलिए, ज़ैद ने कहा और दोनों रवाना हुए।

कुछ दूर चल कर एक खुले मैदान में पहुंचे, जहां हर तरफ़ रेत ही रेत बिखरी हुई थी। अलबत्ता सामने कुछ फ़ासले पर खजूरों के पेड़ के साए में कुछ खेमे नज़र आए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़ैद ! देखो, वह सामने नख़्लिस्तान है। जल्द वहां पहुंच कर कुछ आराम करेंगे।

दोनों तेज़-तेज क़दमों से आगे बढ़े। जब नख़लिस्तान क़रीब रह गया, तो भेड़ों के रेवड़ चरते नज़र आए। कुछ लड़के और औरतें इन रेवड़ों की निगरानी कर रही थीं।

हुज़ूर सल्ल० उन रेवड़ों के पास से निकलते चले गये और नख़लिस्तान में दाख़िल हुए।

नख़लिस्तान क्या था, कुछ खजूरों के पेड़ खड़े थे। एक ओर एक कुंवा था। पेड़ों के नीचे कुछ खेमे लगे हुए थे। खेमों से कुछ दूरी पर ऊंट बैठे जुगाली कर रहे थे। कुछ मर्द ऊंटों के पास बैठे ऊन साफ़ कर रहे थे। औरतें खेमों के सामने बैठी काम-काज कर रही थीं।

इन दोनों को देखते ही तमाम मर्द खड़े हो गए और सब आप के पास आ गये।

एक आदमी बोला, ऐ दोनों मुसाफ़िर ! अर्से से बनू बक्र क़बीले में कोई मुसाफ़िर न आया था। हम सब आप दोनों का भरपूर स्वागत करते हैं। आप हमारे मेहमान बन जाइए।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० और ज़ैद पसीने से भीग रहे थे, इस लिए वह अरब इन दोनों को लेकर ख़ेमे में पहुंचा, ख़ेमे के अन्दर कम्बल का फ़र्श बिछा था।

दोनों फ़र्श पर बैठ गये। काठ के प्याले में दूध आया। दोनों ने दूध पी कर अपनी-अपनी प्यास बुझायी। अरबों की ख़ूबी शुरू ही से है कि वे मेहमानों की ख़ातिर ख़ूब करते हैं। चुनांचे इन दोनों की ख़ूब ख़ातिर हुई।

जब हुज़ूर सल्ल० ने कुछ देर आराम कर लिया, तो आप ने क़बीले के लोगों को जमा कर के फ़रमाया—

ऐ बनू बक्र क़बीले के ग़ैरतमंद अरबो! तुम ने मुझे पहचाना कि मैं कौन हूं ?

कुछ लोगों ने कहा, हम ने आप को कभी नहीं देखा, इसलिए हम आप को नहीं जानते।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं मुहम्मद हूं, ख़ुदा का रसूल। ख़ुदा के बंदों को हिदायत का रास्ता बताने पर मुक़र्रर हुआ हूं।

एक आदमी बोला, हम समझ गये कि आप हमारे माबूदों की बुराइयां करते हैं और हमारे मज़हब की तौहीन करते हैं। मालूम होता है कि मक्के वालों ने आप को निकाल दिया है, इस लिए आप का जब तक जी चाहे, हमारे यहां मेहमान की हैसियत से रहें पर हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ भी न कहें। हम आप की ख़िदमत करेंगे और जब तक बनू बक्र का एक आदमी ज़िंदा है, आप को आप के दुश्मनों से बचायेगा, पर यह गवारा न करेंगे कि आप हमारे माबूदों को बुरा-भला कहें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं जो कुछ कहता हूं, वह सुन लो।

एक बूढ़े आदमी ने कहा, नहीं, हम नहीं सुनेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने बहुत चाहा कि वे लोग आप की बातें ग़ौर और तवज्जोह से सुनें, पर कोई सुनने पर तैयार न हुआ।

मजबूर होकर हुज़ूर सल्ल० उठे, ज़ैद को साथ लिया और तायफ़ की तरफ़ चल दिये। क़बीला बनू बक्र के लोगों ने बहुत कहा कि आप हमारे यहां मेहमान की हैसियत से कुछ दिन क़ियाम करें, लेकिन आपने कह दिया कि जब तुम लोग मेरी बात सुनने से इंकार करते हो, तो मैं कैसे तुम्हारे यहां क़ियाम कर सकूंगा।

आप ने दो दिन रास्ते में क़ियाम किया और तीसरे दिन दोपहर से पहले ही तायफ़ पहुंच गये।

तायफ़ बड़ा शहर था। बड़े मन्दिर का कलश मीलों से नज़र आता

था। इस शहर में क़बीला बनी सक़ीफ़ की हुकूमत थी। बनू सक़ीफ़ के सरदार तीन भाई अब्द या लैल, मसऊद और हबीब थे, तीनों बड़े घमंडी और सरकश थे। अपने से ज़्यादा किसी को शरीफ़ समझते ही नहीं थे।

जिस दिन हुज़ूर सल्ल० वहां पहुंचे, उस दिन तमाम तायफ़ वाले लात के बड़े मन्दिर में बड़े बुत की पूजा के लिए जमा हो रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ज़ैद के साथ मंदिर में आ गये।

आपने देखा कि मन्दिर के बीच में एक बड़ा बुत, जो तेरह फुट से भी ज़्यादा ऊंचा था, एक बड़े और ऊंचे चबूतरे पर गड़ा हुआ था, बहुत बड़ा और भयानक है। तमाम लोग उस के चारों तरफ़ सज्दे में पड़े थे। पुजारी ज़ोर-ज़ोर से घंटे बजा रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० बुतपरस्ती के इस मंज़र को देख कर बहुत कुढ़े। आप ने धीरे से कहा—

काश! ये लोग अपने हक़ीक़ी माबूद को पहचानें, उस के सामने झुकें और उस की इबादत करें।

कुछ देर के बाद पूजा ख़त्म हो गयी। लोग उठ-उठ कर मन्दिर से निकल कर अपने घरों की तरफ़ रवाना हुए। सब के बाद तायफ़ के तीनों सरदार चले। इन के आगे-आगे कुछ अरब सवार घोड़ों पर बैठे, इन के पीछे तीनों रईस चले और उन के पीछे ढाई सौ सवारों का दस्ता चला।

हुज़ूर सल्ल० एक तरफ़ खड़े होकर तायफ़ के रईसों की सवारी का जुलूस देखते रहे। जब वे दूर निकल गये, तो आप भी ज़ैद के साथ मन्दिर से निकले और ज़ैद से बोले—

ज़ैद! ये तीनों सरदार मालूम होते हैं।

आप का ख़्याल सही लगता है, हुज़ूर! ज़ैद ने कहा।

अगर ये सरदार मेरी बात मान लें, तो पूरा तायफ़ मुसलमान हो जाए। आप ने फ़रमाया, आओ, इन के महल पर चलें।

ज़ैद और हुज़ूर सल्ल० इन सरदारों के महल पर प्रहुंच गये। सब से पहले अब्द या लैल का महल था। हुज़ूर सल्ल० ने उस के पास चलने का इरादा किया। जब आप उस के दरवाज़े पर पहुंचे, तो चार अरबों को नंगी तलवार लिए पहरे पर खड़ा देखा। पहरे वालों ने उन को दूर से टोका।

हुज़ूर सल्ल० ने क़रीब आ कर कहा, अपने सरदारों से कहो, मुहम्मद मक्का से आया है और आप से कुछ कहना चाहता है।

एक पहरे वाला महल के अन्दर गया और थोड़ी ही देर में वापस आ कर बोला, चलिए, हमारे मालिक ने आप को तलब किया है।

हुज़ूर सल्ल० उस के साथ चले, ज़ैद भी चले। दोनों महल में दाखिल हुए। उस कमरे में पहुंचे, जिस में अब्द या लैल और उस के दोनों भाई मसऊद और हबीब बैठे खाना खा रहे थे। हुज़ूर सल्ल० को देखते ही तीनों भाई हैरान भी हुए और मरऊब भी।

तीनों ने एक साथ हुज़ूर सल्ल० को दस्तरखान पर आने और खाने के लिए कहा।

हुज़ूर सल्ल० एक ओर बैठ गये और फ़रमाया, ऐ तायफ़ के सरदारो! मैं आप की इस मेहरबानी का शुक्रिया अदा करता हूं। मैं आप की खिदमत में इसलिए हाज़िर हुआ हूं कि आप के सामने वे बातें बयान करूं, जिनको आप के कानों ने आज तक न सुना होगा।

तीनों ने हैरत से आप को देखा और थोड़ी देर बाद अब्द या लैल ने कहा, वह क्या बात है, मेरे भाई?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अरब के सरदारो! मैं और आप अरब में रहते हैं। इस अरब को, दूसरे देशों को और पूरी कायनात को, कायनात की हर चीज़ को उस खुदा ने पैदा किया है, जिस की खुदाई में कोई शरीक नहीं, जो हवाएं भेजता है, बादल लाता है, पानी बरसाता है, फल और फूल उगाता है, बाग़ों को हरा-भरा करता है। वह हर जानदार को खिलाता है, पिलाता है। मौत और ज़िंदगी, बीमारी और सेहत भी उसी के हाथ में है। वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, इस लिए उसी की इबादत और बन्दगी होनी चाहिए।

खुदा की इस तारीफ़ को सुन कर तीनों सरदारों को गुस्सा आ रहा था और उन के चेहरे मारे गुस्से के लाल हो रहे थे।

अब्द या लैल बर्दाश्त न कर सका, बात काटते हुए बोला, खुदा? क्या हम खुदा को पूजें? और अपने माबूदों को छोड़ दें, उन माबूदों को, जिन को हम और हमारे बाप-दादा पूजते चले आ रहे हैं। लात की क़सम! यह कभी न होगा।

मसऊद भी बिगड़ कर बोला, तुम मक्का से इतनी दूर सिर्फ़ यह कहने आये हो। यक़ीनन तुम्हारे दिमाग़ में कोई खराबी पैदा हो गयी है।

हबीब ने मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में कहा, तुम ऐसी वाहियात तब्लीग़ करते फिरते हो, तुम कौन हो?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं खुदा का रसूल हूं। मुझ पर खुदावन्द करीम ने अपना कलामे पाक नाज़िल फ़रमाया है।

अब्द या लैल यह सुन कर खूब हंसा और कहा, आप गोया रसूल हैं।

अगर तुम को खुदा अपना रसूल बनाता और खुदा ऐसा ही होता, जैसा कि तुम कहते हो कि वह हर चीज पर क़ुदरत रखता है, तो तुम्हें यों ही पैदल जूतियां चटखाने की जरूरत न होती।

मसऊद ने कहा, खुदा को भी कोई और आदमी न मिला, एक ग़रीब और अंपढ़ को रसूल बना दिया, क्या तुम अंपढ़ नहीं हो ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बेशक मैं पढ़ना नहीं जानता हूं। उम्मी हूं, लेकिन यह खुदा की मर्जी है कि उस ने मुझे अपना रसूल बनाया। मेरे रसूल होने और खुदा के एक होने का इन्कार न करो।

हबीब बिगड़ कर बोला, सुनो ! अगर वाक़ई तुम खुदा के रसूल हो, तो तुम्हारी बात रद्द करना खतरनाक है और अगर तुम झूठ बोलते हो, तो झूठे आदमी से कलाम करना हम पसन्द नहीं करते।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे झूठ बोलने से क्या फ़ायदा ? मैं आप से किसी चीज का तलबगार नहीं हूं। मेरी निजी कोई ग़रज नहीं। मैं खुदा का पैग़ाम उस के बन्दों तक पहुंचाने पर लगाया गया हूं। तुम अक़्लमंद हो, सोचो कि पत्थरों के बुत भी खुदा हो सकते हैं ?

अब्द या लैल ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, तो हम ख्याली खुदा की पूजा क्यों करें ? आप तशरीफ़ ले जाइए। अगर पूरा अरब आप का साथ दे, तब भी हम आप के ख्याल और अक़ीदे का साथ नहीं दे सकते।

हुज़ूर सल्ल० ने कुछ और कहना चाहा।

मसऊद बिगड़ गया, बस कुछ न फ़रमाइए, खैरियत चाहते हैं, तो चुप-चाप यहां से चले जाइए।

हुज़ूर सल्ल० ग़म से लदे उठे। महल से बाहर आए।

आप के पीछे ही तीनों रईस भी आए।

महल के सामने जो लोग जा रहे थे, अब्द या लैल ने उन को रोकते हुए कहा, यह देखो, मक्के से दो आदमी आए हैं, हमारे माबूदों को बुरा कहते हैं, जरा इनकी खबर तो लो…।

अरबों को भड़काने के लिए सिर्फ़ इतना कह देना ही काफ़ी था। तमाम लोग हुज़ूर सल्ल० के पीछे लग गये।

उन्हों ने शोर-हंगामा कर के बहुत से आदमियों को जमा किया और हुज़ूर सल्ल० की पिंडलियों पर कंकर-पत्थर मारना शुरू कर दिये।

जैद इस बात की कोशिश में लगे हुए थे कि पत्थर हुज़ूर सल्ल० के न लगें, अपने हाथ और पैर कंकर-पत्थर के सामने कर देते थे। इस के बावजूद हुज़ूर की पिंडलियां लहूलुहान हो गईं। खून इतना बहा कि आप की

जूतियां खून से भर गयीं।

हज़रत ज़ैद बचाने में ज़ख़्मी हुए।

आप ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इन बदबख़्तों के लिए बद-दुआ कीजिए।

आप ने फ़रमाया, ज़ैद ! मैं अपनी क़ौम को बद-दुआ देने के लिए रसूल नहीं बनाया गया हूं।

हुज़ूर सल्ल० निढाल हो गये थे, इसलिए ज़ैद के कंधे पर हाथ रख कर चल रहे थे।

तायफ़ के बदमाश हुज़ूर सल्ल० को गालियां देते, बुरा-भला कहते, ढेले मारते हुज़ूर सल्ल० के पीछे-पीछे चले आ रहे थे, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० लड़खड़ाते हुए और हज़रत ज़ैद का सहारा लेते हुए तायफ़ से तीन मील बाहर निकल आए, तब जा कर उन शैतानों ने पीछा छोड़ा और वे वापस लौटे।

हुज़ूर सल्ल० खजूरों के बाग़ के क़रीब पेड़ों के साए में बैठ गये, चूंकि आप बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी हो गये थे और ज़ख़्मों से खून निकल रहा था, इसलिए निढाल हो कर एक खजूर के सहारे लेट से गए।

हज़रत ज़ैद रज़ि० आप के पास बैठ गये। उन्हों ने अपनी पगड़ी की धज्जियां की और पिंडलियों से खून पोंछकर ज़ख़्मों को देखा। कुछ ज़ख़्म मामूली थे और कुछ गहरे, उन्हों ने ज़ख़्मों पर पट्टियां कसनी शुरू कीं।

मज़्लूम पैग़म्बर

हुज़ूर सल्ल० पर और आप के साथियों पर मक्के में जो ज़ुल्म हो रहे थे, वह लिखा जा चुका। आप कुफ़्फ़ारे मक्का से तंग आ कर तायफ़ तशरीफ़ ले गये। आप का ख़्याल था कि शायद वहां लोग इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे, लेकिन तायफ़ के लोग मक्का वालों से भी ज़्यादा संगदिल साबित हुए।

जिस बाग़ में हुज़ूर सल्ल० और हज़रत ज़ैद ने पनाह ली थी, वह उत्बा बिन रबीआ का था, वही उत्बा जो मक्के का रहने वाला और इस्लाम और मुसलमानों का ज़बरदस्त दुश्मन था। इत्तिफ़ाक़ से वह उस वक़्त बाग़ में मौजूद था और उस के साथ उस का ग़ुलाम अदास भी था। अदास ईसाई था। उत्बा ने हुज़ूर सल्ल० को बाग़ में लेटे देखा, तो उस ने रहम खा कर

अपने ग़ुलाम अदास के हाथ एक रिकाबी में अंगूर के गुच्छे रख कर आप के पास भिजवा दिये।

जब अदास आप के सामने आया तो आप ने पूछा, ये अंगूर किस ने भेजे हैं?

मेरे आक़ा उत्बा ने, अदास ने जवाब दिया।

क्या उत्बा बाग़ में मौजूद हैं?

जी हां, मौजूद हैं। अदास ने जवाब दिया, उन्हों ने तायफ़ के बदमाशों को आप के पीछे आते देखा था।

तुम्हारा नाम क्या है? आप ने पूछा।

मेरा नाम अदास है।

क्या तुम ईसाई हो?

हां, मैं ईसाई हूं।

कहां के रहने वाले हो?

नैनवा का रहने वाला हूं।

क्या उस नैनवा का, जहां हज़रत यूनुस रसूल बना कर भेजे गये थे?

अदास ने हैरत से हुज़ूर सल्ल० को देखा, कई मिनट ताज्जुब के साथ आप को देखता रहा। जब हैरत कम हुई, तो बोला, आप को रसूल यूनुस का इल्म कैसे हुआ? उन का हाल तो कोई भी नहीं जानता?

आप ने फ़रमाया, अदास! मेरा नाम मुहम्मद है। मैं भी ख़ुदा का रसूल हूं। तमाम नबियों का नाम जानता हूं, न सिर्फ़ नाम बल्कि उन के हालात भी जानता हूं।

अदास तुरन्त सामने झुक गया। उस ने आप के हाथ को बोसा दिया और खड़ा हो कर बोला, बेशक, आप रसूल मालूम होते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने उस से फ़रमाया, तुम मुसलमान हो जाओ।

अदास ने कहा, हुज़ूर! मज़हब आसानी से नहीं बदला जा सकता, इस लिए ग़ौर करने की मोहलत दीजिए।

अच्छा ग़ौर कर लो, आप ने कहा, जब ग़ौर कर चुको और मुसलमान होना चाहो, तो मेरे पास चले आना।

यह कह कर हुज़ूर सल्ल० ने कुछ अंगूर खाये और बाक़ी हज़रत ज़ैद को दे दिये।

ज़ैद ने खा कर प्लेट अदास को दे दी।

अदास वापस उत्बा के पास पहुंचा।

उत्बा दूर से खड़ा अदास की हरकतें देख रहा था। उस ने अदास को

हुज़ूर सल्ल० का हाथ चूमते देखा था। जब वह आया, तो उस ने कहा, अदास ! यह आदमी जादूगर है इस की बातों में न आना।

अदास ने कहा, नहीं मेरे आक़ा ! वह जादूगर नहीं हैं, नबी हैं, तुम नहीं जानते कि हज़रत यूनुस कौन थे ? कहां थे ? मगर वह जानते हैं और खूब जानते हैं।

उत्बा ने पूछा कि उन्हों ने तुझ से क्या कहा था ?

अदास ने कहा, उन्हों ने कहा था कि तुम मुसलमान हो जाओ। मैं ने कहा कि मुझे ग़ौर करने की मोहलत दीजिए।

उत्बा ने झट कहा, अदास ! तुम मुसलमान न होना। इस्लाम से तो तेरा मज़हब ही अच्छा है।

अदास ने कहा, मेरे हुज़ूर ! मैं ईसाई हूं और हमारी किताबों में लिखा है कि तहामा की धरती पर एक नबी पैदा होगा। मेरा ख्याल है कि यह वही नबी हैं।

उत्बा ने बिगड़ते हुए कहा, वाहियात बात न करो। नबी ऐसे ही होते हैं, जिन का न कोई यार व मददगार हो, न वे हुकूमत वाले हों, न दौलतमंद।

अदास ने कहा, मेरे आक़ा ! हर नबी ऐसी ही हालत में हुआ है, अलावा दो चार नबियों के, जो दौलतमंद भी थे और बादशाह भी। नबियों के साथ अल्लाह की मदद होती है, इसलिए उन्हें किसी क़िस्म का डर नहीं होता।

उत्बा बिगड़ गया, सब बकवास है। इस के शिकार न हो जाना। अपना काम करो। देखो, मेरे घोड़े पर धूप आ गयी है। इसे साए में बांध दो।

अदास चला गया।

उत्बा अपने बाग़ में बने मकान में चला गया।

थोड़ी देर आराम करने के बाद हुज़ूर सल्ल० भी उठे और किसी तरह ज़ख्मों की तक्लीफ़ के बावजूद मक्का की तरफ़ चल दिये।

रास्ते में नख़ला पड़ा। नख़ला एक छोटा-सा गांव था। उस के चारों ओर कुछ खजूर के बाग़ थे। हुज़ूर सल्ल० एक बाग़ में आराम करने के लिए ठहर गये। रात हो चुकी थी। ज़ैद पानी लाये। दोनों ने वुज़ू किया और इशा की नमाज़ पढ़ कर दोनों बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने लगे। उस वक़्त आप पर वह्य नाज़िल हुई—

ऐ मुहम्मद ! कह दो कि मुझ पर वह्य नाज़िल की गई है कि जिन्नों

की एक जमाअत ने सुन कर कहा कि हम ने अजब क़ुरआन सुना है, जो भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता है। हम उस पर ईमान लाये, और हम रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न करेंगे। हमारे रब की इज़्ज़त बहुत बुलन्द है, न उस की बीवी है, न औलाद और हमारे बेवक़ूफ़ लोग अल्लाह पर बुहतान बांधते हैं और हम समझते कि जिन्न और इन्सान अल्लाह पर बोहतान न बांधते होंगे।

यह सूरः जिन्न थी।

अभी हुज़ूर सल्ल० ने इतनी तिलावत की थी कि ज़ैद ताज्जुब में पड़ कर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखने लगे। इस सूरः में जिन्नों का ज़िक्र था।

ज़ैद हैरान थे कि जिन्नों ने कब कलामे इलाही सुना।

इसी बीच सात आदमी सामने से इस तरह गुज़रे, जैसे खजूर के पेड़ से निकले हों।

ज़ैद उन्हें देख कर हैरान हुए। वह कुछ डरे।

हुज़ूर सल्ल० इन आने वालों को देख कर मुस्कराये।

आने वालों ने हुज़ूर सल्ल० को देख कर सलाम किया। आप ने उन्हें सलाम का जवाब देकर बैठने का इशारा किया।

वे एक तरफ़ बैठ गये।

आप ने फ़रमाया, मरहबा, ऐ जिन्नो!

उन में से एक आदमी बोला, ऐ खुदा के रसूल सल्ल०! आप ने सच कहा। हम सातों जिन्न हैं। नसीबैन के रहने वाले हैं। हम आप के खुदा पर ईमान लाये हैं। आप हम को मुसलमान कर लीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सईद रूहें खुद-ब-खुद इस्लाम की ओर खिचती हैं। तुम खुदा की वह मख़्लूक़ हो, जो आग से पैदा की गयी है। मिट्टी से बना हुआ इंसान तुमको उस वक़्त तक नहीं देख सकता, जबतक तुम उस के सामने आ कर उस की शक्ल न अपना लो। ऐ खुदा की अजीब मख़्लूक़! कलिमा पढ़ो।

सातों जिन्नों ने कलिमा पढ़कर इस्लाम क़ुबूल कर लिया। फिर उन्हों ने वायदा किया कि हम नसीबैन में जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें कुछ हिदायत की। थोड़ी देर के बाद वे रुख़सत हो कर चले गये।

दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल० ने फिर अपना सफ़र शुरू किया, यहां तक कि मक्का के क़रीब पहुंच गये। हुज़ूर सल्ल० ने ज़रूरत समझी कि मक्के में दाखिल होने से पहले मुतइम बिन अदी की हिमायत हासिल की जाए,

ताकि किसी क़िस्म का झगड़ा न मक्के में खड़ा हो जाए।

ज़ैद मुतइम बिन अदी से मिलने जाने लगे, तो पूछा, हुज़ूर सल्ल० ! मेरे वापस आने तक आप कहां ठहरेंगे ?

मैं ग़ारे हिरा में ठहर जाऊंगा।

ज़ैद हुज़ूर से विदा हो कर मक्का की ओर चले और हुज़ूर सल्ल० पहाड़ी पर चढ़ कर ग़ारे हिरा में दाख़िल हुए। देर तक आप वहां बैठे रहे, कई घंटे बाद हज़रत ज़ैद वापस आए। और बोले—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुतइम ने निहायत ख़ुशी से आप की हिमायत का ऐलान कर दिया है। वह अपने दो बेटों के साथ आया है। पहाड़ी से नीचे खड़ा है, तश्रीफ़ ले चलिए।

हुज़ूर सल्ल० उठे और ज़ैद के साथ पहाड़ी से नीचे उतर आए। यहां मुत्इम और उस के दो बेटे ऊंटों पर सवार खड़े थे।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० को देखते ही सलाम किया।

आप ने सलाम का जवाब देते हुए कहा, मुत्इम ! मैं तुम्हारी मदद का शुक्रगुज़ार हूं।

मुत्इम ने कहा, मुहम्मद (सल्ल०) ! मैं अरब हूं, आप ने हिमायत तलब की, मेरी ग़ैरत के लिए यह चैलेंज था। मैं ने इसे क़ुबूल किया और आप के पास खुद भागा चला आया। अब किसी की मजाल नहीं कि आप की तरफ़ आंख उठा कर देख सके।

हुज़ूर सल्ल० और ज़ैद को साथ ले कर मुत्इम शहर की तरफ़ चला। वहां पहुचने के बाद उस ने एलान किया, मक्के वालो ! सुन लो, मैं ने मुहम्मद को पनाह दी है। अगर कोई उन के खिलाफ़ एक लफ़्ज़ भी कहेगा, तो हम उस की ज़ुबान काट लेंगे।

अबू जह्ल ने सुना कि मुत्इम ने हुज़ूर सल्ल० को पनाह दी है, तो वह एकदम भागा हुआ आया और उस ने आते ही कहा—

मुत्इम क्या बात है ? क्या वाक़ई तुम ने मुहम्मद सल्ल० को पनाह दी है ?

हां, मैं ने उन्हें पनाह दी है।

क्या तू हमारे खिलाफ़ हो गया है ? अबू जह्ल ने पूछा।

नहीं।

फिर मुहम्मद की हिमायत क्यों करता है ?

इस लिए कि उन्हों ने मुझ से हिमायत तलब की। मेरी ग़ैरत ने यह गवारा न किया कि मैं इस मांग को ठुकराऊं। मैं ने मजबूरन उसे क़ुबूल

कर लिया।

अगर यह बात है तो कुछ अंदेशा नहीं। मैं तो यही समझता था कि शायद तुम भी मुसलमान हो गये हो।

मैं अपने बाप-दादा का मज़हब नहीं छोड़ सकता।

अबू जह्ल चला गया।

फिर मुत्इम हुज़ूर सल्ल० को साथ लिए-हुए, आप के घर गया। इस तरह पूरे एक महीने के बाद आप अपने घर में दाखिल हुए।

अरब का मशहूर जादूगर

हुज़ूर सल्ल० पर जिस अन्दाज़ की सख्तियां हुई थीं, वे अपनी नज़ीर आप हैं।

अगरचे उस वक़्त तक बहुत से लोग मुसलमान हो चुके थे, लेकिन इन मुसलमानों में इतनी ताक़त न थी कि हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त कर सकते अल-बत्ता उन में ईमान की ताक़त इतनी भर उठी थी कि अगर हुज़ूर सल्ल० उन्हें लड़ने की इजाज़त दे देते, तो वे अपनी कमज़ोरी के बावजूद मुक़ाबला सख्त करते और दुश्मनों के छक्के छुड़ा देते।

जब हुज़ूर सल्ल० तायफ़ से तशरीफ़ लाये तो दुश्मनों ने पहले से भी ज्यादा सख्तियां शुरू कर दीं। पहले गुण्डे-बदमाश धूल फेंकते, कीचड़ उछालते और पत्थर मारते थे, अब अपने को शरीफ़ कहने वाले भी यही हरकत करने लगे थे।

हुज़ूर जहां जाते और जिस रास्ते से गुज़रते और जिस जगह ठहरे होते, अबू लहब साये की तरह साथ लगा रहता। अगर हुज़ूर सल्ल० किसी से बातें करते, तो अबू लहब पहले बातें शुरू कर देता।

अरब में बहुत सी जगहों पर मेले लगते। इन मेलों में दूर-दूर के क़बीले आते, घोड़दौड़ होती, दंगल होते, शायरी में मुक़ाबला होता और हफ़्तों मेले लगे रहते। हुज़ूर सल्ल० इन मेलों में जा कर तब्लीग़े इस्लाम करते।

उकाज़ अरबों का एक मशहूर इल्मी और क़ौमी दंगल था और शानदार मेला भी। सौ-सौ कोस से लोग आकर इस मेले में शरीक होते। अरब के मशहूर पहलवान, लड़ाकू, शायर, काहिन व आराफ़ सभी आते थे। हर-फ़न का मुक़ाबला ज़ोरदार होता था।

हुज़ूर सल्ल० भी इस मेले में तशरीफ़ ले गये। क़ुरैश के तमाम बड़े लोग थे ही।

एक दिन आप एक आम रास्ते पर खड़े हो गये और लोगों को जमा कर के तक़रीर करने लगे। अगरचे हुज़ूर सल्ल० जानते थे कि यह कुफ़्फ़ार का मज्मा है। हर आदमी बाप-दादा के मज़हब का दीवाना है और बुतों का शैदाई है। ऐसे मज्मे में बुतपरस्ती के खिलाफ़ कुछ कहना एक भारी खतरा मोल लेना है।

आप तक़रीर कर रहे थे और लोग हैरत और शौक़ से सुन रहे थे।

अबू लहब पास ही खड़ा था। वह मज्मे के शौक़ को देख कर परेशान हुआ, सोचने लगा, कहीं मुहम्मद (सल्ल०) के जादू में लोग आ न जाएं। फ़ौरन बोल उठा—

ऐ अरब भाइयो ! यह मेरा भतीजा है। अपने बाप-दादा के मज़हब से फिर गया है। ख्याली खुदा की पूजा की बात करता है, झूठी बातें कहता है, इसलिए इस की बातें न सुनो। (नऊज़ुबिल्लाह)

अबू लहब को क़रीब-क़रीब तमाम लोग जानते थे। ठठ्ठा मार कर हंसने लगे और एक-एक कर खिसकने लगे।

अबू लहब भी अपने खेमे की तरफ़ बढ़ा, कुछ ही क़दम चला था कि एक आदमी ने उस के कंधे पर हाथ मारा।

उस ने पलट कर देखा तो एक शान वाले आदमी को अपने सामने पाया। यह अधेड़ उम्र का अरब था। सर और दाढ़ी के बाल खिचड़ी हो रहे थे। पूरा अरबी लिबास पहने हुए था। मोटे-मोटे दानों की माला गले में पड़ी हुई थी। उस ने अबू लहब से खिताब करते हुए कहा, ऐ सरदार ! आप शायद अपने भतीजे से बेज़ार हैं ?

अबू लहब ने कहा, तुम सही कहते हो, मेरे भाई ! मेरे भतीजे मुहम्मद ने हमारे दीन में, हमारे क़बीले और शहर में तफ़रक़ा डाल रखा है और मेरी क़ौम इस से तंग आ गयी है।

अरब ने कहा, शायद आप ने मुझे नहीं पहचाना ?

अबू लहब ने कहा, आप को कौन नहीं जानता ? आप अरब के मशहूर जादूगर यमन के बाशिंदे हैं, मशहूर क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं, आप का नाम 'ज़माद' है।

अरब ने कहा, आप ने खूब पहचाना, मेरा नाम ज़माद अज़दी है। वाक़ई मैं अरब का जाना-पहचाना जादूगर हूं। तुम्हारे भतीजे पर किसी ने जादू कर दिया है। मैं जादू के ज़ोर से उन्हें अच्छा कर सकता हूं।

अबू लहब ने कहा, अगर तू मेरे भतीजे को अच्छा कर दे और वह नये मज़हब की तब्लीग़ छोड़ दे, तो तुझे सौ ऊंट और सौ अशरफ़ियां दूंगा।

जमाद ने हंस कर कहा, यह तो बहुत बड़ा इनाम है। लात व उज़्ज़ा की क़सम ! मैं इन का इलाज करूंगा। जब इन्हें आराम हो जाएगा, आप को अपना वायदा पूरा करना होगा।

अबू लहब ने कहा, ज़रूर पूरा करूंगा। जमाद ! मेरे अलावा अबू जह्ल, वलीद और अबू सुफ़ियान, उत्बा और दूसरे लोग भी तुझे इनाम देंगे।

अच्छा ठहरो, जमाद ने कहा, मैं तुम को अपनी जादूगरी दिखाता हूं।

अबू लहब ने कहा, तंहा मुझे दिखाने से कुछ फ़ायदा नहीं। मेरे ख़ेमे पर चलो। वहां मैं क़ुरैश के सरदारों को बुलाऊंगा। सब के सामने दिखाना।

जमाद राज़ी हो गया।

दोनों चल कर अबू लहब के ख़ेमे पर पहुंचे। अबू लहब ने सब को बुलवा लिया और थोड़ी देर में सभी आ गये। ख़ेमे के सामने सभी मैदान में बैठ गये।

चूंकि यह मैदान बाज़ार के सिरे पर था, इस लिए सैकड़ों आदमी भी इधर-उधर से आ कर जमा होने लगे। जब ख़ूब भीड़ हो गयी तब अबू लहब ने जमाद से कहा—

अब दिखाओ, तुम क्या दिखाना चाहते हो ?

जमाद बीच में आ कर खड़ा हो गया।

उस ने चारों तरफ़ से लोगों को हटा कर बीच में एक अण्डाकार दायरा खींचा और उस में खड़ा हो कर बोला—

ऐ अरब भाइयो ! तुम ने मेरा नाम ज़रूर सुना होगा। दुनिया मुझे अरब का जादूगर कहती है। तमाम आराफ़ और काहिन मुझे अपना उस्ताद मानते हैं। मैं यह भी बता दूं कि मैं सिर्फ़ जादूगर नहीं हूं, बल्कि अरब का मशहूर शायर भी हूं। तुम ने मेरा नाम ज़रूर सुना होगा, लेकिन मेरे करतब न देखे होंगे। आज मैं आप को जादू के करिश्मे दिखाता हूं।

देखो, आसमान साफ़ है, सूरज चमक रहा है। हम सब धूप में बैठे हैं, गर्मी तेज़ पड़ रही है। उठ ऐ बारिश के बादल ! उठ ऐ काली घटा, उठ और इस मैदान में छा जा।

लोग आसमान की ओर देखने लगे। आसमान साफ़ था, सूरज तेज़ी से चमक रहा था, हवा बन्द थी, गर्मी ख़ूब पड़ रही थी। लोगों को अपने सरों

पर एक काली बिन्दी नज़र आयी। जमाद ऊपर देख रहा था। उस की आंखें चमक रही थीं। मुंह में कफ़ भरा हुआ था। वह अपने हाथ की उंगलियों से इशारा कर रहा था।

लोग बिन्दी को देख रहे थे, बिन्दी बढ़ने लगी, यहां तक कि बढ़ते-बढ़ते काली बदली का टुकड़ा बन कर रह गयी। हवा चलने लगी और लोगों ने हैरत से देखा कि बदली के टुकड़े ने बढ़ कर सारे मैदान को ढक लिया। सूरज ग़ायब हो गया।

जमाद ने कहा, बरस और खूब बरस इस तरह कि रेत पर पानी की बूंद न पड़े।

तुरन्त नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ने लगीं, इस तरह कि ऊपर से बूंदे पड़तीं, पर नीचे पानी का एक क़तरा न गिरता था।

लोग जादू का यह करिश्मा देख कर हैरान रह गये।

जमाद ने कहा, गुज़र ऐ जिनों के लश्कर! पूरी शान के साथ अरबों को हैरान करता हुआ चल! जल्दी चल!

इतने में पूर्वी सिरे से काला सा परदा उठा। उस परदे में से मिटी-मिटी सी शक्लें दिखायी दीं। मैदान की तरफ़ बढ़ीं, जब बीच में आयीं, तो लोगों ने देखा, अजीब व ग़रीब होलनाक शक्लें और बहुशतनाक सूरतें थीं। फ़िज़ा में तैरती हुई, हवा को चीरती हुई बदली से नीचे, ज़मीन से ऊपर लोगों को घूरती हुई चली आ रही थी और पच्छिमी किनारे पर पहुंच कर ग़ायब हो जाती थीं।

लोग हैरत के साथ आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे।

फिर बदली फटी, बादल उड़े और सूरज चमकने लगा। गर्मी बढ़ गयी।

जब लोगों की हैरत दूर हुई तो उन्हों ने जमाद को देखा। जमाद सर झुकाये, आंखें बन्द किये खड़ा था।

लोग जादू के इस करिश्मे को देखकर दंग थे। उन्हों ने आज ऐसा करिश्मा देखा था, जिस ने उन्हें ताज्जुब से भर दिया था और वे बहुत ज़्यादा खौफ़ में भी पड़ गये थे।

वे हैरत और खौफ़ भरी नज़रों से जमाद को देख रहे थे।

जमाद ने धीरे-धीरे सर उठाया। लोगों को देखा, उस की आंखें लाल थीं और चमक रही थीं, किसी को उसकी आंखों की तरफ़ देखने की हिम्मत न हुई।

अबू लहब ने कहा, जमाद! तुम वाक़ई जादूगरों के उस्ताद हो। आज

तुम ने वे करतब दिखाये जो कभी न देखे थे। अब हम सब को यह यक़ीन हो गया है कि तुम अपने जादू के ज़ोर से मेरे भतीजे (मुहम्मद सल्ल०) को ठीक कर दोगे। हमें अफ़सोस है कि हम ने तुम को पहले ही क्यों न बुलाया ? अगर तुम आ जाते, तो यह फ़ितना न बढ़ने पाता, मगर अब भी कुछ ज़्यादा नहीं बिगड़ा है। मैं तुम से इल्तिजा करता हूं कि तुम मेरे भतीजे का इलाज करो।

जमाद ने कहा, अगर आप बुला सकते हैं, तो अपने भतीजे को यहीं बुला लें। देखिए, मैं किस तरह और कितनी जल्द उनका इलाज करता हूं।

मैं बुलाता हूं, उम्मीद है कि वह आ जाएगा। यह कहते ही अबू लहब ने एक ग़ुलाम को भेजा और उसे हिदायत कर दी कि यहां की कोई बात मुहम्मद से न कहे।

ग़ुलाम चला गया, थोड़ी देर में वह हुज़ूर सल्ल० के साथ वापस आ गया।

अबू लहब ने कहा, मुहम्मद ! मैदान में जो आदमी खड़ा है, उसे आप जानते हैं ?

हुज़ूर सल्ल० उसे नहीं जानते थे, बोले, मैं नहीं जानता।

इस का नाम जमाद है, यमन का बाशिंदा है, बड़ा जादूगर है। यह तुम्हारा इलाज करेगा, तुम पर किसी जिन्न का असर है। यह उस जिन्न को पकड़ेगा।

हुज़ूर सल्ल० मुस्करा दिये, फ़रमाया—

चचा ! मुझ पर किसी जिन्न का असर नहीं है। तुम धोखे में न पड़ो। मैं ख़ुदा का बन्दा और उस का रसूल हूं।

अबू लहब ने बुरा-सा मुंह बना कर कहा, फिर वही झगड़े की बात शुरू कर दी। ख़ुदा कोई नहीं है। ख़ैर ! इस बहस को छोड़ो, ज़रा तुम जमाद के पास चलो।

आप जमाद के पास खड़े हुए।

जमाद ने आप को देखा, बड़े ग़ौर से देखा। आप के चेहरे का रौब व जलाल देख कर उस के चेहरे पर कुछ घबराहट पैदा हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने बोलने में पहल की, जमाद! अरब के मशहूर जादूगर! बोलो, तुम मुझ से क्या कहना चाहते हो ?

जमाद ने रुक-रुक कर बताया—

आप पर एक बड़े जिन्न का साया है। मैं आप को अपना मन्त्र सुनाता हूं, सुन लें।

आप ने मुस्कराते हुए कहा, जमाद ! मुझ पर किसी जिन्न वग़ैरह का साया नहीं है। तू जादूगर है। जादूगरी से लोगों को हैरत में डाल देता है, लेकिन मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं। ख़ुदा ने मेरी ज़ुबान में यह असर दिया है कि जो मुझ से ख़ुदा का कलाम सुन लेता है, उस के दिल पर असर किये बग़ैर नहीं रह सकता। तू अपना मंत्र सुनाने से पहले कुछ मुझ से सुन ले।

जमाद ने कहा, अच्छा आप ही फ़रमाइए।

चुनांचे आप ने पढ़ना शुरू किया—

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, हम उस की तारीफ़ करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं। जिसे ख़ुदा हिदायत देता है, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं और जिसे वह गुमराह करता है, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। मैं गवाही देता हूं कि सिवाए ख़ुदा के कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, कोई उस का शरीक नहीं। मैं यह भी गवाही देता हूं कि मुहम्मद ख़ुदा का बन्दा और उस के रसूल हैं।

जमाद यह सुन कर कांपने लगा।

उस ने कहा, मेहरबानी कर के ज़रा फिर यही लफ़्ज़ दोबारा बयान फ़रमायें।

आप ने फिर यही लफ़्ज़ दोहरा दिये।

जमाद खड़ा बड़े ग़ौर से सुनता रहा।

जब हुज़ूर सल्ल० चुप हुए, तो उस ने कहा, वाह ! वाह ! कितनी मिठास है इस कलाम में। एक बार और सुनाइए।

आप ने फिर वही लफ़्ज़ दोहराए।

जमाद ने कहा, क़सम है उन माबूदों की जिन को मैं आज तक पूजता रहा हूं कि मैं ने बहुत से काहिन, जादूगर और भाषा के माहिर देखे हैं, उनके कलाम सुने हैं लेकिन ऐसा कलाम, ख़ूबियों से भरा कलाम मैं ने कभी नहीं सुना। बेशक आप नबी हैं, रसूल हैं, पैग़म्बर हैं। मैं उस ख़ुदा पर, जिसने आप को रसूल बना कर भेजा है और आप की रिसालत पर ईमान लाया। अपना मुबारक हाथ बढ़ाइए, मैं मुसलमान होता है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौरन कलिमा पढ़ा कर मुसलमान कर लिया। आप को उस के मुसलमान होने से बड़ी ख़ुशी हुई।

जमाद ने मज्मे से ख़िताब करते हुए कहा, ऐ बातिल माबूद के पुजारियों सुनो और कान खोल कर सुनो। हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर किसी जिन्न वग़ैरह का साया नहीं है। यह ख़ुदा के पैग़म्बर हैं उस के बन्दों को हिदायत का रास्ता बताने के लिए भेजे गये हैं। मैं मुसलमान हो गया हूं, तुम

सब भी मुसलमान हो जाओ। ख़ुदा की क़सम ! मुसलमान बन कर इंसान बन जाओगे।

अबू लहब और दूसरे अरब के सरदारों को उस की बातें बहुत नागवार गुज़रीं।

अबू लहब झुंझला कर खड़ा हो गया और बिगड़ते हुए बोला, झूठा है तू, फ़रेबी है तू। तू ने हम को धोखा दिया। ख़ुद ही कहा कि मैं तेरे भतीजे (मुहम्मद सल्ल०) का इलाज कर दूंगा। ख़ुद ही मुसलमान होकर दूसरों को भी इस्लाम की दावत देने लगा। अगर मुझे आम ख़ूंरेज़ी का ख़तरा न होता, तो तुझे अभी पकड़ कर हलाक कर देता।

ज़माद बोला, ऐ सरकश ज़िद्दी इंसान ! तुझे इस्लाम और मुसलमानों से दुश्मनी है। तू मुसलमान होने से इस वजह से डरता है कि इस से तेरे मंसब को धक्का लगेगा, ख़ानदानी मंसब हाथों से निकल जाएगा। तू दुनिया का तालिब है, दुनिया का कुत्ता है, अभी वक़्त है, सोच ले, मुसलमान हो जा, वरना पछताएगा, ख़ुदा की क़सम ! रोयेगा।

अबू लहब ग़ुस्से से कांपने लगा। बोला, ठहर गुस्ताख़ ! अभी तेरा ख़ात्मा करता हूं।

अबू लहब आगे बढ़ा।

ज़माद ने चिल्ला कर कहा, क़दम आगे न बढ़ाना, मैं ज़माद हूं, यमन का मशहूर जादूगर।

अबू लहब डर गया, रुक गया और खड़ा हो कर गालियां देने लगा।

धीरे-धीरे लोग एक-एक कर के अपने घरों की ओर खिसकने लगे।

आख़िर में हुज़ूर सल्ल० और ज़माद भी चले गये।

इसी साल यानी १० नबवी में हज़रत आइशा रज़ि० की शादी हुज़ूर सल्ल० से हुई।

पहली बैअते उक़्बा

अब सन् १० नबवी ख़त्म हो गया था। यह साल मुसलमानों और हुज़ूर सल्ल० पर इतना सख़्त गुज़रा कि यह ग़म का साल मशहूर हो गया।

इसी साल अबू तालिब का इन्तिक़ाल हुआ।

इसी साल हज़रत ख़दीजा का इन्तिक़ाल हुआ।

इसी साल हुज़ूर सल्ल० तायफ़ तशरीफ़ ले गये।

इसी साल क़ुरैश ने ज़ुल्म का पहाड़ तोड़ने में इंतिहा भी कर दी।

पर हुज़ूर सल्ल० हर ग़म को सब्र के साथ बर्दाश्त करते रहे और हर ज़ुल्म को सहते रहे और पांवों में ज़रा भी डगमगाहट न पैदा हुई।

सन् ११ नबवी में भी आप ने अपनी मुहिम जारी रखी।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश अब यह महसूस करते लगे थे कि जो भी हुज़ूर सल्ल० से मिलता है, इन का असर क़ुबूल कर ही लेता है, इस लिए अब उन्हों ने यह कोशिश शुरू कर दी कि कोई आदमी हुज़ूर सल्ल० से मिलने ही न पाये। मक्के में मुनादी कर दी गयी कि हुज़ूर सल्ल० से कोई न मिले। बाहर से आने वालों को इस मनाही का इल्म नहीं था, इस लिए काफ़िरों ने अपने एजेन्ट छोड़ दिये कि वे उन से पहली फ़ुर्सत में मिल कर हुज़ूर सल्ल० से न मिलने की ताकीद कर दें।

एक दिन मक्के की गली-गली में यह ख़बर गर्म हो गयी कि तुफ़ैल बिन अम्र दौस क़बीले का मशहूर सरदार मक्के में घूमने आ रहा है। क़ुरैश ने पूरी शान के साथ उस के स्वागत की तैयारियां शुरू कर दीं।

एक दिन सूरज निकलते ही क़ुरैश के तमाम सरदार बड़ी शान से मक्का से बाहर निकले और बहुत दूर तक लाइनों में खड़े हो गये।

हर सरदार चमकता हुआ ताज ओढ़े अपने क़बीले के पास खड़ा था। थोड़ी देर में पैदल पलटनें और पलटनों के पीछे रिसाले बड़ी शान से आ रहे थे। रिसालों के बीच एक झंडा लहरा रहा था। उस झंडे पर एक बुत की तस्वीर बनी हुई थी। झंडे के साये में एक अधेड़ उम्र का इंसान अरबी लिबास पहने ताज ओढ़े अरबी घोड़े पर सवार आ रहा था।

यही तुफ़ैल बिन अम्र दौसी था।

उस का ज़ोरदार स्वागत किया गया, नारे लगाये गये। सब ने खुश हो कर आसमान की तरफ़ तीर चलाये।

मक्का से बाहर ही जुलूस को तर्तीब दिया गया। चूंकि हज़ारों आदमी थे, इस लिए जुलूस एक मील लम्बा हो गया। जिस वक़्त जुलूस मक्का की तरफ़ चला, तुरन्त नक़्क़ारे पर चोट पड़ी। नाक़ूस, घंटे और घड़ियाल बजाए जाने लगे और क़ौमी नारे लगाये जाने लगे। यह जुलूस बड़ी शान व अज़्मत के साथ मक्का में दाख़िल हुआ।

मक्के का हर छोटा-बड़ा इस जुलूस में शरीक हुआ। ख़ाना काबा तक आते-आते यह जुलूस और भी लम्बा हो गया।

तुफ़ैल बैतुल हराम के क़रीब जा कर रुका। घोड़े से उतरा और हरम के अन्दर दाख़िल हुआ। इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूर सल्ल० भी हरमे पाक में

मौजूद थे।

सरदारों को डर था, जो आप से बातें कर लेता है, वही मुसलमान हो जाता है, इस लिए उन्हों ने पहले ही तुफ़ैल को हुज़ूर सल्ल० से आगाह करना चाहा।

चुनांचे उत्बा ने तुफ़ैल से मुख़ातब हो कर कहा, ऐ फ़ख़्रे यमन ! आज कल हमारे शहर में एक जादूगर पैदा हो गया है, जिस ने तमाम शहर में फ़ित्ना फैला रखा है। बाप को बेटे से, बेटे को बाप से, भाई को भाई से, शौहर को बीवी से अलग कर दिया है। वह ऐसा जादूगर है कि जो आदमी उस से बात कर लेता है, उसी पर मोहित हो जाता है और अपने बाप-दादा के मज़हब को छोड़ कर रिश्तेदारों से ताल्लुक़ तोड़ कर उसी के साथ हो लेता है। आप को इसलिए आगाह किया जाता है कि एहतियात करें और उस जादूगर से बात तक न करें।

यह अजीब बात है, उस जादूगर का क्या नाम है ? तुफ़ैल ने कहा।

मुहम्मद, उत्बा ने कहा।

आख़िर वह क्या कहता है ?

वह कहता है कि ख़ुदा एक है, बुतों को छोड़ कर अनदेखे ख़ुदा की पूजा करो।

तुफ़ैल ने हंस कर कहा कि ख़ुदा भी एक अजीब बात है। इत्मीनान रखो मैं उस से बात न करूंगा। शायद यह वही आदमी है, जिस ने यमन के मशहूर जादूगर ज़माद को भी अपने मज़हब में दाख़िल कर लिया है।

उत्बा ने कहा, यह वही आदमी है। आप देख लीजिए, वह सामने खड़ा है।

उस ने हुज़ूर सल्ल० को देखा। आप के चेहरे पर जलाल था, रौब था, खिंचाव था। उस का दिल भी हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ खिंचने लगा, लेकिन उस ने फ़ौरन ही नज़र दूसरी तरफ़ फेर ली और उत्बा से कहा, वाक़ई यह कोई बड़ा जादूगर मालूम होता है, क्योंकि उस की शक्ल में खिंचाव है, ऐसा न हो कि उस की बातें सुन कर बहक जाऊं। तुम थोड़ी सी रूई मंगा दो ताकि मैं अपने कानों में ठूंस लूं और उस की बात मेरे कानों तक पहुंच सके।

तुरन्त उत्बा ने रूई मंगा दी।

तुफ़ैल ने अपने दोनों कानों में रुई ठूंस ली। ख़ाना काबा का तवाफ़ किया और चला गया।

वह उत्बा के पास ही ठहरा। कई दिन के बाद एक दिन बहुत सुबह

सवेरे ख़ाना काबा में आया।

उस वक़्त उस के साथ मक्का वालों में से कोई न था, केवल उसी के कुछ आदमी थे। जब वह ख़ाना काबा के पास पहुंचा तो उस ने हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ पढ़ते देखा। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त क़िरात से नमाज़ पढ़ रहे थे।

अगरचे तुफ़ैल ने उस वक़्त भी कानों में रूई ठूंस ली थी, लेकिन हुज़ूर सल्ल० की क़िरात की आवाज़ कुछ-कुछ सुनायी दे रही थी, उसको आप की आवाज़ निहायत ही भली मालूम हुई। उस ने कानों से रूई निकाल कर फेंक दी और निहायत ग़ौर और तवज्जोह से क़िरात सुनने लगा।

जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो वह हुज़ूर सल्ल० के आगे आया और बोला, ऐ मक्का के जादूगर! तुम अभी-अभी क्या पढ़ रहे थे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं नमाज़ पढ़ रहा था।

नमाज़ क्या होती है और क्यों पढ़ी जाती है?

नमाज़ ख़ुदा की इबादत है, आप ने फ़रमाया, और ख़ुदा की इबादत निजात हासिल करने के लिए की जाती है।

ख़ुदा कौन है? तुफ़ैल ने पूछा।

ख़ुदा वह है, जिस ने कायनात को पैदा किया है, जो इंसान को ज़िंदगी देता है, पालता-पोसता है। इज़्ज़त और ज़िल्लत उसी के हाथ में है। वह बड़ी शान वाला है, आप ने बताया।

आप कौन हैं? तुफ़ैल ने पूछा।

मैं ख़ुदा का बन्दा और उस का रसूल हूं। मुझ पर अल्लाह का कलाम नाज़िल होता है। आप ने बताया।

आप नहीं जानते, मैं कौन हूं।

मैं नहीं जानता।

मैं ख़ुद बताता हूं। मेरा नाम तुफ़ैल है। क़बीला दौस का सरदार हूं, ज़बरदस्त शायर हूं।

मैं समझ गया। शायद तुम्हीं को अपनी ज़ुबान दानी पर नाज़ है।

सही है। मुझे फ़ख़्र है कि मेरा कलाम पूरे अरब में कहावत के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

मुझे मालूम है।

शायद आप भी शायर हैं! तुफ़ैल ने पूछा।

हुज़ूर सल्ल० मुस्कराये, बोले, मैं शायर नहीं हूं, लिखना-पढ़ना नहीं जानता। मुझ पर ख़ुदा का कलाम नाज़िल होता है।

अच्छा, आप मुझे खुदा के कलाम का कुछ हिस्सा सुनाएं।

सुनो तुफ़ैल ! ग़ौर और तवज्जोह से सुनो।

हुज़ूर सल्ल० ने सूर: अन-आम की कुछ आयतें सुनानी शुरू कर दीं।

तुफ़ैल बड़े ग़ौर से सुनता रहा, उसका दिल कलामे इलाही में रमता रहा, यहां तक कि उस का जिस्म कांप गया।

हुज़ूर सल्ल० खामोश हुए तो बे-साख्ता तुफ़ैल ने कहा, ऐ मुहम्मद ! मैं ने आज तक इतना ज़ोरदार कलाम नहीं सुना था। में ज़ुबान का माहिर हूं, अच्छा शायर हूं, बड़े-बड़े लोगों से कलाम सुने हैं, पर किसी के कलाम में इतनी मिठास और इतना बड़कपन नहीं देखा। यह कलाम बशर का कलाम नहीं हो सकता। बेशक यह खुदा का कलाम है।

हुज़ूर सल्ल० को दौस क़बीले के सरदार की ये बातें सुन कर बड़ी खुशी हुई और खुशी की बात भी थी। आज तक जो लोग मुसलमान हुए, वे मुफ़्लिस व कमज़ोर थे, लेकिन अब जो आदमी मुसलमान होने पर तैयार हुआ वह सरदार था, बादशाह था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौरन कलिमा पढ़ा कर उसे मुसलमान किया।

मुसलमान होने के बाद तुफ़ैल ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप को आप की क़ौम तक्लीफ़ देती है, बुरा कहती है, जादूगर कहती है। मैं ने सुना है, मक्का की ज़मीन आप पर तंग कर दी गयी है। आज़ादी के साथ आप अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते। आप तमाम मुसलमानों के साथ मेरे यहां चलिए। मैं अपना ताज आप के सर पर रख दूंगा। मेरी क़ौम मुसलमान हो कर आप की इताअत करेगी। मेरा मुल्क आप का मुल्क होगा। मैं आप का गुलाम बन कर रहूंगा और आप की खिदमत करूंगा। वहां मुसलमान सुकून की ज़िंदगी जी सकेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ तुफ़ैल ! आप की इस हमदर्दी का बहुत-बहुत शुक्रिया। जब तक खुदा ही न हिजरत का हुक्म दे, हम अभी कहीं हिजरत न करेंगे। आप तो बस इतना कीजिए कि अपनी हुकूमत में जा कर अपनी रियाया में इस्लाम का प्रचार करें, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, बल्कि तब्लीग़ के ज़रिये। क्या आप को ये बातें मंज़ूर हैं ?

दिल व जान से, तुफ़ैल ने कहा, मैं वतन जा कर इस्लाम की तब्लीग़ ही करूंगा। मगर ऐ खुदा के लाडले पैग़म्बर ! जब आप को आप की क़ौम सताए और आप हिजरत करें, तो मुझे आप ज़रूर इत्तिला दें। मैं आ कर आप को अपने वतन ले जाऊंगा।

मैं कोई भी वायदा करने से मजबूर हूं, हुज़ूर ने फ़रमाया, हां आप के

मुल्क को हिजरत का हुक्म हुआ, तो मैं खुद आप के पास आऊंगा।

तुफ़ैल ने हुज़ूर सल्ल० के दस्ते मुबारक को बोसा दिया और रुख़्सत होने की इजाज़त चाही।

आप भी उठ कर अपने मकान की तरफ़ तशरीफ़ ले गये।

तुफ़ैल के मुसलमान होने की ख़बर जंगल की आग की तरह पूरे मक्के में फैल गयी।

इस से पहले कि वह उत्बा के मकान पर पहुंचता, वहां मक्का के सरदार जमा हो गए और तुफ़ैल के पहुंचते ही अबू लहब ने पूछ लिया—

ऐ ताजदारे यमन ! मक्का के बड़े जादूगर से मिले ?

ऐ क़ुरैश ! जिस को तुम मक्के का बड़ा जादूगर कहते हो, वह जादूगर नहीं है। वह खुदा का रसूल है, उस पर कलामे इलाही नाज़िल होता है। तुम पर अफ़सोस है कि तुम ईमान न लाये।

बात आगे बढ़ी, तो तुफ़ैल ने खुद बता दिया, लोगो ! सुनो ! मैं मुसलमान हो गया हूं और तुम को भी इस्लाम की दावत देता हूं।

मक्का के सरदारों को तुफ़ैल की बातें पसन्द न आयीं, इसलिए मुंह बना कर उठे और अपने-अपने घरों को चल दिये।

जब तमाम लोग चले गये, तो तुफ़ैल ने अपने लोगों को भी कूच का हुक्म दे दिया। चूंकि मक्का के सरदार तुफ़ैल से ख़फ़ा हो चुके थे, इसलिए जाते वक़्त उसे कोई पहुंचाने न आया और तुफ़ैल ने भी इस की परवाह न की और वह रवाना हो गये।

कुछ ही दिनों में हज का मौसम आ गया और बाहर से भीड़ की भीड़ काबा के तवाफ़ के लिए आनी शुरू हो गयी।

हुज़ूर सल्ल० को मामूल था कि हज के दिनों में ख़ास तौर से तब्लीग़ किया करते थे और कुफ़्फ़ारे मक्का कुछ न कह सकते थे, इसलिए कि अरबों के क़ानून के मुताबिक़ हज के मौसम में हर आदमी पर से पाबंदिया हटा ली जाती थीं, यहां तक कि लड़ाइयां भी बन्द कर दी जाती थीं। जब जब आज़ादी मिलती तो इस का फ़ायदा हुज़ूर सल्ल० और आप के साथी मुसलमान उठा लेते और इस्लाम की तब्लीग़ की एक मुहिम चला देते।

पिछले साल यसरब के छः आदमी मुसलमान हो कर यह वायदा कर गये थे कि वे अपने शहर में इस्लाम की तब्लीग़ करेंगे। हुज़ूर सल्ल० को उन से मिलने और उन की तब्लीग़ का अंजाम मालूम करने की बड़ी तमन्ना थी।

यसरब से कई क़ाफ़िले आ चुके थे। इन क़ाफ़िले वालों से आप को

मालूम हो गया था कि वे लोग हज करने आएंगे। आप उनकी खोज में थे।

इत्तिफ़ाक़ से एक दिन उन में से राफ़ेअ बिन मालिक और असअद बिन ज़ुरारा ने बढ़ कर आप से मुसाफ़ा किया।

आप ने पूछा, तुम्हारी तब्लीग़े इस्लाम का नतीजा क्या रहा?

साद ने जवाब दिया, कई आदमी मुसलमान हो गए हैं।

आप को यह सुन कर बड़ी ख़ुशी हुई।

राफ़ेअ ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम आप से इत्मीनान की सूरत में मिलना चाहते हैं।

आप ने फ़रमाया, तुम लोग मिना (उक़्बा) की घाटी में आज रात को आ जाओ। वहीं मुलाक़ात होगी।

बहुत अच्छा! हम सब वहीं हाज़िर होंगे, राफ़ेअ ने कहा।

रात में जब हुज़ूर सल्ल० घाटी में पहुंचे तो वहां बारह आदमियों ने आप का इस्तक़बाल किया। आप पत्थर की एक चट्टान पर बैठ गये।

आप ने फ़रमाया, ऐ यसरबी मुसलमानो! मुझे तुम्हारे आने से बड़ी ख़ुशी हुई है। मुसलमान आपस में भाई-भाई होते हैं, तुम सब हमारे भाई हो। जो मुसलमान अपने किसी भाई को हक़ीर व ज़लील समझेगा, वह जन्नत में दाख़िल न होगा। मुसलमान वह है जो एक ख़ुदा की पूजा करे और किसी को ख़ुदा का शरीक न करे, शराब न पिये, किसी पर तोहमत न लगाये, किसी की ग़ीबत न करे, जुआ न खेले, ज़िनाकारी न करे, नमाज़ रोज़े का पाबन्द रहे, ज़कात दे, हज अदा करे, मुसलमानों की हर मुम्किन मदद करे, बन्दों के हक़ों का ख़्याल रखे, नेकी का नमूना बने, क्या तुम इक़रार करते हो कि मुसलमान हो कर कामिल इंसान और पक्के मुसलमान बनोगे?

फिर आप ने फ़रमाया—

अच्छा मेरे हाथ पर हाथ रख कर इक़रार करो कि ख़ुदा हमेशा से है और हमेशा रहेगा और हम उसी की इबादत करेंगे, किसी को उस का शरीक न बनाएंगे, शराब न पिएंगे, जुआ न खेलेंगे, किसी पर तोहमत न लगाएंगे, अपनी लड़कियों को क़त्ल न करेंगे और हर अच्छी बात में नबी की इताअत करेंगे।

सब ने एक-एक कर के हुज़ूर सल्ल० के हाथ पर हाथ रख कर इन तमाम बातों का इक़रार किया।

य तरीक़ा बैअत करने का था और यह बैअत पहली बैअते उक़्बा थी, जो सन १२ नबवी में हुई।

जब तमाम लोग बैअत कर चुके, तो राफ़ेअ बिन मालिक ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम चाहते हैं कि आप कोई ऐसा आदमी हमारे साथ करें, जो क़ारी हो, मुबल्लिग़ हो, शरीअत को खूब जानता हो, अच्छी तक़रीर कर सकता हो, दुश्मनों की ज़्यादतियों से न घबराए, न डरे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ठीक है मैं कल सुबह तुम्हारे पास मुसअब बिन उमैर को भेजूंगा, जो तुम्हारे साथ यसरब जा कर तब्लीग़ करेंगे।

राफ़ेअ ने कहा, बहुत खूब ! अब दुआ फ़रमाइए कि अल्लाह यसरब वालों को मुसलमान होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूर सल्ल० ने दुआ मांगी और यह मज्लिस बर्ख़ास्त हुई।

इस्लाम की तरक्क़ी

मुसअब बिन उमैर यसरब के बारह मुसलमानों के साथ रवाना हुए।

एक हफ़्ता के बाद यह क़ाफ़िला यसरब में दाख़िल हुआ।

मुसअब साद बिन ज़ुरारा के मकान पर ठहरे।

उन्हों ने एक दिन के लिए भी आराम न किया और दूसरे दिन ही से इस्लाम की तब्लीग़ शुरू कर दी।

यसरब की आबादी क़बीलावार थी। मुसअब बे-धड़क हर मुहल्ले में जा-जा कर क़बीले के लोगों में तब्लीग़े इस्लाम करने लगे।

कुछ ही दिनों में क़बीले के क़बीले मुसलमान हो गये।

क़बीला औस की शाख़ों में क़बीला बनुल अह्मश और क़बीला बनू ज़फ़र बहुत मशहूर और ताक़तवर क़बीले थे। क़बीला बनू ज़फ़र के सरदार उसैद बिन हुज़ैर और क़बीला बनुल अह्मश के सरदार साद बिन मुआज़ को यसरब के तमाम क़बीलों ने अपना सरदार मान लिया था। यसरब के वही हाकिम थे। उसैद बिन हुज़ैर और साद बिन मुआज़ को मुसअब के मक्का से मदीना में आने और तब्लीग़े इस्लाम करने की इत्तिला थी, साथ ही उन को यह भी पता चल गया था कि मुसअब की कोशिश से नया मज़हब बहुत तरक्क़ी कर रहा है और लोग झुंड के झुंड मुसलमान हो रहे हैं।

इन दोनों को यह बात बहुत नागवार गुज़री और हुक्म दे दिया कि हमारे मुहल्ले में मुसअब या कोई और मुसलमान न आने पाये और अगर कोई आया, तो उसे गिरफ़्तार कर के क़त्ल कर दिया जाएगा।

एक दिन मुसअब और असद बिन ज़ुरारा साद बिन मुआज़ के मुहल्ले में जा पहुंचे। उस मुहल्ले में एक बड़ा कुंआं था, दोनों वहीं जा कर बैठे और मुसअब लोगों को तब्लीग़ करने लगे।

साद बिन मुआज़ को जब यह मालूम हुआ, तो उन्हें सख्त नागवर गुज़रा। उन्हों ने उसैद को बुला कर कहा—

देखो उसैद! मुसअब व असद की दलेरी बहुत बढ़ गयी है। उन्हों ने यसरब के तमाम लोगों को बहका कर अपने मज़हब में दाखिल कर लिया है, अब हमारे मुहल्ले वालों को बहकाने आये हैं। ये दोनों ऐसे हैं कि मेरे इम्तिनाई हुक्म की भी परवाह नहीं थी। क्या हमें इस ज़िल्लत और इन दोनों की इस दलेरी को बर्दाश्त कर लेना चाहिए?

कभी न करना चाहिए, उसैद ने कहा, यह तो बड़ी ज़िल्लत की बात है।

तुम सच कहते हो उसैद! देखो, असद मेरा खलेरा भाई है, इसलिए मैं उस का लिहाज़ करता हूं। तुम जाओ और दोनों को कुंएं पर से उठा दो और कह दो कि हमारे मुहल्ले में कभी न आयें। अगर आगे आयेंगे, तो हम उन लोगों को क़त्ल कर डालेंगे।

उसैद अच्छा कह कर उठे और तलवार लेकर कुएं के पास पहुंचे। वहां बहुत से लोग खड़े थे, मुसअब कुछ तक़रीर कर रहे थे और लोग खामोशी से सुन रहे थे। ये लोग उसी मुहल्ले के थे।

उसैद उन पर बहुत बिगड़े।

देखते-देखते सब अपने-अपने घरों को चले गये, एक आदमी भी वहां खड़ा न रहा। सिर्फ़ मुसअब और असद ही वहां रह गये।

उसैद बढ़ कर दोनों के पास पहुंचे।

चूंकि वह ग़ुस्से में थे, इसलिए क़रीब पहुंचते ही कड़क कर बोले—

मुसअब! तुम ने यसरब में आ कर एक भारी फ़ित्ना खड़ा कर दिया है। सारे मुहल्ले में तो बहकाते ही रहते हो, अब हमारे मुहल्ले में भी आ गये हो और यहां भी फ़ित्ना पैदा कर रहे हो। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हमारे सरदार साद बिन मुआज़ ने इस मुहल्ले में तुम्हारे दाखिले पर रोक लगा दी है? मुसअब! इस बार तो हम माफ़ करते हैं, लेकिन आइंदा इधर का रुख न करना। अगर अब आया, तो समझ ले तेरा सर उड़ा दिया जाएगा।

मुसअब बड़े इत्मीनान से उसैद की बातें सुनते रहे। जब वह खामोश हुए, तो उन्हों ने फ़रमाया कि आप हमारी किस बात पर नाखुश हो कर

हमें मुहल्ले से निकाल देना चाहते हैं, उसैद !

उसैद का गुस्सा और बढ़ गया, बोला, किस बात पर ? नामाक़ूल आदमी ! क्या तुझे ख़बर नहीं है ? नहीं जानता तो सुन कि तू लोगों को बहका कर मुसलमान कर लेता है, इस लिए उठ और हमारे मुहल्ले से फ़ौरन निकल जा और असद ! तुम्हारे लिए भी यही हुक्म है।

मुसअब ने कहा, हमें तुम्हारी बात मानने में कोई उज़्र नहीं है? लेकिन क्या आप हम दोनों के पास बैठकर इत्मीनान से दो बातें सुन लेंगे ?

उसैद ने कहा, कैसी दो बातें ?

कोई लम्बी-चौड़ी बात नहीं, जो औरों से कहता हूं, वही आप से भी कहूंगा। बस ठंडे दिल व दिमाग़ से उसे सुन भर लीजिए, मुसअब ने कहा।

उसैद कुछ नर्म पड़े और तलवार का सहारा लेकर मुसअब के पास बैठ गये। बोले, सुनाओ क्या सुनाना चाहते हो !

मुसअब की तो मांगी मुराद बर आयी थी। उन्होंने नर्म लहजे में कहना शुरू किया—

ऐ क़बीला बनू ज़फ़र के सरदार ! मक्का में अल्लाह की ओर से एक नबी भेजे गये हैं। उन्हें मुहम्मद कहते हैं। उन पर अल्लाह ने एक किताब नाज़िल फ़रमायी है, जिस का नाम क़ुरआन है। ऐ मेरे भाई ! मैं और सारे मक्का वाले तुम्हारी तरह बुत पूजा करते थे, उसी को माबूद मानते थे, पर मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया और समझाया कि अपने हाथों से तराशे हुए बुत ख़ुदा नहीं हो सकते। ये तो बोल नहीं सकते, हरकत भी नहीं कर सकते। ख़ुदा तो वही हो सकता है, जिस ने कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे को पैदा किया हो, जो सब कुछ जानता हो, देखता हो, सब को रोज़ी देता हो, जिस के हाथ में ज़िंदगी और मौत हो।

फिर मुसअब ने क़ुरआन की आयतें पढ़ीं।

उसैद चुप-चाप बैठे सुनते रहे। आयतों का असर उन के दिल पर होता रहा, यहां तक कि वह कांप उठे।

मुसअब के ख़ामोश होते ही बोले, मुसअब ! क़सम है उन माबूदों की जिन्हें मैं पूजता हूं ! यह कलाम इंसान का कलाम नहीं है। मैं उस ख़ुदा पर जिस का यह कलाम है, ईमान लाया। मुसअब ! अब मुझे भी मुसलमान कर लीजिए।

मुसअब ने उसे फ़ौरन कलिमा पढ़ा कर मुसलमान कर लिया।

फिर उसैद बोले, एक आदमी और है। अगर वह किसी तरह से भी मुसलमान हो जाए, तो सारा यसरब मुसलमान हो जाए।

मुसअब ने पूछा, वह कौन है ?

उसैद ने कहा, साद बिन मुआज़, यसरब का मालिक।

अगर मैं उन के पास पहुंच जाऊं या किसी तरह से वह मेरे पास आ जायें, तो मुम्किन है कि वह भी मुसलमान हो जाएं, मुसअब ने कहा।

मुझे भी यही उम्मीद है कि कलामे इलाही की एक आयत सुनने के बाद वह ज़रूर इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे। मैं जा कर अभी उन्हें आप के पास भेजता हूं। तुम जिस तरह भी मुम्किन हो, उन्हें कलामे पाक सुना देना। यक़ीन है कि वह भी मुसलमान हो जाएंगे।

मुनासिब है, आप उन्हें यहां भेज दीजिए, मुसअब ने कहा।

उसैद साद के पास पहुंचे, देखते ही उन्हों ने पूछा, क्यों उसैद ! मुसअब और असद को निकाल आए ?

नहीं, उसैद ने कहा, वे नहीं गये।

साद को गुस्सा आ गया, तलवार हाथ में ली और यह कहते हुए चले कि उन की इतनी हिम्मत ?

कुएं के पास पहुंचते ही मुसअब और असद को मुखातब कर के सख्त लेहजे में कहा, तुम दोनों को इतनी जुर्रात हो गयी है कि मेरे मुहल्ले में आ कर मेरे क़बीले के लोगों को बहकाना शुरू कर दिया। देखो, अभी तुम सब को इस घमंड की सज़ा देता हूं।

यह कहते ही वह मुसअब और असद पर झपटे।

दोनों बड़े इत्मीनान से बैठे रहे, जैसे कुछ सुन ही न रहे हों।

साद को और गुस्सा आ गया, तलवार म्यान से खींच ली और चीखे, जिसे मौत आ गयी हो, उसे कौन बचा सकता है ? होशियार हो जाओ।

मुसअब ने बड़ी नर्मी से कहा, ऐ यसरब के मालिक ! आप हम दोनों पर इतने ख़फ़ा क्यों हो रहे हैं ?

उस ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, क्यों ख़फ़ा हो रहा हूं ? अभी मालूम हो जाएगा। बदबख़्त इंसान ! मेरे क़बीले वालों को मुसलमान बना रहा है और कहता है, मैं ख़फ़ा क्यों हो रहा हूं ? तुम दोनों फ़ौरन यहां से निकल जाओ, नहीं तो अभी तलवार से सर क़लम कर दूंगा।

मुसअब बोले, ऐ क़ौम के सरदार ! आप ख़फ़ा न हों, हम दोनों ख़ुद ही चले जाएंगे। हम आप को नाराज़ नहीं करना चाहते, मगर एक बात कहना चाहता हूं।

क्या कहना चाहते हो ? साद ने पूछा।

आप ज़रा मेरे पास बैठ तो जाएं, फिर जो मैं कहूं, ठंडे दिल से सुनें।

मुसअब ने कहा।

साद मुसअब के पास बैठ गये।

मुसअब ने बड़े नर्म अन्दाज़ में कहा, मेरे भाई! आप मुझ से और भाई असद से इसलिए नाराज़ हैं कि हम सब मुसलमान हो गये हैं और दूसरे लोगों को भी मुसलमान कर रहे हैं। कभी आप ने सुना कि हम क्या कहते हैं और किस बात की तब्लीग़ करते हैं? मेरे, आपके और तमाम अरबों के बाप-दादा बुतपरस्त थे, हम उन्हें माबूद मानते थे, लेकिन ऐ बुज़ुर्ग और अक़्लमन्द इंसान! मक्का में मुहम्मद सल्ल० ने एलान किया कि ख़ुदा वह ज़ात है, जिस ने दुनिया-जहान को पैदा किया है, इंसान को मिट्टी से बनाया है, सभी इन्सान उसके बन्दे हैं, इबादत के क़ाबिल ख़ुदा है, वह ख़ुदा जो हर जगह रहता है, जो मुर्दों को ज़िंदा और ज़िंदों को मुर्दा करता है। जो कलाम रसूलुल्लाह पर नाज़िल हुआ, वह उसी ख़ुदा का है।

फिर उस के बाद मुसअब ने अल्लाह का कलाम सुनाया।

साद बड़े ध्यान से अल्लाह का कलाम सुनते रहे। उन का बदन कांपने लगा था, आंखों से ख़ौफ़ व हरास ज़ाहिर हो रहा था, चेहरे पर रौब छा गया था। उन्हों ने जल्दी से कहा।

उफ़! कितना असरदार कलाम है, इस ने तो मेरा दिल खींच लिया, मेरा क़ल्ब रोशन हो गया। आंखों से गुमराही के तारीक परदे उठ गये। मुसअब! मेरे मेहरबान मुसअब! मुझे माफ़ कर दो। मैं ने तुम्हारी शान में गुस्ताख़ी की है।

यह कहते ही साद हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

मुसअब ने उन का हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया।

फिर साद के कहने पर मुसअब ने साद को कलिमा पढ़ाया। साद मुसलमान हो गये।

साद ने मुसअब को ख़िताब करते हुए कहा, मुसअब! अब तुम मेरे ग़रीबख़ाने पर चलो। वहीं चल कर मैं अब अपने पूरे क़बीले को इस्लाम की तालीम दूंगा और मुझे यक़ीन है कि मेरा क़बीला पूरे का पूरा इस्लाम क़ुबूल कर लेगा।

मुसअब ने साद का शुक्रिया अदा किया और उन के साथ उन के मकान पर आ गये।

पूरा क़बीला जमा कर लिया गया।

साद ने बुलन्द आवाज़ से लोगों से पूछा, ऐ क़बीले वालो! तुम मेरे बारे में क्या ख़्याल रखते हो?

हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, आप हमारे सरदार हैं।

साद ने कहा, ऐ मेरे क़बीले के लोगो ! तुम जानते हो कि मैं बुतपरस्त था, मुझे इस्लाम और मुसलमानों से नफ़रत थी। मैं ने एलान कर दिया था कि मेरे क़बीले का जो आदमी मुसलमान बनेगा, उसे सख्त सज़ा दूंगा। अब सुनो और ग़ौर से सुनो ! मैं मुसलमान हो गया हूं। मैं ने इस्लाम को ख़ूब अच्छी तरह समझ लिया है, उस से अच्छा कोई मजहब नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम सब भी मुसलमान हो जाओ।

लेकिन हम तो इस्लाम के बारे में कुछ नहीं जानते, हम कैसे इस्लाम क़ुबूल करें ? कुछ आवाज़ें आयीं।

साद ने कहा, तुम ने यह अक्लमंदी की बात की है। तुम्हें मुसअब बताएंगे कि इस्लाम क्या है ? ख़ामोशी से तक़रीर सुनो।

तमाम मज्मा ख़ामोश हो गया।

मुसअब ने ऊंची आवाज़ से तक़रीर की। इस्लाम के बारे में तफ़्सील बतायी। लोग ख़ामोशी से सुनते रहे।

जब मुसअब चुप रहे, तो साद ने पूछा, अब बताओ, तुम इस्लाम क़ुबूल करने पर तैयार हो ?

सब ने कहा, बिल्कुल तैयार हैं, इस तरह सब मुसलमान हो गए।

मुसअब यसरब में सन १२ नबवी में आये थे। दस महीने की थोड़ी सी मुद्दत में बड़ी आबादी को मुसलमान कर लिया था।

अब जब हज का ज़माना आया, तो हज़रत मुसअब के साथ हज के लिए बहुत से लोग मक्का चलने को तैयार हो गए। इन की कुल तायदाद ७४ थी, जिन में दो औरतें भी शामिल थीं।

हिजरत की दावत

हुज़ूर सल्ल० ने मुसअब बिन उमैर को यसरब तब्लीग़े इस्लाम के लिए भेजा था। हुज़ूर सल्ल० को उन का बड़ा ख्याल था। जब कोई आदमी यसरब से आता, तो आप उन से मुसअब की ख़ैरियत मालूम करते।

आप को मालूम हो गया कि यसरब में इस्लाम ख़ूब फैल रहा है और लोग गिरोह के गिरोह मुसलमान हो रहे हैं। आप को इस से ख़ुशी हुई।

यसरब में मुसलमानों की तायदाद बढ़ रही है, इस की ख़बर मक्के वालों को भी होती रहती थी, जिस से उन की नज़रों में ख़तरे बढ़ते जा

रहे थे। इस लिए अब उन के जुलम में और बढ़ोत्तरी हो गयी थी। वे चाहते थे कि किसी तरह मुसलमान इस्लाम से फिर जाएं, लेकिन मुसलमान तमाम जुल्मों को सहते हुए भी इस्लाम से फिरने वाले न थे।

इसी कशमकश में हज का ज़माना क़रीब आ गया और मक्का में हर तरफ़ से लोग जमा होने शुरू हो गये। हरमे मोहतरम और उस के बाहर का मैदान लोगों से भर गया। तवाफ़ शुरू हो गया और हज की रस्में पूरी होनी शुरू हो गयीं।

जब हुज़ूर सल्ल० तवाफ़ से फ़ारिग़ हुए तो इत्तिफ़ाक़िया असद बिन ज़ुरारा मिल गये। मुसअब भी उन के साथ थे।

दोनों बढ़ कर हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आए। हुज़ूर सल्ल० उन्हें देख कर बहुत खुश हुए और आप ने फ़ौरन हज़रत मुसअब से पूछा

बताओ मुसअब ! तुम्हारी तब्लीग़ का क्या नतीजा रहा ?

मुसअब ने कहा, खुदा के फ़ज़्ल व करम से बड़ी कामियाबी रही। औस और खज़रज के लगभग सभी लोग मुसलमान हो गये हैं।

हुज़ूर सल्ल० यह सुनकर बहुत खुश हुए और खुदा का शुक्र अदा किया।

मुसअब ने कहा, तमाम लोग आप के दीदार का बेहद इश्तियाक़ रखते हैं।

मैं खुद उन से मिलना चाहता हूं, आप ने कहा।

असद बिन ज़ुरारा ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! हम आप से तंहाई में और इत्मीनान से मिलना चाहते हैं।

आप ने फ़रमाया, तुम और तुम्हारे कुछ साथी रात को उक़्बा की घाटी में आ जाएं। मैं भी वहां आ जाऊंगा और उसी जगह बैठ कर इत्मीनान से बातें करेंगे।

फिर कहा, अब तुम जाओ, मुसअब ! तुम भी जाओ असद अब फिर साथ ही आना।

दोनों सलाम कर के वापस हुए।

मग़रिब की नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्ल० उक़्बा की पहाड़ी के लिए निकले।

रास्ते में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब मिल गये। अब्बास अगरचे मुसलमान नहीं थे, लेकिन मुसलमानों के हमदर्द ज़रूर थी। पूछा आप रात के वक़्त कहां जा रहे हैं ?

आप ने फ़रमाया, मैं एक काम से उक़्बा की घाटियों में जा रहा हूं। आप चाहें, तो चलें।

चलूंगा, अब्बास ने कहा, मुझे क़ौम की तरफ़ से डर है कि कहां वह आप को नुक़सान न पहुंचाए।

अंदेशा न करो, ख़ुदा मेरा हिमायती और मददगार है।

दोनों चले और चल कर उक़्बा की घाटी में पहुंचे। यहां यसरब के बहुत से मुसलमान पहले से मौजूद थे। सलाम और मुसाफ़ा के बाद आप एक पत्थर पर बैठ गये। आप के सामने तमाम लोग अदब से बैठ गये।

असद बिन ज़ुरारा ने कहा हुज़ूर सल्ल० पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों। आप ही की बदौलत गुमराही के अंधेरे से निकल कर ईमान के उजाले में आए हैं। हम को यसरब वालों ने वकील बना कर आप की ख़िदमत में भेजा है कि हम आप को यसरब चलने की दावत दें। यक़ीन है कि आप हमारी दर्ख़्वास्त क़ुबूल फ़रमाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे यसरब वालों से ग़ायबाना मुहब्बत है। मुझे उन से मिलने का बेहद शौक़ है। अल्लाह जैसे ही चाहेगा कि यसरब पहुंचूं, तो मैं यसरब पहुंचने में कोई कोताही न करूंगा।

यसरबी यह सुन कर बहुत ख़ुश हुए।

हज़रत अब्बास बीच में बोल पड़े, ऐ यसरब वालो! तुम नहीं जानते कि हज़रत मुहम्मद के यसरब जाने से तुम्हारे लिए क्या-क्या मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी। पूरा अरब तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाएगा, सारे क़बीले तुम से लड़ने लगेंगे। हर क़बीला तुम्हारा दुश्मन हो जाएगा, तुम किस-किस का मुक़ाबला करोगे? और किस-किस से मुहम्मद को बचाओगे? अगर तुम यह सब कुछ कर सकते हो, तो ठीक है, वरना ख़ामोश हो जाओ और मुहम्मद सल्ल० को वहां ले जाने का नाम न लो।

बरा बिन मारूर ने कहा, ऐ हाशमी नवजवान! मैं ने और मेरे साथियों ने आप की बात सुन ली। हम ख़ूब जानते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के यसरब ले जाने पर हमारे ऊपर कितनी ज़िम्मेदारियां आ जाएंगी, और हमें क्या-क्या मुसीबतें बरदाश्त करनी पड़ेंगी और किन-किन लोगों से लड़ना पड़ेगा? हम ने इन तमाम बातों को सोच कर और हर पहलू पर नज़र रख कर ही यह फ़ैसला किया है। हम उस वक़्त तक हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त करेंगे, जब तक कि एक भी मुसलमान यसरब में ज़िंदा रहेगा। यह किसी की हिम्मत नहीं कि हमारी ज़िंदगी में भी हुज़ूर सल्ल० का बालबेका कर सके।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ यसरब के मुसलमानो! चचा अब्बास ने जो कुछ फ़रमाया है, मुझे लगता है कि ये तमाम बातें होने वाली हैं। मेरा

मक्का से यसरब को जाना मक्का वालों से जंग का ऐलान करना है। मुझे डर है कि खून की नदियां बह जाएंगी। यह ठीक है कि मुझे यसरब को ही हिजरत करना है, लेकिन अल्लाह का हुक्म मिलने पर मैं खुद आऊंगा, इस तरह यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं अपनी हिफ़ाज़त करूं। बेहतर यही है कि आप मुझे दावत न दें।

साद बिन ज़ुरारा ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! हम ने और तमाम यसरब वालों ने अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करते हुए हुज़ूर सल्ल० को दावत दी है। हम आप को और हज़रत अब्बास को यक़ीन दिलाते हैं कि मर जाएंगे, पर आप पर आंच न आने देंगे।

बरा ने कहा, हम तमाम ज़िम्मेदारियां अपने सर लेते हैं और ज़िंदगी की आखिरी सांस तक हुज़ूर सल्ल० का साथ देने का इक़रार करते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं इक़रार करता हूं कि ज़िंदगी भर तुम्हारे साथ रहूंगा, मेरा जीना और मरना यसरब में ही होगा।

बरा ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! हाथ बढ़ाइये। हम आप के हाथ पर हाथ रख कर इन तमाम बातों का इक़रार कर के बैअत करते हैं।

हुज़ूर ने हाथ बढ़ाया और हर यसरबी मुसलमान ने आप के हाथ पर हाथ रख कर बैअत किया।

यह बैअत सन १३ नबवी में हुई।

बैअत से फ़ारिग़ हो कर तमाम मुसलमान खामोशी से एक-एक, दो-दो कर के बिखरने लगे। यह एहतियात इस वजह से की जा रही थी कि किसी तरह मक्का के काफ़िरों को इस बैअत का हाल मालूम न हो सके।

हिजरत का हुक्म

जब हुज़ूर सल्ल० घाटी से निकले और कुछ क़दम चले, तो आप को किसी के पांव की चाप सुनायी दी। आप ने पीछे पलट कर देखा, तो साफ़ नज़र आया कि एक भारी-भरकम जिस्म वाला अरब लम्बे-लम्बे क़दम रखता हुआ आ रहा है।

हज़रत अब्बास ने भी उस आने वाले को देखा।

आते ही वह बोला, मुहम्मद (सल्ल०) ! तुम क्या साज़िश कर रहे थे ?

हुज़ूर सल्ल० ने उस की तरफ़ देख कर जवाब दिया, नज़र ! तुम्हें

किस साज़िश का गुमान है ?

यह आराबी नज़र बिन हारिस था। यह सरकश भी था और इसे मुसलमानों से सख़्त नफ़रत भी थी। कुफ़्र व शिर्क में अबू जह्ल से कम न था।

उस ने कहा, मेरा ख़्याल है कि तुम ने यसरब के लोगों को मक्का पर हमला करने की दावत दी है।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर जवाब दिया, नज़र ! यह तुम्हारी ग़लत-फ़हमी है। यसरब वाले क्यों मेरे कहने से मक्का पर हमलावर होंगे ?

नज़र बिगड़ गया, बोला, फिर क्या मश्विरा हो रहा था ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चूंकि मक्का वाले मुझे और मुसलमानों को सताते हैं, इसलिए मेरा इरादा यसरब को हिजरत कर जाने का है। यही मश्विरा हो रहा था।

तो क्या आप यसरब जाने का इरादा रखते हैं ? नज़र ने पूछा।

हां नज़र ! आप ने कहा, जब मेरी क़ौम मुझे सताती है, तो मेरे लिए हिजरत कर जाने के अलावा रास्ता ही क्या है ?

नज़र ख़ामोशी से चला गया।

फिर आप और हज़रत अब्बास भी अपने-अपने घरों को वापस चले गये।

सुबह सवेरे आप अरक़म के मकान पर पहुंचे। साथ में सब ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरआन तिलावत फ़रमायी। अरक़म के मकान में जमा तमाम मुसलमान बड़े ध्यान से क़ुरआन सुनते रहे।

क़ुरआन की तिलावत के बाद आप ने फ़रमाया, मुझे ऐसा लग रहा है कि यसरब ही अब दारुस्सलाम बनेगा। मक्का वालों का ज़ुल्म हद से आगे निकल गया है, इसलिए अब वहीं आराम व सुकून मिलेगा। तुम में से जो लोग हिजरत कर सकते हैं या करना चाहते हैं, वे आज से तैयारियां शुरू कर दें, ये तैयारियां ख़ुफ़िया तौर पर होंगी, इसलिए कि अगर कुफ़्फ़ारे मक्का को मालूम हुआ तो वे रोड़ा अटकाएंगे।

फिर हिजरत के सिलसिले में कुछ हिदायतें दी गयीं और कुछ दिनों के बाद से मुसलमानों ने यसरब की तरफ़ हिजरत करना शुरू कर दिया। जो लोग सवारी की ताक़त न रखते थे, वे पैदल ही चल पड़े।

शुरू में तो कुफ़्फ़ारे मक्का को हिजरत का पता न चला, लेकिन हिज-रत करने वालों के मकान ख़ाली देखे, तो उन्हें खटक हुई। जांच शुरू हुई और जब ही मालूम हो सका कि ये सब के सब यसरब की तरफ़ रवाना हो

गये हैं।

कुफ़्फ़ारे मक्का के दिलों में खलबली मच गयी। उन्हों ने इस खतरे को भांप लिया कि वहां मुसलमान पहुंचेंगे तो ज़ोर पकड़ जाएंगे, मक्का और यसरब के मुसलमान जब मिलेंगे तो एक बड़ी ताक़त बन जाएंगे। इसलिए अब उन्हों ने हिजरत में रोड़े अटकाने शुरू कर दिये।

उन्हों ने हिजरत से रोकने का हर मुम्किन तरीक़ा अख़्तियार किया।

जब मालूम होता कि कोई मुसलमान हिजरत करने वाला है, तो उस का मकान घेर लेते, उस की तमाम चीज़ें छीन लेते, उसे मारते-पीटते और परेशान करते।

लेकिन मुसलमान नज़रें बचा कर चुपके से हिजरत कर जाते और यह सिलसिला तमाम परेशानियों के बावजूद बराबर जारी रहा।

आखिरकार उन्हों ने तै कर लिया कि जो मुसलमान हिजरत करे, उस का माल-अस्बाब छीन लो, खूब मारो-पीटो। अगर वह हिजरत से रुक जाए, तो उस का माल वापस कर दो, वरना अपने काम में लाओ।

गुण्डों की खूब बन आयी। वे रास्तों में घात में बैठ गये और मुसलमानों को हिजरत से रोकने लगे।

एक दिन हज़रत सुहैब रूमी कुछ नक़दी लेकर चुपके से मक्के से बाहर निकले और यसरब की तरफ़ रवाना हुए। अभी वह थोड़ी दूर चले थे कि कुछ बदमाशों ने उन्हें घेर लिया और बिना कुछ कहे-सुने उन्हें मारना शुरू किया।

हज़रत सुहैब पिट रहे थे, लात-घूंसे खा रहे थे, उन्हें न कोई बचाने वाला था और न मदद करने वाला। चुपचाप हसरत से आसमान की तरफ़ देख रहे थे। बदमाशों ने अच्छी तरह मारा-पीटा, जो कुछ भी नक़द था, सब छीन लिया और उन्हें जंगल की ओर धकेल दिया गया। आप सब्र व शुक्र के साथ इसी हालत में यसरब की तरफ़ पैदल ही चल दिये।

मुसलमान सख़्तियां उठा रहे थे, पर उफ़ तक न करते थे।

हिजरत का सिलसिला जारी रहा। हज़रत हमज़ा, हज़रत उमर, हज़रत बिलाल, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह तमाम के तमाम हिजरत कर के चले गये, जो बाक़ी रह गये थे, वे छिप-छिप कर के हिजरत करने की फ़िक्र में थे।

जो भी हिजरत करता, वह हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त लेता। आप उस से कह देते कि यसरब वालों से कह देना कि मैं (मुहम्मद) भी बहुत जल्द आने वाला हूं।

एक दिन अबू सलमा ने हिजरत का इरादा किया। रात में वह ऊंट पर सवार हुए। अपनी बीवी उम्मे सलमा को सवार किया। गोद में बच्चा लिया और रवाना हो गये।

अभी आप मक्का की गलियों में थे कि क़बीला बनू मुग़ीरा के एक आदमी ने आप को जाते हुए देख लिया। उस ने लपक कर ऊंट की नकेल पकड़ ली।

ऊंची आवाज़ से पूछा, अबू सलमा ! क्या तुम भी हिजरत कर रहे हो ?

हां, मुझे भी मक्का वालों ने इतना सताया है कि हिजरत के अलावा मेरे लिए कोई रास्ता नहीं।

क्या तू अपनी बीवी उम्मे सलमा को भी ले जाना चाहता है ?

क्यों न ले जाऊं ? यह मेरी बीवी है, इन्हें मैं साथ ही ले जाऊंगा।

अरब बिगड़ गया, बोला, हुबल की क़सम ! तुम उम्मे सलमा को नहीं ले जा सकते। हमारे क़बीले की बेटी है। तुम्हें उसे ले जाने का कोई हक़ नहीं है।

ऐ अरब ! अबू सलमा ने कहा उम्मे सलमा मेरी बीवी है, मुसलमान हो चुकी है। अपनी ख़ुशी से मेरे साथ जा रही है, तुम इनसे पूछ सकते हो?

अरब बिगड़ गया, मैं नहीं पूछता, तुम इसे ज़बरदस्ती ले जा रहे हो, मैं इसे कभी न जाने दूगा।

तुम ग़लत कहते हो, उम्मे सलमा ने कहा, मेरे साथ कोई ज़बरदस्ती नहीं हुई है, बल्कि मैं अपनी ख़ुशी से जा रही हूं।

तेरी ख़ुशी कोई चीज़ नहीं है, अरब ने झुंझला कर कहा, देखूं, तुझे बनू मुग़ीरा क़बीले के लोग कैसे जाने देते हैं ?

यह कहते हुए उस ने आवाज़ दी—

ऐ बनू मुग़ीरा क़बीले के ग़ैरतमन्द अरबो ! देखो, तुम्हारी बेटी उम्मे सलमा को अबू सलमा ज़बरदस्ती ले जा रहा है।

उस के इस चिल्लाने पर बहुत से आदमी दौड़े हुए आए। इन आने वालों में कुछ बनू मुग़ीरा के थे और कुछ क़बीला बनू अब्दुल असद के।

अबू सलमा का ताल्लुक़ क़बीला बनू अब्दुल असद से था। लोगों ने आते ही पूछा, क्या मामला है ? अबू सलमा ! तुम कहां जा रहे हो ?

अरब ने बताया यह हिजरत करने जा रहा है। उम्मे सलमा और अपने बच्चों को भी साथ ले जाना चाहता है। क्या तुम इसे जाने दोगे ?

हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, कभी नहीं, हरगिज़ नहीं।

अबू सलमा ने कहा, लोगो ! मैं अपनी बीवी और बच्चे को ले जा रहा हूं। जब तुम को हमारा मक्के में रहना गवारा नहीं, तो हम यहां कैसे रहें?

एक आदमी ने कहा, तुम बीवी और बच्चे को छोड़ दो और अपनी ऊंटनी हमारे हवाले कर दो। इस के बाद जहां जी चाहे जाओ।

अबू सलमा को अपने बच्चे और बीवी से बेहद मुहब्बत थी। वह उन की जुदाई गवारा न कर सकते थे। उन्हों ने फ़रमाया कि इतना ज़ुल्म न करो। तुम ऊंटनी ले लो। मेरा तमाम माल और सामान ले लो, मेरी बीवी और बच्चे को मुझ से न छीनो।

एक आदमी ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, तुम हरगिज़ अपने बच्चे और बीवी को नहीं ले जा सकते। लोगो! इन से इन दोनों को छीन लो।

फ़ौरन लोग झपट पड़े।

क़बीला बनू अब्दुल असद के एक आदमी ने बच्चे को छीन लिया और क़बीला बनू मुग़ीरा के लोगों ने उम्मे सलमा को ऊंट से उतार लिया।

जो अरब ऊंटनी की नकेल पकड़े हुए था, उस ने अबू सलमा को धक्का दे कर नीचे गिरा दिया और ऊंटनी को मय सामान के जो उस पर लदा हुआ था, लेकर चल दिया।

अबू सलमा उठ कर खड़े हुए। बच्चे और बीवी की मुहब्बत ने जोश मारा। उन्हों ने बड़ी आजिज़ी से कहा, आह, इस क़दर ज़ुल्म न करो।

उम्मे सलमा की आंखों में आंसू भर आए।

उन्हों ने फ़रमाया, मुझे छोड़ दो, मैं अपने शौहर के साथ जाऊंगी।

यह कहते ही वह अबू सलमा की तरफ़ झपटीं, लेकिन लोगों ने दो क़दम भी चलने न दिया और पकड़ कर खड़े हो गये।

मासूम बच्चा मां की गोद से अलग हो कर रोने लगा। वह हुमक-हुमक कर बाप की तरफ़ झुका। बेदर्द ज़ालिमों ने उसे डपट दिया और नन्हीं सी जान रोते-रोते निढाल हो गयी।

उम्मे सलमा भी रोने लगीं।

उन्हों ने अपने शौहर को ख़िताब करते हुए कहा, मेरे सरताज ! जाबिर व बेरहम क़ौम मुझे तुम से अलग कर रही है और तुम्हारे बच्चे को तुम से छीन लिया है। यह इम्तिहान का वक़्त है, देखो, लड़खड़ाना मत।

अबू सलमा ने भरी हुई आवाज़ में कहा—

मेरी प्यारी बीवी ! मैं मुसलमान हूं और मुसलमान की शान यही है कि वह किसी मुसीबत में न घबराये। ख़ुदा मेरा इम्तिहान लेना चाहता

है। इन्शाअल्लाह ! मैं इस इम्तिहान में कामियाब रहूंगा। हिजरत करूंगा अच्छा रुख़्सत।

अबू सलमा इस से ज़्यादा कुछ न कह सके। उन की आंखों में आंसू भर आए और आवाज़ भर आई।

उम्मे सलमा ने हिचकियां लेते हुए कहा, अच्छा प्यारे शौहर अल-विदाअ।

यह कहते ही ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं।

बच्चा अभी तक रो रहा था।

यह अफ़सोसनाक मंज़र देख कर भी काफ़िरों का दिल न पसीजा।

अबू सलमा ने हैरत भरी नज़रों से बच्चे और बीवी को देखा और मक्के की गलियों से निकल कर यसरब की तरफ़ चल पड़े।

क़त्ल का मंसूबा

वतन और घर-बार छोड़ना आसान नहीं होता, फिर ऐसी हालत में कि जो कुछ पूंजी हो, दिन दहाड़े लूट ली जाए, बच्चे छीन लिए जाएं, बीवी ज़बरदस्ती जुदा कर दी जाये। मुसलमानों की हिजरत सच तो यह है कि बड़ी हिम्मत का काम ही था।

धीरे-धीरे तमाम मुसलमान मक्का से यसरब को हिजरत कर चुके थे, सिर्फ़ बूढ़े और कमज़ोर मुसलमान ही बाक़ी रह गये थे या हुज़ूर सल्ल०, अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत अली रज़ि० बाक़ी रह गये थे।

जब तमाम मुसलमान यसरब पहुंच गये, तो कुफ़्फ़ारे मक्का को बड़ी चिंता हुई और जब उन्हें यह मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया है, तो उन की चिंता और बढ़ गई।

चुनांचे उन्हों ने एक शानदार जलसा किया। इस जलसे में हर क़बीले और हर ख़ानदान के बड़े सरदारों को बुलाया गया, बाहर से भी कुछ लोग बुलाये गये और कड़े पहरे में ख़ुफ़िया अन्दाज़ में कार्रवाई शुरू हुई। सदारत की कुर्सी पर एक नज्दी बूढ़े तजुर्बेकार शख़्स को बिठाया गया। यह निहायत चालाक और होशियार आदमी था।

अबू जह्ल ने जलसे की कार्रवाई शुरू करते हुए कहा—

ग़ैरतमन्द अरबो ! अफ़सोस है कि इस्लाम हम लोगों के लिए एक

मुस्तक़िल ख़तरा बन गया है। जितना ही हमने इस्लाम को मिटाने की और मुसलमानों को अपने मज़हब में लौटाने की कोशिश की, उतनी ही हम को नाकामी हुई। इस्लाम फैलता रहा और मुसलमानों में से एक आदमी भी अपने बाप-दादा के मज़हब में न लौटा। आप को अच्छी तरह मालूम है कि मुसलमानों की एक बड़ी तायदाद हब्शा को हिजरत कर के चली गयी है और वे वहां अपने मज़हब की तब्लीग़ कर रहे हैं और दूसरी बड़ी जमाअत यसरब पहुंच गयी है। यसरब के ज़्यादातर लोग मुसलमान हो गये हैं। अब इस्लाम की ताक़त बढ़ गयी है। अगर इस ताक़त को न तोड़ा गया, तो हमारे माबूदों को, हमारी क़ौम को, हमारे मज़हब को अरब से ज़लील होकर निकलना पड़ेगा या हम को मुसलमानों का महकूम बन कर ज़िल्लत व पस्ती की हालत में रहना होगा। मेरे ख़्याल में हम में से कोई भी आदमी इस ज़िल्लत को गवारा न करेगा। आज हम सब इस लिए जमा हुए हैं कि मुस्तक़बिल के इस ख़तरे का कोई ऐसा इलाज करें कि जिस से यह ख़तरा जाता रहे।

अबू जह्ल ख़ामोश हो गया। उस के ख़ामोश होने पर अबू लहब खड़ा हुआ। उस ने कहा, ऐ बुत के पुजारियो ! मेरे भाई ने जिस ख़तरे का ज़िक्र किया है, यह कोई मामूली ख़तरा नहीं है, बल्कि निहायत ही ज़बर-दस्त ख़तरा है। सोचना यह है कि हम किस तरह इस ख़तरे से अपने आप को बचा सकते हैं। मेरे ख़्याल में ख़तरे की वजह मुहम्मद का वजूद है। जब तक वह हैं, ख़तरा रहेगा, इस लिए कोई ऐसा उपाय बताइए, जिस से या तो मुहम्मद हमारे मज़हब में लौट आएं या वह इतने बेबस और मज-बूर कर दिये जाएं कि नये मज़हब की तब्लीग़ न कर सकें।

अबू सुफ़ियान ने कहा, यह ख़्याल कि मुहम्मद हमारे मज़हब में लौट आएंगे, फ़ुज़ूल है। उन्हें हर मुम्किन लालच दे कर समझाया गया, हर तरह से कहा गया, लेकिन वह हमारे मज़हब में तो क्या दाख़िल होते, अपने मज़हब की तब्लीग़ से भी हाथ न खींच सके। इस ख़्याल को छोड़ दो और कोई ऐसी तज्वीज़ सोचो कि जिस से यह ख़तरा हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए।

वलीद बोला, इस में कोई शक नहीं कि ख़तरा हज़रत मुहम्मद की तरफ़ से है, इसलिए उन पर ही क़ाबू हासिल करना चाहिए। मेरी राय में तो उन्हें पकड़ कर, ज़ंजीरों में जकड़ कर एक कोठरी में बन्द करो और इतनी जिस्मानी तक्लीफ़ पहुंचाओ कि मुहम्मद का ख़ात्मा ही हो जाए।

सदर की राय थी कि यह तज्वीज़ मुनासिब नहीं है, क्यों कि जब उन

के रिश्तेदारों और उन के मानने वालों को यह हाल मालूम होगा, तो उन्हें छुड़ाने की कोशिश करेंगे और इस तरह से फ़साद और बढ़ जाएगा। लड़ाई शुरू हो जाएगी। कोई नहीं कह सकता कि इस लड़ाई का अंजाम क्या होगा और यह कब तक जारी रहेगी।

अब्दुल बख़्तरी बोला, बेशक ऐसा करना ख़तरे से ख़ाली नहीं। मेरी राय में उन्हें देश निकाला दे दीजिए और कोशिश कीजिए कि वह या और कोई मुसलमान कभी मक्के में दाख़िल न होने पाये।

मक्कार सदर बोला, सब से ज़्यादा ख़राब और नुक़सान देह तज्वीज़ यही तज्वीज़ है। मुसलमान ख़ुद वतन छोड़ रहे हैं, मुहम्मद भी ज़रूर हिजरत करेंगे, शायद वह भी यसरब ही जाएंगे। वहां जा कर वह आज़ादी से अपनी ताक़त बढ़ायेंगे और अपने मज़हब की तब्लीग़ करेंगे। इस लिए यह तज्वीज़ किसी तरह भी मुनासिब नहीं है।

उत्बा ने कहा, मेरे ख़्याल में मुहम्मद (सल्ल०) को उनके मकान ही में नज़रबंद कर दिया जाए, लेकिन न उन्हें मकान से बाहर निकलने दिया जाए न किसी से मिलने दिया जाए।

सदर ने इस तज्वीज़ की भी मुख़ालफ़त की और कहा, इस तज्वीज़ से कोई फ़ायदा नहीं हो सकता। शोबे अबी तालिब में तीन साल तक तो क़ैद रखा गया था, लेकिन उस का उल्टा ही असर हुआ और लोगों को आम तौर से उन के साथ हमदर्दियां हो गयीं।

अब अबू जह्ल उठा और उस ने कहा—

इस वक़्त मेरे ज़ेहन में एक चीज़ आयी है, उम्मीद है आप लोग इसकी ताईद करेंगे। हम को मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल कर देना चाहिए। उन के क़त्ल में जो अंदेशा है, वह यही तो है कि आले हाशिम उन का इंतिक़ाम उन्हें क़त्ल करने वाले से ले लेंगे तो कोई एक आदमी उन्हें क़त्ल न करे, बल्कि हर एक क़बीले से एक-एक जवान चुना जाए और ये लोग मुहम्मद को अपने घेरे में ले कर हर ओर से एकदम उन पर तलवार की बारिश शुरू कर के उन्हें क़त्ल कर डालें। चूंकि यह क़त्ल तमाम क़बीलों की तरफ़ से होगा, इसलिए बनू हाशिम तमाम क़बीलों से इंतिक़ाम न ले सकेंगे, बल्कि दियत मंज़ूर कर लेंगे और दियत में वे जो कुछ मांगेंगे, सब आसानी से मिल कर अदा कर सकेंगे।

सदर ने कहा, बेशक यही वह तज्वीज़ है, जो अव्वल ही मेरे दिमाग़ में आयी थी, सुनो, फ़साद की वजह मुहम्मद (सल्ल०) ही की ज़ात है। उस के मिटाने से ही तमाम फ़ित्ना व फ़साद मिट सकता है। इस बड़े फ़साद को मिटाने के लिए इस से बेहतर कोई तज्वीज़ नहीं हो सकती, जो आप

के सामने भाई अबू जह्ल ने पेश की है। आप इस तज्वीज़ की ताईद करते हैं ?

हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, बेशक यह तज्वीज़ निहायत मुनासिब है। इस पर अमल करने से फ़साद और फ़साद की बुनियाद का ख़ात्मा हो जायेगा।

तमाम मज्मे ने इस तज्वीज़ की ताईद की, तो हर क़बीले से एक-एक होशियार तजुर्बेकार और बहादुर जवान चुन लिया गया। जब लोगों को चुन लिया गया, तो सदर ने कहा, अब वक़्त तज्वीज़ करो कि किस वक़्त हमला किया जाए।

अबू लहब ने कहा, कल सुबह जिस वक़्त हुज़ूर सल्ल० अपने मकान से बाहर निकलें, तो तुरन्त हमला कर के उन्हें क़त्ल कर दिया जाए।

सदर ने पूछा, क्या दिन में ?

अबू लहब ने कहा, हां दिन में। क्यों इस में कोई परेशानी है ?

बूढ़े ने संजीदगी से कहा, वही क़िसास की परेशानी है। यह सही है कि तमाम लोगों की तलवारें एक साथ पड़ेंगी, फिर भी बनू हाशिम उस आदमी के क़बीले से क़िसास लेगें, जिस की तलवार पहले पड़ेगी। यह बात कि पहले किस की तलवार पड़ी, दिन में मालूम हो सकती है, लेकिन रात के अंधेरे में इस का भी डर नहीं रहता, इसलिए इस काम के लिए दिन नहीं, रात ही बेहतर है।

बस तो अभी चल कर क्यों न ख़ात्मा कर दिया जाए ? अबू जह्ल बोल पड़ा।

मैं यह चाहता हूं कि यह बात भी न हो कि हम ने जान-बूझकर उन्हें क़त्ल कर दिया है। सदर ने कहा, बल्कि इस हैसियत से क़त्ल करना चाहिए, जैसे कि इत्तिफ़ाक़िया क़त्ल कर दिये गये, इसलिए आज की रात मुनासिब नहीं है, क्योंकि इस वक़्त रात ज़्यादा हो चुकी है, कल सुबह-सवेरे ही उन को क़त्ल करने की कोशिश करनी चाहिए और जब भी मौक़ा हाथ लगे, बिला तकल्लुफ़ उन्हें क़त्ल कर डालना चाहिए।

सब ने सदर की इस राय से इत्तिफ़ाक़ किया, चुनांचे चुने हुए लोगों को हिदायत की गयी कि वे आने वाली रात को हुज़ूर सल्ल० के घर का घिराव कर लें और जिस वक़्त वे अपने मकान से बाहर आएं, फ़ौरन उन्हें क़त्ल कर डालना चाहिए।

फिर मज्लिसे शूरा बरख़ास्त कर दी गयी।

हिजरत का इरादा

दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल० अपने मकान में आराम फ़रमा रहे थे। दोपहर का वक़्त था धूप बहुत तेज़ थी। हवा बन्द थी, गर्मी की तेज़ी से हर जानदार बौखलाया हुआ था। लोग धूप से बचने के लिए अपने-अपने घरों में घुसे हुए थे, किसी को बाहर निकलने की हिम्मत न होती थी।

हुज़ूर सल्ल० की अचानक आंख खुल गई। आप उठ कर बैठ गये।

हज़रत फ़ातमा जाग रही थीं। हुज़ूर सल्ल० को मामूल के ख़िलाफ़ उठ कर बैठते देख कर आपके पास आ गयीं, बोलीं, अब्बा मियां! आप मामूल के ख़िलाफ़ क्यों उठ बैठे?

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत फ़ातमा को अपने पास ही बिठा लिया, फिर बताया, बेटी! आज मुझे हिजरत का हुक्म हुआ है। मैं रात को किसी वक़्त यसरब चला जाऊंगा।

हज़रत फ़ातमा ने बड़ी मासूम निगाहों से आप को देखा, बोली, अब्बा जान! मुझे भी अपने साथ ले चलेंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, मैं तुम को नहीं ले जा सकता। तुमको बाद में बुलाया जायेगा।

बोलीं, अच्छा, अब्बा जान! मुझे जल्द ही बुलाइएगा। आप की याद से मैं बे-क़रार रहूंगी।

हुज़ूर सल्ल० ने उठते हुए फ़रमाया, बहुत जल्द बुलाऊंगा, घबराना मत।

यह कह कर हुज़ूर सल्ल० मकान से बाहर आये और धूप की तेज़ी के बावजूद आंखें नीची किये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के मकान की तरफ़ चल दिये। वहां पहुंचे, दरवाज़ा खटखटाया।

हज़रत अबू बक्र बाहर निकले। सलाम किया और मुसाफ़ा करते हुये कहा, क्या हिजरत का हुक्म हो गया है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू बक्र! तुम्हारा ख़्याल बिल्कुल सही है, मगर यहां इस क़िस्म की बातें मुनासिब नहीं हैं। यहां तुम्हारी लड़कियां भी हैं, चलो, अन्दर तंहाई में बातें करें।

फिर दोनों मकान के भीतर जा कर खजूर की चटाई पर बैठ गये।

आप ने फ़रमाया, ऐ अबू बक्र! अल्लाह की तरफ़ से मुझे यह इत्तिला दी गयी है कि रात मक्का के क़ुरैश ने यह तज्वीज़ किया है कि वे आज रात मेरे मकान का घेराव कर लें और जब मैं मकान से बाहर निकलूं तो मुझे

फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाये।

हज़रत अबू बक्र गुस्से से सुर्ख़ हो गए, बोले, बदमाश इतने दलेर हो गये हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने बताया, मुझे हुक्म मिला है कि मैं रात ही को उन के बीच से हो कर निकलूं, ताकि उन्हें मालूम हो जाये कि अल्लाह अपने चुने बन्दों की हिफ़ाज़त किस तरह करता है और जिस की हिफ़ाज़त ख़ुदा करे उसे कोई मार नहीं सकता।

हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया, सही कहा आप ने। लेकिन यह तो बताइये, आप के साथ कौन होगा ?

तुम ! आप ने जवाब दिया।

हज़रत अबू बक्र मारे ख़ुशी के फूले न समाये। बोले—

ख़ुदा का हज़ार-हज़ार शुक्र है कि उस ने मेरी तमन्ना पूरी कर दी। हुज़ूर सल्ल० ! मैं ने कई महीने पहले दो ऊंटनियां ख़रीद कर बबूल के जंगल में छोड़ दी थीं। वे खा-पी कर मोटी हो गयी हैं। उन में से एक ऊंटनी आप की नज़्र है।

हुज़ूर सल्ल० मुस्करा दिये, बोले—

अबू बक्र ! तुम्हारा शुक्रिया ! मैं जानता हूं कि तुम को अल्लाह और उस के रसूल और इस्लाम से कितना लगाव है, मगर मैं चाहता हूं कि ऊंटनी की क़ीमत मुझ से ले लो।

क़ीमत ? हज़रत अबू बक्र चौंके, मेरे हुज़ूर ! मैं ने ऊंटनी आप ही के लिये ख़रीदी थी। जानता था कि अचनाक हिजरत का हुक्म होगा, सवारी भी ज़रूरी होगी, इसलिये उस वक़्त अपनी तरफ़ से आप को यह ऊंटनी नज़्र करूंगा। अब आप हैं कि क़ीमत देने पर इसरार है, बताइये, क़ीमत कैसे लूं ?

मैं ख़ुशी से क़ीमत देता हूं, तुम भी ख़ुशी से क़ुबूल करो, आप ने फ़रमाया।

हुज़ूर की ख़ुशी मेरी तमाम ख़ुशियों पर निछावर है। अगर आप की यही ख़ुशी है, तो मैं दिल व जान से तैयार हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने ऊंटनी की क़ीमत अदा करने के बाद फ़रमाया, हमें आज ही रात में चलना होगा। इसलिये तैयारी कर लेना एक रहबर की भी ज़रूरत है। रहबर को आज साथ न लेना, जब ज़रूरत होगी, बुला लेंगे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० बोले, मुझे रहबर का पहले ही से ख़्याल था।

इसलिये मैं ने अब्दुल्लाह बिन उरैक़त को इस काम के लिये तैयार कर लिया है।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, लेकिन वह तो मुश्रिक है, क्या उस पर भरोसा किया जा सकता है?

बेशक वह मुश्रिक है, लेकिन अरब होने के नाते वह वायदे का पक्का है, हज़रत अबू बक्र ने बताया।

जब तुम्हें एतमाद है, तो मेरे एतमाद न करने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अच्छा मैं अब जा रहा हूं। तुम ख़ुफ़िया तरीक़े से तमाम तैयारियां रात से पहले-पहले पूरी कर लो।

मैं पूरी राज़दारी से काम करूंगा, आप बे-फ़िक्र और मुतमइन रहें। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा।

रात को सो न जाना, न जाने किस वक़्त आऊं? हुज़ूर सल्ल० ने चलते-चलते फ़रमाया।

चाहे जब तश्रीफ़ लाइये, मुझे इन्तिज़ार करता ही पायेंगे, हज़रत अबू बक्र ने जवाब दिया।

इस के बाद हुज़ूर सल्ल० उठे और उस चिलचिलाती धूप में सर पर चादर रखे अपने मकान की ओर चल पड़े।

फिर सारा दिन आप मकान ही पर रहे, बाहर न निकले।

दिन गुज़र गया, शाम हुई, रात में इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ भी हो गये।

इसी बीच हज़रत अली रज़ि० आ गये। उन्हों ने सलाम किया, आपने दुआ दी और फ़रमाया—

अच्छा हुआ, तुम इस वक़्त आ गये हो, आओ, बैठो।

हज़रत अली क़रीब ही बैठ गये, फिर एक सवाल किया, हुज़ूर सल्ल० आज काफ़िरों और मुश्रिकों ने हमारे घर को घेर लिया है, यह नई बात क्यों है?

फ़रमाया, चचा के बेटे! इन्हों ने आज मेरे क़त्ल की साज़िश की है। ये चाहते हैं कि इस तरह हम इस्लाम को मिटा देंगे। ये बेवक़ूफ़ हैं, इतना भी नहीं समझते कि इस्लाम मिटने वाला नहीं है।

इस्लाम की फ़ितरत में क़ुदरत ने लचक दी है
उतना ही यह उभरेगा, जितना कि दबा देंगे।

हज़रत अली ने बताया, मगर आप ने बाहर निकल कर नहीं देखा। सैकड़ों बदमाश तलवार लिए मकान के चारों तरफ़ खड़े हैं। मुझे डर है

कि कहीं वे अपने इरादे में कामियाब न हो जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम खौफ़ न करो, इत्मीनान रखो, खुदा मुझे उन की शरारत से बचाये रखेगा। अगर आज मैं क़त्ल हो जाने वाला होता तो मुझे हिजरत का हुक्म न होता। मैं मुतमइन हूं कि खुदा मेरी हिफ़ाज़त करेगा।

हज़रत अली ने पूछा, हुज़ूर सल्ल० ! आप कब हिजरत करेंगे ?

आज ही नहीं, बल्कि इसी वक़्त रवाना हो जाऊंगा। रात को तुम मेरे बिस्तर पर आराम करना।

क्या आप मुझे अपने साथ न ले जाएंगे ? हज़रत अली ने पूछा।

नहीं, इसलिए कि कुफ़्फ़ार की अमानतें मेरे पास मौजूद हैं। तुम सुबह तमाम अमानतें उन के मालिकों के सुपुर्द कर के यसरब आ जाना, आप ने फ़रमाया।

क्या हुज़ूर ! आप यसरब तशरीफ़ ले जाएंगे ? हज़रत अली ने पूछा।

हां, मुझे यसरब ही जाने का हुक्म हुआ है ?

तंहा तशरीफ़ ले जाएंगे ? हज़रत अली ने पूछा।

नहीं, मेरे सफ़र के साथी अबू बक्र सिद्दीक़ होंगे, आप ने बताया और कहा, अब तुम आराम से मेरे बिस्तर पर लेट जाओ।

हज़रत अली बिस्तर पर लेट गये।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली को अमानतों की फ़ेहरिस्त दी और खुद मुसल्ले से उठ कर हज़रत फ़ातमा के पास गये।

चूंकि रात ज़्यादा हो चुकी थी, इसलिए हज़रत फ़ातमा सो गयी थीं। आप ने थोड़ी देर खड़े हो कर मुहब्बत भरी नज़रों से उन्हें देखा और चुपके से फ़रमाया, मेरी मासूम बेटी ! मेरी नूरे नज़र ! अल विदाअ् ! अपने बाप से मुहब्बत करने वाली बेटी ! बाप पर कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मों को देख कर रोने वाली बेटी ! रुख़्सत। मैं तुझे आज खुदा के सुपुर्द करता हूं। उस खुदा के जो पूरे कायनात का निगहबान है, वही तेरी हिफ़ाज़त करेगा और ऐ मेरी मुहब्बत की दुनिया ! वही फिर तुझ से मुझ को मिलायेगा।

यह कहते हुए हुज़ूर सल्ल० की आंखें भीग गयीं।

आप रुख़्सत होकर दरवाज़े पर आये। दरवाज़े से झांककर देखा, तो देखा कि अनगिनत कुफ़्फ़ार नंगी तलवारें लिये दरवाज़े के सामने निहायत मुस्तैदी से खड़े दरवाज़े की तरफ़ देख रहे हैं। उस वक़्त आधी रात बीत चुकी थी चूंकि रात अंधेरी थी, इसलिए हर तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने मुट्ठी भर ख़ाक उठायी और सूरः यासीन की शुरू की आयतें

पढ़ना शुरू कर दीं। पढ़ कर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ाक पर दम किया और ख़ाक कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंकी। अगरचे यह ख़ाक मुट्ठी भर थी, पर हवा ने उस को चारों तरफ़ फैला दिया, ऐसा फैलाया कि आंखों पर परदा पड़ गया।

हुज़ूर सल्ल० बिस्मिल्लाह कह कर मकान से बाहर निकले और कुफ़्फ़ार के सामने से गुज़र गये और किसी की नज़र न पड़ी और सब के सब जहां और जिस हालत में खड़े थे, उसी तरह खड़े रहे।

हुज़ूर सल्ल० निहायत इत्मीनान से चल कर हज़रत अबूबक्र के मकान पर पहुंचे, धीरे से दस्तक दी। दस्तक देते ही दरवाज़ा खुला। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, अबू बक्र तैयार हो ?

बिल्कुल तैयार हूं, हज़रत अबूबक्र ने कहा, दोनों ऊंटनियां और रह-बर को ले कर अभी हाज़िर होता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अभी न ऊंटनियों की ज़रूरत है और न रहबर की। मैं ने रास्ते में देखा है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश जगह-जगह खड़े निगरानी कर रहे हैं। अगर हम ऊंटों पर सवार हो कर चलेंगे, तो वे जान जायेंगे कि हम जा रहे हैं। मुनासिब यह मालूम होता है कि हम दोनों तंहा चलें।

जैसी आप की मरज़ी, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, क्या मैं अब्दुल्लाह से कह आऊं कि वह ऊंटनियों को ले कर मक्के से बाहर आ जायें ?

इस की भी अभी ज़रूरत नहीं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं ने अभी यह तै किया है कि मक्का के नशेब में जो पहाड़ है, जिसे कोहे सौर कहते हैं, उस के किसी ग़ार में छिप रहेंगे। कुफ़्फ़ार ढूंढते-ढूंढते जब अपने घरों में थक कर बैठ जाएंगे, तो फिर हम वहां से निकलेंगे और यसरब का रास्ता तै कर लेंगे।

बड़ी अच्छी तज्वीज़ है, हज़रत अबू बक्र ने कहा, पर यह नहीं कहा जा सकता कि हमें कब तक ग़ारे सौर में ठहरना पड़े, इसलिए आप की मंशा हो, तो मैं अपने बेटे अब्दुल्लाह को हिदायत कर आऊं कि वह रात को खाना ले कर कोहे सौर पर आ जाया करे और साथ ही दिन भर की ख़बरें भी हम को सुना जाया करे।

निहायत मुनासिब तज्वीज़ है, आप ने फ़रमाया।

और अपने ग़ुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा से कह दूं कि वह बकरियों का रेवड़ कोहे सौर के क़रीब ही चराया करे, ताकि ज़रूरत के वक़्त हम दूध

भी पी लिया करें और अब्दुल्लाह और मेरी बेटी अस्मा जो वापस जाया करेंगे, तो उन के क़दमों के निशान और बकरियों के रेवड़ के चलने से मिट जाया करेंगे, हज़रत अबू बक्र ने दूसरी राय रखी।

यह राय भी बहुत बेहतर है, आपने फ़रमाया।

हज़रत अबू बक्र मकान के भीतर गये। उन के वालिद अबू क़हाफ़ा जाग रहे थे। वह अंधे थे। उन्हों ने क़दमों की चाप सुन कर कहा, यह मकान के आंगन में कौन फिर रहा है ?

अबू क़हाफ़ा अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० चाहते थे कि उन्हें भी उन की हिजरत का इल्म न हो, पर उन के टोकने पर बताना ही पड़ा। आप उन के पास गये और धीरे से बोले, मैं हूं अबू-बक्र !

पूछा, तुम आधी रात को सेहन में क्या कर रहे थे ?

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, प्यारे बाप ! आज मैं यहां से हिजरत कर रहा हूं।

क्या मुहम्मद सल्ल० के साथ जा रहे हो ? उन्हों ने पूछा।

जी हां।

अच्छा जाओ, लेकिन शायद मक्के वाले तुम को जाने न दें, अबूक़हाफ़ा ने कहा।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने जोश में आ कर कहा, उन की मजाल नहीं जो रोक सकें।

नर्मी से अबू क़हाफ़ा ने समझाया, प्यारे बेटे ! मक्का वालों से लड़ न पड़ना।

हज़रत अबू बक्र ने कहा, जहां तक मुम्किन होगा, नहीं लड़ूंगा।

अबू क़हाफ़ा ने दुआ दे कर हज़रत अबू बक्र को विदा किया।

आप बढ़ कर वहां पहुंचे, जहां आप के बेटे अब्दुल्लाह और बेटी अस्मा और आप के ग़ुलाम आमिर बैठे जाग रहे थे। ये तीनों मुसलमान हो चुके थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अब्दुल्लाह से मुख़ातब हो कर कहा, हमारे बेटे ! हम कोहे सौर पर जा रहे हैं और वहीं रहेंगे, तुम कुफ़्फ़ार से मिल कर उन के इरादों की रात में जा कर इत्तिला दे आया करना और बेटी अस्मा ! तुम रोज़ाना खाना पका कर अपने भाई अब्दुल्लाह के साथ ले आया करना और आमिर ! तुम रोज़ाना आधी रात तक कोहे सौर पर बकरियां चराने लाया करना और जिस तरफ़ से अब्दुल्लाह और अस्मा

आएं या जाएं, उसी तरफ़ बकरियां ले जाया करना, ताकि उन के क़दमों के निशान मिट जाया करें।

तीनों ने अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने का वायदा किया।

उन्हें हिदायत कर के हज़रत अबूबक्र वापस लौटे और हुज़ूर सल्ल० के पास आ गए।

आप ने पूछा, क्या सब लोग जाग रहे थे, जो तुम इतनी जल्द हिदायत कर के चले आए ?

हज़रत अबूबक्र ने जवाब दिया, हां हुज़ूर सल्ल० ! तमाम लोग जाग रहे थे। मैं ने सब को उन की ज़िम्मेदारियां बता और समझा दी हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आओ, चलो।

दोनों रात के अंधेरे में गुम हो गये। खाना काबा पहुंच कर उस का तवाफ़ किया। जब मक्का के आखिरी हिस्से को तै करने लगे, तो आप ने पलट कर देखा और कहा—

ऐ मक्का शहर ! तू मुझे बहुत महबूब है, लेकिन अफ़सोस कि मैं आज तुझ से जुदा हो रहा हूं। तेरे बेटों ने मुझे इस जगह न रहने दिया।

हज़रत अबू बक्र ने पूछा, क्या हुज़ूर सल्ल० ! आप को मक्का से बहुत ज़्यादा मुहब्बत है ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत ज़्यादा इसलिए नहीं कि यह मेरा वतन है, बल्कि इस लिए कि इसे इब्राहीम खलीलुल्लाह ने बनाया है और यहां अल्लाह का पसन्दीदा घर है।

क्या इस शहर में हम फिर दाखिल न हो सकेंगे ? अबू बक्र ने पूछा।

ज़रूर दाखिल होंगे, पर उस वक़्त जब कि यह (मक्का) खुदापरस्तों का घर बन जाएगा।

जब तो कुछ फ़िक्र नहीं, तब तो हमारी औलाद ही यहां आकर आराम करेगी।

तुम रहोगे, न मैं रहूंगा, न अली रज़ि० रहेंगे, न उमर रहेंगे, न उस्मान रहेंगे। कोई न रहेगा, हम यसरब में रहेंगे और वहीं मरेंगे, अलबत्ता हज करने के लिए यहा आते रहेंगे।

जिस जगह हुज़ूर सल्ल० रहेंगे, हम सब वहीं रहेंगे। हम को वह जगह बहिश्त से बढ़ कर अज़ीज़ है।

हुज़ूर सल्ल० खामोश हो गये। अब ये दोनों मक्का से बाहर निकल कर खुले मैदान में आ गये थे। हर ओर अंधेरा फैला हुआ था। अगरचे सितारे चमक-चमक कर अंधेरों को दूर करने की कोशिश कर रहे थे, पर

अंधेरा कहां दूर होता था।

थोड़ी दूर चल कर ये दोनों रात के अंधेरे में ग़ायब हो गये।

तलाश

कुफ़्फ़ारे मक्का ने हुज़ूर सल्ल० के मकान का घेराव रात के शुरू ही में कर लिया था। वे तमाम रात तलवार लिए खड़े निगरानी करते रहे। उन का इरादा था कि हुज़ूर सल्ल० जब मकान से बाहर निकलेंगे, तो अचानक उन पर हमला कर के उन्हें शहीद कर डालेंगे।

जब हुज़ूर सल्ल० अपने मामूल के मुताबिक़ न उठे, तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने मकान के अन्दर झांका, आप के बिस्तर पर हज़रत अली को चादर ओढ़े सोते पाया, कुफ़्फ़ार ने समझा कि हुज़ूर सल्ल० ही आराम फ़रमा रहे हैं और इत्मीनान से खड़े निगरानी करते रहे।

जब सुबह हो गयी और उजाला हो गया, तो हज़रत अली उठे, चादर उतार कर एक तरफ़ रख दी और खड़े हो गये।

कुफ़्फ़ार अब भी झांक रहे थे।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर से हज़रत अली को उठते देखा, उन्हें हैरत के साथ ग़ुस्सा भी आया, जिन्हें वे हुज़ूर सल्ल० समझ रहे थे, वह हज़रत अली रज़ि० थे।

हज़रत अली मकान से बाहर निकले। कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन को अपने घेरे में ले लिया। इन कुफ़्फ़ार में आम लोग न थे, बल्कि अबू जह्ल, अबू सुफ़ियान, वलीद, उत्बा, आस, ज़मआ, अबुल बख़्तरी, नज़र, हकीम, शैबा जैसे मुअज़्ज़ज़ लोग थे।

अबू सुफ़ियान ने डपट कर कहा, अली! बताओ, मुहम्मद कहां हैं?

हज़रत अली ने बग़ैर डरे कहा, मुझे ख़बर नहीं, मैं तुम्हारे सामने सारी रात सोता रहा हूं। तुम सब निगरानी करते रहे हो, तुम को हुज़ूर सल्ल० का हाल मालूम होगा?

कुफ़्फ़ार को आप के इस जवाब पर बड़ा ग़ुस्सा आया।

अबू जह्ल ने कहा, अली! तुम ज़रूर जानते हो कि वह कब और कहां चले गये? अगर तुम हम को बता दो, तो हम तुम को मक्के का हुक्मरां बना देंगे।

हज़रत अली ने फ़रमाया, मुझे हुकूमत की ज़रूरत नहीं है। मैं जिस

हाल में हूं, बेहतर हूं। ख़ुदा जिस हाल में रखे, राज़ी हूं। मुझे परेशान न करो, छोड़ दो, सुबह की नमाज़ का वक़्त क़ज़ा हो रहा है।

अबू लहब ने एक तमांचा मार कर कहा, अली ! जब तक तुम मुहम्मद सल्ल० का पता न बताओगे, रिहा नहीं हो सकते। हम तुम को क़ैद कर देंगे। अगर तुम अपनी ज़िद पर क़ायम रहे, तो क़त्ल कर दिये जाओगे।

हज़रत अली जवान थे, अपनी ज़िद पर अड़े रहे। उन्हें भी ग़ुस्सा आ गया। उन्हों ने बिगड़ कर कहा, ऐ चचा ! ग़नीमत जानो। हुज़ूर सल्ल० ने किसी मुसलमान को तलवार उठाने का हुक्म नहीं दिया, वरना मेरी तलवार म्यान से निकल कर तमाम हिमायतियों के टुकड़े कर डालती।

अबू सुफ़ियान ने बिगड़ कर कहा, ज़रा-सी ज़ुबान और गज़ भर की बात ! अली ! अपनी जान से दुश्मनी न करो। बता दो, वरना क़त्ल कर दिये जाओगे।

हज़रत अली अब भी नहीं घबराये, गरज कर बोले, दूर हो जाओ, कमबख़्तो ! तुम मुझे डराते हो। तुम नहीं जानते कि दुनिया की कोई ताक़त मुझे मरऊब नहीं कर सकती।

अबू जह्ल को सख़्त ग़ुस्सा आया। उस ने आप के सर के बाल पकड़ कर खींचे और वलीद और अबू सुफ़ियान ने आप को घूंसों से मारना शुरू किया।

हज़रत अली ने कहा, बेरहमो ! बेदर्दो ! ख़ुदा तुम्हारे ज़ुल्मों को देख रहा है। तुम बहुत कुछ फल-फूल गये। अब तुम्हारी तबाही का वक़्त आ रहा है। तुम मरोगे और बेकसी की मौत मरोगे, तुम्हारे लिए आंसू कोई भी न बहाएगा।

लोग जानते थे कि हज़रत अली की बद-दुआ खाली नहीं जाती। वह डर गये और उन्हों ने आप को छोड़ दिया।

आप नमाज़ पढ़ने चले गये।

अबू जह्ल ने कहा, यह बहुत बुरा हुआ कि मुहम्मद बच कर निकल गये। हम अब तक अपने तमाम मंसूबों में नाकाम रहे।

अबू सुफ़ियान ने कहा, चलो, यह देखें कि वह तंहा गये हैं या अबूबक्र सिद्दीक़ को भी साथ ले गये हैं।

वलीद ने कहा, मेरा ख़्याल है कि दोनों गये होंगे, फिर भी आओ, अबू बक्र के मकान पर चल कर इत्मीनान कर लें।

सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो गये। वहां से चले, हज़रत अबू बक्र के मकान पर पहुंचे। कुछ देर बाहर खड़े रहे, फिर सब मकान के भीतर घुसते चले गये।

अबू जह्ल ने अस्मा से कहा, अस्मा ! तुम्हारे वालिद कहां हैं ?

अस्मा पर किसी का रौब न पड़ा।

उन्हों ने बग़ैर डरे कहा, मुझे ख़बर नहीं है।

अबू जह्ल ने ग़ज़बनाक हो कर इस ज़ोर से तमांचा मारा कि उन के कान से बाली निकल कर गिर गयी।

हज़रत अस्मा को जोश आ गया और उन्हों ने ग़ैज़ व ग़ज़ब में भर कर कहा, अबू जह्ल ! शर्म करो, मर्द हो कर औरत पर हाथ उठाते हो। नहीं जानते हो कि ग़ैरतमन्द औरत ईंट का जवाब पत्थर से दिया करती है। तुम्हारे तमांचे का जवाब तलवार की नोक से दिया जाता मगर इस वजह से माज़ूर हूं कि ख़ुदा के रसूल सल्ल० ने तलवार उठाने से मना कर दिया है।

अबू जह्ल ने ख़ड़े तेवरों को देखकर कहा, इतनी जुर्रात।

हज़रत अस्मा ने कहा, जुर्रात देखना चाहते हो, तो तलवार लो और सामने आ जाओ। यह कहते ही हज़रत अस्मा मकान के भीतर घुस गयीं और तलवार उठा लायीं। म्यान से खींच कर हज़रत अस्मा ने कहा—

अब बताओ, कौन मुझ पर तलवार उठाने की जुर्रात करता है?

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ क़ुरैश की ग़ैरतमंद लड़की ! तेरी हिम्मत तारीफ़ के क़ाबिल है, तू बहादुर अबू बक्र की दलेर लड़की है। क़ौम को ऐसी ही बहादुर लड़कियों की ज़रूरत है। अबू जह्ल ने ग़लती की कि शेरनी को लोमड़ी समझ कर छेड़ा। चलो, वापस चलो और उन दोनों को तलाश करो। बेकार वक़्त बर्बाद न करो।

तमाम लोग वहां से चल कर और घोड़ों पर सवार होकर मक्के के चारों ओर रास्तों पर दौड़ गये तमाम दिन घोड़े दौड़ते रहे लेकिन उन दोनों का कहीं पता न चला। शाम के वक़्त सब नाकाम वापस हो गये।

जासूस लगा दिये गये। पता लगाते-लगाते वे कोहे सौर तक भी जा पहुंचे। उस ग़ार के मुहाने पर भी पहुंच गये, जिस में ये दोनों छिपे हुए थे। अन्दर इतना अंधेरा था कि कोई चीज़ नज़र न आती थी।

फिर भी वे बड़े ग़ौर और तवज्जोह से अपनी तलाश जारी किये रहे।

हुज़ूर सल्ल० और अबूबक्र रजि० ग़ारे सौरमें

हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजि० मक्का से निकल

कर चले और पूरी ख़ामोशी से कोहे सौर की तरफ़ रवाना हुए।

दोनों चुप-चाप चले जा रहे थे, चूंकि कुफ़्फ़ार के पीछा करने का डर था, इस लिए किसी क़दर तेज़ी से चल रहे थे। आख़िरकार वे चढ़ते-चढ़ते कोहे सौर पर चढ़ गये। यहां पहुंच कर हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अब कोई अंदेशा नहीं रहा। सुबह से पहले ही उस में जा छिपेंगे। दोनों बढ़े और ग़ारे सौर के किनारे पर जा कर खड़े हुए।

ग़ार में बहुत अंधेरा था। उस के अन्दर शायद ही कभी किसी इंसान का दख़ल व गुज़र हुआ हो।

हुज़ूर सल्ल० ग़ार के अन्दर दाख़िल होने लगे, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! ठहरिये, यह ग़ार न जाने कितने दिनों से ना-साफ़ है। नहीं कहा जा सकता कि इस में कितने कीड़े होंगे, इसलिए हुज़ूर सल्ल० एक चट्टान पर बैठ गये।

हज़रत अबू बक्र के टटोलने पर मालूम हुआ कि ग़ारे सौर तमाम कूड़ा-करकट वग़ैरह से भरा पड़ा है। अपने हाथों से कूड़ा-करकट इकट्ठा कर के बाहर निकाल-निकाल कर एक दूसरे ग़ार में फेंकना शुरू कर दिया।

यह काम यों तो मामूली था, लेकिन था बड़ा ख़तरनाक। ऐसी जगह अक्सर ज़हरीले जानवर रहा करते हैं, किसी बिच्छू या सांप या दूसरे ज़हरीले जानवर का होना और काट लेना बिल्कुल मुम्किन था, पर हज़रत अबू बक्र को इस की कोई परवाह न थी। वह बराबर ग़ार की सफ़ाई में लगे थे।

एक घंटे की मेहनत के बाद उन्हों ने ग़ार को बिल्कुल साफ़ कर दिया। अब उन्हों ने ग़ार का जायज़ा लेना शुरू किया। हर चट्टान और हर पत्थर को टटोला। उन्हें बहुत से सूराख़ मालूम हुए। चूंकि यह नहीं कहा जा सकता था कि सूराख़ ख़ाली हैं या उनके अन्दर कीड़े मकोड़े छिपे हुए हैं, इसलिए हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने तमाम सूराख़ों को बन्द करने का इरादा किया, पर सूराख़ बन्द करने के लिए कोई चीज़ आप के पास न थी। किसी तरह तमाम सूराख़ों को आप बन्द करने में कामियाब हो गये, फिर भी एक रह ही गया। आप ने सोचते-सोचते यह तर्कीब निकाली कि इस पर अपना अंगूठा लगा लिया जाए।

चुनांचे जब हुज़ूर सल्ल० ग़ार में दाख़िल हुए और आराम फ़रमाने लगे, उस वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पांव का अंगूठा सूराख़ पर था। उस सूराख़ में एक काला सांप छिपा हुआ था, उस ने हज़रत अबू बक्र

सिद्दीक़ के अंगूठे को डस लिया। तक्लीफ़ से वह तिलमिला उठे, लेकिन चूंकि हुज़ूर सल्ल० सो रहे थे और उन के आवाज़ निकालने से आप की नींद में ख़लल पड़ सकता था, इसलिए बिना किसी आवाज़ और हरकत के वह उस तक्लीफ़ को बरदाश्त करते रहे।

हुज़ूर सल्ल० जब जागे, तो हज़रत अबू बक्र के चेहरे से उनकी तक्लीफ़ को भांप लिया, पूछा—

क्या बात है ? आप का चेहरा क्यों उतरा हुआ है ?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने जब पूरी बात बता दी, तो आप ने फ़रमाया, देखूं कहां काटा है ?

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने सूराख़ पर से अंगूठा उठाया, तो फ़ौरन ही सांप निकल कर खड़ा हो गया।

आप ने सांप को ख़िताब करते हुए कहा, ऐ काले सांप ! तू ने मेरे दोस्त के अंगूठे पर डस कर मुझे तक्लीफ़ पहुंचायी है।

सांप बहुत ही काला और ख़ौफ़नाक क़िस्म का था, वह हुज़ूर सल्ल० की ओर देख कर झुका और ग़ार से बाहर निकल कर चला गया।

हुज़ूर सल्ल० ने लुआबेदहन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के अंगूठे पर मल दिया। ख़ुदा की शान ! जलन फ़ौरन जाती रही।

इस के बाद दोनों आराम फ़रमाते रहे।

जब सूरज डूब गया और चारों तरफ़ अंधेरा फैल गया, हज़रत अबू-बक्र के ग़ुलाम आमिर बकरियों का रेवड़ ले कर आ गये। हज़रत अबू बक्र बाहर निकले। आमिर ने तुरन्त दूध दुह कर हज़रत अबूबक्र को थमा दिया उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० की ओर वह प्याला बढ़ा दिया। पहले हुज़ूर सल्ल० ने पिया, फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने, फिर दोनों सैराब हो गये।

इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र और हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र रज़ि० आ गये।

दोनों ने क़रीब आ कर हुज़ूर सल्ल० को और हज़रत अबू बक्र को सलाम किया।

हज़रत अस्मा खाना लायी थीं। उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० के सामने खाना रख दिया।

हज़रत अबू बक्र ने अपने बेटे से पूछा, बेटे ! कुछ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का हाल सुनाओ। आज का पूरा दिन उन के लिए कैसा बीता ?

हज़रत अब्दुल्लाह ने बताया, प्यारे बाप ! सुबह के वक़्त जब हज़रत अली बिस्तर पर से उठे, तो कुफ़्फ़ार ने उन्हें घेर लिया। उन से पूछा गया,

हुज़ूर सल्ल० कहां हैं ? उन्हों ने ला-इल्मी ज़ाहिर की, तो उन को बड़ा गुस्सा आया और हज़रत अली को मारना शुरू कर दिया। पहले क़ैद किया, फिर कुछ सोच-समझ कर आप को रिहा कर दिया। तमाम कुफ़्फ़ार हुज़ूर सल्ल० के चले आने से बहुत हैरान थे, वे सब हमारे मकान पर आये थे। मैं घर पर मौजूद न था। अस्मा थीं। वे अस्मा से पूछने लगे, तेरा बाप कहां है ? उस ने कहा, मुझे ख़बर नहीं। ज़ालिम अबू जह्ल ने गुस्से में आ कर एक ज़ोर का तमांचा मारा, जिस के लगने से उस के कान की बाली गिर गयी।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० को इतना सुनते ही जोश आ गया। बोले, बद-बख़्त अबू जह्ल ! तेरी क़ज़ा तेरे सर पर मंडला रही है।

हज़रत अस्मा समझ गयीं कि अब्बा जान को तमांचा लगने का हाल जान कर तक्लीफ़ पहुंची है, इसलिए वह जल्दी से बोल पड़ीं—

अब्बा जान ! अबू जह्ल ने धीरे से तमांचा मारा था।

अबू बक्र ने जोश में भर कर कहा, मगर उस मल्ऊन को मेरी बच्ची के मारने का क्या हक़ था ? काश, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें तलवार उठाने का हुक्म दिया होता, तो मैं उस बुज़दिल मरदूद से जा कर इंतिक़ाम लेता।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे भाई ! हमारा और तुम्हारा और मुसलमानों का बदला ख़ुदा लेगा। ख़ुदा के सुपुर्द करो, वह बेहतर बदला लेने वाला है।

यह सुन कर हज़रत अबू बक्र रज़ि० नर्म पड़ गये। उन्हों ने फ़रमाया, मैं ने ख़ुदा के सुपुर्द कर दिया। ख़ुदा मेरी बेटी का बदला लेगा। अच्छा अब्दुल्लाह ! फिर क्या हुआ ?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, जब उन्हें आप दोनों का पता न चला, तो तमाम मक्का वालों को खोजने और तलाश करने का हुक्म दिया।

लोग हर तरफ़ दौड़े। ऊंटों और घोड़ों पर सवार हो कर दूर तक गये, पर सब नाकाम रहे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्शा-अल्लाह नाकाम ही रहेंगे।

अब ये सब बैठ गये और सब ने मिल कर खाना खाया।

खाना खा कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अब्दुल्लाह से कहा, प्यारे बेटे ! जाओ, और अपनी बहन को भी ले जाओ। कल रात को फिर आना और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तमाम रिपोर्ट सुनाना।

हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत अस्मा दोनों सलाम कर के चले गये।

उन के चले जाने के बाद हज़रत अबू बक्र ने आमिर से कहा, आमिर! तुम बकरियों का रेवड़ ले कर उन के पीछे इस तरह से जाओ, जिस से कि इन दोनों के पैरों के निशान मिट जाएं।

आमिर ने कहा, ऐसा ही होगा, मेरे हुज़ूर

अब आमिर रेवड़ ले कर चला।

सब के चले जाने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने और हज़रत अबू बक्र रजि० ने इशा की नमाज़ पढ़ी और एक साफ़ चट्टान पर चादर बिछा कर रात भर आराम फ़रमाते रहे। सुबह में जागे, ज़रूरतें पूरी कीं और सुबह की नमाज़ पढ़ कर फिर ग़ारे सौर में जा छिपे।

जब सूरज निकलने लगा, तो दोनों ने देखा कि एक बड़ी मकड़ी ने ग़ार के मुंह पर आ कर जाला बनाना शुरू किया। जब जाला तन कर उस ने तमाम ग़ार का मुंह ढक लिया, तो एक ओर चली गयी।

उस के जाने के बाद ही दो कबूतर आये और ग़ार के क़रीब घोंसला बनाने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने यह देख कर कहा, ऐ साथी! तुम ने ख़ुदा की हिक्मत देखी?

हज़रत अबू बक्र रजि० ने कहा, हां, देखी। मकड़ी का जाला तन कर चले जाना, कबूतरों का घोंसला बनाना बे-वजह नहीं हो सकता।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ने ठीक समझा, ख्याल होता है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश फिर हमारी खोज में इस तरफ़ आने वाले हैं, इसलिए क़ुदरत ने हमारी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम कर दिया है।

हज़रत अबूबक्र बोले, लेकिन एक कमज़ोर मकड़ी का जाला बनाना और जंगली कबूतरों का घोंसला बनाना, इस से हमारी क्या हिफ़ाज़त हो सकती है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा अपनी हिक्मत के भेद को ख़ुद ही जानता है। हम उस की तह तक नहीं पहुंच सकते।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजि० कुछ कहने वाले ही थे कि कबूतर फड़फड़ाये और उड़ गये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, होशियार! दुश्मन आ पहुंचे।

अब दोनों चुप हो गये। उन्हें ग़ार के बाहर भारी क़दमों की आवाज़ सुनायी दी।

उस वक़्त सूरज सर पर चमक रहा था, लू भी चल रही थी और धूप भी तेज़ थी, पर ग़ार के भीतर अब भी अंधेरा था। हुज़ूर सल्ल० और

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ख़ामोश बैठे क़दमों की चाप सुन रहे थे। आवाज़ बढ़ती हुई आ रही थी। यह बहुत से लोगों के क़दमों की चाप थी।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने बड़े धीरे से कहा, हुज़ूर सल्ल० ! कुफ़्फ़ार सर पर आ पहुंचे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, घबराओ नहीं, अल्लाह हमारे साथ है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० चुप हो गये।

अब क़दमों की आवाज़ इतने क़रीब आ गयी थी कि लगा दुश्मनों ने इन्हें खोज लिया है और उन की तलाश में ग़ारे सौर तक आ गये हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने घबरा कर सर उठाया और ऊपर नज़र कर के देखा तो अबू जह्ल, अबू लहब और अबू सुफ़ियान सामने खड़े थे। इस तरफ़ उन की पीठ थी।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! सामने ही आ गये। अगर ये अपने पांव की तरफ़ नज़र कर लें, तो हम नज़र आ जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने तसल्ली देते हुए कहा, बिल्कुल न डरो, यह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जब हमारे साथ ख़ुदा है, तो किसी का कैसा डर!

हज़रत अबू बक्र कुछ कहने वाले ही थे कि किसी ने कहा, ऐ क़ुरैश के सरदारो ! इस से आगे पता नहीं चलता, या तो मुहम्मद सल्ल० और उस के साथी यहीं कहीं छिप गये हैं या आसमान पर उड़ गये हैं।

अबू जह्ल ने कहा, यहीं तलाश करो, यहीं कहीं छिपे होंगे, आसमान पर उड़ कर नहीं जा सकते।

इस के बाद आवाज़ बन्द हो गयी, सिर्फ़ क़दमों की चाप सुनायी दी।

हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र समझ गये कि लोग उन्हें तलाश कर रहे हैं।

कुछ देर बाद किसी ने कहा, तमाम पहाड़ियां छान मारीं, कहीं पता नहीं मिला, न जाने वे कहां गुम हो गये ?

अबू सुफ़ियान की आवाज़ आयी, हम ने पहाड़ का चप्पा-चप्पा छान मारा, वे उस जगह नहीं हैं। सुराग़रसानों ने हम को धोखा दिया है। अजब नहीं, जो ये उन दोनों से मिल गये हों और हम को धोखा दे कर दूसरी तरफ़ ले आए हों।

अबू जह्ल ने कहा, मुझे इन सुराग़रसानों पर इत्मीनान है, ये हम को धोखा नहीं दे सकते।

एक सुराग़रसां ने कहा, हुज़ूर ! हम यक़ीन दिलाते हैं कि हम ने आप को धोखा नहीं दिया, बल्कि पैरों के निशान का सुराग़ लगाते हुए ठीक

तौर पर लाये हैं, मगर यहां आ कर निशान ग़ायब हो गये हैं।

वलीद ने कहा, इस ग़ार में तो देखो, शायद इस ग़ार के अन्दर छिपे हों।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० यह सुन कर बेचैन हो उठे।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इशारे से तसल्ली दी।

बाहर अबू जह्ल वलीद का जवाब दे रहा था कि यह ग़ार तो बरसों से ख़तरनाक हालत में पड़ा है। कोई इंसान इस में घुसने की हिम्मत नहीं कर सकता।

अबू सुफ़ियान बोल पड़ा, क्या तुम ने मकड़ी का जाला नहीं देखा? अगर कोई इंसान ग़ार के अन्दर दाख़िल होता तो यह जाला सही सालिम रहता? देखो, एक तार भी नहीं टूटा है।

अबू लहब बोला, वलीद की तो अक़्ल मारी गयी है, न कबूतरों का घोंसला नज़र आया, न घोंसले से उड़ने वाले कबूतर दिखायी दिये। भला बदबख़्ती का भी कोई ठिकाना है? आओ, वे यहां नहीं हैं। कोई नहीं कह सकता कि वे कहां चले गये?

वलीद मुंह बना कर रह गया।

तमाम कुफ़्फ़ार ना मुराद वापस लौट आए।

जब वे दूर निकल गये, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, ख़ुदा का हज़ार शुक्र है कि उस ने हमें बचा लिया।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, जो लोग ख़ुदा पर भरोसा करते हैं, ख़ुदा उन की हिफ़ाज़त भी करता है और मदद भी। एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि दुनिया की तमाम ताक़तों से बेनियाज़ हो कर सिर्फ़ ख़ुदा की ताक़त पर भरोसा करे, अल्लाह उस की ज़रूर मदद करेगा।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, बेशक, सही फ़रमाया, मेरे हुज़ूर सल्ल०। हम कुफ़्फ़ार के इतने क़रीब और इस दर्जा सामने थे कि अगर वे एक क़दम आगे बढ़ कर ग़ार के भीतर झांकते, तो हम उन की नज़र में आ जाते, पर ख़ुदा को हमारी हिफ़ाज़त मंज़ूर थी, इस लिए ऐसी वजहें पैदा कर दी कि कुफ़्फ़ार धोखा खा कर वापस चले गये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब बे-ख़ौफ़ व ख़तर आराम करो। दोनों ग़ार के अन्दर चादरें बिछा कर पड़ गये। सूरज ढलने पर उठे, ग़ार से बाहर निकले। तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ी। उस वक़्त सूरज बड़े ज़ोर से चमक रहा था, धूप बहुत तेज़ थी। गरम हवा के झुलस देने वाले झोंके चल रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० से कहा, किसी बुलन्द चट्टान पर खड़े होकर चारों तरफ़ नज़र डाल कर देखो कि आमिर यहां कहां रेवड़ चरा रहा है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने बहुत अच्छा कहा और एक ऊंची चट्टान पर चढ़ गये।

कोहे सौर पर बहुत ही कम पेड़ थे। सूरज की गरमी किसी पेड़ को उगने ही न देती थी। नंगा पहाड़ था और झुलसी हुई चट्टानें थीं।

हज़रत अबू बक्र सब से ऊंची चट्टान पर चढ़ गये। उन्हों ने घूम फिर कर चारों तरफ़ नज़र डाली। हर तरफ़ गरम हवाएं चल रही थीं। उन्होंने यसरब की तरफ़ देखा, तो उधर से एक सांडनी सवार तेज़ी से चलता हुआ और इधर ही आता हुआ नज़र आया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० नीचे उतरे, हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आकर कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आमिर का कुछ पता नहीं है। हर तरफ़ तेज़ हवाएं चल रही हैं। अलबत्ता यसरब की तरफ़ से एक सांडनी सवार आ रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चूंकि हमारी हिजरत की ख़बर यसरब पहुंच चुकी है, इस लिए यसरब वाले इन्तिज़ार कर रहे हैं। मुम्किन है हमारे न पहुंचने की वजह से उन का कोई क़ासिद आ रहा हो।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, यही मेरा भी ख्याल है। सोच रहा हूं कि पहाड़ से नीचे उतर कर उस सांडनी सवार को रोक लूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, एक तो अंदेशा है कि कहीं कुफ़्फ़ार किसी पहाड़ के दामन में छिपे हुए न हों, दूसरे मुम्किन है कि जिस क़ासिद को हम मुसलमान समझ रहे हैं, कुफ़्फ़ार का क़ासिद हो। आओ, हम ग़ार के अन्दर छुप जाएं, यहां धूप की गर्मी तक्लीफ़ दे रही है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, चलिए।

दोनों ग़ार के अन्दर दाख़िल हुए और चादरों पर जा बैठे। देर तक दोनों ख़ामोश बैठे रहे।

कुछ अर्सा गुज़रने पर उन्होंने किसी के क़दमों की चाप सुनी। दोनों चौंके, फिर अबू बक्र रज़ि० ने कहा, मालूम होता है, फिर कोई आ रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां आ रहे हैं, शायद दो आदमी हैं, आवाज़ क़रीब आती जा रही है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे हुज़ूर सल्ल० ! मुझे तलवार चलाने की इजाज़त दे दीजिए। आख़िर हम कब तक छुपे रहेंगे और कब तक डरते रहेंगे ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तक ख़ुदा का हुक्म नाज़िल न हो, हम को तलवार न उठाना चाहिए। देखो, परदा-ए ग़ैब से क्या ज़ाहिर होने वाला है ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ऊपर नज़र की। उन्हों ने आमिर को सामने खड़े देखा। वह खुश हुए।

उन्हों ने कहा, आमिर तुम हो ? कैसे आये ? ग़ार के अन्दर चले आओ।

आमिर ग़ार के अन्दर गया और बताया कि यसरब से एक क़ासिद आया है और वह हुज़ूर सल्ल० से मिलना चाहता है।

आप ने फ़रमाया, उसे बुला लो।

आमिर वापस गये और उसे बुला लाये।

यसरबी मुसलमान ने आते ही आप को सलाम किया।

आप ने पूछा, तुम चिलचिलाती धूप और गरम हवा में कैसे आए ?

उस ने बताया, यसरब के तमाम मुसलमान आप के आने के इन्तिज़ार में हैं। हर दिन यसरब से निकल कर शाम तक आप का इन्तिज़ार करते हैं। जब आप न आये और मुद्दत बीत गयी, तो मुझे न आने की वजह मालूम करने के लिए आप की खिदमत में रवाना किया गया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं यसरब के मुसलमानों का शुक्रगुज़ार हूं। अफ़सोस है कि मैं इस वक़्त ऐसी हालत में हूं कि तुम्हारा सत्कार भी नहीं कर सकता। पहाड़ के अन्दर छिपा हुआ हूं। मेरे भाई! मेरी क़ौम मेरे क़त्ल पर तुली है। वह नहीं चाहती कि मैं यसरब जाऊं यह अलग बात है कि ख़ुदा की मदद मेरे साथ है। अगर उसकी मर्ज़ी हुई तो परसों यसरब की तरफ़ चल पड़ूंगा। अगर तुम ठहरना न चाहो, तो चले जाओ। यसरब वालों से कह दो कि मैं आ रहा हूं।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने आमिर से कहा, इन्हें खूब दूध पिलाओ और जब ये रवाना हो जाएं, तब तुम रात को आना।

आमिर क़ासिद को ले कर रवाना हुए।

उन के चले जाने के बाद इन दोनों ने अस्र की नमाज़ पढ़ी। जब दिन डूब गया तो मग़रिब की नमाज़ ग़ार ही में पढ़ कर बाहर आ गये।

कुछ ही देर चट्टान पर बैठे थे कि आमिर रेवड़ ले कर आ गये।

उन्हों ने बताया कि क़ासिद दूध पी कर उसी वक़्त चला गया था।

तमाम दिन हज़रत अबू बक्र ने और हुज़ूर सल्ल० ने कुछ खाया-पिया न था, इसलिए दोनों को भूख और प्यास मालूम हो रही थी। दोनों ने थोड़ा-थोड़ा दूध पिया।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने आमिर से पूछा, क्या तुम ने दिन में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को देखा ?

आमिर ने बताया, ऐ मेरे मालिक ! आज दिन भर मैं पहाड़ के दामन ही में बकरियां चराता रहा हूं। मैं ने क़ुरैश के सरदारों को पहाड़ पर आते देखा था। मैं डर गया कि वे ज़ालिम आप का सुराग़ न लगा लें। मैं भी कान लगा कर बैठ गया। मैं ने तै कर लिया था कि अगर उन्हों ने आप को पकड़ा तो मेरी तलवार उन के सरों पर पड़ेगी। मैं ने तलवार को चमका भी लिया था, पर ख़ुदा का शुक्र है कि इस की नौबत ही नहीं आयी और इधर उधर देख कर लौट गये। उन के चले जाने के बाद मेरा इरादा हुआ कि दूध ले कर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचूं, लेकिन क़िस्मत ने ऐसा न करने दिया।

तुम ने बहुत अच्छा किया, हज़रत अबू बक्र ने कहा, क्यों कि तुम्हारा उस वक़्त आना बेहतर न था।

आमिर ने बताया कि क़ासिद को भी लेकर उसी वक़्त हाज़िर हुआ, जबकि कुफ़्फ़ारे मक्का शहर में चले गये थे।

फिर हज़रत अब्दुल्लाह और अस्मा दोनों आ गये।

हज़रत अस्मा ने बढ़ कर खाना हुज़ूर सल्ल० के सामने रख दिया।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अब्दुल्लाह से पूछा, आज की रिपोर्ट क्या है?

आज भी कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन तमाम जंगलों की ख़ाक छानते फिरे, हज़रत अब्दुल्लाह ने बताया, दोपहर के वक़्त मक्के में वापस आये। अस्र के वक़्त उन्हों ने हरम शरीफ़ में बैठ कर मश्विरे किये और क़रार पाया कि जो कोई हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को गिरफ़्तार कर के ले आए, उसे सौ ऊंट इनाम दिये जाएंगे। चुनांचे उसी वक़्त इस इनाम का एलान कर दिया गया।

इन्शाअल्लाह, कुफ़्फ़ार अपने इरादे में नाकाम रहेंगे, हुज़ूर सल्ल० ने पूरे यक़ीन से यह बात कही और बताया कि अब हमें कल रात को यहां से रवाना हो जाना चाहिए।

तो क्या मैं अब्दुल्लाह से कहूं कि वह कल रात को दो ऊंटनियां ले आएं और अब्दुल्लाह बिन उरैक़त को इत्तिला दे दी जाए कि वह रात को अपने ऊंट ले कर रहबरी के लिए आ जाए।

हां, उन को हिदायत कर दो, हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी।

मेरे बेटे ! तुम ने बातें सुन लीं, कल उन पर अमल करना, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अपने बेटे अब्दुल्लाह से कहा।

फिर बेटी अस्मा से मुख़ातब हो कर कहा, कल तुम सत्तू और खजूरें थैले में भर कर लाना। मेरे कपड़े भी लेती आना।

दोनों ने एक साथ कहा, जी, बहुत अच्छा।

इस के बाद सब ने बैठ कर खाना खाया।

खाने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह और अस्मा घर को लौट गये।

आमिर उन के पीछे रेवड़ ले कर रवाना हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने इशा की नमाज़ पढ़ी और एक चट्टान पर सोने के इरादे से लेट गए। सुबह आंख खुली, ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए, नमाज़ पढ़ी और फिर ग़ार में जा घुसे।

दोपहर तक ग़ार में बैठे रहे। जब सूरज ढल गया और ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त आ गया, तो वे दोनों नमाज़ में लग गए।

अभी ये नमाज़ पढ़ ही रहे थे कि आमिर दूध ले कर आ गया।

उस ने दूध एक तरफ़ रख दिया और खुद भी नमाज़ पढ़ने लगा।

नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत अबूबक्र ने आमिर से पूछा, कहो, आज तो कुफ़्फ़ार इस तरफ़ नहीं आए ?

नहीं, आमिर ने जवाब दिया, बल्कि आज कुछ लोग यसरब, तायफ़, जद्दा और दूसरी सिम्तों में गए हैं। आम तौर से कुफ़्फ़ार आज खोजने नहीं निकले।

शायद वे मायूस हो कर बैठ गए, हुज़ूर सल्ल० ने कहा।

ऐसा ही लगता है, आमिर ने जवाब दिया।

फिर दोनों ने दूध पिया और दूध पी कर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, आमिर ! देखते रहो कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहां जाते हैं ? और इस बात का खास तौर से ख्याल रखना कि यसरब की तरफ़ कितने लोग जाते हैं ?

आगे कहा, आज रात हम सब यहां से रवाना हो जाएंगे और तुम को भी साथ चलना होगा। बहुत अच्छा, आमिर ने जवाब दिया।

आमिर चला गया और दोनों बुज़ुर्ग ग़ार में आराम फ़रमाने लगे।

जब सूरज डूब गया, दोनों ग़ार से बाहर आए और एक साफ़-सी चट्टान पर बैठ कर अब्दुल्लाह का इन्तिज़ार करने लगे।

आज सफ़र १४ नबवी की ३० तारीख थीं। हर तरफ़ अंधेरा छाया

हुआ था। झुलसी हुई चट्टानें बड़ी डरावनी लग रही थी। आसमान पर सितारे तैर रहे थे। उन की रोशनी इतनी हल्की थी कि ज़मीन के रहने वाले उस से फ़ायदा न उठा सकते थे।

थोड़ी देर बाद अब्दुल्लाह और अस्मा आ गये।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, अब्दुल्लाह ! आज कुफ़्फ़ारे मक्का क्या करते रहे ?

कुफ़्फ़ारे मक्का के बड़े तो थक हार कर बैठ गए हैं, पर मुफ़्लिस और लालची क़िस्म के लोग घोड़ों और ऊंटों पर सवार हो कर तमाम दिन मारे-मारे फिरते रहे, यहां तक कि उन का जोश भी ठंडा होता जा रहा है, हज़रत अब्दुल्लाह ने जवाब दिया।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने पूछा, तुम ने अब्दुल्लाह बिन उरैक़त से कह दिया था कि वह ऊंटनियां ले कर आ जाए ?

कह दिया था, अब्दुल्लाह ने जवाब दिया और बताया कि वह तमाम दिन तैयारियां करता रहा है। यक़ीन है कि वह अब आता ही होगा।

उसी वक़्त आमिर रेवड़ ले कर आ गए। उन्हों ने आते ही दूध पेश किया।

हुज़ूर सल्ल० ने दूध पिया। जब आप दूध से फ़ारिग़ हुए तो अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ऊंटनियां ले कर आ गए और उनके साथ एक ऊंट भी था।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने पूछा, अब्दुल्लाह ! तुम तैयार हो कर आ गए ?

जी हां, मैं तैयार हो कर आ गया हूं, अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने जवाब दिया।

किसी आदमी ने तुम को आते तो नहीं देखा ? हज़रत अबू बक ने पूछा।

नहीं, अब्दुल्लाह का जवाब था।

किसी से तुम ने बातों-बातों में हम लोगों की रवानगी का ज़िक्र तो नहीं किया ? यह दूसरा सवाल था।

नहीं, अब्दुल्लाह ने जवाब दिया, ऐसी गिरी हरकत की उम्मीद मुझ से न करें।

सही कहा, अबू बक्र ने तस्दीक़ दी।

अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने फिर कहा, मेरे ख़्याल में हम को जल्द रवाना होना चाहिए। अगर हम अभी चल दें तो दिन निकलने तक काफ़ी दूर निकल जाएंगे।

ठीक है, जल्दी करो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो सामान अब्दुल्लाह और अस्मा लाए हैं, उन्हें लाद लो और फ़ौरन रवाना हो जाओ।

बहुत बेहतर, हज़रत अबू बक्र बोले और ऊंटनियां बिठा कर सामान लादना शुरू किया।

सामान ही क्या था, कुछ जोड़े कपड़े, कुछ चादरें, कम्बल, दो थैले. एक सत्तू का, एक खजूर का और बस।

यह सामान था इन बुज़ुर्गों का।

सब से पहले हुज़ूर सल्ल० एक ऊंटनी पर सवार हुए, दूसरी पर हज़रत अबू बक्र बैठे। उन्हों ने आमिर को अपने पीछे सवार किया और तीसरे ऊंट पर अब्दुल्लाह बिन उरैक़त बैठे।

जब चारों आदमियों का यह छोटा-सा क़ाफ़िला चलने लगा, तो हज़रत अस्मा की आंखों में आंसू आ गए और उन्हों ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! मुसलमानों की रहनुमाई कर। मेरे बाप और ख़ानदानी ग़ुलाम और उन के रहबर की रहनुमाई कर।

प्यारी बेटी ! हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया, अल-फ़िराक़ (जुदा होता हूं)।

फ़िराक़ का नाम सुनते ही हज़रत अस्मा की आंखों से आंसू उबल पड़े, उन्हों ने फ़रमाया, प्यारे बाप ! क्या तुम हमेशा के लिए जुदा हो रहे हो?

मेरी बच्ची ! हमेशा के लिए नहीं, हज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया, मैं यसरब पहुंच कर जल्द ही तुझे और तेरी छोटी बहन आइशा और तेरे भाई को बुला लूंगा।

देखो, हम को भूल न जाना, हज़रत अस्मा ने सिसकियां भरते हुए कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अस्मा न घबराओ, ख़ुदा तुम्हारी और तुम्हारे अज़ीज़ों की हिफ़ाज़त करेगा। जब हम को इत्मीनान नसीब होगा, हम सब से पहले तुम्हें ही बुलायेंगे।

मेरे हुज़ूर सल्ल० ! याद रखिएगा, हज़रत अस्मा ने कहा।

कैसे भूल सकता हूं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, अल-विदाअ़।

हज़रत अस्मा ने फ़ी अमानिल्लाह कहा।

फिर यह छोटा सा क़ाफ़िला चल पड़ा।

अब्दुल्लाह और अस्मा रेवड़ हांक कर ले गए।

क़ाफ़िला बड़ी ख़ामोशी से चल रहा था। कोहे सौर से उतर कर पहाड़ का निचला मैदान तै करने लगा।

अभी ये थोड़ी दूर चले ही थे कि सामने से एक अरब आता दिखायी दिया। यह अरब कहीं दूर से आ रहा था। उस के पांव पर धूल जमी हुई थी।

उस ने ऊंट सवारों को देखा, फ़ौरन ही उस की ज़ुबान से निकला, कौन ? मुहम्मद और अबूबक्र? ज़रूर ये दोनों क़ौम से डर कर भागे जा रहे हैं।

अरब ने ये बातें बड़े धीरे से कहीं कि ऊंट सवारों ने न सुनीं।

वे बराबर चलते रहे, यहां तक कि कुछ दूर चल कर रात की तारीकी में गुम हो गए।

अरब मक्का की ओर बढ़ता रहा, मगर अब उस ने अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी।

पीछा

अरब जल्द-जल्द चल कर मक्का में दाखिल हुआ।

रात ज़्यादा हो गयी थी, इसलिए मक्के की गलियां सून-सान थीं, सारे रास्ते वीरान पड़े थे। एक आदमी भी आता-जाता न दिखायी पड़ रहा था तमाम शहर में खामोशी छायी हुई थी।

अरब चल कर एक मकान में घुसा। वहां भी सब सो रहे थे। वह भी सो गया सूरज निकलने पर वह उठा, ज़रूरत से फ़ारिग़ हो कर हरम शरीफ़ पहुंचा। वहां सैकड़ों बुत परस्त बुतों के सामने झुके हुए थे, उन की पूजा कर रहे थे। एक ओर कुछ आदमी बैठे बातें कर रहे थे। उन में सुराक़ा बिन मालिक भी था।

सुराक़ा बहुत बहादुर और फिर क़ुरैशी सरदार था। अरब उस के पास जा कर बैठ गया।

जब वे बातें कर चुके, तो अरब ने कहा, सुराक़ा ! मैं रात अस्फ़ान की तरफ़ से आ रहा था। मैं ने तीन ऊंट सवार जाते देखे, अगरचे अंधेरा था, मगर जब मैं ने ध्यान से देखा, तो उन्हें पहचान लिया। वह मुहम्मद और उन के साथी थे।

सुराक़ा बड़ी तवज्जोह से उन की बातें सुन रहा था। उसे सौ ऊंट का इनाम याद आया। उस ने सोचा कि वही क्यों न इस इनाम को हासिल करे ? फिर लोगों को मुग़ालता में डालने के लिए उस ने कहा, नहीं मुहम्मद न थे, वह तो परसों यसरब चले गये। वह कोई और होंगे ?

अरब ने कहा, शायद मुझे ही धोखा हुआ हो।

हां, तुम ने धोखा खाया है, सुराक़ा ने कहा, मुझे भरोसे के लोगों ने बताया है कि मुहम्मद यसरब चले गये हैं।

लोगों ने सुराक़ा की बात पर यक़ीन कर के अरब को झुठला दिया।

थोड़ी देर में सब लोग उठ गये। सुराक़ा सीधा घर पहुंचा। घर पहुंचते ही उस ने हथियार और घोड़ा अपने गुलाम के हाथ शहर से बाहर भेज दिया और खुद सब की नज़रों से बचता हुआ मक्के से बाहर आया। बाहर आते ही वह हथियार से सज-धज कर घोड़े पर सवार हुआ और गुलाम को हिदायत की कि किसी को न बताना कि मैं कहां जा रहा हूं। मुझे मालूम हुआ है कि मुहम्मद (सल्ल०) उस तरफ़ गये हैं और मैं उन का पीछा करने जा रहा हूं। अगर मैं ने उन को गिरफ़्तार कर लिया तो आज सौ ऊंट का इनाम हासिल करूंगा।

गुलाम ने सर झुका कर इताअत की हामी भर ली।

सुराक़ा रवाना हुआ।

अभी वह कुछ क़दम ही चला था कि एक गिद्ध घोड़े के क़रीब से गुज़रा घोड़ा बिदका। सुराक़ा होशियारी से न बैठा था, धड़ाम से नीचे आ रहा।

उसे गिद्ध पर बड़ा गुस्सा आया।

वह उठा, कपड़े झटकने लगा और गिद्ध को गालियां देने लगा। कपड़े झटक कर घोड़े पर सवार हुआ और क़दम-क़दम चला। कोहे सौर पर पहुंच कर उस ने ऊंटों के पैरों के निशान देखे। वह खुश होकर इन निशानों पर तेज़ी से रवाना हुआ। पूरे तीन घंटे तक तेज़ी से चलता रहा।

जब सूरज सर पर आ गया तो उस ने तीन ऊंट दूरी पर जाते हुए देखे। उस ने समझ लिया कि जिन की खोज में वह घर से निकला है, सामने वही जा रहे हैं।

उस ने एड़ लगा कर घोड़े को और तेज़ी से दौड़ाया।

घोड़ा निहायत फ़र्राटे भरता हुआ तेज़ी से जा रहा था, लेकिन अभी एक मील भी फ़र्राटा न भर पाया था कि उस ने ठोकर खायी और अगले पांव ज़मीन में धंस गये।

अगरचे सुराक़ा निहायत होशियारी से बैठा था, पर इस बार भी न संभल सका, लुढ़कनी खा कर घोड़े के आगे गिरा। उसे फिर गुस्सा आया। वह समझा, शायद फिर किसी गिद्ध ने गुस्ताखी की। उस ने चारों तरफ़ देखा, मगर गिद्ध वहां न था।

इस बार उसे घोड़े पर गुस्सा आया, पर जब उस ने घोड़े के पांव की

तरफ़ देखा, तो उस के पांव घुटने तक ज़मीन में धंसे हुए थे।

उसे बड़ा ताज्जुब हुआ, उसे डर भी हुआ कि माजरा क्या है? लेकिन उस ने जल्द ही अपने आप पर क़ाबू पा लिया। उस ने घोड़े को निकाला और फिर उस पर सवार हो कर तेज़ी से रवाना हुआ।

उस ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपने साथी मुसाफ़िरों के साथ बड़े इत्मीनान से बातें करते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। उस ने घोड़े की रफ़्तार तेज़ कर दी।

जब घोड़ा बहुत क़रीब हो गया, तो अचानक वह पेट तक ज़मीन में धंस गया। सुराक़ा फिर घोड़े से नीचे आ पड़ा।

उस पर हैबत छा गयी।

उस ने समझ लिया कि जिन का पीछा करने के लिए वह दौड़ कर आया है, उन तक पहुंच संभव नहीं है। उन का ख़ुदा उन की हिफ़ाज़त कर रहा है।

उसे इस बात पर अफ़सोस हुआ कि वह इनाम हासिल करने में नाकाम रहेगा, बहरहाल उसने अक़्ल से काम लिया, उसने हुज़ूर सल्ल० को आवाज़ दे कर कहा, ऐ मुसलमानों के रहनुमा! ज़रा ठहर कर मेरी बातें सुन लीजिए।

आप ने उस की आवाज़ सुन कर सवारी रोक दी, तीनों ऊंट रोक दिये गये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सुराक़ा! जल्द आ कर कहो, क्या कहना है?

सुराक़ा दौड़ कर आप के पास पहुंचा।

उस ने कहा, ऐ मुसलमानों के रहनुमा! मैं आप को और आप के साथियों को गिरफ़्तार करने के इरादे से आया था। जब से मैं ने आप का पीछा करने के लिए घोड़ा रवाना किया है, उस वक़्त से अब तक तीन बार घोड़े से गिर चुका हूं। पहली दो बार मैं ने इत्तिफ़ाक़ समझा, पर अब जब तीसरी बार मेरा घोड़ा पेट तक धंस गया, तो मैं ने समझा कि आप का ख़ुदा आप की हिफ़ाज़त कर रहा है, आप को कोई गिरफ़्तार नहीं कर सकता। मेरे हुज़ूर! मुझे यक़ीन आ गया कि एक न एक दिन आप मक्का के हुक्मरां होंगे, न सिर्फ़ मक्का के, बल्कि पूरा अरब आप के क़ब्ज़े में होगा। इस लिए मैं चाहता हूं कि आप मेरे घर वालों के लिए अमाननामा लिख दें, ताकि उस मौक़े पर हम लोग सुकून से रह सकें।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से मुख़ातब हो कर कहा, इसे अमाननामा लिख दो।

हज़रत अबू बक्र ने ऊंट पर बैठे-बैठे ही अमाननामा लिख कर सुराक़ा की तरफ़ फेंक दिया।

सुराक़ा ने उसे एहतियात से अमामा में बांध लिया।

यह पहला अमाननामा लिखा गया था।

सुराक़ा ने कहा, अब हुज़ूर इत्मीनान से तशरीफ़ ले जाएं, मैं वापस आ रहा हूं। जो लोग इस तरफ़ से आप का पीछा करते हुए आ रहे होंगे, मैं उन को वापस कर दूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने सुराक़ा के इन लफ़्ज़ों का जवाब न दिया और रवाना हो गये।

सुराक़ा भी अपने घोड़े के पास आया, सवार हुआ और वापस मक्का की ओर लौट गया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की ज़िंदगी के हालात

आफ़ताबे आलम

भाग : 3

लेखक
मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

आफ्ताबे आलम

लेखक

मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Aaftab-e-Aalam

Author:

Maulana Muhammad Sadiq Hussain Sardhanvi Marhoom

Edition: **2014**

Pages: **86 + 126 + 130 + 140 = 482**

प्रकाशक

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qâbristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

इस्लाम का असर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुराक़ा को अमाननामा दिला कर रवाना हुए।

दोपहर का वक़्त था, इसलिए धूप में तेज़ी भी थी और हवा भी बहुत गर्म थी। रेत इतनी तप रही थी कि जिस्म से लगते ही जिस्म तपने लगता था।

चूंकि डर था कि कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर सल्ल० का पीछा कर सकते हैं, इसलिए अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने आम और सीधे रास्ते को छोड़ दिया था इस पूरे नये रास्ते पर दूर-दूर तक न साया था, न नख़्लिस्तान कि बैठकर दो घड़ी सस्ता लिया जाए। हर तरफ़ या तो रेत का समुन्दर था या रेत के तोदे या पहाड़।

अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने कहा, मालिक ! धूप और गर्म हवा ने परेशान कर दिया है, प्यास से जान लबों पर आ गयी है। अगर हम इस तरह सफ़र करते रहे, तो अंदेशा है कि कहीं हमारी ज़िंदगियां ख़त्म न हो जायें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ज़रा-सी तक्लीफ़ से घबरा गये। मुसलमानों को देखो, उन्हों ने कितनी सख़्तियां बरदाश्त की हैं। उन पर सख़्तियां सिर्फ़ इस लिए की गयीं कि एक ख़ुदा की पूजा करते और एक ख़ुदा को मानते थे। अब्दुल्लाह ! मुझ से कहा गया कि मैं अपनी क़ौम को बद-दुआ दे दूं, लेकिन मैं बद-दुआ न दे सका। बद-दुआ कैसे देता ? वे लोग तो नासमझ हैं, वे मुझे नहीं पहचानते, ज़रूरत है कि वे मुझे पहचानें। ज़रूर एक दिन ऐसा होगा कि वे इस्लाम की तरफ़ झुकेंगे, कलिमा पढ़ेंगे, मुसलमान होंगे। अब्दुल्लाह ! याद रखो, हर तक्लीफ़ के बाद राहत है, हीरा तराशने के बाद ही ख़ूबसूरत बनता है, सोना तपाने से निखरता है, इंसान को तक्लीफ़ व मुसीबत से न घबराना चाहिए।

उस वक़्त एक निहायत बुलन्द टीला सामने रास्ते के सिरे पर आ गया था। ऐसा लगता था कि जैसे उस ऊंचे और उत्तर-दक्खिन तक फैले हुए टीले ने रास्ता रोक दिया है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने उस टीले को देखकर कहा—

अब्दुल्लाह ! कहीं तुम रास्ता तो भूल नहीं गए हो ? देखो टीले ने रास्ता रोक दिया है। क्या हमको वापस लौटना पड़ेगा ?

अब्दुल्लाह ने कहा, नहीं मेरे आक़ा ! हम थोड़ी दूर दक्खिन की ओर चल कर पच्छिम की ओर निकल जायेंगे। ऊंट-ऊंटनियां बावजूद तेज़ धूप और गर्म हवा होने के निहायत तेज़ी से दौड़ रही थीं।

थोड़ी देर में पहाड़ जैसा रेत का तोदा क़रीब आ गया। अब्दुल्लाह पच्छिम की तरफ़ ज़रा मुड़ गया।

थोड़ी दूरी पर खजूर के कुछ पेड नज़र आने लगे।

यह खुशी की बात थी।

फिर तेज़-तेज़ यह क़ाफ़िला इन पेड़ों के पास पहुंचा। यहां हिरनों की खाल का एक तंबू खड़ा था। तंबू के सामने दो ऊंट जुगाली कर रहे थे और तंबू के दरवाज़े पर एक दुबली सी बकरी खड़ी थी।

इस क़ाफ़िले ने खेमे से कुछ दूरी पर अपने ऊंट बिठाये और ऊंटों से नीचे उतरे। ऊंटों के आगे बैठने और उनके उतरने से जो आवाज़ आयी, उस आवाज़ को सुन कर खेमे के अन्दर से एक बूढ़ी औरत बाहर निकली। वह दरवाज़े पर खड़ी हो कर हुज़ूर और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को हैरत भरी नज़रों से देखने लगी।

उस बूढ़ी औरत का नाम उम्मे माबद था। बड़ी नेक औरत थीं।

जब हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० उस की तरफ़ बढ़े तो वह खुद भी उन की तरफ़ चली। उस ने हज़रत अबू बक्र से खिताब करते हुए कहा, मैं भी कितनी खुश क़िस्मत हूं अबूबक्र ! आज मेरे खेमे पर अबू क़हाफ़ा का बेटा मेहमान बन कर आया है। यह तुम्हारे साथ और कौन हैं ?

यह अल्लाह के नबी हैं, हज़रत अबू बक्र ने कहा।

उम्मे माबद ने चिल्ला कर कहा, क्या हज़रत मुहम्मद ? आमना के लाल ? ऐ अरब के रोशन सूरज ! खुश आमदीद ! बनू खुज़ाआ की एक बूढ़ी औरत का सलाम क़ुबूल हो।

वह बड़ी खुशी से हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को साथ ले कर खेमे के दरवाज़े पर पहुंची। उसने कहा। ऐ क़ौम के चमकते सितारे! इस नाचीज़ खेमा के अन्दर तशरीफ़ ले जा कर आराम कीजिए। मैं हुज़ूर सल्ल० के लिए दूध लेने जा रही हूं।

हुज़ूर ने फ़रमाया, ठहरो, अभी धूप सख्त है, हवा गर्म चल रही है। ऐसी तेज़ और गर्म हवा में कहां जाओगी ?

उम्मे माबद ने कहा, जो टीला हुज़ूर सल्ल० ने देखा है, उस से दूसरी तरफ़ बकरियों का रेवड़ चर रहा है। मेरे हुज़ूर सल्ल० ! मैं बहुत जल्द

वापस आ जाऊंगी।

मैं इसे अच्छा नहीं समझता कि तुम हमारे लिए दूध लेने धूप में दूर तक जाओ। अगर दो-चार खजूरें और थोड़ा-सा पानी हो तो ले आओ, हुज़ूर सल्ल० ने कहा।

मेरे हुज़ूर सल्ल०! मैं हर मुसाफ़िर का दूध से सत्कार करती हूं। क्या क़ुरैश के चांद का सिर्फ़ खजूर और पानी से सत्कार किया जाए। मेरे हुज़ूर (सल्ल०) मुझ को इस से रंज होगा।

अच्छा, इतनी देर ठहरो कि मेरे साथी यहां आ जायें, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

बहुत अच्छा हुज़ूर सल्ल०! उम्मे माबद ने कहा।

आमिर और अब्दुल्लाह जब तक ऊंटों को बांधते और उन के सामने चारा डालते रहे, हुज़ूर सल्ल० और अबू बक्र उन के इन्तिज़ार में ख़ेमे से बाहर खड़े रहे।

जब वे दोनों भी आ गये, तब उन्हें साथ ले कर दोनों ख़ेमे में दाखिल हुए।

ख़ेमे के अन्दर कोई सजावट न थी, एक रेगिस्तानी औरत का ख़ेमा था, ख़ेमे के अन्दर सिर्फ़ कम्बल बिछा हुआ था। हुज़ूर सल्ल०, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत आमिर और अब्दुल्लाह कम्बलों पर जा बैठे।

उम्मे माबद ने कहा, मेरे हुज़ूर सल्ल०! अब मुझे इजाज़त है कि मैं अपने रेवड़ में जा कर दूध ले आऊं।

जो बकरी ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी है, तुम उसे ही क्यों नहीं दूह लेती हो? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल०! यह बकरी बुढ़िया है, उम्मे माबद ने कहा, कमज़ोर है, दूध नहीं देती।

तुम इस बकरी को यहां ले आओ।

उम्मे माबद बकरी ले आयीं।

हुज़ूर सल्ल० ने उस के थनों पर हाथ फेरा। अगरचे बकरी बहुत कमज़ोर, दुबली और बुढ़िया थी, मगर आप के थनों पर हाथ डालते ही थन दूध से भर आए।

हुज़ूर सल्ल० ने प्याला ले कर खुद ही दूध दूहना शुरू किया। प्याला भर गया तो पहले हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को पिलाया, फिर आमिर अब्दुल्लाह, उम्मे माबद को दिया। जब सब के पेट भर गये, तब हुज़ूर सल्ल० ने खुद पी कर, जितने बरतन रखे थे, सब दूध से भर दिये।

हज़रत अबू बक्र, आमिर, अब्दुल्लाह और उम्मे माबद सभी हैरत से इस मोजज़े को देख रहे थे। अब्दुल्लाह ने बे-अख्तियार कहा, बेशक, आप खुदा के रसूल हैं। यह खुदा की मेहरबानी है कि उस ने आप के लिए एक कमज़ोर बकरी से दूध पिलाया।

दूध पी कर सब कम्बल पर लेट गये और आराम करने लगे।

दो घन्टे आराम करने के बाद सब उठे, नमाज़ पढ़ी और सफ़र पर रवाना हो गये।

अस्र के बाद यह क़ाफ़िला क़दीर नामी जगह पर पहुंचा। यहां उन्हें वह क़ाफ़िला मिला, जो शाम देश से आ रहा था।

इस क़ाफ़िले में ज़ुबैर बिन अव्वाम थे, ज़ुबैर की शादी हज़रत अस्मा से हो चुकी थी, जो हज़रत अबू बक्र की बेटी थीं।

उन्हों ने मिलते ही पूछा, हुज़ूर सल्ल० ! कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ?

आप ने फ़रमाया, मुझे मक्के वालों ने मक्के में न रहने दिया, इसलिए हिजरत कर के यसरब जा रहा हूं।

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब आप मक्का छोड़ कर तशरीफ़ ले जा रहे हैं, तो मैं भी मक्का जा कर क्या करूंगा ? मैं भी यहीं से आप के साथ चलूंगा, ज़ुबैर ने कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़ुबैर ! यह बात मुनासिब नहीं है। तुम मक्का जा कर वहां के तमाम कामों से फ़राग़त पा कर यसरब आ जाना।

हज़रत ज़ुबैर ने कहा, बहुत अच्छा, लेकिन मैं हुज़ूर और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के लिए शाम देश से कुछ कपड़े तैयार करा कर लाया हूं, वह हुज़ूर सल्ल० की नज़्र करता हूं। मेहरबानी फ़रमा कर क़ुबूल कर लीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अच्छा ले आओ।

हज़रत ज़ुबैर वापस गये और कपड़े ले आए, जिसे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने ले लिया और वह चले गये।

इधर यह क़ाफ़िला रवाना हुआ। चूंकि अंदेशा पीछा करने वालों का था, इसलिए अब्दुल्लाह ने आम रास्ता छोड़ कर मैदानी इलाक़े में सफ़र करना शुरू किया। रात वहीं ठहरे, सुबह फिर चले पड़े। दोपहर तक सफ़र तै कर के रास्ते में कुछ खेमे नज़र आए।

खेमे के सामने बैठे कुछ लोग बातें कर रहे थे।

चूंकि दोपहर का वक़्त था, उन सब को प्यास लग रही थी, इसलिए उन्हों ने ऊंटों का रुख खेमों की तरफ़ कर दिया।

खेमे के लोग उठ कर आ गये। उन में के बड़े ने सब का स्वागत किया।

हज़रत अबू बक्र ने छूटते ही कहा, ऐ मुसाफ़िर नवाज़ अरबो ! हम प्यासे हैं, हम को पानी पीने के लिए दो।

उन के मुखिया ने हज़रत अबूबक्र को पहचान लिया, बोला—

अबू क़हाफ़ा के बेटे ! हम बड़े खुशनसीब हैं कि मक्के का बड़ा ताजिर हमारा मेहमान हो। तुम पानी मांगते हो, लेकिन हम ऐसे गये गुज़रे नहीं कि तुम्हें दूध भी न पिला सकें हम तुम्हारा सत्कार करेंगे, आओ चल कर खेमे में बैठो।

सब खेमे में पहुंच कर आराम से बैठ गये।

हज़रत अबू बक्र ने पूछा, मेहरबान मेज़बान ! तुम्हारा नाम क्या है ?

मेरा नाम बुरैदा है, उस ने जवाब दिया।

क्या तुम अपने क़बीले के सरदार हो ?

जी हां ! मेरे क़बीले में कुल सत्तर आदमी हैं। सब साथ ही रहते हैं।

अबू बक्र ने पूछा, आप को आये यहां कितने दिन हुए ?

लगभग दो हफ़्ते, जवाब मिला।

अब कहां जाने का इरादा है ?

हम घुमक्कड़ों का इरादा ही क्या, अभी तो यहीं ठहरूंगा।

इस बीच दूध आ गया। सब ने दूध पिया।

अब बुरैदा ने हज़रत अबू बक्र से पूछा, यह तुम्हारे साथ कौन हैं ?

हज़रत अबूबक्र ने जवाब दिया, यह मेरे हादी हैं।

बुरैदा ने हैरत से पूछा क्या यह मुहम्मद हैं ?

हां, यह हज़रत मुहम्मद हैं, हज़रत अबू बक्र ने तस्दीक़ की।

बुरैदा के चेहरे पर थोड़ी सख़्ती आ गयी।

उस ने कहा, यह हमारे माबूदों की तौहीन करते हैं, हमारे मज़हब को झूठा कहते हैं और हमारे बुज़ुर्गों को बुरा-भला कहते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बुरैदा ! एक होशियार इंसान का फ़र्ज़ है कि हर बात पर ग़ौर से और ठन्डे दिल से सोचे और फिर जो कुछ उस का दिल, उस का दिमाग़, उस का ज़मीर उसे इजाज़त दे उस पर अमल करे। सुनो ! जिन बुतों को तुम पूजते हो, उन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो, या तुम्हारे बुज़ुर्गों ने बनाया है, बुततराशों ने जिस बुत की जैसी सूरत चाही बना ली, लोगों ने उस की पूजा शुरू कर दी, लेकिन उस बुत पर कभी विचार न किया कि जो बुत हरकत न कर सकते हों, न सुन सकते हों, वे

ख़ुदा कैसे हो सकते हैं ? ख़ुदा वह है जो हर जगह मौजूद है, हर आदमी की बात सुनता है और हर काम को देखता है, उस से कोई काम या कोई बात छिपी हुई नहीं है। अब तुम्हीं बताओ, बुतों को पूजना मुनासिब है, या उस ख़ुदा को जिस के हाथ में सब कुछ है ?

बुरैदा और उस के साथी बड़े ग़ौर से हुज़ूर सल्ल० की तक़रीर सुन रहे थे।

जब हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश हुए तो बुरैदा ने कहा, मैं ने हुज़ूर सल्ल० की बातें सुनीं, असरदार भी हैं और सही भी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर सही हैं तो उसे क़ुबूल करने में क्या परेशानी है ?

तैयार हूं, मुसलमान बना लीजिए, बुरैदा ने कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने कलिमा पढ़ा कर उसे मुसलमान कर लिया।

फिर बुरैदा ने अपने क़बीले के तमाम लोगों को जमा किया और कहा—

ऐ मेरे क़बीले के लोगो ! तुम्हें मालूम है कि मैं कभी झूठ नहीं बोला, न कभी कोई बे-अक़्ली की बात की, कभी नाहक़ बात मैं ने मानी नहीं। सुनो, आज मैं मुसलमान हो गया हूं। चाहता हूं कि तुम सब भी मुसलमान हो जाओ, सिर्फ़ एक ख़ुदा को पूजो।

तमाम लोगों ने एक दूसरे को हैरत भरी नज़रों से देखा। वे सब बुत-परस्त थे। उन्हों ने कभी इस्लाम का नाम भी नहीं सुना था।

उन्हें हैरान देख कर बुरैदा ने कहा, इस में हैरत की कोई बात नहीं। जिन बुतों को हम और हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं, वे पत्थर की मूर्तियां हैं, जो न हरकत कर सकती हैं, न किसी को नफ़ा और नुक़सान पहुंचा सकती हैं। पूजने के क़ाबिल तो सिर्फ़ वह ज़ात है, जिस ने दुनिया-जहान को पैदा किया और वह हर जगह मौजूद है।

सब लोगों ने कहा, ऐ क़बीले के सरदार ! जब तुम मुसलमान हो गये तो हम सब भी मुसलमान होने को तैयार हैं।

फिर उन्हें कलिमा पढ़ा कर मुसलमान कर लिया। तमाम मौजूद लोगों के चेहरों पर ख़ुशी की लहर दौड़ गयी।

बुरैदा ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, हुज़ूर सल्ल० ! कहां तश्रीफ़ ले जा रहे हैं ?

यसरब, आप ने फ़रमाया।

बुरैदा ने हैरत से आप के चेहरे को देखा और बोला—

यसरब ! इस अनजाने रास्ते को आप ने क्यों अपनाया ?

इसलिए कि मेरी क़ौम ने मुझे बेहद सताया, आप ने फ़रमाया, जब मैं ने उन के जुल्म से तंग आ कर हिजरत का रास्ता अख़्तियार किया, तो उन्हों ने रुकावटें पैदा कीं। आख़िरकार में मौक़ा निकाल कर हिजरत के लिए चल पड़ा और पीछा करने के अंदेशे से इस अनजाने रास्ते से जा रहा हूं।

बुरैदा ने कहा, लेकिन हुज़ूर सल्ल० को कैसे इत्मीनान हुआ कि मक्का वालों की तरह यसरब वाले आप को तक्लीफ़ न पहुंचाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यसरब के लोग ज़्यादा तायदाद में मुसलमान हो गये हैं। जो लोग मक्का से वहां पहुंचे हैं, वहां के लोगों ने उन का ज़ोरदार स्वागत किया है। इस के अलावा मुझे ख़ुदा का हुक्म भी वहीं जाने का हुआ है और यसरब वालों ने मुझे भी बुलाया है।

बुरैदा ने कहा, क्या हम भी हुज़ूर सल्ल० के साथ चल सकते हैं ?

हां, चल सकते हो, आप ने जवाब दिया, यसरब वाले तुम्हारा भी स्वागत करेंगे।

बुरैदा ख़ुश हो गया, बोला, बस, तो हम भी हुज़ूर के साथ चलेंगे।

अगर यह बात है, तो फ़ौरन तैयार हो जाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हमें तैयारी ही क्या करनी है, सिर्फ़ ख़ेमे उखाड़ कर ऊंटों पर लाद लेना है, बुरैदा ने कहा।

यह कह कर बुरैदा और उस के क़बीले के लोग उठ कर बाहर चले गये और ख़ेमे उखाड़-उखाड़ कर ऊंटों पर लादना शुरू कर दिया।

और थोड़ी देर में यह पूरा क़ाफ़िला यसरब की तरफ़ रवां-दवां हो गया।

हजूर सल्ल० क़ुबा में

यसरब में आप के तशरीफ़ लाने की ख़बर आम हो गयी थी।

यसरब के मुसलमानों को आप के आने का बड़ा इन्तिज़ार था, इसलिए देखने के मुश्ताक़ जमा हो कर क़ुबा में आते, दोपहर तक इन्तिज़ार करते, जब सूरज पूरा तमतमाने लगता या धूप बरदाश्त के क़ाबिल न रहती, तो ये मायूस हो कर लौट जाते।

क़ुबा असल शहर यसरब से दो मील की दूरी पर मक्का की तरफ़ वाक़ेअ था। यह भी एक छोटा-सा क़िला था और इस में ज़्यादातर मुसलमान आबाद थे।

मुसलमानों ने हुज़ूर सल्ल० के स्वागत की इस शान से तैयारियां की थीं, जैसे किसी बड़े बादशाह के स्वागत की तैयारी की जाए। मुसलमानों के घर-घर में ख़ुशी की लहर दौड़ी हुई थी। हर आदमी और हर ख़ानदान ख़ुश था।

चूंकि जो क़ासिद यसरब वालों की तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हुज़ूर सल्ल० को बुलाने के लिए भेजा गया था, वह वापस आ गया था और उसने यह ख़ुशख़बरी आ कर सुना दी थी कि हुज़ूर सल्ल० बहुत जल्द आने वाले हैं, इसलिए यसरबी मुसलमान हर दिन क़ुबा में हुज़ूर सल्ल० का इन्तिज़ार करते।

रबीउल अव्वल १४ नबवी का दिन आया।

आज भी मुसलमान बड़ी तादाद में आये हुए थे। क़ुबा के क़िले से बाहर निकल कर खजूर के पेड़ों के साए में मक्का के रास्ते में बैठ कर हुज़ूर सल्ल० के आने का इन्तिज़ार करने लगे। इन इन्तिज़ार करने वालों में मर्द भी थे, औरतें और बच्चे भी, लड़के और लड़कियां भी।

छोटी-छोटी बच्चियां दफ़ बजा-बजा कर हुज़ूर सल्ल० की शान में गीत गा रही थीं और हुज़ूर सल्ल० की बहुत ख़ूबियों का बयान कर रही थीं।

दोपहर तक सब गाते रहे। जब दोपहर हो गयी, सूरज की गर्मी बढ़ गई, धूप बरदाश्त के क़ाबिल न रही, तो इन्तिज़ार में बैठे ये मुसलमान मक्के के रास्ते पर आख़िरी नज़र डाल कर वापस लौट गये।

थोड़ी ही देर में क़ुबा के सामने का पूरा मैदान ख़ाली हो गया। एक आदमी भी बाक़ी न रहा, उस वक़्त मक्का के रास्ते पर गर्द व ग़ुबार उड़ता नज़र आया।

क़ुबा के क़रीब एक गढ़ी थी। उस गढ़ी में यहूदी आबाद थे।

एक यहूदी अपने मकान की छत पर खड़ा था। उस ने ग़ुबार को देखा। उसे ताज्जुब हुआ कि इस धूप में कौन लोग आ रहे हैं। वह जो काम कर रहा था, उसे भूल गया और ग़ुबार की तरफ़ देखने लगा।

ग़ुबार बढ़ता चला आ रहा था। थोड़ी देर में ग़ुबार का दामन चाक हुआ और बहुत से ऊंट सवार क़ुबा की तरफ़ बढ़ते नज़र आए। साथ में एक झंडा लहराता हुआ नज़र आया, जिसे बुरैदा ने हाथ में ले रखा था।

यहूदी ने अन्दाज़ा लगाया कि यह हज़रत मुहम्मद हैं, जिन के आने का इन्तिज़ार मुसलमान कई दिन से कर रहे हैं।

अगरचे वह यहूदी था, मगर इस वक़्त उस पर कुछ ऐसा ग़लबा हुआ कि उस ने मुसलमानों को ख़बरदार करने के लिए ऊंची आवाज़ से कहा,

ऐ अरब ! ऐ दोपहर को आराम करने वालो ! तुम्हारा मत्लूब या तुम्हारी ख़ुश नसीबी का सामान आ पहुंचा।

तेज़ हवा ने उस की आवाज़ दूर तक पहुंचा दी।

क़ुबा के अक्सर मुसलमानों ने इस आवाज़ को सुना। वे मारे ख़ुशी के घरों से निकल पड़े, चिल्लाये, मुसलमानो ! चलो आफ़ताबे अरब यसरब पर तुलू हो चुका है।

यह आवाज़ तमाम क़बीलों में गूंज गयी।

क़ुबा के सारे मुसलमान, औरतें, मर्द, लड़के-लड़कियां घरों से बाहर निकल कर जल्दी-जल्दी क़ुबा से बाहर की तरफ़ दौड़े।

मुसलमानों की देखा-देखी कुफ़्फ़ार और यहूदी भी दौड़ने लगे।

सैकड़ों लोग भाग-भाग कर क़ुबा से बाहर पहुंचे।

ये सभी रास्ते के दोनों किनारों पर खड़े हो गये। उन्हों ने देखा कि सामने वाले खजूरों के बाग़ के आगे ऊंट-सवारों का क़ाफ़िला आ रहा है। सब से आगे एक ऊंटनी है। ऊंटनी पर एक ख़ूबसूरत अरब सवार है। उस के बराबर में एक आदमी झंडा लिए चला आ रहा है। झंडा उस के सर पर लहरा रहा है। एक ख़ूबसूरत और शानदार अरब चादर लिए उन पर साया किये हुए है।

लोगों ने उस ख़ूबसूरत अरब को पहचान लिया। यह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ थे।

यह छोटा सा इस्लामी क़ाफ़िला बड़ी शान से आगे बढ़ा चला आ रहा था। जब हुज़ूर सल्ल० की सवारी क़रीब आयी, तो लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को पहचान लिया। सब ने आप को सलाम किया।

हुज़ूर सल्ल० ने ऊंटनी से उतरने का इरादा किया। तमाम मुसलमानों ने एक ज़ुबान हो कर कहा, हुज़ूर ! हमारी सब की आरज़ू है कि आप सवार ही रहें।

हुज़ूर सल्ल० सवार रहे, सब को सलाम का जवाब दिया।

क़ुबा के सब से मुअज़्ज़ज़ आदमी ने आप के ऊंट की नकेल पकड़ ली और बड़े फ़ख़्र, बड़ी ख़ुशी और बड़े जोश से रवाना हुआ। लोग हुज़ूर सल्ल० की सवारी के पीछे-पीछे चले।

जब आप की सवारी क़ुबा में दाख़िल हुई, तो क़ुबा की कमसिन और छोटी लड़कियों ने दफ़ बजा-बजा कर जोश व ख़रोश से गाना शुरू किया—

हम पर चांद तुलू हुआ है,
सनीयातिल विदा की घाटियों से,

हम पर इस वक़्त शुक्र करना वाजिब है,
जब तक कोई अल्लाह से डरने वाला रहे,
ऐ हम में भेजे गये प्यारे नबी,
आप ऐसा हुक्म लेकर आए हैं जिसकी इताअत हम
पर वाजिब है।

अगरचे वह दोपहर का वक़्त था, धूप बहुत तेज़ थी, और लू चल रही थी, लकिन हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत में किसी को किसी बात का एहसास न हो रहा था। सब आप के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। मुसलमान मुहब्बत और अक़ीदत के जोश में अल्लाहु अक्बर के नारे भी लगाते जा रहे थे।

इन नारों की गूंज यसरब में भी पहुंची।

यसरब के मुसलमान भी दौड़ पड़े। औरतें, मर्द, बच्चे भाग-भाग कर क़ुबा की तरफ़ जाने लगे। कुछ ऊंटों पर सवार हो कर दौड़े, कुछ घोड़ों पर, ज़्यादातर तो पैदल ही भागे। फ़ासला सिर्फ़ दो मील का था। बहुत जल्द ये लोग क़ुबा में दाखिल हो गये और भाग कर आप की सवारी के जुलूस में जा मिले।

इन लोगों के आने की वजह से जुलूस लम्बा हो गया। इंसानों का समुंदर लहरें लेता नज़र आने लगा।

हुज़ूर सल्ल० की ऊंटनी की नकेल जो सहाबी पकड़े हुए थे, उन का नाम कुलसूम बिन हारिस था। इन का ताल्लुक़ क़बीला बनी नज्जार से था। इस क़बीले में हुज़ूर सल्ल० की ननिहाल थी।

यसरब से आने वालों में साद बिन मुआज़ भी थे जो औस क़बीले के सरदार थे। हुज़ूर सल्ल० की सवारी की शान को देख कर उन्हें ऐसा जोश आया कि तुरन्त घोड़े से उतरकर हुज़ूर सल्ल० के ऊंट की नकेल पकड़ ली।

यह जुलुस जब क़ुबा के बीच में पहुंचा तो एक काफ़िर अरब गले में हड्डियों का हार डाले रास्ते के सिरों पर खड़ा नज़र आया। उस अरब का चेहरा डरावना था। आंखें सुर्ख़ और उबल कर बाहर निकल आयी थीं। माथे पर मोटी-मोटी लकीरें पड़ी हुई थीं, गालों की हड्डियां चिपकी हुई थीं। दाढ़ी अजीब क़िस्म की थी।

उस ने हुज़ूर सल्ल० को ग़ौर से देखा, आप की सवारी को देखा और सवारी के जुलूस को देखा। जुलूस वालों के जोश को देख कर बड़बड़ाया और उस ने कहा—

आज यसरब के बुतपरस्तों की हुकूमत ख़त्म हो गयी, बहुत जल्द

इस्लामी हुकूमत का आरंभ होगा। बुत और बुतपरस्तों को ज़िल्लत से निकाल दिया जाएगा।

लोगों ने उस के लफ़्ज़ सुने। मुसलमान सुन कर खुश हुए और कुफ़्फ़ार ग़म में डूब गये।

जोश बढ़ता रहा, यहां तक कि क़बीला बनी नज्जार का मुहल्ला शुरू हुआ।

जब कुलसूम का मकान आया, उन्हों ने रुक कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप के ख़ादिम का ग़रीब खाना यही है। क्या हुज़ूर सल्ल० यहां क़ियाम न फ़रमाएंगे और मुझे ख़िदमत की सआदत न हासिल होगी ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, मैं यहीं क़ियाम करूंगा। ऊंटनी को बिठा दो।

कुलसूम ने ऊंटनी को इशारा किया। ऊंटनी बैठ गयी।

फ़ौरन ही तमाम ऊं० बिठाये गये।

पहले हुज़ूर सल्ल० उतरे, फिर हज़रत अबू बक्र, उन के बाद आमिर, बुरैदा और बुरैदा के क़बीले के लोग उतरे।

हुज़ूर सल्ल० कुलसूम के मकान में दाख़िल हुए। कुछ मुअज़्ज़ज़ लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ मकान के अन्दर चले गये। बाक़ी लोगों को तमाम मुसलमान एक-एक, दो-दो करके ले गये।

जुलूस बिखर गया। थोड़ी देर में क़ुबा की तमाम गलियां, सुनसान और वीरान नज़र आने लगीं।

हुज़ूर सल्ल० कुलसूम के मकान में दाख़िल होकर इत्मीनान से एक कमरे में बैठ गये। बैठते ही यसरब और क़ुबा के मुअज़्ज़ज़ लोग, जो हुज़ूर सल्ल० के साथ मकान के अन्दर आ गये थे, निहायत अदब से आ बैठे।

अब कुलसूम ने जल्दी-जल्दी सत्तू घोल कर पहले हुज़ूर सल्ल० को पिलाया, फिर बाक़ी लोगों को दिया गया। जब सब लोग सत्तू पी चुके, तो साद बिन मुआज़ ने सब से पहले हुज़ूर सल्ल० से अपना तआरुफ़ कराया और फिर तमाम लोगों का तआरुफ़ कराने लगे।

शाहाना जुलूस

हुज़ूर सल्ल० ८ रबीउल अव्वल सन् १४ नबवी, दोशंबा के दिन क़ुबा में तशरीफ़ लाये थे। वह तमाम दिन लोगों से मिलने और तआरुफ़ करने-

कराने में गुज़र गया। दूसरे दिन फिर सुबह ही से लोगों के आने का तांता बंध गया।

अगरचे कुलसूम का मकान बड़ा था, पर हुज़ूर सल्ल० सईद बिन खुसैमा के मकान को दारुल-अवाम बना कर उस में मज्लिस फ़रमाने लगे।

लोग सुबह से शाम तक जमा रहते, वाज़ सुनते, क़ुरआन शरीफ़ सुन कर याद करते, नमाज़ें पढ़ते। सारे दिन सईद बिन खुसैमा के मकान पर मेला-सा लगा रहता।

दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल० ने बराबर और मुनासिब ज़मीन देख कर एक मस्जिद की बुनियाद रखी। क़ुबा वालों ने जल्द-जल्द मस्जिद की तामीर शुरू कर दी।

यह सब से पहली मस्जिद थी, जो इस्लाम में बनायी गयी। इस मस्जिद की बुनियाद खुद हुज़ूर सल्ल० ने अपने दस्ते मुबारक से रखी। चार दिन तक हुज़ूर सल्ल० क़ुबा में तश्रीफ़ फ़रमा रहे। चौथे रोज़ जुमा के दिन १२ रबीउल अव्वल को सुबह की नमाज़ पढ़ कर हुज़ूर सल्ल० ने इरादा किया।

क़ुबा वालों ने हुज़ूर सल्ल० के और ठहरने पर इस्रार किया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं कहीं दूर तो नहीं जा रहा हूं। क़ुबा यसरब का एक मुहल्ला है। मेरा इरादा यसरब में ज़िंदगी भर रहने का है।

लोग खामोश हो गये।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को तैयारी करने का हुक्म दिया।

अभी ये तैयारियां हो ही रही थीं कि इसी बीच हज़रत अली रज़ि० दिखायी दे गये।

हज़रत अली के पैरों पर गर्द चढ़ी हुई थी। पैरों में कुछ सूजन थी। वह धीरे-धीरे आ रहे थे। उन की चाल बता रही थी कि वह थके हुए हैं।

हुज़ूर सल्ल० उन्हें देखते ही बढ़े।

हज़रत अली ने आप को अपनी तरफ़ बढ़ता देख कर अपनी चाल कुछ तेज़ कर दी।

आप ने हुज़ूर सल्ल० के सामने पहुंच कर सलाम किया '

हुज़ूर सल्ल० ने सलाम का जवाब देकर कहा, खूब आए अली! कहो, अमानतें अमानत वालों को सुपुर्द कर आए।

अगरचे हुज़ूर सल्ल० ने देख लिया था कि हज़रत अली थके हुए हैं। उन की हालत बता रही थी कि वे दूर से सफ़र किये चले आ रहे हैं, उन्हें

आराम करने की ज़रूरत है, लेकिन हुज़ूर सल्ल० को अमानतों की इतनी चिन्ता थी कि आप ने हज़रत अली की न हालत मालूम की, न सफ़र के वाक़िआत मालूम किये, बल्कि सब से पहले अमानतों के बारे में पूछा।

हज़रत अली रज़ि० ने बताया, जी हां, मैं ने तमाम अमानतें अमानत वालों के सुपुर्द कर दी हैं।

बहुत ख़ूब किया ! तुम मक्का से कब चले थे ?

आज बारह दिन हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली को हैरत से देखा और बोले—

बारह दिन हुए, गोया तुम भी उस दिन चले, जिस दिन मैं ग़ारे सौर से चला था।

इस हिसाब से तो यही मालूम होता है, लेकिन हम एक दूसरे से मिल क्यों न सके ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस लिए कि मैं सीधे रास्ते से नहीं आया, बल्कि अनजाने रास्ते से चला और तुम सीधे रास्ते से आए, इस लिए रास्ते में मुलाक़ात न हो सकी। क्या तुम पैदल आये हो ?

जी हां, मैं पैदल आया हूं। रात को सफ़र करता था और दिन के वक़्त पहचाने जाने और गिरफ़्तार होने के डर से रेत के टीलों में छिप रहता था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, काश, तुम पैदल न चलते और थोड़े दिन मक्का में रह कर इन्तिज़ार करते और किसी क़ाफ़िले के साथ आ जाते।

असल में मुझ से सब्र न हो सका। अमानतें तक़्सीम करते ही चल पड़ा, हज़रत अली ने कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, मेरे चले आने पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने मुसलमानों पर या हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के घर वालों पर सख़्तियां तो नहीं कीं ?

सख़्तियां करना तो उन की आदत में शामिल है, हज़रत अली ने जवाब दिया। आम मुसलमानों पर उनकी सख़्तियां बहुत हैं, अल-बत्ता हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र के रिश्तेदारों पर ज़्यादा सख़्तियों की जुरअत नहीं होती, लेकिन निगरानी बहुत की जा रही है।

अगर अल्लाह ने चाहा, तो अब बहुत जल्द उन की हुकूमत और उनके ज़ुल्म व सितम का ख़ात्मा हो जायेगा। ख़ुदा ज़ालिमों को ज़्यादा ढील नहीं देता। अली ! तुम मेरी ऊंटनी पर सवार हो जाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! यह मेरे ऊंट पर सवार हो जाएंगे ।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, और तुम ?

हज़रत अबूबक्र ने जवाब दिया, मैं आप के साए में पैदल चलूंगा ।

आमिर बोल पड़े, मालिक ! यह कैसे होगा ? आप मेरे आक़ा हो कर पैदल चलें और मैं ग़ुलाम हो कर ऊंट पर सवार हो कर चलूं । आप सवार हो जाएं, मैं पैदल चलूंगा । फ़ासला ही कितना है, सिर्फ़ दो मील ही तो चलना है ।

अगरचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० चाहते थे कि वह सवार हो कर न चलें, पर हज़रत आमिर ने उन्हें इतना मजबूर किया कि उन्हें ऊंट पर सवार होना पड़ा । उन के पीछे हज़रत अली सवार हुए ।

हुज़ूर सल्ल० पहले ही अपनी ऊंटनी पर सवार हो चुके थे । अब अब्दुल्लाह, बुरैदा और उन के साथी ऊंटों पर सवार हो गये ।

आमिर ने हुज़ूर सल्ल० के ऊंट की नकेल पकड़ी और चल पड़े ।

क़ुबा वालों ने जिस ज़ोरदार अन्दाज़ में इस क़ाफ़िले का इन्तिज़ार किया था, उसी तरह सब ने आ कर रुख़्सत भी किया ।

हुज़ूर सल्ल० की सवारी निहायत शान से रवाना हुई ।

हुज़ूर सल्ल० के आने की ख़बर यसरब में पहले ही पहुंच गयी थी । यसरब वाले क़ुबा के रास्ते पर खड़े आफ़ताबे अरब के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे । इस भीड़ में औरतें, मर्द, लड़के और लड़कियां सभी थे ।

सब के सब बहुत ख़ुश थे ।

बच्चे उछल-कूद रहे थे, रेत के टीलों पर दौड़-दौड़ कर चढ़ रहे थे । लड़कियां ख़ुशी के गीत गा रही थीं ।

जब सूरज कुछ ऊंचा हो गया, तो लड़कों ने दूर से ऊंटों को आते देखा । सब से अगले ऊंट पर झंडा लहरा रहा था ।

अगरचे बच्चे ना-समझ थे, मगर उन्होंने दूर ही से ऊंटों को देख कर समझ लिया कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ला रहे हैं । इस लिए शोर मचाया, 'क़ुबा से सूरज निकल आया ।'

उन के ग़ुल मचाते ही लोगों की नज़रें क़ुबा की तरफ़ उठीं ।

वहां से ऊंटों की क़तारें आती नज़र आ रही थीं ।

तमाम लोग सिमट कर रास्ते के दोनों तरफ़ एक लाइन में खड़े हो गये ।

ऊंट अब इतने क़रीब आ गये थे कि उन पर सवार लोगों की शक्लें

नज़र आने लगीं।

यह सवारी हुज़ूर सल्ल० की थी। आप के सर पर इस्लामी झंडा लहरा रहा था। बराबर में बुरैदा झंडा उठाये आ रहे थे और तमाम ऊंट एक के पीछे एक लगे आ रहे थे।

लोगों ने आप को दूर से देखते ही अल्लाहु अक्बर के ज़ोरदार नारे लगाने शुरू किये। इन नारों से यसरब की वादी गूंज उठी।

यसरब के यहूदियों को भी पता चला और वे भी हुज़ूर सल्ल० की सवारी की शान देखने के लिए बाहर आ गये। हज़ारों आदमियों का मजमा आ गया।

थोड़ी ही देर में आप की सवारी क़रीब आ गयी।

जब हुज़ूर सल्ल० की सवारी सामने आ गयी, तो लोगों ने इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया कि ज़मीन हिल गयी। वादी गूंज उठी।

हुज़ूर सल्ल० ने यहां भी उतरने का इरादा किया, लेकिन हज़रत साद ने बढ़ कर हुज़ूर को रोकते हुए कहा, ऐ शहंशाहे दुनिया व दीं! आप को उतरने की ज़रूरत नहीं है। हम सब ख़ादिमों की तमन्ना है कि हुज़ूर सल्ल० पहले की तरह सवार हो कर तशरीफ़ ले चलें।

मजबूर हो कर आप सवारी पर बैठे ही रहे।

हज़रत साद ने ऊंटनी की नकेल पकड़ी और आगे चलना चाहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ यसरब के हाकिम! मैं यह गवारा नहीं कर सकता कि आप मेरी ऊंटनी की नकेल पकड़ कर चलें। इस से डर है कि कहीं मेरे दिल में घमंड पैदा हो। मैं वही हूं जो पहले था।

हज़रत साद ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल०! अब आप अपने को वह न समझें, जो मक्के वालों ने समझने पर मजबूर किया। यह तो हमारी खुशक़िस्मती है कि हम आपके ऊंट की नकेल पकड़ पाये हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, साद! यह मेरी तमन्ना है कि तुम अपने ऊंट पर सवार हो कर मेरे साथ चलो।

हज़रत साद ने कहा, इस में भी मेरी सआदत है। मैं हुज़ूर सल्ल० के हर हुक्म की तामील करूंगा।

हज़रत साद भी ऊंट पर सवार हो गये।

अब आप की सवारी बढ़ी। मुसलमान नारे लगाते हुए साथ चले।

हुज़ूर सल्ल० की सवारी गोया अब जुलूस के साथ चली। जुलूस यसरब में दाख़िल हुआ। जो मर्द या औरतें यसरब में रह गये थे, उन में से कुछ तो रास्तों के किनारों पर खड़े हो कर, कुछ मकानों की छतों पर

बढ़ कर हुज़ूर सल्ल० के आने का शानदार नज़ारा करने लगे।

अगरचे यह दोपहर का वक़्त था, धूप में तेज़ी थी, गरम हवा के झोंके चलने शुरू हो गये थे, लोगों को पसीने आने लगे थे, पर वे इतने जोश में थे कि उनमें से किसी को भी गर्मी की परवाह न थी। सब बड़े इत्मीनान से जुलूस में चल रहे थे।

जिस वक़्त यह जुलूस मुहल्ला बनू सालिम में पहुंचा, तो नमाज़ का वक़्त आ गया। चूंकि आज जुमा का दिन है। जुमा की नमाज़ ज़ुहर के वक़्त में पढ़ी जाती है, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने आमिर को सवारी रोकने का हुक्म दिया।

आमिर खड़े हो गये, ऊंट रुक गये और जुलूस ठहर गया।

हुज़ूर सल्ल० उतरे। हुज़ूर के उतरते ही सब लोग उतर पड़े। सब एक बड़े मैदान में जमा हो गये। लोग दौड़ कर पानी लाये। मुसलमानों ने वुज़ू किया। सब ने मैदान में बग़ैर किसी फ़र्श और सायबान के जलती धूप और तपते मैदान में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से पहले हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुत्बा भी पढ़ा।

नमाज़ पढ़ कर हुज़ूर सल्ल० ऊंटनी पर सवार हुए।

आप के सवार होते ही हज़रत साद, हज़रत अबूबक्र, हज़रत बुरैदा और उन के साथी ऊंटों पर सवार हो गये।

अभी हुज़ूर सल्ल० चले ही थे कि मुहल्ला बनू सालिम के मुअज़्ज़ज़ लोग आ गये और आप की ऊंटनी की नकेल पकड़ कर मुहल्ले के अन्दर चलने लगे। चूंकि हर मुहल्ला और हर क़बीले वाले यह चाहते थे कि हुज़ूर सल्ल० उनके यहां ठहरें, इस लिए अक्सर क़बीले के लोग आगे बढ़े और बहुत से लोग ऊंटनी की नकेल पकड़ने लगे। इस से बहस व तकरार होने लगी। हर आदमी अपना हक़ साबित करने की कोशिश कर रहा था।

हुज़ूर सल्ल० ने यह हालत देख कर फ़रमाया, मुसलमानो! हट जाओ, ऊंटनी की नकेल छोड़ दो। उसे ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म मिला है। जिस जगह यह ख़ुद बैठ जाएगी, मैं उसी मुहल्ले में क़ियाम करूंगा।

लोग या तो बहस व तकरार कर रहे थे या आप का हुक्म सुन कर हट गये।

ऊंटनी रवाना हुई। उस के पीछे तमाम लोग चले। लोग जुलूस में चले।

ऊंटनी चलते-चलते बनू बयाज़ा के मुहल्ले में पहुंची। उस मुहल्ले के सरदार ज़ियाद और फ़र्व: थे। फ़ौरन दोनों ने बढ़ कर ऊंटनी की नकेल

पकड़ ली।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे छोड़ दो, उसे हुक्म मिला हुआ है।

दोनों ने उसे छोड़ दिया और ऊंटनी फिर आगे बढ़ने लगी।

ऊंटनी बराबर चल रही थी, यहां तक कि मुहल्ला बनू साइदा में पहुंची। उस मुहल्ले के सरदार साद बिन उबादा और मुन्ज़िर बिन अम्र थे।

दोनों ख़ुश हो कर आगे बढ़े और ऊंटनी की नकेल पकड़ ली।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे छोड़ दो, इसे हुक्म मिला हुआ है।

साद और मुन्ज़िर अलग हट गए।

ऊंटनी फिर चलने लगी। अब मुहल्ला बनुल हारिस में पहुंची।

इस मुहल्ले के मुअज़्ज़ज़ लोग साद बिन रबीअ और अब्दुल्लाह बिन रवाहा थे।

जब उन्होंने ऊंटनी की नकेल पकड़नी चाही, तो उन से भी कहा गया कि इसे छोड़ दो, इसे हुक्म मिला हुआ है।

वे भी नकेल छोड़ कर अलग हो गए।

ऊंटनी फिर चलने लगी और मुहल्ला अदी बिन नज्जार में दाख़िल हुई।

चूंकि इस मुहल्ले के लोगों में हुज़ूर सल्ल० के दादा अब्दुल मुत्तलिब की ननिहाल थी, इस लिए इन लोगों को बड़ा दावा और ख़्याल था कि आप रिश्तेदारी का ख़्याल करके उन के मुहल्ले में ठहरेंगे। इस लिए सुलैत बिन क़ैस और उसैरा बिन अबी ख़ारिजा ने बढ़ कर ऊंटनी की नकेल पकड़ ली, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने उन से भी वही फ़रमाया कि नकेल छोड़ दो। इसे अल्लाह की ओर से हुक्म मिला हुआ है।

फिर वे दोनों भी नकेल छोड़ कर अलग हो गए।

ऊंटनी फिर रवाना हुई और कुछ दूर चल कर मुहल्ला बनी मालिक बिन नज्जार में पहुंच कर एक ग़ैर आबाद और बंजर ज़मीन पर आ कर खड़ी हो गयी। कुछ देर खड़ी रह कर बैठ गयी, लेकिन बैठते ही फिर उठी और फिर चलने लगी कि कुछ दूर चल कर ख़ुद ही वापस लौटी और ठीक उसी जगह जहां पहले बैठी थी, फिर आ कर बैठ गयी।

इस बार ऊंटनी ने बैठ कर झुरझुरी ली। गरदन नीचे डाल दी और दुम हिलानी शुरू की, मतलब यह था कि मंज़िल आ गयी, अब उतरिए।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उतरे। फिर उतरते ही सब लोग जल्दी-जल्दी उतर पड़े।

इस बंजर ज़मीन के क़रीब हज़रत अबू अय्यूब अंसारी का मकान था।

उन्होंने सपने में भी यह न सोचा होगा कि हुज़ूर सल्ल० उनके मकान के क़रीब आ कर ठहरेंगे और उन्हें हुज़ूर सल्ल० की खिदमत की सआदत नसीब होगी।

चुनांचे जब उन्होंने देखा कि ऊंटनी उन के मकान के क़रीब आ कर बैठ गयी और हुज़ूर सल्ल० ऊंटनी से नीचे उतर आए, तो उन्होंने बढ़ कर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस बंजर ज़मीन के क़रीब मेरा ग़रीबख़ाना है। मैं ग़रीब आदमी हूं। क्या हुज़ूर सल्ल० मुझे ख़िदमत का मौक़ा देंगे ?

आप ने मुस्करा कर फ़रमाया, ग़रीबी और अमीरी की दुनियादारों की नज़रों में कोई क़ीमत होगी, दीन वालों के लिए नहीं। मुसलमान ग़रीब हों या अमीर, सब भाई-भाई हैं, तुम भी भाई हो, मैं तुम्हारे ही मकान में ठहरूंगा।

हज़रत अबू अय्यूब मारे ख़ुशी के फूले नहीं समाये। ख़ुशी के आंसू आंखों में आ गये। आप ने बढ़ कर जल्दी-जल्दी हुज़ूर सल्ल० का सामान उठाया। ख़ुशी-ख़ुशी अपने मकान में ले गए।

हुज़ूर सल्ल० तो अबू अय्यूब अन्सारी के यहां ठहरे और दूसरे मुसलमानों को वहीं के दूसरे मुसलमानों ने अपना मेहमान बना लिया।

दूसरों से समझौता

हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबू अय्यूब के मकान में ठहरे थे।

चूंकि उनके मकान के सामने एक बंजर ज़मीन पड़ी हुई थी, इस लिए मुसलमान रोज़ाना उस मैदान में जमा होते और हुज़ूर सल्ल० उस के पास पहुंच कर वाज़ व नसीहत फ़रमाते थे।

जो लोग मक्का से अपने वतन, अपने घरों को छोड़ आए थे, वे मुहाजिर कहलाते थे और जो लोग यसरब के रहने वाले थे, वे मुसलमान हो कर मुहाजिरों की मदद कर रहे थे, वे अन्सार कहलाने लगे।

मुहाजिरों और अन्सार में ऐसी मुहब्बत क़ायम हो गयी थी, जैसी हक़ीक़ी भाइयों में भी नहीं देखी गयी।

यह हिजरत का पहला साल था। सन हिजरी साल से शुरू हुआ, जो इस्लामी दुनिया में आज तक जारी है और इन्शाअल्लाह क़ियामत तक जारी रहेगा।

अगरचे हुज़ूर सल्ल० ने देख लिया था कि मुहाजिर और अन्सार एक

रूह दो क़ालिब बन गए हैं और एक दूसरे के दुख-दर्द का एहसास रखते हैं, मगर ज़रूरत इस बात की थी कि तमाम मुसलमान समझ लें कि हक़ीक़ी भाईचारा क्या चीज़ है ?

एक दिन, जबकि तमाम मुसलमान मुहाजिर और अन्सार अबू अय्यूब के मकान के मैदान में जमा थे, हुज़ूर सल्ल० ने एक वाज़ फ़रमाया और बताया कि—

तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। सगे भाइयों से ज़्यादा आपस में मुहब्बत होनी चाहिए। जो मुसलमान आपस में अपने भाई यानी मुसलमान की मदद न करेगा, उस के दुख-दर्द में शामिल न होगा, किसी मुसलमान से हसद करेगा या किसी मुसलमान से दुश्मनी करेगा या किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देगा या नुक़्सान पहुंचाएगा, उस पर क़हरे इलाही नाज़िल होगा। क़ियामत के दिन मैं उस की सिफ़ारिश न करूंगा। उस के तमाम अमल ज़ाया हो जायेंगे और वह दोज़ख की दहकती हुई आग का इंधन बनने के लिए डाल दिया जाएगा।

तकब्बुर और घमंड शैतानी वस्वसा है। अपने किसी मुसलमान भाई को अपने से कमतर समझना किसी ग़रीब मुसलमान को खस्ता हाल होने की वजह से हक़ीर ख़्याल करना निहायत बुरी बात है, इस से ख़ुदा नाराज़ होता है। क़ियामत के दिन दौलतमंदी या ख़ानदान न पूछा जाएगा, बल्कि अमल के बारे में सवाल होगा, रोज़ा, हज, ज़कात, नमाज़ के बारे में पूछा जाएगा। मुसलमानों को हक़ीर समझने वाले मुसलमानों के अमल भी ज़ाया हो जायेंगे और वे भी दोज़ख की दहकती आग में डाल दिये जायेंगे।

मुसलमान भाई-भाई हैं और उन्हें भाई-भाई ही बन कर रहना है। एक खुशहाल और असरदार मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह अपने ग़रीब की हर मुम्किन मदद करे। जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की मदद करता है, तो ख़ुदा उस से ख़ुश होता है। फ़रिश्ते उस के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर करते हैं ! ख़ुदा अपने मक़र्रब फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि तुम गवाह रहो कि मैं ने आज फ़्लां मुसलमान के तमाम गुनाह इस लिए माफ़ कर दिए कि उस ने फ़्लां ग़रीब और मुसीबत ज़दा अपने मुसलमान भाई की मदद की है, किस क़दर ख़ुशी की जगह है कि जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की मदद करता है, तो ख़ुदा उस से इस क़दर ख़ुश होता है कि उस के तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर देता है। इस लिए मुसलमानो ! आपस में मुहब्बत और ताल्लुक़ बनाए रखो, किसी मुसलमान को हक़ीर और ज़लील न समझो, वरना तुम्हारे भले अमल ज़ाय जायेंगे और तुम

बड़े घाटे में रहोगे।

जब तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं, तो हर तब्क़े के मुसलमान आपस में बराबरी का दर्जा रखते हैं। एक मुसलमान की दूसरे मुसलमान पर कोई बरतरी नहीं है।

ख़ुदा का यही हुक्म है कि मुसलमान आपस में मुहब्बत करें, हमदर्दी रखें, बराबरी का बर्ताव करें और मिल-जुल कर रहें।

मुसलमानों का यह फ़र्ज़ है कि अपने ग़रीब भाई की हर मुम्किन तरीक़े से मदद करें।

जो मुसलमान किसी मुसलमान को जंग या मुसीबत से बचाता हुआ मारा जाएगा, वह शहीद कहलाएगा, शहीद मरते नहीं, बल्कि ज़िंदा रहते हैं।

मुसलमानो ! ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करना चाहते हो, तो आपस में मुहब्बत और भाईचारा पैदा करो। कभी किसी मुसलमान से दुश्मनी न रखो।

इस तक़रीर को तमाम मुसलमान बड़े ग़ौर और शौक़ से सुन रहे थे। उन के दिलों में हर-हर लफ़्ज़ बैठता चला जा रहा था। चुनांचे जब आप ने तक़रीर ख़त्म की, तो तमाम मुसलमानों के दिलों में मुहब्बत व प्यार का दरिया लहरें लेने लगा। वे कुछ इतने मुतास्सिर हुए कि अन्सार ने उसी वक़्त मुहाजिरों से भाई-भाई के ताल्लुक़ क़ायम कर लिए और उन्हें सगे भाई से ज़्यादा समझने लगे।

चुनांचे जिन अन्सार के दो-दो और तीन-तीन बीवियां थीं, उन्होंने उसी वक़्त एक-एक, दो-दो को तलाक़ दे कर, उन का मुहाजिरों से, जिन के पास बीवियां नहीं थीं, निकाह कर दिया।

इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या ज़मीन का यह हिस्सा, जिस में हम सब बैठे हैं, किसी की मिल्कियत है ?

मुआज़ बिन अफ़रा एक ख़ुशहाल और दौलतमंद अन्सारी थे, उन्हों ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ज़मीन मेरे रिश्तेदारों की है। दो यतीम बच्चे इस के मालिक हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं चाहता हूं कि यहां एक मस्जिद बनायी जाए और मस्जिद के क़रीब ही मैं भी मकान बना लूं।

मुआज़ ने कहा, इस नेक काम के लिए यह ज़मीन हाज़िर है। हुज़ूर सल्ल० तामीर शुरू करा दें। मैं अपने अज़ीज़ों की रज़ामंदी हासिल कर लूंगा।

हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं इसे खरीदना चाहता हूं। इस लिए क़ीमत तै कर दीजिए।

इत्तिफ़ाक़ से उस मज्मे में वे दोनों यतीम बच्चे भी मौजूद थे। दोनों खड़े हो गये। उन्हों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम इस ज़मीन को आप की नज़्र करते हैं। आप जो चाहें शौक़ से बना लें।

हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे प्यारे बच्चो ! तुम्हारी इस दरिया-दिली का शुक्रिया। मगर मैं चाहता हूं कि तुम क़ीमत ले लो और उन पैसों को मुआज़ की मारफ़त तिजारत में लगा दो।

दोनों बच्चों ने कहा, अगर हुजूर सल्ल० का यही हुक्म है, तो हमें यह भी मंज़ूर है।

चुनांचे कुछ आदमियों ने क़ीमत तज्वीज़ की।

हुजूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को क़ीमत अदा करने का हुक्म दिया।

हज़रत अबूबक्र ने फ़ौरन क़ीमत अदा कर के बैनामा लिखवा दिया।

उस मैदान में कुछ खजूरों के पेड़ थे, कुछ मुश्रिकों की क़ब्रें थीं, हुजूर सल्ल० ने उसी वक़्त पेड़ों के कटवाने और क़ब्रों को हमवार करने का हुक्म दे दिया और मस्जिद की तामीर का काम शुरू हो गया।

हुजूर सल्ल० खुद मस्जिद की तामीर के काम में लगे। मुहाजिर और अन्सार भी पूरे ज़ौक़ और शौक़ से इस काम को अन्जाम दे रहे थे। इस तरह उम्मीद के खिलाफ़ मस्जिद बहुत जल्द बन कर तैयार हो गयी।

मस्जिद की दीवारें पत्थर और गारे से बनायी गयीं। छत खजूर की लकड़ियों और खजूर के पत्तों से बनायी गयी। मस्जिद तैयार होने पर यसरब के तमाम मुसलमान उसी मस्जिद में आ कर नमाज़ पढ़ने लगे।

मस्जिद की तैयारी के बाद हुजूर सल्ल० का मकान तामीर होने लगा।

फिर हुजूर सल्ल० ने ज़ैद बिन हारिस और अबू राफ़ेअ को मक्का मुअज़्ज़मा इस लिए रवाना कर दिया था कि वे हज़रत फ़ातमा, हज़रत कुलसूम, हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ, हज़रत उमामा बिन ज़ैद, उन की वालिदा हज़रत ऐमन, हज़रत अबूबक्र के अज़ीज़ों और उन मुसलमानों को, जो मक्का में रह गये हैं, अपने साथ ले आएं।

हुजूर सल्ल० ने यसरब में आ कर देखा कि यसरब और उसके आस-पास के इलाक़ों में काफ़िरों और यहूदियों का तूती बोल रहा है। उन के मुक़ाबले में मुसलमान कमज़ोर और थोड़े हैं। हुजूर सल्ल० ने समझ लिया कि यसरब में अम्न व अमान उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता, जब

तक कि मुश्रिक, यहूदी और मुसलमान तीनों में कोई समझौता न हो जाए।

हुज़ूर सल्ल० को यह भी डर था कि कुफ़्फ़ारे मक्का यसरब वालों को मुसलमानों के खिलाफ़ उभार कर के खानाजंगी न करा दें। इस लिए आप ने यही मुनासिब समझा कि इन तीनों ग्रुपों में एका क़ायम हो जाए और ये तीनों फ़िर्क़े एक दूसरे के साथी बन जाएं।

एक दिन आप ने यहूदियों और मुश्रिकों के तमाम बड़ों को जमा किया। मुश्रिकों में सब से ज़्यादा हर दिल अज़ीज़ अब्दुल्लाह बिन उबई था। यह आदमी निहायत तजुर्बेकार, होशियार और चालाक था। औस और खज़रज के तमाम क़बीलों पर उस का असर था और तमाम क़बीले मुत्तफ़िक़ा तौर पर उस की सरदारी को मानते थे।

यसरब वाले उसे बादशाह बनाने पर तैयार थे। उस के लिए सुनहरा ताज तैयार करा लिया गया था। लोग शानदार जलसा तर्तीब दे कर उस की शाही का एलान करने वाले थे कि उन्हीं दो दिनों में हुज़ूर सल्ल० यसरब तश्रीफ़ ले आए। औस व खज़रज के बा इज़्ज़त लोग मुसलमान हो गये। इस तरह अब्दुल्लाह बिन उबई की शाही अधर में लटक कर रह गयी।

अब्दुल्लाह को मुसलमानों और मुसलमानों के हादी का दाखिला निहायत नागवार गुज़रा। उन के आने से उस की तमाम उम्मीदों पर पानी फिर गया।

वह हुज़ूर सल्ल० को अपना रक़ीब और दुश्मन समझने लगा। पर चूंकि वह चालाक भी बहुत था, इस लिए ज़माने के रुख को देखते हुए अपनी दुश्मनी को छिपाये भी रहा और ऊपरी दिल से मुसलमानों का हमदर्द बना रहा।

हुज़ूर सल्ल० ने समझौते की फ़िज़ा बनाने के लिए एक सभा बुलायी।

अब्दुल्लाह बिन उबई भी इस में शरीक हुआ और यहूदी क़बीलों के लोग और दूसरे बड़े भी उसमें शरीक हुए।

जब तमाम लोग आ चुके, तो हुज़ूर सल्ल० ने सब से मुखातब हो कर फ़रमाया, यसरब वालो! तुम इस बात को अच्छी तरह जानते हो कि किसी शहर या किसी मुल्क की खुशहाली उसी वक़्त हो सकती है, जबकि उस शहर या मुल्क में अम्न व अमान रहे, लोग बे-फ़िक्री से खेती करें, तिजारत करें, और अपने कारोबार में लगे रहें।

लड़ाई-झगड़े अम्न व अमान को खत्म कर देते हैं। लड़ाई किसी हाल

में अच्छी नहीं होती। जो लोग किसी लड़ाई में शरीक हो चुके हैं, वे उसके कड़वे तजुर्बों को खूब जानते हैं। लड़ाई मजबूरी की हालत में उस वक़्त लड़नी चाहिए, जब कोई रास्ता न रह जाए। जो लोग तहज़ीब व तमद्दुन के एतबार से तरक़्क़ी करना चाहते हैं, उन्हें लड़ाई से परहेज़ करना चाहिए।

लड़ाई क़ौमों को कमज़ोर कर देती है, शहरों और मुल्कों को तबाह कर डालती है। लोगों को मुफ़्लिस और परेशाने हाल बना देती है। जो मज़ा मिल-जुल कर रहने में है, लड़ने-झगड़ने में वह बात नहीं है।

इस वक़्त यसरब में तीन क़ौमें आबाद हैं—एक बुतपरस्त, दूसरे यहूदी, तीसरे मुसलमान। ये तीनों ताक़तें क़रीब-क़रीब एक दूसरे की टक्कर की हैं। अगर ये तीनों ताक़तें एक दूसरे से लड़ती-झगड़ती रहीं, तो तीनों ताक़तें कमज़ोर हो जाएंगी, बाहर की कोई भी ताक़त आ कर इन को नुक़सान पहुंचा सकती है, लेकिन अगर ये तीनों ताक़तें मिली-जुली रहीं, तो कोई उन की तरफ़ आंख उठा कर न देख सकेगा। मिल-जुल कर रहने में बड़ी बरकत है। इस लिए मैं चाहता हूं कि तुम तीनों ख़ुशी से रज़ामंद हो कर एक अहद नामा तैयार कर लो।

सब लोग हुज़ूर सल्ल० की बातें बड़े ध्यान से सुनते रहे, चूंकि बात माक़ूल थी, इस लिए किसी को रद्द करने की हिम्मत न हुई। सब ने अहद नामे पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया।

अगरचे अब्दुल्लाह बिन उबई इस अहदनामे के ख़िलाफ़ था, साथ ही यहूदी भी दिल से न चाहते थे, पर वे देख रहे थे कि मुसलमानों की ताक़त दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, इस लिए न चाहते हुए वे भी राज़ी हो गये।

अहद नामा लिखा जाने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने लिखना शुरू किया। हर शर्त पर पहले बहस होती, जब सब की राय बन जाती, तो अहद नामा में लिख दी जाती। इस अहद नामा की अहम शर्तें ये थीं—

१. यसरब की तमाम क़ौमें, सारे क़बीले और कुल ख़ानदान मिल-जुल कर रहेंगे।

२. यसरब के रहने वाले अपने झगड़े ख़ुद तै करेंगे, पर जो झगड़े क़ौमी होंगे और उन्हें क़ौमें न तै कर सकें, तो उन का फ़ैसला हज़रत मुहम्मद सल्ल० करेंगे और आप का फ़ैसला आख़िरी होगा।

३. यसरब के रहने वाले, यसरब के बाहर के लोगों से किसी क़ौम के ख़िलाफ़ कोई साज़िश न करेंगी।

४. अगर कोई यसरब पर हमलावर होगा, तो तीनों क़ौमें मिल कर दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे।

५. यसरब के लोग क़ुरैशे मक्का या मुसलमानों के दुश्मनों को पनाह न देंगे।

६. लड़ाई के फ़ायदों में भी तीनों क़ौमें बराबर की हिस्सेदार होंगी।

७. लड़ाई के खर्चे तीनों क़ौमें बराबर-बराबर अदा करेंगी।

८. जो क़ौम या क़बीले यसरब के यहूदियों के दोस्त हैं, मुससमान भी उन के दोस्त रहेंगे और जो क़ौमें या क़बीले मुसलमानों के दोस्त हैं, यसरब के यहूदी भी उन से दोस्ताना सुलूक करेंगे।

९. मुसलमानों से कभी न लड़ेंगे।

१०. यसरब के अन्दर खून-खराबा हराम समझा जाएगा।

११. मज़लूम की मदद सब पर फ़र्ज़ होगी।

१२. इन शर्तों की खिलाफ़वर्ज़ी करने वाली क़ौम नतीजे की ज़िम्मेदार होगी।

इस अहदनामे पर सब ने दस्तखत किये। जब अहदनामा पूरा हो गया, तो सब लोग उठ-उठ कर चले गये। सिर्फ़ मुसलमान बैठे रह गये।

ज़ुह्र की नमाज़ का वक़्त हो गया। सब ज़ुह्र की अदाएगी में लग गये।

जब सब नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुके, तो साद बिन मुआज़ ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! तमाम क़ौमें जब इबादत का वक़्त होता है, तो लोगों को जमा करने के लिए ऐसी चीज़ें बजाती हैं, जिस से लोग जमा हो जाते हैं, जैसे कोई शंख बजाता है, कोई घंटी, कोई तालियां, पर मुसलमानों में कोई ऐसी चीज़ नहीं बजायी जाती, जिसे सुन कर तमाम मुसलमान जमा हो जाया करें। इस वजह से लोगों को नमाज़ के वक़्तों की खबर नहीं होती। अगर हम भी कोई चीज़ बजाने लगें, तो सारे मुसलमान वक़्त पर जमा हो जाया करें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मुझे भी अक्सर इस का ख्याल हुआ है। बे शक कोई ऐसी चीज़ होनी चाहिए, जिसे सुन कर मुसलमान जमा हो जाया करें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा यह ख्याल मुनासिब है। इस वक़्त तमाम मुसलमान मौजूद हैं सब सोचें कि मुसलमानों के जमा करने का क्या तरीक़ा अख्तियार किया जाए?

हज़रत अली बोले, किसी धातु का एक बड़ा घंटा बना कर लटका

दिया जाए। जब नमाज़ का वक़्त हो तो घंटा लटका दिया जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह कुफ़्फ़ार से मिलती-जुलती चीज़ है, जो मुनासिब नहीं है।

हज़रत मिक्दास ने कहा, दफ़ कोई क़ौम नहीं बजाती, हम दफ़ बजाया करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दफ़ खेल-तमाशे में शामिल है। यह भी मुनासिब नहीं है।

हज़रत उमर ने कहा, कोई आदमी ऊंची आवाज़ में नमाज़ की आवाज़ लगा दिया करें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, यह मुनासिब है। इस आवाज़ का नाम अज़ान रखो। आवाज़ देने वाले को मुअज़्ज़िन कहा जाए।

सब ने इस राय से इत्तिफ़ाक़ ज़ाहिर किया।

हज़रत बिलाल की आवाज़ बुलन्द और प्यारी थी। उन के ज़िम्मे यह काम कर दिया गया।

चूंकि अस्र का वक़्त आ गया था, इस लिए हज़रत बिलाल ने अज़ान दी। लोगों पर इस अज़ान का ख़ासा असर हुआ।

अज़ान के बाद नमाज़ पढ़ी गयी। उस दिन से पांचों वक़्त की अज़ान दी जाने लगी।

अज़ान होते ही तमाम लोग काम छोड़ कर आ जाते, जमाअत से नमाज़ पढ़ते और बिखर कर फिर कारोबार में लग जाते।

अन्सार ने मुहाजिरों के सत्कार में कोई कसर नहीं की। जिस ख़ुलूस, क़ुर्बानी और एहतियात से उन्होंने भाईचारे के अहद को निभाया, तारीख़ में इस की नज़ीर नहीं मिलती।

उन्होंने मुहाजिरों को अपना सगा भाई समझा, इस तरह से उन की मदद की। पहले उन्हें खाना खिलाया, फिर ख़ुद खाया, पहले उन की तक्लीफ़ दूर की, फिर अपनी तरफ़ तवज्जोह दी। पहले उन को आराम पहुंचाया, फिर ख़ुद आराम किया।

चूंकि अन्सार इस बात को जानते थे कि मुहाजिरों ने सिर्फ़ दीन की ख़ातिर मक्के में इंतिहाई तक्लीफ़ें बर्दाश्त की हैं। अपने घर, अपने वतन, नाते-रिश्तेदार, माल व ज़र, ख़ानदान और बिरादरी वग़ैरह सब को छोड़ कर यसरब चले आए हैं, इसी लिए वे ख़्याल रखते थे कि मुहाजिरों का किसी भी तरह दिल न टूटने पाये, इस वजह से उन्होंने उन की दिलदारी में कोई कसर नहीं की।

दूसरी तरफ़ मुहाजिर अन्सार के बड़े शुक्रगुज़ार थे, वे इस बात की कोशिश करते थे कि अंसार पर अपना बोझ न डालें। वे निहायत मेहनत और मुस्तैदी से मज़दूरी करते, दुकानदारी और तिजारत में लगे रहते, यहां तक कि थोड़े ही दिनों में अन्सार की मदद से बे नियाज़ हो गये।

जब मुसलमानों को रोज़ी की तरफ़ से बे फ़िक्री हुई, तो उन्होंने इस्लाम की तब्लीग़ शुरू की।

अल्लाह ने इस्लाम में इतना खिंचाव और क़ुरआन शरीफ़ में ऐसा असर रखा है कि जिस के सामने इस्लाम की तालीम पेश की जाती है, कलामे पाक की आयतें पढ़ी जाती हैं, उस का दिल असर लिये बिना नहीं रहता।

चुनांचे कुफ़्फ़ार अब गिरोह के गिरोह मुसलमान होने लगे। मुसलमानों की तायदाद दिन दोगुनी रात चौगुनी बढ़ने लगी।

यों तो सैंकड़ों मुश्रिक मुसलमान हुए, लेकिन दो आदमी ऐसे मुसलमान हुए जिन की वजह से यसरब के लोगों पर ख़ास असर पड़ा।

इन में से एक अब्दुल्लाह बिन सलाम थे।

यह यहूदी थे, निहायत ज़बरदस्त आलिम थे। तौरात पर बड़ी गहरी नज़र रखते थे। यहूदी दुनिया में वह बहुत मशहूर थे, उन के इस्लाम क़ुबूल करने से यहूदी हैरान रह गये।

दूसरे सलमान फ़ारसी थे।

यह मजूसी थे, फ़ारस के रहने वाले थे, आग के पुजारी थे, लेकिन आग की पूजा से परेशान हो कर ईसाई हो गये थे। फ़ारस से शाम चले आये थे। शाम से नसीबन गये। वहां एक बूढ़ा राहिब था। जब वह मरने लगा, तो उस ने सलमान को हिदायत की कि बहुत जल्द तिहामा के शहर उम्मुल क़ुरा में आख़िरी पैग़म्बर आने वाले हैं और वे अपनी क़ौम के ज़ुल्म से तंग आ कर यसरब में हिजरत करेंगे। उन का मज़हब इस्लाम होगा। तुम इस्लाम क़ुबूल कर के मुसलमान हो जाना।

चुनांचे सलमान यसरब में आ गये थे और हुज़ूर सल्ल० के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे। सलमान मजूसी और यहूद व नसारा की किताबें पढ़े हुए थे। बहुत बड़े आलिम समझे जाते थे। हर फ़िरक़ा और हर तबक़ा उन की इज़्ज़त करता था। वह भी मुसलमान हो गये।

उन के मुसलमान होने से तमाम फ़िर्क़ों पर असर पड़ा।

जिहाद की इजाज़त

हुज़ूर सल्ल० जब से यसरब में तशरीफ़ लाये थे, उस वक़्त से इस्लाम और मुसलमानों की चर्चा होने लगी थी।

अब यसरब का नाम भी बदल गया था। तमाम लोग उसे मदीनतुन्नबी (नबी का शहर) कहने लगे थे। मदीनतुन्नबी से सिर्फ़ मदीना रह गया था और सारी दुनिया उसे इसी नाम से जानने लगी थी।

हुज़ूर सल्ल० मदीना के कुफ़्फ़ार की हरकतें देख कर समझ रहे थे कि वे ज़रूर बद-अहदी करेंगे। वे ख़ूब जान रहे थे कि इस्लाम और मुसलमानों की तरक़्क़ी उन की निगाहों में खटक रही है और वे उन से दुश्मनी करने ही पर तैयार हैं।

हुज़ूर सल्ल० की दिली आरज़ू थी कि न सिर्फ़ मदीने में, बल्कि सारे अरब में अम्न व अमान क़ायम रहे, क्योंकि अम्न की हालत में तब्लीग़ के ज़रिए इस्लाम का दायरा जितना फैल सकता है, वैसा लड़ाई के ज़माने में नहीं हो सकता।

चुनांचे आप कुफ़्फ़ार की मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाते और उन्हें अम्न व सुकून से रहने और किये गये वायदे की पाबन्दी करने की हिदायत करते, पर कुफ़्फ़ारे मदीना भी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरह ही थे, जिन्हें न वायदों का ख़्याल था और न इंसानियत का। वे आप के सामने तो सुकून से रहने का इक़रार कर लेते, लेकिन हुज़ूर सल्ल० के जाते ही मुसलमानों को सताने और नुक़सान पहुंचाने का मंसूबा बनाते।

इन शरीर शैतानों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई था। वह चाहता था और दिल से चाहता था कि किसी तरह मुसलमान मदीने से निकल जाएं। वही शैतानी साज़िशें तैयार करता और सब को उन पर अमल करने की तर्ग़ीब देता।

समझौते के कुछ ही दिनों बाद क़ुरैश का एक वफ़्द उस शैतान के पास आया। इस वफ़्द को मक्का के मुश्रिकों ने उस के पास भेजा था।

वफ़्द ने आ कर उस से कहा कि मक्का के तमाम बड़े लोगों ने मदीना वालों के नाम यह पैग़ाम भेजा है कि तुम ने मक्का के उन तमाम बाशिंदों को जो मुसलमान हो गये हैं, मदीने में आबाद किया है, या तो तुम सब मिल कर उन्हें निकाल दो, वरना हम पूरे साज़ व सामान के साथ मदीने पर हमला करेंगे और तुम्हारे मर्दों और लड़कों को क़त्ल कर के तुम्हारी औरतों को गिरफ़्तार कर लेंगे और मक्का में ला कर बेच देंगे।

अब्दुल्लाह उस पैग़ाम को सुन कर बड़ा ख़ुश हुआ।

उस ने एक बड़ी मज्लिसे शूरा बुलायी। हर तब्क़े, हर क़बीले और हर ख़ानदान को इकट्ठा किया।

जब लोग आ गये, तो उस ने मक्का के मुश्रिकों का पैग़ाम सुनाकर कहा, ऐ यसरब वालो! तुम जानते हो कि हम मक्का वालों का मुक़ाबला किसी तरह भी नहीं कर सकते। हमारे लिए यही मुनासिब है कि हम मुसलमानों को यहां से निकाल दें। अगर वे आसानी से न निकलें तो उन से लड़ें और लड़ कर उन्हें शहर निकाला दें।

एक बूढ़े आदमी ने कहा, लेकिन हम मुसलमानों के साथ समझौता कर चुके हैं। समझौतों का ख़त्म करना हमारी क़ौमी रिवायत के ख़िलाफ़ है। दुनिया हमें बद-अह्द कहेगी, मेरे ख़्याल में बद-अह्दी मुनासिब नहीं है।

अब्दुल्लाह ने कहा, अह्द नामा कोई चीज़ नहीं होता। अह्द (वायदे) की पाबन्दी आपस में ज़रूरी है। दूसरों के साथ जो समझौता किया जाए, उसे सिर्फ़ उस वक़्त निभाना चाहिए, जब तक समझौता तोड़ने की ताक़त न पैदा हो। देखो! अगर हम ने मुसलमानों को अपने शहर से निकाल न दिया तो वे सारे मदीने पर क़ब्ज़ा कर लेंगे, सारे शहर को मुसलमान बना लेंगे, तुम्हारे माबूदों को तोड़ डालेंगे। क्या तुम इसे गवारा कर लोगे?

हर ओर से आवाज़ें आयीं, कभी गवारा न करेंगे।

अब्दुल्लाह ने कहा, अगर गवारा नहीं करना चाहते, तो मुसलमानों को अपने शहर से निकाल दो।

कुछ आवाज़ें आयीं, ज़रूर निकालेंगे।

एक पुर जलाल आवाज़ आयी, कभी न निकाल सकोगे।

सब इस पुर जलाल आवाज़ को सुन कर हैरान हुए। सब ने एक साथ नज़रें उठा-उठा कर उसी तरफ़ देखा, जिस तरफ़ से यह आवाज़ आयी थी।

इस तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० बड़े शान व वक़ार के साथ तशरीफ़ लाते नज़र आए। आप तंहा आ रहे थे, अब्दुल्लाह बिन उबई के क़रीब आ कर ठहरे।

आप ने कुछ ऊंची आवाज़ में फ़रमाया—

यसरब वालो! क़ुरैशे मक्का तुम्हें धोखा दे कर मुसलमानों से लड़ना चाहते हैं। सोचो! तुम मुसलमानों से अह्द व इक़रार कर चुके हो कि कभी तुम उन से न लड़ोगे। अगर तुम मक्का वालों के फ़रेब में आ गये और क़ौल व क़रार तोड़ कर मुसलमानों से लड़े, तो एक तो सारे में बद-अह्द मशहूर हो जाओगे, फिर कोई तुम्हारी किसी बात का एतबार न

करेगा। हर क़बीला, हर खानदान और हर आदमी तुम को हिक़ारत की नज़र से देखेगा। दूसरे अगर तुम मुसलमानों से लड़े तो तुम्हारे ही भाई, तुम्हारे ही वतन के लोग, तुम्हारे ही क़बीले के लोग मुसलमान हो चुके हैं, तो गोया तुम अपने ही लोगों से लड़ोगे, वे तुम्हें या तुम इन्हें क़त्ल करोगे, इस तरह तुम सब बर्बाद हो जाओगे और फिर मक्का वाले या और लोग तुम्हारे शहर पर क़ब्ज़ा करेंगे, तुम्हें ग़ुलाम बना लेंगे, क्या तुम इस ज़िल्लत को गवारा कर लोगे? मेरे ख्याल में कभी न कर सकोगे। तुम्हारे लिए मुनासिब यही है कि जो इक़रार कर चुके हो, उस पर क़ायम रहो। अगर मक्का वाले मदीने पर हमला करें, तो मुसलमानों के साथ मिल कर उन का मुक़ाबला करो। अगर तुम ने मिल कर मुक़ाबला किया तो यक़ीनन जीत तुम्हारी होगी।

तमाम लोग बड़े ग़ौर और तवज्जोह से हुज़ूर सल्ल० की तक़रीर सुन रहे थे।

जब हुज़ूर सल्ल० खामोश हो गये, तो कुछ होशमंद लोगों ने कहा, बेशक, आप ने बहुत ठीक कहा, हमें आपस में क़त्ल व खून कर के अपनी क़ौम को इतना कमज़ोर न बना लेना चाहिए, जिस से दूसरे लोगों में हमें ग़ुलाम बनाने का लोभ पैदा हो। हमें अहदनामा की पाबन्दी करनी चाहिए।

अब्दुल्लाह की उम्मीदों पर एक बार फिर ओस पड़ गयी। शाही का ख्याल फिर हवा हो गया। उस ने हिम्मत कर के कहा, लोगो! तुम मक्का वालों का मुक़ाबला कर सकोगे?

कुछ जोशीले नव जवानों ने कहा, क्यों न कर सकेंगे? हम बुज़दिल नहीं हैं, हमारी रगों में भी वही खून दौड़ रहा है, जो हमारे बुज़ुर्गों की रगों में दौड़ता था। हम लड़ेंगे और आखिरी वक़्त तक लड़ेंगे या तो हम जीतेंगे या लड़ाई के मैदान में मर्दानावार लड़ कर जान दे देंगे। ग़ुलामी की ज़िन्दगी से मौत हज़ार दर्जे बेहतर है।

अब्दुल्लाह समझ गया कि अब उस का जादू नहीं बोलेगा। वह खामोश हो गया। लोग तो उठ-उठ कर चल दिये।

हुज़ूर सल्ल० भी चले आये। मक्के का वफ़्द नाकाम वापस लौट गया।

इस वाक़िए के कुछ दिनों के बाद ही हुज़ूर सल्ल० पर वह्य आयी कि जो लोग घर से बेघर किये गये, वतन से निकाले गये, उन पर कुछ गुनाह नहीं कि वे कुफ़्फ़ार से जिहाद करें। जिहाद में बड़ा सवाब है।

मुसलमान वह्य नाज़िल होने से बहुत खुश हुए।

अब तक हुज़ूर सल्ल० उन्हें लड़ाई की इजाज़त न देते थे सब्र का

सबक़ सिखाते रहते थे, अब मुसलमान समझ गये कि उन्हें लड़ने की इजाज़त दी जाएगी और जो लोग उन्हें सताएंगे, उन को ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा।

सच तो यह है कि अब तक मुसलमान ज़ुल्म व सितम बरदाश्त कर रहे थे। बे-वतन, बे-घर बन गये थे, अज़ीज़ व अक़ारिब छूट गये थे, उन्हें देख कर कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म बढ़ गये और वे मुसलमानों को बुज़दिल समझने लगे थे।

मुसलमान और तमाम मुसीबतें बरदाश्त कर सकते थे, लेकिन बुज़दिली के इलज़ाम को बरदाश्त न कर सकते थे, इसलिए उन की रूह को ख़ास सदमा होता था। अब इस नामनिहाद इल्ज़ाम का मौक़ा आ गया था। वे ख़ुश हो गये, अब बराबर का जवाब दे सकेंगे।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र, हमज़ा, अली, ज़ैद, मुआज़, उसैद और कुछ दूसरे सहाबियों के साथ मस्जिद में बैठे थे कि एक मुसलमान अरब परेशान हाल मस्जिद में आए और हुज़ूर सल्ल० को सलाम कर के बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कर्ज़ बिन जाबिर मक्का के मशहूर सरदार ने हमारी चारागाह पर छापा मारा और बहुत से ऊंट ले कर चल दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने मालूम किया, उस के साथ कितने आदमी थे ?

अरब ने कहा, लगभग तीन सौ तजुर्बेकार नवजवान थे।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मक्का वालों का ज़ुल्म हद से आगे बढ़ गया है। तीन सौ मील चल कर मुसलमानों की चरागाह पर हमला कर के एलाने जंग करना चाहते हैं। दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि मुसलमान पस्त-हिम्मत, बुज़दिल और कमज़ोर हैं। ख़ुदा की क़सम ! यह बात नहीं है। वे नहीं जानते कि मुसलमान किस क़दर बहादुर और निडर होते हैं। वह वक़्त क़रीब आ रहा है, जबकि दुनिया मुसलमानों की बहादुरी का लोहा मानने लगेगी। दुनिया के बादशाह मुसलमानों का नाम सुन कर कांपने लगेंगे। दुनिया की बहादुर क़ौमें मुसलमानों के सामने हथियार डाल देंगी।

हुज़ूर सल्ल० का मुबारक चेहरा लाल हो गया।

यह पहला मौक़ा था कि सहाबा ने आप को किसी क़दर गुस्से की हालत में देखा, लेकिन यह गुस्सा बहुत जल्द दूर हो गया।

आप ने हज़रत हमज़ा को ख़िताब कर के कहा—

चचा ! आप ने सुना होगा कि मक्के वालों का एक क़ाफ़िला अबू-सुफ़ियान की सरदारी में शाम देश से आ रहा है।

हां, मैं ने सुना है, हज़रत हमज़ा ने कहा, तमाम मदीना में यह मशहूर हो गया है ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं नहीं चाहता कि मुसलमान लड़ाई लड़ें, लेकिन कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मों ने मजबूर कर दिया है। अब बिना लड़ाई कोई रास्ता नहीं रह गया है। कुर्ज़ बिन जाबिर ने हमारी चरागाह पर हमला कर के एलाने जंग कर दिया है। हमें इस एलान को क़ुबूल कर लेना चाहिए ।

आज तक कभी हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई का इरादा न फ़रमाया था, न सहाबा किराम को लड़ाई की इजाज़त दी थी, पर उस वक़्त की हुज़ूर सल्ल० की बातों से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि आप लड़ाई का इरादा रखते हैं ।

सहाबा किराम लड़ाई के लिए तुले बैठे थे। उन पर इतने ज़ुल्म हुए थे कि वे बहुत तंग आ गये थे। बदला लेना इंसानी फ़ितरत में दाखिल है। एक ग़ैरतमंद इंसान यह कभी गवारा नहीं कर सकता कि कोई आदमी उस के एक गाल पर तमांचा मारे, तो वह दूसरे गाल को उस के सामने पेश करे और पिटने के लिए खामोश खड़ा रह जाए ।

इंसानियत का तक़ाज़ा है कि कोई आदमी एक मुक्का मारे, तो जवाब में एक ही मुक्का उस को मारा जाए। इस्लाम की तालीम भी यही है ।

मुसलमान हुज़ूर सल्ल० को लड़ाई पर तैयार देख कर बहुत खुश हुए ।

सब से पहले हज़रत उमर रज़ि० बोले, क्या हमें हुज़ूर सल्ल० इजाज़त देते हैं कि हम कुफ़्फ़ारे मक्का का एलाने जंग क़ुबूल कर लें ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, हमें एलाने जंग क़ुबूल कर लेना चाहिए। अब तक हम ने ज़ुल्म व सितम बरदाश्त कर के दुनिया में सब्र व इस्तिक़ामत की नज़ीर क़ायम कर दी है। अब हमें बहादुरी और दिलेरी की भी नज़ीर क़ायम करनी चाहिए। दुनिया की तारीख में ऐसी मिसाल छोड़नी चाहिए, जिस का ज़िक्र क़ियामत तक होता रहे, लेकिन इस का ख्याल रखना ज़रूरी है कि बहादुरी ज़ुल्म के दर्जे पर न पहुंचने पाये। मुसलमानों की तलवारें मज़्लूमों और बेकसों पर न उठें, हमेशा ज़ालिमों और घमंडियों का सर कुचलें ।

हज़रत अबूबक्र ने कहा, ऐसा ही होगा ।

हज़रत हमज़ा ने पूछा, आप ने अबूसुफ़ियान और उस के क़ाफ़िले का ज़िक्र किया था ?

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, हां मैं ने इसका ज़िक्र इसलिए किया था कि हमें

अबूसुफ़ियान और उस के क़ाफ़िले पर हमला करना चाहिए। इस हमले से मेरा मंशा सिर्फ़ डराना-धमकाना है, ताकि मक्के वाले समझ लें कि अगर वे हम पर ज़ुल्म करेंगे, तो हम उन की तिजारत शाम देश से बन्द कर देंगे अगर वे अपनी ज़ालिमाना हरकतों से बाज़ आ जायेंगे, तो हमें उन से कोई छेड़खानी नहीं करनी चाहिए, लेकिन अगर वे बाज़ न आए और बराबर अपनी कोशिशों में लगे रहे, तो फिर हम को भी जारिहाना जिहाद के लिए तैयार रहना चाहिए।

हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० बोले, हुज़ूर सल्ल०! मक्का वालों से यह उम्मीद रखना कि वे ज़ुल्म व सितम से रुक जायेंगे, सिर्फ़ धोखा है। वे ऐसे सरकश और ज़िद्दी हैं कि अपनी ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक मुसलमानों को सताने की कोशिश करेंगे। हम अब तक अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के इन्तिज़ार में थे, आज हम को जिहाद का हुक्म हो गया है। अब दुनिया देख लेगी कि मुसलमान बुज़दिल हैं या बहादुर?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, याद रखो, मुसलमान कभी बुज़दिल नहीं हो सकता। जो आदमी मौत और ज़िंदगी को ख़ुदा की तरफ़ से समझता है, उस का बुज़दिल होने का कोई मतलब ही नहीं। बुज़दिल तो वे होते हैं, जो मौत से डरते हैं। जो लोग मौत से नहीं डरते, वे बुज़दिल नहीं होते।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, हुज़ूर! हमें सुफ़ियान और उस के क़ाफ़िले पर हमला करने की इजाज़त अता की जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, मैं हमले की इजाज़त देता हूं, लेकिन इस मुहिम पर सारे मुसलमान न रवाना हों, सिर्फ़ थोड़े से मुहाजिर और अंसार जायें।

हज़रत हमज़ा ने कहा, जितने मुजाहिदों को आप इजाज़त देंगे, उतने ही जायेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सिर्फ़ साठ आदमी चुन लो।

मुसलमानों को यह न मालूम था कि अबूसुफ़ियान के कितने आदमी हैं, पर यह जानते हैं कि जितने भी आदमी होंगे, सब हथियारबन्द और लड़ने वाले होंगे। इस का भी अन्दाज़ा था कि उस के साथ काफ़ी आदमी होंगे, अगर ऐसा हुआ तो साठ आदमी उस क़ाफ़िले का मुक़ाबला न कर सकेंगे, मगर उन में इतना जोश और जिहाद का जज़्बा था कि उन्हों ने तायदाद की कमी-बेशी को न देखते हुए जिहाद पर रवाना होने का एलान कर दिया।

इस पर ख़ास बात यह थी कि हर मुसलमान ने जिहाद पर जाने की

तमन्ना की।

आप ने जब यह हाल देखा तो खुद ही साठ लोगों को चुन कर उबैद बिन हर्स को उन पर सरदार मुक़र्रर कर के हरे रंग का झंडा अता फ़रमा कर अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले की तरफ़ रवाना कर दिया।

इस इस्लामी फ़ौज की रवानगी को कुफ़्फ़ारे मदीना और यहूदियों ने हैरत की नज़रों से देखा। चूंकि यह फ़ौज अबू सुफ़ियान पर हमला करने के लिए रवाना हुई थी, इसलिए आम तौर पर इस की शोहरत हो गयी।

अबूसुफ़ियान को भी मालूम हो गया इसलिए वह रास्ते से कतरा कर अपने क़ाफ़िले को निकाल ले गया और ज़मज़म बिन अम्र को मक्का की तरफ़ दौड़ाया और कहला दिया कि मुसलमानों के हमले का ख़तरा है, कुमक रवाना की जाए।

राबिग़ में पहुंच कर मुसलमानों को मालूम हुआ कि क़ाफ़िला रास्ते से बच कर निकल गया। चूंकि उन्हें क़ाफ़िले का पीछा करने का हुक्म न था, इसलिए वे लौट आए।

अगरचे इस मुहिम से इस्लाम और मुसलमानों को कोई फ़ायदा या नुक़्सान न हुआ, लड़ाई की नौबत न आयी, पर एक बात ज़रूर हुई कि मुसलमानों का रौब कुफ़्फ़ार पर क़ायम हो गया।

इस टुकड़ी की वापसी के कुछ ही दिनों बाद मालूम हुआ कि मक्का से एक ज़बरदस्त फ़ौज मुसलमानों से लड़ने के लिए मदीना आ रही है। इस फ़ौज के आने का हाल सुन कर मुसलमानों को चिंता हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने एक मज्लिसे शूरा बुलायी। तमाम मुहाजिरों और अंसार को तलब किया। जब सब आ गये, तो आप ने फ़रमाया—

मुसलमानो! कुफ़्फ़ार नहीं चाहते कि मुसलमान अम्न व अमान से रहें, इस्लाम की तरक़्क़ी उन की आंखों में कांटा बन खटक रही है। मालूम हुआ है कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने मुसलमानों को फ़ना कर डालने का पक्का इरादा कर लिया है। उन की भारी फ़ौज बड़े सामान के साथ सामने आ रही है, गोया मक्का ने अपने जिगरगोशों और चुने हुए बहादुर लोगों को तुम्हारी तरफ़ भेजे हैं। सोच समझ कर बताओ कि उन का मुक़ाबला करने के सिलसिले में तुम्हारी क्या राय है?

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हम लड़ाई की तमन्ना कर रहे थे। खुदा ने जिहाद की इजाज़त दे दी है। हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई की इजाज़त दी। मक्का वाले लड़ने के लिए आ रहे हैं, हम मुक़ाबला करने के लिए तैयार हैं। हमारी तलवारें और हमारे मज़बूत

बाज़ू उन्हें बता देंगे कि मुसलमानों से लड़ना कोई हंसी-खेल नहीं है।

लड़ाई का मैदान तो बहादुरों के लिए सुकून की चीज़ है, हज़रत अबू-बक्र ने कहा, एक मुसलमान लड़ाई से जितना खुश होता है और किसी बात से खुश नहीं हो सकता। मक्के वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि मुसलमान कितने बहादुर हैं।

मक्के वालों को अपनी बहादुरी पर नाज़ है, हज़रत मिक़दाद ने बताया, तो बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि मुसलमान शेर हैं और शेरों का मुक़ाबला लोमड़ियां नहीं कर सकतीं। आप हम को मुक़ाबले की इजाज़त दें।

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हम बनी इस्राईल की तरह नहीं हैं, जिन्हों ने हज़रत मूसा से कह दिया था कि आप और आप का रब दोनों कुफ़्फ़ार से लड़ो, हम तो यहीं बैठ कर तमाशा देखेंगे। हम तो आप के हुक्म के इन्तिज़ार में हैं। हम को मुक़ाबले की इजाज़त दीजिए। हम इस्लाम के दुश्मनों से आख़िरी दम तक लड़ेंगे।

ये तमाम लोग, जिन्हों ने अपनी रायें ज़ाहिर की, मुहाजिर थे।

हुज़ूर सल्ल० ने उन की बातें सुन कर फ़रमाया, मुसलमानो ! बताओ, कुफ़्फ़ार से लड़ाई के बारे में तुम्हारा क्या मश्विरा है ?

चूंकि अन्सार में से उस वक़्त तक किसी ने अपनी राय न दी थी, इस-लिए हुज़ूर सल्ल० के दोबारा पूछने पर वे समझ गये कि हुज़ूर सल्ल० किन लोगों की राय जानना चाहते हैं।

चुनांचे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने कहा, शायद आप हमारी राय जानना चाहते हैं ?

हां, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हम आप पर ईमान लाये हैं, आप को ख़ुदा का रसूल यक़ीन करते हैं, हज़रत साद ने फ़रमाया, यह कैसे मुम्किन है कि अल्लाह का रसूल, हमारा हादी, इस्लाम का अलमबरदार कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिए जाए और हम घरों में बैठे कुफ़्फ़ारे मक्का अगरचे हमारी तरह इंसान हैं, अगरचे उन की तायदाद ज़्यादा है, लेकिन हम उन से डरने और मरऊब होने वाले नहीं। हम उन से लड़ेंगे और आख़िरी सांस तक लड़ेंगे, लड़ना तो कोई बात ही नहीं, सब हुज़ूर सल्ल० के फ़िदाई हैं, अगर आप का थोड़ा सा इशारा पायें तो समुन्दर में कूद पड़ें।

क्या हम लड़ाई से इसलिए डर कर पीछे रह जाएंगे कि हम कमज़ोर

हैं, ख़ुदा की क़सम ! नहीं, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने कहा, हम मुसलमान हैं और मुसलमान कभी लड़ाई से पीछे नहीं रह सकता। लड़ना तो हमारी तमन्ना है। जिस बुज़दिल और मक्कार क़ौम ने अल्लाह के रसूल और मुसलमानों को सताया है, हम उस से उस वक़्त तक लड़ेंगे, जब तक दम में दम है।

यह सोच लो कि तुम कमज़ोर हो, कम हो, पूरी तरह हथियारबन्द भी नहीं हो सकते, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे पास न ज़िरह बकतर हैं, न सब के पास तमाम हथियार हैं, न घोड़े हैं, न किसी मदद की उम्मीद है। बे सर व सामानी की हालत में अपनी ताक़त के भरोसे और ख़ुदा की मदद के सहारे दुश्मनों से लड़ना होगा, क्या तुम तैयार हो ?

हम ख़ुदा परस्त हैं, हम ख़ुदा पर भरोसा रखते हैं, हज़रत उमर ने कहा, उस की मदद के भरोसे पर हम सिर्फ़ मक्का वालों ही का नहीं, बल्कि सारे अरब का मुक़ाबला करने को तैयार हैं। हम लड़ेंगे और इन्शा-अल्लाह दुश्मनों को क़त्ल कर के उन पर ग़ालिब आ जाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ! परवरदिगार ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान कुफ़्फ़ार से लड़ कर शहीद होगा, वह बहिश्त में दाख़िल होगा, हज़रत साद बिन मुआज़ ने कहा, इस से ज़्यादा ख़ुशक़िस्मत कौन हो सकता है, जो जिहाद करे, कुफ़्फ़ार से लड़े और शहीद हो कर बहिश्त में दाख़िल हो जाए, आख़िर शहादत से बढ़ कर और कौन सा काम सवाब का होगा।

मुसलमानो ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सच तो यही है कि जिहाद से बढ़ कर सवाब का कोई काम नहीं है। एक मुजाहिद जब लड़ाई के लिए तैयार हो कर घर से निकलेगा, तो ख़ुदा उस के तमाम गुनाह माफ़ कर के बहिश्त में उस के लिए एक मकान मुक़र्रर फ़रमा देगा। अगर मुजाहिद शहीद हो जाएगा, तो हूरें और फ़रिश्ते उस की रूह को ख़ुदा के सामने ले जा कर पेश करेंगे। ख़ुदा उसे नवाज़ेगा और फ़रमायेगा कि इसे बहिश्त में ले जाओ। बहिश्त में वह निहायत आराम और सुकून और इत्मीनान से रहने लगेगा और मुजाहिद जीत कर वापस लौटा, तो ग़ाज़ी बन जाएगा। मेरी उम्मत का जो आदमी जब भी जिहाद करेगा, ख़ुदा उस के लिए बहिश्त के दरवाज़े खोल देगा। ख़ुदा का शुक्र है कि मुहाजिर और अंसार लड़ाई के लिए तैयार हैं। मुसलमानो ! जाओ, जल्दी तैयारी करो और सुबह चलने के लिए तैयार हो कर आओ।

मुसलमान उठ-उठ कर चले गये।

हुज़ूर सल्ल० भी अपने घर तशरीफ़ ले गये।

तमाम मुसलमान ज़ौक़ और शौक़ के साथ लड़ाई की तैयाररियां करने लगे।

कुफ़्फ़ारे मदीना ने भी मक्का वालों के हमले का हाल सुन लिया था। वे मुसलमानों के साथ मिल कर नहीं लड़ना चाहते थे, बल्कि इस बात की तमन्ना थी कि जल्द मुसलमानों को हार का मुह देखना पड़े और इस्लाम दुनिया से रुख़सत हो।

तमाम दिन और सारी रात मुसलमानों ने तैयारी की। दूसरे दिन सुबह की नमाज़ पढ़ते ही सब तैयार हो कर मदीने से बाहर क़ुबा के क़रीब आ-आ कर जमा हुए।

हुज़ूर सल्ल० इश्राक़ की नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ लाये।

आप ने मुसलमानों के मज्मे को देखा। उस में बहुत से ऐसे कमसिन लड़के देखे जिन की मसें भी न भीगी थीं। वे तेरह-तेरह, चौदह-चौदह साल के थे। वे शौक़े जिहाद में लड़ाई की धधकती आग में कूद पड़ने के लिए घरों से निकल आए थे।

आप ने इन कमसिन बच्चों को देख कर कहा, छोटे बच्चे वापस लौट जायें। ऐसे कमसिन बच्चों का लड़ाई में जाना मुनासिब नहीं है।

वे कमसिन बच्चे हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद सुन कर बेचैन हो गये।

उन में से एक लड़के ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या हम जिहाद के सवाब से महरूम रह जायेंगे ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अभी कमसिन हो। तुम नहीं जानते कि लड़ाई की आग कैसी सख़्त और कितनी तेज़ होती है। जब वह भड़कती है, तो हर वह आदमी, जो उस के क़रीब आ जाता है, उसे जला डालती है।

हुज़ूर ! हम ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के लिए लड़ाई की आग में कूदना चाहते हैं। अगर हम लड़ कर शहीद हो जायें, तो क्या हम को जन्नत न मिलेगी ? लड़के ने पूछा।

ज़रूर मिलेगी, हुज़ूर सल्ल० फ़रमाया, शहादत औरत, बूढ़े, बच्चे सब को जन्नत में ले जाएगी, लेकिन मेरे बच्चो ! मुझे डर है कि शायद तुम लड़ाई की आग देख कर डर जाओ।

लड़के ने सुन कर कहा, हुज़ूर सल्ल० यह इत्मीनान रखें। हम डरने वाले नहीं। ख़ुदा की क़सम ! शहादत के जोश ने हमारी नसों में ख़ून दौड़ा कर हम को शेरेदिल और निडर बना दिया है। मरते दम तक भी हम डरेंगे नहीं।

एक और लड़के ने कहा, ऐ शहनशाहे दीन ! हम और लड़ाई की आग से डर जायें, नामुम्किन है। हमारी तो तमन्ना ही लड़ने की रहती है, बल्कि हम तो यह चाहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० और हमारे बुज़ुर्ग मदीने में आराम से बैठे रहें और हमें इजाज़त दें कि मक्का के कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करने के लिए लड़ाई के मैदान में निकलें।

मेरे नौनिहालो ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा यह जोश क़ाबिले तारीफ़ है। हर मुसलमान मर्द व औरत और हर मुस्लिम बच्चे के दिल में जिहाद का ऐसा ही शौक़ होना चाहिए जैसा तुम्हारे दिलों में है। यह ईमानी ताक़त की रोशन दलील है, लेकिन जिस लड़ाई पर हम जा रहे हैं, यह पहली लड़ाई है। नहीं कहा जा सकता कि नतीजा क्या हो, इसलिए तुम वापस ही चले जाओ, तो अच्छा है।

कुछ लड़कों ने कहा, हम फ़रमांबरदार हैं, हुज़ूर सल्ल० का हुक्म मानेंगे, लेकिन हम को बड़ा सदमा होगा।

हुज़ूर सल्ल० ने हैरत से बच्चों के शौक़े जिहाद को देखा। आप खामोश हो कर कुछ सोचने लगे।

कुछ देर के बाद आप ने नेज़ा लिया, उस पर निशान लगाया और लड़कों से कहा, अच्छा, मेरे जोशीले बच्चो ! तुम में से जिस का क़द इतना ऊंचा होगा, जितना नेज़े पर निशान लगा हुआ है, तो वह मुजाहिदों की जमाअत में शरीक कर लिया जाएगा और जिस का क़द इस से छोटा होगा, उसे वापस लौटना पड़ेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने तमाम बच्चों को आगे बढ़ने का इशारा किया।

सब आप के पास आ गये। ये बच्चे तायदाद में साठ थे।

आप ने उन का क़द नापना शुरू किया।

चूंकि ये सब छोटी उम्र के थे, इसलिए इन के क़द भी छोटे थे, और छोटे क़द वालों को अलग खड़ा करते जाते थे।

जब ४०-५० बच्चे नाप जा चुके, तो एक लड़के ने नेज़ा हुज़ूर सल्ल० से लेकर अपना हाथ निशान पर रख कर खुद ही अपना क़द नापा।

वह एक मुट्ठी छोटा था, इसलिए जल्दी से पंजों पर खड़ा होकर उसने कहा, देखिए हुज़ूर सल्ल० ! मेरा क़द पूरा है।

हुज़ूर सल्ल० ने उस की इस होशियारी को देखा, मुस्कराये और मुस्करा कर बोले, तुम्हारी होशियारी तारीफ़ के क़ाबिल है। तुम्हारे जोशे जिहाद ने तुम्हें यह होशियारी सिखायी है, इसलिए तुम्हें इजाज़त है। तुम मुजाहिदों की जमाअत में शरीक हो जाओ।

यह लड़का इतना खुश हुआ, जैसे उसे कोई दौलत मिल गयी हो।

वह खुश-खुश मुजाहिदों में जा मिला।

उस लड़के का नाम राफ़ेअ बिन खदीज था।

इस के बाद और लड़कों ने भी ऐसा किया, लेकिन पंजों पर खड़े होने के बावजूद कोई नेज़ा पर बनाये हुए निशान तक न पहुंच सका।

मजबूरन तमाम लड़के लौट गये।

अब हुजूर सल्ल० ने मुजाहिदों के लश्कर का जायज़ा लिया, तो कुल तीन सौ दस आदमी थे, सत्तर ऊंट और सिर्फ़ दो घोड़े थे। जिरह बक्तर एक भी न थी, किसी भी मुजाहिद के पास पूरे हथियार न थे। अगर किसी के पास तलवार थी, तो नेज़ा न था, नेज़ा था तो तलवार न थी। तीर कमानें भी बहुत कम थीं।

हुजूर सल्ल० ने एक-एक ऊंट पर तीन-तीन, चार-चार आदमी सवार कराये। खुद अपने ऊंट पर भी दो-तीन आदमी सवार कर लिए। फिर भी बहुत से लोग अब भी पैदल थे।

इस बे सर व सामानी के साथ लश्कर ने दोपहर से पहले मक्के की तरफ़ कूच किया, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने वह झंडा, जो हुजूर सल्ल० ने अबू उबैदा के लिए बनाया था। अपने हाथ में ले कर फरेरा उड़ा दिया।

बद्र की लड़ाई

अबूसुफ़ियान ने मुसलमानों के आने की खबर सुन कर ज़मज़म बिन अम्र को इसलिए मक्का भेजा था, ताकि वे उस की मदद के लिए आ जाएं।

ज़मज़म ने मक्का में जा कर अबू सुफ़ियान का पैग़ाम मक्का वालों तक पहुंचा दिया।

फ़ौरन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मज्लिसे शूरा बुलायी।

चूंकि क़ुरैश की खुशहाली और क़ूवत का राज़ शाम मुल्क से तिजारत ही में था, और मुसलमानों के हमले से इस तिजारत के बन्द हो जाने का डर था, इस लिए मज्लिसे शूरा ने तै कर दिया कि फ़ौरन अबूसुफ़ियान की मदद और मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए एक शानदार फ़ौज तैयार की जाए।

इसलिए बड़ी धुम-धाम और ज़ोर-शोर से तैयारियां होने लगीं। तमाम मक्का में हलचल मच गयी।

एक दिन और एक रात को बेपनाह कोशिशों से एक हज़ार कुफ़्फ़ार की फ़ौज तैयार हो गयी। इस फ़ौज का सिपहसालार अबूजह्ल को बनाया गया।

इस फ़ौज में मक्के के तमाम सरदार शामिल थे, जैसे उत्बा, शैबा, हंज़ला, उबैदा, हर्स, ज़मआ, अक़ील, अबुलबख़्तरी, मसऊद वग़ैरह। ये वह लोग थे जिन की बहादुरी की पूरे अरब में धाक थी।

इस फ़ौज में सौ घोड़े और सात सौ ऊंट थे। सैकड़ों लड़ने वाले जवान ज़िरह बक्तर पहने थे और तमाम लोग हथियारों से लैस थे।

यह फ़ौज बड़ी शान से रवाना हुई।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने समझ लिया था कि यह शानदार फ़ौज मुसलमानों की जड़ें काट कर के बहुत जल्द वापस आ जाएगी।

यह फ़ौज जब डेढ़ सौ मील का फ़ासला तै कर चुकी, तो मालूम हुआ कि अबूसुफ़ियान अपने क़ाफ़िले के साथ ख़ैरियत से पहुंच गया। इस फ़ौज का मक़सद अबूसुफ़ियान की हिमायत थी, इसलिए कुछ लोगों की राय हुई कि वापस लौटना चाहिए, लेकिन अबूजह्ल ने कहा, हमें मुसलमानों को फ़ना कर के ही लौटना चाहिए।

चुनांचे सब इस पर एक राय हो गये और फ़ौज बराबर आगे बढ़ती रही, यहां तक कि मदीना से दो मील की दूरी पर बद्र नामी जंगल पर पहुंच गई।

बद्र एक कुएं का नाम था। कुएं के क़रीब एक गांव आबाद था। उस गांव का नाम भी बद्र था। मक्का से मदीना और मदीने से मक्का जाने वाले इस जगह ठहरा करते थे.

बद्र मक्का से अस्सी मील की दूरी पर था।

बद्र से मक्के की तरफ़ ज़मीन का जो हिस्सा था, वह बुलंद और हमवार था, और मदीने की तरफ़ वाला हिस्सा नशेबी और रेतीला था।

कुफ़्फ़ार की शानदार फ़ौज ने मक्के की मरफ़ ऊंची और हमवार ज़मीन पर पड़ाव डाल दिया कि कुंआं फ़ौज के बीच में आ गया।

इस फ़ौज के साथ अरब की हसीन गाने और नाचने वाली औरतें भी थीं, ताकि नाच-गाने की महफ़िल सजायी जा सकें और शराब का दौर चलता रहे।

चूंकि उस फ़ौज ने लगभग सवा दो सौ मील का फ़ासला तै कर लिया था, इसलिए सिपाही थक गये थे। उन्होंने कई दिन तक बद्र की जगह पर सुस्ती दूर करने के लिए पड़ाव डाला था।

जिस दिन बद्र से फ़ौज रवाना होने की तैयारियां कर रही थी, उसी दिन एक ऊंट सवार दौड़ा हुआ आया और उस ने पुकार कहा, ऐ कुरैश वालो ! इस्लामी मुजाहिदों की फ़ौज आ गयी है। होशियार हो जाओ अपनी हिफ़ाज़त करो।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने रवानगी का इरादा मुलतवी कर दिया और तमाम सरदार और रईस इस्लामी फ़ौज के आने का नज़ारा करने के लिए ऊंचे टीले पर चढ़ गये।

यह रेत का टीला इतना ऊंचा था कि उस के चारों तरफ़ के दूसरे टीले उस से नीचे थे। जब इन लोगों ने मदीना मुनव्वरा की तरफ़ नज़र की तो उस तरफ़ से इस्लामी फ़ौज बड़ी शान से आती नज़र आयी। सबसे आगे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ इस्लामी झंडा उठाये आ रहे थे। झंडा बड़ी शान से हवा में लहरा रहा था।

इस्लामी फ़ौज कुछ दूरी पर आ कर रुक गयी और बद्र के निचले और रेतीले हिस्से में पड़ाव डाला।

बद्र में सिर्फ़ एक कुंआं था और उस कुएं पर कुफ़्फ़ारे मक्का का क़ब्ज़ा हो गया था।

सब से पहले मुसलमानों को पानी की कमी महसूस हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो और ख़ुलूसे दिल के साथ रहमत की बारिश की दुआ करो।

तमाम मुसलमानों ने तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ी और सच्चे दिल से गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी।

रहमते ख़ुदावन्दी को जोश आया, दुआ मक़बूल हुई और ज़ुह्र के बाद ही से हल्की-हल्की बदलियां उठ-उठ कर फ़िज़ा में तैरने लगीं।

अस्र के वक़्त तमाम बदलियां मिल कर घटा बन गयीं। ठंडी हवा चलने लगी।

हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को एक साफ़-सुथरे नशेबी जगह पर एक बड़ा तालाब खोदने का हुक्म दिया।

तमाम मुसलमान तालाब खोदने में लग गये।

थोड़ी ही देर में तालाब तैयार हो गया।

तालाब तैयार होते ही वर्षा शुरू हो गयी। वर्षा इतनी हुई कि तालाब पूरी तरह भर गया। यह वर्षा इशा तक हुई।

मुसलमानों ने इशा की नमाज़ खेमों में ही पढ़ी, वर्षा का पानी पिया और ख़ुदा की रहमत व मेहरबानी का शुक्रिया अदा कर के सो रहे।

सुबह जब वे उठे, तो आसमान साफ़ था। बादल का कहीं निशान न था। रेतीली ज़मीन पानी पड़ने से कड़ी हो गयी थी।

अभी वे नमाज़ से फ़ारिग़ भी न हुए थे कि कुफ़्फ़ार हथियारों से लैस हो कर मैदान में आ गये। जिस मैदान में कुफ़्फ़ार ने लाइनें बनायी थीं, बारिश होने की वजह से उस में दलदल हो गयी थी। घोड़ों के सुम दलदल में धंसे जा रहे थे।

मुसलमान भी नमाज़ से फ़ारिग़ हो-हो कर मैदान में लाइनें बनाने लगे।

हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ कर ख़ेमे के अन्दर तश्रीफ़ ले गये और सज्दा में सर रख कर अल्लाह के हुज़ूर दुआ करने लगे—

ऐ पैदा करने वाले! ऐ पालनहार! मुसलमान सिर्फ़ तेरे भरोसे पर तेरे हुक्म के मुताबिक़ घरों से निकल कर लड़ाई के मैदान में आए हैं। अल्लाह! तुझे पूजने वाले, तेरा नाम लेने वाले! तेरे नाम पर मर मिटने वाले तायदाद में कम और ताक़त में कमज़ोर हैं। ऐ ख़ुदा! यह पहली लड़ाई है। इस लड़ाई में मुसलमानों को हरा कर शर्मिन्दा न करना, ऐ क़ुदरत वाले! इज़्ज़त और बड़ाई तेरे हाथ में है। ऐ अल्लाह! तू ग़रीब बेचारे मुसलमानों को जिता, उन की हिमायत कर। परवरदिगार! मुसलमानों को सिर्फ़ तेरा सहारा है, तुझ से उम्मीद है, तू उन्हें मायूस न करना। अल्लाह! अगर तू ने इस छोटी सी जमाअत को हलाक कर दिया तो ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई बाक़ी न रहेगा।

हुज़ूर सल्ल० सज्दे में पड़े हुए रो-रो कर दुआ मांग रहे थे। दुआ मांगने से आप को कुछ तस्कीन हो गयी।

आप पर ऊंघ छा गयी।

कुछ देर बाद आंख खुली, आप उठे और मुस्कराते हुए ख़ेमे से बाहर निकले।

मुसलमान आप के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे। आप को आते देख उन्हों ने अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाया।

आप धीरे-धीरे चल कर निहायत इत्मीनान से इस्लामी फ़ौज में पहुंचे।

आप ने फ़रमाया, मुसलमानो! जीत मुबारक हो। ख़ुदा का हुक्म नाज़िल हो गया कि कुफ़्फ़ार हार कर भागेंगे और मुसलमान जीत जायेंगे।

आप का यह इर्शाद सुन कर मुसलमानों को बड़ी ख़ुशी हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने जीत की ख़ुशख़बरी उस वक़्त सुनायी थी, जब कि

अभी लड़ाई शुरू न हुई थी। मुसलमान कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तायदाद के लिहाज़ से तिहाई थे और हथियारों के लिहाज़ से सौ में से एक हिस्सा भी न थे।

कुफ़्फ़ार तमाम ज़िरापोश, जवान, मज़बूत, तजुर्बेकार और लड़ने वाले थे और हथियारों से लैस थे और मुसलमान फ़ाक़ा ज़दा, कमज़ोर, बीमार और बेसर व सामान थे ज़िरहपोश एक भी न था मामूली हथियार भी सबके पास पूरे न थे।

मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला किसी भी तरह बराबर का न था। इस हालत में भी जीत की खुशखबरी एक अजीब व ग़रीब बात थी।

हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई के मैदान में आ कर सब से पहले सफ़ें दुरुस्त कीं।

जब सफ़ें ठीक हो गयीं तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुसलमानो ! तुम लड़ाई में शुरूआत न करना, कुफ़्फ़ार की ज़्यादा तायदाद से न घबराना। खुदा ने तुम्हारी मदद का वायदा कर लिया है, इसलिए तुम्हारी जीत होगी।

दोनों फ़ौजें आमने-सामने आ कर खड़ी हो गयीं।

दोनों झंडे हवा में लहरा रहे थे।

थोड़ी देर बाद फ़ौजे कुफ़्फ़ार में से तीन तजुर्बेकार जवान मैदान में सामने निकल कर आए।

इन तीनों में उत्बा और शैबा दो भाई थे और तीसरा वलीद था।

तीनों बड़े बहादुर, जोशीले और लड़ने वाले थे।

तीनों ने 'है कोई मुक़ाबले का ?' का नारा बुलन्द किया।

इन तीनों का मुक़ाबला करने के लिए इस्लामी फ़ौज में से अन्सार के तीन जवान निकले। इन में से औफ़, मुअव्वज़ दो सगे भाई थे और तीसरे अब्दुल्लाह बिन रिवाह थे।

जब ये तीनों कुफ़्फ़ार के सामने खड़े हुए, तो उत्बा ने उन से पूछा, तुम कौन हो ?

हम अंसार हैं, हज़रत औफ़ ने जवाब दिया।

हम को तुम से लड़ने की ज़रूरत नहीं, उत्बा ने बुरा सा मुंह बना कर और घमंड में चूर हो कर कहा, ऐ मुहम्मद ! हमारे मुक़ाबले के लिए हमारी क़ौम के लोगों को भेजो।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हमज़ा, हज़रत उबैदा और हज़रत अली रज़ि० की तरफ़ इशारा किया।

ये तीनों पूरे जोश के साथ निकल कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में खड़े हो गये।

औफ़, मुअव्वज़ और अब्दुल्लाह वापस लौट गये।

इन तीन नए जवानों को देख कर उत्बा ने कहा, हां, हम तुम से लड़ेंगे, लेकिन क्या तुम हमारी ताक़त को नहीं देख रहे हो ? क्या तुम को ख्याल है कि हम से लड़ कर जीत जाओगे ? हुबल की क़सम ! कभी न जीत सकोगे या तो लड़ाई के मैदान में क़त्ल हो जाओगे या गिरफ़्तार हो कर ग़ुलाम बनोगे ?

हज़रत हमज़ा को उत्बा की यह बकवास बहुत बुरी लगी। बोले, उत्बा ! ताक़त पर घमंड न करो। ख़ुदा में वह ताक़त है कि वह कमज़ोर को भी ताक़तवालों पर ग़लबा दे देता है। मच्छर जैसी नाचीज़ हस्ती से नमरूद बादशाह को हलाक कर देता है। तुम्हारी ताक़त है ही क्या ? बहुत जल्द तुम अपने घमंड का बुरा अंजाम देखोगे।

वलीद को हज़रत हमज़ा की बातें सुन कर ग़ुस्सा आ गया। उस ने ग़ज़बनाक लेहजे में कहा, ख़ुदा एक फ़र्ज़ी हस्ती है, जिसे किसी ने कभी नहीं देखा, वह हमारा क्या बिगाड़ सकता है ? तुम्हें, तुम्हारी क़ौम को और तुम्हारे हिमायतियों को जल्द मालूम हो जाएगा कि पहाड़ में सर मारने से पहाड़ का कुछ नहीं बिगड़ता, सर ही का नुक़सान होता है।

वलीद हद से आगे न बढ़ो, हज़रत अली ने कड़क कर कहा, बातें बनाने से कोई फ़ायदा नहीं, तलवार निकालो और मुक़ाबले में आ जाओ।

फ़ौरन उत्बा, शैबा और वलीद ने तलवारें निकाल-निकाल कर हवा में लहरायीं।

हज़रत हमज़ा, हज़रत उबैदा और हज़रत अली ने भी तलवारें निकालीं। एक-एक शख़्स को चुन लिया और हर शख़्स अपने दुश्मन की तरफ़ लपका।

वलीद, उत्बा और शैबा को अपनी-अपनी बहादुरी पर नाज़ था, वे बड़े जोश व ख़रोश से आगे बढ़े।

हज़रत अली वलीद के मुक़ाबले में थे। वलीद बहादुर भी था और तजुर्बेकार भी और हज़रत अली नव-उम्र थे, किसी लड़ाई में शरीक न हुए थे, इसलिए किसी तरह भी बराबरी का मुक़ाबला न था।

वलीद को ख्याल ही नहीं, बल्कि यक़ीन था कि वह हज़रत अली को क़त्ल कर डालेगा, शेरेख़ुदा का ख़ात्मा कर देगा, चुनांचे उस ने निहायत जोश और पूरी ताक़त से मुक़ाबला किया। हज़रत अली ने बहादुरी से उसे

रोका और अल्लाहु अक्बर का नारा लगा कर खुद भी ज़ोरदार हमला कर दिया।

वलीद ने तलवार उठते और अपनी तरफ़ झुकते देखा। उस ने जल्दी से ढाल सामने कर दी। तलवार ढाल काट कर खूद पर आयी। खूद का कुछ हिस्सा उड़ा कर उठी।

यह बड़ी ताक़त और बहादुरी का काम था। फ़ौलादी ढाल काट कर लोहे के खूद को तलवार से काट डालना मामूली बात न थी।

मगर हज़रत अली रज़ि० शेरेखुदा थे। शेरों से ज़्यादा ताक़त उन में थी।

वलीद इस हमले से घबरा गया।

अभी वलीद हैरानी ही में था कि हज़रत अली की तलवार फिर उठी, बुलन्द हुई। इस बार तलवार की झलक में वलीद को भयानक चेहरा नज़र आया।

वलीद की ढाल नाकारा हो चुकी थी। उस ने जल्दी से ढाल फेंक कर तलवार पर वार रोकना चाहा, मगर अपनी तलवार उठाने भी न पाया था कि हज़रत अली की तलवार उस की गरदन पर पड़ी और वह वहीं ढेर हो गया।

इधर जिस वक़्त हज़रत अली लड़ रहे थे, उस वक़्त हज़रत हमज़ा उत्बा पर हमला कर रहे थे।

उत्बा भी बड़ा बहादुर और लड़ाका था।

उस ने पूरे जोश और ताक़त से हज़रत हमज़ा पर हमला किया।

हज़रत हमज़ा ने निहायत सब्र और इस्तक़लाल से उस के हमले को रोका और जब वह दूसरे हमले की तैयारियां कर रहा था, तो इसी बीच हज़रत हमज़ा ने बढ़ कर तलवार से हमला कर दिया।

उत्बा हज़रत हमज़ा के हमले को रोकने के लिए तैयार न था। हज़रत हमज़ा की तलवार उस की गरदन पर पड़ी और शहेरग काट कर हवा की तरह दाहिनी तरफ़ से बायीं तरफ़ निकल गई। सर कट कर दूर जा गिरा, जिस्म धरती पर गिर कर तड़पने लगा।

इसी बीच शैबा ने हज़रत उबैदा पर हमला किया।

शैबा बड़ा बहादुर और तजुर्बेकार लड़ाका था। उस ने पूरी ताक़त से हमला किया। उबैदा ने ढाल पर उस का वार रोका। शैबा की तलवार ने ढाल को काट डाला।

उबैदा पीछे हटे।

शैबा ने बढ़ कर एक और हमला किया।

उबैदा उस हमले को न रोक सके। तलवार बायीं तरफ़ से कंधे को काटती हुई गरदन के एक चौथाई हिस्से तक तैरती चली गयी।

हज़रत उबैदा घायल हो कर गिरे।

शैबा उन्हें क़त्ल करने के लिए घोड़े से कूदा। हज़रत अली ने देख लिया।

उन्हों ने उस की तरफ़ लपकते हुए डपट कर कहा, खबरदार शैबा! तेरी क़ज़ा आ पहुंची है।

शैबा फ़ौरन घायल शेर की तरह गरज कर हज़रत अली की तरफ़ पलटा और पलटते ही उस ने एक ज़ोरदार वार किया।

हज़रत अली ने उस का हमला रोक कर खुद हमला किया। तलवार की बिजली की-सी चमक देख कर वह घबरा गया। उस की आंखें झपक गयीं। अभी आंखें अच्छी तरह खुलने भी न पायी थीं कि तलवार उस की गरदन पर पड़ी और सर कट कर दूर जा गिरा।

कुफ़्फ़ार के तीन बहादुर और शेरेदिल लड़ाका, कमज़ोर मुसलमानों के हाथों से मारे गये। उन के मारे जाने से कुफ़्फ़ार को बेहद रंज और दुख हुआ और मुसलमानों को खुशी हुई।

हज़रत उबैदा बहुत ज़्यादा घायल हो गये थे। ज़ख्म से बराबर खून बह रहा था। वह इतने निढाल हो गये थे कि उठना और उठ कर चलना ना-मुम्किन हो गया था।

हज़रत अली ने उन्हें गोद में उठाया और चले। हुज़ूर सल्ल० के सामने ले जा कर लिटा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने नज़र डाली। हज़रत उबैदा ने आंखें खोलीं। हुज़ूर सल्ल० को देखा, इशारे से सलाम किया और फिर आंखें बन्द कर लीं।

हज़रत उबैदा रज़ि० का आखिरी वक़्त आ गया था।

हुज़ूर सल्ल० उन के ऊपर झुक गये। आप को उबैदा की जुदाई से तक्लीफ़ हो रही थी।

आखिरकार आपने कहा, ऐ इस्लाम के फ़िदाई, आखिरत के मुसाफ़िर! अल-विदाअ्।

लोग समझ गये कि उबैदा का आखिरी वक़्त आ पहुंचा।

उबैदा रज़ि० ने फिर आंखें खोलीं, हुज़ूर सल्ल० को देखा, मुस्कराये, कुछ कहना चाहा, मगर मौत ने कुछ कहने न दिया, ज़ुबान बन्द हो गयी, हिचकी आयी और जान निकल गयी।

तमाम मुसलमानों को बड़ा अफ़सोस हुआ।

हुज़ूर सल्ल० भी बहुत ग़मगीन थे।

आप ने फ़रमाया, मुसलमानो ! मुझे और ख़ुदा को मुसलमानों के ख़ून का एक क़तरा तमाम दुनिया से ज़्यादा अज़ीज़ है। काश ! कुफ़्फ़ार हम पर हमला न करते, लेकिन ख़ुदा को अपने नेकबन्दों की आज़माइश मंज़ूर है। बहिश्त का रास्ता तलवारों के साये में से है। शहीदों के तमाम गुनाह माफ़ होते हैं, जन्नत तो शहीदों के लिए है।

अभी हुज़ूर सल्ल० की बातें पूरी भी न हुई थीं कि कुफ़्फ़ार की फ़ौज को हरकत हुई, पैदलों और सवारों के दस्ते बढ़े।

हुज़ूर सल्ल० ने उबैदा की लाश एक ओर रखवा दी और मुसलमानों को भी बढ़ने का इशारा किया।

मुसलमान जोश में आगे बढ़े, अल्लाहु अक्बर के ज़ोरदार नारों के साथ बढ़े।

कुफ़्फ़ार भी बड़े जोश व ख़रोश से बढ़े चले आ रहे थे।

दोनों फ़ौजें भिड़ गयीं। तलवारें चमकने लगीं और घमासान की लड़ाई शुरू हो गयी। दोनों तरफ़ के लोग पूरे जोश से लड़ने लगे।

जब लड़ाई की आग ज़ोर-शोर से भड़की हुई थी, हुज़ूर सल्ल० एक तरफ़ खड़े लड़ाई का नज़ारा कर रहे थे। हुज़ूर सल्ल० देख रहे थे कि मुसलमान कम हैं और दुश्मन ज़्यादा हैं, दुश्मनों ने मुसलमानों को घेरे में ले लिया है। आप ख़ुदा की मदद का इन्तिज़ार कर रहे थे।

अभी आप लड़ाई का नज़ारा करने में लगे हुए थे कि दो आदमियों ने आ कर सलाम किया।

आप ने उन की तरफ़ देखा। एक उन में हुज़ैफ़ा और दूसरे अबूजबल थे। ये दोनों मक्का के रहने वाले थे। हुज़ूर सल्ल० ने सलाम का जवाब दे कर पूछा कि तुम दोनो कब और कैसे आए ?

हुज़ैफ़ा ने जवाब दिया—

हुज़ूर सल्ल० ! हम छिप कर मक्का से निकले और मदीना की तरफ़ चल दिये। रास्ते में कुफ़्फ़ार ने हमें रोका और वापस मक्का जाने पर ज़ोर दिया। हम ने जब कहा कि लड़ाई में शिर्कत के लिए नहीं जा रहे हैं, तब उन्हों ने इजाज़त दी, इसलिए अब हाज़िर हुए हैं। हमें भी लड़ाई की इजाज़त दीजिए।

हुज़ैफ़ा तुम कुफ़्फ़ार से अहद कर चुके हो कि लड़ाई में शरीक न होंगे, इस अहद को निभाना चाहिए। इस्लाम और मुसलमानों की शान यही है

कि अपना अहद पूरा किया जाए। अगरचे इस वक़्त मुसलमानों को मदद की बहुत ज्यादा ज़रूरत है, लेकिन मैं इसे पसन्द नहीं करता कि तुम बद-अहदी करो। तुम दोनों यहां से हट कर दूर खड़े हो जाओ, हुज़ूर सल्ल० ने हिदायत दी।

हुज़ूर सल्ल० ! हुज़ैफ़ा ने कहा, कोई क़ौम किसी ज़माने में भी लड़ाई के दिनों में किसी अहद की पाबन्दी नहीं करती, इसलिए हम भी क्यों करें?

खुदा ने मुसलमानों को वायदा निभाने की हिदायत की है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुसलमानों पर खुदा के हुक्म की पाबन्दी ज़रूरी है।

हुज़ैफ़ा खामोश हो गये।

फिर हुज़ैफ़ा, और अबूजबल दोनों वहां से फ़ासले पर जा कर खड़े हो गये।

उस वक़्त लड़ाई पूरे ज़ोर से चल रही थी। तलवारों की झंकार, क़ौमी नारों की आवाज़, घायलों की चीख-पुकार से तमाम मैदान गूंज रहा था।

चूंकि रात में बारिश हुई थी, इसलिए रेत में नमी मौजूद थी।

तलवारें चमक रही थीं, सर कट रहे थे और खून की नदियां बह रही थीं।

इस हंगामे में हुज़ूर सल्ल० ऊंची आवाज़ में फ़रमाया—

मुसलमानो ! अब तुम्हारी जीत में कोई शक नहीं है, लेकिन देखो आले हाशिम और अबुल बख्तरी को क़त्ल न करना। आले हाशिम अपनी खुशी से नहीं आए हैं, मजबूर कर के लाये गये हैं। रहा अबुल बख्तरी, तो उस ने अहदनामा फाड़ा था, यह उस का मुसलमानों पर बड़ा एहसान है।

जो मुसलमान क़रीब थे, उन्हों ने आप का यह हुक्म सुना और जो दूर थे, उन तक मुसलमानों ने यह हुक्म पहुंचा दिया।

इत्तिफ़ाक़ से महज़र बिन ज़ियाद के मुक़ाबले में अबुल बख्तरी आ गया।

महज़र ने कहा, अबुल बख्तरी ! मेरे सामने से हट जाओ। हम को तुम से लड़ने का हुक्म नहीं है।

महज़र ! तुम मुझ से डरते हो, अबुल बख्तरी ने कहा, बहादुर हो तो मुक़ाबले में आ जाओ।

महज़र को बड़ा गुस्सा आया, मगर नाफ़रमानी के ख्याल से उन्हों ने ज़ब्त किया और कहा—

अबुल बख्तरी ! मुसलमान खुदा के अलावा किसी से नहीं डरता। अगर हमें तुम से लड़ने का हुक्म होता, तो मेरी तलवार तुम्हारे सर पर पड़ती।

यह कहकर महज़र एक और काफ़िर पर मुतवज्जह हुए। उन्होंने तलवार उठा कर उस पर हमला किया। काफ़िर ने ढाल सामने कर दी। बिजली की तरह लपकने वाली तलवार ने ढाल को काट कर माथे की फांक कर दी, जिस से ख़ून की धार बहने लगी।

अबुल बख़्तरी ने यह हालत देख कर महज़र पर हमला किया। हज़रत महज़र रज़ि० तलवार ऊपर उठा चुके थे, वह उस काफ़िर को क़त्ल करना चाहते थे, जिस की पेशानी फट गयी थी। उन्हों ने उस पर हमला कर दिया था। अबुल बख़्तरी बीच में आ गया। तलवार उस के सर पर पड़ी। सर की फांक खुल गयी।

अबुल बख़्तरी मुर्दा हो कर गिरा।

महज़र को उस के क़त्ल पर बड़ा अफ़सोस हुआ।

जिस वक़्त अबुल बख़्तरी क़त्ल हुआ, ठीक उसी वक़्त उमैया और उस का बेटा अली दोनों लड़ाई से तंग आ कर जान बचाने के लिए घबराये-घबराये फिर रहे थे।

हज़रत बिलाल ने उन दोनों को देख लिया। वह उन की तरफ़ लपके।

कई और मुसलमान भी उन के साथ लपके।

हज़रत बिलाल ने ऊंची आवाज़ में कहा—

ऐ तागूत की पूजा करने वालो! ठहरो, आज तुम हमारे हाथों से नहीं बच सकते। अपनी मदद के लिए आज तुम अपने उन माबूदों को पुकारो, जिन्हें तुम पूजते रहे हो।

उमैया ने हज़रत बिलाल को देखा, वह घबराया और मारे ख़ौफ़ के उस का चेहरा पीला पड़ गया। उमैया वह आदमी था, जिस ने मुसलमानों पर आम तौर से और हज़रत बिलाल पर ख़ास तौर से बड़े ज़ुल्म किये थे। एक ज़माने में बिलाल उस के ग़ुलाम थे। उस ने उन को रस्सी में बांध कर पिटवाया था। गरम रेत पर लिटा कर भारी पत्थर सीने पर रख कर तरह-तरह के ज़ुल्म किये।

वह हज़रत बिलाल र० को देख कर समझ गया कि आज वहीं उससे बदला लेंगे। बदले के डर ने उसे और उस के बेटे को और ज़्यादा डरा दिया।

हज़रत बिलाल तलवार लेकर बढ़े। उन के साथी भी तलवारें सोंत-सोंत कर लपके। उमैया और अली ने भी तलवारें खींच लीं। एक ने दूसरे पर तलवार से हमला किया।

हज़रत बिलाल रज़ि० जोश में भरे हुए थे। उन की बेपनाह तलवार

उमैया के सर पर पड़ी। सर के दो टुकड़े कर के हलक़ तक उतर गयी। उस ने चीख़ मारी और मुर्दा हो कर गिरा।

उधर एक अंसारी ने उस के बेटे अली को क़त्ल कर डाला।

जिस वक़्त इन दोनों की लाशें ज़मीन पर गिरीं, घोड़ों की टापों के नीचे कुचल कर रह गयीं।

लड़ाई अब भी बड़े ज़ोर व शोर से चल रही थी।

इसी बीच एक सहाबी उमैर बिने हुम्माम अंसारी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए।

वह खजूरें खाते आ रहे थे।

उन्हों ने आते ही हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मैं कुफ़्फ़ार से लड़ता हुआ मारा जाऊं, तो क्या मैं जन्नत में ज़रूर जाऊंगा ?

हां, तुम ही क्या, जो मुसलमान भी लड़ाई में शहीद होगा, उसे जन्नत मिलेगी, अल्लाह तआला का यह इनाम जारी रहेगा, हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया।

उमैर रज़ि० ने उसी वक़्त खजूरें फेंक दीं और तलवार खींच कर दुश्मनों पर जा पड़े। इतने जोश से लड़े कि दुश्मन की सफ़ें बिखर गयीं। जो सामने पड़ा, उसी को क़त्ल कर डाला। हर्स और जमआ सामने आये और दोनों ने एक साथ उन पर हमला कर दिया।

उमैर बहुत फुर्तीले और तजुर्बेकार थे। उन्हों ने पैंतरा बदल कर हर्स पर हमला किया। तलवार हर्स की गरदन काट कर उठी।

उमैर जल्दी से कूद कर पीछे हटे और फ़ौरन उछल कर जमआ पेर आ टूटे।

अभी जमआ संभलने भी न पाया था कि तलवार उस के सिर पर पड़ी और उस के सर के दो टुकड़े कर के हलक़ चीरती हुई निकल गयी।

कुफ़्फ़ारे मक्का उमैर की यह फुर्ती और बहादुरी देख कर हैरान रह गये।

उमैर ने इन दोनों को क़त्ल कर के सामने की सफ़ में हमला कर दिया पहले ही हमले में सामने वाले को और फिर बायीं तरफ़ वाले को क़त्ल कर डाला।

उमैर बड़ी फुर्ती से तलवार चलाते हुए आगे बढ़ रहे थे। वह एक काफ़िर पर हमलावर हुए। उन की पीठ की तरफ़ से तीन आदमियों ने उन पर एक साथ तलवारें मारीं, उन के पास न ज़िरह थी, न ख़ूद। तीनों

तलवारें उन के सर पर पड़ीं, सर टुकड़े-टुकड़े हो गया। खून की धार बहने लगी, वह निढाल हो गये, मगर इस हालत में भी पलट कर उन्हों ने हमला किया और तीन हमलावरों में से एक को मार गिराया, साथ ही खुद भी गिरे। लेकिन गिरते-गिरते भी एक दूसरे काफ़िर को गिरा कर सीने पर चढ़ गये और इस ज़ोर से उस की गरदन को दांतों से काटा कि उस की रूह परवाज़ कर गयी।

अब उमैर में उठने की हिम्मत न रही। सांस रुक-रुक कर चलने लगी। इस मजबूरी से फ़ायदा उठा कर तीसरे काफ़िर ने इस ज़ोर से तलवार मारी कि वह शहीद हो गये।

लड़ाई अब भी ज़ोर-शोर से हो रही थी। हवा में तलवारें चमक रही थीं, सर कट रहे थे, धड़ गिर रहे थे, खून के फ़व्वारे छूट रहे थे और चीखें उभर रही थीं। हर आदमी जोश में भरा हुआ था।

अबू जह्ल भी बड़े जोश से लड़ रहा था। वह खूद ओढ़े था। ज़िरह पहने था। एक हाथ में तलवार और एक हाथ में ढाल लिए पूरे जोश और ग़ज़ब से लड़ रहा था।

वह बहादुर था, बहादुरों की औलाद था, बहादुर क़ौम का चश्म व चिराग़ था, इसलिए पूरी बहादुरी से लड़ रहा था।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अबूजह्ल को देखा। वह बढ़ कर उस के मुक़ा-बले में आ गये।

अबू जह्ल ने मुआज़ पर हमला किया।

अबू जह्ल घोड़े पर सवार था। मुआज़ पैदल थे। वह उछल कर अलग जा खड़े हुए।

अबू जह्ल का वार खाली गया।

चूंकि अबू जह्ल जोशीला था, इसलिए वार खाली जाने पर उसे गुस्सा आ गया। उस ने घोड़ा बढ़ा कर वार किया।

मुआज़ ने उस का वार ढाल पर रोक लिया और जल्दी से खुद भी हमला कर दिया। तलवार बिजली की तरह कौंदी और अबू जह्ल की पिंडुली में जा घुसी, बल्कि पिंडुली काटती हुई घोड़े के पेट में जा घुसी।

अबू जह्ल घोड़े से नीचे गिर पड़ा।

उस के गिरते ही मुआज़ ने खुश हो कर बड़े ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया।

अभी यह खुशी मना रहे थे कि उन के बायें कंधे पर तलवार पड़ी।

बाज़ू कट कर अलग हो गया।

उन्हों ने पलट कर तलवार मारने वाले को देखा। उस तरफ़ अबूजह्ल का बेटा इक्रिमा तलवार तौले खड़ा नज़र आया।

इक्रिमा ने कहा, मुआज़ ! मैं ने तुम से बाप का बदला ले लिया।

बुज़दिल मक्कार ! मुआज़ ने कहा, बदला इस तरह नहीं लिया जाता, अगर तू बहादुर होता तो सामने से आ कर लड़ता। तू नामर्द है, तू ने तो बेख़बरी में हमला किया है, लेकिन ज़ख़्मी हो कर भी मुझे तुझ से बदला लेना है। ले संभल और वार संभाल !

यह कहते ही मुआज़ इक्रिमा पर झपट पड़े। इक्रिमा ने ढाल सामने कर दी।

तलवार ढाल पर पड़ी, ढाल को फाड़ती हुई निकली। गरदन पर आ कर रुकी और गरदन में गहरा ज़ख़्म लगा गयी।

इक्रिमा बद-हवास हो कर भागा।

लड़ाई अब भी बहुत तेज़ हो रही थी।

धूप में तेज़ी आ गयी थी, हुज़ूर सल्ल० पूरी बेचैनी के साथ इस पूरे मंज़र को देख रहे थे।

आप ने आसमान की तरफ़ चेहरा उठाया और जलाल भरी आवाज़ में कहा—

ऐ ख़ुदा ! तेरी मदद कहां है ? वह मदद कर जिस का तू ने वायदा फ़रमाया है। ऐ ख़ुदा ! मुसलमान थक चुके हैं। अगर तू ने मदद न की, तो अजब नहीं कि हार खानी पड़े। मेरे माबूद ! मुसलमानों की मदद कर। मज़्लूमों, बेकसों, कमज़ोरों की ख़बर ले।

अभी हुज़ूर सल्ल० यह फ़रमा ही रहे थे कि पूरब की तरफ़ से बादल उठा और बद्र की पहाड़ी पर छा गया। कुछ कुफ़्फ़ार पहाड़ी पर बैठे लड़ाई का तमाशा देख रहे थे, उन्हों ने अपने सर के क़रीब से बादल को गुज़रते देखा।

बादल धीरे-धीरे गुज़र रहा था और लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़ रहा था।

बादल के अन्दर से घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ें आ रही थीं। तमाम कुफ़्फ़ार हैरत से बादलों की ओर देखने लगे। उन्हों ने सुना कि कोई कह रहा था, बढ़ो और जल्दी आगे बढ़ो।

इस आवाज़ ने कुफ़्फ़ार के दिलों में हलचल पैदा कर दी। वे मारे डर के कांपने लगे। उन की आंखें मारे दहशत के झुक गयीं. मगर एक आदमी

बादल की तरफ़ देखता रहा। इत्तिफ़ाक़न एक जगह से बादल फट गया। उस ने एक सब्ज़ पोश सवार को बेहतरीन सब्ज़ रंग के घोड़े पर सवार जाते देखा।

उस सब्ज़ पोश को देख कर उस का दिल कांपने लगा। चेहरा पीला पड़ कर स्याह हो गया।

उस ने ज़ोर से चीख मारी और धम्म से ज़मीन पर गिर पड़ा।

उस के साथ के लोग उस की चीख सुन कर चौंके, उस की तरफ़ दौड़े और उस के ऊपर जा झुके।

जब उन्हों ने उसे टटोल कर देखा तो वह मर चुका था।

लड़ाई उस वक़्त भी ज़ोर-शोर से चल रही थी। तलवारें चमक कर बुलंद हो रही थीं और गरदनों पर गिर कर सर क़लम कर रही थीं।

मुसलमानों में पूरा जोश मौजूद था। सहाबा किराम जिस पर हमला करते, उसे क़त्ल किये बिना नहीं रहते।

हज़रत मुआज़ का हाथ कटकर लटक रहा था, सिर्फ़ एक तस्मे से उलझ रहा था। हाथ कट जाने से तक्लीफ़ हो रही थी, पर उन्हें तक्लीफ़ की परवाह न थी। वे बराबर लड़ रहे थे और बग़ैर ढाल के बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे।

चूंकि लटका हुआ हाथ हमला करने में रुकावट डाल रहा था, इस लिए उन्हों ने अपने पांव के नीचे दबा कर उसे बड़ी ज़ोर से झटका दिया। तस्मा टूट कर हाथ नीचे गिर गया।

धीरे-धीरे बड़ी तायदाद में अपने जवानों को क़त्ल होते देख कर कुफ़्फ़ार के हौसले पस्त होने लगे और मुसलमानों के तावड़-तोड़ हमलों से परेशान होकर उन्हों ने भागना शुरू किया।

उन को भागता देख मुसलमानों ने और जोश से उन का पीछा किया, यहां तक कि या तो क़त्ल किया या गिरफ़्तार कर लिया।

इस तरह थोड़ी ही देर में लड़ाई ख़त्म हो गई। मुसलमानों ने लड़ाई जीत ली और काफ़िरों को ज़बरदस्त मुंह की खानी पड़ी।

जब कुफ़्फ़ार भागने लगे और उन की एक बड़ी तायदाद गिरफ़्तार हो गई, तो हुज़ूर सल्ल० सज्दे में गिर पड़े। आप ने कहा—

ऐ रब! तेरा शुक्र किस मुंह से अदा किया जाए। आज तू ने मुसलमानों की लाज रख ली, इस्लाम का बोल बाला कर दिया। मैं और तमाम मुसलमान तेरा शुक्र अदा करते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने सज्दे से सर उठाया, देखा मुसलमान क़ैदी कुफ़्फ़ार

को बांधे-खींचे चले आ रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० के पास उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० खड़े थे। आप ने उनसे कहा—

अब्दुल्लाह ! लड़ाई के मैदान में घूम-फिर कर देखो कि अबू जह्ल की लाश मैदान में मौजूद है या नहीं ?

हज़रत अब्दुल्लाह ने हुक्म के मुताबिक़ लाशों का मुआयना शुरू किया। बहुत देर तक तलाश करने के बाद अबू जह्ल बेहोश हालत में पड़ा हुआ मिला। उसका पूरा जिस्म ख़ाक व ख़ून में लिथड़ा हुआ था।

अब्दुल्लाह ने ऊंची आवाज़ से पुकार कर कहा, ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! तूने देखा कि ख़ुदा ने तुझे कितना ज़लील किया।

अबू जह्ल ने आंखें खोल दीं। उसके होंठ सूख रहे थे।

उस ने कमज़ोर आवाज़ में पूछा, क्या मुसलमान हार गये ?

नहीं, मुसलमानों को उन के ख़ुदा ने जिता दिया, अब्दुल्लाह ने जवाब दिया।

अबू जह्ल की आंखें हैरत और ताज्जुब से डूब गयीं, उस ने ज़ोर दे कर कहा—नहीं, कभी नहीं, यह ग़ैर-मुम्किन है। हमारी तायदाद ज़्यादा थी, हमारे सरदार ज़्यादा थे, हमारे ज़िरह पोश ज़्यादा थे, इस लिए जीत हमारी हुई होगी।

अब्दुल्लाह ने तलवार बुलन्द करते हुए कहा, मर्दूद ! तेरे साथ के लोग हारे हैं। ले संभल ! अब मैं तुझे दोज़ख़ में भेजता हूं। काफ़िर ! तूने मुसलमानों पर ज़ुल्म किया। जा अब दोज़ख़ में आग का ईंधन बन।

अबू जह्ल डूब गया। मौत उस की आंखों के सामने फिर गयी। सूखे होंठ डर से सिकुड़ गये।

अब्दुल्लाह ने तलवार का एक हाथ मारा। उस की गरदन धड़ से अलग हो गयी।

यह ख़बर हुज़ूर सल्ल० को पहुंचायी गयी, तो आप ने फ़रमाया—

अफ़सोस अबू जह्ल ! तु न ख़ुद चैन से रहा और न मुसलमानों को तूने चैन से रहने दिया। काश, तू मुसलमान हो जाता या मुसलमानों से न जलता।

इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने तमाम शहीदों को एक जगह जमा कराया और उन्हें बड़े एज़ाज़ के साथ दफ़्न करा दिया। कुफ़्फ़ार की लाशों को भी एक बड़े गढ़े में दफ़्न करा दिया।

इन तमाम कामों से फ़ारिग़ हो कर इस्लामी फ़ौज मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रवाना हुई।

सत्तू के थैले

बद्र की लड़ाई में हारने के बाद काफ़िरों का घमंड टूट गया था। इस लड़ाई में उन के बड़े-बड़े सरदार भी मारे गये थे।

मुसलमानों ने लड़ाई जीत ली थी और सब से ज़्यादा हैरत की बात यह कि वे सिर्फ़ चौदह की तायदाद में मारे गये थे, जबकि कुफ़्फ़ार तीन सौ से ज़्यादा की तायदाद में मारे गये। वे गिरफ़्तार भी काफ़ी हुए थे और उन का सामान मुजाहिदों के काम आ रहा था।

इस्लामी फ़ौज कामियाब हो कर मदीने की तरफ़ रवाना हुई।

जब यह फ़ौज अफ़रा नामी जगह पर पहुंची, तो हुज़ूर सल्ल० ने पहले माले ग़नीमत मुसलमानों में तक़्सीम किया।

नस्र बिन हारिस, जो बनू अब्दुद्दार क़बीले का था और ज़बरदस्त इस्लाम दुश्मन था, उस ने मुसलमानों पर काफ़ी सख़्तियां की थीं, अफ़रा ही में वह हुज़ूर सल्ल० के हुक्म से क़त्ल कर दिया गया।

यह आदमी क़ैद था और क़ैद की हालत में भी हुज़ूर सल्ल० की शान में गुस्ताखियां किया करता था। अरब का यह क़ानून था कि जितने क़ैदी लड़ाई में हाथ आते, सब के सब बे-दरेग़ क़त्ल कर दिये जाते।

चुनांचे कुफ़्फ़ारे मक्का और मुसलमानों का यह आम ख्याल था कि तमाम क़ैदी क़त्ल कर दिये जाएंगे, मगर हुज़ूर सल्ल० ने उन के क़त्ल का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि क़ैदियों की हिफ़ाज़त की ताकीद की थी और हिदायत की थी कि क़ैदियों को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न दी जाए, पहले उन्हें खाना खिलाएं, पानी पिलाएं, फिर खुद खाएं-पिएं।

मुसलमान हुज़ूर सल्ल० के इस हुक्म पर अमल भी कर रहे थे।

अबिल युसरा नाम के एक सहाबी मदीना के रहने वाले अंसारी थे। वह दस आदमियों के गिरोह पर सरदार थे। उन के सुपुर्द अबू अज़ीज़ क़ैदी को किया गया था। अबू अज़ीज़ क़ुरैशी सरदारों में से एक था। हज़रत मुस्अब का भाई था।

यह हज़रत मुस्अब वही हैं, जिन्हें हुज़ूर सल्ल० ने मक्का से मदीना मुबल्लिग़ बना कर भेजा था और जिन की कोशिशों से ही मदीना में इस्लाम फैला था।

हज़रत मुस्अब अबिल युसरा के पास आए।

आप ने फ़रमाया, अबिल युसरा ! जानते हो, जो क़ैदी तुम्हारे सुपुर्द

है, वह कौन है ?

सिर्फ़ इतना जानता हूं कि वह मक्के का रहने वाला है, अबिल युसरा ने जवाब दिया।

क्या तुम नहीं जानते ? हज़रत मुस्अब ने बताया, सुनो, यह मालदार औरत का बेटा है, मगर बड़ा चालाक है। अगर तुम ने इस की निगरानी में ज़रा भी ग़फ़लत की, तो वह भाग जाएगा।

अबू अज़ीज़ ने अपने सगे भाई मुस्अब की तरफ़ देखा, बोला, भाई साहब! क्या एक सगे भाई के लिए यह मुनासिब है, जो आप कर रहे हैं ? मैं तो आपके आने से समझा कि आप मेरे छुड़ाने में मददगार साबित होंगे।

अबू अज़ीज़ ! हज़रत मुसअब ने कहा, तू मेरा भाई नहीं है। अगर मेरा भाई होता, तो मुझ से लड़ने बद्र के मैदान में न आता। मेरा भाई यह है, जो तेरी हिफ़ाज़त कर रहा है।

अबू अज़ीज़ चुप हो गया।

इस्लामी फ़ौज अफ़रा से चली।

जब यह इराक़ुन्नुतबा में पहुंची, तो यहां उक़्बा बिन अबी मुऐत, जो सरकश काफ़िर था, क़त्ल किया गया। यह आदमी भी क़ैद था और क़ैद की हालत में गालियां बका करता था।

इस्लामी फ़ौज रुकती-रुकाती मदीने की तरफ़ बढ़ रही थी। मदीने में मुसलमानों की जीत की ख़बर पहले ही पहुंच चुकी थी, वे पहले ही से बहुत ख़ुश थे और बड़ी बे-सब्री से फ़ौज के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, अलबत्ता काफ़िर बड़े दुखी और ग़मगीन नज़र आने लगे थे।

आख़िरकार वह दिन आ ही गया, जब मुसलमान फ़ौज मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुई।

तमाम मुसलमानों ने उस का शानदार इस्तक़्बाल किया और पूरे शहर में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी।

उस मौक़े पर यहूदी बड़े नाख़ुश और ग़मगीन नज़र आ रहे थे।

कुफ़्फ़ारे मदीना मुसलमानों से सख़्त मरऊब थे। वजह यह थी कि जंगी क़ैदियों में मक्का के बड़े-बड़े इज़्ज़तदार लोग शामिल थे, जैसे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, अक़ील, हज़रत अली के भाई, नौफ़ुल बिन हारिस, अबुल आस, हुज़ूर सल्ल० के दामाद, अबू अज़ीज़, सुहैल बिन अम्र ये सभी मक्का के सरदार थे, इन के अलावा और भी बहुत से लोग थे।

ये सभी खजूरों की रस्सियों में जकड़े हुए मुसलमानों की हिरासत में मदीने की गलियों को तै कर रहे थे। ख़ुदा ने उन का घमंड तोड़ दिया था,

आज वे ज़लील क़ैदियों और मामूली ग़ुलामों की तरह हो गये थे। यह बड़ा इबरतनाक मंज़र था।

इन क़ैदियों में ज़्यादा तायदाद उन लोगों की थी, जिन्हों ने मुसलमानों को सताया, शाबे अबी तालिब में तीन साल तक क़ैद रखा, हिजरत करते वक़्त सामान लूटा और मुहाजिरों को ज़लील किया, बीवी और बच्चे छीन लिए।

चाहिए तो यह था कि मुसलमान इंतिक़ाम के जोश में इन सब को क़त्ल कर डालते, मगर इस्लाम ने अरबों की फ़ितरत ही बदल दी थी।

हुज़ूर सल्ल० ने क़ैदियों की हिफ़ाज़त करने वालों को उन के आराम का ख्याल रखने की हिदायत की थी, इसलिए तमाम मुसलमान क़ैदियों का खास तौर से ख्याल रखते थे, यहां तक कि खुद सत्तू पीते, खजूरें खाते और रोटियां पका-पका कर क़ैदियों को खिलाते।

अबू अज़ीज़ जो हज़रत मुसअब के भाई थे, बयान करते हैं कि उन के भाई खुद खजूरें खाते थे और उन्हें रोटियां पका-पका कर देते थे। कभी उन्हों ने रोटियां अपने किसी हिफ़ाज़त करने वाले को दीं, उस ने दूसरे को दीं, दूसरे ने तीसरे के हवाले कीं, तीसरे ने चौथे के सुपुर्द कीं, चौथे ने फिर अबू अज़ीज़ ही को दे दीं।

क़ैदी लोग मुसलमानों का यह त्याग देख कर हैरान रह गये।

मुसलमानों ने मदीना मुनव्वरा में पहुंच कर क़ियाम किया। कुफ़्फ़ारे मदीना मुसलमानों की जीत से इतने मरऊब हुए कि उन्हों ने मुसलमानों को छेड़ना और उन पर आवाज़ें कसना, बन्द कर दिया, बल्कि अक्सर लोग राज़ी-खुशी से मुसलमान भी हो गये।

अब्दुल्लाह बिन उबई, जो मुसलमानों को और हज़रत मुहम्मद सल्ल० को दुश्मन समझता था, मुसलमानो के पास आ कर मय तीन सौ आदमियों के मुसलमान हो गया।

वही एक ऐसा आदमी था जिस की वजह से बहुत-से लोग रुके हुए थे, उसके मुसलमान होते ही सैकड़ों आदमी और मुसलमान हो गये।

कुछ दिनों बाद हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिदे नबवी में मज्लिसे शूरा बुलायी, तमाम मुसलमान जमा हुए, क़ैदी भी बुलाये गये। सब लोगों के आने पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया--

मुसलमानो ! हम्द व तारीफ़ के क़ाबिल वही ज़ात पाक है जो पूरी कायनात का पैदा करने वाला है, बड़ी क़ुदरत वाला है, इज़्ज़त व ज़िल्लत और जीत-हार उसी के अख्तियार में है। तुम ने देखा और अच्छी तरह से

देखा कि तुम कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तायदाद के लिहाज़ से तिहाई थे और हथियारों के लिहाज़ से कुछ भी न थे, पर तुम को खुदा ने फ़त्ह दी, माले ग़नीमत तुम्हारे हाथ लगा और क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं। मैं ने तुम को इस लिए बुलाया है कि तुम सब मिल कर क़ैदियों के मुताल्लिक़ मश्विरा दो कि क्या किया जाए।

क़ैदी फ़िक्रमंद सर झुकाये बैठे थे। वे जानते थे कि अरबों का क़ानून यह है कि तमाम जंगी क़ैदियों को बे-दरेग़ क़त्ल कर दिया जाये। उन्हें यक़ीन था कि वे भी क़त्ल किये जाएंगे। क़त्ल के डर ने उन्हें कपकपा दिया था।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने फ़रमाया, जंगी क़ैदी ग़ुलामों की हैसियत रखते हैं। उन्हें ग़ुलामों की तरह यहूदियों के हाथ बेच दिया जाये, इस से मुश्रिकों पर मुसलमानों का रौब पड़ेगा और आगे मुसलमानों से लड़ने में एहतियात करेंगे।

मेरी तो राय यह है कि इन क़ैदियों में जो क़ैदी, जिस मुसलमान का क़रीबी रिश्तेदार है, वही उस को अपने हाथ से क़त्ल कर डाले, ताकि मुश्रिकों और काफ़िरों को मालूम हो जाए कि मुसलमानों के दिलों में अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत और रिश्तेदारियों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है। इस्लाम के मुक़ाबले में तमाम रिश्ते नीचे हैं।

हज़रत उमर बोले।

अरबों का जंगी क़ानून यही है कि तमाम क़ैदी क़त्ल कर डाले जाएं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मगर माफ़ी भी कोई चीज़ है, उन क़ैदियों को रिहा कर के हमें लुत्फ़ व मेहरबानी की एक नज़ीर क़ायम करना चाहिए। इस से कुफ़्फ़ार के दिलों में मुसलमानों और इस्लाम की मुहब्बत क़ायम हो जाएगी।

ये क़ैदी वे हैं, जिन्हों ने मुसलमानों पर इतना ज़ुल्म किये हैं कि दुनिया में उन की नज़ीर ढूंढने पर भी न मिलेगी, हज़रत अली ने फ़रमाया, ऐसे ज़ालिमों को रिहा करना किसी तरह भी मुनासिब नहीं है, उन्हें क़त्ल कर डालना ही अच्छा है।

यह तो सही है, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा कि अगर मुसलमान किसी काफ़िर के हाथ में क़ैद हो जाता, फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाता, यह तो उस के कुफ़्र व शिर्क का तक़ाज़ा है, लेकिन हमें उन जैसा न बनना चाहिए। मुसलमान की शान तो यह होनी चाहिए कि वह माफ़ी की रविश अपनाए, वरना फिर उन में और हम में क्या फ़र्क़ रह जाएगा।

ऐ भाई ! हज़रत उमर रज़ि० बोले, क्या आप भूल गये कि आप पर और तमाम मुसलमानों पर इन क़ैदियों ने कितनी सख्तियां की हैं, कितने ज़ुल्म किये हैं, आप अपनी नर्मी से माफ़ी की बात कर रहे हैं, मुनासिब यही है कि इन सब को क़त्ल कर डाला जाए।

मेरी राय क़त्ल करने की नहीं है, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने कहा, मेरे ख्याल में तो यही मुनासिब है कि इन क़ैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाए। फ़िदए की इस रक़म से मुसलमान अपनी हालत दुरुस्त कर सकेंगे।

हुज़ूर सल्ल० बैठे मुख़ालिफ़ और मुवाफ़िक़ राएं सुन रहे थे। जब बात ज़्यादा आगे बढ़ी, तो आप ने फ़रमाया—

मुसलमानो ! यह सच है कि इन मुश्रिक क़ैदियों ने मुसलमानो पर वहशियाना ज़ुल्म किये हैं, यह भी सच है कि अगर वे हम में से किसी को गिरफ़्तार कर लेते, तो क़त्ल ही करते, पर हमें उन की पैरवी न करनी चाहिए। अगर हम भी वही करें, जो उन्हों ने हमारे साथ किया है, तो हम में और इन में फ़र्क़ ही क्या रहा ? मेहरबानी करना और माफ़ कर देना अच्छी बातें हैं, मुसलमानों को यही करना चाहिए।

एक मुसलमान की शान यह होनी चाहिए कि जब वह लड़ाई के मैदान में निकले, तो खूंख़ार शेर बन कर निकले, मर जाए मगर लड़ाई में जो क़दम आगे बढ़ा है उसे पीछे न हटाये, लेकिन जब जीत जाए, तो दुश्मनों से नर्मी और मेहरबानी का सुलूक करे। मैं भी क़ैदियो पर मेहरबानी के सुलूक को पसन्द करता हूं। मेरी भी यही राय है कि इन क़ैदियो को फ़िदया ले कर छोड़ दिया जाए।

जब हुज़ूर सल्ल० ने अपनी राय पेश कर दी, तो अब उस में चूं व चरा की कोई गुंजाइश न थी।

सब ने आप की राय से इत्तिफ़ाक़ किया।

आप ने तमाम क़ैदियों की फ़ेहरिस्त तैयार करायी और जो जिस हैसियत का था, उस पर उतना ही फ़िदया लगा दिया गया।

बहुत से क़ैदी ऐसे थे, जो कोई भी फ़िदया अदा नहीं कर सकते थे, उन्हें बिना किसी मुआवज़ा के छोड़ दिया गया। अलबत्ता उन में कुछ लोग जो पढ़ना, लिखना जानते थे, रोक लिए गए और उनसे कहा गया कि दस बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखा दें और रिहा हो जाएं।

चुनांचे उन्हों ने मुस्लिम बच्चों को तालीम देना शुरू किया।

इन तमाम मामलों के तै होते ही मज्लिसे शूरा बरख़ास्त कर दी गयी

और मुसलमान अपने-अपने काम में लग गये।

एक दिन सन २ हि० के जिलहिज्जा महीने की चौथी तारीख को हुज़ूर सल्ल० मस्जिदे नबवी में तश्रीफ़ रखते थे। बहुत से सहाबी आप के पास बैठे थे। कुछ मुसलमान लपके हुए आए और आप के पास आ कर बोले—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कमबख्त अबूसुफ़ियान बद्र की लड़ाई के लिए हमलावर हुआ है। उस की फ़ौज मदीना के क़रीब आ गयी है।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अच्छा तुम शहर में मुनादी करा दो कि क़ुरैशे मक्का मदीने पर हमलावर हुए हैं। अहदनामे के मुताबिक़ मुसलमान कुफ़्फ़ार, यहूदी, मदीने के तमाम लोग उस के मुक़ाबले के लिए निकलें।

फ़ौरन वे लोग वापस लौट गये और पूरे शहर में मुनादी कर दी।

जो मुसलमान जहां कहीं थे, मुनादी की आवाज़ सुन कर दौड़-दौड़ कर आने लगे, मगर काफ़िर और यहूदी एक भी नहीं आया, हालांकि जो अहदनामा लिखा गया था, उस में एक शर्त यह भी थी कि जब कोई दुश्मन मदीने पर हमला करेगा, तो सभी मिल कर दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे।

सच तो यह है कि कुफ़्फ़ार और यहूदी छिपे तौर पर मुसलमानों के दुश्मन थे। वे चाहते थे कि ये किसी तरह मिट जाएं। वे मुसलमानों को हर मुम्किन तरीक़े से नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करते रहते थे।

थोड़ी ही देर में सैकड़ों मुसलमान मस्जिदे नबवी के सामने जमा हो गये।

हुज़ूर सल्ल० भी मस्जिद में तश्रीफ़ रखते थे।

कुफ़्फ़ार और यहूदियों के आने का इन्तिज़ार था।

जब मुद्दत गुज़र गई और उनमें से कोई न आया, तो आपने फ़रमाया—

मालूम होता है कि कुफ़्फ़ार और यहूदी अपना अहद तोड़ना चाहते हैं, ख़ैर कुछ परवाह नहीं, वे अगर बद-अहदी करते हैं, तो करने दो, मुसलमानो ! तुम अबू सुफ़ियान से मुक़ाबले के लिए तैयारी करो।

तमाम मुसलमान निहायत जोश में भरे हुए थे। हुज़ूर सल्ल० का हुक्म सुनते ही रवाना हुए। मदीने की गलियों को तै कर के बाहर निकले।

कुफ़्फ़ार और यहूदी अपने मकानों की छतों पर खड़े हो कर मुसलमानों की रवानगी का मंज़र देखने लगे।

मुसलमान मदीने से निकल कर खजूरों के बाग़ों की तरफ़ चले।

अभी थोड़ी दूर ही चले थे कि कुछ मुसलमान बाग़ों की तरफ़ से आते हुए मिले।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० के सामने आ कर कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जालिम अबू सुफ़ियान ने हज़रत सईद बिन अम्र अंसारी और उन के एक साथी को खेतों में काम करते हुए क़त्ल कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० को मुसलमानों से बेहद मुहब्बत थी। जब किसी मुसलमान के बीमार होने या और कोई तक्लीफ़ हो जाने की ख़बर सुनते, तो बेचैन हो जाते, उसे देखने जाते, देख-भाल करते। जो मुसलमान शहीद हो जाता, उस का आप को अफ़सोस होता।

चुनांचे हज़रत सईद और उन के साथी के क़त्ल होने की ख़बर सुनकर आप को बड़ा मलाल हुआ। आप ने पूछा, संगदिल अबू सुफ़ियान और उस की फ़ौज कहां है ?

हुज़ूर सल्ल० ! वह इस्लामी फ़ौज के आने की ख़बर सुन कर मक्का की तरफ़ भाग गया।

हुज़ूर सल्ल० ने कुछ मुसलमानों को हिदायत की कि वे हज़रत सईद और उन के साथी को दफ़न कर दें और फ़ौज को तेज़ी से चलने का हुक्म दिया।

मुसलमान पूरे जोश में थे। वे तेज़ी से चले। जब वे खजूरों के बाग़ों को तै कर चुके, तो उन्हें सत्तू के थैले पड़े हुए मिले।

ये थैले अबू सुफ़ियान की फ़ौज अपना बोझ हल्का करने के लिए फेंकती चली गयी थी।

रास्ते में दूर तक थैले पड़े हुए मिले। मुसलमान इन थैलों को उठाते चले गये।

उन्हों ने गरदारा नामी जगह तक कुफ़्फ़ार का पीछा किया।

यहां पहुंच कर मालूम हुआ कि अबू सुफ़ियान दूर तक निकल गया है। उस का हाथ आना मुश्किल है। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को वापसी का हुक्म दे दिया और बग़ैर किसी ख़ूंरेज़ी के वह मदीना वापस लौट आयी।

चूंकि मुसलमानों को इस मुहिम में सत्तू के थैले हाथ आए थे और अरबी में सत्तू को सुवैक़ कहते हैं, इसलिए यह वाक़िआ सुवैक़ की लड़ाई के नाम से मशहूर हुआ।

एक और लड़ाई

उत्बा बद्र की लड़ाई में हज़रत हमज़ा के हाथों क़त्ल हो गया था। उत्बा की बेटी हिंदा मक्का में थी। उस की शादी अबू सुफ़ियान से हुई थी।

जब उस ने अपने बाप के क़त्ल होने की ख़बर सुनी तो बड़ी दुखी हुई। उस ने अपने शौहर को इंतिक़ाम पर उभारा।

चुनांचे अबू सुफ़ियान दो सौ शह सवारों की फ़ौज ले कर मदीने पर हमला करने के लिए चला, लेकिन मुसलमानों के आने की ख़बर सुन कर सत्तू के थैले गिराता हुआ भाग आया। मुसलमानों ने गदरा तक उस का पीछा किया। जब देखा कि वह दूर निकल गया है, तो वापस लौट कर मदीना पहुंच गये।

मदीने के कुफ़्फ़ार और यहूदियों को इस का बड़ा दुख हुआ।

चुनांचे यहूदियों ने कहना शुरू किया कि मक्के के लोग बुज़दिल हैं, वे मुसलमानों से डर जाते हैं। अगर कभी यहूदियों से लड़ना पड़ेगा, तो दुनिया देख लेगी कि यहूदी कितने बहादुर हैं और वे किस तरह मुसलमानों को पसपा करते हैं।

यहूदी बड़े सरकश होते चले जा रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने जब उन्हें समझाया, सरकशी न करो अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, इस्लाम दुश्मन न बनो, अल्लाह का अज़ाब तुम पर नाज़िल होगा और वही अंजाम होगा, जो अबू जह्ल और उत्बा का हुआ है।

यहूदी आप की बातें सुन कर हंस पड़े।

एक आदमी ने कहा, आप ख़ुदा से कहें कि वह हम पर क़ह्र व ग़ज़ब नाज़िल करे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस के क़ह्र व ग़ज़ब की जल्दी आरज़ू न करो। जब उस का अज़ाब नाज़िल होगा, तो फिर तुम को कहीं पनाह न मिलेगी।

एक दूसरे यहूदी ने कहा, इत्मीनान रखो, हम तुम्हारे पास तुम्हारे ख़ुदा के अज़ाब से बचने के लिए इल्तिजा ले कर न आएंगे।

लेकिन बेकार फ़साद करने में क्या रखा है ? बेकार लड़ाई मोल लेने से क्या फ़ायदा है ? ख़ुद भी आराम व इत्मीनान से रहो और मुसलमानों को भी आराम व इत्मीनान से रहने दो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

हमारा आराम व इत्मीनान तो तुम ने और तुम्हारी क़ौम ने खो दिया, एक बूढ़े यहूदी ने कहा, हम कैसे देखें कि तुम्हारी क़ौम तरक़्क़ी करे। हम यह चाहते हैं कि या तो मदीना से निकल जाओ या हमारी इताअत क़ुबूल करो।

देखो, तुम हमारे साथ समझौता कर चुके हो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया

अहदनामा की खिलाफ़ वर्जी न करो।

अहदनामा कोई चीज नहीं है, उस बूढ़े ने कहा, हम तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के खिलाफ़ हैं और जब तक यहां रहोगे, हमारी दुश्मनी तरक़्क़ी करती रहेगी।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बहुत समझाया, लेकिन वे न समझे, बल्कि निहायत गुस्ताखी से बात करते रहे, मजबूरन हुज़ूर सल्ल० वापस आ गये।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० नहीं चाहते थे कि मदीना में खून की नदियां बहें, इसलिए आप ने मुसलमानों को मुहतात रहने और यहूदियों से बचने की हिदायत कर दी, पर यहूदी गोया लड़ाई के भूखे थे, वे मुसलमानो को छेड़ते थे, लड़ाई पर तुले रहते थे। मुसलमान हुज़ूर सल्ल० के हुक्म की वजह से दर गुज़र करते रहते थे।

एक दिन बनी क़ैनुक़ाअ की बस्ती में बाज़ार लगा हुआ था, दूकानें सज रही थीं, खरीद-फ़रोख्त का बाज़ार गर्म था। मर्द, औरतें, बच्चे बाज़ार की सैर करते फिर रहे थे। उस वक़्त तक परदे का हुक्म नहीं आया था, इस लिए औरतें बाज़ारों में बे-नक़ाब घूमा-फिरा करती थीं।

एक अंसार की नव जवान औरत दूध बेचने के लिए गयी। दूध बेच कर के वह एक यहूदी सुनार की दुकान पर कुछ खरीदने के लिए खड़ी हो गयी। औरत खूबसूरत थी। यहूदी ने उसे ललचायी नज़रों से देखा।

नवजवान औरत ने एक चीज़ पसन्द कर के उस की क़ीमत पूछी—

ऐ खूबसूरत चांद ! अगर यह चीज़ तुम को पसन्द है, तो तुम्हारी नज़्र है मेरी तरफ़ से तोहफ़ा क़ुबूल करो, यहूदी सुनार ने कहा।

औरत को उस की बात बहुत बुरी लगी।

उस ने कहा, तोहफ़ा अज़ीज़ों या दोस्तों को दिया जाता है, मैं तुम्हारी न अज़ीज़ हूं न दोस्त।

सुनार ने बात काटते हुए कहा, ऐ हसीना ! तुमने मेरे जज़्बात में हलचल मचा डाली है। तुम ने मेरे दिल को ज़ख्मी कर दिया है। ज़रा मेरी तरफ़ तवज्जोह करो, मैं तुम पर निसार होना चाहता हूं।

हसीना ने उसे कोई जवाब न दिया।

वह आगे बढ़ने लगी।

यहूदी ने लपक कर उस का आंचल पकड़ लिया, ऐ हुस्न व खूबसूरती की तस्वीर ! मेरा दिल चुरा कर, मेरे सीने पर खंजर चला कर तुम कहां जा रही हो ?

देखो, मेरा आंचल छोड़ दो, नवजवान हसीना ने बिगड़ कर कहा।

छोड़ दूंगा, अगर मुझे मेरा दिल वापस कर दो, यहूदी ने कहा।

उसी वक़्त एक गरजती हुई आवाज़ आयी, ऐ बद-बख़्त शख़्स ! हट जा।

यहूदी ने पलट कर देखा, एक अंसार तैश व ग़ज़ब में भरे हुए नज़र आए। उन्हों ने कहा, औरतों को छेड़ना शराफ़त के ख़िलाफ़ है। यह कमीने लोगों का काम है।

इस हसीना ने मेरी चीज़ें चुरा ली हैं। मैं इसे नहीं छोड़ सकता, यहूदी ने कहा।

यह झूठ बोलता है, औरत ने कहा।

इस बीच बहुत से यहूदी जमा हो गये।

बताओ, इस ने क्या चीज़ें चुरायी हैं ? अंसार ने कहा।

इतने में एक यहूदी ने अंसार पर हमला कर दिया और बोला—

तुम्हारी यह जुर्रात कि तुम हमारे मुहल्ले में, हमारी बस्ती में और हमारे बाज़ार में आ कर हमारी क़ौम के लोगों को धमका रहे हो ?

अंसारी ने भी जल्दी से तलवार खींच ली, लेकिन इस से पहले कि वह तलवार बुलंद करते, यहूदी की तलवार उन के सिर पर पड़ी। सिर से ख़ून बहने लगा।

जिस तरह ज़ख़्मी शेर ग़ज़बनाक हो जाता है, वैसे ही अंसारी भी घायल हो कर ग़ज़बनाक हो गये। उन्हों ने जल्दी से हमला किया और यहूदी जहन्नम रसीद हो गया।

यहूदी के क़त्ल होते ही यहूदी बौखला गये। बहुतों की तलवारें निकल आयीं और एक साथ सब ने उन अंसारी पर हमला कर दिया। अंसारी ज़ख़्मी हो कर गिरे और शहीद हो गये।

नवजवान हसीना बड़ी ज़ोर से चिल्लायी, मुसलमानो ! आज तुम्हारी इज़्ज़त ख़तरे में पड़ गयी है। यहूदी दौलत और ताक़त के घमंड में तुम्हारी औरतों की आबरू लूट लेना चाहते हैं। क्या तुम इसे गवारा कर लोगे ?

औरत के चिल्लाते ही कुछ मुसलमान वहां जमा हो गये। उन्हें पूरा वाक़िया देख कर ग़ुस्सा आ गया।

अगरचे वे थोड़े थे, बहुत ही थोड़े, आटे में नमक के बराबर, उन के पास हथियार भी बहुत थोड़े थे, सिर्फ़ एक-एक तलवार, एक-एक ढाल, लेकिन वे इतने जोश में थे कि उन्हों ने इस की परवाह न की, तलवारें निकाल लीं और एक जगह जमा हो कर बोले—

बदबख़्त यहूदियो ! आज तुम ने एक मुसलमान औरत को छेड़ कर

और एक मुसलमान को शहीद कर के इस्लाम के शेरों को जगा दिया है और अपनी हलाकत व बर्बादी को दावत दी है, जो ग़ुबार, कीना और हसद तुम्हारे दिलों में भरा हुआ है, तुम ने उसे निकालने का इरादा किया है। तुम ने एलाने जंग कर दिया है। हम तुम्हारे एलान को क़ुबूल करते हैं। आओ मुक़ाबले में, बुलाओ अपनी फ़ौज को।

यहूदी भी जैसे लड़ने-मरने को तैयार थे, उन्होंने अपनी फ़ौज बुला ली।

यहूदी फ़ौज में सात सौ जवान थे और मुसलमान कुल पन्द्रह-बीस थे।

लड़ाई शुरू हो गयी।

यहूदियों को अपनी ताक़त पर घमंड था। मुसलमानों को कम और बे-हथियार देख कर उन की जुर्रात बढ़ी हुई थी, लेकिन मुसलमान जिस जोश व ग़ज़ब में भरे हुए लड़ रहे थे, वह देखने का मंज़र था। वे जिस ज़िरहपोश पर हमला करते, ख़ूद से नीचे गरदन पर तलवार मारते, सिर कट कर दूर जा गिरता, हर ज़िरहपोश के मरने पर अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाते।

यहूदी और ग़ुस्से में आ कर हमला करते। हर हमले पर उन्हें यक़ीन रहता कि वे इस बार ज़रूर किसी न किसी मुसलमान को शहीद करेंगे, लेकिन वार ख़ाली जाता, तो वे और भड़कते और ग़ज़बनाक हो कर हमला करते।

मुसलमान पूरे सब्र और बहादुरी से लड़ रहे थे और यहूदियों को नुक़सान पहुंचा रहे थे।

आख़िरकार इस लड़ाई की ख़बर मदीना पहुंची।

मुसलमानों को यहूदियों की इस हरकत पर ताज्जुब भी हुआ और अफ़सोस भी।

मुसलमान अपने भाइयों की मदद के लिए दौड़ पड़े।

वे कुल तीन सौ थे, हुज़ूर सल्ल० भी साथ में थे, हज़रत अबूबक्र रज़ि० झंडा लिए हुए थे। झंडा हवा में लहरा रहा था।

बनी क़ैनुक़ाअ की यहूदी आबादी में लड़ाई अब भी चल रही थी। ये मुट्ठी भर मुसलमान उस भारी फ़ौज का मुक़ाबला करते-करते थकन महसूस करने लगे थे। यहूदियों ने इस कमज़ोरी को महसूस कर लिया था। उन्हों ने अपनी फ़ौज को जोश दिला कर एक ज़ोरदार हमला करने पर उभारा।

मुसलमानों ने इस हमले को रोकने की कोशिश तो की, लेकिन वे रोक न सके। यहूदियों की तलवारों को अब मौक़ा मिल गया और उन्हें ज़ख़्मी करना शुरू कर दिया। मुसलमानों के लिए लड़ाई हार में बदलने लगी,

हर मुसलमान दस-दस, बीस-बीस यहूदियों के घेरे में आ गया, एक दूसरे से कट गये, फिर भी अभी डटे हुए थे और मुक़ाबला कर रहे थे, लेकिन कब तक ?

यहूदियों ने यक़ीन कर लिया था कि अब वे बहुत जल्द लड़ रहे मुसलमानों को क़ाबू में कर लेंगे। उन्हों ने हर तरफ़ से सिमट कर हमला किया, हर मुसलमान को यक़ीन हो गया कि अब वह शहीद ही हुआ चाहता है।

नवजवान हसीना मैदान में मौजूद थी।

वह जानती थी कि यह लड़ाई सिर्फ़ उसी की वजह से हो रही है। वह देख रही थी कि मुसलमान मौत के किनारे पहुंच रहे हैं। वह बेचैन हो उठी उसने ख़ुलूसे दिल से दुआ मांगी—

ऐ रब ! मुसलमानों की मदद कर, कमज़ोर मुसलमानो को ज़ालिम यहूदियों से बचा। ऐ ख़ुदा ! इस्लाम का नाम बुलंद करने वालों की मदद कर।

अभी वह दुआ कर ही रही थी कि अल्लाहु अक्बर के नारे से पूरी फ़िज़ा गूंज गयी।

मुसलमानों और यहूदियों ने पलट-पलट कर और उचक-उचक कर देखा। उन्होंने देखा कि मुसलमानों का नया लश्कर बड़ी तेज़ी से बढ़ा चला आ रहा है।

लड़ रहे मुसलमानों में नयी ताक़त भर आयी। वे संभले, ज़ोरदार हमला किया।

यहूदी पीछे हट कर आने वाले मुसलमानों का मुक़ाबला करने के लिए दूर तक फैल गये। यह आने वाला लश्कर हुज़ूर सल्ल० की क़ियादत में आ रहा था।

इस आने वाले लश्कर ने अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाया और हल्ला बोल दिया।

यह बड़ा ज़ोरदार हमला था। अगरचे यहूदियों ने उन के हमले को रोकने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया, लेकिन वे मुसलमानों के हमले को न रोक सके, बहुत कुछ पीछे हटते चले गये।

मुसलमान उन्हें दबाते मारते-काटते उन के पीछे लगे चले गये।

जो मुसलमान पहले से लड़ रहे थे, उन्हों ने भी संभल कर ज़ोरदार हमला किया कि वे भी दर्मियानी यहूदियों को काटते-छांटते आने वाले मुसलमानों से जा मिले।

अब मुसलमान ग़ालिब हो रहे थे। यहूदी पीछे हटने लगे। अब मुसल-

मानों ने उन्हें और दबाया और उन के बहुत से आदमी मौत के घाट चढ़ गये तो वे पीठ पीछे भागे और निहायत बे-तर्तीबी से भागे। मुसलमान उन का पीछा करते हुए दौड़े।

सामने ही बनी क़ैनुक़ाअ का क़िला था। तमाम यहूदी सिमट कर क़िले के अन्दर दाखिल हो गये।

पहरे वालों ने फाटक बन्द कर लिया।

मुसलमानों ने यहूदियों के साथ ही क़िले में दाखिल होने की कोशिश की, मगर वे कामियाब न हो सके।

यहूदी क़िले में घिर गये।

मुसलमानों ने हर तरफ़ से क़िला घेर लिया।

यह घिराव पन्द्रह दिन तक चलता रहा। मुसलमानों ने इतनी सख्ती से निगरानी की कि क़िले के अन्दर चिड़िया पर तक न मार सके।

चूंकि यहूदियों को इतने लम्बे घिराव की उम्मीद न थी, इसलिए उन्हों ने रसद का सामान मुहैया न किया था। नतीजा यह हुआ कि रसद खत्म हो गयी और यहूदी फ़ाक़ों से मरने लगे।

सोलहवें दिन उन्हों ने खुद ही फाटक खोल दिया और बग़ैर किसी शर्त के क़िला मुसलमानों के हवाले कर दिया।

मुसलमान क़िले में जीतने वाले की हैसियत से दाखिल हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दे दिया कि कोई यहूदी हथियार न बांधे, जो हथियार बन्द यहूदी मिले उसे फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए। इसलिए यहूदी रास्तों में सिर झुकाए ही खड़े मिले।

आज यहूदियों का घमंड चूर हो गया था। उनका क़िला मुसलमानों के क़ब्ज़े में पहुंच चुका था। वे निहत्थे खड़े थे, डर रहे थे और कांप रहे थे। मौत उन की आंखों के सामने नाच रही थी।

वे जानते थे कि क़ैदियों को क़त्ल कर दिया जाता है, अरबों का यही क़ानून है। उन्हें डर ही नहीं बल्कि यक़ीन था कि वे सब के सब क़त्ल कर दिये जाएंगे। मौत के डर से उन के चेहरे पीले और भयानक हो रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने यहूदियों के गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया।

मुसलमानों ने एक सिरे से यहूदियों को गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया।

कई घंटे गिरफ़्तारी में लगे। जब तमाम यहूदी गिरफ़्तार हो गये, तो हुज़ूर सल्ल० उन्हें अपने साथ ले कर मदीने की तरफ़ चले।

कुरैश की भारी फ़ौज

जब बद्र में मक्का वालों को हार का मुंह देखना पड़ा और उसकी खबर मक्का पहुंची, तो तमाम शहर में उदासी की घटा छा गयी। हर औरत, हर बच्चा, हर मर्द दुखी और परेशान नज़र आने लगा।

पहले तो मक्के वालों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि उन की फ़ौज हार गयी है। वे समझ रहे थे कि मुसलमानों ने यह बे-पर की उड़ा दी है, लेकिन जब बद्र से भागे हुए फ़ौजी मक्का पहुंचे और उन्हों ने पूरी बात बतायी, तो मक्का वालों का दुख बहुत बढ़ गया।

चूंकि इस फ़ौज में हर तबक़े और हर क़बीले के लोग मौजूद थे, इस-लिए सभी को रंज और अफ़सोस हुआ।

अरब में यह क़ायदा था कि मरने वालों का मातम पूरे चालीस दिन तक किया जाता था। औरतें एक जगह जमा हो कर बैन किया करती थीं। सर के बाल खोल कर सोगवार शक्ल बना कर सीना पीटा करती थीं।

चुनांचे औरतों ने एक बड़ी मज्लिस बुलाने की तैयारी की।

अबू लहब को खबर हुई तो उस ने मना कर दिया कि कोई मज्लिस न की जाए। इस से मक्के में रहने वाले मुसलमानों को खुशी होगी।

सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि उस ने औरतों मर्दों को रोने और गिरया व ज़ारी करने से भी मना किया।

अबू लहब को इस हार का इतना सदमा हुआ कि वह बीमार हो गया और ऐसा बीमार हुआ कि मौत का शिकार होने से वह अपने को न बचा सका।

मक्के वालों को उस की मौत का बड़ा सदमा था।

अब सिर्फ़ अबू सुफ़ियान ही एक ऐसा शख्स था, जो सब से बड़ा सरदार माना जाता था।

वह दो सौ तजुर्बेकार जवानों को ले कर मदीना पर चढ़ दौड़ा, पर मुसलमानों के आने की खबर सुन कर भाग आया और बोझ हल्का करने के लिए सत्तू के थैले गिरा आया।

जब वह हार कर मक्का में दाखिल हुआ, तो मक्के वालों ने हिक़ारत की नज़रों से देखा। खुद उस की बीवी हिंदा ने उस पर लानत व मलामत की।

हिंदा अबू सुफ़ियान की बीवी और उत्बा की बेटी थी, उस का बाप

और भाई दोनों लड़ाई में मारे गये थे, उस के दिल में बदले की आग भड़क रही थी, उसे मालूम हो गया था कि हज़रत हमज़ा ने उस के बाप को क़त्ल किया था।

वह हज़रत हमज़ा रज़ि॰ का नाम सुन कर भड़क उठती थी। उस ने कुछ शायरों से अपने बाप और भाई के मर्सिए और नौहे लिखवाये थे और रात दिन इन मर्सियों और नौहों को पढ़ कर आंसू बहाया करती थी।

बहुत बार अबू सुफ़ियान ने उसे तसल्ली दी, समझाया, लेकिन उस के दिल में बदले की आग भड़कती रही। उस ने कपड़े बदलना, इत्र लगाना, और बनाव-सिंगार आदि करना बिल्कुल छोड़ दिया। अबू जह्ल, नौफ़ुल. वलीद और दूसरे मक्के के सरदार, जो बद्र में मारे गये थे, उन की बीबियां भी हिंदा की तरह सोगवार रहती थीं।

एक दिन जब अबू सुफ़ियान घर के भीतर आया तो उस ने अपनी बीवी हिंदा को रोते देखा। वह हिंदा के पास पहुंचा, उसे तसल्ली देते हुए बोला, मेरी अच्छी जीवन-साथी! इतना ग़म करने से क्या फ़ायदा? क्यों कुढ़-कुढ़ कर अपनी जान हल्कान किये देती हो।

क्यों ग़म न करूं? क्यों न कुढ़ूं? क्यों न रोऊं? मेरे बाप-भाई दोनों मारे गये, कोई इतना नहीं कि उनका बदला ले सके? उन की रूहें भटकती फिर रही हैं, हिंदा ने रो कर कहा।

तुम क्या चाहती हो? अबू सुफ़ियान ने पूछा

हिंदा ने आंसू भरी नज़रें उठा कर अबू सुफ़ियान को देखते हुए कहा, मैं...... मैं चाहती हूं कि मेरे बाप और भाई का बदला लिया जाए।

बदला लिया जाएगा, अबू सुफ़ियान ने यक़ीन दहानी की।

कब? हिंदा ने पूछा।

बहुत जल्द मैं अरब के तमाम क़बीलों को शिर्कत की दावत दूंगा और बहुत सी फ़ौज तैयार कर के मदीने पर भेजूंगा, अबू सुफ़ियान ने कहा।

मैं चाहती हूं कि इस बार औरतें भी फ़ौज के साथ चलें, हिंदा ने कहा, अगर हम न लड़ सकें, तो कम से कम मर्दों को उभारेंगे।

बहुत मुनासिब है, अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम चलने की तैयारी करो और औरतों को इस पर उभारो।

अब हिंदा ने रोना बन्द कर दिया।

अबू सुफ़ियान भी उठ कर चला गया।

उस ने उसी दिन शायरों और नक़ीबों को रवाना कर दिया और मक्का के लोगों को ख़ुद लड़ाई पर उभारने लगा।

अबू सुफ़ियान शाम देश में तिजारत के लिए गया था, बहुत से ताजिरों ने तिजारत का माल उस के साथ कर दिया। जब वह वापस आया तो पचास हजार मिस्क़ाल सोना और एक हजार ऊंट मुनाफ़े में लाया था।

यह तमाम मुनाफ़ा सौदागरों को नहीं दिया गया, बल्कि बड़ी लड़ाई के तैयारियों में लगा दिया गया, कुछ दिनों के बाद मुल्क के कोने-कोने से लोगों का आना शुरू हुआ। बनूकनाना, यमामा और दूसरे क़बीले के जवान आ गये।

इस बार मक्का वालों में भी बड़ा जोश था। हर छोटा बड़ा लड़ाई के मैदान में जाने और अपने क़बीले के मारे गये लोगों से बदला लेने के जोश म था।

इस बार तमाम कुफ़्फ़ार ने यह तै कर लिया था कि वे या तो इस लड़ाई में जीतेंगे और मुसलमानों को मिटा देगें या खुद मिट जाएंगे।

एक दिन अबू सुफ़ियान ने तमाम लश्कर का जायज़ा लिया। तीन हज़ार जवान थे जो उस फ़ौज में शामिल थे, यह देख कर उसे बड़ी खुशी हुई।

जब वह जायजा ले कर मकान पर पहुंचा, तो उसे एक आदमी मिला, जो उस का इन्तिज़ार कर रहा था। अबू सुफ़ियान के ग़ुलाम ने उस आदमी से तआरुफ़ हासिल करते हुए कहा---

ऐ मेरे आक़ा! यह मदीना मुनव्वरा से आया है। आप की खिदमत में कुछ अर्ज करना चाहता है।

अबू सुफ़ियान ने मदीने से आने वाले आदमी की तरफ़ मुख़ातब हो कर कहा, तुम कौन हो और किस लिए आये हो ?

उस ने कहा, हुज़ूर ! मैं क़ासिद हूं। मदीना के बुतपरस्तों का पैग़ाम ले कर हाज़िर हुआ हूं।

तुम्हें किस ने भेजा है ? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

अब्दुल्लाह बिन उबई ने, उस ने जवाब दिया।

सुना है कि अब्दुल्लाह मुसलमान हो गया है, अबू सुफ़ियान ने कहा।

वह मस्लहतन मुसलमान हो गया है, उस ने बताया, आप को मालूम होगा कि मदीना के तमाम लोग अब्दुल्लाह को बादशाह बनाना चाहते थे। उन के लिए एक सुनहरा ताज भी तैयार कर लिया गया था। तज्वीज़ यह हो रही थी कि एक बड़ा जलसा कर के ताजपोशी की रस्म अदा की जाए, मगर इसी बीच वहां मुसलमान पहुंच गये और ताजपोशी की रस्म खटाई में पड़ गयी।

हां, मुझे यह सब मालूम है, अबू सुफ़ियान ने कहा।

अब्दुल्लाह को मुसलमानों का आना बहुत नागवार गुज़रा, लेकिन मदीना के चोटी के लोग मुसलमान हो चुके थे और इस्लाम दिन-ब-दिन मदीने में फैल रहा था, इसलिए वह ख़ामोश रहे और मस्लहतन ख़ुद भी मुसलमान हो गये।

लेकिन तुम्हारे सफ़ीर बन कर आने का इस से क्या ताल्लुक़ है? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

मैं अभी बताता हूं, क़ासिद ने कहा, वे अपने तीन सौ साथियों के साथ इस लिए मुसलमान हुए हैं कि जब मौक़ा पाएं, इस्लाम से हट कर अपने बाप-दादा के मज़हब में आ जाएं और एलान कर दें कि इस्लाम कुछ भी नहीं है, यह मज़हब एक ढकोसला है। इस तरह और लोग जो मुसलमान हो गये हैं, वे भी बद-दिल हो कर बुतपरस्तों में शामिल हो जाएंगे। असल में यह तरीक़ा है मुसलमानों की ताक़त को कमज़ोर करने का।

लेकिन इस से हमें क्या फ़ायदा हो सकता है? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

यह बात उस वक़्त की जाएगी, जब आप मदीने पर हमलावर होंगे, क़ासिद ने कहा, इस से तमाम मुसलमानों में बद-दिली छा जाएगी और वे आप का मुक़ाबला न कर सकेंगे। कोशिश की जाएगी कि मुसलमान बाहर निकल कर न लड़ें, बल्कि मदीना ही में रहें और आप की फ़ौज को रात के वक़्त मदीना में दाख़िल कर के मुसलमानों का क़त्लेआम कर दिया जाए।

अबू सुफ़ियान इस तज्वीज़ को सुन कर बहुत ख़ुश हुआ। उस ने कहा, यह बहुत अच्छी तज्वीज़ है। इस तरह से यक़ीनन मुसलमानों की जड़ें पूरी तरह कट जाएंगी।

यक़ीनन मैं इसी लिए आप की ख़िदमत में भेजा गया हूं, क़ासिद ने कहा, कि आप जल्द से जल्द फ़ौज रवाना करें और मुसलमानों पर जीत हासिल कर के अब्दुल्लाह की रस्मे ताजपोशी पूरी करें।

ऐसा ही होगा, अबू सुफ़ियान ने कहा, हमारी तरफ़ से पूरा इत्मीनान रखो।

फिर बोला, आज तुम ठहरो, कल सुबह चले जाना, परसों हम शानदार फ़ौज लेकर रवाना हो जाएंगे।

अबू सुफ़ियान चला गया।

क़ासिद तो उस दिन ठहर गया, फिर दूसरे दिन वह भी मदीने के लिए रवाना हो गया।

क़ासिद के चले आने के बाद अबू सुफ़ियान ने फ़ौज के सरदारों को बताया कि कल फ़ौज मदीने की तरफ़ चल पड़ेगी, तैयार रहें।

लोग इस एलान को सुन कर तैयारियों में लग गये।

दूसरे दिन फ़ौज के तमाम नवजवान मक्के के बाहर आ गये।

यह भारी लश्कर दूर तक फैल गया।

बनी अब्दुद्दार का एक आदमी झंडा लिए हुए था और झंडा हवा में लहरा रहा था।

जब फ़ौज चलने को हुई तो औरतों की एक छोटी सी टुकड़ी भी आ गयी। इस की सरदार हिंदा थी। यह टुकड़ी जवानों को ग़ैरत दिलाने और उभारने के लिए थी।

अभी औरतों की टुकड़ी आ कर रुकी ही थी कि पन्द्रह-बीस नवजवान लड़कियां हाथों में दफ़ लिए हुए आ गयीं और फ़ौज के सामने खड़ी हो कर पूरे राग से गाने लगीं।

वे काब बिन अशरफ़ की मशहूर नज़्म गा रही थीं और जवानों में जोश भर रही थीं।

जब लड़कियों ने गाना बन्द किया, तो औरतें महमिलों में सवार हुईं।

अबू सुफ़ियान ने लश्कर को रवाना होने का हुक्म दिया।

तबल बजते ही यह भारी फ़ौज मदीने को तरफ़ रवाना हो गयी।

इस्लामी फ़ौज हरकत में

बनी क़ैनुक़ाअ के यहूदियों की हार ने मुसलमानों को मदीना के आस-पास के इलाक़ों में और मशहूर कर दिया। आम यहूदियों को बनी क़ैनुक़ाअ की हार और मुसलमानों की जीत से अफ़सोस हुआ और गुस्सा भी आया, पर वे ख़ामोश रहे और इंतिज़ार करने लगे कि मुसलमान यहूदियों के साथ क्या बर्ताव करते हैं।

यहूदी सदियों से अरबों पर हावी थे, सब उन से दबते थे। इस दबने या लिहाज़ करने से यहूदियों के दिमाग़ में यह फ़ितूर भर गया था कि अरब उनकी बहादुरी का लोहा मानते हैं और वे उनसे डरते हैं, लेकिन आज जब तीन सौ मुसलमानों की सात सौ यहूदियों पर जीत हो गयी, तो उन के घमंड का नशा उतरा और वे समझ गये कि अरबों का मुक़ाबला आसान नहीं है।

बनी क़ैनुक़ाअ के क़िले पर मुसलमानों के क़ब्ज़े के बाद, जब उस

क़बीले के तमाम यहूदी गिरफ़्तार हो गये, तो दूसरे क़बीले के यहूदियों को चिन्ता हुई और उन्हों ने फ़ौरन अपनी मज्लिसे शूरा बुलायी।

सब जमा हुए, हालात पर जम कर बातें हुई। काफ़ी बहस के बाद तै पाया कि अब्दुल्लाह बिन उबई से कहा जाए कि वह हुज़ूर सल्ल० से क़ैदियों की सिफ़ारिश कर के उन की जां बख़्शी कराये।

इस मक़्सद के लिए एक वफ़्द अब्दुल्लाह के पास भेजा गया था।

अब्दुल्लाह ज़ाहिर तौर पर मुसलमान हो चुका था, पर उस का दिल कुफ़्र की तरफ़ मायल था। वह छिपे तौर पर इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ था। उस ने क़ुरैश मक्का के पास क़ासिद भेज कर उन्हें मदीना पर हमला करने के लिए उभारा।

यहूदियों के वफ़्द से उस ने मुलाक़ात की और हमदर्दी ज़ाहिर करते हुए क़ैदियों की सिफ़ारिश करने का वायदा कर लिया।

एक दिन बहुत सुबह-सवेरे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा रहे थे। जां-निसार सहाबी आप के सामने बैठे थे। बद्र के क़ैदियों ने जिस क़ासिद को फ़िदया लेने के लिए भेजा था, वह वापस आया था और सब का फ़िदया साथ लाया था।

हुज़ूर सल्ल० फ़िदया ले कर क़ैदियों को रिहा फ़रमा रहे थे।

फ़िदए की रक़म को हज़रत तलहा और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० गिन रहे थे।

फ़िदए की रक़म ले कर तमाम क़ैदी छोड़े जा चुके थे, सिर्फ़ अबुल आस बाक़ी रह गये थे।

अबुल आस हुज़ूर सल्ल० के दामाद थे। हज़रत ज़ैनब से उन की शादी हुई थी। वह उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे। बद्र की जगह पर कुफ़्फ़ार के साथ लड़ने आए थे, इसलिए औरों के साथ वह भी गिरफ़्तार कर लिये गये थे।

हुज़ूर सल्ल० ने क़ासिद से पूछा, क्या अबुल आस का फ़िदया नहीं लाये ?

लाया हूं, क़ासिद ने जवाब दिया, हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब ने अपने गले का हार उतार कर दिया है।

यह कहते ही क़ासिद ने एक बड़ा क़ीमती हार हुज़ूर सल्ल० के सामने रख दिया।

हुज़ूर सल्ल० हार देख कर कुछ दुखी से हुए।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस हार को देख कर आप दुखी क्यों हो गये ?

इसलिए कि यह हार हज़रत ख़दीजा मरहूमा का है। ज़ैनब के पास उन की यादगार थी।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० बोल पड़े, हुज़ूर सल्ल० ! इस हार को ज़ैनब के पास वापस कर दें, अबुल आस को बग़ैर फ़िदया छोड़ दें।

अगर तुम इसे मुनासिब समझते हो तो ज़ैनब को उस की मां की याद-गार वापस कर दी जाए, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

यह कैसे हो सकता है ? अब्दुल्लाह बिन उबई बीच में बोल पड़ा, और लोगों से तो फ़िदया लिया जाए और अबुल आस को बग़ैर फ़िदया के छोड़ दिया जाए।

हज़रत उमर को अब्दुल्लाह पर ग़ुस्सा आ गया, कड़क कर कहा, अब्दुल्लाह ! क्या तुम मुनाफ़िक़ हो ? क्या तुम को हुज़ूर सल्ल० के दुख से खुशी होती है ?

उस दिन से अब्दुल्लाह का नाम मुनाफ़िक़ हो गया और उसे 'अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़' के नाम से याद किया जाने लगा।

उमर ! तुम्हें बहुत जल्द ग़ुस्सा आता है, अब्दुल्लाह ने कहा, सोचो तो सही, क्या यह इंसाफ़ है कि औरों से तो फ़िदया लिया जाए और हुज़ूर के दामाद को बग़ैर फ़िदया रिहा कर दिया जाए ?

असल में अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ की चाल थी कि किसी तरह मुसलमानों में फूट डाल दे। वह अक़्लमन्द और चालाक आदमी था। ख़ूब समझता था कि जब तक मुसलमानों में एका है, कोई ताक़त उन पर क़ाबू नहीं पा सकती, इसलिए उस ने ऐसा अन्दाज़ अख़्तियार किया।

लेकिन कोई मुसलमान भी उस का हमनवा न हुआ, बल्कि सब ने ही उसे बुरा कहना और डांटना शुरू किया।

चुनांचे हज़रत मुसअब रज़ि० ने, जिन के सगे भाई अबू अज़ीज़ का फ़िदया अदा हुआ था, कहा—

हम सब मुसलमान हुज़ूर सल्ल० की खुश्नूदी चाहते हैं, अगर हुज़ूर सल्ल० अबुल आस को बग़ैर फ़िदया के रिहा करना चाहते हैं, तो हम को एतराज़ करने का हक़ नहीं, बल्कि अगर हुज़ूर सल्ल० तमाम फ़िदया भी अबुल आस को दे कर रुख़्सत कर दें तो हम और भी खुश होंगे। अब्दुल्लाह तुम निफ़ाक़ की बातें न करो, इस से नाफ़रमानी की बू आती है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० बोले, अब्दुल्लाह ! तुम क्या समझते हो कि हम

अरब मुसलमान हो कर भी पिछली जिहालत पर क़ायम रहें। ख़ुदा की क़सम ! हम ने मुसलमान होते ही जिहालत छोड़ दी है ! हुज़ूर सल्ल० को सच्चा रसूल मानते हैं। आप के इर्शाद को हुक्म मानते हैं, इसलिए हुज़ूर सल्ल० को पूरा-पूरा हक़ हासिल है कि जिसके साथ जो रियायत चाहें करें।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने भी तंबीह की कि अब्दुल्लाह ! तुम मुनाफ़िक़ों जैसी बातें कर के तमाम मुसलमानों के दिलों को ठेस पहुंचाते हो। हम हुज़ूर सल्ल० के फ़िदाई हैं। हमारा काम हुज़ूर सल्ल० के हर हुक्म की इताअत करना है। अगर हुज़ूर सल्ल० तमाम क़ैदियों को क़त्ल कर डालते और अबुल आस को छोड़ देते, तो भी हमें कुछ कहने का हक़ न था। तुम को अपनी ग़लती मान लेनी चाहिए।

हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने कहा, मुसलमानो ! मैं अब्दुल्लाह को ख़ूब जानता हूं। उस के दिल में कुफ़्र का मरज़ अब तक मौजूद है। यह अब तक अपनी शाही के सपने देख रहा है। इस का मंशा मुसलमानों में निफ़ाक़ डाल कर अपना मतलब हासिल करना है। अगर यह मुसलमान न होता, तो सब से पहले मेरी तलवार उस की गरदन पर पड़ती।

मुनाफ़िक़ समझता था कि उस की बातों से मुसलमान भड़क कर उस की हमनवाई करेंगे, लेकिन जब उस ने देखा कि हर आदमी उसे बुरा कहने लगा, तो उस ने कहा—

मुसलमानो ! मुझे ख़्याल न था कि तुम को मेरी बात नागवार गुज़रेगी, मैं ने मुसलमानों में फूट डालने के लिए यह बात न कही थी, बल्कि इस से मेरा मंशा यही था कि अगर रियायत की जाए तो, सब के साथ की जाए। एक के साथ रिवायत करना इंसाफ़ न होगा, पर जब तुम सब मुनासिब समझते हो, तो मैं भी जायज़ क़रार दिए देता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० बोले, अब्दुल्लाह ! तुम वाक़ई मुनाफ़िक़ हो। अब भी तुम ऐसी ही बातें कर रहे हो, जिस से मुसलमानों में फूट पड़ जाए। अगर तुम आगे इन बातों का ख़्याल न करोगे, तो तुम्हारा सर उड़ा दिया जाएगा।

अब्दुल्लाह चुप हो गया।

हुज़ूर सल्ल० ने अबुल आस को हार देते हुए कहा—

यह हार ज़ैनब को दे कर कह देना कि तमाम मुसलमानों ने उसकी मां की यादगार उसे वापस कर दी है।

चूंकि अबुल आस बद्र की लड़ाई के आख़िरी क़ैदी थे, जब वे भी छोड़ दिये गये, तो अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा, आज यहूदियों के बारे में भी

फ़ैसला कर देना चाहिए। बेकार क़ैदियों का बोझ उठाने से क्या हासिल ?

बेशक यहूदियों के बारे में भी अगर हुज़ूर सल्ल० फ़ैसला करना मुनासिब समझें, तो कर दें, हज़रत उमर ने कहा।

मश्विरा दो कि यहूदियों के साथ क्या व्यवहार किया जाए ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

यहूदियों ने समझाने और नसीहत करने के बावजूद समझौते की खिलाफ़वर्ज़ी की है और मुसलमानों को शहीद किया है इसलिए वे किसी रियायत के हक़दार नहीं हैं, हज़रत अली ने कहा।

चूंकि यहूदियों ने बे-वजह लड़ाई मोल ले ली है, बे-वजह मुसलमानों पर धावा बोला है, इसलिए वे सब के सब क़त्ल कर दिये जाएं, हज़रत उमर की यह राय थी।

ये यहूदी मुसलमानों के बदतरीन दुश्मन हैं, उन का क़त्ल कर डालना ही मुनासिब है, हज़रत साद बिन मुआज़ ने राय दी।

मुझे भी अफ़सोस है कि यहूदियों ने बहुत ग़लत काम किया, लेकिन क़त्ल......? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल० तो बहुत मेहरबान हैं, अगर हुज़ूर सल्ल० यहूदियों को फ़िदया दिये बग़ैर छोड़ देंगे, तो हुज़ूर सल्ल० के रहम व करम की शोहरत हो जाएगी, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा।

मुसलमानों को सताने वाले, बे-वजह लड़ने वाले अगर बग़ैर फ़िदया लिए छोड़ दिये जायेंगे, तो और लोगों की जुर्रात बढ़ जाएगी और वे पहले से भी ज्यादा निडर और बेबाक हो जाएंगे और मुसलमानों को सताने लग जाएंगे, इसलिए मेरी राय भी यही है कि उन को क़त्ल कर डाला जाए, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी राय दी।

हुज़ूर सल्ल० ! क़त्ल कर डालना तो आसान है, पर एक रसूल की शान के मुताबिक़ क्या यह है कि वह तमाम क़ैदियों को बेदर्दी से क़त्ल कर डाले ? अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा।

अब्दुल्लाह ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम यहूदियों को बिला फ़िदया आज़ाद करना चाहते हो ?

हां, मेरी मंशा यही है, अब्दुल्लाह खुल गया।

अच्छा, तमाम क़ैदी रिहा किये जाते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन उन्हें देश निकाले की सज़ा दी जाती है।

फिर उबादा को खिताब करके फ़रमाया, उबादा ! तुम तमाम क़ैदियों को अपनी हिरासत में लेकर दर्रा खैबर तक निकाल आओ, लेकिन क़ैदियों

से यह इक़रार करा लो कि वे ज़िंदगी भर मुसलमानों के ख़िलाफ़ तलवार न उठायेंगे।

तमाम क़ैदी बुलाये गये।

उन्हों ने हलफ़ उठाया कि वे ज़िंदगी भर मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई साज़िश न करेंगे और न किसी साज़िश में शरीक होंगे और न हथियार उठाएंगे।

इस हलफ़ लेने के बाद वे सब उबादा की सरकरदगी में देश निकाला दे दिये गये।

चूंकि अब दोपहर हो गयी थी, इसलिए हुज़ूर सल्ल० उठ कर अपने हुजरे में तशरीफ़ ले गये, जो मस्जिद के क़रीब हुज़ूर सल्ल० के घर वालों के लिए तामीर किया गया था।

हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ ले जाने के बाद मुसलमान उठे और मकानों की तरफ़ रवाना हुए। कुछ दिनों के बाद मदीना के मुसलमानों को मालूम हुआ कि कुफ़्फ़ारे मक्का निहायत शान व शौकत से शानदार लश्कर लेकर मदीना पर हमला करने के इरादे से आ रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० इस ख़बर को सुन कर कुछ दुखी हुए।

आप ने तुरन्त मज्लिसे शूरा बुलायी।

जब तमाम लोग आ गये, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

मुसलमानो! कुफ़्फ़ारे मक्का बद्र की लड़ाई का बदला लेने के लिए पूरी फ़ौज और पूरे जोश से आ रहे हैं। मुझे अफ़सोस है कि कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमानों को अम्न व अमान से नहीं रहने देंगे। मैं लड़ाई को ना-पसन्द करता हूं, लेकिन हालात लड़ाई पर मजबूर करते हैं। मेरी राय यह है कि मदीने में रह कर हिफ़ाज़ती लड़ाई लड़ी जाए। अगर ज़्यादा तर राएं मेरी राय के ख़िलाफ़ हों, तो मैं उसी पर अमल करूंगा, सोच-समझ के बताओ कि मुनासिब क्या है?

अगर हुज़ूर सल्ल० का यह हुक्म है कि मदीने में रह कर मुक़ाबला किया जाए तो किसी मुसलमान को कुछ कहने की जुर्रात नहीं हो सकती, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, लेकिन अगर मश्विरा तलब किया गया है तो मेरी राय में मुनासिब यह है कि हम मदीना से निकल कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करें।

मेरी भी राय यही है कि मदीने से निकल कर मैदान में मुक़ाबला किया जाए, हज़रत हमज़ा ने कहा।

मुसलमानो! क्या तुम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की राय के ख़िलाफ़

करना चाहते हो ? अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा, हरगिज ऐसा न करो, हुजूर सल्ल० की राय मुनासिब है कि हम को मदीना ही में रह कर मुक़ाबले की तैयारी करनी चाहिए।

यहां यह बात याद रखने की है कि अब्दुल्लाह का क़ासिद कुफ़्फ़ारे मक्का के पास गया था और यह तै कर आया था कि वह इस बात की कोशिश करेगा कि मुसलमान मदीने में रह कर मुक़ाबला करें और वह मौक़ा पा कर रात के वक़्त कुफ़्फ़ार को मदीना में दाखिल करा कर शबखून मारने में मदद देगा। इसी लिए उस ने मदीने में रह कर मुक़ाबला करने की राय दी।

मेरी राय में मदीने में रह कर मुक़ाबला करना इस वजह से भी मुनासिब नहीं है कि हमें यहूदियों पर इत्मीनान नहीं है, हजरत तलहा ने कहा, मुम्किन है ये लोग यहूदियों से साज़-बाज़ कर के मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचा दें।

मेरी राय भी यही है कि मदीने से निकल कर बाहर मुक़ाबला किया जाए, जुबैर बिन अव्वाम ने कहा।

चूंकि ज्यादातर लोगों की यही राय थी कि मदीने से निकल कर बाहर मुक़ाबला किया जाए, इसलिए हुजूर सल्ल० ने एलान कर दिया कि आज ही लश्कर जुमा की नमाज़ पढ़ कर रवाना होगा।

तमाम मुसलमान इस एलान को पढ़ कर खुश हो गये।

सब बड़े शौक़ से तैयारियां करने लगे।

जुमा की नमाज़ पढ़कर हुजूर सल्ल० जिरह पहन कर और हथियारों से लैस हो कर तशरीफ़ ले आए।

उस वक़्त कुछ लोगों को ख्याल आया कि उन्हों ने हुजूर सल्ल० की राय से इख्तिलाफ़ किया था, इसलिए कहीं गुनाह का काम न हो गया हो, वे परेशान हो उठे, उन्हों ने अर्ज़ किया—

हुजूर सल्ल० ! हम से ग़लती हो गयी है, हम शर्मिन्दा हैं। अगर हुजूर सल्ल० पसन्द फ़रमाएं, तो हम मदीने ही में रह कर मुक़ाबला करें।

हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, न यह ग़लती है, न गुनाह का काम, न मदीने में मुक़ाबला करने का मेरा हुक्म था, लेकिन मैं ने रात में ख्वाब देखा था कि मेरी तलवार की थोड़ी धार गिर गयी है, इसलिए मुझे डर हुआ था कि कहीं मुसलमानों को नुक़्सान न पहुंचे। पर जब बड़ी तायदाद ने यह तै कर लिया है कि मदीने से बाहर निकल कर ही मुक़ाबला किया जाए, तो यही मुनासिब है।

मुसलमान ख़ामोश हो गये।

फ़ौज ने चलने की तैयारी शुरू कर दी।

इस बार फ़ौज में १००० नवजवान शरीक थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को कूच करने का हुक्म दे दिया।

फ़ौज जब आगे बढ़ी, और क़ुबा से कुछ ही आगे पहुंची कि अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने अपने साथियों को बुलन्द आवाज़ से ख़िताब किया और कहा—

मेरे जांबाज़ो! मुसलमानों पर जौहर दिखाने का नशा ऐसा छाया हुआ है कि वे अपने भले-बुरे को भी नहीं समझ रहे हैं। मैं ने उन्हें मश्विरा दिया था कि वे मदीना ही में रह कर मुक़ाबला करें पर उन्हों ने मेरी राय न मानी और मदीने से बाहर निकल आए। मुझे मालूम हुआ है कि क़ुरैश वालों की तायदाद बहुत ज़्यादा है। उन के मुक़ाबले में जाना अपनी ज़िंदगी को क़ुर्बान करना है। मैं किसी तरह भी यह मुनासिब नहीं समझता, इसलिए मैं वापस लौटता हूं। तुम भी मेरे साथ वापस लौट चलो।

वह और उस के तीन सौ साथी इस्लामी फ़ौज से निकल कर वापस लौट गये।

अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ का यह ख़्याल था कि उस के वापस लौटने से सब मुसलमान पस्त हिम्मत हो कर वापस लौट आवेंगे या सब मुसलमान न लौटेंगे, तो पचास ज़रूर उस का साथ देंगे, लेकिन वह यह देख कर हैरान रह गया कि एक मुसलमान भी उसके साथ वापस न आया।

अब सिर्फ़ सात सौ मुसलमान रह गये।

यह छोटी-सी फ़ौज निहायत जोश और बड़ी शान से मक्के के रास्ते पर रवाना हुआ।

उहद की लड़ाई

इस्लामी फ़ौज बड़ी शान से आगे बढ़ रही थी।

इस फ़ौज में कुल सात सौ जवान थे, वह भी पचास साठ तो पन्द्रह-पन्द्रह, सोलह-सोलह साल के बच्चे थे, जो शौक़े शहादत में अपने घरों से निकल आए थे।

पूरी फ़ौज में सिर्फ़ दो सौ घोड़े थे, अस्सी या नब्बे ऊंट थे।

चूंकि यह फ़ौज जुमा की नमाज़ पढ़ कर मदीने से रवाना हुई थी, इसलिए क़ुबा से आगे बढ़ी तो अस्र का वक़्त आ गया।

फ़ौज को आगे बढ़ने से रोक दिया गया। फिर अस्र की नमाज़ पढ़ कर फ़ौज आगे बढ़ी।

अभी मुसलमान मुजाहिदों ने चार मील की ही दूरी तै की थी कि सामने कुफ़्फ़ार की फ़ौज दूर-दूर तक फैली हुई नज़र आयी।

यह जगह जहां कुफ़्फ़ार की फ़ौज पड़ी हुई थी, उहद की घाटी के नाम से मशहूर थी।

इस्लामी फ़ौज उहद पहाड़ से कुछ आगे बढ़ कर पहाड़ी के दामन में जा उतरी।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने दूर से मुसलमानों को आते देख लिया था।

अबू सुफ़ियान और इक्रिमा बिन अबू जह्ल दोनों एक ऊंचे टीले पर चढ़ कर इस्लामी फ़ौज के आने का नज़ारा करने लगे।

इस्लामी मुजाहिदों की तायदाद थोड़ी थी। कुफ़्फ़ारे मक्का मुसलमानों की इस थोड़ी तायदाद को देख कर बहुत खुश हुए।

अबू सुफ़ियान ने कहा, हुबल की क़सम! ये हमारे सामने क़त्ल होने के लिए आए हैं। ये हम से चौथाई भी नहीं हैं।

ऐ चचा! इक्रिमा ने कहा, मुसलमान और उन की फ़ौज को हक़ीर न समझो। मैं नहीं समझता कि लड़ाई के वक़्त इन में किस बला की ताक़त आ जाती है। एक-एक मुसलमान दस-दस, बीस-बीस काफ़िरों से लड़ता है। आप बद्र की लड़ाई में मौजूद न थे। मैं उन की हैरत में डालने वाली लड़ाई देख चुका हूं।

इक्रिमा! मुसलमान भी तो हमारी तरह इंसान ही हैं, अबू सुफ़ियान ने कहा, हम से ज़्यादा बहादुर होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

फिर थोड़ी देर रुक कर कहा—

आओ, सूरज डूबने लगा है, खेमों में चलकर आराम करें।

दोनों टीले से उतर कर खेमों की तरफ़ चले गये।

उस वक़्त सूरज डूब रहा था और मुसलमान वुज़ू करने में लगे थे।

मग़रिब का वक़्त हो गया, तो मुसलमानों ने नमाज़ पढ़ी।

नमाज़ पढ़ कर खाना पकाने में लग गये।

हुज़ूर सल्ल० खुले मैदान में एक कम्बल पर बैठे थे।

उस वक़्त एक अरब खातून ने क़रीब आ कर आप को सलाम किया।

आप ने खातून को देख कर हैरत से कहा, उम्मे अम्मारा! तुम कहां?

हुज़ूर सल्ल०! मैं आप को मैदान में आते देख कर न रह सकी। इस्लामी फ़ौज के पीछे लगी चली आई। क्या हुज़ूर! मेरा क़ुसूर माफ़

करेंगे ?

उम्मे अम्मारा ! तुम को अकेली न आना चाहिए था, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसा ही था, तो दो चार औरतों को और ले आतीं ?

उम्मे अम्मारा चली गयीं।

मुसलमानों ने खाना खाया, नमाज़ पढ़ी और सो गये। सुबह बहुत सवेरे उठे। हज़रत बिलाल ने असरदार आवाज़ में अज़ान दी, सब ने नमाज़ पढ़ी, नमाज़ के बाद हथियारों से लैस हुए और लड़ाई के मैदान में फ़ौज अपनी लाइनें ठीक करने लगी।

हुज़ूर सल्ल० ने सब से पहले पचास तीरंदाज़ों को मुख़ातब किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर अंसारी को उन पर अफ़सर मुक़र्रर कर के उन्हें उहद की घाटी पर तैनात करते हुए हुक्म दिया कि जब तक तुम को कोई दूसरा हुक्म न दिया जाए, इस घाटी को हरगिज़ न छोड़ना।

बात यह थी कि उहद की उस घाटी से डर था कि दुश्मन पीछे से आ कर हमला न कर दे, इसीलिए सब से पहले उस की नाकाबन्दी कर दी गयी थी।

अब हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज की लाइनें दुरुस्त थीं। दाएं हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम थे, बाएं हज़रत मुंज़िर बिन उमर को लगाया। हज़रत हमज़ा बीच के हिस्से के ज़िम्मेदार थे। हज़रत मुसअब बिन उमैर को झंडा दिया और हज़रत अबूदुजाना को अपनी ख़ास तलवार अता फ़रमायी।

हज़रत अबू दुजाना हुज़ूर सल्ल० की तलवार लेकर बहुत ख़ुश हुए।

जब मुसलमान लाइनें ठीक कर रहे थे, काफ़िर भी लाइनें दुरुस्त करने में लगे हुए थे। अबू सुफ़ियान ने ख़ालिद बिन वलीद को सौ सवारों की एक टुकड़ी दे कर दाएं हाथ पर और इक्रिमा बिन अबू जह्ल को सौ सवारों पर अफ़सर मुक़र्रर कर के बाएं हाथ पर मुक़र्रर किया। तलहा को, जो क़बीला बनी अब्दुद्दार से था, झंडा दिया।

मर्दों की इन लाइनों के बाद हिंदा ने औरतों की भी एक टुकड़ी बनायी, वह लाइनों को ठीक-ठाक कर एक काले हब्शी ग़ुलाम के पास आयी।

उस ग़ुलाम का नाम वहशी था। वहशी जुबैर बिन मुतइम का ग़ुलाम था।

उस वक़्त आक़ा और ग़ुलाम एक ही जगह खड़े थे।

हिन्दा ने वहशी से कहा, वहशी ! सुना है तुम हरबा चलाना बहुत अच्छा जानते हो ?

हरबा एक क़िस्म का छोटा नेज़ा होता है। वहशी हरबा फेंकने में

माहिर था।

वहशी ने सर झुका कर कहा, मालकिन ! मुझे फ़ख्र है कि मैं हरबा चलाना जानता हूं।

वहशी ! सुनो, हिन्दा ने कहा, मेरे बाप और भाई को हज़रत हमज़ा ने बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था। मैं ने क़सम खायी है कि मैं बदले में हमज़ा का कलेजा खाऊंगी। मेरी क़सम की लाज तुम्हारे हाथ में है।

मैं हुक्म का बन्दा हूं, वहशी ने कहा।

हिंदा ने अपनी खूबसूरत चमकीली आंखें वहशी के काले चेहरे पर गाड़ कर कहा, मैं चाहती हूं कि तुम अपने हरबे से हमज़ा को क़त्ल कर डालो। अगर तुम ने उन्हें क़त्ल कर दिया, तो देखो, मेरे इस ज़ेवर की तरफ़ देखो।

हिंदा सुनहरे और रूपहले ज़ेवरों से लदी हुई थी।

वहशी ने लालच भरी नज़रों से उस की तरफ़ देखा।

हिन्दा ने कहा, मैं तुम्हें ये तमाम ज़ेवर उतार कर दे दूंगी।

वहशी की आंखें जोश से चमकने लगीं, उस ने कहा, इतना ऐ मालकिन तब तो मैं मालदार बन जाऊंगा। शायद मैं अपने आक़ा को क़ीमत दे कर आज़ाद हो सकूं।

तब तक जुबैर बोल पड़ा, वहशी अगर तुम ने हमज़ा को मार डाला, तो मैं तुम को आज़ाद कर दूंगा।

वहशी मारे खुशी के नाचने लगा। बोला, मालूम होता है, मेरी क़िस्मत का सितारा चमकने वाला है। मैं वायदा करता हूं कि मौक़ा पाते ही मैं हमज़ा को क़त्ल कर डालूंगा।

तो तुम आज़ाद हो जाओगे और मेरा सारा ज़ेवर तुम्हारी मिल्कियत होगा, हिंदा ने कहा।

हिन्दा वापस आ कर औरतों की टुकड़ी में ग़ायब हो गयी।

वहशी जुबैर बिन मुतइम के साथ टुकड़ी में जा मिला।

सूरज निकल कर अब कुछ ऊंचा हो चला था। अभी लड़ाई शुरू न हुई थी। सभी तैयार खामोश खड़े थे।

थोड़ी देर में एक सवार काफ़िरों की फ़ौज से निकला। इस्लामी फ़ौज के क़रीब आया। अंसार ने उसे देख कर पहचान लिया।

वह अबू आमिर था, जिस का ताल्लुक़ औस क़बीले से था। मदीने में इस्लाम आने के बाद वह मुसलमानों की बढ़ती तायदाद को न देख सका और मदीना छोड़ दिया, फिर मक्के में जा कर आबाद हुआ।

वह मदीने के मुसलमानों को समझाने निकला था और उन्हें तोड़ कर

अपनी ताक़त बढ़ाना चाहता था। मुसलमानों ने उस का मुंह तोड़ जवाब दिया, वह चुप-चाप वापस चला गया।

अब दोनों फ़ौजें धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी थीं।

बढ़ते-बढ़ते दोनों फ़ौजों की ख़ौफ़नाक टक्कर शुरू हो गयी।

कुफ़्फ़ार मुसलमानों की लाइनों में और मुसलमान कुफ़्फ़ार की लाइनों में घुस गये।

तलवारें चमकने लगीं, उठतीं और सरों पर पड़ कर उसे धड़ से अलग कर देतीं।

नारों की आवाज़ और ज़ख़्मियों की चीख़-पुकार से पूरा मैदान गूंज उठा।

यों तो तमाम मुसलमान बड़ जोशे ग़ज़ब से लड़ रहे थे, पर हज़रत उमर, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत साद, हज़रत अबू दुजाना, हज़रत अबूबक्र, हज़रत हमज़ा, पूरी बहादुरी और बे-ख़ौफ़ी से लड़ रहे थे, और दुश्मनों को पसपा करने में लगे हुए थे।

इन बुज़ुर्गों में से हर आदमी बड़ी फुर्ती और तेज़ी से हमले कर रहा था। वे हर उस आदमी को चीर-फाड़ डालते थे, जो उन के सामने आ जाता था, मगर कुफ़्फ़ार इतने ज़्यादा थे कि क़त्ल होने पर भी उन में कमी न मालूम होती थी। एक के मरने पर दूसरा उन की जगह ले लेता था। इस वजह से लड़ाई बराबर ज़ोर व शोर से चल रही थी।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश भी बड़ी जांबाज़ी से लड़ रहे थे। वे ग़ज़बनाक हो कर हमले करते, लेकिन मुसलमानों को बिजली की तरह वार करने वाली तलवारें उन्हें पीछे हटा देती थीं।

हज़रत अली इस जोश से लड़ रहे थे कि कुफ़्फ़ार को उन की नव-जवानी और उन के जोश को देख कर हैरत होती थी। वह जिस पर हमला करते, उसे क़त्ल किए बिना न छोड़ते।

हज़रत अबू दुजाना हुज़ूर सल्ल० की ख़ास तलवार लिए बड़े जोश से लड़ रहे थे। उन्हों ने हर हमले में कुफ़्फ़ार की लाइनों में, जो उन के सामने थी, दराड़ डाल दी।

कुफ़्फ़ार की सामने की फ़ौज के पीछे औरतों की टुकड़ी क़ायम थी। औरतें हथियारबन्द खड़ी जवानों को जोश दिला रही थीं। हज़रत अबू-दुजाना फ़ौज को चीरते हुए औरतों की टुकड़ी में पहुंच गये।

वह इतने जोश में थे कि उन्हों ने यह महसूस नहीं किया कि वह औरतों की टुकड़ी में आ गये है और वह हमले करते हुए बढ़े चले आरहे हैं।

औरतें उन्हें हमला करते देख कर डर गयीं, सहम गयीं। उन्हें देख कर इधर-उधर भागने लगीं।

अबू दुजाना को अब भी ख़बर न थी कि कहां निकल आए हैं और किन पर हमला कर रहे हैं। उन्हों ने तलवार उठायी और हमला किया।

अबूसुफ़ियान की बीवी हिंदा ने अपने सर पर तलवार बुलन्द होते देखी मौत उसकी आंखों के सामने फिर गई। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

वह बड़े ज़ोर से चीख़ी।

अबू दुजाना चीख़ सुन कर चौंके, संभले। हिन्दा को देखते ही तलवार रोकी, धीरे से बोले, हम यह कहां आ गये ?

उन्हों ने अपने आस-पास देखा, उन्हें हर तरफ़ औरतें भागती-कांपती नज़र आयीं।

हिन्दा अभी तक अपने दोनों हाथ अपने सर पर रख कर डर से मुर्दा बनी खड़ी थी।

अबू दुजाना ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि उन के हाथ से कोई क़त्ल नहीं हुआ। अगर ऐसा होता तो उन की बहादुरी को धब्बा लग जाता।

उन्हों ने हिन्दा को पहचान लिया। हिन्दा से बोले—

उत्बा की बेटी ! जाओ, मैं तुम को छोड़ता हूं।

यह सुन कर हिन्दा की जान में जान आयी।

जिस वक़्त अबू दुजाना मार-काट में लगे हुए थे, हज़रत हमज़ा भी बहादुरी और जांबाज़ी से लड़ रहे थे। उन की बेपनाह तलवार काफ़िरों को खीरे-ककड़ी की तरह काट रही थी। जिस पर वे हमलावर होते, वही क़त्ल होकर ख़ाक व ख़ून में लोटने लगता।

उन के बहादुर हमलों से कुफ़्फ़ार घबरा गये।

वह हमला करते-करते कुफ़्फ़ार के अलमबरदारों की तरफ़ बढ़े।

कुफ़्फ़ार उन के इरादे को समझ गये। वे रास्ते में रोक बन गये और हर तरफ़ से कट कर उन पर हमलावर हुए।

हज़रत हमज़ा ने दो दस्ती तलवार चलानी शुरू की और इस फुर्ती से चलायी कि मुश्रिक हैरान रह गये।

उन्हें तलवार नज़र न आती थी, बल्कि बिजली की तरह चमकदार-सी लकीर नज़र आती थी। उन्हों ने पलक झपकते तमाम हमलावरों को मार-काट कर भगा दिया और अलमबरदारों की तरफ़ बढ़ना शुरू किया।

उन्हों ने इरादा कर लिया था कि मुश्रिकों के झंडे को झुकाये बिना न रहेंगे। इस इरादे को पूरा करने के लिए वे बड़े जोश व ग़ज़ब में भर कर

हमलावर हुए।

अगरचे कुफ़्फ़ार ने क़दम-क़दम पर आप का मुक़ाबला किया, पर जो सामने आया, क़त्ल हो कर जहन्नम रसीद बना। जिस को आपकी तलवार की हवा भी लगी, वही लम्बा लेट गया।

मुश्रिकों ने समझ लिया कि हज़रत हमज़ा अलमबरदार पर हमला कर के उन के झंडे को गिराना चाहते हैं जो हार जैसा है, इसलिए वे क़दम-क़दम पर हज़रत हमज़ा से उलझने और उन्हें रोकने लगे।

लेकिन हज़रत हमज़ा रुकने वाले न थे। वह सामने की हर रुकावट को दूर करते हुए बढ़ते ही रहे, यहां तक कि वह बढ़ कर अलमबरदार के क़रीब ही जा पहुंचे।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अलमबरदार को बचाने के लिए उन पर चारों तरफ़ से तलवारों और नेज़ों की बारिश शुरू कर दी।

हज़रत हमज़ा ने इस जोश और इस फुर्ती से हमले किये कि कुफ़्फ़ार के छक्के छूट गये।

आप अलमबरदार तक पहुंच गये और उस पर हमला कर दिया।

अलमबरदार ने भी करारा जवाब दिया।

हज़रत हमज़ा ने इस हमले को रोक कर निहायत जोश और पूरी ताक़त से तलवार मारी, तलवार का निशाना सही रहा। अलमबरदार का सर कट कर दूर जा गिरा।

मुश्रिकों का झंडा ज़मीन पर आ गिया।

अब हज़रत हमज़ा लौटे और पूरे जोश में लौटे।

अभी थोड़ी ही दूर चले थे कि दाहिनी तरफ़ से एक छोटा-सा नेज़ा आ कर दाहिने पहलू में लगा और बाएं पहलू से पार हो गया।

आप का जिस्म कांपा, आंखें ऊपर चढ़ गयीं, आप शहीद हो कर गिरे।

यह नेज़ा वहशी ने चलाया था, वह हज़रत हमज़ा को शहीद हो कर गिरते देख कर हिन्दा को खुशख़बरी सुनाने के लिए दौड़ पड़ा।

मुश्रिक हज़रत हमज़ा की बहादुरी देख चुके थे। वे नफ़रत और ग़ुस्से से भरे हुए थे, उन्हों ने उन्हें गिरते हुए देखा तो कुछ शरीर बुज़दिलों ने उन की लाश पर घोड़े दौड़ा दिये।

घोड़ों ने लाश को पामाल कर दिया था।

उस वक़्त भी लड़ाई पूरे ज़ोर व शोर से चल रही थी।

तलवारें चमक रही थीं, ख़ून की छींटें उड़ रही थीं।

ज़ख़्मी चिल्ला रहे थे, बहादुर नारे लगा रहे थे।

अबू सुफ़ियान भी बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था। वह जोश व ग़ैरत दिला-दिला कर अपनी फ़ौज की हिम्मत बढ़ा रहा था।

हज़रत हंज़ला ने दूर से उसे देखा, वह इस तरफ़ लपके।

चूंकि हंज़ला और अबू सुफ़ियान के बीच में सैकड़ों मुश्रिक लड़ रहे थे, इसलिए उन्हों ने पहले मुश्रिकों का सफ़ाया करना शुरू किया। उन की तलवार इतनी खतरनाक थी कि जिस के सर पर पड़ती, दो टुकड़े किए बिना न रहती।

बुतपरस्त उन के हमलों को रोकते थे, पर कोई कोशिश कामियाब न होती थी। जो कोई कभी बढ़ कर उन के सामने आया, उन की तलवार ने उसे काट कर डाल दिया, इसलिए उन्हों ने बहुत बड़ी तायदाद में मुश्रिकों को काट-काट कर डाल दिया।

एक बार उन्हों ने जोश में आ कर हमला किया, अक्सर कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया। लाइन की लाइन को उलट कर अबू सुफ़ियान के क़रीब पहुंच गये।

अबू सुफ़ियान ने उन्हें देखा। वह उन्हें ग़ैज़ व ग़ज़ब से भरा हुआ देख कर घबरा गया। सहम कर पीछे हटा।

हंज़ला ने बढ़ कर वार किया।

क़रीब था कि उन की तलवार अबू सुफ़ियान का खातमा कर दे कि पीछे से शद्दाद बिन अस्वद ने हमला कर के इस तरह तलवार मारी कि दाहिने कंधे से दाखिल हो कर बायें कंधे से पार निकल गयी।

हज़रत हंज़ला का सर दूर जा कर गिरा और लाश ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगी।

अबू सुफ़ियान ने घोड़ा दौड़ा कर उन की लाश को रौंद डाला।

हज़रत अली अभी तक बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे। वह दुश्मनों को मारते-काटते उस जगह पहुंच गये, जहां मुश्रिकों का झंडा झुका पड़ा था। उन के उस जगह पहुंचते ही एक आदमी ने झंडा उठा लिया।

अभी वह झंडे को अच्छी तरह उठाने भी न पाया था कि हज़रत अली की तलवार उस के सर पर पड़ी, वह वहीं ढेर हो गया।

उस के गिरते ही झंडा फिर ज़मीन पर आ रहा।

झंडे को उठाने के लिए एक आदमी और आगे बढ़ा और अलमबरदार की हिफ़ाज़त के लिए टुकड़ी भी तैयार हो गयी।

हज़रत अली ने झंडे को उठते देखा, तो वह जोश में आ गये।

बड़ी खूरेज़ लड़ाई शुरू हो गई।

हज़रत घिर चुके थे और तंहा थे।

वह बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे। लड़ते-लड़ते वह फिर अलमबरदार के क़रीब पहुंच गये और हमला कर के उसे मार डाला।

झंडा फिर गिर पड़ा।

एक काफ़िर ने लपक कर फिर झंडा उठा लिया।

काफ़िरों ने फिर हज़रत अली को घेर लिया।

हज़रत अली ने और जोश से हमला किया और नये अलमबरदार को फिर मार डाला।

एक और मोर्चे पर हज़रत नजर बिन अनस, हज़रत साद बिन रुबैअ, हज़रत बिलाल, हज़रत काब, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर, हज़रत ज़ियाद, हज़रत अम्मारा ने मिल कर निहायत जोश से हमला किया। उन की तलवारें इतनी तेज़ चमकतीं कि सर कट कर अलग हो जाते और धड़ ज़मीन पर आ रहते।

इसी तरह हर मोर्चे पर मुसलमान जोश व ग़ज़ब से भरे हुए लड़ र थे। खून में सनी हुई तलवारें अपना काम कर रही थीं। खून के छींटे उड़-उड़ कर इस तरह गिर रहे थे, जैसे खून की बारिश हो रही हो।

अब दोपहर होने वाली थी। धूप में तेज़ी आ गयी थी। जवान पसीने में डूबे हुए थे।

मुसलमानों ने जोश में आ कर अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाया और ज़ोरदार हमला बोल दिया।

इस हमले ने मुश्रिकों के क़दम उखाड़ दिये। वे पीछे हटे।

मुसलमानों ने एक और हमला कर दिया।

मुश्रिकों के क़दम उखड़ गये। वे बुरी तरह पसपा हो गये। अपनी अनगिनत लाशें छोड़ कर भागने लगे। मुसलमान उन का पीछा करने के लिए दौड़े।

औरतों की सिपहसालार हिन्दा भी भागी।

वे नवजवान औरतें, जो दफ़ बजा-बजा कर जवानों को उभार रही थीं, दफ़ फेंक कर भागीं।

मर्द चिल्ला रहे थे, औरतें चीख रही थीं। भागते-भागते वे अपने खेमों से भी आगे निकल गये।

मुसलमानों ने दूर तक लाशें बिछा दीं।

कुफ़्फ़ार का सिपहसालार अबू सुफ़ियान भी भागा।

खेमे खाली हो गये, मुसलमानों ने उन पर छापा मार दिया और उन्हें

लूटना शुरू कर दिया।

मुश्रिक बद-हवासी में भाग कर दूर निकल गये, इतनी दूर कि मुसलमानों की पकड़ से बाहर हो गये। औरतें गिरती-पड़ती वहीं पहुंच गयीं।

इस के बाद वे एक जगह जमा हो कर मश्विरा करने लगे।

आफ़ताबे आलम दुश्मनो के घेरे में

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हार खा कर बड़ी बद-हवासी में भागे थे। मुसलमानों ने पीछा कर के उन्हें उन के खेमों से और दूर धकेल दिया था।

जब वे खेमों को भी छोड़ कर भागे, तो तमाम मुसलमान इधर-उधर से सिमट-सिमट कर उन के कैम्प में आ पड़े। उन की हर चीज़ लूटी और पामाल की जाने लगी।

मुसलमानों का वह मुहाफ़िज़ दस्ता, जो हुज़ूर सल्ल० के हुक्म से उहुद की घाटी में हज़रत अब्दुल्लाह की सरकरदगी में मुक़र्रर किया गया था, मुश्रिकों को हार कर भागते हुए देख कर उनका पीछा करने में लग गया।

हज़रत अब्दुल्लाह ने रोक कर कहा, मुसलमानो ! क्या करते हो ? हुज़ूर सल्ल० का हुक्म है कि दूसरा हुक्म मिलने तक इस जगह पर ठहरे रहो, यहां से हरकत न करो। तुम इस जगह को छोड़ते हो, तो यह नाफ़रमानी में दाख़िल है।

कुछ लोगों ने जवाब दिया, मुश्रिकों को हार हो गयी। उन का झंडा मैदान में बहुत देर से पड़ा है, मुसलमान उन का पीछा कर रहे हैं, मुम्किन है मुश्रिक पलट पड़ें और हमारी मदद की ज़रूरत पड़ जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, मगर हम को ताकीद की गयी है कि हम इस जगह से हरकत न करें।

एक मुजाहिद ने कहा, यह हुक्म और ताकीद लड़ाई के वक़्त तक के लिए थी, पर अब मुसलमानों को जीत हो चुकी है, इसलिए अब हमारा इस जगह ठहरना बेकार है।

यह कहते ही तमाम मुजाहिद चले और पीछा करने वाले मुसलमानों से जा मिले। सिर्फ़ पांच आदमी उस जगह रह गये।

सूरज पूरी तेज़ी से चमक रहा था, धूप हर चीज़ को गरमा रही थी।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर अपने चार साथियों के साथ घाटी के किनारे पर

खड़े लड़ाई के मैदान की तरफ़ देख रहे थे। यकायक उन्हों ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनी।

वे हैरानी के साथ इधर-उधर देखने लगे।

आवाज़ घाटी से आ रही थी।

अब्दुल्लाह ने अपने साथियों से पूछा, क्या तुम भी घोड़ों की टापों को सुन रहे हो ?

हां, सुन रहे हैं, बहुत तेज़ी से घोड़े आ रहे हैं, एक मुजाहिद ने कहा।

ये कौन लोग हो सकते हैं ? अब्दुल्लाह ने पूछा।

यह नहीं कहा जा सकता, शायद कुफ़्फ़ारे मक्का हों, एक मुजाहिद ने कहा।

ये सभी निहायत ग़ौर और तवज्जोह से घाटी की तरफ़ देखने लगे।

थोड़ी ही देर में घाटी के दूसरी तरफ़ से सवारों का दस्ता आता नज़र आया।

अब्दुल्लाह ने उन लोगों को पहचान लिया। यह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का दस्ता था, ख़ालिद बिन वलीद की सरकरदगी में आ रहा था।

ख़ालिद उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे।

बात यह हुई कि जब मुसलमान मुश्रिकों का पीछा करने दौड़ पड़े और घाटी के मुहाफ़िज़ भी चले गये, तो ख़ालिद ने दूर से घाटी को देख लिया। वह इस की अहमियत को ख़ूब जानते थे। उन्हों ने अपने सवारों का दस्ता लिया और एक मील का चक्कर काट कर पहाड़ी के पीछे पहुंचे और वहां इस्लामी मुजाहिदों की नज़रों से बचते हुए घाटी में दाख़िल हो गये।

उन्हों ने आते ही अब्दुल्लाह और उन के साथियों पर हमला कर दिया।

अब्दुल्लाह ने फ़ौरन म्यान से तलवार खींच ली।

उन के साथियों ने भी तलवारें खींच कर बुलन्द कीं और दुश्मनों पर पिल पड़े।

लड़ाई शुरू हो गयी।

मुसलमान सिर्फ़ पांच थे और दुश्मन सौ थे।

नतीजा यह निकला कि मुसलमान पसपा हुए, यहां तक कि हज़रत अब्दुल्लाह और उन के बाक़ी साथी सभी बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गये।

चूंकि मैदान साफ़ हो गया था। कोई रोकने वाला बाक़ी न रहा था,

इसलिए मुश्रिक तेज रफ़्तारी के साथ पहाड़ी के नीचे उतरने लगे।

कुछ मुसलमान हुज़ूर सल्ल० के क़रीब खड़े थे। उन्हों ने खालिद और उन के साथियों को पहाड़ी से नीचे उतरते हुए देख लिया।

अब इन सब ने अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया।

इस नारे की आवाज़ को सुन कर के मुसलमान, जो मुश्रिकों का पीछा कर रहे थे पीछे पलट कर देखने लगे। उहद की पहाड़ी से कुफ़्फ़ार की फ़ौज उतरती नज़र आयी।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० पहाड़ी के दामन में कुछ मुसलमानों के साथ खड़े थे, इसलिए मुसलमानों को डर हुआ कि कहीं कुफ़्फ़ार आप पर हमला न कर दें। वे फ़ौरन पलटे और बड़ी तेज़ी से हुज़ूर सल्ल० की मदद और हिफ़ाज़त के लिए बढ़े।

इक्रिमा ने मुसलमानों को वापस आते हुए देख लिया, उस ने ललकार कर अपने साथियों को रोका। जब वे उस के आगे जमा हो गये, तो उस ने मुसलमानों पर धावा बोल दिया। बड़ी तेज़ी से मुसलमानों के पीछे दौड़ा।

अबू सुफ़ियान जो अब तक भागा जा रहा था, रुका, उस ने कुफ़्फ़ार को जमा होने का हुक्म दिया। तमाम मक्का वाले उस के चारों तरफ़ जमा हो गये। वह तमाम कुफ़्फ़ार को साथ ले कर नये जोश और नयी हिम्मत के साथ हमलावर हुआ।

मुसलमानों पर ये तमाम हमले एक-एक कर के उम्मीद के खिलाफ़ और अचानक हुए।

नतीजा यह हुआ कि लड़ाई का रंग बदल गया। मुसलमान हर तरफ़ से कुफ़्फ़ार के घेरे में आ गये।

फिर भी मुसलमानों ने हिम्मत न हारी और वे जगह-जगह घिरे होने के बावजूद अपनी बहादुरी का सबूत देते रहे। बड़ी खूंरेज़ लड़ाई शुरू हो गयी थी।

मुसलमान अपने से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० को बचाना चाहते थे।

हुज़ूर सल्ल० अपने जान-निसारों के जान देने और जान लड़ा देने का यह मंज़र देख रहे थे।

लड़ाई की चक्की निहायत तेज़ी से घूम रही थी। तलवारें जल्द-जल्द चल रही थीं।

खालिद और उन के साथी बढ़-बढ़ कर हमले कर रहे थे। वे मुसलमानों को कुचल डालने के लिए घोड़े बढ़ाते थे, पर जब मुसलमान बढ़ कर,

संभल कर जोश और तैश में हमले करते, तो वे पीछे हट जाते थे।

हज़रत मुसअब एक हाथ में तलवार लिए और दूसरे में झंडा लिए बड़े जोश से लड़ रहे थे। वह अब तक बहुत बड़ी तायदाद में काफ़िरों को जहन्नम रसीद कर चुके थे।

एक बार वह बड़े जोश में आगे बढ़े। वह ख़ालिद को जानते थे, उन्हें क़त्ल करने के लिए आगे बढ़े थे। कई काफ़िरों को मारते-मारते ख़ालिद के क़रीब पहुंच गये।

उन्हों ने तलवार उठायी, पूरी ताक़त और जोश से हमला किया।

ख़ालिद पीछे हटे।

हज़रत मुसअब आगे बढ़े। उन्हों ने फिर हमला करना चाहा।

इस मुद्दत में पीछे से कुफ़्फ़ार के एक मशहूर शहसवार ज़ालिम इब्ने क़ुमैया ने आ कर हमला कर दिया।

चूंकि हज़रत मुसअब भी हुज़ूर सल्ल० की शक्ल के थे, इसलिए इब्ने क़ुमैया ने समझा कि रसूले ख़ुदा ही को क़त्ल कर डाला, चुनांचे उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा, मुहम्मद क़त्ल कर दिये गये।

इस आवाज़ को सुन कर मुश्रिकों ने मारे ख़ुशी के नारे लगाने शुरू कर दिये।

मुसलमान इन नारों को सुन कर हैरान रह गये। वे ग़म में डूब गये, लड़ना-भिड़ना भूल गये। ग़म में डूबी हुई निगाहों से ख़ुदा के महबूब को, रसूल सल्ल० को ढूंढ़ने लगे।

कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों की इस घबराहट का फ़ायदा उठाते हुए ज़ोर-दार हमला कर दिया।

मुसलनान संभले, होश में आये।

अक्सर मुसलमान यह कह कर मैदान में नये जोश के साथ कूद पड़े कि जब महबूब रसूल ही ज़िंदा न रहा, तो अब ज़िंदगी का मज़ा ही क्या रहा, मुसलमानो ! लड़ो और लड़ कर शहीद हो जाओ।

मुसलमानों ने जोश में आकर पूरी ताक़त से हमला किया। हर तरफ़ से तलवारें बुलन्द हुई, जोश व ग़ज़ब का तूफ़ान उमड़ आया। सर कट-कट कर गिरने लगे और ख़ून की नदियां बहने लगीं।

काब बिन मालिक बड़े जोश व ग़ज़ब में भरे हुए कुफ़्फ़ार को क़त्ल करते उस तरफ़ आगे बढ़ रहे थे, जहां हुज़ूर सल्ल० खड़े थे। उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० को सहाबा किराम के दर्मियान खड़े हुए देख लिया। वह मारे ख़ुशी के उछल पड़े। उन्हों ने ऊंची आवाज़ से कहा—

मुसलमानो ! खुदा का शुक्र है कि रसूले खुदा ज़िंदा हैं।

इसी बीच हुज़ूर सल्ल० ने निहायत ऊंची आवाज़ में फ़रमाया, खुदा के बन्दो ! मेरी तरफ़ आओ, मैं खुदा का रसूल हूं।

मुसलमानों ने इस आवाज़ को सुना, उन का ग़म दूर हुआ, खुशी की लहर दौड़ गयी। चेहरे खिल गये। वे हर तरफ़ से सिमट-सिमट कर आप की तरफ़ बढ़ने लगे।

आम तौर पर कुफ़्फ़ार समझ रहे थे कि हुज़ूर शहीद हो गये। हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ ने बता दिया था कि आप ज़िंदा हैं। वे भी हर तरफ़ से सिमट-सिमट कर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ बढ़ने लगे।

अब वह जगह जहां हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ रखते थे, लड़ाई का मर्कज़ बन गयी।

बड़ी खूरेज़ लड़ाई होने लगी। इंसान खीरे-ककड़ी की तरह कट-कट कर गिरने लगे।

खालिद और उस के साथी हुज़ूर सल्ल० के साथियों पर टूट पड़े।

मुसलमान हुज़ूर सल्ल० को घेरे में लिये हुए थे।

कुफ़्फ़ार उस घेरे को तोड़ना चाहते थे, इसलिए ज़ोरदार तरीक़े से हमले कर रहे थे।

मुसलमान भी उसी जोश व खरोश से हमले को तोड़ रहे थे और जवाबी हमले भी कर रहे थे।

इक्रिमा बिन अबूजह्ल ने भी हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ सुन ली थी। वे मय साथियों के निहायत जोश व खरोश से हुज़ूर सल्ल० के साथियों पर हमलावर हुआ।

हज़रत ज़ियाद और हज़रत अम्मारा इन दो मुजाहिदों ने बड़े इस्तिक़्लाल से उन का हमला रोक कर खुद भी हमला कर दिया। ज़ोरदार लड़ाई हुई, यहां ये दोनों मुजाहिद शहीद हो गये।

कुफ़्फ़ार का निशाना हुज़ूर सल्ल० थे, इस लिए आप पर धावा भी ज़्यादा था। वे चाहते थे कि किसी तरह रास्ता साफ़ कर के हुज़ूर सल्ल० को घेरे में ले लिया जाए, लेकिन मुसलमान थे कि आप के चारों तरफ़ लोहे की दीवार बन गये थे।

खालिद ने अपने साथियों में से पचीस-बीस जवानों को अलग कर के उन को तीर चलाने का हुक्म दिया। उन लोगों ने एक बुलन्द जगह पर पहुंच कर हुज़ूर सल्ल० की जमाअत पर तीर चलाना शुरू किया।

इस तीरंदाज़ी ने मुसलमानों को सख्त नुक्सान पहुंचने लगा। हर

आदमी तीर खा-खा कर घायल हो गया। चूंकि डर पैदा हो गया था कि कहीं कोई तीर हुज़ूर सल्ल० को न लग जाए, इसलिए हज़रत अबूदुजाना हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मुंह कर के खड़े हो गये, गोया आप ने अपनी पीठ को ढाल बना लिया।

वह मर्दानावार खड़े थे। तीर उनकी पीठ पर आ-आ कर लग रहा था, अगरचे तीरों के लगने से उन्हें तक्लीफ़ हो रही थी, पर उन के चश्म व आबरू पर बल तक न आता था।

अब्दुल्लाह बिन हिशाब जोहरी, ख़ालिद का एक साथी था। वह मुसलमानों से बचता हुआ हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंचा।

हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त दूसरी तरफ़ मुतवज्जह थे।

अब्दुल्लाह बिन हिशाब ने हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंच कर आप पर वार किया।

आप का मुबारक चेहरा घायल हो गया।

चूंकि अबू दुजाना आप की तरफ़ मुंह किये खड़े थे और अब्दुल्लाह अबू दुजाना के पीछे से आया, इसलिए उन्हों ने उसे नहीं देखा।

जब अब्दुल्लाह ने हमला कर के हुज़ूर सल्ल० को ज़ख्मी कर दिया, तो अबू दुजाना ने जोश में आ कर उस पर हमला किया। उन की तलवार अब्दुल्लाह का खूद काट कर कई इंच सर में उतर गयी।

वह ज़ख्मी हो कर पीछे हटा।

अबू दुजाना उस के पीछे दौड़े, वह दौड़ कर मुश्रिकों के ग़ोल में जा घुसे।

चूंकि अबू दुजाना जोश व ग़ज़ब में भरे हुए थे, इसलिए वह मुश्रिकों को क़त्ल करते हुए अब्दुल्लाह के पीछे ही पीछे चले गये।

अब्दुल्लाह बिन हिशाब उन से ऐसा डर गया था कि वह अपनी जान बचाने के लिए कुफ़्फ़ार के एक ग़ोल से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में छिपता फिरता था।

अबू दुजाना उस के पीछे फिरते रहे थे। वह उसे क़त्ल करना चाहते थे। आख़िरकार वह भाग कर अबू सुफ़ियान के लश्कर में जा घुसा और सबसे पीछे जा खड़ा हुआ।

अब हुज़ूर सल्ल० तंहा रह गये थे।

तमाम मुसलमान अलग हो गये थे या अलग कर दिये गये थे और वे जगह-जगह पूरी बहादुरी से लड़ रहे थे। अब हुज़ूर सल्ल० के पास सिर्फ़ उम्मे अम्मारा रह गयी थीं या क़रीब ही हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह

लड़ रहे थे।

इब्ने क़ुमैया, जिस ने हज़रत मुसअब को शहीद किया था, हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ तलवार ले कर लपका।

हज़रत उम्मे अम्मारा ने उसे झपटते हुए देख लिया। उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से कहा, ओ काफ़िर! ख़बरदार! आगे क़दम न बढ़ाना।

यह कहते ही उन्हों ने जां-बाज़ी से इब्ने क़ुमैया पर हमला किया।

वह दोहरी ज़िरह पहने हुए था। उस की ज़िरह पर तलवार पड़ कर उचट गयी।

हज़रत उम्मे अम्मारा ने कई वार लगातार हमले लिए, पर कोई एक वार भी कामियाब न हुआ।

इब्ने क़ुमैया ने जोश में आकर उम्मे अम्मारा पर तलवार का एक हाथ मारा, चूंकि वह ज़िरह पहने हुई न थीं, न उनके पास ढाल थी, इसलिए वह इस हमले को न रोक सकीं। उन का हाथ कंधे के क़रीब घायल हो गया।

इब्ने क़ुमैया हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ बढ़ा। हज़रत अबू उबैदा ने उसे देख लिया।

अगरचे वह कुफ़्फ़ार के ग़ोल में घिरे हुए थे, हर तरफ़ से उन पर हमले किये जा रहे थे, वह बड़ी फुर्ती से हमलों को रोक रहे थे, मगर इब्ने क़ुमैया को बढ़ते हुए देख कर तड़प गये।

वह हुज़ूर सल्ल० की हिफ़ाज़त के लिए आप की तरफ़ बढ़े। उन्हों ने ऊंची आवाज़ से मुसलमानों से ख़िताब फ़रमाते हुए कहा, मुसलमानो! ख़ुदा का रसूल दुश्मनों के घेरे में आ गया है।

इस आवाज़ को सुन कर मुसलमान चौंके, संभले और अपने सामने वालों को क़त्ल करते हुए हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ बढ़े।

इस बीच इब्ने क़ुमैया हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंच गया। उस ने तलवार उठा कर पूरी ताक़त से हमला किया। तलवार हुज़ूर सल्ल० के ख़ूद पर पड़ी। ख़ूद के दो-दो हलक़े आंखों से नीचे की हड्डी में घुस गये।

इब्ने क़ुमैया ने दूसरा वार करना चाहा, लेकिन उस वक़्त तक अबू उबैदा उस के क़रीब पहुंच गये थे। उन्हों ने ललकार कर कहा, ओ काफ़िर संभल।

इब्ने क़ुमैया घबरा गया, वह पीछे हटा।

अबू उबैदा ने जोश में आ कर उस पर हमला किया। हमला इतना ज़ोरदार था कि उस की दोहरी ज़िरह चीर उठी और कंधे के क़रीब घाव कर के हंसली की हड्डी तोड़ गयी।

इब्ने क़ुमैया ने खौफ़नाक चीख मारी और सख्त खौफ़ज़दा हो कर भागा।

अबू उबैदा ने उसका पीछा करना चाहा पर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें रोक दिया।

अब अबू उबैदा हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचे। हुज़ूर सल्ल० को ज़ख्मी देख कर तड़प गये।

हुज़ूर सल्ल० पूरे सब्र व इस्तिक़लाल के साथ खड़े थे और ज़ख्मी होने पर भी हुज़ूर सल्ल० के चेहरे से मलाल या दुख नहीं जाहिर हो रहा था।

हज़रत अबू उबैदा ने खूद को जो हुज़ूर सल्ल० की आंखों के नीचे हड्डी में घुसा हुआ था, दांतो से पकड़ कर खींचा। बहुत ज़ोर लगाया, पर खूद न निकला।

खूद निकालने में ज़ोर लगाते-लगाते अबू उबैदा के दो दांत टूट गये।

बड़ी जद्दोजेहद के बाद खूद निकाला गया।

खूद के निकलते ही खून का फ़व्वारा बहने लगा।

हुज़ूर सल्ल० अपने चेहरे से खून पोंछते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, वह क़ौम कैसे फ़लाह पा सकती है, जिस ने अपने नबी के चेहरे को इस लिए खून से रंगा कि वह उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाता है।

अभी हुज़ूर सल्ल० यह फ़रमा ही रहे थे कि एक शरीर बदमाश ने हुज़ूर सल्ल० के एक पत्थर खींच कर मारा। उस से हुज़ूर सल्ल० का होंठ ज़ख्मी होकर नीचे का एक दांत शहीद हो गया।

हुज़ूर सल्ल० के पीछे एक गढ़ा था। हुज़ूर सल्ल० गढ़े में गिर गये।

इस बीच हज़रत अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, अली०, हज़रत तलहा रज़ि० और कुछ दूसरे सहाबा किराम रज़ि० अपने मुक़ाबले के दुश्मनों को खत्म कर के हुज़ूर सल्ल० के पास आ गये।

फ़ौरन हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० का हाथ पकड़ा। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत तलहा रज़ि० ने बाहर निकाला। आप का मुबारक चेहरा खून से तर हो रहा था। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अपनी इबा के दामन से खून पोंछना शुरू किया। हज़रत तलहा बोले—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस क़ौम के हक़ में बद-दुआ फ़रमाइए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं तलहा ! मैं खुदा का रसूल हूं। एक रसूल की शान यह न होनी चाहिए कि वह क़ौम के ज़ुल्मों से तंग आ कर बद-दुआ कर के तमाम क़ौम को अल्लाह के ग़ज़ब में डाल दे।

लड़ाई अब भी ज़ोर व शोर से हो रही थी। सर धड़ से कट-कट कर

गिर रहा था। खून पानी की तरह बह रहा था।

हुजूर सल्ल० ने हजरत अबूबक्र से फ़रमाया, हो सके तो उहद की पहाड़ी पर चढ़ चलो।

हजरत अबूबक्र रजि० ने कहा, हुजूर सल्ल० तशरीफ़ ले चलें। हम जां-निसार खादिम आप के साथ हैं। हुजूर सल्ल० उहद की तरफ़ बढ़े।

हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रजि० ने ऊंची आवाज से कहा, मुसलमानो! उहद की पहाड़ी पर चढ़ चलो।

इस आवाज को सुन कर तमाम मुसलमान उहद की तरफ़ बढ़ने लगे। हुजूर सल्ल० और सहाबा किराम भी उस तरफ़ बढ़े। पहाड़ी क़रीब ही थी। थोड़ी ही जद्दोजेहद में ये सब पहाड़ी पर चढ़ गये। मुसलमान भी इधर-उधर से सिमट-सिमटा कर उहद की पहाड़ी पर आने लगे। इस तरह लड़ाई का एक मोर्चा क़ायम हो गया।

अबू सुफ़ियान ने देखा कि मुसलमान बेहतरीन जगह पर पहुंच कर जी-तोड़ लड़ाई कर रहे हैं। वह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। हुजूर सल्ल० ने उमर से कहा, देखो, कुफ़्फ़ार को पहाड़ी पर चढ़ने से रोक दो।

हजरत उमर रजि० कुछ सहाबियों को अपने साथ लिए हुए बढ़े और बड़े जोश से कुफ़्फ़ार पर हमलावर हुए। अगरचे अबू सुफ़ियान और उसके साथियों ने ऊपर चढ़ने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाया, पर सरफ़रोश मुजाहिदों ने उन्हें एक क़दम भी न बढ़ने दिया, बल्कि ऐसे कड़े हमले किये कि कुफ़्फ़ार को नीचे धकेल दिया। इस पर भी एक काफ़िर इब्ने अबी खलफ़, जो हुजूर सल्ल० को क़त्ल कर डालने का पक्का इरादा कर के आया था, मरदानावार आगे बढ़ा और हुजूर सल्ल० पर हमलावर हुआ।

हुजूर सल्ल० ने हजरत हारिस के हाथ से नेजा लेकर उस पर वार किया। नेजा की अनी गरदन के नीचे की हड्डी में लगी। वह बद-हवास हो कर भागा। अगरचे जख्म मामूली था, फिर भी वह इसे बरदाश्त नहीं कर सका और जान से हाथ धो बैठा।

अब तमाम मुसलमान इधर-उधर से जमा हो कर कुफ़्फ़ार को मारते-काटते पहाड़ी पर चढ़ गये। चूंकि कुफ़्फ़ार पहाड़ी से नीचे और मुसलमान पहाड़ी के ऊपर थे, इसलिए अब लड़ाई बन्द हो गयी।

अबू सुफ़ियान ने ऊंची आवाज से मालूम किया, तुम लोगों में मुहम्मद हैं?

किसी ने उस का जवाब न दिया।

उस ने फिर पूछा, क्या तुम में अबूबक्र हैं?

अब भी सब ख़ामोश रहे।

उस ने फिर पूछा, क्या तुम में उमर हैं ?

हज़रत उमर रज़ि० ने चिल्ला कर कहा, ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! ये सभी ज़िंदा हैं। वह वक़्त क़रीब है जब तू रुसवा होगा।

अबू सुफ़ियान ने घमंड के नशे में कहा, हुबल की जय ! हुबल की जय !

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर से कहा, इसे जवाब दो ! अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर है।

चुनांचे हज़रत उमर ने यही जवाब दिया।

अबू सुफ़ियान ने कहा, उज़्ज़ा हमारा बुत है, तुम्हारा नहीं।

हज़रत उमर ने हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद के मुताबिक़ जवाब दिया, अल्लाह हमारा मौला है, तुम्हारा मौला नहीं है।

अबू सुफ़ियान ने कहा, अब हमारा-तुम्हारा मुक़ाबला अगले साल बद्र नामी जगह पर होगा।

हज़रत उमर ने हुज़ूर सल्ल० के हुक्म के मुताबिक़ जवाब दिया, हमें तुम्हारा चैलेंज मंज़ूर है।

इस के बाद अबू सुफ़ियान ने फ़ौज को वापसी का हुक्म दे दिया।

कुफ़्फ़ार वापसी का हुक्म सुन कर बहुत ख़ुश हुए, वे फ़ौरन लौटे और मक्का की तरफ़ रवाना हुए।

मुसलमान उहद की पहाड़ी पर खड़े कुफ़्फ़ार की वापसी का मंज़र देखने लगे।

थोड़े ही देर में तमाम कुफ़्फ़ार अपने मक़्तूलों को लड़ाई के मैदान में छोड़ कर नज़रों से ओझल हो गये।

अक़ीदत के जोश में

जब मुसलमान दुश्मनों के घेरे में आ गये थे और कुफ़्फ़ार ने उन्हें हर तरफ़ से घेर लिया था, हर जगह निहायत ख़ूंरेज़ लड़ाई हो रही थी, उस वक़्त कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की औरतें मुसलमान शहीदों के नाक-कान काटती फिर रही थीं, गोया इस तरह वे अपनी नफ़रत का इज़्हार कर के बदला ले रही थीं।

हिंदा, अबू सुफ़ियान की बीवी को वहशी ने बता दिया था कि उस ने

अपने हरबे से हज़रत अमीर हमज़ा को शहीद कर दिया है। हिंदा ने अपने तमाम ज़ेवर उतार कर उस के हवाले कर दिये और उस के साथ सैयदुश्शुहदा की लाश पर पहुंची, उस ने बदले के जोश में हज़रत हमज़ा के नाक और कान काट कर लाश का मुस्ला कर दिया और सीना चीर कर जिगर निकाला। अपनी क़सम पूरी करने के लिए जिगर मुंह में रखकर चबाने लगी मगर चबा न सकी, उगल दिया।

अब मुसलमान उहद की पहाड़ी पर चढ़ गये और अबू सुफ़ियान अगले साल बद्र में लड़ने का वायदा कर के मय अपने लश्कर के वापस चला गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने शहीदों को एक जगह जमा करने का हुक्म दे दिया। मुसलमानों की तमाम फ़ौज पहाड़ी से उतर कर शहीदों को उठा-उठा कर जमा करने में लग गयी। बहुत से मुसलमानों की लाशें पारा-पारा कर दी गयीं और हज़रत हमज़ा की लाश के तो इतने टुकड़े कर दिये गये थे, कि बड़ी मुश्किल से जमा किये जा सके।

अभी मुसलमान शहीदों को ढूंढ़-ढूंढ़कर जमा ही कर रहे थे कि मदीना की तरफ़ से कुछ मुसलमान और उन के साथ एक औरत आती नज़र आयी। चूंकि मदीना यहां से सिर्फ़ तीन-चार मील ही दूर था, इसलिए लड़ाई के मैदान की पूरी-पूरी ख़बरें उन्हें पहुंच चुकी थीं। यह सभी हालात मालूम करने के लिए चल पड़े थे।

यों तो सब अपने-अपने रिश्तेदारों के बारे में मालूम करने के लिए आ रहे थे, मगर इन क़रीब आ गये लोगों को सब से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० की ख़ैरियत मालूम करने की चिंता खा रही थी।

सब से पहले जो औरत लड़ाई के मैदान में पहुंची, वह हज़रत हमज़ा की सगी बहन और हज़रत ज़ुबैर की मां हज़रत सफ़िया थीं। उन की आंखों में आंसू थे और चेहरा पीला पड़ रहा था। उन्हें हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत की ख़बर पहुंच गयी थी। वह अपने भाई की लाश देखने आयी थीं।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हमज़ा की लाश के पास हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को बुला कर कहा, अपनी मां को रोको। उन्हें हज़रत हमज़ा की लाश के पास न जाने दो।

हज़रत ज़ुबैर ने बढ़ कर अपनी मां से कहा, अम्मी जान! लड़ाई के मैदान में क्यों चली आयीं? हज़रत सफ़िया के चेहरे से ग़म व अलम ज़ाहिर हो रहा था। उन्हों ने फ़रमाया—

बेटा! मैं अपने भाई की लाश देखने आयी हूं।

हज़रत ज़ुबैर ने कहा, मगर रसूले ख़ुदा चाहते हैं कि तुम उन की लाश न देखो।

हज़रत सफ़िया ने ठंडी आह भरते हुए कहा, आह, मुझे मालूम है कि मेरे शेर दिल भाई की लाश के टुकड़े कर दिये गये हैं, आंखें निकाल ली गयी हैं, नाक और कान काट डाले गये हैं और सीना चीर कर जिगर निकाला गया है।

मैं उन की लाश पर रोने या बैन करने नहीं आयी हूं, बल्कि दुआ-ए-मग़फ़िरत मांगने आयी हूं और देखने आयी हूं कि मेरे शेर दिल भाई ने कोई ज़ख्म पीठ पर तो नहीं खाया।

अच्छा ठहरो, मैं हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त तो ले लूं, हज़रत ज़ुबैर ने कहा।

तुम अपने साथ मुझे भी ले चलो, हज़रत सफ़िया ने फ़रमाया, मैं ख़ुद उन से इजाज़त ले लूंगी।

हज़रत ज़ुबैर हज़रत सफ़िया को अपने साथ ले कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे।

हुज़ूर सल्ल० ने देखा, हज़रत सफ़िया ग़म से निढाल हो रही थीं और चलते हुए ठोकरें खा रही थीं। बराबर में अपने बेटे हज़रत ज़ुबैर का सहारा ले कर चल रही थीं।

हज़रत हमज़ा हुज़ूर सल्ल० के चचा थे।

जब अबू जह्ल ने हुज़ूर सल्ल० के पत्थर मार-मार कर आप को ज़ख्मी **कर दिया था** और **आप ने इस** ख़बर को सुना था, तो गुस्से हो कर अबू **जह्ल के सरपर अपनी कमान खींच** ली थी और उसी दिन मुसलमान हो गये **थे।**

हुज़ूर सल्ल० को उनसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। आप को भी हज़रत हमज़ा के शहीद हो जाने का बेहद क़लक़ था।

हज़रत सफ़िया ने आप के पास पहुंच कर कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे मालूम है कि क़ुरैशी दरिंदों ने मेरे भाई की लाश पारा-पारा कर दी है। मैं नौहा करने के इरादे से नहीं आयी बल्कि अपने शेर दिल भाई का आख़िरी दीदार करने और दुआ-ए-मग़फ़िरत मांगने आयी हूं। मुझे मेरे भाई की लाश देखने की इजाज़त दे दीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फूफी ! तुम क्या देखोगी, जब देखने की चीज़ ही बाक़ी न रही ?

हज़रत सफ़िया ने ठंडी सांस भर कर कहा।

मैं शेरे इस्लाम को देखूंगी, वह जिस हालत में भी हों। मैं सब्र करना जानती हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा देख लो, लेकिन बैन न करना।

हज़रत सफ़िया वापस लौटीं। पहाड़ी के दामन में हज़रत हमज़ा की लाश पड़ी थी। लाश पर चादर डाल दी गयी थी।

हज़रत सफ़िया लाश के क़रीब पहुंच गयीं।

हज़रत ज़ुबैर साथ थे। उन्हों ने लाश के ऊपर से चादर हटायी।

हज़रत-सफ़िया ने सैयदुश्शुहदा की लाश को देखा।

हज़रत हमज़ा की लाश टुकड़े-टुकड़े थी। आप के कान न थे, आंखें निकली हुई थीं।

हज़रत सफ़िया यह हालत देख कर तड़प गयीं।

अगरचे उन्हों ने सब्र व ज़ब्त से काम लिया, लेकिन भाई की मुहब्बत जोश कर आयी, कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो गया, दिल फट गया और बे-अख़्तियार आंखों से आंसुओं की धार बह निकली।

उन्हों ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, आह भाई! मेरे शेरदिल भाई! तुम मुझ से पहले ही दुनिया से रुख़सत हो गये। ज़ालिमों ने तुम्हारी लाश को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और तुम हमेशा-हमेशा के लिए आराम व सुकून की नींद सो गये।

हज़रत सफ़िया रो रही थीं, हज़रत ज़ुबैर भी रो रहे थे फिर भी बोले, अम्मीजान! तुम बैन कर के हुज़ूर सल्ल० के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर रहे हो।

हज़रत सफ़िया चौंकीं।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी को फ़ौरन महसूस किया और तौबा करने लगीं।

फिर हाथ उठा कर दुआ-ए-मग़फ़िरत की।

इस बीच मुसलमानों ने शहीदों की लाशें ला-ला कर एक जगह जमा कर दी थी और उन्हें दफ़न करने के लिए गढ़े खोदने लगे थे।

जब गढे या क़ब्रें तैयार हो गयीं, तो एक-एक क़ब्र में दो-दो लाशें दफ़न की जाने लगीं। तमाम शहीदों को दफ़न कर के सारे मुसलमान एक जगह जमा हो गये। सब ने शहीदों के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत की।

अब हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को मदीने की तरफ़ कूच करने का हुक्म दे दिया।

इस्लाम के ये मुजाहिद इस्लामी झंडे के साए तले धीरे-धीरे रवाना

हुए।

लड़ाई के मैदान की खबरें मदीना पहले ही पहुंच चुकी थीं और लोग झुंड के झुंड हाल मालूम करने के लिए घरों से निकल पड़े थे।

सब से पहले हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० की बीवी मिलीं।

हज़रत मुसअब इस्लामी लश्कर के अलमबरदार थे और वह शहीद हो गये थे।

उन की बीवी का नाम हमना था।

हमना ने एक अरब से लड़ाई के हालात मालूम किये।

अरब ने बताया, हमना ! तुम्हारे मामूं हज़रत हमज़ा शहीद हो गये।

अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे, हमना ने सुन कर कहा।

तुम्हारे भाई अब्दुल्लाह बिन हश्शा भी शहीद हो गये ! अरब ने बताया।

इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, हमना ने कहा।

और तुम्हारे शौहर हज़रत मुसअब भी शहीद हो गये, अरब ने बताया।

यह सुन कर हज़रत हमना बेक़रार हो गयीं, बे-अख़्तियार उन की आंखों से आंसू जारी हो गये।

हुज़ूर सल्ल० को जब यह बात मालूम हुई, तो आपने फ़रमाया—

हर शरीफ़ औरत को अपने शौहर से ज़्यादा मुहब्बत होती है।

इस्लामी लश्कर धीरे-धीरे लौट रहा था। मदीना से आने वाले भी लश्कर में शामिल होते जाते थे।

कुछ दूर चल कर अन्सार की एक नवजवान औरत परेशान हाल आती हुई मिली। जब वह लश्कर के क़रीब आयी, तो एक आदमी ने उसे पहचान कर कहा, ऐ बहन ! अफ़सोस ! तुम्हारे बाप शहीद हो गये।

औरत ने पूछा, हुज़ूर सल्ल० तो ख़ैरियत से हैं ?

उस ने कहा, अभी और सुनो, तुम्हारे भाई भी शहीद हो गये।

औरत के चेहरे पर अब भी कोई ख़ास मलाल ज़ाहिर न हुआ, हां जो बेचैनी पहले थी, वही अब भी रही, उस ने फिर पूछा, हुज़ूर सल्ल० का हाल बताओ।

उस आदमी ने कहा, अब आख़िरी दिल हिला देने वाली ख़बर सुन लो, यानी तुम्हारे शौहर भी शहीद हो गये।

यह ख़बर सुन कर औरत का चेहरा कुछ फीका पड़ गया, बदन में कपकपी सी पैदा हुई, आवाज़ कांपने लगी। फिर भी उसने पूछा, ख़ुदा के

लिए हुज़ूर सल्ल० का हाल बताओ।

इस बीच हुज़ूर सल्ल० की सवारी क़रीब आ गयी।

अरब ने बताया, वह देखो, मुहम्मद सल्ल० तशरीफ़ ला रहे हैं।

औरत ने हुज़ूर सल्ल० को देखा, उस का चेहरा चमकने लगा। उस ने कहा, ख़ुदा का शुक्र है, हज़ार-हज़ार शुक्र है कि मैं ने हुज़ूर सल्ल० को देख लिया, जब आप सलामत हैं, तो तमाम मुसीबतें हेच हैं।

इसी तरह बहुत से मर्द, औरतें, बच्चे पहले हुज़ूर सल्ल० की ख़ैरियत मालूम कर रहे थे और आप की ख़ैरियत पा कर दिलों को तस्कीन दे रहे थे।

जल्द ही यह लश्कर मदीने में दाख़िल हो गया।

इस्लाम के फ़िदाकार मुबल्लिग़

अगरचे मुसलमान उहद में भी कुफ़्फ़ार को हरा चुके थे, मुश्रिक बद-हवास हो कर माल व अस्बाब और अपनी औरतों को छोड़ कर भाग खड़े हुए थे, मुसलमानों ने इन भगोड़ों का सामान लूटना शुरू कर दिया था, लेकिन उहद की घाटी में जो दस्ता अब्दुल्लाह बिन जबैर की सरबराही में लगाया गया था, कुफ़्फ़ार को हार कर भागते देख कर और मुसलमानों के साथ वह दस्ता भी पीछा करने में दौड़ पड़ा था।

ख़ालिद ने जब उस घाटी को ख़ाली देखा, तो वह इस तरफ़ से हमलावर हो गये। मुसलमान उन के मुक़ाबले के लिए लौटे। इक्रिमा और अबू सुफ़ियान ने एक-एक कर के नये जोश और नयी हिम्मत से हमला किया। नतीजा यह हुआ कि मुसलमान दुश्मनों से घिर गये, फिर भी वे घबराये नहीं, हिम्मतें नहीं छोड़ीं, लड़े और ख़ूब लड़े।

आख़िरकार कुफ़्फ़ार मायूस और नाकाम हो कर वापस जाने पर मजबूर हुए।

इस लड़ाई में क़रीब-क़रीब तमाम ही मुसलमान ज़ख़्मी हुए, ख़ुद हुज़ूर सल्ल० भी ज़ख़्मी हो गये।

जो मुसलमान मदीने में रह गये थे, उन्हें यह सब सुन कर बड़ा तैश और जोश आ रहा था। उन्हों ने तहैया कर लिया था कि आगे लड़ाई में वे मुश्रिकों से ज़रूर ही भरपूर बदला लेंगे।

अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ था। ज़ाहिर में तो उस ने इस्लाम क़ुबूल किया था, लेकिन असल में वह था इस्लाम और मुसलमानों का दुश्मन। वह चाहता था, किसी तरह मुसलमान ख़त्म हो जाएं और वह

मदीने का बादशाह बन सके। उस ने एलानिया कहना शुरू कर दिया—

मुसलमानों ने हमारी यह बात कि मदीने में रह कर मुक़ाबला करो, न मानने पर आख़िरकार नुक़्सान उठाया, अच्छा हुआ, हम न गये थे, वरना हम भी नुक़्सान उठाते।

मुसलमानों को उस की और उस के साथियों की इस क़िस्म की बातें सुन कर रंज होता था।

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथी मुनाफ़िक़ हैं। इसलिए हम को उन से लड़ने की इजाज़त दीजिए, वरना ये लोग आस्तीन के सांप साबित होंगे और दुश्मनों से जोड़-तोड़ कर के मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब्दुल्लाह बिन उबई और उन के साथी अपने को मुसलमान कहते हैं, यह सही है कि वे मुनाफ़िक़ हैं, उन का ज़ाहिर कुछ है और बातिन कुछ, फिर भी जब तक वे अपने को मुसलमान कहते रहेंगे, उस वक़्त तक उन के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न की जाएगी।

लोग ख़ामोश रहे।

कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि तलहा बिन ख़ुवैलद और सलमा बिन ख़ुवैलद, दोनों भाइयों ने क़ुत्न के मुक़ाम पर तमाम मुश्रिकों को जमा किया है और मदीने पर हमला करने का इरादा रखते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने अबू सलमा मख़्ज़ूमी को डेढ़ सौ मुजाहिदों के लश्कर के साथ इन्हें पसपा करने के लिए भेजा और उन्हें हिदायत कर दी कि जब तक वे लोग लड़ने में पहल न करें, तुम अपनी तरफ़ से लड़ने में पहल न करना।

जब अबू सलमा क़ुत्न पहुंचे, तो मालूम हुआ कि ख़ुवैलद के दोनों बेटे मुजाहिदों के आने की ख़बर सुन कर फ़रार हो गये और ऐसे बद-हवास होकर भागे कि अपने मवेशी तक न ले जा सके।

कुछ दिनों के बाद हुज़ूर सल्ल० को मालूम हुआ कि सुफ़ियान बिन ख़ुवैलद ने अरफ़ात की घाटी के क़रीब मुश्रिकों को जमा करना शुरू कर दिया है। उस का इरादा मदीने पर हमला करने का है।

हुज़ूर सल्ल० ने अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० को तंहा रवाना कर दिया और फ़रमाया कि सुफ़ियान को समझाना कि लड़ाई अच्छी चीज़ नहीं, न हम उस पर हमला करना चाहते हैं, न वह हम पर हमला करने का इरादा करे।

अब्दुल्लाह ने अरफ़ात पहुंच कर उसे समझाया, लेकिन वह बिगड़ गया, बोला, मैं ने इरादा कर लिया है कि मदीना फ़त्ह कर के रहूंगा, एक

मुसलमान को भी जिन्दा न छोड़ूंगा।

अब्दुल्लाह ख़ामोश हो गये।

रात को जब वह चलने लगे, तो फिर सुफ़ियान के पास गये। वह उस वक़्त तंहा बैठा था।

अब्दुल्लाह ने कहा, अबू सुफ़ियान! मैं जा रहा हूं। मुझे अफ़सोस है कि तुमने समझौते का हाथ न बढ़ाया। लड़ाई किसी हालत में भी अच्छी चीज नही होती, न मालूम तुम क्यों अच्छा समझते हो।

सुफ़ियान ने कहा, लड़ाई हमारी घुट्टी में दाख़िल है। तुम्हारा नबी तो बुज़दिल है। (नऊजुबिल्लाह), लड़ने से बचता है, इसलिए तुम को भी लड़ने से बचाता है। जिस क़ौम की वह तामीर कर रहा है, वह क़ौम बुज़-दिल हो गयी है। सुनो, अब्दुल्लाह! मैं तुम्हारे नबी को क़त्ल कर डालने की क़सम खा चुका हूं। बग़ैर उसे क़त्ल किये न मानूंगा। मैं तुम्हारे पीछे ही आऊंगा और ऐसा जबरदस्त लश्कर लाऊंगा, जो सारे मुसलमानों को फ़ना की घाट उतार देगा।

अब्दुल्लाह को उस की बातें सुन कर तैश आ गया। उन की आंखें लाल हो गयीं, गुस्से में भर कर कहा—

ज़लील बुतपरस्त! दुनिया के कुत्ते! तेरी यह मजाल कि हुज़ूर सल्ल० की शान में गुस्ताख़ी करे। ख़ुदा की क़सम! कोई भी मुसलमान आप के बारे में ऐसी बातें नहीं सुन सकता। अगर तुझे अपनी बहादुरी पर फ़ख्र है, तो तलवार संभाल और मेरे मुक़ाबले पर आ जा।

सुफ़ियान ने भी जल्दी से तलवार खींची और कूद कर अब्दुल्लाह के सामने आ गया। आते ही उस ने तलवार से हमला किया।

अब्दुल्लाह ने निहायत फुर्ती से तजुर्बेकार जवानों की तरह हमला रोका और जोश में आ कर ख़ुद भी हमला कर दिया।

सुफ़ियान ने जल्दी से अपनी तलवार पर अब्दुल्लाह की तलवार रोकी। उस की तलवार टूट गयी, वह घबरा कर पीछे हटा और दीवार का सहारा लेकर बड़ी ख़ौफ़ज़दा नज़रों से अब्दुल्लाह को देखने लगा।

अब्दुल्लाह ने लपक कर दूसरा वार किया।

सुफ़ियान का सर कट कर दूर जा गिरा।

अब्दुल्लाह ने उस का सर उठाया और चुपके से उस के घर से निकल कर ऊंट पर सवार हुए और मदीना की तरफ़ रवाना हो गये।

सुबह जब कुफ़्फ़ार ने सुफ़ियान का बे-सर लाश देखी तो घबरा कर बिखर गये।

अब्दुल्लाह २२ मुहर्रम सन ४ हि० को मदीना पहुंचे और सुफ़ियान का सर हुज़ूर सल्ल० के क़दमे मुबारक पर जा डाला।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अफ़सोस हुआ, वह हिर्स का शिकार बन गया।

इस के बाद उस के सर को दफ़न करा दिया गया।

जिस दिन अब्दुल्लाह मदीने में वापस आये, उसी दिन मक्का से एक वफ़्द आया। इस वफ़्द में क़बीला क़ारा के सात आदमी थे।

ये लोग आसिम बिन साबित के मकान पर पहुंचे और उसी जगह ठहर गये।

कुछ दिनों के बाद आसिम ने उन के आने की वजह पूछी।

उन में से एक आदमी ने कहा, जब से कुफ़्फ़ार क़ुरैश को बद्र और उहद की जगहों पर हार हुई है। बहुत से लोग इस्लाम की तरफ़ झुक गये है और हमारे क़बीलों की बहुत बड़ी तायदाद ने इस्लाम में दाखिल होने का फ़ैसला कर लिया है। हम इसलिए आए हैं कि कुछ मुबल्लिग़ हमारे साथ मक्का भेज दीजिए, ताकि वे आम लोगों को इस्लाम की तालीम से सेराब कर के मुसलमान बना लें।

आसिम ने कहा, बहुत अच्छी बात है, तुम मेरे साथ हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में चलो। यक़ीन है कि वह कुछ तालीम देने वालों को आप के साथ भेज देंगे।

दूसरे आदमी ने कहा, आसिम ! हम बजाए किसी और के पास जाने के तुम्हारे पास इसलिए आए हैं कि तुम नेक दिल हो, मुसलमानों के हामी और इस्लाम के फ़िदाई हो। हमारी अर्ज़दाश्त सुन कर हुज़ूर सल्ल० से हमारी सिफ़ारिश करने पर तैयार हो जाओगे······

आसिम ने बात काटते हुए कहा मैं तैयार हूं। ज़रूर-ज़रूर ! हुज़ूर सल्ल० से तुम्हारी सिफ़ारिश करूंगा।

तीसरे आदमी ने कहा, मेरे भाई ! हमारी यह भी ख्वाहिश है कि आप भी हमारे साथ मक्का चलें। यक़ीन है कि आप की तक़रीर सुन कर बहुत से लोग मुसलमान हो जाएंगे।

आसिम ने कहा, हम मुसलमानों में कोई मुसलमान बग़ैर हुज़ूर सल्ल० के हुक्म के कोई काम नहीं कर सकता। अगर हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इजाज़त दे दी, तो मैं तुम्हारे साथ ज़रूर चलूंगा।

पहले आदमी ने कहा, इजाज़त हासिल करना तुम्हार अख्तियार में है। जब हुज़ूर सल्ल० से मक्का जाने को कहोगे, तो यक़ीन है वह ज़रूर इजा-

जत दे देंगे।

आसिम ने कहा, मुझे तुम से यकगूना मुहब्बत हो गयी है। मैं तुम्हारी वजह से इजाज़त हासिल करने की कोशिश करूंगा।

दूसरे ने कहा, अच्छा तो इसी वक़्त हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में चलो।

आसिम वफ़्द के सातों आदमियों के साथ मिल कर मस्जिदे नबवी की तरफ़ चल खड़े हुए।

आमतौर पर मुसलमानों को मक्के के इस वफ़्द के आने का हाल मालूम हो चुका था, लेकिन अभी तक उस के आने की वजह मालूम न हुई थी।

जब ये सब लोग मदीना में पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० को मस्जिद के एक कोने में बैठे हुए देखा। आप के पास हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत साद, हज़रत बिलाल, हज़रत अबू उबैदा और कुछ दूसरे सहाबी बैठे थे।

मक्का के वफ़्द ने क़रीब पहुंच कर निहायत अदब से आप को सलाम कर के मुसाफ़ा किया। हुज़ूर सल्ल० ने सलाम का जवाब दे कर उन्हें बैठने का इशारा किया।

जब वे सब बैठ गए, तो आप ने कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो! तुम मक्का से चल कर तीन सौ मील का फ़ासला तै कर के किस लिए आए हो?

उन में से एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम अज़्ल व क़ारा क़बीले के लोग हैं। हमारे क़बीले इस्लाम में दाख़िल होना चाहते हैं। हम इस वजह से आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं कि हुज़ूर सल्ल० हमारे साथ कुछ मुबल्लिग़ भेज दें ताकि हमें और हमारी क़ौम को इस्लाम सिखायें। पूरा यक़ीन है कि हमारी तमाम क़ौम मुसलमान हो जाएगी।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, अबूसुफ़ियान और इक्रिमा कौन से ख़्याल में हैं?

एक आदमी ने जवाब दिया, वे लड़ाई की तैयारियों में लगे हैं। वे बद्र के मैदान में दोबारा लड़ने का वायदा कर के चले गये हैं, इसलिए वे अपना वायदा पूरा किये बिना हरगिज़ न आराम करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को ख़िताब कर के फ़रमाया, इस वफ़्द के आने की वजह मालूम कर ली, मश्विरा दो, क्या किया जाए?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे इन की बातों से फ़रेब की बू आती है। मेरा ख़्याल है कि ये लोग कोई साज़िश कर के आये हैं और मुसलमानों को किसी नयी मुसीबत में फंसाना चाहते हैं। अगर इन के

क़बीले मुसलमान होना चाहते हैं, तो यहां क्यों नहीं चले आते ?

ख़ुदा की क़सम ! हम कोई साज़िश करने नहीं आये हैं, अमीरे वफ़्द ने कहा, हमें इस में भी कोई उज़्र-बहाना नहीं कि हमारी क़ौम यहां आ जाए, मगर आप समझ सकते हैं कि सारी क़ौम का यहां आना मुश्किल है। वही लोग आ सकेंगे, जिन के दिल में तड़प होगी।

बेशक, सारी क़ौम इतनी दूर सफ़र कर के नहीं आ सकती, हज़रत अबूबक्र ने कहा। मुनासिब यही है कि कुछ मुबल्लिग़ इन के साथ रवाना कर दिये जाएं।

मेरा भी यही ख़्याल है, हज़रत अली ने कहा, अलबत्ता अबू सुफ़ियान और इक्रिमा की तरफ़ से अन्देशा है।

अंदेशा न कीजिए, अमीरे वफ़्द ने कहा, हम मुबल्लिग़ों की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लेते हैं। अगर अबू सुफ़ियान या इक्रिमा हमारी ज़िम्मेदारी को तोड़ना चाहेंगे, तो हमारी सारी क़ौम उन पर हमला कर देगी।

मुसलमानों को किसी अंदेशे का ख़्याल न करना चाहिए, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर बात ख़ुदा की तरफ़ से होती है और जो बात होने वाली है, वह ज़रूर ही हो कर रहेगी। बेहतर है मुबल्लिग़ भेजे जाएं।

जब फ़ख़रे आलम का हुक्म है, तो चूं व चरा की कोई गुंजाइश नहीं, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया।

अगर हुज़ूर सल्ल० इजाज़त दें, तो मैं मक्का जाने को तैयार हूं, आसिम ने कहा।

अगर तुम तैयार हो, तो मैं ख़ुशी से इजाज़त देता हूं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, एक तुम हो और एक और आदमी चुन लो और कल सुबह की नमाज़ पढ़ कर इन के साथ रवाना हो जाओ।

आसिम इजाज़त मिलने से बहुत ख़ुश हुए।

मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने नाम पेश किये देता हूं, उन्हों ने कहा, नाम है, अब्दुल्लाह बिन तारिक़, ख़ालिद बिन कबीर, याक़ूब बिन उबैद, हबीब बिन अदी, ज़ैद बिन वसीला, इन के अलावा तीन आदमी और चुन लूंगा।

तुम ने अच्छे लोगों को चुना है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये सभी वे लोग हैं, जिन्हों ने अपनी ज़िंदगियां ख़ुदा के हाथ बेच दी हैं।

अब आसिम मय क़ुरैशी वफ़्द के उठ कर चले गये। उन्हों ने जाते ही उन लोगों को, जिन की इजाज़त ली थी, इत्तिला दे दी और वे तैयारियां करने लगे।

इन के जाने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद से पूछा, तुम ने अबू

बरा के बारे में कुछ सुना है ?

हुज़ूर सल्ल० ! मैं अबू बरा को जानता हूं, हज़रत साद ने फ़रमाया, वह मालिक बिन जाफ़र के बेटे और नज्द के मशहूर रईस हैं। आजकल मदीना में तशरीफ़ लाये हुए हैं।

आज अबू बरा यहां आने वाले हैं, हुज़ूर सल्ल० ने कहा, मेरा इरादा है कि उन के सामने इस्लाम पेश करूं।

हुज़ूर सल्ल० ! अगर बरा मुसलमान हो गये, तो पूरा नज्द मुसलमान हो जाएगा, हज़रत साद ने कहा, वजह यह है कि अबू बरा का भतीजा आमिर बिन तुफ़ैल है और आमिर का असर तमाम नज्द वालों पर है। अबू बरा के मुसलमान होने से आमिर भी मुसलमान हो जाएगा और दोनों के मुसलमान होने से नज्द के तमाम क़बीले मुसलमान हो जाएंगे।

अभी इतनी ही बात होने पायी थी कि सामने से कुछ अरब आते दिखाई पड़े।

उन में से एक बहुत ही नुमायां अरब था।

हज़रत साद ने उन्हें देखते ही हुज़ूर सल्ल० को खिताब करते हुए फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ! वह अबू बरा आ रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० अबू बरा की ताज़ीम के लिए खड़े हो गये।

हुज़ूर सल्ल० के उठते ही तमाम सहाबा किराम भी खड़े हो गये।

अबू बरा ने क़रीब आ कर सलाम किया।

हुज़ूर सल्ल० ने सलाम का जवाब दे कर उन्हें अपने क़रीब बिठाया।

इधर-उधर की खैरियत पूछने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने अबू बरा से फ़रमाया—

मेरे भाई ! मैं आप के सामने आज वह मज़हब पेश कर रहा हूं, जो खुदा की तरफ़ रहनुमाई करता है। यह वह मज़हब है, जिसे हमारे दादा हज़रत आदम ने पेश किया था, जिसे तमाम नबी पेश करते रहे और जिस का नाम इस्लाम है। आओ, खुदा के इस प्यारे मज़हब में दाखिल हो जाओ।

अबू बरा बड़े ध्यान से बातें सुनते रहे।

जब हुज़ूर सल्ल० खामोश हुए, तो अबू बरा ने कहा—

मैं इस्लाम की तालीम को पसन्द करता हूं, लेकिन मैं नज्द का रईस हूं और मेरा भतीजा आमिर बिन तुफ़ैल भी रईस है। नज्द के लोग ज़्यादा सख्त होते हैं। अंदेशा है कि अगर मैं तंहा मुसलमान हो जाऊं, तो वे मुझसे लड़ने लगें, इसलिए अगर आप कुछ लोगों को मेरे साथ कर दें और वे

नज्द चलकर नज्द वालों को वाज़ व नसीहत करें, तो मेरा ख़्याल है कि मेरी सारी क़ौम मुसलमान हो जाएगी। फिर मैं भी मुसलमान हो जाऊंगा।

आप की बात तो माक़ूल है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन मुसलमानों की हिफ़ाज़त व हिमायत का ज़िम्मेदार कौन होगा? मुझे अन्देशा है कि कहीं आप की क़ौम मुसलमानों को नुक़्सान न पहुंचाए।

जिन मुसलमानों को अपने साथ ले जाऊंगा, उन की हिफ़ाज़त व हिमायत का ज़िम्मेदार भी मैं ही हूंगा, अबू बरा ने कहा, आप इस का ज़रा भी अंदेशा न करें।

हुज़ूर सल्ल० सोचने लगे।

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हज़रत अबूबक्र बोले, अगरचे अबू बरा ख़ुद क़ौम के सरदार हैं, लेकिन इन के भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल का ज़्यादा असर व रुसूख़ है, अगर वह ज़िद पर आ गया, तो उस की तरफ़ से मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा किया जा सकता है।

ऐसा नहीं होगा, अबू बरा ने कहा, आमिर लाख ज़िद्दी सही, लेकिन उस में यह ख़ूबी भी है कि वह अपने बुज़ुर्गों का अदब व लिहाज़ भी बहुत करता है और मेरी बात भी मानता है, इसलिए आप उस की तरफ़ से बिल्कुल अंदेशा न कीजिए।

तुम्हारे साथ कितने आदमियों को भेजा जाए? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

चूंकि मैं नज्द में ही तब्लीग़ नहीं करना चाहता, बल्कि पास-पड़ोस के क़बीलों में भी करना चाहता हूं, इस वजह से ज़्यादा आदमियों की ज़रूरत है।

फिर कहा, कम से कम साठ-सत्तर आदमी होने चाहिए। ये लोग अच्छे क़ारी, हाफ़िज़ और मुबल्लिग़ हों और तक़रीर भी अच्छी करते हों।

ऐसे ही लोग भेजे जायेंगे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

आप ने सत्तर सहाबियों को चुना। ये सभी क़ुरआन के हाफ़िज़ और बेहतरीन मुक़र्रिर थे।

मुंज़िर बिन अम्र को इन लोगों पर सरदार मुक़र्रर किया गया।

चूंकि अबू बरा अगले ही दिन नज्द जाने वाले थे, इसलिए चुने गए सहाबियों को हिदायत कर दी गयी कि वे उन के क़ाफ़िले के साथ रवाना हो जायें।

दूसरे दिन दस आदमी तो मक्का वालों के साथ और सत्तर सहाबी अबुल बरा के साथ नज्द रवाना हो गये।

दग़ाबाज़ क़ासिद

यह बात तो सब पर अयां थी कि मक्का वाले मुसलमानों के ज़बरदस्त दुश्मन हैं ।

बद्र और उहद की लड़ाइयों में उन के सरदार मारे जा चुके थे, जिस की वजह से नफ़रत व अदावत के जज़्बात और गहरे हो गये थे ।

किसी मुसलमान की जान और माल मक्का में बचा रह सकता है। हर क़दम पर अंदेशा था, हर मुश्रिक से डर था, गोया मक्के का चप्पा-चप्पा और घर व दीवार मुसलमानों पर तंग और वहां के लोग मुसलमानों के दुश्मन थे, लेकिन इन अहम बातों को जानते हुए और समझे हुए भी इस्लाम के दस फ़िदाकार बिला खौफ़ व अंदेशे के जान हथेली पर रख कर तब्लीग़े इस्लाम के लिए दुश्मनों के शहर की तरफ़ रवाना हो गये थे।

वे सारे दिन तेज़ धूप और झुलसा देने वाली हवा में सफ़र करते रहे। रात को रेत के टीले पर आराम किया, खाना खाया, नमाज़ पढ़ी और सो रहे ।

सुबह सवेरे उठे, नमाज़ पढ़ी और फिर सफ़र की तैयारी शुरू हो गयी।

दूसरे दिन सफ़र पर रवाना होने से पहले अपने साथियों की गिनती की गयी, तो वफ़्द वालों में से एक आदमी कम था।

सब हैरत में पड़ गये।

सोचा, शायद किसी ज़रूरत से गया हो, इसलिए वापसी का इंतिज़ार करने लगे ।

दोपहर हो गयी, लेकिन साथी अब तक नहीं लौटा ।

सब बैठे इन्तिज़ार करते रहे, यहां तक कि शाम हो गयी ।

सब चिन्ता में डूब गये।

ताज्जुब की बात यह थी कि गुमशुदा आदमी का ऊंट भी गुम था।

रात को उन लोगों ने उसी जगह क़ियाम किया और दूसरे दिन उसकी खोज में निकले ।

थक कर फिर उसी जगह आ गये, जहां से चले थे।

जब थक हार गये और खोज भी बेकार हो गयी, तो मजबूरन ये लोग तीसरे दिन मक्का की तरफ़ रवाना हुए ।

यह छोटा सा क़ाफ़िला दिन भर सफ़र करता और रात को किसी टीले पर ठहर कर आराम करता। कई दिन सफ़र करता हुआ एक दिन उस जगह पहुंचा, जहां क़बीला हुज़ैल आबाद था ।

जब ये लोग उस जगह पहुंचे, तो उन्हों ने उस आदमी को सामने से आते देखा, जो गुम हो गया था।

आसिम उसे देख कर खिल उठे और खुश हो कर बोले—

ऐ भाई! तुम कहां चले गये थे? हम सब तुम्हारी गुमशुदगी से परेशान हो गये थे।

उस अरब की आंखों से मक्कारी झलक रही थी, उस ने कहा, मैं आप से आगे ही चला आया था इसलिए कि एक जरूरी काम अंजाम देना था।

अगर आना ही था, तो कम से कम हम को बता कर आते, आसिम ने कहा, हम परेशान तो न होते।

अरब हंसा और हंस कर बोला, अब आप की परेशानी दूर हो जाएगी।

आसिम इस बात से चौंके।

उन्हों ने उसे ग़ौर से देखा, उस के चेहरे से खबासत झलक रही थी।

वह कुछ कहना ही चाहते थे कि सामने से लगभग दो सौ नवजवान तलवारें हाथों में लिए उन की तरफ़ बढ़ते नज़र आए।

उन के साथ एक औरत भी थी, जो तेज़ी से दौड़ी चली आ रही थी।

आसिम ने और तमाम मुसलमानों ने एक साथ आने वालों को देखा।

हबीब बिन अदीने आसिम को खिताब करते हुए कहा—

आसिम! तुम्हारे मेहमानों ने दग़ा दी।

बेशक दग़ा दी, आसिम ने कहा। मुसलमानो! आओ, इस क़रीब की पहाड़ी पर चढ़ चलो।

यह कहते ही आसिम पहाड़ी की तरफ़ चले। तमाम मुसलमान उन के साथ हो लिए।

अभी ये लोग कुछ क़दम ही चले होंगे कि अहले वफ़्द ने तलवारें म्यान से खींच कर उन पर हमला कर दिया।

कहां जाते हो? अमीरे वफ़्द ने कहा, तुम्हारी मौत तुम को इस जगह खींच कर लायी है।

मुसलमानों ने भी तलवारें सौंत लीं।

आसिम ने कहा दग़ाबाज़ो! आज तक किसी अरब ने अपनी हिमायत को नहीं तोड़ा था, लोग जान दे देते थे, लेकिन अपनी पनाह में लेने वालों पर आंच न आने देते थे. लेकिन आज तुमने अरबों की क़ौम पर बट्टा लगा दिया। नामर्दो! बुज़दिलो! संभलो मौत तुम्हारी आयी है।

यह कहते ही आसिम, फिर दूसरे मुसलमान अहले वफ़्द पर टूट पड़े।

तलवारें चलने लगीं।

लड़ाई शुरू हो गयी।

मुसलमानों ने जल्द-जल्द हमला कर के दो काफ़िरों को मार डाला।

बाक़ी मुश्रिक ज़ख्मी हो कर पीछे हटे।

मुसलमान लपक कर पहाड़ी पर चढ़ गये।

काफ़िरों ने समझ लिया कि मुसलमान आसानी से उन के क़ाबू में न आएंगे, लड़ेंगे और आख़िरी दम तक लड़ेंगे।

इसलिए उन्हों ने धोखे से काम लेना चाहा।

उन में से एक आदमी ने कहा—

मुसलमानो! हमारा क़स्द तुम पर हमला करने का नहीं है, बल्कि हम तुम को आज़मा रहे थे कि अगर मक्का वालों ने तुम पर हमला किया, तो तुम उन के मुक़ाबले में ठहर सकोगे या नहीं? तुम्हारी जुर्रत ने बता दिया कि तुम डरने वाले नहीं हो, आओ, पहाड़ी से नीचे उतर आओ, हमारे साथ चलो, हम तुम्हारे हामी व मददगार हैं।

कमीनो! दग़ाबाज़ो! आसिम ने कहा, तुम हम को फ़रेब देना चाहते हो, हम तुम्हारे धोखे में आने वाले नहीं।

अब वह औरत, जो दो सौ नवजवानों के साथ भागती आ रही थी, आगे बढ़ी और बुलन्द आवाज़ से बोली—

मुसलमानो! सुनो, हम तुम्हें गिरफ़्तार करना या मारना नहीं चाहते, मैं सिर्फ़ आसिम की दुश्मन हूं। तुम से सिर्फ़ आसिम को चाहती हूं। आसिम को मेरे हवाले कर दो और तुम सब चले जाओ।

ओ ख़ूबसूरत डाइन! ख़ुबैब ने पूछा, आसिम के साथ तेरी दुश्मनी की वजह क्या है?

मैं उस से अपने दो बेटों के मारे जाने का इन्तिक़ाम लेना चाहती हूं, औरत ने कहा, उस ने मेरे दो बेटों को उहद के मैदान में मार डाला था।

ख़ुबैब ने कुछ कहना चाहा।

औरत ने उन्हें रोक कर कहा, अभी मेरी बात सुन लो। इस वफ़्द को मक्के से मैं ने भेजा था और ताकीद की थी कि आसिम को अपने साथ ज़रूर लाना।

उस ने आगे बताया, मैं ने आसिम के सर के लिए एक सौ ऊंट इनाम भी रखा है। आसिम आ गया है, इसलिए तुम उसे मेरे हवाले कर दो।

आसिम ने मुसलमानों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया, मुसलमानो! औरत असल में मुझे चाहती है और मेरे ख़ून की प्यासी है। मुझे उस के हवाले कर के अपनी जान बचा लो।

तमाम मुसलमानों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और उस औरत से खुल कर कह दिया, हम आसिम को तेरे हवाले हरगिज़ नहीं कर सकते।

फिर क्या था, कुफ़्फ़ार ने धावा बोल दिया।

लड़ाई शुरू हो गई।

तलवारें चमकीं और इन्सानी सर कट-कट कर ज़मीन पर ढेर होने लगे।

दस मुसलमान और दो सौ कुफ़्फ़ार, बेचारे कब तक मुक़ाबला करते।

आठ शहीद हो गये और दो गिरफ़्तार कर लिए गये।

गिरफ़्तार होने वालों में से हज़रत खुबैब और दूसरे हज़रत ज़ैद थे।

इन दो क़ैदी मुसलमानों के साथ औरत के बचे-खुचे जवानों का क़ाफ़िला पहाड़ी से उतर कर अपने रास्ते पर चल पड़ा।

वहशियाना संगदिली

जिस वक़्त अबूबरा सत्तर सहाबियों को लेकर नज्द रवाना हुए थे, उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने अबू बरा के मश्विरे से उस के भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल को एक ख़त लिखकर हरम बिन मलजान के हाथ रवाना किया था। इस ख़त को भेजने का मक़सद यह था कि आमिर को मालूम हो जाए कि जो मुसलमान आ रहे हैं, वे अबू बरा, उस के चचा की हिमायत व अमान में हैं।

आमिर को इस्लाम और मुसलमानों से बड़ी नफ़रत और दुश्मनी थी।

आमिर में इतनी ताक़त तो न थी कि वह मुसलमानों से लड़ाई छेड़ता, अलबत्ता वह यह बराबर सोचता रहता था कि किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा नुक़सान पहुंचाया जा सके।

एक दिन वह बीरे मऊना पर खड़ा था। साथ में उस के दस-बारह साथी भी खड़े थे।

बीरे मऊना बनू आमिर और बनू सलीम क़बीलों के बीच में वाक़ेअ था।

आमिर ने एक अरब को एक ऊंट पर सवार आते देखा। उस ने अपने साथियों को ख़िताब करते हुए कहा—

तुम इस ऊंट सवार अरब को देख रहे हो?

तमाम लोगों ने उस ऊंट सवार को देख लिया था। सब ने कहा, हां देख रहे हैं, शायद वह मदीने से आ रहा है।

मेरा भी यही ख़्याल है, आमिर ने कहा, अजब नहीं, यह मुसलमान हो

और मेरे पास कोई पैग़ाम ला रहा हो।

मान लो वह मुसलमान ही है, तो···? एक आदमी ने उस से पूछा।

हुबल की क़सम! आमिर ने बात काटते हुए कहा, अगर वह मुसलमान हुआ, तो बग़ैर कुछ कलाम किये उसे क़त्ल कर डालूंगा। जिस वक़्त मैं इशारा करूं, तुम सब उस से लिपट जाना। सुना है कि ये मुसलमान बहादुर होते हैं, इसलिए उसे लड़ने का मौक़ा ही न देना, वरना दो-एक को ज़रूर क़त्ल कर डालेगा।

इस बीच ऊंट सवार क़रीब आ गया।

यह हरम बिन मलजान थे, जो हुज़ूर सल्ल० का ख़त लेकर आये थे।

वह आमिर को जानते थे, उन्हों ने उसे पहचान लिया। आमिर उन को न जानता था।

या सय्यिदी! हरम ने आमिर के पास पहुंचकर कहा, मैं आप के पास आया हूं।

मेरे पास? आमिर ने कहा।

आप ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नाम सुना होगा? हरम ने कहा।

हां, सुना है! आमिर ने बुरा सा मुंह बना कर कहा, वही, जिसे उस के वतन वालों ने निकाल दिया है और जो मदीना वालों को साथ ले कर अपने ख़ानदान और अपने क़बीले वालों से लड़ रहा है।

शायद आप भी जानते हों, ये लड़ाइयां क्यों हुईं? ज़्यादती किस ने की? हरम ने कहा।

मुझे इन बातों से कोई ग़रज़ नहीं, आमिर ने बेरुख़ी से कहा, मैं तो यह समझता हूं कि हज़रत मुहम्मद ने एक नया मज़हब जारी कर के क़ौम व मुल्क के अन्दर फ़ित्ना पैदा कर दिया है।

आप को ग़लत इत्तिला पहुंची, हरम ने कहा, हुज़ूर सल्ल० जिस मज़हब की तब्लीग़ कर रहे हैं, वह नया मज़हब नहीं है। वह वही मज़हब है, जो हमारे, आप के और सारी दुनिया के बाबा आदम का मज़हब था, जो हज़रत नूह का मज़हब था, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, सभी उसी मज़हब का प्रचार करते थे हज़रत इब्राहीम ने इसका नाम इस्लाम रखा था और इस्लाम में दाख़िल होने वाले का नाम मुसलमान था।

उन्हों ने आगे कहा, इस्लाम ख़ुदापरस्ती की तालीम देता है, बुतों की पूजा से मना करता है। हुज़ूर सल्ल० अल्लाह के रसूल और आख़िरी पैग़म्बर हैं। अब कोई पैग़म्बर आने वाला नहीं है।

यह तुम हुज़ूर सल्ल० किसे कहते हो? आमिर ने पूछा।

मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इज्जत की वजह से हुज़ूर सल्ल० कहते हैं, हरम ने बताया।

क्या तुम मुसलमान हो ? आमिर ने पूछा।

हां, मैं मुसलमान हूं, हरम ने कहा और हुज़ूर सल्ल० का ख़त तुम्हारे पास लाया हूं।

आमिर ने अपने साथियों को इशारा किया। वे अचानक बढ़े।

इस से पहले कि हरम मामला समझ सकें, कई आदमियों ने बढ़ कर उन्हें अपने क़ाबू में कर लिया।

ओ कुत्ते मुसलमान ! तुम्हारा नाम क्या है ? आमिर ने उनसे कहा।

बुज़दिल, कमीने ! मेरा नाम हरम है, मैं मलजान का बेटा हूं, हरम ने फ़रमाया, दग़ाबाज़ ज़लील ! अगर दावा बहादुरी का है, तो मुक़ाबला कर।

आमिर ने खिसयाना हो कर क़हक़हा लगाया।

मलजान के बेटे ! आमिर बोला, तुम्हें भी बहादुरी पर नाज़ है। ख़ैर, मैं माने लेता हूं कि तुम बहादुर हो, मगर हरम ! यह कितनी हिमाक़त है कि तुम अपने मज़हब को छोड़ कर मुसलमान हो गये।

हरम ने कुछ कहना चाहा।

आमिर ने हाथ बढ़ा कर इशारे से उन्हें ख़ामोश रहने को कहा।

सुनो हरम ! मुझे मालूम है कि मुसलमान बेबाक और गुस्ताख़ होते हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम कोई ऐसी बात कहो, जो मेरे दिल को चोट लगाये, आमिर ने समझाया, मेरी तो यह आरज़ू है कि तुम इस्लाम छोड़ दो और अपने पुराने मज़हब पर आ जाओ। अगर तुम्हें यह डर है कि मुसलमान तुम्हारे इस्लाम छोड़ने की वजह से तुम्हारे दुश्मन हो जाएंगे और तुम को नुक़सान पहुंचाएंगे, तो मैं तुम को अपनी हिमायत में लेता हूं। दुनिया की कोई ताक़त मेरी अमान में होते हुए तुम को किसी क़िस्म का नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। मैं तुम को दो सौ ऊंट और पांच सौ बकरियां दूंगा, दो ग़ुलाम तुम्हारी ख़िदमत के लिए, सोना-चांदी ख़र्च करने के लिए और एक अच्छी चरागाह तुम्हारे मवेशियों के चरने के लिए तुम्हें दूंगा। साथ ही तुम को अख़्तियार दिया जाएगा कि तुम मेरे क़बीले की जिस औरत या लड़की को पसन्द करोगे, उस से तुम्हारी शादी कर दूंगा। तुम्हारी ज़िन्दगी अमीराना तौर पर बसर होगी। बोलो, तुम को ये तमाम शर्तें मंज़ूर हैं ?

आमिर ! हरम ने फ़रमाया, अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि मैं या कोई मुसलमान किसी लालच या मुसीबत में आ कर इस्लाम छोड़ देगा,

तो तुम ने ग़लत समझा है। कोई मुसलमान कभी ऐसा न करेगा।

उन्हों ने आगे कहा, दुनिया कुछ दिनों की है, यहां का ऐश व आराम भी कुछ दिनों का है। हमेशा वाली जिन्दगी तो मौत के बाद शुरू होती है। मरने के बाद जिसे आराम व सुकून हो, उस ने सब कुछ पा लिया। लेकिन जिसे मरने के बाद तक्लीफ़ हुई, उस ने सब कुछ खो दिया।

ग़ौर कीजिए, अगर आप की ग़ुलाम आप की नाफ़रमानी करे, तो क्या आप उस ग़ुलाम से खुश होंगे ? मैं समझता हूं कि आप उस से नाखुश हो कर उसे सज़ा ज़रूर देंगे। इस तरह खुदा उन बन्दों से कैसे खुश हो सकता है, जो उसे छोड़ कर बुतों या दूसरी चीज़ों को पूजते हैं, उस की नाफ़र-मानी करते हैं।

आमिर बीच ही में बोल पड़ा, मैं वाज़ व नसीहत सुनना नहीं चाहता। मैं तो सिर्फ़ यह जानना चाहता हूं कि तुम इस्लाम छोड़ने के लिए तैयार हो या नहीं।

मैं इस्लाम नहीं छोड़ सकता, हरम ने निडर हो कर कहा।

अगर तुम ने इस्लाम न छोड़ा, तो तुम्हारा सर गरदन से उड़ा दिया जाएगा, आमिर ने बिगड़ कर कहा।

कोई परवाह नहीं, हरम ने बेनियाज़ी दिखाते हुए कहा।

आमिर ने ग़ज़बनाक हो कर तलवार खींच ली।

हरम इस्लाम छोड़ दे, वरना इस तलवार से तेरा सर उड़ा दिया जाएगा, वह गुस्से से लाल हो रहा था।

आमिर ! मैं पहले ही कह चुका हूं कि कोई मुसलमान किसी लालच, किसी डर, या किसी तक्लीफ़ का असर क़ुबूल करके इस्लाम कभी नहीं छोड़ सकता, हरम ने समझाया।

तो क्या इंकार है ? आमिर अब भी गुस्से में भरा हुआ था।

हां, इंकार है, हरम ने कहा, आखिरी सांस तक इंकार ही रहेगा।

आमिर ने तलवार से वार कर दिया।

तलवार गरदन पर पड़ी, हरम शहीद हो कर गिर पड़े।

आमिर ने फिर अपने साथियों को खिताब कर के कहा—

इस बद-बख़्त की लाश सामने मैदान में डाल दो, ताकि यह कौवों, चीलों और गिद्धों की खूराक बन जाए।

एक बद-बख़्त ने उन की लाश घसीट कर मैदान में डाल दी।

आमिर ने तलवार साफ़ कर के म्यान में रखी, हरम के अमामे को खोला, उस में खत बंधा हुआ था। आमिर ने खत खोल कर पढ़ा—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह ख़त मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से आमिर बिन तुफ़ैल के नाम है।

बाद सलाम के मालूम हो कि मैं उस ख़ुदा का भेजा हुआ नबी और रसूल हूं, जो सब का पैदा करने वाला और पालने वाला है, जो बदले के दिन का मालिक है, शुक्र और तारीफ़ उसी की होनी चाहिए, उसी की इबादत भी होनी चाहिए। मैं तुम को और तुम्हारे क़बीले को इस्लाम की दावत देता हूं। मुसलमान हो कर हमारे भाई बन जाओ। ख़ुदा की बंदगी शुरू कर दो। शराबख़ोरी, जुआ, ज़िना, और दूसरे तमाम गुनाह के कामों को छोड़ दो।

तुम्हारे मोहतरम चचा अबू बरा यहां आये थे। मैं उन के साथ सत्तर सहाबा भेज रहा हूं। जो शक व ग़लतफ़हमी तुम को या तुम्हारे क़बीले को हो, उन्हें बातें कर के दूर कर लेना। अगर इस से तसल्ली न हो, तो मदीना आ जाओ। यहां तुम्हारे हर क़िस्म के शक को दूर कर दिया जाएंगे।

आमिर ने ख़त पढ़ कर कहा—

कितना गुस्ताख़ाना ख़त है। क़सम है हुबल की! मैं उन तमाम मुसलमानों को हलाक कर डालूंगा, जो मेरे चचा के साथ आ रहे हैं।

फिर अपने साथियों से पूछा, क्या तुम लोग मेरी मदद करोगे?

उन में से एक आदमी ने किसी क़दर संजीदगी से कहा—

आप जानते हैं कि आप के क़बीला बनू आमिर पर आप के चचा अबू बरा का ज़्यादा असर व रुसूख़ है और वह मुसलमानों को अपनी अमान में ले कर आ रहे हैं, इसलिए मुनासिब यह है कि आप अपने क़बीले के सरदारों को जोश दिला कर इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभार दें।

निहायत मुनासिब है, आमिर ने कहा, सरदारों को मुसलमानों के क़त्ल पर तैयार किया जाए।

ये सब लोग चले और अपने क़बीले के सरदारों के पास पहुंच गये।

आमिर को देखते ही वे सब इज़्ज़त करने के तौर पर खड़े हो गये।

आमिर सलाम व दुआ के बाद बैठ गया और अपनी बात खोल कर कह दी।

सरदारों में से एक आदमी ने कहा, आमिर! तुम कहते हो कि मुसलमान तुम्हारे चचा की अमान व हिमायत में हैं, तो हम तुम्हारे चचा की हिमायत को नहीं तोड़ सकते।

आमिर ! यह बुरी बात है, तुम को भी इस की कोशिश नहीं करना चाहिए। अबू बरा तुम्हारे बुजुर्ग हैं। इस के अलावा हम अरबों का यह सोशल क़ानून है कि जब हम किसी को अपनी हिमायत में लेते हैं तो ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक उस की हिमायत से हाथ नहीं उठाते। यह बड़े ऐब की बात है कि हम अपनी हिमायत को तोड़ डालें। तुम हमारे क़बीले को ऐसा कर के बदनाम न करो।

आमिर समझ गया कि उस की क़ौम के लोग उस का साथ न देंगे।

वह खफ़ा हो कर उठ खड़ा हुआ और बनू सलीम के ख़ेमे पर पहुंचा।

क़बीला बनू सलीम में अग़ल, ज़कवान और अस्बा सरदारों में से थे।

इत्तिफ़ाक़ से वे तीनों एक ही जगह बैठे थे।

जब आमिर ने उन से पूरी बात बता कर मदद की दरख़्वास्त की, तो अग़ल ने कहा—

अगरचे यह बुरी बात है कि हम अबू बरा की हिमायत में रुकावट डालें, मगर हम तुम्हारा एहतिराम भी करते हैं। तुम ने हमारे ख़ेमों पर आ कर हम से मदद की दरख़्वास्त की है, हम तुम्हारी दरख़्वास्त को रद्द कर के तुम्हें मायूस न करेंगे।

बेशक हम तुम्हारी मदद करेंगे, ज़कवान ने कहा, लेकिन हम मुसल-मानों से लड़े तो फ़साद के बढ़ने का अंदेशा भी है।

उसने आगे कहा, एक तो मुसलमान बड़े बहादुर होते हैं फिर वे जोशीले भी होते हैं उनका क़ाबू में आना मुश्किल है। दूसरे मुम्किन नहीं कि अबूबरा की वजह से तुम्हारा क़बीला उन की हिमायत पर तैयार हो जाएगा। इस-लिए मुनासिब यही है कि मुसलमानों को फ़रेब दे कर क़त्ल कर दिया जाए।

बेशक यही हमारे लिए मुनासिब है, अस्बा ने कहा। मेरी राय में तो उन्हें एक दिन दावत दी जाए और मौक़ा पा कर क़त्ल कर दिया जाए।

उपाय तो जो आप मुनासिब समझें, अपनायें, आमिर ने कहा, मगर मेरी ख़्वाहिश है कि कोई भी मुसलमान ज़िन्दा न रहे।

ऐसा ही होगा, अग़ल ने कहा, आप इत्मीनान रखें। जब मुसलमान आ जाएं, तो आप का फ़र्ज़ है कि हमें मुत्तला कर दें।

न सिर्फ़ इत्तिला दी जाए, बल्कि उन की मेहमानी के लिए कुछ ऊंट और कुछ जौ का आटा भेजा जाए, ज़कवान ने कहा।

मैं सब इन्तिज़ाम कर दूंगा, आमिर ने कहा।

इस बात-चीत के बाद आमिर उठ कर चला गया।

कुछ ही दिनों के बाद मुसलमान अबू बरा के साथ आ गये।

क़बीला बनू आमिर ने उन की मेहमानी शुरू कर दी।

आमिर ने बनू सलीम को इत्तिला पहुंचा दी और मेहमानी का सामान भी भिजवा दिया।

एक दिन जग़ल, जकवान और अस्वा तीनों अबू बरा के पास पहुंचे और मुसलमानों की दावत कर के उन्हें उसी रात अपने खेमों पर आने के लिए कह आए।

मग़रिब की नमाज पढ़ कर अबू बरा और आमिर ने मुसलमानों को बनू सलीम के खेमों पर आने के लिए कहा।

एक बड़े मैदान में बनू सलीम के खेमे लगे हुए थे। खेमे के सामने कम्बलों का फ़र्श बिछा हुआ था। इस फ़र्श पर बनू सलीम के सवा सौ नवजवान भी बैठे ग़प्पें कर रहे थे।

वे अबू बरा, आमिर और मुसलमानों को आते हुए देख कर उठ खड़े हुए। जकवान ने बढ़ कर कहा—

बनू सलीम के लोग कितने खुशनसीब हैं कि उन के खेमों पर नज्द के सरदार अबू बरा आमिर मय अपने शरीफ़ मेहमानों के तशरीफ़ लाये हैं। मैं अपने क़बीले की तरफ़ से आप तमाम लोगों का शुक्रिया अदा करता हूं।

अगर हमारे मेहमान पसन्द फ़रमाएं, तो आज हम अपनी औरतों से ऐसा गाना सुनवाएं, जो आज से पहले इन खेमों में किसी ने नहीं सुना, जग़ल ने कहा।

मेहमानो! आमिर ने कहा, हम तुम्हारी इज्जत बढ़ाने खेमों पर नहीं आए, बल्कि तुम्हारी मशहूर गाने वाली औरतों का गाना सुनने ही के लिए आए हैं।

ज़हे क़िस्मत, तशरीफ़ रखिए, अस्वा ने कहा और सब से पहले गाना ही सुनिए, देखिए हमारी लड़कियों ने गाने में कितना कमाल हासिल कर लिया है।

अबू बरा, आमिर और तमाम मुसलमान फ़र्श पर बैठ गये।

क़बीला बनू सलीम के लोग रेत पर उन के सामने आ बैठे।

जकवान उस जगह से जा चुका था।

थोड़ी देर में वह कुछ नवजवान खूबसूरत लड़कियों को ले कर आ गया।

लड़कियां आ कर एक तरफ़ बैठ गयीं और जग़ल के इशारा करने पर सब ने दफ़ बजाए और दिलकश आवाज में मिल कर गाना शुरू कर

दिया।

उन्हों ने एक नज़्म शुरू की, जिस में हुबल, लात व उज़्ज़ा और नस्र की तारीफ़ थी (ये सभी बुतों के नाम हैं)।

सब भले ही ख़ुश हुए हों, लेकिन मुसलमान इसे नहीं बर्दाश्त कर सके।

जब नज़्म ख़त्म हो गयी, तो मुंज़िर बिन अम्र ने कहा, ऐ अरबो! ऐ बनू सलीम के होशमन्द बेटो! अपने हाथों से बनाये हुए बुतों की तारीफ़ और पूजा करनी छोड़ दो, बल्कि उस ख़ुदा की तारीफ़ बयान करो जिसने सबको पैदा किया, जो बड़ी क़ुदरत वाला है, जो हवाएं चलाता है, पानी बरसाता है, जो बड़ा मेहरबान और बड़ा रहम करने वाला है।

मेहमानो! ठहरो, ज़कवान ने कहा, हम तुम्हारी बातें फिर किसी वक़्त सुनेंगे।

अब औरतों ने फिर गाना शुरू किया। इस बार उन्हों ने जो नज़्म गायी, उस में 'हर्बुल फ़िजार' का ज़िक्र था। इस लड़ाई में लड़ने वाले बहादुरों की तारीफ़ थी।

थोड़ी देर बाद इशा का वक़्त आ गया। मुंज़िर बिन अम्र ने कहा—

अब हमारी इबादत का वक़्त आ गया है, हम को पानी दिया जाए, ताकि हम वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ लें।

जग़ल ने अपने लोगों को इशारा किया।

वे दौड़ कर पानी के मश्कीज़े उठा लाये।

मुसलमानों ने वुज़ू करना शुरू किया।

आमिर ने ज़कवान को अलग ले जा कर कहा, मेरे भाई! मुसलमानों को उसी वक़्त क़त्ल कर डालो, जब वे नमाज़ पढ़ रहे हों।

मुनासिब है, ज़कवान ने कहा, लेकिन अबू बरा को क्या किया जाए?

अंदेशा न करो, आमिर ने कहा, जग़ल से कहो कि वह उसे बातों में लगा कर उन ख़ेमों की तरफ़ ले जाए, जो सामने वाले खजूरों के साए में लगे हुए हैं।

ज़कवान बढ़ा, उसने गाने वाली औरतों को रुख़सत किया और जग़ल को अलग ले जा कर कहा—

तुम अबू बरा को सामने वाले ख़ेमों की तरफ़ ले जाओ। हम मुसलमानों को उसी वक़्त क़त्ल करना चाहते हैं, जब वे नमाज़ पढ़ रहे हों।

ज़कवान ने अपने साथियों से कहा, तुम्हारी आबदार तलवारें कहां हैं?

सब ने अपने-अपने दामनों के नीचे से तलवारें निकाल ली। साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ तलवारें चांदनी में निकल कर बिजली की तरह चमकने लगीं।

ज़कवान ने समझाते हुए कहा, जब ये लोग सज्दे में जाएं, तुम फ़ौरन उन पर टूट पड़ो और एक लम्हा बर्बाद किये बग़ैर सब को क़त्ल कर डालो।

सब ने धीरे से कहा, ऐसा ही होगा, हमारे सरदार!

यह कह कर वे बढ़े और मुसलमानों के क़रीब तीन तरफ़ जा खड़े हुए।

जब मुसलमान सज्दे में गये, सब ने अचानक उन पर हमला कर दिया और तमाम मुसलमानों को शहीद कर दिया।

सिर्फ़ उम्र बिन उमैया किसी तरह बच गये। वे उठ कर खड़े हो गये और निहत्थे ही एक अरब से लिपट गये।

उन्हों ने उस अरब का गला इस ज़ोर से दबाया कि उस की आंखें उबल आयीं और मुर्दा हो कर धड़ाम से ज़मीन पर आ रहा।

कई आदमी अम्र की तरफ़ झपटे।

आमिर ने कहा, इसे क़त्ल न करो, बल्कि गिरफ़्तार कर लो।

अम्र किसी तरह बच कर वहां से भाग निकले।

थोड़ी देर बाद अबू बरा उस जगह आये। उन्हों ने बनू सलीम को मुसलमानों की लाशें उठा-उठा कर ले जाते देख कर पूछा—

दग़ाबाज़ कमीनो! क्या तुम ने मेरी हिमायत तोड़ दी और मुसलमानों को क़त्ल कर डाला।

ज़कवान बोला, या सय्यिदी! अफ़सोस न कीजिए, ये लोग हम को हमारे दीन से हटा कर बेदीन बनाये आये थे, उनका क़त्ल करना ही बेहतर और ज़रूरी था।

तुम ने बहुत बुरा किया, अबू बरा ने कहा, मुझे, मेरे ख़ानदान को, मेरे क़बीले को बट्टा लगा दिया। तारीख़ में मेरा नाम बुरे लफ़्ज़ों में लिखा जाएगा और तमाम अरबों में मैं बदनाम हो जाऊंगा।

अबू बरा को इस का बड़ा सदमा था, उस के चेहरे से रंज व ग़म के निशान ज़ाहिर हो रहे थे।

उस ने कहा, ज़ग़ल तुम नहीं, मेरे भतीजे आमिर ने मेरी अमान को तोड़ा, मुझे दुनिया की नज़रों में ज़लील किया। मैं इस सदमे को अब बर-दाश्त न कर सकूंगा और मर जाऊंगा, लेकिन एक बात कहे देता हूं, कान खोल कर सुन लो, जिस मज़हब के आज तुम ख़िलाफ़ हो रहे हो, जिन लोगों को आज तुम मौत के घाट उतार रहे हो, वह मज़हब सारे अरब ही में नहीं, बल्कि सारी दुनिया में छा जाएगा। तुम सब और तुम्हारा क़बीला सभी इस्लाम की गोद में होंगे। अरब से तो बुतपरस्ती का जनाज़ा ही निकल

जाएगा।

जवाल ने बात काट कर कहा, इत्मीनान रखिए, ऐसा हरगिज़ न होने पायेगा।

अबू बरा को जोश आ गया।

ऐसा ही होगा, इस्लाम की खासियत यह है कि उसे जितना दबाओगे, वह उतना ही उभरेगा।

अबू बरा वहां से ग़म में डूबा हुआ चला गया।

ज़कवान और अस्बा ने मुसलमान शहीदों की लाशें मैदान में फिकवा दीं।

दरिंदगी की इन्तिहा

सलाक़ा के दो बेटे उहद में हज़रत आसिम के हाथों मारे गये थे। उस ने आसिम से बदला लेने के लिए अज़्ल व क़ारा के सात आदमियों को मदीना मुनव्वरा रवाना किया था।

यह वफ़्द धोखा देकर दस मुसलमानों को साथ लाया। उस में एक आसिम भी थे।

रजीअ़ नामी जगह पर हुज़ैल के दो सौ नवजवानों ने हमला कर के आठ मुसलमानों को शहीद कर दिया। दो मुसलमान खुबैब और ज़ैद गिरफ़्तार हो गये।

सलाक़ा खुबैब और ज़ैद को लेकर मक्का में दाखिल हो गयी।

मक्के वालों को इस्लाम और मुसलमान से सख्त नफ़रत थी, इसलिए उन्हों ने गिरफ़्तार करने वालों को मुआवज़ा देकर दोनों क़ैदियों को हारिस बिन आमिर के घर में क़ैद कर दिया और हारिस को हिदायत कर दी कि वह उन्हें भूखा-प्यासा रखे, उस वक़्त तक खाने के लिए कुछ न दे, जब तक कि वे इस्लाम से फिर न जाएं।

चुनांचे हारिस ने सख्ती से इस पर अमल किया।

खाना और पानी बन्द होने से खुबैब और ज़ैद रज़ि० को सख्त तक्लीफ़ हुई, पर खुदा के नेक बन्दों और इस्लाम के इन जां-निसारों ने निहायत सब्र व शुक्र से इस मुसीबत का मुक़ाबला किया।

कई दिन इसी तरह भूखे-प्यासे पड़े रहे।

एक दिन हारिस और सफ़वान बिन उमैया हज़रत खुबैब और ज़ैद के पास आए। देखा तो इन दोनों की हालत बयान करने के क़ाबिल न थी। कमज़ोरी बढ़ी हुई थी और सूख कर हड्डियों का ढांचा बन गये थे, आंखें

अन्दर को धंस गयी थीं, चेहरे पीले और सुस्त हो गये थे। भूख और प्यास ने उन्हें मौत से क़रीब कर दिया था।

हारिस ने इन दोनों को मुख़ातब करते हुए हुए कहा—

मुसलमानो ! हम दोनों क़ुरैश को भेजे हुए तुम्हारे पास आए हैं। अगर तुम दोनों इस्लाम छोड़ दो, और अपने बाप-दादा के मज़हब में दाख़िल हो जाओ, तो जिस चीज़ की तुम ख़्वाहिश करो, तुम्हें मिल जाए।

लेकिन अगर हम इस्लाम न छोड़ें तो ? हज़रत ख़ुबैब ने पूछा।

तो एक-एक दाना और एक-एक बूंद पानी के लिए तरस कर मरो, हारिस ने जवाब दिया।

हमें इसी तरह मरना मंज़ूर है, ज़ैद ने ख़ुश हो कर कहा।

हिमाक़त न करो, हारिस ने फिर समझाया। माल व दौलत व दुनिया ठुकराओ नहीं।

अगर तुम ने यह समझ रखा है कि हम लालच में मुसलमान हुए हैं, तो यह तुम्हारी भूल है, हज़रत ख़ुबैब बोले, हम तो ख़ूब सोच-समझ कर अपनी आख़िरत बनाने के लिए मुसलमान हुए हैं और आख़िरी सांस तक इस्लाम पर क़ायम रहेंगे।

ख़ुबैब ! ख़ूब सोच लो, सफ़वान ने कहा, आख़िर ऐसे मज़हब, रसूल और ख़ुदा को अपनाने से क्या फ़ायदा, जो तुम्हारी मदद न करे।

ख़ुदा मुसलमानों की आज़माइश करता है, ख़ुबैब ने फ़रमाया, हमें चाहिए कि हम इस आज़माइश में खरे उतरें।

गोया तुम मौत को ज़िन्दगी पर तर्जीह देते हो, हारिस ने बिगड़ कर कहा।

हां, हम शिर्क और कुफ़्र की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में मौत को तर्जीह देते हैं, हज़रत ख़ुबैब ने कहा।

अच्छा, तो तुम अपनी मौत का इन्तिज़ार करो, कल तुम्हारी ज़िंदगियां ख़त्म कर दी जाएंगी, हारिस ने ग़ुस्से और झुंझलाहट में कहा।

हज़रत ख़ुबैब ख़ामोश हो गये।

हारिस और सफ़वान दोनों चले गये।

अभी हारिस और सफ़वान को मज़्लूम क़ैदियों के पास से गये हुए थोड़ी ही देर हुई थी कि हारिस का बच्चा छुरी हाथ में लिए खेलता हुआ वहां आ गया और ख़ुबैब के पास आ कर खड़ा हो गया।

हज़रत ख़ुबैब ने उसे प्यार व मुहब्बत से बुलाया।

बच्चा फट से उन के पास आ गया।

उन्हों ने उस से छुरी ले कर अलग रख दी और उसे अपने जानू पर बिठा कर उस से बातें करने लगे।

बच्चा छोटी उम्र का था। अभी बोलना सीखा था, उस ने कहा--

चचा! तुम जंजीरें पहने क्यों बैठे हो?

हम को तुम्हारे अब्बा ने क़ैद कर रखा है, हज़रत खुबैब ने कहा।

क्यों? बच्चे ने कहा।

इसलिए कि हम मुसलमान हैं, अल्लाह की इबादत करते हैं, खुबैब ने कहा।

अल्लाह कहां है? बच्चे ने पूछा।

वह हर जगह है, वहां आसमान पर रहता है, खुबैब ने बताया।

मुझे आसमान पर ले चलो।

बेटा तुम आसमान पर नहीं जा सकते।

बच्चा कुछ कहना चाहता था कि किसी औरत के चीख मारने की आवाज़ आयी।

खुबैब, ज़ैद और बच्चे ने एक साथ नज़रें उठा कर देखा।

हारिस की बीवी यानी बच्चे की मां सामने खड़ी ग़म से कांप और रो रही थी।

बच्चे ने कहा, मेरी अम्मी जान रो रही हैं।

औरत कांपते और रोते हुए उन की तरफ़ बढ़ी। उस ने आजिज़ी के साथ कहा—

ऐ खुदा रसीद, मुसलमानो! मेरा एक ही बच्चा है, उसे मार कर मेरी ज़िन्दगी कड़वी न कर देना।

मोहतरम खातून! खुबैब रज़ि० ने कहा, आप किसी क़िस्म का ग़म न करें। अगरचे हम खूब जानते हैं कि तुम दुश्मन हो, हमें भूखा-प्यासा रख कर मारना चाहते हो, लेकिन यह भी याद रखो कि हम मुसलमान हैं। हमारे दिल में रहम व मुरव्वत का जज़्बा है। हम तुम्हारे कलेजे के इस टुकड़े को मार कर तुम्हारे दिल को सदमा न पहुंचायेंगे। हमारे दुश्मन तुम्हारी क़ौम के बड़े आदमी हैं। यह बच्चा मासूम है। कोई मुसलमान किसी बच्चे का क़त्ल नहीं करता।

नेकदिल मुसलमानो! औरत ने कहा, मेरे बच्चे को मुझे वापस दे दो, मैं उम्र भर तुम्हारी शुक्र गुज़ार रहूंगी।

औरत को यक़ीन न था कि मुसलमान उस बच्चे को छोड़ेंगे। यह तो सिर्फ़ धोखे की तसल्ली है, जो लोग कई दिन से भूखे-प्यासे हैं, जिन्हें क़त्ल

कर दिये जाने की धमकी दी जा चुकी है, वे दुश्मन के बच्चे को क्यों छोड़ने लगे।

औरत अब भी दाढ़ें मार-मार कर रो रही थी।

वह ज़रा फ़ासले पर आ कर दो ज़ानू बैठ गयी।

उस ने दोपट्टे का आंचल फैला कर कहा—

मुसलमानो! अपने नबी के तुफ़ैल! मेरा बच्चा वापस दे दो। आह! अगर तुमने उसे मार डाला, तो मैं बे मौत मर जाऊंगी।

यह अम्मी जान! भला क्यों रो रही हैं! बच्चे ने हज़रत ख़ुबैब की तरफ़ देखते हुए कहा।

तुम्हारी अम्मी को ख़तरा है कि कहीं हम तुम को मार न डालें! हज़रत ख़ुबैब ने बताया।

तुम मुझे क्यों मार डालोगे? बच्चे ने पूछा।

मेरे बच्चे! तेरा बाप और तेरी क़ौम इन मुसलमानों के दुश्मन हैं, औरत बोल पड़ी, क्या अजब है कि ये बदले के जोश में तुम्हें क़त्ल कर डालें! तू इन के पास से चला आ।

ख़ातून! हज़रत ख़ुबैब ने कहा, मत डरो।

फिर बच्चे से कहा—

प्यारे बच्चे! अपनी अम्मी जान के पास चले जाओ। देखो वह बहुत परेशान हैं।

क्यों चला जाऊं? बच्चे ने कहा, अम्मी जान! तुम रोओ मत, मैं आ जाऊंगा। आप किसी क़िस्म का ग़म न करें।

मेरे बच्चे! मेरे पास आ जा, औरत ने कहा।

ख़ुबैब ने बच्चे को खड़ा कर के छुरी उठायी।

औरत का कलेजा दहल गया। मारे ग़म के उस के आंसू सूख गये। वह समझ गयी कि अब छुरी उस के मासूम बच्चे के हलक़ पर चलने वाली है।

उस पर तो मौत की सी ग़शी आने लगी।

ख़ुबैब ने छुरी बच्चे के हाथ में दे कर कहा, प्यारे बच्चे! जाओ, अपनी अम्मी जान के पास चले जाओ।

बच्चा चला।

उस की मां ने लपक कर बच्चे को सीने से लगा लिया।

शुक्र अदा करने जैसे अन्दाज़ में उस ने हज़रत ख़ुबैब को देखा और बोली—

मज़्लूम मुसलमानो! तुम्हारा शुक्रिया, हज़ार-हज़ार शुक्रिया। कोई

क़ौम दुश्मन के बच्चे पर इतना रहम व करम नहीं करती, जितना कि तुम ने किया। तुम्हारे नबी ने जहां ख़ुदापरस्ती और परहेज़गारी की तालीम दी है, मालूम होता है, वहीं मेहर व मुरव्वत की तालीम भी दी है।

औरत बच्चे को सीने से लगाये वापस चली गयी।

अभी वह पूरा सेहन तै भी न कर पायी थीं कि सफ़वान, हारिस, अबू-सुफ़ियान, इक्रिमा और कई दूसरे क़ुरैशी सरदार आ गये और ज़ैद और ख़ुबैब के पास आ कर खड़े हो गये।

आज मैं ने तुम्हारी क़ीमत क़ुरैश के सरदारों को दे कर तुम्हें ख़रीद लिया है, सफ़वान ने कहा, मेरा बाप उबैदा बद्र की लड़ाई में मारा गया था, इसलिए मैं अपने बाप के ख़ून के बदले में तुम दोनों को क़त्ल करूंगा।

एक मुसलमान की ख़्वाहिश शहादत से ज़्यादा और किसी चीज़ की नहीं हो सकती। मैं ख़ुदा का शुक्र गुज़ार हूं कि आज रंज व आलम की दुनिया छोड़ कर अबदी आराम व राहत की जगह पहुंच जाऊं, हज़रत ज़ैद ने कहा।

तुम बच सकते हो, अगर इस्लाम छोड़ दो, हारिस ने कहा।

इस्लाम ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक न छोड़ूंगा, हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया।

नस्तास! सफ़वान ने कहा, इस ज़ंजीर को खोलकर इसे हरम की हदों से बाहर ले चलो।

नस्तास सफ़वान का ज़र ख़रीद ग़ुलाम था।

वह बढ़ कर ज़ंजीर खोलने लगा।

ख़ुबैब रज़ि० की आंखों में आंसू भर आये, उन्हों ने फ़रमाया—

ज़ैद! मैं तो समझता था, तुम से पहले मैं शहीद किया जाऊंगा, लेकिन मेरा ख़्याल ग़लत है। बेदर्द, ज़ालिम, वहशी और ना ख़ुदातरस काफ़िर मुझे पहले नहीं, बल्कि तुम को मौत के घाट उतरना चाहते हैं।

प्यारे भाई! ख़ुदा की क़सम! हज़रत ज़ैद ने मुस्करा कर कहा, मैं तुझ से ज़्यादा ख़ुदा से मिलने का आरज़ूमंद हूं।

नस्तास ने ज़ैद की ज़ंजीर खोल ली थी।

वह उठ कर खड़े हो गये थे।

ख़ुबैब भी उठे और उन्हों ने फ़रमाया—

मेरे ख़ुशनसीब भाई! मुल्के अदम के आख़िरी मुसाफ़िर! आख़िरी मर्तबा गले मिल लो। मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे आऊंगा।

दोनों गले मिल कर चले।

ज़ैद ! तुम सैयदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा से मिलोगे, तो उन से मेरा सलाम कह देना, ख़ुबैब ने कहा।

ज़रूर कहूंगा, अच्छा भाई ! सलाम ! ज़ैद ने कहा।

ख़ुबैब ने सलाम का जवाब दिया।

नस्तास ज़ंजीर पकड़ कर चला।

क़ुरैशी सरदार उन के पीछे चले।

अगरचे ख़ुबैब ने बहुत सब्र से काम लिया, लेकिन फिर भी उन की आंखों में आंसू छलक आए।

जब ज़ैद दूर निकल गये, तो ख़ुबैब ने आंसू पोंछे और कहा—

ऐ ख़ुदा ! ज़ैद को फ़िर्दौसे बरीं में जगह देना और ऐ ख़ुदा ! मुझे भी अपने हबीब के सदक़े में जन्नत में भेज देना।

ज़ैद जब हारिस के घर से निकले, तो उन्हों ने सैकड़ों को रास्ते के सिरों पर खड़े देखा।

वह समझ गये कि मक्का के लोग उन के क़त्ल का तमाशा देखने के लिए उमड़ आये हैं।

नस्तास ज़ंजीर पकड़े-पकड़े आगे जा रहा था।

ज़ैद ज़ंजीरों में जकड़े हुए पीछे आ रहे थे।

उन के पीछे क़ुरैश के सरदार और उन के पीछे जनता के लोग हुबल की जय के नारे लगाते जा रहे थे।

इन लगातर नारों को सुन-सुन कर लोग बे-तहाशा भाग-भाग कर आ रहे थे और उस मज्मे में शामिल होते जाते थे। हरम की हदों से बाहर आते-आते हज़ारों का मज्मा हो गया।

हरम से बाहर एक बड़ा मैदान था। इस मैदान में कुफ़्फ़ार के लोग गोल दायरे की शक्ल में खड़े हो गये और बीच में ज़ैद को खड़ा किया गया।

अबू सफ़ियान बढ़ कर ज़ैद के पास पहुंचा। उसने कहा—

ज़ैद ! तुम्हारा आख़िरी वक़्त आ पहुंचा। थोड़ी देर में नस्तास की तलवार तुम्हारा काम तमाम कर देगी। क्या यह बात अच्छी न थी कि इस वक़्त तुम अपने मकान पर अपने घर वालों में आराम से बैठे होते और तुम्हारे बजाय मुहम्मद को तलवार के घाट उतारते।

हम पर और हमारे इस आराम पर लानत है कि हम अपने घर में आराम से बैठें और हुज़ूर सल्ल० के कांटा भी चुभे, हज़रत ज़ैद ने जवाब दिया। ख़ुदा की क़सम ! कोई मुसलमान इस बात को हरगिज़ बरदाश्त नहीं कर सकता। हुज़ूर सल्ल० के पसीना आने से पहले बेहतर है कि

हमारा ख़ून बह जाए।

हुबल की क़सम ! अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं ने आज तक किसी ऐसे दोस्त को नहीं देखा है, जैसे मुहम्मद सल्ल० के दोस्त हैं, इतने फ़िदाकार और जां-निसार कि ऐसे दोस्त पूरी दुनिया में भी न मिलेंगे।

सूरज अगर पूरब के बजाए पश्चिम से निकलने लगे, तब भी यह ना-मुम्किन है कि मैं इस्लाम से अपने हाथ खींच लूं, ज़ैद ने कहा।

अब सफ़वान ने नस्तास की तरफ़ इशारा किया।

नस्तास ने तलवार उठायी।

ज़ैद रज़ि० ने सर झुका कर कलिमा तैयिबा पढ़ा।

तलवार उन की गरदन पर पड़ी, सर कट कर गिरा और साथ ही लाश भी गिरी।

हज़रत ज़ैद शहीद हो गये। मुश्रिकों ने उन की शहादत पर ज़ोर-ज़ोर से 'हुबल की जय' के नारे बुलन्द किये।

जब ज़ैद शहीद हो गये, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, क्यों न ख़ुबैब को आज ही सूली दे दी जाए ?

लोगों को इबरत दिलाने के लिए इस से बेहतर और कौन सा मौक़ा हो सकता है ? इक्रिमा बोला।

अबू सुफ़ियान ने अपने ग़ुलामों को सूली खड़ा करने का हुक्म दे दिया।

ग़ुलामों ने लम्बे-लम्बे तीन शहतीर ला कर खड़े कर दिए और उन के सिरे खजूर की मज़बूत रस्सियों से बांध दिए।

जब इस तरह से सूली तैयार हो गयी, तो अबू सुफ़ियान ने हुजर बिन अबी वहाब को हज़रत ख़ुबैब को लाने का हुक्म दिया।

वह कुछ लोगों को साथ ले कर चला और थोड़ी देर में हज़रत ख़ुबैब को ले आया।

अबू सुफ़ियान ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० से कहा—

ख़ुबैब ! तुम्हारे लिए सूली खड़ी कर दी गयी है, तुम्हारे साथी की लाश ज़मीन पर पड़ी है। अब तुम्हारा नम्बर है। अगर तुम अभी इस्लाम छोड़ दो और हुबल की पनाह में आ जाओ, तो तुम्हारे लिए वह चीज़ मुहैया कर दी जाएगी, जिसे तुम चाहोगे।

तुम या तुम्हारे ख़ुदा मुझे अबदी ज़िंदगी दे सकते हो ? हज़रत ख़ुबैब ने कहा।

यह नामुम्किन है, अबू सुफ़ियान ने कहा, मौत और ज़िंदगी किसी दूसरी ताक़त के क़ब्ज़े में है।

फिर तुम उस को क्यों नहीं पूजते ? खुबैब रज़ि० ने कहा।

आखिर तू मुसलमान है, अबू सुफ़ियान ने कहा, और मुसलमान कभी इस्लाम से नहीं फिरता, इसलिए इन बातों में क्यों वक़्त बर्बाद किया जाए।

बेशक मुसलमान कभी किसी लालच या डर से इस्लाम नहीं छोड़ सकता, हज़रत खुबैब ने कहा, जब मैं ने इस्लाम अपनाया था तो मुझे अफ़सोस हुआ था कि मैं सबसे पहले मुसलमान क्यों न हो गया ?

अब मुसलमान होने का मज़ा चखना, अबू सुफ़ियान ने बिगड़ कर कहा हुजर ! इसे सूली पर चढ़ा दो और पन्द्रह नेज़ाबाज़ों से कहो कि अपने नेज़ों से इस के बदन छेद डालें।

अबू सुफ़ियान ! हज़रत खुबैब ने कहा, क्या तू आखिरी वक़्त मुझे नमाज़ की इजाज़त देगा ?

कुछ हरज नहीं अबू सुफ़ियान ने कहा, जब तक कि हमारे नेज़े बाज़ आएं, तू नमाज़ पढ़ ले।

अच्छा, ज़रा सा पानी मुझे वुज़ू करने के लिए मंगा दो, खुबैब ने कहा।

अबू सुफ़ियान ने अपने एक ग़ुलाम को इशारा किया।

वह पानी लाया।

हज़रत खुबैब ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने खड़े हो गये।

उन्हों ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी थी कि पन्द्रह नेज़ेबाज़ नेज़े ताने हुए आ गये।

जब वह नमाज़ पढ़ चुके तो अबू सुफ़ियान ने हुजर को इशारा किया।

उस ने खुबैब के हाथ खजूर की मज़बूत रस्सी में बांध कर उन्हें सूली पर लटकाया।

इक्रिमा ने नेज़ाबाज़ों को इशारा किया।

वे नेज़ा तान-तान कर बढ़े और उन्होंने हज़रत खुबैब रज़ि० के कचोके देकर छेदना शुरू किया।

हज़रत खुबैब रज़ि० के जिस्म पर नेज़े मारे जा रहे थे। उन्हें तक्लीफ़ हो रही थी, लेकिन उन के मुंह से उफ़ तक का इज़्हार न होता था, कचूकों की तक्लीफ़ को होंठों से दबा कर बरदाश्त कर रहे थे।

यह कुछ कम बहादुरी और जुर्रात की बात न थी।

उन के जिस्म पर इतनी नेज़ेबाज़ी की गयी कि आखिरकार उन की रूह जिस्म से निकल गयी और जिस्म का ढांचा लटका रह गया।

ज़ालिम वहशियों और ना खुदातरस ज़ालिमों ने इस तरह एक मुसलमान को तड़पा-तड़पा कर उस की जान ले ली।

हज़रत मुहम्मद सल्ल०
की ज़िंदगी के हालात

आफ़ताबे आलम

भाग : 4

लेखक
मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

आफ़ताबे आलम

लेखक

मौलाना मुहम्मद सादिक़ हुसैन सरधनवी मरहूम

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Aaftab-e-Aalam

Author:

Maulana Muhammad Sadiq Hussain Sardhanvi Marhoom

Edition: **2014**

Pages: **86 + 126 + 130 + 140 = 482**

प्रकाशक

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

बनू नज़ीर की लड़ाई

आमिर बिन तुफ़ैल के कहने से बनू सलीम ने सत्तर मुसलमानों को बे-गुनाह नमाज़ पढ़ते हुए बड़ी बे-दर्दी से शहीद कर दिया था। उन में से सिर्फ़ अम्र बिन उमैया बाक़ी बच गये थे।

अम्र बीरे मऊना से पैदल ही चल पड़े। उन्हें अपने साथियों के शहीद हो जाने का ग़म व मलाल और सदमा था।

जो लोग शहीद किये गये थे, वे सब हाफ़िज़ व क़ारी थे।

अम्र को इन सब साथियों के शहीद होने का बड़ा मलाल था। रास्ता चलते रोते रहते, क़लक़ से निढाल हो गये थे।

चूंकि वह ग़म सहते-सहते कमज़ोर और निढाल हो गये थे, इसलिए क़दम जल्द-जल्द न उठते थे, मुश्किल से सफ़र कर पा रहे थे। रास्ते में हर वक़्त यह अंदेशा था कि कहीं कोई ज़ालिम उन्हें भी शहीद न कर दे।

यह सही है कि अम्र को मौत की परवाह न थी, न वह किसी ज़ालिम से डरते थे, हां, वह यह ज़रूर चाहते थे कि हुज़ूर सल्ल० को मुसलमानों के अंजाम की ज़रूर ख़बर हो जाए, इसलिए वह वहशी बुतपरस्तों की नज़रों से बचते हुए सफ़र कर रहे थे।

कई दिन के बाद उन्हों ने बनू आमिर और बनू सलीम के इलाक़े पार किये।

अब कुछ अंदेशा कम हुआ और वह बे-फ़िक्री से सफ़र करने लगे।

वक़्त गुज़रने के साथ-साथ हज़रत अम्र का ग़म भी कम हो गया।

एक दिन अम्र एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां रेत के टीले बिखरे पड़े थे। वह टीलों के दामन में धीरे-धीरे चले जा रहे थे कि उन्हें बातें करने की आवाज़ आयी।

वह चौंक पड़े, उन्हों ने आवाज़ की तरफ़ अपने कान लगा दिये।

कोई कह रहा था कि मुसलमानों की तायदाद हर दिन बढ़ती चली जा रही है, अब वे हमारी क़ौम के लिए मुस्तक़िल ख़तरा बन गये हैं। बद्र और उहुद की लड़ाई ने उन्हें पूरे अरब में मशहूर कर दिया है। अगर उन की तरक़्क़ी की यही रफ़्तार रही, तो यक़ीनन वे तमाम मज़हबों को अपने अन्दर जज़्ब कर लेंगे और हमारा मज़हब मिट जाएगा।

इस में कोई शक नहीं, दूसरी आवाज़ आयी, न मालूम अरबों को क्या

हो गया है कि वे अपना मजहब छोड़ कर इस्लाम में दाखिल होते चले जा रहे हैं। वह तो कहिए, लड़ाई छिड़ गयी है, वरना अगर मुसलमानों को अम्न व आफ़ियत से तब्लीग़ का मौक़ा मिल जाता, तो कुछ ही दिनों में सारे अरब को मुसलमान कर लेते और फिर हमारी क़ौम को भी मुसल-मान होना पड़ता।

तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, पहले आदमी ने कहा, लड़ाई की वजह से हमारी क़ौम में मुसलमानों की तरफ़ से नफ़रत व हिक़ारत के जज़्बे बढ़ गये हैं और इन जज़्बों ने उन्हें मुसलमान होने से रोक दिया है।

अम्र ठिठक कर खड़े हो गये।

यह जगह जहां अम्र खड़े थे, रेत के एक टीले का दामन था। इस जगह से रास्ता अरब की तरफ़ घूम गया था।

अम्र निहत्थे थे, तन्हा थे, बातें करने वालों की आवाज़ से उन्हों ने अन्दाज़ा लगा लिया था कि आने वाले दो आदमी थे और चूंकि हर मुसा-फ़िर या अरब का हर आदमी हर वक़्त तलवार और नेज़ा अपने पास रखता था, इस लिए अम्र ने भी समझ लिया था, कि आने वाले अरबों के पास तलवार और नेज़े ज़रूर होंगे।

यह उन दोनों की बात से पता चल गया था कि आने वाले बुतपरस्त हैं।

कुछ ही क़दम के फ़ासले पर रेत के टीले का कुछ हिस्सा घूंघट की तरह आगे को बढ़ा हुआ था।

अम्र जल्दी से लपक कर घूंघट की आड़ में खड़े हो गये।

कुछ ही देर में दो अरब तलवारें लटकाये और नेज़े हाथों में लिये हुए आये और अम्र के बराबर से हो कर निकले।

दोनो बातें करते हुए जा रहे थे।

एक कह रहा था कि हमारा क़बीला बनी साद फिर भी ग़नीमत है, इस क़बीले तक इस्लाम का असर नहीं पहुंचा।

दूसरे ने कहा, मगर क़बीला बनी नज़ीर, जिस की शाख हमारा क़बीला है ?

पहले ने कहा, मगर यह क़बीला अपने बाप-दादा के मजहब पर क़ायम है। यह और बात है कि वह मुसलमानों से समझौता कर के उन का दोस्त बन गया है।

पर वह परदे के पीछे से इस्लाम और मुसलमानों की जड़ उखाड़ने की जद्दोजेहद में लगा हुआ है, दूसरे ने बताया।

हां, हम देख रहे हैं, पहले ने कहा कि किस वक़्त मुसलमानों का खात्मा

कर दें। अगर मुसलमानों का हादी, जिसे वे लोग ख़ुदा का रसूल कहते हैं, किसी तरह से मारा जाए (नऊज़ुबिल्लाह), तो इस्लाम का ख़ात्मा हो जाए।

अब वे दोनों बातों-बातों में अम्र से आगे बढ़ गये।

उन्हों ने अम्र को नहीं देखा।

अम्र ने बढ़ने का इरादा किया।

अभी वह एक क़दम भी आगे न बढ़े थे कि कुछ सोच कर पलटे और दबे क़दमों मुसाफ़िरों की तरफ़ चले। उन के क़रीब पहुंच कर उछले और उन में से एक की कमर पर लात मारी।

चूंकि दोनों मुसाफ़िर बेफ़िक्री से चले जा रहे थे, इस लिए अम्र के लात से दोनों ख़ौफ़ व दहशत से उछल पड़े।

जिस के लात लगी थी, वह तो गिर पड़ा और दूसरा डरी-डरी निगाहों से अम्र की तरफ़ देखने लगा।

अम्र ने इन दोनों की हैरत और ख़ौफ़ से फ़ायदा उठाया।

उन्हों ने जल्दी से बढ़ कर उस आदमी के हाथ से, जो डरी निगाहों से उन्हें देख रहा था, नेज़ा छीन लिया और इंतिहाई तेज़ी से उस के सीने पर नेज़ा मारा। अनी सीना तोड़ कर पीठ के पार निकल गयी। वह एक दिल हिलाने वाली चीख़ के साथ गिरा।

इस बीच दूसरा मुसाफ़िर उठ कर खड़ा हो गया। ख़ौफ़ और हैरत से वह भी भौंचक्का-सा हो रहा था।

अम्र ने जल्दी से नेज़ा खींच कर फिर ताना।

उस अरब ने देख लिया।

उस ने भी नेज़ा उठाया, लेकिन इस से पहले कि वह नेज़ा मारता, उस के सीने पर भी नेज़ा लगा। अनी सीना तोड़ कर पीठ के पार निकल गयी।

वह भी एक दिल हिला देने वाली चीख़ के साथ गिरा और नेज़े पर गिर कर घूमने लगा।

अम्र ने नेज़ा निकाला, दोनों के हथियार लिये और चल खड़े हुए।

कई दिन लगातार चलने के बाद मदीना पहुंचे।

मस्जिदे नबवी में आए, हुज़ूर सल्ल० कुछ साथियों के साथ मस्जिद में रौनक़ फ़रमा थे।

अम्र को देखते ही हुज़ूर सल्ल० कुछ परेशान-से हो गये।

जब अम्र ने क़रीब पहुंच कर सलाम किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने सलाम का जवाब दे कर पूछा, अम्र ! तुम तन्हा कैसे आए ? तुम्हारे और साथी

कहां हैं ?

अम्र की आंखों में आंसू छलक आए। उन्हों ने कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ज़ालिम और दग़ाबाज़ों ने बड़े ज़ालिमाना अन्दाज़ में उन्हें शहीद कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० इस बुरी ख़बर को सुन कर बहुत ज़्यादा बेक़रार हुए। आप ने बहुत बेचैन हो कर पूछा, क्या हुआ अम्र ?

अम्र ने ग़म की पूरी दास्तान सुना दी।

तमाम सहाबा और ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल० को बड़ा रंज व क़लक़ हुआ। सब के चेहरे ग़म व हसरत में डूब गये।

हुज़ूर सल्ल० ने ठंडी सांस लेते हुए कहा, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

हुज़ूर सल्ल० के पास बैठने वालों में हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली और कुछ दूसरे सहाबा थे। हज़रत अली रज़ि० को जोश आ गया। आप ने कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! बनू आमिर और बनू सलीम ने ग़द्दारी की है, बड़ी दरिंदगी का सबूत दिया है, इन वहशी कमीनों का सर कुचलने के लिए मुझे इजाज़त दीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे।

दर असल हुज़ूर सल्ल० के दिल पर इस ख़बर ने जो सदमा पहुंचाया था, आप उस पर ग़लबा पाने की कोशिश कर रहे थे।

हज़रत उमर रज़ि० के चेहरे से जलाल टपक रहा था। आप ने कहा,

ख़ुदा के मोहतरम रसूल सल्ल०! यह ऐसा बड़ा हादसा हुआ है, जिस ने हमारे दिल फाड़ दिये हैं। हमारे सब्र का पैमाना भर चुका है। हम को इजाज़त दीजिए कि हम इन दग़ाबाज़ मक्कारों से इंतिक़ाम लें।

तमाम सहाबा के चेहरे लाल हो रहे थे, आंखों से चिंगारियां निकल रही थीं। जोश व ग़ज़ब में भरे हुए थे।

हुज़ूर सल्ल० ने सब के चेहरों पर सरसरी नज़र डाली और कुछ देर के बाद आप ने फ़रमाया,

ख़ुदा इन दग़ाबाज़ों को ख़ुद सज़ा देगा! मुसलमानो! यह हादसा वाक़ई बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं है, मगर तुम को सब्र व ज़ब्त भी सीखना चाहिए, इस लिए सब्र करो, क्योंकि अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

अब अम्र बैठ गये।

हुज़ूर सल्ल० ने उन से सफ़र की तफ़्सील पूछी।

उन्हों ने पूरे सफ़र की तफ़्सील बता दी ! क़बीला बनी साद के दो काफ़िरों को मार डालने का वाक़िआ भी कह सुनाया।

आप ने इस वाक़िए को सुन कर कहा, अम्र ! अनजाने में तुम से ग़लती हो गयी।

हुज़ूर सल्ल० ! क्या ग़लती हुई ? अम्र ने पूछा।

वे दोनों आदमी क़बीला बनी साद के थे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और हम से समझौता कर गये थे।

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अम्र ने अर्ज़ किया, तब तो वाक़ई मुझ से ग़लती हो गयी, लेकिन में बे-क़सूर हूं, क्योंकि मुझे उन के समझौते का इल्म न था। ख़ुदा मेरी इस ग़लती को माफ़ करे।

हां, तुम से अनजाने में ग़लती हुई, हुज़ूर सल्ल० नें फ़रमाया, हमें इन के क़बीले को इन दोनों का ख़ून बहा अदा करना चाहिए। क़बीला बनी साद, क़बीला बनू नज़ीर की एक शाख़ा है। चलो, बनू नज़ीर से मश्विरा कर के ख़ून बहा अदा करें।

क़बीला बनी नज़ीर यहूदी था। क़बीला बनू साद भी यहूदी था। बनू नज़ीर क़बीला मदीना मुनव्वरा से एक मील की दूरी पर अपने क़िले में रहता था।

हुज़ूर सल्ल० उसी वक़्त उठ खड़े हुए। हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत अली और हज़रत उस्मान को साथ लिया और बनी नज़ीर के क़िले की तरफ़ तशरीफ़ ले चले।

हुज़ूर सल्ल० बनू नज़ीर से क़बीला बनू साद को ख़ून बहा अदा करने के लिए मश्विरा करने तशरीफ़ ले गये थे। जब आप क़बीला बनू नज़ीर में पहुंचे तो तमाम सरदार यहूदी हुज़ूर सल्ल० की पेशवाई के लिए बाहर निकले।

सलाम व दुआ के बाद आप ने फ़रमाया,

मुअज़्ज़ज़ यहूदियो ! तुम मुसलमानों से अहद कर चुके हो ?

बनू नज़ीर के सरदार हुज़ूर सल्ल० से यह सुन कर बहुत घबराये। वजह यह थी कि वे लोग रात, दिन हुज़ूर सल्ल० और मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने के मंसूबे बांधा करते थे। उन्हें डर हुआ कि शायद हुज़ूर सल्ल० को उन के मश्विरे की इत्तिला हो गयी है और हालात मालूम करने के लिए तशरीफ़ लाये हैं।

चूंकि मुसलमानों की ताक़त हर दिन बराबर बढ़ती जा रही थी और क़बीला बनू नज़ीर में उन के मुक़ाबले की ताब न थी, इस लिए वे बहुत

घबराये। उन में से एक आदमी ने कहा—

हां, हम ने हुज़ूर सल्ल० से समझौता किया है और हम अपने समझौते पर क़ायम हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बनू नज़ीर के मोहतरम लोगो! एक मुसलमान ने अनजाने में क़बीला बनी साद के दो आदमी क़त्ल कर डाले हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे और क़बीला बनी साद के दर्मियान हो कर मक़्तूलों के वारिसों को ख़ून बहा अदा करा दें।

यह सुन कर क़बीला बनू नज़ीर ने इत्मीनान की सांस ली। उन्हों ने कहा,

हुज़ूर सल्ल०! यह कौन-सी बड़ी बात है? क़बीला बनी साद हमारी एक शाख़ है। हम जिस तरह उन से कहेंगे, वे राज़ी हो जाएंगे, आप मुतमइन रहें, हम यह मामला तै करा देंगे।

बातें करते हुए ये लोग क़िले के दरवाज़े पर आ पहुंचे।

एक यहूदी ने यहां पहुंच कर कहा—

हुज़ूर सल्ल०! हम अर्से से आप के तशरीफ़ लाने का इन्तिज़ार कर रहे थे। हमारी आरज़ू है कि हमारी दावत क़ुबूल कर लें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कोई हरज नहीं, मुझे तुम्हारी दावत मंज़ूर है।

यहूदी आप को और आप के साथी मुसलमानों को साथ लेकर एक बड़े मकान में पहुंचे। उस मकान के पीछे की दीवार क़िले की फ़सील थी। फ़सील की मुंडेर पर एक बड़ा पत्थर रखा हुआ था, जो आधे के क़रीब दीवार से लटक रहा था।

मकान के मालिक ने जल्दी से क़ालीन ला कर फ़सील के नीचे इस अन्दाज़ से बिछा दिया, जिस से अगर किसी तरह पत्थर उस जगह से सरक कर गिरे, तो नीचे बैठने वालों के ऊपर आ कर पड़े और उन्हें कुचल डाले।

हुज़ूर सल्ल० और आप के चारों साथी क़ालीन पर बैठ गये।

कुछ लोग उन के सामने उन से कुछ दूरी पर इस तरह बैठ गये, गोया कि वे हुज़ूर सल्ल० का अदब व एहतिराम कर रहे हैं।

कुछ यहूदी वहां से चले गये। वे बराबर वाले मकान में पहुंचे और राज़दाराना तरीक़े से मश्विरे करने लगे।

उन में से एक अधेड़ उम्र के आदमी ने कहा—

क़िस्मत ने साथ दिया है। हमारा और हमारी क़ौम का दुश्मन हमारी

इज़्ज़त व हश्मत, साथ ही हमारे मज़हब का दुश्मन ख़ुद ही हमारे पास चला आ रहा है।

ऐसा मौक़ा फिर नहीं आएगा। यह ख़ुदा की मेहरबानी है। आज हमें उस का और उसके साथियों का, जिन पर उसे भरोसा है, ख़ात्मा कर के अपनी क़ौम और अपने मज़हब को आने वाले ख़तरों से बचाना है, मश्विरा देने वाले ने मश्विरा दिया, कोई ताक़तवर और होशियार आदमी फ़सील के ऊपर चढ़ जाए और पत्थर को, जो फ़सील के आगे निकला हुआ है, लुढ़का दे, तो मुसलमानों और उस के नबी का ख़ात्मा हो जाए।

ख़ूब तज्वीज़ सूझी है, एक नवजवान यहूदी ने ताली बजा कर कहा, निहायत मुनासिब तज्वीज़ है। मैं अभी उस पत्थर को जा कर गिराये देता हूं।

मेरे ख़्याल में यह मुनासिब नहीं है, एक बूढ़े यहूदी सलाम बिन मुश्कम ने कहा, सोचो, एक मुसलमान से दो यहूदी अनजाने में क़त्ल कर दिये गये हैं, मुसलमान इन दोनों का ख़ूं बहा अदा करने के लिए आए हैं। ये लोग अपने क़ौल के पक्के और अह्द के पाबन्द हैं। हमें ऐसे लोगों के साथ दग़ा न करना चाहिए। हो सकता है कि हमारा फ़रेब हम पर ही न उलट पड़े।

सलाम! बुज़दिली की बातें न करो, एक ताक़तवर नवजवान यहूदी ने कहा।

उस का नाम अम्र बिन मुहासिन था।

वह कड़कदार आवाज़ बोलता ही चला गया, इस्लाम यहूदियों के लिए सब से बड़ा ख़तरा है। इस वक़्त इस ख़तरे को मिटा देने की क़ुदरत रखते हैं, तो क्यों न इसे मिटायें।

सुनो, सलाम ने कहा, हमारी मज़हबी किताबों में एक नबी के आने की पेशीनगोई मौजूद है। अरबों में उन के आने की बात लिखी हुई है।

वह नबी हमारी क़ौम में होंगे, अधेड़ उमर के एक और यहूदी ने क़ह-क़हा लगा कर कहा, बुतपरस्तों में से न होंगे।

सुनो सलाम! अम्र बिन मुहासिन ने कहा, अगर वाक़ई यह नबी हैं, तो ख़ुदा इन्हें किसी ज़रिए से हमारे इरादे की ख़बर कर देगा और वह बच जाएंगे। अगर नबी नहीं हैं, तो कुचले जाएंगे और अरब एक फ़ित्ने से छुटकारा पा जाएंगे।

लेकिन यह भी जानते हो, सलाम ने कहा, कि अगर ये वाक़ई नबी हुए और ख़ुदा ने इन्हें बचा लिया, तो हमारा इस क़िले में रहना दूभर हो जाएगा।

इस की परवाह न करो, अम्र बिन मुहासिन ने कहा, अब्दुल्लाह बिन उबई ने, जो ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान हो गया है, मुझ से और कुछ दूसरे लोगों से कहा है कि मैं क़ौम या क़बीले का साथ दूंगा, अगर हज़रत मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर डाले गये। अगर यह बच गए और इन्हों ने हम पर हमला किया, तो अब्दुल्लाह बिन उबई और उस का क़बीला, साथ ही उस के क़बीले के दोस्त साथ देंगे और फिर हम मुसलमानों से लड़ कर उन्हें मदीना मुनव्वरा से निकाल देंगे।

अगर यह बात है, तो जाओ, क़िस्मत आज़माई करो।

यह सुनते ही अम्र बिन मुहासिन मकान की छत पर चढ़ कर फ़सील की मुंडेर पर जा पहुंचा और झुका हुआ पत्थर सरकाने के लिए बढ़ा।

हुज़ूर सल्ल० और आप के जां-निसार सहाबा निहायत इत्मीनान से बैठे हुए थे। यहूदी आप को बातों में उलझाए हुए थे और आप खुले दिल से बातें कर रहे थे।

यकायक आप के चेहरे पर नागवारी के निशान उभरे। आप फ़ौरन उठ खड़े हुए।

आप के उठते ही सहाबा भी उठ खड़े हुए।

यहूदी भी उठे। एक बूढ़े यहूदी ने आप से पूछा—

कहां चले मुहम्मद ! क्या ज़रूरी काम याद आ गया ?

दग़ाबाज़ यहूदियो ! हुज़ूर सल्ल० ने थोड़ा मुंह बना कर फ़रमाया, तुम ने मेरे और मेरे साथियों के क़त्ल की साज़िश की थी, अपने एक आदमी को हमारे ऊपर पत्थर के गिराने के लिए फ़सील पर चढ़ा दिया था, ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे मंसूबे की इत्तिला दे दी है। अब या तो तुम दस दिन के अन्दर-अन्दर अहदनामा को नये सिरे से करो या इस क़िले से निकल जाओ।

सुनो मुहम्मद ! एक इज़्ज़तदार यहूदी ने कहा, हम तुम से या तुम्हारी क़ौम के लोगों से बिल्कुल ही नहीं डरते। हम मानते हैं कि हम ने तुम को मार डालने की तदबीर की थी, तुम को किस तरह ख़बर हुई कि अब तुम बच गए। पर याद रहे कि जब भी हमारा क़ाबू चलेगा हम तुम को मार डालेंगे।

इत्मीनान रखो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा मेरी और मुसलमानों की हिफ़ाज़त करेगा। अगर नया समझौता करने या क़िला से निकल जाने पर तैयार नहीं हो, तो लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ। कल मुसलमान तुम्हारे क़िले का घेराव कर लेंगे।

इज़्ज़तदार यहूदी ने मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहा, ज़रूर घेराव कीजिए,

मगर याद रखिए, बनू नज़ीर का क़िला मुसलमानों का क़ब्रस्तान बनेगा।

यहूदी कुत्ते ! हज़रत उमर ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, कल मालूम हो जाएगा कि यह क़िला किस क़ौम का क़ब्रस्तान बनता है।

इस के बाद हुज़ूर सल्ल० अपने साथियों के साथ तशरीफ़ ले गए।

यहूदियों ने मशहूर कर के लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं। एक क़ासिद अब्दुल्लाह बिन उबई के पास मदद के लिए भेज दिया गया।

शाम के वक़्त अब्दुल्लाह का जवाब आया कि अगर तुम क़िले से बाहर निकल कर मुसलमानों से लड़ो, तो तुम्हारी मदद की जा सकती है।

यहूदी देख और सुन चुके थे कि मुसलमानों ने उहद और बद्र की लड़ाइयों में कुफ़्फ़ारे मक्का को बुरी तरह हरा दिया था, वे मैदान में निकल कर लड़ने को तैयार न हुए।

दूसरे दिन अभी सूरज बहुत ऊपर नहीं आया था कि इस्लामी फ़ौज पूरी शान के साथ क़िला बनू नज़ीर की तरफ़ बढ़ती हुई नज़र आयी। मुजाहिद अल्लाहु अक्बर का नारा लगाते हुए इस्लामी झंडे के साये के नीचे बड़े जोश व ख़रोश से बढ़े चले आ रहे थे। यहूदियों ने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया और फ़सीलों पर जवानों को चढ़ा दिया। पत्थरों के टुकड़े और संगबारी के तमाम सामान फ़सील पर पहुंचा दिये।

इस्लामी फ़ौज ने क़िले का घेराव कर लिया और चारों तरफ़ से आगे बढ़ने लगी।

यहूदियों ने फ़सील के सूराख़ों से तीरंदाज़ी शुरू कर दी, इतने ज़्यादा और इतने तीर फेंके कि मुसलमानों का एक क़दम बढ़ना भी मुश्किल हो गया, इस लिए वे रुक गए और तीरों का जवाब तीरों से देने लगे, पर यहूदी फ़सील की ऊंची दीवार के पीछे ओट में खड़े थे, सूराख़ से झांक-झांक कर तीर बरसा रहे थे, उन्हें मुसलमानों के तीरों से कोई अन्देशा भी न था।

वे निहायत इतमीनान से खड़े तीरों की वर्षा कर रहे थे।

मुसलमान खुले मैदान में खड़े थे। उन के पास न कोई आड़ थी न पनाह।

उन्हें यहूदियों के तीरों से नुक़्सान पहुंच रहा था। कई मुसलमान भी, घायल होने के बावजूद भी खड़े रहे और तीर बरसाते रहे।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूरब, हज़रत अबू बक्र ने पच्छिम और हज़रत अली ने उत्तर की टुकड़ियों को अपने हाथों में ले रखा था। इस में से हर आदमी का यही इरादा था कि वह बढ़ कर सब से पहले क़िले की दीवार

के नीचे पहुंच जाएं, लेकिन उन पर इतने ज़्यादा तीर बरसाये जा रहे थे कि उन का उस जगह खड़ा रहना भी मुश्किल हो रहा था, फिर भी वे बड़े इस्तिक़लाल से खड़े तीरों का जवाब दे रहे थे।

दक्खिन में खुद हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ फ़रमा थे और वह भी बढ़ने की जद्दोजेहद में लगे हुए थे।

मुसलमान बहुत होशियारी से तीर चला रहे थे। उन्हों ने ताक-ताक कर तीर मारना शुरू किये।

जो तीर भी सूराख़ों में घुस जाते, वे यहूदियों के चेहरों में घुस जाते, आखों में घुस जाते, नाक को छेद डालते। घायल यहूदी चिल्ला उठते थे। वे तड़प कर हट जाते थे और उन की जगह नये यहूदी आ जाते थे।

सारे दिन ज़ोरदार लड़ाई होती रही, लेकिन मुसलमान क़िले के नज़दीक न पहुंच पाये।

दूसरे दिन फिर लड़ाई शुरू हुई, लेकिन आज भी तमाम दिन की लड़ाई का कोई नतीजा न निकला।

इसी तरह लड़ते-लड़ते पन्द्रह दिन बीत गए।

इस बीच यहूदियों की रसद का सामान खत्म हो गया और वे भूखों मरने लगे।

आख़िरकार उन्हों ने तंग आ कर समझौते की दरख़ास्त की।

हुज़ूर सल्ल० ने इस शर्त पर समझौता मंज़ूर किया कि यहूदी क़िला छोड़ कर बाहर चले जाएं और हथियारों के अलावा नक़दी और सामान वग़ैरह जो चाहें ले जाएं।

यहूदियों ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया, लड़ाई बन्द कर दी गयी। उन्हों ने सामान इकट्ठा कर के ऊंटों पर लादा, जो सामान वे न ले जा सकते थे, उसे तलफ़ किया, मकान ढा दिये, ताकि मुसलमान क़िले में आ कर आबाद न हो सकें और निहायत हसरत से क़िले के दर व दीवार को तकते हुए विदा हो गए।

क़िले का दरवाज़ा खोला गया, यहूदियों के झुंड के झुंड, जिन में औरतें, मर्द और बच्चे सभी शामिल थे, माल व अस्बाब से लदे हुए निकले और ख़ैबर की तरफ़ रवाना हुए।

जब तमाम यहूदी चले गए, तो इस्लाम के फ़िदाई क़िले में दाख़िल हुए, वहां ढहे मकानों का मलबा था और बस, जैसे यहां कभी आबादी रही ही न हो।

यह देख कर मुसलमानों ने सबक़ लिया, उन्हों ने हथियार जमा किये

और शाम के वक़्त मदीने की तरफ़ रवाना हो गए।

इस लड़ाई को 'बनू नज़ीर की लड़ाई' के नाम से जाना जाता है।

ईसाइयों का धावा

यह बात एक हक़ीक़त है कि हुज़ूर सल्ल० या मुसलमानों ने लड़ाइयों में कभी पहल नहीं की, बल्कि जिस हद तक बचा जा सकता था, बचने की कोशिश की।

अल-बत्ता मुश्रिक, बुतपरस्त और यहूदियों का हाल यह था कि वे इस्लाम और मुसलमानों को मिटाना चाहते थे, इस लिए बे-वजह, किसी माक़ूल वजह के बिना मुसलमानों से जा उलझते थे। हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में जितनी लड़ाइयां हुईं, सब की शुरूआत कुफ़्फ़ार की तरफ़ से हुई और मजबूरन मुसलमानों को भी अपनी हिफ़ाज़त में लड़ना पड़ा।

जब बनू नज़ीर का क़िला जीत लिया गया और मुसलमान मदीना वापस आ गए, तो ख़बर सुनी कि बनू मुहारिब और बनू सालबा के क़बीले शरारत और फ़साद पर तुले बैठे हैं और वे बहुत जल्द मदीने पर हमला करने वाले हैं।

ये दोनों क़बीले ग़तफ़ान की शाख़ें थीं, जो इलाक़ा नज्द में आबाद थीं। चूंकि नज्दियों के क़बीले बनू सलीम ने सत्तर बे गुनाह मुसलमानों को क़त्ल कर डाला था, इस लिए तमाम मुसलमानों को रंज था।

अब जबकि यह ख़बर आम तौर पर सुनी गयी कि बनू मुहारिब और बनू सालबा लड़ाई की तैयारियां कर रहे हैं, तो हुज़ूर सल्ल० ने भी लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं और बहुत जल्द सिर्फ़ चार सौ की फ़ौज नज्द की तरफ़ ले गए।

चूंकि अब मदीना मनव्वरा में इस्लामी हुकूमत क़ायम हो चुकी थी, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने उस्मान बिन अफ़्फ़ान को मदीने का ज़िम्मेदार बना कर फ़ौज को ले कर सफ़र शुरू कर दिया। फ़ौज नज्द के इलाक़े में दाखिल हुई और एक पहाड़ी को तै करने लगी। न मालूम उस पहाड़ी के पत्थर किस क़िस्म के थे कि उन पर चलने की वजह से मुसलमानों के जूते टूट गए। मुजाहिद नंगे पैर चलने लगे, पर जब पांव ज़ख़्मी होने लगे, तो उन्हों ने पांवों पर कपड़े लपेट कर सफ़र का मरहला तै किया।

मुसलमान अब एक नख़्लिस्तान में दाखिल हो चुके थे।

इस नख़्लिस्तान में कुछ मुश्रिक मौजूद थे, जो इधर-उधर कुछ तलाश

करते फिर रहे थे।

वे मुसलमानों को देख कर बहुत घबराये और उन्हों ने भाग जाने का इरादा किया।

मुसलमान उन के चेहरों से उन के इरादों को भांप गए। वे दौड़ कर उन के पास पहुंचे और उन्हें गिरफ़्तार कर उन के हालात मालूम करने लगे।

अभी उन मुश्रिकों ने कुछ बताया भी नहीं था कि हुज़ूर सल्ल० भी उस जगह पहुंच गए।

तुम कौन लोग हो ? हुज़ूर सल्ल० ने उन से पूछा।

हम क़बीला बनू सलीम के लोग हैं, उन में से एक आदमी ने बताया।

आप के चेहरे पर कुछ सख़्ती आ गयी, पूछा—

उसी क़बीला बनू सलीम के, जिस के लोगों ने सत्तर बेगुनाह मुसलमान शहीद कर दिए हैं ?

जी हां, उसी क़बीले के, उस आदमी ने सर झुका कर कहा, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ! हम बे-गुनाह हैं। हम क़सम खा कर कहते हैं कि हम उस बुज़दिलाना और वहशियाना क़त्ल में शरीक न थे।

जब मुसलमानों को मालूम हुआ कि ये उस क़बीले के लोग हैं, जिस ने सत्तर बेगुनाह मुसलमानों को निहायत बे दर्दी से क़त्ल कर डाला था, तो सब जोश व ग़ज़ब में भर गए और ग़ज़बनाक निगाहों से उन्हें देखने लगे।

बनू सलीम के इन आदमियों ने मुसलमानों की ग़ैज़ भरी निगाहें देखीं, वे अपनी ज़िंदगियों से मायूस हो गए।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम यहां क्या कर रहे थे ?

हुज़ूर सल्ल० ! एक आदमी ने कांपती आवाज़ में जवाब दिया, यहां बनू मुहारिब और बनी सालबा की फ़ौज मौजूद थी, जो मुसलमानों के आने की ख़बर सुन कर फ़रार हो गयी। हम यहां इस लिए आए थे कि शायद वे लोग कुछ चीज़ें छोड़ गए हों, उन्हें पा सकें—आह !

लेकिन क्या—? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

लेकिन नहीं जानते थे कि मौत हमें नख़्लिस्तान में लिये जाती है, उस आदमी ने कहा, ऐ मुसलमानों के हादी ! ऐ इस्लाम के हीरो ! ऐ मदीने के बादशाह ! हम सब बे-क़सूर हैं, हमें माफ़ कर दो, यह कहते ही वह आदमी रोने लगा और उस के साथी भी रोने लगे।

बद बख़्त बुज़दिलो ! हज़रत उमर ने जोश में आ कर कहा, अब मौत को क़रीब देख कर रोते हो। जब तुम्हारी क़ौम मुसलमानों को क़त्ल कर

रही थी, उस वक़्त अंजामेकार की खबर न थी।

एक आदमी ने सिसकियां भरते हुए कहा—

आह, हम खबरदार न थे, फ़ौरी जोश ने हमें अंधा कर दिया था। आमिर ! हां बद-बख्त और बदमाश आमिर ने हमारे क़बीले को भड़का दिया था और हम ने नासमझी से सत्तर बे-गुनाह मुसलमानों को क़त्ल कर डाला, मगर हुज़ूर सल्ल०! हमारे क़बीले में फोड़े वाली बीमारी फूट पड़ी और हरवह आदमी मर गया, जो मुसलमानों के क़त्ल में शरीक था। मंहूस आमिर भी उसी मूज़ी मरज़ का शिकार हो गया।

उस आदमी का गला भर आया। उस ने आगे कहा—

उस खुदा ने जिस की तुम पूजा करते हो, मुसलमानों का बदला ले लिया। तुम हम पर रहम करो। आह ! हमारे छोटे-छोटे बच्चे—

हज़रत अबू बक्र रज़ि० को तैश आ गया, बोले—

बद-बख्तो ! अब रोते हो, मौत क़रीब आ गयी है।

नहीं सिद्दीक़ ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्हें कुछ न कहो, इन के क़त्ल करने से क्या फ़ायदा ? इन के बच्चे यतीम हो जाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ! इस क़दर खुदा तरसी ? हज़रत अली रज़ि० बोले।

हर उस आदमी पर जो रहम की तलब करता हो, मेहरबानी करो, खास तौर से उन दुश्मनों पर जो आजिज़ी दिखायें। यह भी ईमान का एक हिस्सा है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
खुदा मेहरबां होगा अर्शे बरीं पर !

हम हुज़ूर सल्ल० के फ़रमांबरदार हैं, हज़रत अली रज़ि० ने कहा, जो हुक्म होगा, हम उस की तामील करेंगे।

इन्हें आज़ाद कर दो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

बनू सलीम वालों को फ़ौरन छोड़ दिया गया।

वे दुआएं देते हुए चले गए।

चूंकि यह मालूम हो गया था कि बनू मुहारिब और बनू सालबा फ़रार हो गए हैं, इस लिए इस्लामी फ़ौज वापस हो गयी।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि उहद से चलते वक़्त अबू सुफ़ियान बद्र पर लड़ाई की दावत दे गया था, चूंकि साल खत्म हो चुका था, इस लिए मक्का से खबरें आने लगीं कि क़ुरैशे मक्का लड़ाई की बड़ी तैयारियां कर रहे हैं, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने भी तैयारियां शुरू कर दीं।

कुछ ही दिनों बाद मालूम हुआ कि मक्का के बेहतरीन बहादुर और

अंगज़ू लोग अबू सुफ़ियान की सरकरदगी में 'बद्र की तरफ़ चल पड़े हैं। साथ ही यह खबर गर्म हुई कि इस बार कुफ़्फ़ारे मक्का बड़ी सज-धज और भारी साज व सामान के साथी आये हैं और उन का इरादा फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई का है, या तो इस लड़ाई में इस्लाम और मुसलमानों का खात्मा हो जाएगा या मक्का के मुश्रिकों का।

इन खबरों को कुफ़्फ़ारे मक्का बढ़ा-चढ़ा कर बयान करते थे।

अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ मुसलमानों को डराता फिर रहा था।

यहूदी भी बग़लें बजा रहे थे।

मक्का से एक आदमी नईम बिन मसऊद आया था। वह मदीने का रहने वाला था। उसे अब्दुल्लाह बिन उबई ने मक्का भेजा था, ताकि वह अबू सुफ़ियान को लड़ाई पर उभारे। उस ने बयान किया कि सारा मक्का और मक्का के पड़ोस के तमाम क़बीले मिल कर उमड आए है। इतनी भारी फ़ौज और इतने साज व सामान से लदी हुई फ़ौज अरब की धरती पर कभी न आयी होगी, जैसा कि बद्र के लड़ने के लिए मुसलमानों की तरफ़ से आ रही है।

यह क़ुदरती बात थी कि मुसलमान इन खबरों को सुन कर फ़िक्र व तरद्दुद में पड़ जाते।

चुनांचे मुसलमान कुछ फ़िक्रमन्द होने लगे,

हज़रत उमर रज़ि० मुसलमानों की चिन्ता देख कर बिगड़ गए। वह हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए, अलैक-सलैक के बाद बैठ गए और कुछ देर बाद बोले—

क्या आप ने तमाम वाक़िए सुन लिए, जो मदीना के कूचे-कूचे में मशहूर हो रहे हैं।

कैसे वाक़िए ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

कुफ़्फ़ारे मक्का की हमलावरी, हज़रत उमर ने कहा।

सुनते तो हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पर तुम्हारी इस से मंशा क्या है ?

मैं जानना चाहता हूं कि हुज़ूर सल्ल० खुदा के रसूल हैं ? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा।

हां, मैं खुदा का रसूल हूं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

फिर मुसलमान चिन्ता में क्यों डूब रहे हैं ? हज़रत उमर ने फ़रमाया, क्या पिछली लड़ाइयों में अल्लाह ने मुसलमानों की मदद नहीं की है ? क्या अब खुदा हमारी मदद नहीं करेगा ?

उम्र के हिसाब से भी और यों भी तबीअतें अलग-अलग होती हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कमज़ोर तबीयत के लोग वहशतनाक ख़बरों से जल्द मुतास्सिर होते हैं, लेकिन मज़बूत दिल वाले किसी बात से मुतास्सिर नहीं होते।

क्या हुज़ूर सल्ल० ने लड़ाई का इरादा बदल दिया है? हज़रत उमर ने पूछा।

उमर! अगर कोई एक आदमी भी मेरे साथ न चलेगा, मैं जब भी तन्हा वायदे के मुताबिक़ पहुंच जाऊंगा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हज़रत उमर रज़ि० अपना इत्मीनान कर के चले आये।

उन्हों ने आते ही एलान कर दिया कि मुसलमानो! लड़ाई की तैयारी करो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमा दिया है कि अगर तुम में से एक आदमी भी न आएगा, तब भी मैं कुफ़्फ़ारे मक्का के मुक़ाबले के लिए बद्र नामी जगह पर जाऊंगा।

यह कैसे मुम्किन था कि हुज़ूर सल्ल० लड़ाई के लिए तशरीफ़ ले जाते और आपके सहाबा पीछे रह जाते, इस लिए सब ने इस एलान के सुनते ही तैयारियां शुरू कर दीं। जब हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को रवानगी का हुक्म दिया, तो डेढ़ हज़ार मुजाहिद इस्लामी झंडे के नीचे जमा हो गए।

मुसलमानों की इतनी बड़ी फ़ौज इस से पहले कभी न गयी थी।

मदीने के कुफ़्फ़ार और यहूदी इस भारी फ़ौज को देख कर हैरान रह गए।

अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ इस लड़ाई में शरीक न हुआ, बल्कि उस ने साफ़ कह दिया कि बद्र में मरने के लिए कौन जाए।

इस्लामी फ़ौज बड़ी शान से कूच करती हुई बद्र में पहुंची।

इस शानदार फ़ौज की तमाम अरब में धूम मच गयी। जिस तरफ़ से यह फ़ौज गुज़री, क़बीलों ने ख़ौफ़ व हरास की नज़रों से उसे देखा।

इस फ़ौज की तायदाद और सामान की ख़बरें अबू सुफ़ियान और उस की फ़ौज वालों को भी पहुंच गयीं। अबू सुफ़ियान की हिम्मत छूट गयी और वह अस्फ़ान तक आ कर निहायत ख़ौफ़ व हरास की हालत में मक्का की तरफ़ भाग गया।

जब यह फ़ौज मक्के में दाख़िल हुई, तो औरतों ने ताना दिया कि सिर्फ़ सत्तू पीने गए थे, लड़ने के लिए नहीं गए थे, वरना मर जाते, लेकिन मुसलमानों से डर कर, बग़ैर लड़े-भिड़े हर गिज़ न आते।

मुसलमान एक हफ़्ते तक कुफ़्फ़ारे मक्का का इन्तिज़ार करते रहे।

आठवें दिन एक आदमी मावद खुज़ाई ने आ कर इत्तिला दी कि मुश्रिकों की फ़ौज अस्फ़ान से वापस लौट गयी है, मजबूरन इस्लामी फ़ौज भी लौट आयी।

इस लड़ाई का नाम बद्रे सुग़रा है। यह आख़िरी महीने रजब सन् ०४ हि० का वाक़िआ है।

बद्र से वापस आ कर मुसलमान पढ़ने-पढ़ाने और तब्लीग़ में लग गए।

माह रबीउल अव्वल सन् ०५ हि० में हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला मिली कि शाम की सरहद पर दौलतुल जुन्दल का ईसाई बादशाह मदीना मुनव्वरा पर हमला करने की तैयारियां कर रहा है।

अब तक जो लोग मुसलमानों के ख़िलाफ़ थे, वे अरब के मुश्रिक और मदीने के यहूदी थे, लेकिन एक तीसरा दुश्मन और पैदा हो गया था।

हालांकि न मुसलमानों ने ईसाइयों को सताया था, न किसी ईसाइयत पर हमला किया था और न ईसाइयों पर हमला करने का इरादा था।

हुज़ूर सल्ल० ग़ौर करने लगे।

आख़िरकार हुज़ूर सल्ल० ने इस नये दुश्मन से निमटने के लिए फ़ौज का जमा करना शुरू कर दिया।

थोड़े ही अर्से में हज़ार मुजाहिदों की फ़ौज तैयार हो गयी।

हुज़ूर सल्ल० ने सबाह बिन अर्तफ़ा ग़िफ़ारी को मदीने का गवर्नर बनाया और ख़ुद जमा की हुई फ़ौज ले कर दौमतुल जुन्दल की तरफ़ रवाना हुए।

क़बीला बनी उज़्रा का एक आदमी राहबर के तौर पर साथ लिया। राहबर बड़ा होशियार और शाम के तमाम रास्तों को जानता था।

इस्लामी फ़ौज रात को सफ़र करती और दिन को पड़ाव डालती।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि नक़्ल व हरकत की इत्तिला दुश्मन को न हो, इस लिए तमाम एहतियाती तद्बीरें अख़्तियार की जा रही थीं।

एक दिन राहबर ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, या सय्यिदी! दौमतुल जुन्दल यहां से एक मंज़िल दूर रह गया है, लेकिन दुश्मनों की चरागाह इस जगह से बिल्कुल क़रीब है। अगर आप फ़रमाएं तो चरागाह पर हमला कर के उन के मवेशियों पर क़ब्ज़ा किया जा सकता है।

मुनासिब है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस से दुश्मनों पर हमारा रौब बैठ जाएगा।

रात को इशा की नमाज़ पढ़ कर फ़ौज चली और अभी दो तीन मील ही चली थी कि एक हरे-भरे इलाक़े में जा पहुंची। यहां छोटे-बड़े पेड़ बड़ी

तायदाद में खड़े थे। मवेशी इधर-उधर बैठे थे, कुछ चर रहे थे, कुछ जुगाली कर रहे थे।

मवेशियों के निगरां पड़े ख़र्राटे ले रहे थे।

यह थी ईसाइयों की चरागाह।

मुसलमानों ने मवेशियों पर क़ब्ज़ा करना शुरू किया।

मवेशी घबरा कर इधर-उधर दौड़ने लगे, तो निगरानी करने वालों की आंख खुल गयी।

वे हड़बड़ा कर उठे। उठते ही मुसलमान नज़र आये। वे कांप गये और घबरा कर भागने लगे।

मुसलमानों ने उन को तलवारों की धार पर रख लिया। तमाम निगरानी करने वाले क़त्ल कर दिये गये, सिर्फ़ एक दो आदमी भाग कर अपनी जानें बचा सके।

चूंकि अब रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी और यह भी मालूम हो गया था कि दौमतुल जुन्दल बहुत क़रीब रह गया है, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को पड़ाव डालने का हुक्म दे दिया।

इस्लामी मुजाहिद कमरें खोल कर हरी घास पर पड़े रहे। कुछ लोग सामान और मवेशियों की निगरानी पर मुक़र्रर कर दिये गये। वे हाथों में नेज़े ले कर पहरे देने लगे।

सुबह सूरज निकलने से पहले हुज़ूर सल्ल० उठे, तमाम मुसलमान जागे, सब ने ज़रूरतों से फ़राग़त होने के बाद नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़ने के बाद कमर कसी और चल दिये।

दोपहर के वक़्त दौमतुल जुन्दल में पहुंच गये।

मुसलमानों को ख़्याल ही नहीं, बल्कि यक़ीन भी था कि ईसाई शहर या क़िले से बाहर इस्तिक़बाल या मुक़ाबले के लिए तैयार मिलेंगे, लेकिन उन की हैरत की इन्तिहा न रही, जब कि उन्हों ने किसी एक ईसाई को भी शहर से बाहर न देखा।

ईसाई शहर को छोड़ कर भाग गये थे।

मुसलमान मकानों के सामने से गुज़र रहे थे कि उन्हों ने एक मकान की छत से एक ईसाई को झांकते हुए देखा।

फ़ौरन एक आदमी मकान के अन्दर घुस गया और थोड़ी देर में एक ईसाई को साथ लाया, जो शक और उम्मीद की नज़र से लोगों को देख रहा था।

यह आदमी हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया गया।

हुज़ूर सल्ल० ने उस से पूछा, तुम्हारा बादशाह अकीदर बिन अब्दुल मलिक कहां है ?

हुज़ूर सल्ल० ! वह दमिश्क़ की ओर भाग गया है, ईसाई ने जवाब दिया।

क्या उसे हमारे आने की इत्तिला हो गयी थी ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

हां हुज़ूर सल्ल० ! ईसाई ने कहा, उस के जासूसों ने आप के आने की खबर कई दिन पहले ही दे दी थी। उस ने शहर वालों को शहर खाली करने का हुक्म दे दिया था, चुनांचे परसों ही तमाम शहर वाले अपना-अपना सामान ले कर चले गये, सिर्फ़ फ़ौज बाक़ी रह गयी थी। रात चरा-गाह से दो आदमी आए, उन्हों ने मुसलमानों के बादशाह के आने की खबर दी। बादशाह घबरा गया और उसी वक़्त फ़ौज ले कर भाग गया।

तुम क्यों नहीं भागे ? हुज़ूर सल्ल० ने ईसाई से पूछा।

इसलिए कि मौक़ा नहीं मिल सका। ईसाई ने जवाब दिया।

अच्छा, तुम को आज़ाद किया जाता है। जहां जी चाहे जाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

ईसाई ने हुज़ूर सल्ल० का शुक्रिया अदा किया और वहां से चला गया

मुसलमान घरों के भीतर घुस गये।

घरों में मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन थे या वह सामान था, जो ईसाई अपने साथ न ले जा सकते थे। कुछ ग़ल्ला भी था।

मुसलमानों ने तमाम सामान और ग़ल्ले अपने क़ब्ज़े में कर लिये।

हुज़ूर सल्ल० ने शहर से बाहर मुसलमानों को ठहरने का हुक्म दिया।

मुसलमान एक बाग़ में ठहर गये।

अब हुज़ूर सल्ल० ने कुछ छोटे-छोटे दस्ते इधर-उधर रवाना फ़रमाये।

ईसाई मुसलमानों से कुछ ऐसा डर गये थे कि वे अपने देहात और क़स्बे वग़ैरह छोड़ कर दमिश्क़ की तरफ़ भाग गये थे।

किसी एक जगह भी कोई मुसलमानों के मुक़ाबले में न आया, इस वजह से शाम की सरहद पर मुसलमानों का रोब व दाब बैठ गया।

कुछ दिन दौमतुल जुन्दल में ठहर कर हुज़ूर सल्ल० वापस लौटे।

एक दिन, जबकि एक बाग़ में मुसलमान ठहरे हुए थे, एक आदमी, जिस का नाम उऐना बिन हुसैन था हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

यह अपने क़बीले का सरदार था।

इस ने निहायत अदब से हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। एक तरफ़

बैठ गया ।

हुज़ूर सल्ल० ने उस से पूछा, अरब भाई ! तुम्हारा नाम क्या है ?

मेरा नाम उऐना है, उस ने जवाब दिया, मेरे बाप का नाम हुसैन है और मैं अपने क़बीले का सरदार हूं।

तुम किस लिए आए हो उऐना ? हुज़ूर सल्ल० ने फिर पूछा ।

हुज़ूर सल्ल० ! उऐना ने बताया, मेरे पास मवेशी बहुत ज्यादा हैं। ऊंटों, बकरियों, तेज घोड़ों की इतनी तायदाद है कि मैं इस इलाक़े में मवेशियों का बादशाह कहलाता हूं। हर साल यहां इतनी बारिश होती है, जिस से मवेशियों के लिए चारा काफ़ी हो जाया करता है, लेकिन इस साल बारिश नहीं हुई, चारे का अकाल पड़ गया है । पिछले साल चारे का जो भंडार था, सब खत्म हो गया है, अब मैं सख्त परेशान हूं।

तुम मुझ से क्या चाहते हो ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा ।

मैं ने सुना है कि मदीना में खूब बारिश होती है, उऐना ने कहा, वहां चारे की बहुतात है। चरागाहें हरी-भरी हैं। मेरी आरज़ू है कि हुज़ूर सल्ल० मेरे मवेशियों को मदीने की चरागाहों में चरने की इजाजत दे दें। मैं इस के मुआवजे में माक़ूल रक़म हुज़ूर सल्ल० की नज्र करूंगा ।

उऐना ! तुम को इजाजत है, हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया, जितने मवेशी चाहो, मदीने की चरागाहों में भेज दो। कोई तुम को रोकेगा नहीं और न तुम से कोई मुआवजा लिया जाएगा ।

उऐना ने शुक्र गुजार की शक्ल में आप के चेहरे को देखा, बोला—

हुज़ूर सल्ल० की इस जबरदस्त इनायत का हज़ार बार शुक्रिया।

उऐना उठ कर चला गया ।

हुज़ूर सल्ल० ने भी फ़ौज को रवानगी का हुक्म दिया।

मुजाहिदों ने तमाम सामान और खेमे ऊंटों पर लादे और मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रवाना हो गये ।

इस मुहिम का नाम दौमतुल जुन्दल की लड़ाई है ।

ख़ूंरेज़ लड़ाई

जब हुज़ूर सल्ल० शाम की सरहद से वापस लौटे, तो मुश्रिक अरबों और मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाले यहूदियों को बड़ा अफ़सोस हुआ। वे समझ रहे थे कि तमाम मुल्क शाम में ईसाई टिड्डी दल की तरह बिखरे पड़े हैं। ये ईसाई मुसलमानों को अपना दुश्मन समझते हैं, इस लिए उन से नफ़रत करते हैं, यक़ीनन वे मुसलमानों को फ़ना के घाट उतार देंगे और

एक मुसलमान को भी ज़िंदा न छोड़ेंगे। अगर कोई वापस भी आएगा, तो मुसलमानों की तबाही की दास्तान सुनाने आएगा। पर जब उन्हों ने सुना कि दौमतुल जुन्दल के ईसाई बे-मुक़ाबला फ़रार हो गये, तो उन्हें उन की बुज़दिली पर बड़ा ग़ुस्सा आया।

अब उन्हों ने फिर मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िश शुरू कर दी।

दूसरी तरफ़ यहूदियों और अरबों ने अरब के ज़र्रे-ज़र्रे को इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़का रखा था।

फिर यहूदियों ने ईसाइयों को भी उभारा।

यहूदियों का मशहूर क़बीला बनू नज़ीर जब से मुल्क निकाला पा कर शाम और ख़ैबर की तरफ़ चला गया था, उस ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ बराबर साज़िशें करनी शुरू कर दी थीं।

तमाम यहूदियों और सारे अरब क़बीलों को मुसलमानों की जड़ काटने पर तैयार करने के लिए एक ज़बरदस्त वफ़्द, जिस में हुय्य बिन अख़्तब, सलाम बिन अबिल हक़ीक़, सलाम बिन कनाना वग़ैरह जैसे यहूदी सरदार शामिल थे, रवाना हुआ, ताकि क़ुरैश को मदीने पर हमला करने पर उभारा जा सके।

जब मुसलमान दौमतुल जुन्दल से वापस आए, तो उन्हों ने नयी-नयी अफ़वाहें सुनीं।

कभी मक्का के मुश्रिकों के हमलावर होने की ख़बर सुनी।

कभी ईसाइयों के धावे की अफ़वाह सुनी।

कभी यहूदियों के लड़ने की ख़बरें आयीं।

कभी यमन और नज्द के क़बीलों के हमले की ख़बर सुनी।

मुसलमान ऐसे मुस्तक़िल मिज़ाज थे कि इन ख़बरों के सुनने के बाद भी वे हरास न होते थे, बल्कि निहायत इत्मीनान से तब्लीग़ फ़रमा रहे थे।

मदीना और उस के पास-पड़ोस में जिस तेज़ी से इस्लाम फैल रहा था, उसे देख कर मुश्रिकों और काफ़िरों के सीनों पर सांप लोट रहे थे।

चूंकि अम्न व इत्मीनान के ज़माने में मुसलमानों को तब्लीग़ करने का ज़्यादा मौक़ा मिलता था, इसलिए कुफ़्फ़ार कोशिश करते थे कि मुसलमान अम्न व इत्मीनान से न रहें, हमेशा और हर वक़्त लड़ाई के माहौल में फंसे रहें।

चुनांचे उन्हों ने बनू मुस्तलिक़ के यहूदियों को उभारा।

बनू मुस्तलिक़ का बादशाह हारिस बिन ज़ुरार एक तजुर्बेकार, चालाक और ख़ूंख़ार आदमी था, उस ने अपने क़बीले को मुनज़्ज़म कर के अरब

क़बीलों को मिल-जुल कर हमला करने की दावत दी।

बहुत से क़बीले उन के साथ हो गये और थोड़े ही दिनों में उस ने भारी फ़ौज तैयार कर ली।

हुज़ूर सल्ल० को इस के इरादे की ख़बर हुई, तो आप ने हज़रत बुरैदा बिन ख़ुजैब को हालात की पड़ताल के लिए रवाना फ़रमाया।

उन्हों ने वापस आ कर बयान किया कि हारिस बिन ज़ुरार ने ज़बर-दस्त फ़ौज जमा कर ली है। हज़ारों यहूदी और मुश्रिक उस के झंडे के नीचे जमा हो गये हैं और वह बहुत जल्द मदीना मुनव्वरा पर हमलावर होने वाला है।

हुज़ूर सल्ल० ने भी मुसलमानों को तैयारी का हुक्म दे दिया।

जब मुसलमान तैयार हो गये, तो आप ने ज़ैद को मदीने का ज़िम्मेदार बनाया और ख़ुद इस्लामी मुजाहिदों को ले कर हारिस का सर कुचलने के लिए रवाना हो गये।

इस इस्लामी फ़ौज में तीस घोड़े थे, जिनमें दस मुहाजिरों के और बीस अंसार के थे।

इस बार हुज़ूर सल्ल० ने मुहाजिरों और अंसार के अलग-अलग झंडे बना दिये थे।

अंसार का झंडा साद बिन उबादा के हाथ में था और मुहाजिरों का झंडा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० लिए हुए थे।

हज़रत उमर रज़ि० को आगे की असल टुकड़ी का ज़िम्मेदार बनाया गया था।

इस मुहिम पर हज़रत आइशा रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० साथ ले कर गये थे।

इस बार ग़नीमत के माल के लालच में अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ भी अपने मुनाफ़िक़ साथियों के साथ शरीक हो गया था।

मुसलमानों की फ़ौज जब और जिस तरफ़ से भी गुज़रती थी, ग़ैर-मुस्लिमों पर रौब व दबदबा और डर छा जाता था। चुनांचे हर फ़ौज के आने की ख़बर सुन कर ही घुमक्कड़ अरब अपने ख़ेमे-डेरे लाद कर चले गये थे। तमाम नख़्लिस्तान ख़ाली पड़े थे।

क़बीला बनू मुस्तलिक़ मदीने से नौ मंज़िल के फ़ासले पर आबाद था।

इस्लामी फ़ौज मंज़िल-मंज़िल कर के आगे बढ़ रही थी।

एक दिन अस्र के वक़्त हज़रत उमर ने, जो सामने की टुकड़े के ज़िम्मेदार थे, एक अरब को देखा कि वह कभी टीलों के पीछे छिप जाता है,

कभी किसी टीले की आड़ ले कर झांकने लगता है।

हज़रत उमर रज़ि० रेत के एक बड़े टीले की आड़ ले कर उस तरफ़ बढ़े, यहां तक कि उस टीले के पास पहुंच गए, जिस के पीछे अरब छिपा हुआ था।

उन्हों ने अचानक बढ़ कर उस की गरदन दबोच ली।

इस अचानक आफ़त से वह घबरा गया।

तू कौन है और टीले के पीछे छिप कर क्या देख रहा है? हज़रत उमर ने उस से पूछा।

मैं एक मुसाफ़िर हूं, फ़ौज से डर कर इस जगह आ छिपा था, उसने बताया।

डरने की वजह?

शायद मुसलमान मुझे नुक़सान पहुंचा दें।

क्या मुसलमानों ने कभी बे-वजह किसी को नुक़सान पहुंचाया है?

नहीं।

फिर तुम क्यों डरे?

यह मेरी ग़लती थी।

हज़रत उमर ने ग़ौर से अरब को देख कर कहा—

ग़लती नहीं, चालाकी थी, तुम्हारा ताल्लुक़ क़बीला बनू मुस्तलिक़ से तो नहीं है?

अरब ने हज़रत उमर की पैनी निगाहों को देखा, मरऊब हो गया। उस ने कहा—

हां, मैं उसी क़बीले से हूं।

ओ, हारिस के जासूस! हज़रत उमर ने घूरते हुए कहा।

अरब बे-अख़्तियार बोल पड़ा—

जी हां,……लेकिन मैं अपनी ख़ुशी से जासूसी करने नहीं आया, बल्कि मुझे ज़बरदस्ती भेजा गया है।

हज़रत उमर ने उस की गरदन छोड़ कर कहा—

अच्छा, तुम रसूलुल्लाह सल्ल० के पास चलो।

अरब के पास बात मान लेने के अलावा और कोई रास्ता भी न था। वह साथ हो लिया।

हज़रत उमर रज़ि० उसे ले कर हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचे और उन्हें पूरी बात बता दी और कहा—

हुज़ूर सल्ल०! यह जासूस है और अरब में जासूस की सज़ा क़त्ल है,

इसलिए इस के क़त्ल का हुक्म दीजिए ।

बेशक अरब का क़ानून जासूसी के लिए क़त्ल की सज़ा तज्वीज़ करता है, लेकिन अगर यह मुसलमान हो जाए, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, अगर यह इस्लाम क़ुबूल करे तो रिहाई पा सकता है ?

कहो, हारिस के जासूस ! क्या तुम इस्लाम क़ुबूल करने पर तैयार हो ? हज़रत उमर ने जासूस को ख़िताब कर के कहा ।

नहीं, मैं कभी मुसलमान नहीं हो सकता, जासूस ने तन कर जवाब दिया ।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौरन एक मुसलमान को इशारा किया, उसने तलवार खींची और जासूस का सर उड़ा दिया ।

जासूस को क़त्ल कर के हज़रत उमर रज़ि० अपनी टुकड़ी में आ गए ।

लगभग एक हफ़्ता सफ़र करने के बाद इस्लामी फ़ौज मरीसीअ़ के किनारे जा कर ठहरी ।

उसी दिन शाम के वक़्त हारिस भी अपनी भारी फ़ौज को ले कर दूसरे किनारे पर उतरा ।

रात के वक़्त दोनों फ़ौजें दोनों किनारों पर ख़ामोशी से ठहरी रहीं । चूंकि दोनों को अंदेशा था कि कोई फ़रीक़ नदी को पार कर के शबख़ून न मार दे, इसलिए दोनों ने ज़बरदस्त पहरे का इन्तिज़ाम किया था ।

पहरे वाले सारी रात जागते रहे और जागते रहो की आवाज़ लगाते रहे ।

सुबह हुई । मुसलमान फ़ौज ने नमाज़ पढ़ी, फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया—

उमर ! तुम नदी पार कर के हारिस के पास जाओ और उस की फ़ौज को इस्लाम की दावत दो, लेकिन नरम लफ़्ज़ों में । याद रखो नसीहत अगर सख़्त लफ़्ज़ों में की जाए, तो कभी असर नहीं करती ।

हज़रत उमर ने हुक्म के आगे सर झुका दिया ।

अगरचे वह जानते थे कि नदी के उस पार दुश्मनों की भीड़ है, उन दुश्मनों की, जो उन के भी दुश्मन और उन के मज़हब के भी दुश्मन हैं ।

दुश्मनों की भीड़ में तंहा जाना बड़े दिल-गुर्दे का काम है, पर हज़रत उमर की वह हस्ती थी, जो सिवाए ख़ुदा के किसी का डर दिल में न आने देती थी । वह बिना किसी झिझक के नदी के किनारे पहुंचे और उसे पार कर दूसरे किनारे पहुंच गये ।

आप को देख कर हारिस, कुछ दूसरे बड़े सरदारों के साथ आप के क़रीब आया, पूछा।

उमर ! किस लिए आए हो ?

मैं एक बात कहने आया हूं, हज़रत उमर ने कहा, सुनो, ग़ौर से सुनो, ठंडे दिल से सुनो, तुम खूब जानते हो कि मैं, मेरा खानदान, मेरा क़बीला, मेरी क़ौम लात और उज़्ज़ा और हुबल को पूजते थे।

खुदा ने जो कायनात का पैदा करने वाला, मालिक और हाकिम है, उस ने अपनी मख्लूक़ की हिदायत के लिए अपना एक रसूल भेजा।

रसूल ने खुदा की तौहीद का एलान किया। नेक रूहें खिंच-खिंच कर इस्लाम की तरफ़ झुकने लगीं।

मैं भी मुसलमान हो गया।

हारिस ! आज मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को, तुम्हारी फ़ौज को इस्लाम की दावत देता हूं। आओ, तौहीद के साए में आ जाओ, इस्लाम की पनाह लो और तमाम मुसलमानो के भाई बन जाओ।

उमर ! तुम जानते हो कि हम यहूदी हैं, हारिस ने कहा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उम्मती हैं, हमारी किताबों में एक नबी के भेजे जाने की पेशीनगोई लिखी हुई है, मगर वह नबी यह नहीं है, जिनकी तुम पैरवी करते हो।

वह हमारी क़ौम में होंगे। मैं तुम्हारे नबी को शाइर व काहिन तो कह सकता हूं, पर नबी नहीं मान सकता और जब मैं उन्हें नबी नहीं मानता, तो इस्लाम कैसे क़ुबूल कर सकता हूं। अब तुम, तुम्हारी क़ौम, तुम्हारा नबी मेरे मुक़ाबले में आ गये हो, समझ लो कि तुम में से एक को भी ज़िंदा नहीं जाने दूंगा।

हारिस ! हम खूंरेज़ी को पसन्द नहीं करते, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, चाहते हैं कि तुम भी अम्न व अमान से रहो और हमें भी चैन से रहने दो। बेकार लड़ाई से क्या फ़ायदा है ? हम खुदापरस्ती की तालीम देते हैं, उस तालीम को क़ुबूल कर लो।

नामुम्किन है कि हम तुम्हारी तालीमें क़ुबूल कर ले, हारिस ने झुंझला कर कहा, हम तुम से लड़ेंगे, और उस वक़्त तक लड़ेंगे, जब तक एक मुसलमान भी ज़िन्दा बाक़ी रहेगा।

मालूम होता है अब तुम्हारा खात्मा क़रीब आ गया है, हज़रत उमर ने कहा, अच्छा तुम लड़ो, और उस वक़्त तक लड़ो, जब तक कि एक मुसलमान भी ज़िन्दा है कि खुदा हक़ की हिमायत करेगा।

हज़रत उमर वापस लौट आए और हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में पहुंच कर पूरी बात बता दी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को नदी पार करने का हुक्म दे दिया।

इस्लामी फ़ौज नदी में कूद पड़ी।

एक छोटासा दस्ता तीरंदाज़ों करने वाला नदी के किनारे खड़ाकर दिया गया, ताकि अगर दुश्मनों की फ़ौज मुसलमानों को रोकने की कोशिश करे, तो उन पर तीरों की बारिश कर के उन्हें अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर लें।

हारिस ने मुसलमानों को नदी में कूदते हुए देखा।

उस ने अपनी फ़ौज को किनारे से दूर हटा कर जमाया।

मुसलमान भी दूसरे किनारे पर पहुंच कर अपने को जमाने लगे।

तीरंदाज़ों का दस्ता भी आ कर सफ़ में शामिल हो गया।

सब से आगे हज़रत उमर के दस्ते ने सफ़ बनायीं, उन के पीछे सीधे हाथ पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ और बायें हाथ पर हज़रत साद बिन उबादा अपने दस्तों में खड़े हो गये।

बीच में हुज़ूर सल्ल० थे। आप के साथ हज़रत अली, हज़रत बिलाल और कुछ दूसरे सहाबी थे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर से कहला भेजा कि जब तक दुश्मनों की तरफ़ से लड़ाई की शुरूआत न हो, उस वक़्त तक अपनी तरफ़ से शुरूआत न करें। दोनों फ़ौजें एक दूसरे के सामने हथियारों से लैस खड़ी थीं।

हारिस फ़ौज के बीच में था।

उस के क़रीब एक खूबसूरत हसीना चेहरे पर जालीदार नक़ाब डाले खड़ी थी।

यह उस की परीज़ाद बेटी जुवैरिया थी।

जुवैरिया जितनी खूबसूरत थी उतनी ही शेरदिल और बहादुर भी थी। वह अपने बाप के साथ मुसलमानों से लड़ने आयी थी।

हारिस ने अपनी फ़ौज को इशारा किया। उस की टिड्डी दल फ़ौज आगे बढ़ी।

मुसलमान भी धीरे-धीरे आगे बढ़े।

कुछ ही देर में दोनों फ़ौजें आपस में भिड़ गयीं।

हवा में नेज़े लहराए और एक दूसरे पर हमले शुरू हो गये।

नेज़ों की अनियां धूप में चमकीं, इंसानों के गोश्त-पोस्त में घुसीं।

हर आदमी जोश व ग़ज़ब से भर गया। अपनी ताक़त से ज़्यादा टक-राने लगा।

होते-होते यह जोश इतना बढ़ा कि नेज़े फेंक कर तलवारें बिजली की तरह कौंदती हुई बढ़ीं, उठीं और इंसानों के सरों पर बुलन्द हुईं।

फ़ौरन् काली ढालें फ़िज़ा में ऊंची हुईं और तलवारें ढालों के ऊपर पड़ीं।

लड़ाई शुरू हो गयी। बड़ी तेज और ख़ूरेज लड़ाई थी यह।

हर फ़ौजी पूरे जोश से लड़ रहा था। सर कट रहे थे, धड़ गिर रहे थे और ख़ून बह रहा था।

हारिस की फ़ौज ने हज़रत उमर के दस्ते पर हमला कर दिया।

जिस जोश के साथ हमला किया गया था, लगता था मुसलमानों का दस्ता पसपा हो जाएगा। मगर मुसलमानों के इस दस्ते ने न सिर्फ़ यह कि ज़ोरदार मुक़ाबला किया, बल्कि ऐसे जोश से लड़ा कि दुश्मन हैरान रह गये।

हर मुजाहिद लोहे का पुतला बन गया, जो न मरना जानता था, न पीछे हटना, बल्कि आगे बढ़ना और बढ़ कर हमला करना जानता था। जो आदमी भी उस मुजाहिद के सामने आ गया, बग़ैर क़त्ल किये हुए जाने न दिया।

मुसलमान पूरे जोश के साथ लड़ रहे थे, ख़ास तौर से हज़रत उमर इस फुर्ती और तेज़ी से पैंतरे बदल-बदल कर लड़ रहे थे कि हैरत होती थी।

वह जिस पर झपट कर हमला करते, जिस को उछल कर तलवार मारते, उसे क़त्ल किये बिना न छोड़ते, उन्हों ने थोड़ी ही देर में बारह काफ़िरों को मौत की गोद में पहुंचा कर हमेशा की नींद सुला दिया। कुफ़्फ़ार पर उन का रौब व दबदबा छा गया। वे उन से बचने और उन के सामने आने से कतराने लगे।

हारिस और उस की बेटी जुवैरिया घोड़ों पर सवार इधर-उधर दौड़-दौड़ कर अपने साथियों को उभार-उभार कर जोश दिला रहे थे।

सूरज बहुत ज़ोरों से चमक रहा था।

लड़ने वालों के जिस्म पसीने में डूबे हुए थे। माथे से पसीने की बूंदें टपक रही थीं। लेकिन तलवार और ख़ून से खेलने वाले गर्मी और तेज़ धूप की परवाह न करते थे। वे बड़े जोश और पूरी ताक़त से लड़ रहे थे।

हारिस की पूरी फ़ौज मुसलमानों पर हमलावर थी और मुसलमानों का अगला हिस्सा उन से लड़ रहा था। अभी तक सारी इस्लामी फ़ौज ने शिर्कत न की थी।

अचानक हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाया।

पूरी फ़ौज ने उसी ज़ोरदार आवाज़ में उसे दोहरा दिया। पूरी फ़िज़ा में नारा गूंजा, लगा जैसे भूचाल आ गया हो।

हज़रत उमर रज़ि० ने जल्दी से पीछे पलट कर देखा, तो उन्हें इस्लामी फ़ौज बढ़ती हुई नज़र आयी।

हज़रत उमर रज़ि० ने बुलन्द आवाज़ से कहा, मुसलमानो! सारी इस्लामी फ़ौज हमला करने के लिए बढ़ रही है।

यह बड़ी ग़ैरत की बात है कि हम दुश्मन को पसपा नहीं कर सके। इस से हमारी बुज़दिली साबित होती है।

क़सम है उस ख़ुदा की, मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता। बढ़ो और मुसलमानों के हमलावर होने से पहले इन काफ़िरों को क़त्ल कर डालो या पसपा कर के भगा दो, बढ़ो और ख़ूब हिम्मत से बढ़ो।

हज़रत उमर रज़ि० की इस तक़रीर ने उन के दस्ते के लोगों में जोश की रूह फूंक दी।

उन्हों ने जोश से भर कर हमला किया और इस ग़ज़ब से हमला किया कि कुफ़्फ़ार के रोकने के बावजूद उन्हें मारते-काटते हारिस और उस की बेटी जुवैरिया की तरफ़ बढ़ने लगे।

बड़ी ख़ूंरेज़ लड़ाई शुरू हो गयी।

तलवारें निहायत फुर्ती से बुलंद हो-हो कर इंसानों के ख़ून में तैरने लगीं। हाथ-पैर, सर और धड़ कट-कट कर गिरने लगे और ख़ून की नदी बहने लगी।

हज़रत उमर ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए, काफ़िरों को मारते-काटते कुफ़्फ़ार के अलमबरदार की तरफ़ बढ़े।

सफ़वान हारिस का अलमबरदार था, बहुत ही बहादुर और तजुर्बेकार उस ने हलफ़ उठाया था कि वह ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक अलम (झंडे) की हिफ़ाज़त करेगा।

हर क़ौम को अपना अलम प्यारा होता है। लड़ाई के मैदान में ज़िंदगी से ज़्यादा अलम की हिफ़ाज़त की जाती है। कुफ़्फ़ार भी अलमबरदार को घेरे अलम की हिफ़ाज़त कर रहे थे।

जो मुसलमान उधर बढ़ता था, या तो उसे शहीद कर देते थे कि वह पीछे हटने पर मजबूर हो जाता था।

कई मुसलमान अलमबरदार की तरफ़ बढ़ चुके थे, लेकिन ज़ख़्मी हो कर वापस लौटने पर मजबूर हुए थे।

हज़रत उमर बड़ी बहादुरी से आगे बढ़े थे। उन्हें हर-हर क़दम पर

कुफ़्फ़ार ने रोका, लेकिन उन्हों ने हर उस आदमी को मार डाला जो रास्ते में आया।

वह मारते-काटते, सफ़वान अलमबरदार के क़रीब जा पहुंचे।

कुफ़्फ़ार ने देखा, वे सब तड़प-तड़प कर उन की तरफ़ लपके और चारों तरफ़ से हमलावर हुए। बहुत सी तलवारें उन के सर पर उठीं। कैसा ही बहादुर, कैसा ही निडर और कैसा ही जांबाज़ आदमी क्यों न होता, लेकिन ऐसे ख़ौफ़नाक मंज़र को देख कर झिझक जाता, मगर न झिझके तो हज़रत उमर रज़ि० ना झिझके।

उमर ने बहुत फुर्ती से तलवारें चलायीं और काटते-पीटते सफ़वान की तरफ़ बढ़े।

सफ़वान ने भी तलवार निकाली।

हज़रत उमर ने उस पर हमला किया :

उसी वक़्त उसने भी हमला किया।

पर उस की तलवार हज़रत उमर की ढाल पर पड़ी और हज़रत उमर की तलवार उस के सर पर पड़ी।

उस ने एक दिल हिला देने वाली चीख़ मारी और नीचे लुढ़क गया। उस के गिरते ही झंडा ज़मीन पर आ रहा।

कुफ़्फ़ार अपना झंडा नीचे गिरता देख कर डर और सहम गये। हारिस और जुवैरिया के दिल डूब गये। उसी वक़्त इन ताज़ादम मुसलमानों ने हमला कर दिया जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत साद के साथ आगे बढ़ रहे थे।

कुफ़्फ़ार की फ़ौज में भगदड़ मच गयी।

हारिस और जुवैरिया दोनों भागे।

इत्तिफ़ाक़ से जुवैरिया के घोड़े ने ठोकर खायी और वह मुंह के बल ज़मीन पर आ रही। कुछ मुसलमान उस के क़रीब पहुंच गये। उन्हों ने उसे गिरफ़्तार कर लिया।

तारीख़ में इस लड़ाई का नाम बनी मुस्तलिक़ की लड़ाई है।

यह लड़ाई सन ०५ हि० में हुई थी।

मुनाफ़िक़ों की चालें

बनू मुस्तलिक़ की लड़ाई में मुसलमान जीत कर लौटने लगे तो उन्होंने नदी के पार आकर उस जगह क़ियाम किया। क़ैदी और ग़नीमत का माल

उसी वक़्त मुजाहिदों में बांट दिये गये।

हारिस की बेटी जुवैरिया को साबित बिन क़ैस ने गिरफ़्तार किया था, इसलिए वह उन्हीं के हिस्से में दी गयी।

अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ को मुसलमानों की ये जीतें बड़ी नागवार गुज़र रही थीं, इस लिए उस ने मुसलमानों में फूट डालने की एक नयी चाल चली। इस के लिए उस ने तमाम साथी मुनाफ़िक़ों को होशियार कर दिया।

दूसरे दिन तमाम मुनाफ़िक़ों ने अपने-अपने हथियार संभाले और शैतानी चालबाज़ियों की शुरूआत कर दी।

इन में से कुछ भोले-भाले मुसलमानों के पास पहुंचे और इधर-उधर की बातों के बाद एक मुनाफ़िक़ बोला, सच तो यह है कि इस लड़ाई में अंसार ने बड़ी बहादुरी दिखायी। साद बिन उबादा जिस बे-जिगरी से लड़े हैं और वही क्या, साबित, उत्बान, ज़ुबैर बिन अव्वाम, अबू अय्यूब, तमाम अंसारी बड़े जोश और बहादुरी से लड़े। सच पूछो, तो यह जीत अंसार ही के दम क़दम से हुई।

तुम कहे जाओ, दूसरे मुनाफ़िक़ ने कहा, लेकिन मुहाजिर तो इस बात को नहीं मानते। वे कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० और दूसरे मुहाजिरों की सरफ़रोशी से जीत मिली है।

भाई, अंसार हों या मुहाजिर, अंसार में से एक आदमी ने कहा, दोनों ही लड़े और दोनों की मेहनतों का यह नतीजा है।

हम सब अंसारियों का यही ख़्याल है, पहले मुनाफ़िक़ ने कहा, पर अक्सर मुहाजिरों को अपनी ज़ात और अपने तबक़े पर बड़ा घमंड है। वे कहते हैं कि अगर अंसार न भी होते, तो जीत यक़ीनन हमारी ही होती।

यह उन का बेजा नाज़ है, दूसरे मुनाफ़िक़ ने कहा, आज वे अंसार ही की वजह से तरक़्क़ी कर रहे हैं। क्या वे इस बात को भूल गये हैं कि जब मदीना में आये थे, तो एक वक़्त के खाने का सामान भी उन के पास न था। हम ने हर तरह से उन की मदद की, अपना और अपने बच्चों का पेट काट कर उन्हें खाने-पीने को दिया, आज वे बातें बनाते हैं। ख़ुदा की क़सम! हमारी ही बदौलत उन्हों ने आराम पाया है। हमारी ही वजह से इन्हें फ़त्ह हासिल हो रही है, साथ ही हमारे दम-क़दम से उन का रौब व दाब क़ायम हुआ है।

भोले-भाले अंसारियों के दिलों में मुहाजिरों की तरफ़ से कदूरत पैदा

हो गयी, इन में से कुछ लोगों ने कहा, बेशक यही बात है। मुहाजिरों की ताक़त न पहले थी, न अब है। जो कुछ हो रहा है, सब हमारी ही वजह से है, जिस दिन हम ने हाथ खींच लिया, मुहाजिर कुछ भी न कर सकेंगे।

यही बात है, दूसरे मुनाफ़िक़ ने कहा, मेरा ख्याल है अंसार को मुहाजिरों से कुछ दिनों के लिए नान-कोआपरेशन (असहयोग) करना चाहिये, ताकि उन पर सच्चाई खुल जाए और उन के दिमाग़ से उन की ताक़त का घमंड निकल जाए।

तुम ठीक कहते हो, एक अंसारी ने कहा, ऐसा ही करना चाहिए।

मुनाफ़िक़ निफ़ाक़ की चिंगारी डाल कर अलग हो गये।

अंसार में इस बात का चर्चा हुआ। हर आदमी मुहाजिरों से खिचने लगा।

उधर मुनाफ़िक़ों की दूसरी टोली ने मुहाजिरों को उभारा और उन में भी अंसार से खिचाव पैदा हो गया।

एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ को बुरी नज़रों से देखने लगा।

मुनाफ़िक़ अपनी चालों को कामियाब होते देख कर बहुत खुश हुए।

अभी यह पूरी फ़ौज सफ़र में थी। दो-तीन मंज़िल चल कर ये एक नख़्लिस्तान में ठहरे। मुहाजिर और अंसार में इतना खिचाव हो गया था कि वे एक दूसरे से कलाम न करते थे।

रात होते ही फ़ौज ने इशा की नमाज़ पढ़ी और खाना खा कर सफ़र करने लगी।

इत्तिफ़ाक़ से हज़रत आइशा हाजत पूरी करने के लिए नख़्लिस्तान से बाहर गयी हुई थीं। वह एक टीले की आड़ में बैठी फ़ौज को कूच करते हुए देख रही थीं।

उस वक़्त तक परदे का हुक्म नाज़िल हो चुका था।

हज़रत आइशा रज़ि० के लिए एक महमिल तैयार किया गया था। वह इस महमिल में सवार हो कर सफ़र किया करती थीं। उन्हों ने ख्याल कर लिया था कि जब महमिल ऊंट पर रखा जाएगा, तो उन की ग़ैर हाज़िरी से ज़ाहिर हो जाएगा और उन की सवारी के मुहाफ़िज़ उन के इन्तिज़ार में रुक जाएंगे, इस लिए वे इत्मीनान से हाजत पूरी करती रहीं।

जब फ़ारिग़ हो कर उठीं, तो उन का हार झाड़ी से उलझ कर टूट गया और मोती बिखर गये।

यह हार उन की बहन का था। चूंकि पराई चीज़ थी, इसलिए वह बैठ कर मोती चुनने लगीं। चांदनी रात थी ही। इस में उन का ज़्यादा वक़्त

लग गया। जब काफ़ी मोती मिल गये, तो वह चलीं और नख़्लिस्तान तशरीफ़ ले आयीं।

आ कर देखा तो पूरी फ़ौज रवाना हो चुकी थी।

आप को बड़ी फ़िक्र हो गयी।

आप मदीने की तरफ़ पैदल ही चल पड़ीं, इस ख़्याल से कि शायद फ़ौज तक पहुंच जाएं, लेकिन एक मील चलती रहीं, इस पर भी फ़ौज का कोई निशान नज़र न आया, आप को परेशानी हुई।

चूंकि आप कसरत से रोज़े रखती थीं, इसलिए दुबली और कमज़ोर थीं। आप ज़्यादा चल न सकीं और रास्ते में एक टीले पर बैठ गयीं।

आप को इस बात का बड़ा रंज हुआ कि मह्मिल बरदारों ने मह्मिल ऊंट पर रख दिया और यह न देखा कि आप उस पर सवार हैं या नहीं।

बात यह हुई थी कि हज़रत आइशा रज़ि० हल्की-फुल्की थीं, इस लिए मह्मिलबरदारों को यह मालूम ही न हुआ कि आप उस में मौजूद हैं या नहीं। उन्हों ने उठा कर मह्मिल ऊंट पर कस दिया और फ़ौज के साथ चल पड़े।

हज़रत आइशा रज़ि० थोड़ी देर टीले पर बैठी रहीं, जब बैठे-बैठे नींद आने लगी, तो आप वहीं पर लेट गयीं और सो गयीं।

जब आंख खुली, तो सुना कोई कह रहा था—

इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० हाय यह उम्मुल मोमिनीन कैसे मर गयीं? हुज़ूर सल्ल० उन की लाश कैसे छोड़ गये?

हज़रत आइशा इस आवाज़ को सुन कर घबरा गयीं। जल्दी से उठीं और चेहरे को आंचल से छिपा लिया। उन्हों ने देख लिया था, सफ़वान बिन मुअत्तल ऊंट की महार पकड़े सामने खड़े हैं।

सफ़वान बिन मुअत्तल के सुपुर्द यह ख़िदमत थी कि वह फ़ौज की क़ियामगाह से सुबह के वक़्त चलते थे और पड़ाव का ख़ूब जायज़ा लेते थे कि कहीं किसी की कोई चीज़ पड़ी तो नहीं रह गई है। अगर किसी की कोई चीज़ रह जाती, तो वह उठा कर उसके मालिक तक पहुंचा दिया करते थे।

आज भी वह सुबह होने के बाद क़ियामगाह का जायज़ा ले कर चले आ रहे थे। उन्हों ने उम्मुल मोमिनीन को उस वक़्त देखा था या उस वक़्त से जानते थे, जबकि परदे का हुक्म नाज़िल न हुआ था और उम्मुल मोमिनीन परदा न किया करती थीं।

उन्हों ने हज़रत आइशा रज़ि० को सोता देख कर यह ख़्याल किया था कि शायद आप का इंतिक़ाल हो गया है, इसी लिए उन्हों ने इन्ना

लिल्लाह पढ़ी थी, जिसे सुन कर उम्मुल मोमिनीन की आंख खुल गयी थी।

हज़रत आइशा रज़ि० को उठ कर बैठते देखकर सफ़वान बिन मुअत्तल को बड़ी खुशी हुई। उन्हों ने फ़रमाया, अल-हम्दु लिल्लाह !

उन्हों ने फ़ौरन ऊंट बिठाया और उम्मुल मोमिनीन को सवार होने के लिए कहा।

उम्मुल मोमिनीन ने उन से कोई बातें न की, वह चुपचाप उठीं और ऊंट पर जा कर बैठ गयीं।

सफ़वान ने महार पकड़ी और पैदल चल पड़े।

ये दोनों सारा दिन सफ़र कर के उस जगह पहुंचे, जहां फ़ौज ठहरी हुई थी।

अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने हज़रत आइशा रज़ि० को तन्हा ऊंट पर आते देखा, तो अपने क़रीब ही बैठे हज़रत हस्सान बिन साबित और मिस्तह बिन असासा से बोला—

तुम देखते हो कि हज़रत आइशा उम्मुल मोमिनीन कहलाती हैं और तन्हा सफ़वान के साथ आ रही हैं।

हां देखा, हस्सान ने कहा और देख कर बड़ा ताज्जुब करने लगे।

ताज्जुब की क्या बात है, मिस्तह बोले, यक़ीनन हज़रत आइशा जान-बूझ कर पीछे रह गयीं और अबू सफ़वान के हमराह आयी हैं।

यही मैं भी कहता हूं, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ को मौक़ा मिल गया, आखिर फ़ौज के पीछे और तन्हा रह जाने का क्या मतलब ?

बड़ा बुरा ज़माना आ गया है, हस्सान ने कहा, नबी की बीवी और ऐसी बातें ?

उम्मुल मोमिनीन हो या नबी ज़ादी, मिस्तह ने कहा, औरत आखिर औरत है और वह अपने जज़्बों पर क़ाबू नहीं रख सकती।

बड़े शर्म और ग़ैरत की बात है, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा, इस बात को तमाम अंसार और मुहाजिरों में फैला दिया जाए।

मैं तो सब से पहले खुदा के रसूल से यह माजरा कहता हूं, मिस्तह ने कहा, देखें, क्या जवाब देते हैं ?

ज़रूर कहो, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ बोला, मैं और हस्सान लोगों से इस की चर्चा करेंगे।

इस के बाद ये तीनों उठे और प्रचार के लिए फ़ौज में घुस गये।

अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ और हस्सान शाइर ने लोगों से इस बात का ज़िक्र शुरू किया।

चूंकि ऊंट अभी तक आ रहा था और हज़रत आइशा उस पर सवार नज़र आ रही थीं, इस लिए लोगों ने हैरत से देखा और तरह-तरह की चर्चाएं शुरू कर दीं।

इधर मिस्तह सीधा हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में पहुंचा।

उधर हुज़ूर सल्ल० खेमे के अन्दर बैठे थे और कोई आप के पास न था। मिस्तह ने जाते ही कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! खेमे से बाहर निकल कर देखिए। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० आप पीछे रह गयी थीं और अब सफ़वान के साथ आयी हैं।

हुज़ूर सल्ल० को यह खबर सुन कर कुछ रंज हुआ। आप ने फ़रमाया, मिस्तह ! शायद वह आइशा न हों और तुम को ग़लतफ़हमी हुई हो।

खुदा की क़सम ! हस्सान ने कहा, हज़रत आइशा रज़ि० हैं। चल कर देख लीजिए, तन्हा पीछे रह जाने और सफ़वान के साथ आने का क्या मतलव हो सकता है, यह तो बड़े शर्म की बात है नबी की बीवी को ऐसा नहीं करना चाहिए।

हुज़ूर सल्ल० बे-अख्तियार उठे, खेमे से बाहर आए, उस वक़्त सफ़वान ऊंट बिठा रहा था।

हज़रत आइशा रज़ि० ऊंट पर सवार थीं। हस्सान भी पीछे ही खेमे से निकल आये थे। उन्हों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! देखा, क्या यह बात उम्मुलमोमिनीन के शायानेशान है। खुदा की क़सम ! बुरी बात है, तमाम अंसार और मुहाजिरों में इस बात की चर्चा शुरू हो गयी है।

हज़रत आइशा को देख कर और हस्सान की बातें सुन कर हुज़ूर सल्ल० के दिल को बड़ी तक्लीफ़ पहुंची। आप फ़िक्रमन्द हो कर खेमे के अन्दर चले गये।

हस्सान भी पीछे ही पहुंचे। उन्हों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० रंज न कीजिए। औरत फिर औरत है। ऐसी औरतों से ताल्लुक़ तोड़ना बेहतर है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

हस्सान ! इस वक़्त मुझे तन्हाई की ज़रूरत है।

हस्सान चले गये।

हुज़ूर सल्ल० ग़ौर व फ़िक्र में पड़ गये।

पाकदामनी की खुदाई गवाही

चूंकि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० दिन भर तेज़

धूप और गर्म हवा में सफ़र करती रही थीं, इस लिए शाम के वक़्त उन्हें बुखार हो गया और ऐसा तेज बुखार हुआ कि ग़ाफ़िल हो गयीं।

रात को फ़ौज ने कूच किया, तो उन्हें महमिल में लिटा कर सफ़र शुरू किया गया।

अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ और उस के साथियों ने इस वाक़िए का इस तरह प्रोपगंडा किया कि हुज़ूर सल्ल० पर भी उस का जादू चल गया और आप भी हज़रत आइशा रज़ि० से कुछ खिचे-खिचे रहने लगे।

चूंकि अब मदीना क़रीब आ गया था, इस लिए दूसरे ही दिन यह फ़ौज मदीने में दाखिल हो गयी।

मदीने के लोगों ने फ़ौज का शानदार इस्तक़्बाल किया।

जिस वक़्त इस्लामी फ़ौज मदीने में दाखिल हो रही थी, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ के बेटे अब्दुल्लाह रास्ता रोक कर खड़े हो गये। उन्होंने अपने बाप से कहा—

ऐ मुनाफ़िक़ों के सरदार ! तुम मदीने में दाखिल नहीं हो सकते।

अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ को यह सुन कर बड़ा गुस्सा आया।

उस ने ग़ज़बनाक हो कर कहा, ना-खलफ़ ! तू मुझे रोकता है, किस वजह से ?

इस वजह से कि तुम मुनाफ़िक़ हो, अब्दुल्लाह बोले, तुम्हारे दिल में कुछ और है और ज़ुबान पर कुछ और। तुम इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ साज़िशें करते रहे हो। अपनी बादशाही के ख्वाब देखते हो। तुम्हारी ज़ात से किसी बड़े फ़ित्ने के पैदा होने का खतरा है।

बद बख्त ! अगर तू मेरा बेटा न होता, तो मैं तेरा सर उड़ा देता, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ गरजा।

तुम मुझे क़त्ल कर डालो, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ साज़िशें न करो, अब्दुल्लाह ने कहा, तुम्हारी साज़िशों से रसूले खुदा के दिल को तक्लीफ़ पहुंची, तुम ने अंसार और मुहाजिरों में बे-लुत्फ़ी पैदा कर दी है। तुम को और तुम्हारी जमाअत को हर गिज़ मदीने में दाखिल न होने दूंगा।

मेरे गुमराह बेटे ! अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा, तुझे मालूम है कि तमाम मदीना वाले मुझे अपना बादशाह बनाने पर तैयार थे। मेरे लिये ताज बनवाया जा चुका था। मुझे हुकूमत मिलने वाली थी। इन मुसलमानों की वजह से मेरी बादशाही अधर में लटक कर रह गयी। अगर मैं शाही हासिल करने की कोशिश न करूं, तो दुनिया मुझे पस्त हिम्मत

इंसान कहेगी।

मुसलमानों और ख़ुदा के रसूल सल्ल० को नुक़सान पहुंचा कर हुकूमत हासिल करना हिमाक़त नहीं तो और क्या है।

जगह और सलतनत हासिल करने के लिए कोई कोशिश करना हिमाक़त नहीं है, अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ ने कहा।

इस बीच बहुत से मुसलमान वहां जमा हो गये।

मुनाफ़िक़ों का दस्ता अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ के साथ हो गया।

किसी तरह हुज़ूर सल्ल० को भी इस वाक़िए की इत्तिला हो गयी। आप फ़ौरन वापस तश्रीफ़ लाये।

आप ने सूरते हाल से बाख़बर होने के बाद फ़रमाया, अब्दुल्लाह! तुम अपने बाप और साथियों को मदीना में दाख़िल होने से न रोको, ये सब मुसलमान हैं।

या रसूलल्लाह सल्ल०! हज़रत अब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया, ये मुनाफ़िक़ हैं, इस्लाम और मुसलमानों की हमदर्दी चाहने वाले नहीं हैं।

लेकिन अब्दुल्लाह! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये लोग कलिमा पढ़ते हैं, नमाज़ अदा करते हैं, मुसलमान कहलाते हैं। मुसलमानों की भलाई न चाहें, लेकिन अपने को मुसलमान कहते हैं। इस लिए इन्हें वे तमाम हुक़ूक़ हासिल हैं, जो दूसरे मुसलमानों को हैं, इन का रास्ता न रोको।

हुज़ूर सल्ल०! ये फ़रेबी और दग़ाबाज़ हैं, मुसलमानों में फूट डालना चाहते हैं। ऐसे मुनाफ़िक़ों को मदीना मुनव्वरा में रहने का कोई हक़ नहीं है, कुछ मुसलमानों ने अपनी राय दी।

मुसलमानो! सुनो! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो आदमी मुसलमान है और अपने आप को मुसलमान कहता है, हम उसे अपनी जमाअत से अलग नहीं कर सकते। तुम रास्ते से अलग हट जाओ और अब्दुल्लाह और उस के साथियों को मदीना मुनव्वरा में दाख़िल होने से न रोको।

अब किस की चूं व चरा की हिम्मत थी, सब लोग अलग हो गये।

हुज़ूर सल्ल० चले और आप के पीछे अब्दुल्लाह और उस के साथी मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए।

हज़रत आइशा रज़ि० को बुख़ार हो गया था। वह महि्मल में आराम फ़रमा रही थीं।

महि्मल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के मकान पर जा कर रुका।

हज़रत आइशा को उतारा गया।

ख़्याल था कि थकन उतरेगी तो बुख़ार भी उतरेगा, लेकिन एक

हफ्ता गुज़रने के बाद भी बुखार न उतरा।

इस से पहले भी हज़रत आइशा को बुखार आया था और हुज़ूर सल्ल० तीमारदारी और देखभाल फ़रमाया करते थे और घंटों बैठ कर तसल्ली भरी बातें किया करते थे, लेकिन इस बार हुज़ूर सल्ल० दो घड़ी के लिए भी पास न बैठे। बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ लाते, घर वालों को सलाम कहते और मकान के आंगन में खड़े हो कर पूछते—

ऐ सिद्दीक़ के घर वालो ! अब तुम्हारी बीमारी कैसी है ?

लोग जो हालत होती बयान कर देते।

आप वापस तशरीफ़ ले जाते।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० को कुछ खबर न थी कि उन पर क्या बुहतान बांधा गया है, वह हैरान थीं कि हुज़ूर सल्ल० की यह बे-इल्तिफ़ाती क्यों हैं ?

एक तो बीमार, दूसरे बे-इल्तिफ़ाती, उन की बीमारी बढ़ती गयी और ग़म में भी इज़ाफ़ा होता गया।

कमज़ोर तो थीं ही, एक दिन रात को हाजत पूरी करने की ग़रज़ से मकान से निकल कर मैदान की तरफ़ चलीं, वापस लौटीं, इत्तिफ़ाक़ से उम्मे मिस्तह का पांव चादर में उलझ गया और वह गिर पड़ीं। उठते-उठते उन के मुंह से बे-अख्तियार निकला, मिस्तह हलाक हो।

ऐ उम्मे मिस्तह ! हज़रत आइशा ने फ़रमाया, बड़ी बुरी बात है कि तुम उस आदमी को बुरा कहती हो, जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुआ हो।

नादान आइशा ! उम्मे मिस्तह ने जवाब दिया, तुझे वाक़िआत का इल्म नहीं है, भोली और ना तजुर्बेकार खातून ! क्या तू नहीं देख रही है कि हुज़ूर सल्ल० तुझ से रंजीदा हैं ?

हां, देख तो रही हूं, लेकिन इस का मिस्तह से क्या ताल्लुक़ ?

ग़रीब और कम बोलने वाली आइशा ! उम्मे मिस्तह ने कहा, जब तू बनू मुस्तलक़ की लड़ाई से वापस आते हुए एक रात को पीछे रह गयी थी और सफ़वान के साथ आयी थी, तो इसी मिस्तह और उसके साथियों ने तुझ पर बोहतान बांधा था। हुज़ूर सल्ल० और तमाम मुसलमान तुझ से बद-गुमान हैं।

यह सुनते ही आइशा के दिल पर बिजली-सी गिरी। वह थर-थर कांपने लगीं। बड़ी ही बेचैनी में आवाज़ निकली, मेरे खुदा ! यह रुसवाई, अल्लाह मियां ! अगर मैं क़ुसूरवार हूं, तो मुझे दुनिया से उठा ले।

इतना कहते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं।

उम्मे मिस्तह उन की यह कैफ़ियत देख कर घबरा गयीं और बे-अख़्तियार रोने लगीं। उन्हों ने कहा, ऐ खुदा! ऐसी नेक और भोली ख़ातून को अभी मौत की गोद में न जाने दीजियो!

वह उन के पास बैठ कर आंचल से हवा देने लगीं।

हज़रत आइशा देर तक बेहोश पड़ी रहीं। होश आया तो आंखें खोलीं। तबियत कुछ और ठिकाने हुई तो उठ कर बैठीं और रोने लगीं। उन्हों ने सिसकियां भरते हुए कहा, मेरे अलीम और बसीर खुदा! तू खूब जानता है कि मैं ने कोई क़ुसूर नहीं किया, बे-क़ुसूर बदनाम हो गयी और बदनाम की जा रही हूं। अब तू ही मुझे बे क़ुसूर साबित कर सकेगा और तू ही मेरी पाकदामनी का सबूत दे सकेगा।

हज़रत आइशा रो रही थीं और उन के साथ उम्मे मिस्तह भी।

उम्मे मिस्तह ने ढारस बंधाते हुए कहा, आइशा! रोओ नहीं, मुझे यक़ीन है कि खुदा तुम्हारी बेगुनाही साबित कर के रहेगा।

हज़रत आइशा ने अपने दोपट्टे के आंचल से आंसू पोंछे और उम्मे मिस्तह का सहारा ले कर खड़ी हुईं। कमज़ोरी से पांव डगमगाने लगे तो उम्मे मिस्तह का सहारा ले लिया।

किसी तरह मकान पर पहुंचीं और मकान में जाते ही बिस्तर पर पड़ कर फिर बेहोश हो गयीं।

जब उन्हें होश आया तो सूरज चमक रहा था, सारे सेहन में धूप फैली हुई थी। पास में बहुत से लोग बैठे हुए थे।

हज़रत आइशा रज़ि० ने आंखें खोलीं, इशारे से पानी मांगा।

पानी दिया गया, आप ने पानी पिया। पानी पीने से कुछ तबियत संभली।

उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले आये। आज आप कमरे के अन्दर आ गये। आप ने दरवाज़े के क़रीब खड़े हो कर उम्मे मिस्तह से पूछा—

उम्मे मिस्तह! अब तुम्हारी मरीज़ कैसी है?

हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ सुनी, बे क़रार हो कर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ करवट ली, हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर हसरत से नज़र डाली और बे-अख़्तियार आप की आंखों से आंसू जारी हो गये।

हुज़ूर सल्ल० ने उन की तरफ़ से मुंह फेर लिया और जल्दी से कमरे से बाहर निकल आये, सेहन तै कर के मकान से बाहर चले।

रास्ते में हज़रत अली और हज़रत उसामा मिल गये। आप उन्हें साथ ले कर मस्जिद में पहुंचे और एक कोने में बैठ कर हज़रत उसामा से पूछने

लगे—

उसामा ! तुम्हारा उन बातों के बारे में क्या ख्याल है, जो हज़रत आइशा से मुताल्लिक़ मशहूर हैं ?

मैं इन बातों को बुहतान समझता हूं, उसामा ने जवाब दिया, हज़रत आइशा जैसी पाकदामन खातून से ऐसी उम्मीद की ही नहीं जा सकती।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली से पूछा—

अली ! तुम क्या कहते हो ?

हुज़ूर ! उसामा ने जो कुछ कहा, वह बिल्कुल सही है, हज़रत अली का जवाब था। हज़रत आइशा हज़रत अबूबक्र की बेटी हैं, रसूले खुदा की बीवी हैं, उन के बारे में किसी गुनाह की बात सोचना भी गुनाह है।

फिर बोले, लगता है आप इसी वजह से वहशत ज़दा नज़र आते हैं ?

हां, मुझे बहुत ज्यादा फ़िक्र है। समझ में नहीं आता, क्या करूं, क्या न करूं ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल० फ़िक्र न करें, हज़रत अली ने फ़रमाया, हज़रत आइशा के अलावा और बहुत सी औरतें हैं जो आप की हमनशीनी को फ़ख्र समझती हैं।

मगर आइशा सिद्दीक़ा…? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

वह बिल्कुल बेगुनाह मालूम होती हैं, हज़रत अली ने फ़रमाया, और इत्मीनान के लिए उन की खादिमा हज़रत बरीरा से मालूम कर लीजिए।

हुज़ूर सल्ल० खामोश हो गये।

कई दिन बाद आप ने बरीरा को तलब किया।

जब वह आयीं तो हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, बरीरा ! आइशा के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?

हुज़ूर सल्ल० ! क़ियामत के दिन मुझे आप की शफ़ाअत और खुदा का दीदार नसीब न हो, अगर मैं ज़रा भी ग़लत कहूं या झूठ बोलूं। हज़रत आइशा निहायत पाकदामन और ग़ैरतमंद हैं। उन पर बदमाशों ने बे-बुनियाद इलज़ाम लगाया है।

हुज़ूर सल्ल० ने बरीरा को विदा कर दिया।

अगरचे इन गवाहियों से आप को तसल्ली हो गयी थी, लेकिन आप ऐसी गवाही चाहते थे जो हज़रत आइशा की पाकदामनी की भरपूर गवाही दे सके, जिसे रद्द ही न किया जा सके।

कई दिन के बाद हुज़ूर सल्ल० के पास एक दिन ऐसा भी आया कि हज़रत उस्मान, हज़रत उमर और हज़रत अली तीनों बैठे थे। आप ने

तीनों से पूछा—

तुम्हारा आइशा के बारे में क्या ख्याल है ?

तीनों ने एक ज़ुबान हो कर कहा, हज़रत आइशा रज़ि० की पाकदामनी के बारे में किसी काफ़िर ही को शक होगा।

हुज़ूर सल्ल० अब भी खामोश रहे।

थोड़ी देर भी न गुज़री थी कि हुज़ूर सल्ल० पर एक कैफ़ियत तारी हो गयी। आप का चेहरा मुबारक लाल हो गया, आंखें चमकने लगीं, जिस्म पसीने में डूब गया। सब समझ गये कि हुज़ूर सल्ल० पर वह्य नाज़िल हो रही है।

वह्य का सिलसिला खत्म हुआ, तो आप ने बताया—

अल्लाह ने आइशा की पाकदामनी की तस्दीक़ कर दी है।

तीनों बुज़ुर्ग एक साथ बोले—

खुदा का शुक्र है, हम ने इस बोहतान पर कभी यक़ीन न किया और हम खुदा के ग़ज़ब से बच गये।

हुज़ूर सल्ल० ने उसी वक़्त तमाम मुसलमानों के जमा करने का हुक्म दे दिया।

जब तमाम मुसलमान मस्जिदे नबवी में जमा हो गये, तो हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ लाये और एक निहायत ही असरदार तक़रीर की। हज़रत आइशा रज़ि० के सिलसिले की वह्य पढ़ कर सुनायी।

वे भोले-भाले मुसलमान, जो मुनाफ़िक़ों की चाल के शिकार हो गये थे, बहुत शर्मिन्दा हुए। उन्हों ने उसी वक़्त तौबा की।

हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र के मकान की तरफ़ रवाना हुए। आप मकान में दाखिल हो कर सीधे हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के मकान में पहुंचे।

हज़रत आइशा पर ग़फ़लत तारी थी। वह तेज़ बुखार में पड़ी हुई थीं।

उम्मे मिस्तह अब भी उन के पास बैठी थीं। हुज़ूर सल्ल० ने उम्मे मिस्तह से पूछा—

अब हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का क्या हाल है ?

उम्मे मिस्तह ने आंसुओं की कुछ बूंदों को गिराते हुए कहा, कोई दम की मेहमान हैं।

हुज़ूर सल्ल० यह सुन कर घबरा गये। आप ने पूछा—

क्या मरज़ का ज़ोर है या कोई और भी शिकायत है ?

मरज़ तो ऐसा तेज़ नहीं मालूम होता, कोई रूहानी तक्लीफ़ है, उम्मे मिस्तह ने जवाब दिया।

क्या खाती-पीती हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

कई दिन से कुछ नहीं खाया है, सिर्फ़ पानी के कुछ क़तरों पर ज़िंदगी गुज़ार रही हैं। उम्मे मिस्तह ने बताया।

बेहोश कब से हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

रात से, उम्मे मिस्तह ने बताया।

हुज़ूर सल्ल० बढ़े, ज्योंही हुज़ूर सल्ल० ने चादर पकड़ कर खींचना चाहा, फ़ौरन ही हज़रत आइशा सिद्दीक़ा को होश आ गया। हुज़ूर सल्ल० को देखा और कमज़ोर आवाज़ में बोलीं—

मेरे हुज़ूर सल्ल० ! क्या मेरा क़ुसूर माफ़ कर दिया ?

हुज़ूर सल्ल० वहीं पर बैठ गये। मुस्करा कर कहा—

तुम को मुबारक हो, तुम्हारी पाकदामनी की गवाही ख़ुदा ने दे दी है।

हज़रत आइशा का चेहरा खिल उठा। उन्हों ने कहा, ख़ुदा का हज़ार-हज़ार शुक्र है कि मेरी रूहानी तक्लीफ़ दूर हो गई।

हुज़ूर सल्ल० ने कहा, आइशा ! मैं ने तुम्हारे दिल को तक्लीफ़ पहुंचाई है, मैं शर्मिन्दा हूं। यह मेरा क़ुसूर है। क्या तुम मेरे इस अनजाने क़ुसूर को माफ़ करोगी ?

हज़रत आइशा बोलीं ! मेरे सरताज ! आप का कैसा क़ुसूर ? आप को तो वाक़िआत ने यक़ीन करने पर मजबूर कर दिया।

ख़ैर जो भी हो अब ख़ुश हो जाओ। अल्लाह ने तुम्हारी पाकदामनी की गवाही दी है।

हज़रत आइशा रज़ि० ख़ुश तो हुई और सुकून मिलने की वजह से अब वह तेज़ी से सेहतमंद होने लगीं।

कुफ़्फ़ार की शौकत की इन्तिहा

क़बीला बनू नज़ीर के यहूदी देश से निकाले जाने पर कुछ तो मुल्क शाम में चले गये थे और कुछ ख़ैबर में आबाद हो गये थे, उन्हें देश से निकाले जाने का बड़ा रंज था। वे इस्लाम और मुसलमानों के बहुत बड़े दुश्मन हो गये थे।

उन्हें ख़ूब मालूम था कि अरब के मुश्रिक आमतौर से और कुफ़्फ़ार मक्का के ख़ासतौर से मुसलमानों के दुश्मन हैं, ज़रा-सी तहरीक पर इस्लाम और मुसलमानों की जड़ काटने पर तैयार हो जाते हैं।

चुनांचे उन के बड़े-बड़े लोग, जैसे हुय्य बिन अख़तब, सलाम बिन

मुश्कम, कनाना बिन रुबैअ, हौस बिन क़ैस और अबू उम्मारा वग़ैरह मुत्तफ़िक़ व मुत्तहिद हो कर मक्का की तरफ़ रवाना हुए। चूंकि वे जानते थे कि क़ुरैशे मक्का का असर तमाम अरबी क़बीलों पर है, अगर उनको लड़ाई पर हमवार कर लिया गया, तो सारे क़बीले मुत्तहिद हो कर उठ खड़े होंगे और फिर मुसलमानों से आख़िरी फ़ैसला करने वाली लड़ाई होगी या उस लड़ाई में मुसलमानों की पूरी जड़ कट जाएगी या अरब के मुश्रिक हमेशा के लिए दब जाएंगे।

यह वे जानते थे और ख़ूब जानते थे कि मुसलमानों की तायदाद थोड़ी है। अगर सारे मुश्रिक लड़ाई पर तैयार हो गये, तो मुसलमानों की हार यक़ीनी है।

मक्का में पहुंच कर उन्हों ने क़ौम के बड़ों से मुलाक़ात करनी शुरू की, उन्हें लड़ाई पर उभारा। मक्के के क़ुरैश तो लड़ाई के लिए पहले से ही तैयार थे, फ़ौरन तैयार हो गये।

उन्हों ने चन्दे की फ़ेहरिस्त खोल दी, वालंटियर भरती करने लगे। शायर और मुक़र्रिर देश के कोने-कोने में भेज दिये गये, जिन्हों ने अपनी जादूबयानी से तमाम मुल्क में जोश व ग़ज़ब की आग भड़का दी। हर ख़ानदान, हर क़बीला, हर देहाती और शहरी अरब लड़ाई के लिए तैयार हो गया, क़रीब-क़रीब के लोग मक्का में आ कर जमा होने लगे।

जब बड़ी भारी फ़ौज इकट्ठा हो गयी, तो तमाम क़बीलों के सरदार जमा हो कर ख़ाना काबा में पहुंचे और सब ने इस बात पर हलफ़ उठाया कि जब तक जिन्दा हैं, इस्लाम और मुसलमानों की मुख़ालफ़त से मुंह न मोड़ेंगे और इस्लाम की जड़ काटने में कोई कमी न करेंगे साथ ही लड़ाई के मैदान में कट-कट कर मर जाएंगे, पर हार कर न आएंगे, मारेंगे या मर जाएंगे।

इस हलफ़ के बाद फ़ौज का जायज़ा लिया गया। चार हज़ार फ़ौजी कील-कांटे से दुरुस्त हो कर लड़ाई के मैदान में जाने के लिए तैयार थे।

एक दिन फ़ौज के कूच करने के लिए मुक़र्रर किया गया। जब वह दिन आया, तो मुश्रिकों की फ़ौज निहायत शान व दबदबा के साथ मक्का से निकल कर मदीने की तरफ़ चल पड़ी।

अगरचे कुफ़्फ़ार ने कोशिश की कि इस फ़ौज की रवानगी का इल्म मुसलमानों को उस वक़्त तक न हो, जब तक कि वे मदीने के सामने न पहुंच जाएं, मगर यह बात ग़ैर-मुम्किन थी। तमाम मुल्क में इस फ़ौज के हमले की चर्चा हो गयी और होते-होते यह ख़बर मदीना में भी पहुंच

गयी।

मुसलमानों को जब इस फ़ौज के आने का इल्म हुआ, तो उन के दिलों पर असर हुआ, चूंकि उन्हें किसी तरफ़ से किसी मदद की उम्मीद न थी और उन की सारी तायदाद कुफ़्फ़ार की फ़ौज के मुक़ाबले में चौथाई भी न थी, इसलिए उन को बड़ी चिन्ता हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने मज्लिसे शूरा बुलायी और फ़रमाया—

मुसलमानो ! कुफ़्र इस्लाम को चैन से बैठने नहीं देता। इस बार उन्हों ने तमाम मुश्रिक क़बीलों को जमा कर टिड्डी दल तैयार किया है। यह लड़ाई फ़ैसला कर देने वाली आखिरी लड़ाई लगती है।

यह तो ज़ाहिर है कि हमारी तायदाद कम है और हम किसी तरह भी कुफ़्फ़ार की फ़ौज का मुक़ाबला नहीं कर सकते। खुले मैदान में मुक़ाबला करना तो तक़रीबन नामुम्किन ही है।

मदीने में कोई क़िला भी ऐसा नहीं है कि जिसमें हम पनाह ले सकें और लड़ाई भी ज़रूरी है। ऐसी शक्ल में सोच-समझ कर मश्विरा दो कि कौन सा तरीक़ा अपनाया जाए, जिस से बिना भारी नुक़्सान के दुश्मन का मुक़ाबला किया जाए।

हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी राय रखने में पहल की—

मुसलमानों ने आजतक जितनी लड़ाइयां लड़ी हैं उनमें तायदाद की कमी ज़्यादती का कोई असर नहीं होता था, वे तो सिर्फ़ ख़ुदा के भरोसे पर लड़े हैं और ख़ुदा ने हमेशा उन की मदद फ़रमायी है। अब भी ख़ुदा ही के भरोसे पर लड़ाई शुरू कर दीजिए। वह ज़रूर मदद करेगा।

दुनिया में वही क़ौम तरक़्क़ी कर सकती है जो अपने पांव पर खड़ा रहना चाहती है, हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाती है। दूसरों का सहारा नहीं ढूंढती। दुश्मन ज़्यादा हों तो हों, हमारा काम लड़ना और ख़ुदा का काम अपने मानने वालों की मदद करना है। हमें हर क़ीमत पर लड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, यह हज़रत अली का मश्विरा था।

जिस ख़ुदा ने हमें पैदा किया है, उसी ने हमारी मदद का वायदा फ़रमाया है उसी ने हमें सोच-समझ कर काम करने का हुक्म दिया है, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ बोले, यह किसी तरह भी मुनासिब नहीं है कि हम मुट्ठी भर मुसलमान टिड्डी दल कुफ़्फ़ार से खुले मैदान में जा कर लड़ें। इस वक़्त हमें सिर्फ़ कुफ़्फ़ार ही का डर नहीं है, बल्कि आस्तीन में छिपे उन सांपों का भी डर है, जिन्हें हम मुनाफ़िक़ कहते हैं। यहूदियों का ज़बरदस्त क़बीला बनू क़ुरैज़ा दुश्मनों से सांठ-गांठ कर रहा है, ये भी हमारे आस्तीन

के सांप बने हुए हैं, ये भी बड़े खतरनाक हैं। मुनासिब है कि कोई ऐसा हिसार क़ायम किया जाए, जिस के अन्दर दुश्मन राह न पा सकें।

आप जानते ही हैं, मैं फ़ारस का रहने वाला हूं, सलमान फ़ारसी बोले फ़ारस वाले जब किसी से लड़ाई लड़ते हैं, तो फ़ौज के चारों तरफ़ खंदक़ (खाई) खोद लेते हैं, इस से कुछ हिफ़ाज़त हो जाती है और अचानक हमलों के अंदेशे बाक़ी नहीं रहते।

अरब में खंदक़ के नाम को भी कोई नहीं जानता था

खंदक़ क्या चीज़ होती है और कैसे तैयार की जाती है? हज़रत उमर ने पूछा।

खंदक़ उस गढ़े को कहते हैं, जो फ़ौज के चारों तरफ़ कई गज़ चौड़ा और कई गज़ गहरा खोदा जाता है। हज़रत सलमान ने बताया, खंदक़ पार किये बिना दुश्मन अन्दर नहीं आ सकता और खंदक़ का पार करना आसान नहीं होता।

यह राय मुनासिब है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हमें एक तरफ़ से मैदान में खंदक़ खोद कर हिसार क़ायम कर लेना चाहिए।

राय तो मुनासिब है, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे ख्याल में अमली बात यह है कि हम मदीने के चारों तरफ़ खंदक़ खोद डालें, इस से मदीना बचा रहेगा और हम अपने घरों में रहते हुए बचाव कर सकेंगे।

निहायत मुनासिब है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

चुनांचे इस तज्वीज़ पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया।

हुज़ूर सल्ल० ने पूरे शहर में मुनादी करा दी कि मदीना के तमाम बाशिंदे, चाहे वे मुसलमान हों या मुश्रिक और यहूदी, सब मिल कर खंदक़ खोद दें।

मुसलमान तो मुनादी सुनते ही आ गये, लेकिन मुश्रिक और यहूदी न आए, वल्कि उन्हों ने कहला भेजा कि हम मुसलमानों की किसी क़िस्म की मदद नहीं कर सकते।

यह खुली बद अहदी थी।

मुसलमान उन की बद-अहदी से ज़रा भी न घबराये, न परेशान हुए। वे खंदक़ खोदने और दुश्मनों का मुक़ाबला करने को तैयार हो गये।

जितने हिस्से में खंदक़ खोदनी थी, पहले हुज़ूर सल्ल० ने नेज़ा ले कर दायरा खींचा। हज़ारों गज़ लम्बा दायरा खिंचा। इस दायरे के दस-दस गज़ के टुकड़े किये गये और हर टुकड़ा एक-एक मुसलमान के सुपुर्द किया गया।

खुद हुज़ूर सल्ल० के हिस्से में भी एक टुकड़ा आया।

खंदक़ की खुदाई शुरू हो गयी।

खुदाई का काम दिन व रात हुआ।

खंदक़ से जो मिट्टी निकल रही थी खंदक़ के किनारे डाल कर पुश्ता बना दिया गया। इस तरह खंदक़ के किनारे एक फ़सील क़ायम कर दी गयी।

मुसलमानों में से कोई भी ऐसा आदमी न था, जो खंदक़ न खोद रहा हो, खुद हुज़ूर सल्ल० भी लगे रहे।

कुफ़्फ़ार के टिड्डी दल के आने की खबरें बराबर आती रहती थीं और साथ ही साथ यह भी मालूम होता रहता था कि कुफ़्फ़ार की फ़ौज हर-हर क़दम पर बढ़ती चली आ रही है; तमाम मुश्रिक क़बीले कुफ़्फ़ारे मक्का से मिल गये हैं।

इन खबरों से भी मुसलमान नहीं घबराये।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० को मालूम हुआ कि हुय्य बिन अख़्तब बनू क़ुरैज़ा के क़िले में उन्हें लड़ाई में शरीक होने पर उभारने आया है और काब बिन असद ने जो बड़ों में है, शरीक होने का इक़रार कर लिया है।

आप ने फ़ौरन साद बिन मुआज़ और साद बिन उबैदा को काब के पास रवाना किया। ये दोनों बुज़ुर्ग बनी क़ुरैज़ा के क़िले में गये और काब से मिले।

वह बड़ी बेरुखी से इन दोनों के साथ पेश आया।

साद बिन मुआज़ ने कहा—

काब ! यह कहां की शराफ़त है कि तुम अपने पड़ोसियों का साथ छोड़ कर ग़ैरों का साथ देने पर तैयार हो, ऐसा न करो।

सुनो साद ! काब ने कहा, मुसलमान हमारे मज़हब के खिलाफ़ हैं। हम को उन से अदावत हो गयी है। अगर हम ने मिल कर उन का मुक़ाबला न किया, तो उन की तायदाद इतनी बढ़ जाएगी कि तमाम अरब पर बह आसानी से क़ब्ज़ा कर लेंगे। हुकूमत करने के लिए हम पैदा हुए हैं, न कि मुसलमान ? हम कैसें न उन के खिलाफ़ हथियार उठाएं ?

मगर तुम मुसलमानों से अह्द कर चुके हो कि उन के खिलाफ़ हथियार न उठाओगे, हज़रत साद ने कहा, जब कोई बाहरी दुश्मन मदीने पर हमला करेगा, तो मुसलमानों के साथ मिल कर लड़ोगे। अब बद-अह्दी क्यों करते हो ? क्या बद-अह्दी भी शराफ़त में दाखिल है ?

अक़्लमन्द आदमी! काब बोला, हम अह्दनामे को काग़ज़ का पुर्ज़ा सम-

जाते हैं, जब तक ताक़त नहीं पैदा होती, अहदनामे की पाबन्दी करते हैं और जब ताक़त बढ़ जाती है, तो अहदनामा चाक कर डालते हैं।

सोचो, तुम्हारी बद-अहदी पर ज़माना तुम को क्या कहेगा ? साद ने कहा।

ज़माना हमारी अक्लमंदी की दाद देगा, काब ने कहा।

साद ने बहुत समझाया, मगर काब ने कुछ न समझा और एलानिया मुसलमानों से दुश्मनी और बेज़ारी का एलान किया।

मजबूर हो कर ये दोनों बुज़ुर्ग वापस लौट आये और हुज़ूर सल्ल० से तमाम वाक़िए बयान कर दिये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कुछ परवाह न करो। बनू क़ुरैज़ा अपने पांवों पर खुद कुल्हाड़ा मार रहे हैं। हमारा फ़र्ज़ समझाना था, समझा दिया। वे नहीं समझते तो नुक़्सान उठाएंगे।

अभी ये बातें हो ही रही थीं कि सामने से कुफ़्फ़ार की फ़ौज आती नज़र आयी। घोड़े, ऊंट, पैदल और सवार बाढ़ की तरह बड़ी शान व शौकत से बढ़े चले आ रहे थे। बहुत से झंडे हवा में लहराते आ रहे थे।

जिस शान और जिस रफ़्तार से यह फ़ौज आ रही थी, उस से साफ़ मालूम होता था कि वह मुसलमानों को बहा ले जाएगी। तमाम मुसलमान मकानों की छतों पर चढ़ गये और फ़ौज के आने का नज़ारा करने लगे।

खुदा की ताईद

कुफ़्फ़ारे अरब की फ़ौज निहायत शान व दबदबे से आ कर ख़ंदक़ के सामने रुक गयी।

चूंकि अरबों ने ख़ंदक़ कभी न देखी थी, इसलिए वे ख़ंदक़ को देख कर हैरत में पड़ गये।

इस फ़ौज में बहुत से सरदार और सिपहसालार थे, जिन में से हर एक का अलग झंडा था और सिपहसालारे आज़म अबू सुफ़ियान था।

अबू सुफ़ियान ने घोड़ा दौड़ा कर मदीने के चारों तरफ़ गश्त लगाया। उसे किसी तरफ़ कोई रास्ता ऐसा नज़र न आया, जिस से फ़ौज मदीने में दाखिल हो सकती। मजबूर हो कर उस ने डेरा डालने का हुक्म दिया।

टिड्डी दल फ़ौज मदीने के चारों तरफ़ फैल गयी।

कुफ़्फ़ार का यह हमला कुफ़्र की इंतिहाई ताक़त व शौकत का मुज़ाहरा

था, गोया इस्लाम के मुक़ाबले में कुफ़्र की यह सब से बड़ी कोशिश थी।

मुसलमानों ने अपने घर वालों को एक मज़बूत और पक्की गढ़ी के अन्दर हिफ़ाज़त की ग़रज़ से एक जगह जमा कर दिया और ख़ंदक़ के किनारों पर, मकानों की छतों पर, पहाड़ी के मोर्चे पर मुजाहिदों को लगा दिया।

कई दिन तक कुफ़्फ़ार पेच व ताब खाते रहे कि कैसे और किस तरफ़ से हमला करें। ख़ंदक़ को पार करना मुश्किल था।

मकानों की छतों पर चढ़ना मुश्किल था, पहाड़ की तरफ़ से कोई रास्ता न था।

कई दिनों के ग़ौर के बाद यही तै हुआ कि ख़ंदक़ के सामने खड़े हो कर तीरंदाज़ी की जाए।

ख़ंदक़ के एक तरफ़ कुफ़्फ़ार के तीरंदाज़ खड़े हुए, तो दूसरी तरफ़ मुसलमान तीरंदाज़ भी जम गये।

पूरे दिन तीरों की बारिश होती रही, लेकिन कोई हासिल न निकला। किसी भी फ़रीक़ को कोई नुक़सान न पहुंचा।

दूसरे दिन कुफ़्फ़ार ने ख़ंदक़ के सामने तीरंदाज़ों का दस्ता क़ायम कर के कुछ जांबाज़ों को ख़ंदक़ की तरफ़ बढ़ने का हुक्म दिया।

उन्हें हिदायत कर दी गयी कि वे पेट के बल रेंग कर चलें।

उन को पेट के बल चलते हुए मुसलमानों ने देख लिया। इस तरफ़ हज़रत उमर और हज़रत अली मुक़र्रर थे।

हज़रत उमर ने फ़ौरन उस तरफ़ के मुसलमानों को दो हिस्सों में बांट दिया—

एक हिस्सा ख़ंदक़ के पास पुश्ते की आड़ में छिप कर बैठ गया।

दूसरा हिस्सा तीर और कमान ले कर तीर चलाने पर लगा दिया गया।

अबू सुफ़ियान ने तीरंदाज़ी का हुक्म दे दिया, मुसलमानों ने भी जवाब दिया।

तीरंदाज़ी के साथ-साथ कुफ़्फ़ार पेट के बल रेंग-रेंग कर ख़ंदक़ को पार कर रहे थे और समझ रहे थे कि मुसलमानों ने उन्हें देखा नहीं है, जबकि मुसलमानों ने देख लिया था और वे जान-बूझ कर अभी नज़रें चुराये हुए थे।

जब मुश्रिकों ने ख़ंदक़ के अन्दर उतरना शुरू किया, तो उन मुसलमानों ने जो पुश्ते से लगे बैठे थे, तीरों को कमान से इस तरह एक साथ छोड़ा,

जैसे कि वे एक ही कमान से निकले हों।

उन के इन तीरों ने उन मुश्रिकों को जो खंदक़ में उतर रहे थे या खंदक़ के किनारे पर बैठे अन्दर उतरने का तरीक़ा सोच रहे थे, घायल करना शुरू कर दिया। उन में से जो खंदक़ में उतर रहे थे, मुर्दा हो कर खंदक़ में जा पड़े और जो लोग किनारे थे, वे घबरा कर पीछे हटे।

उन के पीछे हटते ही पुश्ते के क़रीब बैठने वाले मुसलमान खड़े हो गये और उन्हों ने जल्दी-जल्दी तीर चला कर घबराये हुए मुश्रिकों को तीरों का निशाना बनाना शुरू कर दिया।

भागने वालों में भी बड़ी तायदाद मारी गयी, वरना घायल तो हो ही गयी।

मुसलमानों की इस कार्रवाई ने कुफ़्फ़ार को मरऊब कर दिया।

अगले दिन कुफ़्फ़ार हथियारबन्द हो कर लड़ाई के मैदान में न निकले, हालांकि मुसलमान सफ़ बना कर उन के हमले का इन्तिज़ार करते रहे। दोपहर के बाद वे भी कमर खोल-खोल कर आराम करने लगे।

ज़ाहिर में मुसलमान बे-फ़िक्र नज़र आते थे, लेकिन असल में यह बात न थी, उन के सामने बहुत से खतरे थे।

एक खतरा मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से था, जो मुसलमानों को ग़ाफ़िल पा कर दुश्मनों की रहबरी कर के उन को खंदक़ में ला सकते थे।

दूसरा खतरा उन यहूदियों की तरफ़ से था, जो गोया मदीने के अन्दर ही थे और जिन्हों ने सांठ-गांठ कर ली थी। न जाने किस वक़्त अचानक मुसलमानों पर हमला कर के उन की मुश्किलों को और बढ़ा दें।

तीसरा खतरा टिड्डी दल मुश्रिकों की तरफ़ से था, जो मुसलमानों का सख्ती से घेराव किये हुए थे।

इन तमाम खतरों और अंदेशों के अलावा रसद के सामान की कमी सब से ज़्यादा तक्लीफ़ देने वाली बन रही थी।

मदीने की तिजारत यहूदियों के हाथ में थी, ग़ल्ले के बड़े सौदागर वहीं थे।

उन्हों ने मुसलमानों के हाथ ग़ल्ला बेचना बन्द कर दिया था, जिस की वजह से मुसलमानों को फ़ाक़ों तक की नौबत आ गयी। इस पर कड़ी ठंडक की तक्लीफ़ और भी परेशानी की चीज़। चूंकि मुसलमान खुले मैदान में पड़े थे, सर्दी ज़्यादा थी, ओढ़ने-बिछाने के कपड़े कम थे, इस की वजह से उन के दिन व रात बड़ी सख्ती और तक्लीफ़ से बीत रहे थे।

कभी सर्दी की तक्लीफ़ बरदाश्त न करने के क़ाबिल होती थी और

कभी भूख की तेज़ी बढ़ जाती थी।

अगरचे मुनाफ़िक़ों को कोई तक्लीफ़ न थी। यहूदी उन के दोस्त थे, यहूदी उनको बराबर ग़ल्ला दे रहे थे और उन में से किसी को भी फ़ाक़े की नौबत न आयी थी। उन्हें अगर कोई तक्लीफ़ थी, तो सिर्फ़ यह कि वे मदीने से बाहर नहीं जा सकते थे। हर तरफ़ पहरा लगा हुआ था और कोई आदमी मुसलमानों की इजाज़त के बग़ैर बाहर नहीं जा सकता था।

मुनाफ़िक़ों को यही बात बहुत खल रही थी। इस की शिकायत वे बहुत करते थे।

मुहम्मद (सल्ल०) यमन और ईरान की फ़त्ह की ख़ुशख़बरी अपने दोस्तों को सुना रहे हैं, लेकिन मदीने से बाहर नहीं निकल सकते मुअब बिन क़ुशैर मुनाफ़िक़ कहता था।

हमारे ख़्याल में तो वे अब मदीना में भी नहीं रह सकते, बहुत जल्द देश निकाला दे दिए जाएंगे, एक और मुनाफ़िक़ बोला।

जो लोग पाख़ाना के लिए बाहर नहीं जा सकते, वे यमन और किसी दूसरे मुल्क को क्या जीतेंगे, एक और मुनाफ़िक़ का ख़्याल था यह।

ये और इसी क़िस्म की बातें मुनाफ़िक़ किया करते थे।

मुसलमान इन बातों को सुनते थे, ग़ुस्सा तो बहुत आता था, पर कुछ न कहते थे।

यह मुसलमानों ही का सब्र था कि वे कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला बनी क़ुरैज़ा के हमले का अन्देशा, मुनाफ़िक़ों का ख़तरा सब कुछ बड़े सुकून से बरदाश्त कर रहे थे। कोई और क़ौम होती तो डगमगा गयी होती। दुश्मनों के सामने घुटने टेक देती।

अरब के मुश्रिक लगभग एक महीने तक मदीने को घेरे रहे।

इस बीच उन्हों ने हर मुम्किन कोशिश की कि मुसलमानों पर ग़ालिब आया जाए, पर कामियाब न हुए।

मजबूर हो कर उन्हों ने पैग़ाम भेजा कि अगर मुसलमान बनी क़ैनुक़ाअ और बनी नज़ीर के यहूदियों को जिन्हें उन्हों ने देश निकाला दिया है, फिर मदीने में रहने की इजाज़त दे दें और मदीने के बाग़ों की आमदनी का बीसवां हिस्सा मक्के के लोगों को देते रहें और हज़रत मुहम्मद सल्ल० बुतों की बुराइयां न किया करें, तो घेराव उठा लिया जाए।

अगरचे मुसलमान ज़िन्दगी से तंग आ गये हैं, सर्दी और फ़ाक़े ने उन की हस्ती को ख़तरे में डाल दिया था, मगर उन्हों ने इस शर्त पर समझौता करने से इंकार कर दिया।

मुश्रिकों को उन के इंकार पर बड़ा ग़ुस्सा आया।

उन्हों ने तै कर लिया कि सुबह दिन निकलते ही हमला करेंगे और कोशिश करेंगे कि घोड़ों को कुदा कर ख़ंदक़ के पार ले जाएं।

चुनांचे दिन निकलते ही तमाम लश्करे कुफ़्फ़ार ने बड़े जोश और नयी शान से हमला किया।

अगरचे मुसलमानों ने उन को रोकने के लिए बड़ी तेज़ी से तीर बरसाए पर वे उन के हमले को रोक न सके।

वे बढ़ कर ख़ंदक़ के किनारे पहुंच गये।

अब उन्हों ने घोड़ों को एड़ लगायी, उन्हें तेज़ दौड़ाया और ख़ंदक़ कूद कर पार हो जाने की कोशिश की।

जिस तरफ़ हज़रत उमर और हज़रत अली थे, उस तरफ़ से ख़ंदक़ की चौड़ाई कुछ कम थी। तीन कुफ़्फ़ार घोड़े को कुदा कर अन्दर पहुंच गये, पर दूसरी तरफ़ से ज़्यादातर सवार ख़ंदक़ में गिर गये, घोड़ों की टांगें टूट गयीं, सवार गिर कर घायल हुए और कुछ मर गये, ज़्यादातर घोड़ों के नीचे दब कर दम तोड़ गये।

वे तीन सवार, जो ख़ंदक़ के पार पहुंच गये थे, उन में से एक को तो हज़रत उमर ने एक ही हरबे से ठिकाने लगा दिया, दूसरे को एक अंसार ने ठिकाने लगा दिया, मगर तीसरा निहायत बहादुर था।

उस का नाम अम्र बिन अब्दुल्लाह था, वह दो हज़ार सवारों के बराबर समझा जाता था। हज़रत अली रज़ि० उस की तरफ़ झपटे। वह भी तलवार सोंत कर हज़रत अली रज़ि० पर टूट पड़ा। दोनों निहायत जोश व ख़रोश से लड़ने लगे।

चूंकि अम्र तजुर्बेकार था, अपनी ताक़त पर उसे घमंड था, इसलिए वह समझता था कि हज़रत अली पर ग़लबा पा लेना मामूली बात है, पर जब हज़रत अली की लड़ाई का अन्दाज़ देखा, तो उस का तमाम नशा हरन हो गया।

हज़रत अली रज़ि० ने मौक़ा पा कर तलवार का पूरा हाथ मारा।

अम्र ने ढाल पर रोका, लेकिन हज़रत अली रज़ि० का यह वार था, तलवार ढाल काट कर शहेरग काट कर उतरती चली गयी और अम्र ढेर हो कर गिर पड़ा।

इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूर सल्ल० उधर आ निकले। उन्हों ने बढ़ कर हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू की पेशानी पर बोसा दिया।

इस अर्से में मुसलमानों ने तीरों की बारिश कर के कुफ़्फ़ारे मक्का को

पीछे हट जाने पर मजबूर कर दिया। मुश्रिक अपने कई सवारों को मौत की गोद में पहुंचा कर वापस लौटे, फिर उन्हें बढ़ने या हमला करने की जुर्रात न हुई।

सूरज डूबने पर लड़ाई मुलतवी हो गयी।

जिस वक़्त दोनों तरफ़ की फ़ौजें वापस लौट रही थीं, उस वक़्त हवा तेज़ चलने लगी थी। आसमान पर बादल छा गये थे।

लोगों ने अन्दाज़ा कर लिया था कि बादल-बारिश का तूफ़ान आने वाला है। यह अन्दाज़ा सही था।

हवा इतनी तेज़ हो गयी कि फ़ौज के खेमे उखड़ गये, आग बुझ गयी, छोलदारियों की मीखें उखड़ गयीं और साथ ही बारिश शुरू हो गयी।

बारिश बहुत तेज़ हुई। तूफ़ान बहुत ज़ोर का था।

कुफ़्फ़ार इस तूफ़ान को देख कर बदहवास हो गये। उन के सामाने रसद और दूसरे सामान पानी के बहाव में बह गये।

ऐसे ही मौसम में हुज़ूर सल्ल०, हज़रत अबूबक्र और हज़रत अली रज़ि० को ले कर बाहर निकले। पानी इस तेज़ी से पड़ रहा था कि रास्तों पर नहर की तरह बहने लगा।

इत्तिफ़ाक़ से हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान भी घर से निकल आये। वह इन तीनों बुज़ुर्गों को देख कर बोले—

हुज़ूर सल्ल० ! इस वक़्त कहां जाने का इरादा है ?

हुज़ैफ़ा ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने ख़बर दी है कि कुफ़्फ़ार बदहवास हो कर भाग गये हैं, इसलिए मैं ख़बर लेने जा रहा हूं।

आप न जाएं, हुज़ैफ़ा ने कहा, मैं अभी ख़बर लाता हूं।

अच्छा जाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

हुज़ैफ़ा रवाना हो गये।

उस वक़्त बादल छा चुका था, सुबह का वक़्त हो गया था।

हुज़ैफ़ा ने ख़ंदक़ के पास खड़े हो कर देखा, वहां एक मुश्रिक का भी पता न था।

वह ख़ुश होते हुए वापस लौटे और हुज़ूर सल्ल० के पास आ कर बोले ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैदान ख़ाली पड़ा है, एक भी काफ़िर मौजूद नहीं है, सब भाग गये।

मुसलमानो ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब क़ुरैशे मक्का से कोई ख़तरा बाक़ी नहीं रहा। इन्शाअल्लाह अब वह कभी हम पर हमला न कर सकेंगे।

इस के बाद मुसलमानों ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी।

नमाज़ पढ़ कर जब वे ख़ंदक़ के पास पहुंचे, तो देखा, ख़ंदक़ पानी से भरी हुई है। कुफ़्फ़ार के ख़ेमे उखड़े पड़े हैं। मुश्रिकों का कहीं पता नहीं है।

मुसलमान ख़ुश हो कर वापस लौटे।

मुनाफ़िक़ों और बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों को मुश्रिकों की बुज़दिली और पस्त हिम्मती पर बड़ा ग़ुस्सा आया। वे बोल पड़े—

नामर्द, बुज़दिल भाग गये। अगर हम उन्हें पस्त हिम्मत समझते तो मुसलमानों से हरगिज़ बिगाड़ न पैदा करते।

अब बनी क़ुरैज़ा को अपनी बड़ी चिन्ता हुई। उन्हें डर हुआ कि मुसलमान अहद तोड़ने पर उन को कड़ी सज़ा देंगे।

उन्हों ने फ़ौरन अपने क़िले को ठीक-ठाक कर लिया।

यह लड़ाई ख़ंदक़ की लड़ाई कहलाती है।

किये को भुगतना पड़ा

जब तमाम मदीना वालों ने मुसलमानों से अहद किया था, तो उसमें यहूदियों के तीन बड़े क़बीले बनी क़ैनुक़ाअ, बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा भी शामिल थे। उन में से पहले दो यानी बनी क़ैनुक़ाअ और बनी नज़ीर बद-अहदी करने की सज़ा में देश से निकाल दिये गये थे, सिर्फ़ बनी क़ुरैज़ा रह गये थे, इस बार उन्हों ने बद-अहदी की।

वे जानते थे और ख़ूब जानते थे कि मुसलमान बद-अहदी पर सज़ा ज़रूर देंगे, इसलिए उन्हों ने क़िले की दुरुस्ती और मरम्मत शुरू करा दी थी।

सच तो यह है कि इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ सब से ज़्यादा पेश-पेश यही थे।

जिस वक़्त मुसलमान ख़ंदक़ की लड़ाई से वापस लौट कर मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो उस वक़्त ज़ुह्र का वक़्त था। तमाम मुसलमानों ने ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से छूटते ही सरकारे मदीना ने ऐलान कर दिया कि हर मुसलमान जो ख़ंदक़ की लड़ाई में शरीक था, अस्र की नमाज़ मदीने में पढ़े, बल्कि बनी क़ुरैज़ा के क़िले के सामने पढ़े।

इस एलान ने तमाम मुसलमानों को कमर कसे रहने पर मजबूर कर दिया।

इस में शक नहीं कि मुसलमान एक महीने के घेराव में हर वक़्त चौकसी अपनाने की वजह से थके हुए थे, उन्हें आराम करने और ताज़ा दम होने की ज़रूरत थी लेकिन दरबारे रिसालत से कूच करने का हुक्म हुआ था, इसलिए इस हुक्म की तामील भी ज़रूरी थी।

तमाम मुसलमान जिस तरह और जिन हालात में लड़ाई के मैदान से वापस आये थे, उसी तरह और उन्हीं हालात में बनी क़ुरैज़ा के मुक़ाबले में जाने के लिए तैयार हो गये।

इस बार झंडा हज़रत अली के सुपुर्द किया गया। वह दो सौ मुजाहिदों का दस्ता ले कर रवाना हुए।

तमाम मदीना में इस फ़ौज के कूच करने की शोहरत फैल गयी।

मुशिरकों और मुनाफ़िक़ों ने हैरत से मुसलमानों को कूच करते हुए देखा।

बनी क़ुरैज़ा को भी इस कूच की खबर हो गयी।

उन्हों ने क़िले का दरवाज़ा बन्द कर के फ़सील पर सिपाहियों को चढ़ा दिया था और तीरों के गट्ठे और पत्थरों के टुकड़े फ़सील की छतों पर पहुंचा दिये थे।

शाम के वक़्त सब से पहले हज़रत अली अपनी टुकड़ी के साथ क़िले के सामने ज़ाहिर हुए।

बनी क़ुरैज़ा ने उन्हें देखा। उन में से बहुतों ने मुसलमानों और हुज़ूर सल्ल० को गालियां देना शुरू कीं। इस से वे जले दिल के फफोले फोड़ रहे थे।

मुसलमानों ने यहूदियों की गालियां सुनीं। उन्हें बड़ा जोश आया, चाहा कि फ़ौरन हमला कर दिया जाए, ताकि इन यहूदियों को सज़ा दी जा सके, पर उन्हें उन के हादी ने हमला करने का हुक्म न दिया था, इस-लिए वे ज़ब्त कर गये।

थोड़ी देर बाद हुज़ूर सल्ल० अपनी पूरी फ़ौज के साथ तशरीफ़ ले आये।

मुसलमानों के आने का सिलसिला इशा तक चलता रहा।

इशा की नमाज़ पढ़ कर हुज़ूर सल्ल० ने क़िले को घेर लेने का हुक्म दिया।

मुजाहिद क़िले के चारों तरफ़ फैल गये और रात ही को उन्हों ने मोर्चे क़ायम कर के सुबह बहुत सवेरे, नमाज़ वग़ैरह से फ़ारिग़ हो कर मोर्चे संभाल लिए।

यहूदियों ने संगबारी शुरू कर दी।

मुसलमानों ने ढालें सामने कर दीं और क़िले की तरफ़ पेशक़दमी करने लगे।

चूंकि यहूदी तेज़ी से पत्थर फेंक रहे थे, इसलिए ज़्यादा तायदाद पत्थरों की ढालों से बच कर मुसलमानों के पैरों और टख़नों में लग रही थी। पत्थर नोकदार थे, इसलिए घायल कर रहे थे।

बहुत से मुसलमान घायल हो चुके थे, फिर भी क़िले की तरफ़ पेश-क़दमी जारी रही।

जब यहूदियों ने देखा कि मुसलमान तीरों के निशाने पर आ गये हैं, तो उन्हों ने तीरों की बारिश शुरू कर दी और इतने ज़्यादा तीर बरसाये कि मुसलमानों की पेशक़दमी रुक गयी।

मुसलमान तीरों का जवाब भी दे रहे थे। वे भी फ़सील पर तीर फेंकने लगे।

शाम तक इसी तरह लड़ाई का सिलसिला चलता रहा।

अगरचे मुसलमानों ने हर चंद क़िले तक पहुंचने की कोशिश की लेकिन तीरों की ज़्यादती से फ़सील के नीचे न पहुंचने दिया।

क़िले के चारों तरफ़ इसी तरह लड़ाई छिड़ी हुई थी।

हज़रत अली रज़ि० उत्तर की तरफ़ इसी तरह लड़ाई की घात में लगे हुए थे। आप इस हद तक जोश में भरे हुए थे कि न आप ने तीरंदाज़ी का ख़्याल किया और न संगबारी का।

आप और आप के साथी नोकदार पत्थरों और परदार तीरों को ढालों पर रोकते हुए क़दम-क़दम बढ़ते रहे।

आप ने पक्का इरादा कर लिया था कि क़िले के नीचे पहुंच कर ही दम लेंगे।

यहूदी आप के इरादे को भांप चुके थे।

उन्हों ने इस तरफ़ सिपाहियों की तायदाद बढ़ा दी थी और सिपाहियों ने इस तेज़ी से तीरंदाज़ी शुरू कर दी थी कि मुसलमानों की सफ़ों में बिख-राव पैदा हो गया था।

आगे बढ़ना न सिर्फ़ मुश्किल था, बल्कि नामुम्किन हो गया था पर हज़रत अली रज़ि० का क़दम न रुका। शेरे ख़ुदा तीरों को ढाल पर रोकते हुए और एक हाथ में झंडा उठाये हुए बराबर बढ़ रहे थे।

अपने सरदार को बढ़ते हुए देख कर यह कैसे मुम्किन था कि दूसरे मुसलमान पीछे रह जाते। वे भी तीरों को रोकते हुए, घायल होते क़दम-ब-क़दम बढ़े चले आ रहे थे।

लड़ाई सुबह में पूरे जोश से शुरू हुई थी और सारे दिन उसी जोश और शान से होती रही।

हज़रत अली रज़ि० चाहते थे कि किसी तरह क़िले के क़रीब पहुंच जाएं और यहूदी यह तै कर चुके थे कि किसी मुसलमान को भी क़िले की फ़सील तक आने न देंगे।

सूरज डूबने के क़रीब था, इसलिए हज़रत अली ने अल्लाहु अक्बर का नारा लगा कर बड़ी तेज़ी से बढ़ना शुरू किया।

नारा तक्बीर की इस आवाज़ ने मुजाहिदों में जैसे जान डाल दी।

वे संभले और अल्लाहु अक्बर का हैबतदार नारा लगा कर तेज़ी से आगे बढ़े।

यहूदियों ने भी मुसलमानों की इस बढ़त का जवाब हिम्मत से दिया और उन की तीरंदाज़ी में भी जान आ गयी।

मगर हज़रत अली रज़ि० ने जो क़दम बढ़ाया था, उसे पीछे न हटाया, बल्कि उसे आगे ही बढ़ाते चले गये, यहां तक कि वे फ़सील के क़रीब पहुंच गये।

सूरज डूब चुका था, इसलिए लड़ाई बन्द करने का एलान कर दिया गया और यह भी कह दिया गया कि मुसलमान वहीं वापस पहुंच जाएं जहां पिछली रात गुज़ारी थी।

हुज़ूर सल्ल० का यह पैग़ाम हज़रत अली रज़ि०तक भी पहुंचा।

अगरचे आप चाहते थे कि रात ही फ़सील तोड़ कर क़िले के अन्दर पहुंच जाएं, साथ ही यहूदियों को भी अंदेशा था कि मुसलमान दीवार तोड़ कर अन्दर घुस आएंगे।

वे बड़े ख़ौफ़ व हरास के साथ मुसलमानों का बढ़ता देख रहे थे, पर जब हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान वापसी के बारे में हज़रत अली तक पहुंचा, तो वह नफ़रमानी के ख़ौफ़ से फ़सील के नीचे खड़े रहे और उसे तोड़ कर क़िले के अन्दर दाख़िल होने की जुर्रात न कर सके।

फ़ौरन वापस लौट पड़े।

यहूदियों ने उन की वापसी को अपनी ख़ुशक़िस्मती समझी।

वे उन को वापस जाते देख कर निहायत ख़ुश हुए।

इस्लामी फ़ौज लड़ाई के मोर्चे से हट कर अपनी-अपनी क़ियामगाहों पर पहुंच गयी।

मुजाहिदों ने कमरें खोलीं, नमाज़ पढ़ी, खाना पकाया और खा कर आराम में लग गये।

सुबह फिर पिछले दिन की तरह लड़ाई के मैदान में निकले।

सारे दिन लड़ाई होती रही।

इसी तरह लड़ते-लड़ते पन्द्रह दिन बीत गये।

इस पन्द्रह दिन की मुद्दत में न कोई क़िले के अन्दर जा सका और न कोई क़िले के अन्दर से बाहर आ सका।

अगरचे यहूदियों के पास रसद का सामान काफ़ी था, लेकिन तीरों और पत्थरों की कमी होने लगी थी।

लड़ाई के इस सामान की कमी ने उन के हौसले पस्त करना शुरू कर दिये थे।

उन्हों ने कई कारखाने तीरों के तैयार करने के लिए क़ायम कर लिये थे, जो दिन व रात तीर बनाने में लगे रहते, लेकिन लकड़ी की कमी से तीरों के बनने में भी कमी हो गयी थी।

यह कैफ़ियत देख कर काब बिन असद ने जो यहूदियों का सब से बड़ा सरदार था, एक मज्लिसे शूरा बुलायी। तमाम यहूदी सरदारों को बुलाया गया।

हुय्य बिन अख़्तब भी क़िले के अन्दर मौजद था, वह भी तलब किया गया।

जब सब लोग आ गये तब काब ने कहा—

ऐ बनी इस्राईल के ग़ैरतमंद फ़रज़ंदो ! जिस बात का डर था, वही सामने आया। हम ने ग़लती की थी कि इस अहदनामा को जो मुसलमानों से किया गया था, तोड़ डाला। असल में हम धोखा खा गये। क़ुरैशे मक्का की फ़ौज की भारी तायदाद देख कर हम ने समझ लिया था कि वे ज़रूर जंग जीत जाएंगे और मुसलमान फ़ना हो जाएंगे, लेकिन क़ुरैश की बुज़-दिली ने लड़ाई का पांसा ही बदल दिया।

उस ने आगे कहा, जिस जोश और जिस जुर्रात से मुसलमान लड़ रहे हैं, इस से ज़ाहिर होता है कि हम उन का ज़्यादा देर तक मुक़ाबला नहीं कर सकते और वे किसी न किसी दिन क़िला पर अचानक क़ाबिज़ हो जाएंगे। ऐसी शक्ल में क़ौम की फ़लाह के लिए कोई मुनासिब तज्वीज़ की जाए।

हम ने ख़ुद ही अपने पांवों पर कुल्हाड़ा मारा है, सालबा बिन सईद ने जो यहूदी शरीफ़ों में से एक था, कहा, ख़ुद मुसीबत मोल ली है और ख़ुद मुसलमानों को लड़ाई की चुनौती दी है। मैं ने पहले भी कहा था कि अहद-नामा की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर के मुसलमानों की मुख़ालफ़त करना किसी

तरह भी मुनासिब नहीं है, लेकिन किसी ने मेरी बात को नहीं माना और नतीजा सामने है। अब भी यही कहता हूं कि खूब अच्छी तरह से सोच-समझ कर कोई ऐसी बात निकालिए, जिस से क़ौम की फ़लाह हो।

हर क़ौम और हर आदमी अपनी भलाई चाहता है, हुय्य बिन अख्तब ने कहा, हम ने अहदनामा तोड़ने में अपना फ़ायदा समझा था, लेकिन क़ुरैश की बुज़दिली ने उम्मीद के खिलाफ़ कर दिया। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुसलमानों ने बनी क़ैनुक़ाअ और बनू नज़ीर के क़बीलों को देश निकाला दिया है और उन के क़िलों पर क़ब्ज़ा कर लिया है। हम से ग़लती हुई कि हम ने उस वक़्त अपने भाइयों की मदद न की और खामोश बैठे उन को देशनिकाला मिलते देखते रहे। अगर हम उनका साथ देते और तीनों क़बीले एक हो कर मुसलमानों का मुक़ाबला करते, तो यक़ीनन देश-निकाला की तक्लीफ़ से बच जाते।

उस ने आगे कहा, चूंकि हम मुसलमानों की आंखों में कांटा बन कर खटक रहे हैं, इसलिए वे हम को भी देश निकाला देना चाहते हैं, लेकिन अगर हम हिम्मत से काम लेते रहें, और सुलह की तरफ़ न झुकें, तो मुसलमान घेराव से तंग आ कर खुद ही भाग जाएंगे, इसलिए मेरे ख्याल में हमें न मदद लेनी चाहिए और न सुबह की तरफ़ झुकना चाहिए।

हुय्य ! असद बिन उबैद ने कहा, तुमने अहद तोड़ने पर उभारा, तुमने हम को मजबूर किया कि हम मुसलमानों के उस वफ़्द को जो हमें समझाने आया था, कोरा और सख्त जवाब दें, हम तुम्हारे कहने में आ गये, मुसलमानों से बिगाड़ कर बैठे, तुम समझते हो कि इस्लामी मुजाहिद घेराव से तंग आ कर चले जाएंगे, लेकिन मुसलमानों की पिछली ज़िंदगी भी तुम्हारे इस ख्याल को रद्द करती है। वे बग़ैर क़िला फ़त्ह किये हरगिज़ न जाएंगे।

असद ने कहा—

अगर हम ज़िद पर अड़े रहे और सुलह की तरफ़ न झुके, तो निहायत ज़बरदस्त नुक़्सान उठाएंगे, इस लिए मेरे नज़दीक तो सुलह करना बेहतर है।

असद ! हुय्य ने कहा, तुम्हारा ख्याल ग़लत है, मुसलमान महीने दो महीने घेराव किये पड़े रह सकते हैं, ज्यादा दिनों तक नहीं।

यह तुम्हारा ख्याले खाम है, उसैद बिन सईद ने कहा, मुसलमान जिस बात का इरादा कर लेते हैं, उसे पूरा किये बिना नहीं मानते। वे या तो क़िला जीतेंगे या तमाम उम्र घेरा डाले पड़े रहेंगे। बेहतर यही है कि

अपने-अपने क़ुसूर की माफ़ी मांग लो और जिस तरह भी हो, समझौता कर लिया जाए।

मगर मुसलमान सुलह ही क्यों करेंगे ? हुय्य ने कहा।

मुसलमानों की यह खूबी बड़ी जबरदस्त है, सालबा ने कहा, कि जब उन से रहम की दरख्वास्त की जाए तो वे फ़ौरन क़ुबूल करते हैं।

उस ने आगे कहा—

मैं इस बात का ज़िम्मा लेता हूं कि मुसलमानों से अच्छी शर्तों पर सुलह करा दूंगा।

लेकिन हम को हर गिज़ सुलह न करनी चाहिए, एक और यहूदी ने कहा।

क्या आप अब चाहते हैं कि मुसलमानों से सुलह कर ली जाए ? हुय्य बिन अख़्तब ने लोगों से पूछा।

हर तरफ़ से आवाज़ें आयीं, हर गिज़ नहीं, हम बिल्कुल सुलह करना नहीं चाहते।

अगर तुम सुलह करना नहीं चाहते, काब ने कहा, तो अपनी औरतों और बच्चों को क़त्ल कर दो और क़िले से बाहर निकल कर लड़ो। अगर जीत गये तो औरतें और बच्चे और मिल जाएंगे और अगर मर गए या हार गए तो कम से कम इज़्ज़त व आबरू की तरफ़ से बे-फ़िक्र रहेंगे।

यह तो बड़ी बेवक़ूफ़ी की बात होगी, कुछ लोगों ने कहा, इस में कौन ऐसा संगदिल है जो अपनी औलाद और अपने क़बीले को क़त्ल कर डाले।

अगर यह मंज़ूर नहीं, काब ने कहा, तो सनीचर की रात को मुसलमानों पर शबख़ूं मारो, वे इस ख़्याल से कि सनीचर का दिन हमारी क़ौम में खास एहतराम का दिन है, उस दिन लड़ना, शिकार खेलना या कोई दुनिया का काम करना हमारे नज़दीक नाजायज़ है, वे बे फ़िक्र और ग़ाफ़िल होंगे, हम उन की इस ग़फ़लत का फ़ायदा उठा कर उन की पूरी तरह जड़ काट देंगे।

हम सनीचर के दिन बे-हुरमती भी नहीं कर सकते, कुछ लोगों ने कहा, यह बात तमाम बातों से ख़राब और तक्लीफ़देह होगी।

मेरे ख़्याल में हमें पस्त हिम्मत नहीं होना चाहिए, हुय्य बिन अख़्तब ने कहा, हिम्मत से मुक़ाबला करना चाहिए।

इस राय पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया और यह तै पा गया कि लड़ाई का जारी रखना ही मुनासिब और बेहतर है।

लेकिन यह मश्विरा सालबा, असद और उसैद को नागवार गुज़रा।

वे उसी वक़्त उठे और क़िले से बाहर आ-आ कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और मुसलमान हो गये।

इस के बाद बराबर घेराव क़ायम रहा और हर दिन लड़ाई होती रही।

जब दस दिन हो गये और तीरों और संगरेज़ों की इतनी कमी हो गई कि लड़ाई को दो-चार दिन तक जारी रखना मुश्किल हो गया, तो तमाम यहूदी घबरा गये और उन्हों ने काब पर सुलह करने के लिए ज़ोर डाला।

चुनांचे काब ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा कि हम क़िले को और क़ौम को इस शर्त पर आप के हवाले करते हैं कि साद बिन मुआज़ जो सज़ा हमारे लिए तज्वीज़ फ़रमा दें, वही सज़ा हमें दीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने इस शर्त को क़ुबूल कर लिया।

बनी क़ुरैज़ा ने फ़ौरन क़िले का दरवाज़ा खोल दिया और उन में का हर आदमी अपने बाल-बच्चों के साथ बाहर निकला चला आया।

हर आदमी जानता था कि मुसलमान सच बोलते हैं, वायदे पूरे करते हैं, बद-अहदी और ग़द्दारी कभी नहीं करते।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें हिरासत में लिये जाने का हुक्म दे दिया।

फिर कुछ मुसलमान क़िले के अन्दर दाख़िल हो कर क़िले पर क़ाबिज़ हो गये।

चूंकि लड़ाई बन्द कर दी गयी इस लिए मुजाहिद क़िले के चारों तरफ़ से सिमट-सिमट कर हुज़ूर सल्ल० के पास आ गये थे।

जब यहां आ कर मालूम हुआ कि यहूदियों ने अपने आप को मुसलमानों के सुपुर्द कर दिया है, तो क़बीला औस के कुछ अंसार हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और उनके एक आदमी ने सरवरे कायनात से कहा –

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब हमारे क़बीला औस और हमारे दुश्मन के क़बीले ख़ज़रज में लड़ाई होती थी, तो बनू क़ुरैज़ा हमारे तरफ़-दार रहते थे, इस लिए हमारी दरख़ास्त है कि हुज़ूर सल्ल० बनी क़ुरैज़ा के मामले में हमारे क़बीले में से किसी को मुंसिफ़ मुक़र्रर फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया, इत्मीनान रखो, पहले ही तुम्हारे क़बीला औस के सरदार साद बिन मुआज़ को मुंसिफ़ क़रार दिया जा चुका है। बनी क़ुरैज़ा ने भी उन्हीं को अपनी तरफ़ से वकीले मुतलक़ बनाया है।

यह सुन कर क़बीला औस के तमाम अंसार बहुत ख़ुश हुए और हुज़ूर सल्ल० ने फ़ौज को वापसी का हुक्म दे दिया।

फ़ौज क़ैदियों को ले कर मदीने की तरफ़ रवाना हुई।

मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों ने ग़म व हैरत की नज़रों से मुसलमानों को कामियाब आते हुए देखा। वे रश्क व हसद से जल गये।

मुसलमान फ़ौज मदीने में दाखिल हो कर मस्जिदे नबवी के सामने वाले बड़े मैदान में पहुंची।

क़ैदी फ़ौज के बीच में खड़े कर दिये गये।

हुज़ूर सल्ल० फ़र्श बिछा कर बैठ गये, कुछ सहाबी भी पास में जा बैठे।

अब कुछ लोग हज़रत साद को लाने के लिए भेजे गये।

हज़रत साद खंदक़ की लड़ाई में घायल हो गये थे और ऐसे घायल हुए थे कि चल-फिर न सकते थे। उन के लिए मस्जिद के क़रीब एक खेमा तैयार किया गया था और वे उस में आराम कर रहे थे।

उन्हें लाने के लिए एक पालकी तैयार की गयी। इस पालकी में वह सवार हो कर क़बीला औस के अंसार के साथ चले। रास्तों में कुछ आदमियों ने उन से कहा—

आप को मालूम है कि बनू क़ुरैज़ा ने हमेशा लड़ाइयों में हमारा साथ दिया है। आज उन्हों ने आप को अपना वकील (मददगार) बनाया है, इस लिए बेहतर है कि आप उन के साथ इन्तिहाई रिआयत करें।

मैं अद्ल व इन्साफ़ के मुताबिक़ फ़ैसला करूंगा, हज़रत साद ने फ़रमाया—

जब उन की सवारी हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंची, तो हुज़ूर सल्ल० और आप के सहाबा उन के इस्तिक़बाल के लिए खड़े हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने उठते हुए फ़रमाया—

लोगो ! जब कोई बुज़ुर्ग या क़ौम का सरदार आया करे, तो उन का अदब खड़े हो कर किया जा सकता है।

हज़रत साद पालकी से निकल कर फ़र्श पर बैठ गये।

हुज़ूर सल्ल० और तमाम मुसलमान अपनी-अपनी जगहपर बैठ गये।

चूंकि तमाम मदीना और उस के पास-पड़ोस में इस बात की शोहरत हो गयी थी, कि बनी क़ुरैज़ा ने हज़रत साद को मुंसिफ़ क़रार दिया है, इस लिए हर जगह से लोग फ़ैसला सुनने के लिए उमंड आए थे और मुसलमानों के चारों तरफ़ घेरा बांध कर खड़े हो गये थे।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद से कहा, मैं ने तुम्हारे दोस्तों यानी बनी क़ुरैज़ा का मामला तुम्हारे सुपुर्द किया है। जो फ़ैसला तुम करोगे, उस पर अमल किया जाएगा।

ऐ क़बीला औस के सरदार ! काब ने कहा, हम ने तुम को अपनी

तरफ़ से वकीले मुत-लक़ बनाया है। जो तुम फ़ैसला करोगे, हम उस पर अमल करेंगे—तुम जानते हो और अच्छी तरह जानते हो कि जब औस और ख़जरज में लड़ाइयां होती थीं, तो हम हमेशा तुम्हारा साथ देते थे। हम पुरानी दोस्ती के नाम पर तुम से अपील करते हैं कि हमारे इस पुराने साथ को ध्यान में रख कर फ़ैसला कीजिएगा।

साद ! हज़रत उमर ने कहा, आप को मालूम है कि जब मुसलमान घिरे हुए थे, तो उस वक़्त बनी क़ुरैज़ा ने अहदनामा के ख़िलाफ़ ग़द्दारी कर के दुश्मन से सांठ-गांठ कर लिया था और जब उन्हें समझाने के लिए वफ़्द भेजा गया, तो मुसलमानों को कमज़ोर, नातवां और हक़ीर समझ कर उन के वफ़्द के साथ हिक़ारत भरा सुलूक किया और साफ़ तौर पर यह कह दिया कि रसूले ख़ुदा को हम नहीं जानते और न किसी अहद के पाबन्द रहना चाहते हैं, फिर इसी पर ही बस न किया, बल्कि मुसलमानों और रसूले ख़ुदा को गालियां दीं। मेरी ही नहीं, हर मुसलमान की और मुसल-मान ही की नहीं, बल्कि हर शरीफ़ इंसान की यह ख़्वाहिश है कि आप इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करें।

क्या तुम ने मुझे मुंसिफ़ क़रार दिया है ? हज़रत साद ने काब से पूछा, ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर मान कर इक़रार करो कि मेरे फ़ैसले को मंज़ूर करोगे ?

काब ने हलफ़ उठा कर इक़रार किया कि मैं और मेरी क़ौम तुम्हारे फ़ैसले को मंज़ूर करेंगे।

इस के बाद साद ने मुसलमानों से भी यही इक़रार लिया और मुसल-मानों ने भी इक़रार किया।

हलफ़ लेने के बाद साद सोचने लगे। यहूदी, मुसलमान, मुश्रिक और मुनाफ़िक़, ग़रज़ यह कि सब के सब ख़ामोश रह कर हज़रत साद की तरफ़ देखने लगे।

कुछ देर तक सोचने के बाद हज़रत साद ने सर उठाया और ऐसी आवाज़ से, जो सब तक पहुंच सके, इर्शाद फ़रमाया—

मैं फ़ैसला देता हूं कि बनी क़ुरैज़ा के तमाम मर्द क़त्ल कर दिए जाएं, औरतों और बच्चों के साथ लड़ाई के क़ैदियों जैसा सुलूक किया जाए और इन की मिल्कियतें ज़ब्त कर के मुसलमानों में तक़्सीम कर दी जाएं।

इस फ़ैसले को सुन कर बनी क़ुरैज़ा, मुश्रिक और मुनाफ़िक़ हैरान रह गये। साद का यह फ़ैसला उन की उम्मीदों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुआ।

यहूदी मर्द इस फ़ैसले को सुन कर रोने लगे। औरतें, बच्चे चीख़ने

चिल्लाने लगे।

आज उन्हें मालूम हुआ कि अहदनामा को काग़ज़ का पुर्ज़ा समझने की सज़ा क्या होती है और बद-अहदी कितने ख़ौफ़नाक नतीजे पैदा कर देती है।

चुनांचे इस फ़ैसले के मुताबिक़ तमाम मर्द क़त्ल कर दिये गये।

औरतें और बच्चे, ग़ुलाम और कनीज़ें बना कर इस्लामी मुजाहिदों में तक़्सीम कर दिए गए और तमाम मिल्कियतें वग़ैरह ज़ब्त कर के मामूल के मुताबिक़ मुसलमानों में बांट दी गयीं।

इस तरह बनी क़ुरैज़ा अपने किए की सज़ा पा गये।

अब मदीना की धरती सरकश दुश्मने इस्लाम यहूदियों के वजूद से पाक हो गयी।

इस लड़ाई का नाम बनी क़ुरैज़ा की लड़ाई है।

एहसान भुलादेनेका अंजाम

दौमतुल जुन्दल की लड़ाई से वापसी के वक़्त उऐना बिन हुसैन ने हुज़ूर सल्ल० से मदीना की चरागाहों में अपने ऊंट चराने की इजाज़त हासिल कर ली थी और वह भारी तायदाद में ऊंट ले कर मदीना की चरागाहों में आ गया था।

पूरे एक साल तक वह अपने ऊंट चरागाहों में निहायत इत्मीनान से चराता रहा।

मुसलमानों ने उस के साथ इस हद तक बेहतर सुलूक किया कि अपने मवेशी तो नाकारा चरागाहों में भेज दिये और उस के ऊंटों के लिए बेहतरीन चरागाहें छोड़ दीं। साथ ही जिस चीज़ की उसे ज़रूरत होती थी, मुहैया कर देते थे और उस के मवेशियों की हिफ़ाज़त करते थे। सत्तू और खजूरें तोहफ़े के तौर पर देते थे।

लेकिन उऐना चूंकि मुश्रिक था, बुतपरस्त था, मुसलमानों की तरक़्क़ी देख-देख कर कुढ़ता था। वह फ़िक्र में था कि किसी दिन मौक़ा पा कर मुसलमानों के ऊंट हांक ले जाए।

इत्तिफ़ाक़ से एक दिन ऐसा मौक़ा उस के हाथ आ गया।

जुमा का दिन था। चरागाहों में ऊंटों की हिफ़ाज़त पर जो मुसलमान मुक़र्रर थे, वे सब जुमा की नमाज़ पढ़ने चले गये।

तमाम चरागाहें ख़ाली रह गयीं। सिर्फ़ एक आदमी बनू ग़िफ़ार का मय

अपनी बीबी के रह गया था।

उऐना ने इस मौक़े को ग़नीमत जाना।

वह ग़िफ़ारी के पास आया और उसे धोखे से क़त्ल कर के बीवी को क़ब्ज़े में किया और मुसलमानों के सारे ऊंट जमा कर के ले चला।

जब वह चरागाहों से निकला तो अम्र बिन अकबअ ने देख लिया।

उऐना ! क्या तुम मुसलमानों के एहसान का यही बदला दे रहे हो कि उन के ऊंट लिए जा रहे हो ? उस ने पूछा।

सुनो अम्र ! उऐना ने कहा, कोई ग़ैर-मुस्लिम कभी मुसलमानों का एहसान नहीं ढोएगा। जब भी मौक़ा पाएगा वह उन्हें नुक़्सान पहुंचाने से नहीं चूकेगा। मदीना की चरागाहें तो हमारी थीं, तुमने ज़बरदस्ती उन पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

उस ने आगे कहा—

हम ने तुम्हें और तुम्हारे नबी सल्ल० को धोखा देकर एक साल तक इन चरागाहों से फ़ायदा उठाया, अब ऊंटों को मैं ले जा रहा हूं। तुम हमारा पीछा न करना, वरना नुक़्सान उठाओगे।

अम्र को उस की बातें सुन कर बड़ा ग़ुस्सा आया, लेकिन वह तंहा थे और उऐना के साथ सौ-सवा सौ कुफ़्फ़ार थे, वह उन का मुक़ाबला किसी तरह भी न कर सकते थे, पर ग़ुस्से को ज़ब्त न कर सके, कड़क कर बोले—

एहसान फ़रामोश उऐना ! तुझे इस दग़ाबाज़ी की सज़ा दी जाएगी।

और शायद इस ग़िफ़ारी औरत को लिए जाने की भी ? उऐना ने बेहयाई से हंसते हुए कहा।

अब तक अम्र बिन अकबअ ने उस औरत को नहीं देखा था। औरत बंधी हुई थी और उस के मुंह में कपड़ा ठुंसा हुआ था।

अम्र यह देख कर बेक़रार हो गये और उन्हों ने फ़रमाया—

बदमाश ! ज़ालिम ! इस औरत का भी बदला लिया जाएगा।

और शायद तुम इस औरत के शौहर का भी इंतिक़ाम लोगे, जिसको मैं अभी-अभी क़त्ल कर के आया हूं ?

अब अम्र जोश व ग़ज़ब से कांपने लगे, उन्हों ने फ़रमाया—

ओ दग़ाबाज़ ! कमीने ! जफ़ाकार ! क्या तू एक मुसलमान को शहीद कर आया है ? ख़ुदा की क़सम ! इस का भी तुम से इंतिक़ाम लिया जाएगा।

उऐना ऐयारी की मुस्कराहट के साथ आगे चला गया।

अम्र तेज़ क़दमों से चले, मदीना पहुंचे, मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए

और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच कर बोले—

आह हुज़ूर सल्ल० ! दग़ाबाज़ और मक्कार उऐना ने हमारे एहसानों का बदला यह दिया है कि बनू ग़िफ़ार के एक आदमी को शहीद कर के और उस की बीवी को गिरफ़्तार कर के तमाम ऊंट ले कर चला गया।

हुज़ूर सल्ल० को यह ख़बर सुनते ही पहले तो बड़ा ग़ुस्सा आया, फिर रंज हुआ।

आप फ़ौरन उठे।

जितने सहाबा किराम रज़ि० उस वक़्त मस्जिद में मौजूद, वे भी खड़े हो गये और मस्जिद से निकल पड़े।

ऊंट पर सवार हुए और मय सहाबा किराम के उऐना का पीछा करने के लिए रवाना हो गये।

आप की रवानगी के बाद मिक़्दाद, उबादा, साद, उकाशा वग़ैरह सहाबा किराम भी रवाना हुए और हुज़ूर सल्ल० से जा मिले।

अस्लमा बिन अम्र तेज़ ऊंट पर सवार हुए।

वह उऐना की इस हरकत से बहुत दुखी थे, इस वजह से निहायत तेज़ी से ऊंट दौड़ाए चले जा रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० जब पीछा करते हुए चश्मा ज़ू क़िरद पर पहुंचे तो आप ने साद बिन ज़ैद को सरदार मुक़र्रर करके सहाबा किराम की एक जमाअत को उऐना का पीछा करने के लिए रवाना फ़रमाया और ख़ुद चश्मे के पास ठहरे रहे।

अगरचे उऐना निहायत तेज़ी से भागा चला आ रहा था और वह मदीना की हदों से बाहर निकल कर अपनी हदों में दाख़िल होना ही चाहता था कि अस्लमा बिन अम्र उस के क़रीब पहुंच गए।

उन्हों ने दूर ही से चिल्ला कर कहा—

बुज़दिल मक्कार ! दग़ाबाज़ ! ठहर कहां भागा जाता है ?

उऐना ने पलट कर देखा, अस्लमा तंहा ऊंट भगाये चले आ रहे थे, इस लिए उस ने अपने आदमियों से कहा—

ठहरो, सिर्फ़ एक ही आदमी चला आ रहा है, उसे भी क्यों न क़त्ल कर दिया जाए।

उस के तमाम आदमी रुक गये।

अलबत्ता पांच या सात आदमी ऊंटों को बराबर हांकते हुए आगे बढ़ गये।

अस्लमा उऐना और उस के साथियों के क़रीब पहुंचे।

वह इस क़दर जोश और तैश में भरे हुए थे कि बिना इस बात का ख्याल किये हुए कि दुश्मन एक सौ पचीस के क़रीब हैं, फ़ौरन ऊंट से उतर कर उन के मुक़ाबले में जा डटे।

उऐना ने तलवार निकाली और उस के साथियों ने भी तलवारें सौंत ली।

अस्लमा ने भी तलवार खींची और वग़ैर किसी क़िस्म के ख़ौफ़ और झिझक के उऐना पर हमला कर दिया।

उऐना उस की हिम्मत देख कर हैरान रह गया।

अभी वह हैरानी से निकल भी न पाया था कि अस्लमा की तलवार उऐना के सर पर पहुंच चुकी थी।

उऐना अस्लमा की तलवार देख कर घबरा गया। उस ने जल्दी से ढाल सामने कर दी।

लेकिन ढाल के सामने आने से पहले ही तलवार उस के कंधे पर पड़ चुकी थी, जो उसे चीरती हुई हड्डी के पास जा कर रुकी।

उऐना के तन बदन में आग सी लग गयी।

वह बुज़दिल था, मौत के डर से भाग कर अपने साथियों के बीच में जा घुसा।

उस के मुक़ाबले से हटते ही कई काफ़िरों ने बढ़ कर अस्लमा पर हमले किये।

अस्लमा ने बड़ी फुर्ती और चाबुकदस्ती से इन हमलों को रोका और खुद भी बढ़ कर हमला किया और दो काफ़िरों को एक के बाद एक मार गिराया।

फिर क्या था, ख़ून के प्यासे दुश्मन चारों तरफ़ से हमलावर हो गये।

अस्लमा ख़ौफ़ज़दा बिल्कुल नहीं हुए, बल्कि तीसरे दुश्मन को भी क़त्ल कर दिया।

उऐना, जिस के कंधे से अब भी ख़ून का फ़व्वारा छूट रहा था, कराहने की आवाज़ में बोला, लोगो! इस क़ातिल को जल्दी ठिकाने लगाओ।

उसे क्या ख़बर थी कि उस के साथी अस्लमा को मौत का फ़रिश्ता समझने लगे हैं और उन के सामने जाते या उन पर हमला करते हुए उन की जान निकलती है।

अभी यह सिलसिला जारी ही था कि मुसलमानों का दस्ता वहां पहुंच गया। उन्हों ने दूर ही से अल्लाहु अक्बर का नारा लगा कर कुफ़्फ़ार के डरपोक दिलों में तहलका मचा दिया।

लेकिन जब मुसलमानों का यह दस्ता पहुंचा, तो ठीक उसी वक़्त उऐना

की कुमक भी आ गयी। उऐना ने पहले ही से इस का इन्तिज़ाम कर रखा था।

अब बाक़ायदा लड़ाई शुरू हुई और लगभग एक घंटे तक चली।

इस एक घंटे की लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साठ-सत्तर आदमी क़त्ल हुए।

लेकिन मुसलमानों का एक आदमी भी शहीद न हुआ, अलबत्ता कुछ तायदाद ऐसी थी, जो ज़ख़्मी हो गयी थी, लेकिन ज़ख़्मी मुसलमान और ज़्यादा जोश व ग़ज़ब से लड़ रहे थे।

यह कैफ़ियत देख कर कुफ़्फ़ार में डर फैल गया।

वे भागे और उऐना भी भाग खड़ा हुआ।

मुसलमानों ने उन का पीछा किया, यहां तक कि जब वे बहुत दूर निकल गये, तो मुसलमान लौट आये और वापस आ कर गिरफ़्तारी औरत को आज़ाद किया। ऊंटों को एक जगह जमा किया और वापस मदीना के रास्ते पर रवाना हुए।

जब वे ज़ूक़िरद चश्मे पर पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें मुबारकबाद दी। उस दिन वहीं सब लोगों ने आराम फ़रमाया, दूसरे दिन फिर वह क़ाफ़िला मदीनतुन्नबी की ओर रवाना हुआ।

समझौता

कुफ़्फ़ार की चालें मुसलमानों को आराम व इत्मीनान से न बैठने देती थीं।

सिर्फ़ मुश्रिक ही मुसलमानों के दुश्मन न थे, बल्कि यहूदी सब से ज़्यादा तक्लीफ़ें पहुंचा रहे थे। उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० को शहीद करने की साज़िश और कोशिश की थी, लेकिन वक़्त पर आप को इस की इत्तिला हो गयी और आप उन के फंदे से निकल आये।

दूसरी तरफ़ मुसलमानों पर जितनी सख़्तियां हो रही थीं, वे उतने ही पक्के होते जा रहे थे और उन का दायरा बढ़ता जाता था।

चूंकि अब मुसलमानों की ताक़त बराबर बढ़ती जाती थी, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने हब्श के उन मुहाजिरों को, जो इस्लाम के शुरू में हब्श को हिजरत कर गये थे, बुलाना चाहा।

आप ने अम्र बिन उमैया को हब्श जाने और मुहाजिरों को अपने साथ लाने का हुक्म दिया।

हज़रत अम्र तैयार हो गये।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह शाहे हब्श

के नाम एक खत लिखें।

हज़रत अली रज़ि० झल्लीदार काग़ज़, क़लम और दवात ले कर आ गये।

हुज़ूर सल्ल० ने खत लिखवाना शुरू किया। खत में जहां इस्लाम की भरपूर दावत पेश की गयी थी, वहीं मुहाजिर मुसलमानों को पनाह देने पर बादशाह हब्श नजाशी का शुक्रिया अदा किया गया था।

खत पर हुज़ूर सल्ल० ने मोहर लगवायी और हज़रत अम्र को रवाना कर दिया।

हज़रत अम्र के रवाना होने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने एक रात सपने में देखा कि सहाबा किराम रज़ि० के साथ खाना काबा में दाखिल हो रहे हैं।

पांच साल हिजरत को गुज़र चुके थे। इस बीच किसी मुसलमान को भी मक्का में जाने और खाना काबा का तवाफ़ करने की नौबत न आयी थी, लेकिन हरम की ज़ियारत की आरज़ू सब को थी।

इस ख्वाब ने तवाफ़े काबा की तहरीक पैदा कर दी।

आप ने उमरे का इरादा कर लिया और सहाबा को मक्का चलने की तैयारी का हुक्म दे दिया।

यह फ़रमान सुन कर मुसलमान बहुत खुश हुए। उन्हों ने तैयारियां शुरू कर दीं।

जब तैयारियां पूरी हो गयीं, तो ज़ीक़ादा के महीने सन ०६ हि० में एक हज़ार चार सौ सहाबा किराम के साथ आप मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ़ रवाना हुए।

हुज़ूर सल्ल० ने मदीने ही में एहराम बांध लिया था और क़ुर्बानी के सत्तर ऊंटों को क़ाफ़िले वालों के आगे रवाना कर दिया था, ताकि देखने वाले दूर ही से समझ लें कि मुसलमान लड़ने के इरादे से नहीं आ रहे हैं।

यह शानदार क़ाफ़िला बड़ी शान व शौकत के साथ रवाना हुआ।

मुश्रिक इस क़ाफ़िले को देख कर डर गये और उन्हों ने अपने आप ही यह समझ लिया कि मुसलमान मक्का में क़ुरैश वालों से लड़ने के लिए जा रहे हैं।

यह खबर बिजली की तरह तमाम इलाक़ों में फैल गयी।

इस ख़बर से मक्के वालों में बड़ी बेचैनी फैली और उन्हों ने फ़ौज जमा करनी शुरू कर दी।

जब मुसलमानों का यह क़ाफ़िला ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचा, तो हुज़ूर सल्ल० ने खुज़ाआ क़बीले के एक आदमी को एहतियात के तौर पर जासूस की

हैसियत से क़ुरैश के इरादों की ख़बर मालूम करने के लिए मक्का रवाना किया और धीरे-धीरे सफ़र जारी रखा।

जब आप अस्फ़ान पहुंचे तो ख़ुज़ाई जासूस मक्के से वापस आया। उस ने बताया कि क़ुरैशे मक्का और दूसरे मुश्रिक यह समझ रहे हैं कि मुसलमान लड़ाई के इरादे से आ रहे हैं, इसलिए उन्हों ने लड़ाई के लिए बहुत बड़ी फ़ौज तैयार कर ली है।

हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा किराम से मश्विरा किया।

सब से पहले हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़रमाया—

अगरचे हम लोग सिर्फ़ उमरे के लिए आए हैं, लड़ाई लड़ने की नीयत से नहीं आए, लेकिन अगर कोई आदमी, कोई ख़ानदान या क़बीला या कोई क़ौम हमारे और बैतुल्लाह शरीफ़ के बीच रुकावट बनना चाहे, तो हम को उस का मुक़ाबला करना चाहिए।

बेशक अगर ऐसा हुआ तो हम को फ़ौरन एहराम खोल कर लड़ाई शुरू कर देनी चाहिए, हज़रत उमर ने कहा।

दुनिया में किसी आदमी को काबे की ज़ियारत से रोकने का किसी को भी हक़ नहीं, हज़रत अली ने कहा, अगर क़ुरैश ऐसा करेंगे, तो हम ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक लड़ेंगे।

दूसरे तमाम सहाबियों ने भी यही राय दी।

आप ने क़ाफ़िले को आगे बढ़ने का हुक्म दे दिया।

जब आप मक्का के क़रीब पहुंचे, तो मालूम हुआ कि ख़ालिद बिन वलीद सवारों का एक दस्ता ले कर कुराअुन नईम पर मुक़ाबले के लिए आ गये हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने सीधा रास्ता छोड़ दिया और दाहिनी तरफ़ कतरा कर सफ़र शुरू कर दिया। मतलब यह था कुफ़्फ़ार इस क़ाफ़िले की हरकत से ख़बरदार न हो सकें।

चुनांचे ऐसा ही हुआ।

मुसलमानों का यह क़ाफ़िला अचानक कुराअुन्नईम पर जा पहुंचा।

ख़ालिद बिन वलीद मुसलमानों के यकायक आ आने से घबरा गये। वह अपने सवारों के साथ बड़ी बदहवासी से भागे और सीधे मक्के में जा कर दम लिया और मुसलमानों के अचानक आ जाने का हाल कुछ इस अन्दाज़ से बयान किया कि कुफ़्फ़ार के दिलों पर मुसलमानों की हैबत छा गयी।

मुसलमानों का क़ाफ़िला बराबर चलता रहा, यहां तक कि वे उस

पहाड़ी तक पहुंच गये, जिस के दूसरी तरफ़ मक्का का पड़ोसी मैदान था और कमसिन लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने के काम आता था।

क़ाफ़िला बराबर चलता रहा, यहां तक कि वह हुदैबिया पर पहुंच गया।

हुज़ूर सल्ल० ने क़ाफ़िले को यहां उतरने का हुक्म दिया।

क़ाफ़िला रुका, ऊंट बिठा दिये गये, सामान उतारा गया और ख़ेमे लगा दिये गये।

आप के ठहरने के दूसरे दिन क़ुरैशे मक्का की तरफ़ से हुज़ैल बिन वरक़ा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० से पूछा—

ऐ मुसलमानों के हादी ! आप मक्का में किस इरादे से आये हैं ?

क्या तुम ने ऊंटों की क़तारें नहीं देखीं ? हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया, क्या तुम ने नहीं समझा कि ये क़ुर्बानी के ऊंट हैं ? याद रखो हम लड़ने नहीं आए हैं, हां, अगर हम को हज से रोका गया, तो फिर लड़ाई ज़रूरी हो जाएगी और इस की ज़िम्मेदारी पूरी की पूरी क़ुरैशे मक्का पर होगी।

हुज़ैल यह सुन कर चुप हो गये।

उन्हों ने मक्के में जा कर एलान कर दिया कि घबराने की बात नहीं, मुसलमान लड़ने नहीं, बल्कि हज की नीयत से आए हैं।

हुज़ैल के कहने से क़ुरैशे मक्का को थोड़ा इत्मीनान हुआ। लेकिन जो ख़ौफ़ और अंदेशा था, वह अपनी जगह पर बाक़ी रहा।

फिर उन्हों ने हुलैस बिन अलम को क़ासिद बना कर भेजा।

जब वह मक्के से बाहर आया और उस ने क़ुर्बानी के ऊंटों की लम्बी क़तारें देखीं, तो रास्ते से ही वापस लौट आया और कहने लगा—

तुम लोग बे-मतलब डर रहे हो। मुसलमान लड़ने के इरादे से नहीं आए हैं, सिर्फ़ हज की नीयत से आए हैं।

अबू सुफ़ियान बिगड़ गया, बोला—

तुम जंगली आदमी हो, इन बातों को नहीं जानते। अगर मुसलमान हज के इरादे से भी आए हैं, तब भी हम इन्हें मक्के में दाख़िल न होने देंगे।

हुलैस को यह सुन कर बड़ा ग़ुस्सा आया, उस ने ग़ज़बनाक हो कर कहा—

अगर तुम मुसलमानों को रोकोगे, तो मैं अपने क़बीले के तमाम आदमियों को ले कर तुम से लड़ूंगा।

हुलैस अहाबीश क़बीले का सरदार था।

अबू सुफ़ियान खूब जानता था कि हुलैस जो कुछ कहता है, वह कर गुज़रता है। इसलिए उस ने चापलूसी के लेहजे में कहा—

हुलैस ! तुम भी मज़ाक़ में बिगड़ गये। तुम खुद सोचो कि मुसलमानों के आने से हमारे माबूदों की तौहीन है, हमारे माबूदों को ज़िल्लत का मुंह देखना है, हमें लोग बुज़दिल और डरपोक कहेंगे, तो क्या यह अच्छी बात है ?

मैं यह हरगिज़ नहीं चाहता कि किसी की तौहीन हो पर अपनी तौहीन भी तो बरदाश्त नहीं सकता, हुलैस ने कहा, अगर तुम मुसलमानों को मक्के में दाखिल नहीं होने देना चाहते, तो न दो, लेकिन किसी को बुज़दिल और जंगली कह कर उस की तौहीन तो न करो।

वाक़ई मुझ से ग़लती हुई, अबू सुफ़ियान ने कहा, मुझे माफ़ कर दीजिए।

ठीक है, मुझे अब कोई शिकायत नहीं है, हुलैस ने कहा।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपने आने की ग़रज़ बताने के लिए हज़रत खराश बिन उबैदा खुज़ाई को सालब नामी ऊंट देकर क़ुरैशे मक्का के पास रवाना किया।

खराश सीधे अबू सुफ़ियान के पास पहुंचे।

उस वक़्त अबू सुफ़ियान अपने मकान के सामने बैठा था। उस के पास इक्रिमा, खालिद, अम्र बिन आस और कुछ दूसरे सरदार भी बैठे थे।

हज़रत खराश ऊंट से उतर कर उन के पास पहुंचे और ऊंची आवाज़ में बोले—

ऐ अहले क़ुरैश ! मैं हज़रत मुहम्मद सल्ल० का क़ासिद हूं और आप को यह बताने के लिए आया हूं कि हम मुसलमान लड़ने के लिए नहीं आये हैं, सिर्फ़ काबा की ज़ियारत करने और क़ुर्बानी अदा करने आये हैं। हज के दिनों में यह किसी आदमी को भी हक़ हासिल नहीं है कि वह लोगों को हज की रस्में अदा करने से रोके, अरबों का यह पुराना क़ानून है और अभी तक इस पर अमलदरामद होता चला आ रहा है, इसलिए आप हमारे लिए रोक न बनेंगे और हम को हज कर लेने देंगे।

लेकिन अगर हम हज न करने दें ···? इक्रिमा ने कहा।

तब हम लड़ेंगे, खराश ने निडर हो कर कहा और सब को क़त्ल कर के काबे की ज़ियारत करेंगे।

थोड़ा सा सोचने के बाद इक्रिमा कड़का—

ओ गुस्ताख मुसलमान ! तू हम को डराने आया है। याद रख, तेरी

ज़िन्दगी और मौत हमारे हाथ में है।

तुम ग़लत कहते हो, हज़रत ख़राश ने लापरवाही से कहा—

मौत और ज़िन्दगी तो ख़ुदा के हाथ में है।

मुश्रिक ख़ुदा का नाम सुन कर भड़क उठे।

उन में से कई उठे। उन्हों ने पहले सालब नामी ऊंट को ज़िब्ह कर डाला और फिर हज़रत ख़राश की तरफ़ लपके।

हज़रत ख़राश ने तलवार खींच ली और जोश व ग़ज़ब से भर कर कहा—

कुत्तो! क़ासिद पर हमला करते हो। अगर तुम लड़ना ही चाहते हो, तो याद रखो, मैं जिस क़ौम का क़ासिद हूं, वह आंधी की तरह तुम पर टूट पड़ेगी और तुम सब को क़त्ल कर डालेगी।

हज़रत ख़राश की खिंची तलवार को देख कर कुफ़्फ़ार का जोश हंडिया के उबाल की तरह दब गया।

हुलैस भी उस मज्लिस में मौजूद था, बोल पड़ा—

ऐ क़ुरैशियो! यह क्या तरीक़ा है, किसी क़ासिद का क़त्ल बुज़दिल से बुज़दिल क़ौम भी क़त्ल नहीं करती, तुम यह कलंक का टीका अपने सर क्यों लेते हो, इसलिए हरगिज़ तुम किसी क़ासिद से किसी क़िस्म की छेड़खानी न करो। अगर हिम्मत हो तो बाहर निकल कर मुसलमानों से लड़ो।

बेशक हम को क़ासिद को क़त्ल न करना चाहिए, इक्रिमा ने कहा, इस से हमारी क़ौम को दाग़ लग जाएगा। ऐ मुसलमानों के क़ासिद! तुम वापस जाओ और अपने रसूल से कह दो कि हम किसी मुसलमान को हरगिज़ मक्के में दाख़िल न होने देंगे।

हज़रत ख़राश ने तलवार म्यान में डाल ली और पैदल ही हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस लौट आए।

आप को पूरा वाक़िआ सुनाया।

हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा किराम से मश्विरा किया।

मेरे ख़्याल में किसी ऐसे आदमी को हुज्जत पूरी करने के लिए एक बार मक्का रवाना फ़रमाइए, जिस के क़बीले के लोग मक्के में ज़्यादा हों, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा।

यह आख़िरी कोशिश है और इसे भी कर लेना चाहिए, हज़रत उस्मान ने कहा।

तो फिर किसे भेजा जाए? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

हज़रत उमर को भेज दीजिए, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया।

मुझे जाने में कोई परेशानी नहीं है, हज़रत उमर ने कहा, मगर मेरे क़बीले बनू अदी का एक आदमी भी मक्का में मौजूद नहीं हैं, इसलिए मेरा क्या असर पड़ेगा ? अगर उस्मान को भेजा जाए, तो अच्छा है, क्योंकि उन के क़बीला बनी उमैया के बहुत से असरदार और ताक़तदर लोग मक्का में मौजूद हैं।

यही मुनासिब है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस्मान ! तुम जाओ और क़ुरैश वालों को समझा-बुझा कर इस बात पर तैयार कर दो कि वे हम को हज करने दें।

हज़रत उस्मान उठे, अपने ख़ेमे पर आए, हथियारबन्द हुए और चल पड़े।

जब वह मक्का में दाख़िल हुए तो रास्ते ही में अबान बिन सईद उनके क़बीले के असरदार सरदार, उन से मिले और उन को अपनी हिमायत में ले कर इक्रिमा के मकान पर पहुंचे।

उस वक़्त बहुत से असरदार लोग इक्रिमा के पास मौजूद थे।

ऐ मक्का वालो ! हज़रत उस्मान ने सभी को ख़िताब करते हुए कहा, यह हज का ज़माना है, लड़ाई का नहीं। हम मुसलमान भी इस ज़माने का एहतराम करते हैं, जिस तरह से तुम करते हो। हम सब इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की औलाद हैं। यह काबा उन्हीं का बनाया हुआ है। यह काबा सब के लिए बनाया गया है, इसलिए हम को हक़ है कि हम उमरा करें, क़ुर्बानी करें. इसलिए तुम रोको नहीं।

तुम सही कहते हो उस्मान ! इक्रिमा ने कहा, हर आदमी को हज करने का पूरा-पूरा हक़ है, लेकिन हम मुसलमानों को हज करने की इजाज़त नहीं दे सकते, इस में हमारी तौहीन है, अलबत्ता तुम को हज करने की इजाज़त है, तुम हज कर सकते हो।

मैं अकेले हज नहीं कर सकता, हज़रत उस्मान ने कहा।

अच्छा, तुम नज़रबंद किये जाते हो, इक्रिमा ने कहा, दूसरा हुक्म मिलने तक तुम मक्का से बाहर नहीं जा सकते। अगर तुम इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करोगे, तो क़त्ल कर दिये जाओगे।

किसी को इस हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ कहने की जुर्रात न हुई।

हज़रत उस्मान को रोक लिया गया।

जब हज़रत उस्मान कई दिन तक वापस न लौटे, तो आमतौर पर मुसलमानों ने समझ लिया कि वह शहीद कर दिये गये।

हुज़ूर सल्ल० को इस बात से बहुत रंज हुआ। आप ने फ़रमाया कि

अगर कुफ़्फ़ार ने उस्मान को शहीद कर डाला है, तो जब तक बदला न लेंगे, वापस न लौटेंगे।

आप उस वक़्त पेड़ के नीचे बैठे थे।

वहीं आप ने बैअत लेनी शुरू कर दी।

सहाबा किराम बैअत करने के लिए टूट पड़े, इस तरह सब ने बैअत की।

इस बैअत का नाम बैअते रिज़्वान है।

जिस वक़्त बैअत ली जा रही थी, उसी वक़्त हज़रत उस्मान तश्रीफ़ ले आए।

आप ने आ कर पूरा वाक़िआ सुनाया।

मुसलमानों ने समझ लिया कि कुफ़्फ़ार बग़ैर लड़े मानेंगे नहीं, इसलिए उन्हों ने लड़ाई की तैयारियां शुरू कर दीं।

जबकि लड़ाई की तैयारियां की जा रही थीं, तो एक दिन क़बीला बनी सक़ीफ़ का मशहूर सरदार उर्वः बिन मसऊद हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ।

उस वक़्त लोग ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ने के लिए वुज़ू कर रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० भी वुज़ू कर रहे थे।

मुसलमानों की भारी तायदाद आप के चारों तरफ़ खड़ी थी और वुज़ू का पानी ज़मीन पर न गिरने देती थी।

उर्वः मुसलमानों का यह मंज़र देख कर हैरान रह गया।

नमाज़ के बाद उर्वः को हुज़ूर सल्ल० ने तलब फ़रमाया।

उर्वः ने हाज़िर हो कर सलाम किया और हुज़ूर सल्ल० के पास बैठ गया।

आप ने उस से पूछा, उर्वः! तुम कैसे आये हो?

या मुहम्मद! उर्वः ने कहा, आप ने क़ौम के टुकड़े कर दिये, मुल्क में एक बड़ा फ़ित्ना पैदा कर दिया। आप उम्मी हैं, भला उम्मी भी कहीं रसूल हो सकता है?

आप ने मुस्करा कर फ़रमाया, उर्वः! मानो, न मानो, लेकिन मैं ख़ुदा का रसूल हूं, रहा फ़ित्ने का सवाल, तो मैं तुमसे या तुम्हारी क़ौम से कभी लड़ने नहीं आया, तुम ख़ुद लड़ने के लिए बद्र और मदीना जैसी जगहों पर पहुंचे। अब हज करने के लिए आया हूं, सो तुम हज नहीं करने देते, बताओ फ़ित्ना तुम पैदा करते हो या मैं?

उर्वः ने हाथ फैला कर कहा, आप हमारे माबूदों को बुरा क्यों कहते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं बुतपरस्ती से मना करता हूं। वह आदमी जो ज़रा भी अक़्ल रखता है, समझ सकता है कि अपने हाथों से पत्थर तराश कर उन्हें पूजना कहां की अक़्लमन्दी है ? इबादत के लायक़ तो सिर्फ़ खुदा है। इसलिए मैं तो उसी की इबादत की दावत देता हूं।

उर्वः जब बात करता था, तो हाथ फैला कर बात करता था और हाथ इतनी दूर ले जाता कि हुज़ूर सल्ल० की दाढ़ी छू जाती।

यह गुस्ताखी थी और यह गुस्ताखी सहाबा किराम को बहुत खल रही थी।

लेकिन आप मक्का पर चढ़ कर क्यों आए ? उर्वः ने फिर हाथ फैला कर कहा।

मैं लड़ाई के इरादे से नहीं आया, सिर्फ़ काबा की ज़ियारत के लिए आया हूं, आप ने जवाब दिया।

उर्वः ने फिर हाथ फैलाया और इस बार फिर हुज़ूर सल्ल० की दाढ़ी छू गयी।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा से यह गुस्ताखी देखी न गयी।

उन्हों ने जल्दी से तलवार खींच कर तलवार का क़ब्ज़ा उर्वः के हाथ पर मार कर कहा, उर्वः ! अदब कर !

उर्व चौंका। उस ने नज़र उठायी तो देखा कि मुसलमान बहुत खफ़ा हो रहे हैं।

मुसलमानों की ग़ज़बनाक शक्लें देख कर वह कुछ डरा।

उस ने हाथ फैला-फैला कर बातें करना बन्द कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने उस से कहा, उर्वः ! तुम अपनी क़ौम में वापस जाओ और उन से कहो कि मुनासिब यही है कि वह हमें हज करने की इजाज़त दे दें या हम से समझौता कर लें और अगर वे अपनी ज़िद पर अड़े रहे, तो मजबूरन हम को लड़ना पड़ेगा।

मैं समझाऊंगा, उर्वः ने कहा और कल आप को इस का जवाब मिल जाएगा।

इस के बाद उर्वः उठा और सलाम कर के रवाना हो गया।

उस ने मुसलमानों को रसूले खुदा सल्ल० का जो एहतराम करते देखा, उस से वह बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुआ। चुनांचे उस ने मक्का में पहुंच कर क़ुरैश वालों को पूरी बात बता दी।

क़ुरैश ने अपनी मज्लिसे शूरा बुला ली।

बेहस मुबाहसे के बाद यही तै हुआ कि समझौता कर लिया जाए।

चुनांचे सुहैल बिन अम्र को नुमाइन्दा बना कर भेजा गया।

जब हुज़ूर सल्ल० ने उसे आते देखा, तो सहाबा से फ़रमाया, अब काम आसान हो गया है, क्योंकि सुहैल समझौते के लिए आ रहा है।

चुनांचे सुहैल हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ।

जब वह सलाम कर के बैठ गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम किस लिए आए हो सुहैल ?

मैं समझौते की ग़रज़ से आया हूं, बशर्ते कि आप हमारी शर्तों को मंज़ूर फ़रमा लें, सुहैल ने कहा।

अगर वाक़ई समझौते के लिए आए हो, तो तुम्हारी शर्तें मंज़ूर हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

मैं तो समझौते के इरादे से ही आया हूं, सुहैल ने कहा।

अच्छा, अपनी शर्तें बयान करो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

मैं पहले यह अर्ज़ कर रहा हूं, सुहैल ने कहा, कि हम मक्का वाले हुज़ूर सल्ल० और आप के साथियों से हरगिज़ डरे हुए नहीं हैं और न हम डर कर सुलह करने आए हैं, बल्कि सिर्फ़ इसलिए आए हैं कि हम और आप एक ही क़ौम और एक ही क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं। हम नहीं चाहते कि आपस में खून-खराबा हो, इसलिए समझौता चाहते हैं।

अगर तुम आपस में खून-खराबा नहीं चाहते, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तो बद्र, उहद और मदीना पर चढ़ कर न आते। झूठ क्यों बोलते हो ? साफ़ कहो न कि हमारी ताक़त से मरऊब हो कर तुम अब समझौता चाहते हो।

अच्छा, यों ही सही, सुहैल ने हंस कर कहा।

क्या आप वाक़ई सुलह करना चाहते हैं ? हज़रत उमर ने पूछा।

उमर ! तुम मुसलमान होने से पहले भी सख्त थे और अब भी सख्त हो ? सुहैल ने कहा।

सुहैल ! हुज़ूर सल्ल० ने बीच में बात साफ़ की, मेरे साथियों में एक भी ऐसा नहीं है जो सुलह करना न चाहता हो, इसलिए कि इस्लाम खूरेंज़ी से रोकता है।

फिर आगे फ़रमाया—

तुम्हारी क्या शर्त है, बोलो।

सुहैल ने शर्तें बयान करना शुरू कर दीं। सुहैल ने कहा, हमारी शर्तें ये हैं—

१. मुसलमान इस साल उमरा न करेंगे और मक्के में दाखिल न हो

सकेंगे ।

२. अगले साल आ कर उमरा करेंगे, लेकिन मक्का में तलवार के अलावा और कोई हथियार अपने पास न रखेंगे, और तीन दिन से ज़्यादा मक्का में न ठहर सकेंगे ।

३. समझौते की मीयाद दो साल होगी । इस अर्से में कोई फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ के जान व माल से क़तई रूप से छेड़खानी न करे । आपस में अम्न व अमान से रहेंगे ।

४. अरब की हर क़ौम और हर क़बीले को अख़्तियार होगा कि चाहे जिस फ़रीक़ के साथ समझौता हो जाए, उन के लिए भी इस अहदनामा की ये तमाम शर्तें होंगी ।

५. दोनों फ़रीक़ तमाम क़बीलों में जिसे चाहें, आज़ादी के साथ अपना साथी और दोस्त बना सकते हैं ।

६. अगर क़ुरैश में से कोई आदमी अपने वली की इजाज़त के बिना मुसलमानों की तरफ़ चला जाएगा, तो फ़ौरन क़ुरैश की तरफ़ वापस किया जाएगा, लेकिन अगर कोई मुसलमान क़ुरैश के यहां आएगा, तो वह वापस न किया जाएगा ।

बस यही शर्तें हैं, सुहैल ने कहा, अगर मंज़ूर हो तो अहदनामा लिखवा कर उस की दो नक़लें करा दीजिए । दस्तख़तों के साथ एक मुझे दे दीजिए और एक आप रख लीजिए ।

हुज़ूर सल्ल० इन शर्तों को सुन कर मुस्करा दिये ।

सहाबा किराम को शर्तों पर कोई एतराज़ न हुआ, लेकिन छठी शर्त ग़लत लगी ।

वे इस ख़्याल से हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखने लगे कि आप इस शर्त पर कोई एतराज़ करते हैं या नहीं ।

पर हुज़ूर सल्ल० ने कोई एतराज़ न किया ।

बल्कि आप ने फ़रमाया, सुहैल ! मुझे तुम्हारी तमाम शर्तें मंज़ूर हैं ।

हज़रत अली रज़ि० ने जल्दी से फ़रमाया, क्या छठी शर्त भी ?

हां, हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया, छठी भी ! अली ! तुम नहीं जानते कि यह शर्त हमारे लिए कितनी मुफ़ीद होगी ।

रसूले ख़ुदा सल्ल० के इस फ़रमान के बाद किसी चूं व चरा की कोई गुंजाइश न रही ।

हज़रत अली रज़ि० ने शर्तों को लिखना शुरू किया ।

पेशानी पर लिखा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम (शुरू अल्लाह के नाम

से जो रहमान व रहीम है)

कुफ़्फ़ार खुदा के नाम से चिढ़ते थे, सुहैल ने एतराज जड़ दिया और कहा, इस के बजाए लिखो, बिस्मिकल्लाहुम-म

हज़रत अली ने आगे लिखा—

यह अहदनामा है मुहम्मद रसूलुल्लाह और……

सुहैल टपक पड़ा—

यह भी ठीक नहीं है। हम मुहम्मद को रसूल मानते तो मसअला ही खत्म था।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, फिर क्या लिखवाना चाहते हो?

लिखिए मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ से, सुहैल ने कहा।

दोनों जगह इस्लाह कर दी गयी।

फिर तमाम शर्तें लिख कर हज़रत अली ने सुहैल को दिखा दीं।

सुहैल ने पढ़ कर कहा, ठीक है, अब इस की दूसरी नक़ल करो।

हज़रत अली ने दूसरी नक़ल शुरू की। यह नक़ल अभी पूरी न हुई थी कि एक नवजवान परेशान हाल हुज़ूर सल्ल० के सामने आ खड़ा हुआ।

यह नवजवान सुहैल का बेटा अबू जुन्दल थे।

उन के पांवों पर बेड़ियों के बहुत से निशान थे और जिस्म पर कई घाव थे और उन से खून रिस रहा था।

साफ़ मालूम हो रहा था कि उन पर ज़ुल्म किया गया है।

उन्होंने आते ही कहा, फ़रियाद है, ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रियाद है।

आप ने और आप के तमाम साथियों ने मज़्लूम अबू जुन्दल को देखा।

उन की हालत देख कर लोगों के दिल हिल गये।

फ़रियाद सुनाते हुए, अबू जुन्दल ने ग़म की पूरी दास्तान सुनायी और कहा, मुझे अपने साथ मदीना ले चलो।

सुहैल बिगड़ कर बोला—

ऐसा नहीं हो सकता, अबू जुन्दल मेरे साथ रहेगा और उसे ज़ुल्म भी सहना पड़ेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू जुन्दल! हम इस अहदनामे की वजह से मजबूर हैं, तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, तुम अपने बाप के साथ चले जाओ।

लेकिन हुज़ूर सल्ल०! अभी अहदनामे पर दस्तखत नहीं हुए हैं, हज़रत उमर रज़ि० बीच ही में बोल पड़े और अबू जुन्दल की हालत कह रही

थी कि उन पर वह्शियाना ज़ुल्म किये गये हैं। हुज़ूर सल्ल० ! उन्हें वह्शी इंसानों के हाथों में उन की ज़िन्दगी का ख़ात्मा करने के लिए न सौंपे।

उमर ! दस्तख़त नहीं हुए, तो क्या है, ज़ुबानी समझौता तो हो चुका है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया और दोनों फ़रीक़ों ने उसे मंज़ूर कर लिया है। हम को ज़ुबानी अह्द के भी ख़िलाफ़ नहीं करना चाहिए। अह्दनामे की छठी शर्त के मुताबिक़ हम अबू जुन्दल को उन के बाप के हवाले करने पर मजबूर हैं।

इस बीच अह्दनामे की नक़ल भी तैयार हो गयी।

एक पर हुज़ूर सल्ल० ने और दूसरे पर सुहैल ने दस्तख़त कर दिये।

इस कार्रवाई के बाद हुज़ूर सल्ल० ने अबू जुन्दल से कहा—

अबू जुन्दल ! तुम सब्र करो और ख़ामोशी के साथ ज़ुल्म सहो। मेरे ख़्याल में तुम इस बात को गवारा न करोगे कि ख़ुदा का रसूल बद-अह्दी करे।

अफ़सोस मेरी क़िस्मत ! अबू जुन्दल ने ठंडी सांस भर कर कहा, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ! मैं दोबारा आप की ज़ियारत के लिए शायद ज़िंदा न रहूं। ज़ालिम अह्ले क़ुरैश मुझे ज़रूर मार डालेंगे। लेकिन मौत को इससे बेहतर समझता हूं कि हुज़ूर सल्ल० को लोग बद-अह्द कहें।

अब सुहैल उठ खड़ा हुआ और वह अबू जुन्दल को साथ ले कर चला और कुछ ही क़दम चल कर नेज़े की अनी से उस के कचूके लगाने लगा।

मुसलमान यह हाल देख कर तड़प गये।

हज़रत उमर रज़ि० से भी ज़ब्त न हो सका।

हुज़ूर सल्ल० के पास आये और बोले—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप नबी बरहक़ नहीं हैं ?

बेशक ! मैं नबी बरहक़ हूं, हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में कहा।

क्या हम मुसलमान नहीं हैं ? हज़रत उमर रज़ि० ने फिर पूछा।

बेशक तुम मुसलमान हो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

क्या अह्ले मक्का मुश्रिक और काफ़िर नहीं हैं ? हज़रत उमर ने फिर पूछा।

वे ज़रूर मुश्रिक और काफ़िर हैं, हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में फ़रमाया।

फिर हम दीन के मामले में ऐसी ज़िल्लत क्यों सहें ?

इसलिए कि यही ख़ुदा की मरज़ी है।

हज़रत उमर ख़ामोश हो गये।

सुहैल अब भी अबू जुन्दल के कचोके लगा रहा था और वह लड़खड़ाते

हुए गिरते पड़ते चले जा रहे थे।

हज़रत उमर मन ही मन में पुकार उठे, ऐ ख़ुदा ! तू ही अबू जुन्दल की मदद कर।

फिर अबू जुन्दल नज़रों से ओझल हो गये।

हुज़ूर सल्ल० ने उस वक़्त एहराम खोलने और क़ुर्बानियां करने का हुक्म दिया।

मुसलमानों ने क़ुर्बानियां कीं, एहराम खोले, बाल बनवाये और एक दिन हुदैबिया में और ठहर कर दूसरे दिन मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हो गये।

यहूदी हार गये

मुसलमान इस अहदनामे से मायूस और टूटे हुए दिल के साथ मदीना मुनव्वरा की तरफ़ जा रहे थे कि इसी बीच हुज़ूर सल्ल० पर वह्य नाज़िल हुई।

वह्य में इस अह्दनामे को खुली जीत कहा गया था।

ख़ुदा के इस कलाम को सुन कर मुसलमानों को बेहद ख़ुशी हुई और अब उन की समझ में आया कि यह समझौता मुसलमानों के लिए जीत का सामान लेकर आया है। वे समझ गये थे कि अब अम्न व इत्मीनान से रह कर इस्लाम की तब्लीग़ का काम करेंगे।

अभी हुज़ूर सल्ल० को मक्का से वापस आये हुए ज़्यादा अर्सा न हुआ था कि ख़ैबर के यहूदियों के हमलावर होने की ख़बरें आने लगीं।

इस तरह एक तरफ़ मुश्रिकीने मक्का की तरफ़ से इत्मीनान हुआ, तो ख़ैबर के यहूदियों से ख़तरा पैदा हो गया। ख़ैबर में आबाद ये यहूदी मदीना ही के बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा क़बीले के लोग थे।

ये यहूदी मुसलमानों से बदला लेने की आग में जलते रहते थे। इस लिए पहले उन्हों ने मक्का के मुश्रिकों को उभारा था कि लड़ें, लेकिन जब उन लोगों ने समझौता कर लिया, तो ख़ुद लड़ने पर तैयार हो गये और ख़ैबर के पुराने आबाद यहूदियों को भी अपने साथ मिला लिया।

अब हुज़ूर सल्ल० को उन के इरादे की ख़बर हुई, तो आपने भी तैयारियां शुरू कर दीं। चूंकि अब इस्लाम को यहूदियों का ही ख़तरा बाक़ी रह गया था, इस लिए आप इस ख़तरे को भी हमेशा-हमेशा के लिए मिटाने को तैयार हो गये थे।

जब मुसलमान लड़ाई की तैयारियों में लगे हुए थे, तो एक दिन एक आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

आप ने उस से पूछा, तुम कौन हो ? और कहां से आये हो ?

उस ने जवाब दिया—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा नाम अबू बसीर है। मक्के का रहने वाला हूं। मुसलमान हो गया हूं। मक्के वालों ने मुझ पर इतनी सख्तियां की हैं कि मैं तंग आ कर भाग आया हूं और हुज़ूर सल्ल० से पनाह मांगने के लिए आया हूं।

अबू बसीर ! तुब मक्का वालों की मंशा के ख़िलाफ़ यहां आये हो, अगर उन्हों ने सुलहनामा की बुनियाद पर तुम को तलब किया, तो क्या होगा ?

हुज़ूर सल्ल० ! ख़ुदा के लिए आप मुझे उन के सुपुर्द न करें, अबूबसीर ने कहा, वरना वे यक़ीनन मुझे मार डालेंगे।

मगर हम वायदे की वजह से मजबूर हैं, आप ने फ़रमाया।

अभी अबू बसीर कुछ कहने न पाये थे कि दो अरब आ गये। उन की शान कह रही थी कि वे सफ़र किये चले आ रहे हैं।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० के क़रीब आ कर सलाम किया और उन में से एक आदमी ने कहा—

हुज़ूर सल्ल० ! हम मक्के के रहने वाले हैं। अहले क़ुरैश के क़ासिद हैं। यह आदमी अबू बसीर मक्के से भाग आया है। हम इसे लेने के लिए आए हैं। अहदनामे के मुताबिक़ आप इसे हमारे हवाले करें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, ठहरो, हम अबू बसीर को तुम्हारे साथ रवाना कर देंगे।

अबू बसीर का चेहरा बुझ गया।

मक्का के क़ासिदों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! हम को क़ियाम करने का हुक्म नहीं है। हमें इसी वक़्त वापस लौटना है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी ! अबू बसीर ! तुम इन दोनों के साथ मक्का वापस चले जाओ।

हुज़ूर सल्ल० ! अबू बसीर ने कहा, मैं आप की पनाह में आने के लिए हाज़िर हुआ था। मुझे इन दरिंदों के हवाले न कीजिए।

नहीं अबू बसीर ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हम अहदनामे के ख़िलाफ़ नहीं जा सकते। अगरचे मुझे तुम्हारी हालत का ग़म और क़लक़ है, लेकिन क्या करूं मजबूरी है।

अबू बसीर ने ठंडी सांस ली और दोनों क़ासिदों के साथ हो लिए।

अबू बसीर जानते थे कि मक्के में उन की मौत उन्हें खींच कर ले जा रही है, लेकिन क्या करते, मजबूर थे ?

ज़ुल हुलैफ़ा तक पहुंच कर उन तीनों ने वहीं क़ियाम किया और एक साफ़-सुथरी जगह पर बैठ गये।

अबू बसीर ने क़ासिदों से पूछा, दोस्तो ! तुम को मालूम है कि मक्का वाले मुझ पर बग़ावत का इल्ज़ाम लगा कर मुझे मौत के घाट उतार देंगे। क्या तुम क़ौमी हक़ और इंसानी हमदर्दी का लिहाज़ करते हुए मुझे आज़ाद कर सकते हो ?

दोनों ने बिगड़ कर कहा, हम और किसी मुसलमान से हमदर्दी करें? बेवक़ूफ़ ! हम तो वे हैं कि अगर हमारा क़ाबू चले, तो हम तमाम मुसलमानों को क़त्ल कर डालें। सुन ! तेरा एक-एक अंग काट कर तुझे तड़पा-तड़पा कर मारा जाएगा।

अगर ख़ुदा को यही मंज़ूर है, तो क्या किया जाए ? अबू बसीर ने जवाब दिया।

अबू बसीर निहत्थे थे, क़ासिदों के पास तलवारें थीं।

अबू बसीर ने एक क़ासिद से कहा, क्या आप ने नयी तलवार ली है ?

मैं ने नहीं ली, मुझे इक्रिमा ने दी है, क़ासिद ने बताया, निहायत अच्छी तलवार है, यह कहते ही उस ने तलवार म्यान से निकाली और अबू बसीर को दे कर कहा, देखो, कैसी अच्छी तलवार है ?

अबू बसीर ने तलवार देखी, तारीफ़ की, यकायक उन के दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि क़ुदरत ने उस के हाथ में तलवार पहुंचा दी है, अब उस से काम लेना उस के अख़्तियार में है।

उसने जल्दी से एक क़ासिद पर हमला किया। उसका सर तन से जुदा हो गया।

दूसरा क़ासिद यह हालात देख कर हैरान रह गया।

घबरा कर उठा, भागा और सीधे मदीने की तरफ़ हो लिया।

अबू बसीर उस के पीछे दौड़े।

दोनों आगे-पीछे दौड़ते हुए मदीना पहुंचे।

बदहवास क़ासिद भागता हुआ हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंचा और बुलन्द आवाज़ से बोला, हुज़ूर ! मुझे बचाइए।

हुज़ूर सल्ल० ने क़ासिद को देखा। क़ासिद के पीछे ही अबू बसीर पहुंच गये।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू बसीर ! ठहरो ! यह तुम क्या कर रहे हो ?

हुज़ूर सल्ल० ! आप ने अहद की पाबन्दी के तहत मुझे इन मुश्रिकों की क़ैद में दे दिया था, अबू बसीर ने बताया, लेकिन ख़ुदा ने मुझे आज़ाद कर दिया है।

लेकिन मैं इस बात को पसन्द नहीं करता, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

बहुत ख़ूब ! अबू बसीर ने कहा, मैं हुज़ूर सल्ल० से रुख़सत होता हूं।

इतना कहते ही वह चल दिये।

मजबूरन क़ासिद पूरा वाक़िया सुनाने के लिए मक्का चला गया।

हम पहले ही कह आये हैं कि हुज़ूर सल्ल० इस वक़्त ख़ैबर पर हमला करने की तैयारियों में लगे हुए थे। कुछ दिनों ही में तैयारियां पूरी हो गयीं।

हुज़ूर सल्ल० ने सबाअ बिन अरफ़त को मदीने का ज़िम्मेदार बना कर ख़ुद पन्द्रह सौ मेहनती मुजाहिदों को ले कर ख़ैबर की तरफ़ कूच किया। इस बार इस फ़ौज में दो सौ सवार थे। इस्लामी फ़ौज निहायत शान और बदबदे के साथ रवाना हुई।

मुनाफ़िक़ों के ज़रिए चूंकि इस्लामी फ़ौज की पूरी ख़बर हर यहूदी को मिल रही थी, इसलिए इस की भी ख़बर उन को हो गयी।

ख़ैबर में यहूदियों के कुछ क़िले थे। तमाम क़िलों की मरम्मत शुरू करा दी गयी थी और एक ज़बरदस्त फ़ौज मुक़ाबले के लिए तैयार कर ली गयी थी।

यहूदियों में मरहब और यासिर दो बहादुर जवान थे। तमाम अरब में उन की धाक बैठी हुई थी। यहूदियों को उन की बहादुरी पर नाज़ था। फ़ौज के सिपहसालार वही बनाये गये थे।

पहले तो यहूदियों का ख़ुद ही मदीने पर हमलावर होने का इरादा था, लेकिन जब उन्हों ने मुसलमानों की फ़ौज के आने की ख़बर सुनी तो ख़ैबर के दर्रे में मुक़ाबले के लिए तैयार हो बैठे।

वहां से ठीक एक मील की दूरी पर मुसलमानों ने भी अपनी फ़ौज जमायी। सूरज डूब चुका था, इस लिए मुजाहिदों ने नमाज़ पढ़ी और आग जला कर खाने-पकाने का इन्तिज़ाम करने लगे।

मुसलमान फ़ौज इस तरह जमायी गयी कि असल तायदाद से दोगुनी लग रही थी।

पूरी फ़ौज में हर खेमे के सामने आग रोशन कर दी गयी।

रात हुई, पहरे का इन्तिज़ाम कर दिया गया।

सुबह सबेरे अज़ान हुई, नमाज़ पढ़ी गयी और सूरज निकलते-निकलते पूरी फ़ौज मैदान में सफ़ आरा हो गयी।

यहूदी भी हथियारों से सज-धज कर सफ़ आरा हो गये।

दोनों फ़ौजें एक दूसरे से तीन फ़र्लांग की दूरी पर थीं।

बिगुल बजा और यहूदियों के दोनों सरदार मरहब और यासिर घोड़े दौड़ा कर मैदान में निकले। उन्हों ने मैदान में आते ही पुकारा—

ऐ मौत के लुक़्मा मुसलमानो! हमारे मुक़ाबले के लिए सब से बहादुर लोगों को भेजो, अगरचे उन के मुक़ाबले के लिए हर मुसलमान तैयार था, लेकिन फ़ौज के सरदार का इशारा नहीं हुआ था।

इस फ़ौज के सरदार हुज़ूर सल्ल० थे। मुजाहिद उन की तरफ़ देख रहे थे। हर आदमी यही चाहता था कि हुज़ूर सल्ल० मुझे इजाज़त दें। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को इशारा किया।

इशारा पा कर ये दोनों बुज़ुर्ग आगे बढ़े और घोड़ों को उड़ा कर लड़ाई के मैदान में पहुंचे। हज़रत अली रज़ि० मरहब के और हज़रत ज़ुबैर यासिर के मुक़ाबले पर जा डटे।

मरहब ने हज़रत अली को देखा और उस ने कहा, मेरे मुक़ाबले के लिए आप आए हैं, आप वापस जाइये और किसी तजुर्बेकार बहादुर को भेजिए।

मरहब की बातें सुन कर हज़रत अली रज़ि० मुस्कराये। आप ने फ़रमाया—

मरहब! मेरी नवजवानी पर न जाओ। मैं बड़े-बड़े बहादुरों को मौत के घाट उतार चुका हूं। अभी तुम्हें भी तजुर्बा हुआ जाता है।

अगर तुम मरना ही चाहते हो, तो आओ, मरहब ने ग़ुस्से में कहा।

यह कहते ही उस ने तलवार निकाली।

हज़रत अली ने भी म्यान से तलवार खींच ली।

मरहब ने घोड़ा बढ़ा कर हज़रत अली रज़ि० पर हमला किया।

हज़रत अली भी घोड़े पर सवार थे। आप ने तजुर्बेकार की तरह उस के वार को ढाल पर रोका।

मरहब को अपना वार ख़ाली देख कर झुंझलाहट हुई। उस ने तैश में भर कर फिर हमला किया।

हज़रत अली ने उस का यह हमला भी रद्द कर दिया।

मरहब को फिर ग़ुस्सा आया। इस बार उस ने पूरे जोश और पूरी

ताक़त से हमला किया।

हज़रत अली रज़ि० ने अपनी तलवार पर उस की तलवार रोकी और ज़रा सा इशारा कर के उस की तलवार तोड़ दी।

मरहब घबरा गया, उस ने ज़ल्दी से घोड़ा पीछे हटाया।

हज़रत अली रज़ि० मुस्कराये। अगर वह चाहते तो मरहब पर हमला कर के उसे क़त्ल कर डालते, मगर शेरे ख़ुदा ने इस बात को गवारा न किया कि निहत्थे दुश्मन पर वार कर के उसे क़त्ल कर डाला जाए, इस-लिए आप ने फ़रमाया, मरहब! डरो नहीं, तुम दूसरी तलवार निकाल लो।

आप का शुक्रिया, मरहब ने कहा।

यह कहते हुए उस ने दूसरी तलवार निकाली और बढ़ कर हज़रत अली पर हमला किया।

हज़रत अली ने बाएं हाथ में ढाल ले कर ढाल पर तलवार रोकी और हैरत में डाल देने वाली फ़ुर्ती के साथ चमकती तलवार से उस पर हमला कर दिया।

मरहब की आंखें झपक गयीं।

तलवार उस के कंधे पर गिरी और ख़ूद की ज़ंजीरों को काटती हुई एक इंच के क़रीब शाने को घायल करती हुई चली गयी।

मरहब के कंधे से ख़ून का फ़व्वारा उबलने लगा। मौत उस की आंखों के सामने फिर गयी और एकदम घोड़ा लौटा कर भागा।

हज़रत अली रज़ि० ने जल्दी से तलवार म्यान में डाली और उस के पीछे घोड़ा डाल दिया। पलक झपकते ही हज़रत अली ने मरहब को जा दबोचा और दौड़ते घोड़े पर से उसे ऐसी पटख़नियां दीं कि मरहब घोड़े पर से ज़मीन पर आ रहा और दम तोड़ दिया।

हज़रत अली धीरे-धीरे वापस लड़ाई के मैदान में आ गये।

जिस बीच हज़रत अली और मरहब की लड़ाई हो रही थी, हज़रत ज़ुबैर यासिर से लड़ रहे थे।

यासिर भी तजुर्बेकार, बहादुर और होशियार था। उस ने मौक़ा पा कर हज़रत ज़ुबैर के कंधे पर वार किया।

हज़रत ज़ुबैर ने बड़ी फुर्ती से उस का वार रोका और फ़ौरन ही अपना वार भी कर दिया।

यासिर इस अचानक हमले से ख़बरदार न था। तलवार उस के सर पर पड़ी और बराबर की दो फांकें बनाते हुए हलक़ तक उतर गयी।

वह ज़ोर से कांपा और बग़ैर आह किये ज़मीन पर गिर पड़ा।

उस का घोड़ा डर कर कांपा और भागने के लिए बढ़ा।

हज़रत ज़ुबैर जल्दी से उस पर सवार हो गये।

जब यहूदियों ने देखा कि उन के दोनों सरदार मारे गये, तो उन्हें बड़ा तैश आया। पूरी फ़ौज मुसलमानों पर हमला करने के लिए आगे बढ़ चली।

हुज़ूर सल्ल० ने भी तीन बार अल्लाहु अक्बर का नारा लगा कर आम लड़ाई का एलान कर दिया।

मुसलमानों की कुल तायदाद पन्द्रह सौ थी, जबकि यहूदी फ़ौज में दस हज़ार फ़ौजी थे।

यहूदियों का हर सिपाही ज़िरह बक्तर पहने हुए था, जबकि मुसलमानों में से किसी एक के पास भी न ज़िरह थी, न पूरे हथियार। किसी के पास तलवार थी, तो किसी के पास नेज़ा।

इसी वजह से यहूदी समझ रहे थे कि वे मुसलमानों को कुचल कर रख देंगे।

यहूदियों की फ़ौज ने सब से पहले हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर को अपने घेरे में ले लिया। ये दोनों बुज़ुर्ग एक जगह मिल कर खड़े हो गये थे, हर तरफ़ से इन दोनों पर तलवारों की बारिश हो रही थी।

दोनों शेरे दिल मुसलमान यहूदियों पर टूट पड़े और जो सामने पड़ा उसे मौत के हवाले करने लगे।

यहूदियों की फ़ौज आगे बढ़ती रही। मुसलमान भी आगे-आगे आते रहे, यहां तक कि दोनों फ़ौजें टकरा गयीं और आम लड़ाई शुरू हो गई।

क़ौमी नारों, तलवारों की झंकारों और घायलों के शोर व गुल से लड़ाई का मैदान गूंज रहा था।

यहूदी ज़्यादा थे, इसलिए दूर तक फैले जा रहे थे।

मुसलमानों को भी उन के हिसाब से फैलना पड़ा।

बहुत दूर-दूर तक लड़ाई हो रही थी और मौत अपना भयानक नाच, नाच रही थी।

हज़रत साद बिन मुआज़ सामने की टुकड़ी के सरदार थे और बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे। उन्हों ने जोश में आ कर हमला किया। यहूदियों को मारते-काटते आगे बढ़ते चले गये। उन की टुकड़ी उन के साथ आगे बढ़ी, यहां तक कि यहूदी पीछे हटने लगे।

इधर सीधे हाथ की टुकड़ी के सरदार हज़रत उमर और बायें हाथ की टुकड़ी के सरदार हज़रत अबू बक्र भी अपनी-अपनी टुकड़ियों के साथ आगे

बढ़ते गये। यहूदी तेज़ी से पसपा होने लगे।

यहूदियों के पसपा होने से मुसलमानों के हौसले बढ़ गये। उन्हों ने और जोश से हमला किया। हर तरफ़ ख़ून भरी तलवारें उछलीं और सरों पर गिरीं। सर कट कर दूर गिरने लगे। यहूदियों की सफ़ें तितर-बितर हो गयीं और उन के बेशुमार आदमी मारे गये।

यहूदी घबरा गये। वे क़िले की तरफ़ भागे।

मुसलमानों ने उन का पीछा किया और मारते-काटते क़िले तक पहुंच गये।

क़िले पर खड़े यहूदियों ने तीर बरसाने शुरू कर दिए, पत्थर की भी बारिश शुरू कर दी।

मुसलमान रुक गये।

इस का फ़ायदा उठा कर यहूदी क़िलों में दाख़िल हो गये और क़िले का दरवाज़ा बन्द कर लिया गया।

ख़ैबर की जीत

ख़ैबर में यहूदियों के छः क़िले थे। ये सभी क़िले क़रीब-क़रीब ही वाक़ेअ् थे। इन क़िलों के अलग-अलग नाम भी थे।

मुसलमानों ने रात को अपनी क़ियामगाह पर क़ियाम किया। निहायत इत्मीनान से सारी रात आराम करते रहे। सुबह सवेरे जाग कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और क़िला नज़ारा की तरफ़ चले।

यहूदी कुछ ऐसे डरे और सहमे हुए थे कि मुसलमानों को क़िले की तरफ़ आते देख कर भागे और क़िला क़मूस में जा कर पनाह लीं, जो यहूदियों का सब से मज़बूत क़िला था।

मुसलमानों ने बढ़ कर क़िला नज़ारा पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस क़िले में अनाज के ढेर लगे हुए थे। शराब के पीपे के पीपे भरे हुए थे।

मुसलमानों पर शराब हराम थी, इसलिए वह तो ढा दी गयी। अलबत्ता मुसलमानों को रसद की काफ़ी ज़रूरत थी, ख़ुदा ने उन्हें काफ़ी ग़ल्ला दे दिया।

मुसलमानों ने क़िला नज़ारा पर क़ब्ज़ा कर के क़िला शक़ की तरफ़ कूच किया।

शक़ के यहूदी भी क़िला छोड़ कर भाग गये। यहां के यहूदियों ने भी किला क़मूस में ही जा कर पनाह ली। ये दो क़िले बग़ैर लड़े मुसलमानों

के क़ब्ज़े में आ गये।

चूंकि क़िला शक़ में दाख़िल होते वक़्त शाम हो गयी थी, इसलिए मुसलमानों ने उसी क़िले में उस रात कियाम कर लिया। दूसरे दिन फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही क़िला क़मूस की तरफ़ रवाना हुए। यह क़िला यहूदियों का बहुत मज़बूत क़िला था। इस क़िले में यहूदियों के बड़े चुने हुए सरदार रहते थे। कनाना बिन रुबैअ उनका सब मे बड़ा सरदार था। उस ने फ़सील पर चारों तरफ़ सिपाही लगा दिये थे संगरेज़ो और तीरों के गठ्ठर के गठ्ठर डलवा दिये थे।

जब मुसलमान क़िले के सामने पहुंचे तो वे उस की आसमान से बात करती हुई इमारत और भारी भरकम बुर्जों और शानदार दरवाज़े और दरवाज़े पर मंढ़ी हुई लोहे की चादरों को देख कर दंग रह गये।

यह क़िला निहायत ऊंचा और मज़बूत था। चूने और पत्थर से बनाया गया था। काफ़ी मोटे-मोटे और भारी पत्थर लगाये गये थे। पत्थरों को तोड़ कर फ़सील में दराड़ पैदा करना आसान न था।

उस का सदर दरवाज़ा ६० फुट ऊंचा था। लकड़ी के मोटे-मोटे किवाड़ चढ़े हुए थे, जिन पर लोहे की १२ इंच मोटी चादर मढ़ी हुई थी। किवाड़ों का वज़न साठ मन था।

ख़ैबर में यही एक ऐसा क़िला था, जिस पर यहूदियों को नाज़ था।

इस क़िले का दरवाज़ा दर्रा ख़ैबर कहलाता था।

मुसलमान सदर दरवाज़े के सामने लगभग एक मील लम्बा मैदान छोड़ कर जम गये। उस दिन मुसलमानों ने हमला न किया। वे ख़ाली सोचते रहे।

हज़रत उमर, हज़रत अबूबक्र, हज़रत उस्मान, हज़रत बिलाल और हज़रत साद बिन मुआज़ ने घोड़ों पर सवार हो कर क़िले के चारों तरफ़ गश्त किया, लेकिन किसी तरफ़ कोई ऐसा मौक़ा नज़र न आया, जहां से क़िले पर हमला किया जा सके।

इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अली की आंखें आयी हुई थीं। वह ख़ेमे से बाहर न निकल सकते थे। धूप की चमक से बचने के लिए आप ख़ेमे ही में आराम फ़रमाया करते थे।

पहले दिन तो मुसलमानों ने हमला न किया, तमाम दिन ग़ौर व फ़िक्र करते रहे। दूसरे दिन हथियारबन्द होकर मैदान में निकले और सफ़ें ठीक-ठाक कर धीरे-धीरे क़िले की तरफ़ बढ़े।

मुसलमानों को बढ़ते देख यहूदी भी मुस्तैद हो गये, मगर उन्हों ने

तीरंदाज़ी या संगबारी न की यहां तक कि मुसलमान बिल्कुल उन के सामने आ गये और फ़सील थोड़े ही फ़ासले पर रह गयी।

मुसलमानों को हैरत थी कि यहूदी ख़ामोश क्यों हैं ?

मुसलमान धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

जब वे बिल्कुल ही फ़सील के किनारे पहुंच गये, तो यकायक पत्थर के टुकड़ों और तीरों की बारिश उन पर शुरू हो गयी। फ़सील के ऊपर से संगरेज़ और तीर इतने ज़्यादा आने लगे कि सूरज तक उन के नीचे छिप गया।

मुसलमानों का आगे बढ़ना रुक गया।

कुछ मुसलमान घायल भी हुए, लेकिन एक मुसलमान भी पीछे न हटा।

हज़रत उमर रज़ि० एक हाथ में झंडा लिये और दूसरे हाथ में ढाल पकड़े खड़े सोच रहे थे। इस हालत को देख कर आप को गुस्सा भी आ रहा था और जोश भी। चुनांचे आप ने गुस्से में आ कर बढ़ना शुरू किया।

यहूदियों ने शोर व गुल के साथ-साथ तीरंदाज़ी भी ज़ोरदार शुरू कर दी।

चूंकि हज़रत उमर बढ़ रहे थे, इसलिए उन के साथ तमाम मुसलमान भी धीरे-धीरे बढ़ने लगे।

यहूदियों का शोर व गुल भी बढ़ रहा था और तीरंदाज़ी की रफ़्तार भी।

मुसलमान बढ़ते रहे, यहां तक कि वे फ़सील के नीचे पहुंच गये। उन्हों ने फ़सील को नेज़ों और कुदालों से तोड़ने की कोशिश की, हज़ार कोशिशों के बावजूद वह न टूटी और शाम हो गयी।

रात में लड़ाई रुक गयी।

सुबह होते ही मुसलमान फिर सज-धज कर आ गये।

आज हज़रत अबूबक्र को इस्लामी झंडा दिया गया। वह जांबाज़ मुसलमानों का एक दस्ता ले कर आगे बढ़े। आज हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सदर दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश की, मगर कामियाबी न मिली।

तीसरे दिन फिर मुसलमान फ़सील तक पहुंचे। आज हज़रत उस्मान को झंडा दिया गया था। बावजूद बेपनाह कोशिशों के आज भी कामियाबी न मिल सकी।

इसी तरह एक-एक कर के कई सरदार रोज़ाना हमलावर हुए, क़िले की फ़सील तक पहुंचे। फ़सील और दरवाज़े के तोड़ने की कोशिश हुई, मगर कोई भी कामियाब न हो सका।

आख़िर एक रात को, जब लश्करगाह में वापस पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कल मैं उस आदमी को झंडा दूंगा, जो ख़ुदा के हुक्म से ख़ैबर के मशहूर क़मूस को जीत कर के ख़ैबर शिकन होने का ख़िताब हासिल करेगा।

तमाम मुसलमान इस ख़बर से ख़ुश हुए। हर आदमी सोचने लगा कि कि वह कौन ख़ुशक़िस्मत हस्ती है, जिसे कल झंडा दिया जाएगा और जो क़िला जीत कर ख़ैबर शिकन का लक़ब पायेगा।

सुबह जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो तमाम मुसलमान हथियारबन्द हो कर खड़े हो गये।

हुज़ूर सल्ल० अपने ख़ेमे से बाहर आए और धीरे-धीरे चल कर फ़ौज के सामने पहुंचे।

हर मुसलमान इंतिज़ार बना आप की आवाज़ सुनने को बेताब था कि आज आप किस को झंडा देते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अली कहां हैं?

लोगों ने बताया, हुज़ूर सल्ल० ! उन की तो आंख आयी हुई है।

उन्हें मेरे पास लाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

कुछ मुसलमान दौड़ गये और हज़रत अली का हाथ पकड़ कर हुज़ूर सल्ल० के सामने लाये।

तुम्हारा क्या हाल है ? आप ने पूछा।

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कई दिन से आंख आयी हुई है। धूप की चमक सख़्त तक्लीफ़ दे रही है। हर वक़्त आंख बन्द किए पड़ा रहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपना लुआबेदहन हज़रत अली की आंखों में लगा दिया और कस कर पट्टी बांध दी और फ़रमाया, अली ! तुम्हारी आंखें अभी अच्छी हो जाएंगी और फिर कभी न दुखेंगी।

थोड़ी देर बाद पट्टी खोली गयी, तो आंखें चंगी हो चुकी थीं।

हज़रत अली ही नहीं, बल्कि तमाम मुसलमानों में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी।

अब हुज़ूर सल्ल० ने इस्लाम का झंडा अपने हाथ में ले कर हज़रत अली रज़ि० को दिया और फ़रमाया, अल्लाह के शेर ! अल्लाह का नाम लेकर जाओ और क़िले का दरवाज़ा उखाड़ कर फेंक दो।

हज़रत अली ने झंडा हाथ में लिया और पूरे जोश से फ़ौज ले कर फ़सील की तरफ़ बढ़ने लगे।

जब आप क़िले के फ़सील के क़रीब पहुंचे, तो पहले की तरह यहूदियों

की तरफ़ से तीरों और पत्थरों की बारिश शुरू हो गयी।

हज़रत अली रज़ि० ने ऊंची आवाज़ में फ़रमाया—

ऐ शहादत के तलबगारो ! ऐ ख़ुदा से मिलने की आरज़ू रखने वालो ! बिना किसी झिझक और डर के बढ़ते रहो। हम सब शहीद हो कर जन्नत में दाख़िल होने की तमन्ना रखते हैं और जन्नत का रास्ता तलवारों के साए में से हो कर गुज़रता है।

इस मुख़्तसर तक़रीर ने मुसलमानों को जोश से भर दिया।

वे निडर होते ज़ोर से आगे बढ़ने लगे।

सब से आगे शेरे ख़ुदा हज़रत अली एक हाथ में झंडा और दूसरे हाथ में ढाल लिए बड़े शान व दबदबा से बढ़ रहे थे। आप के पीछे इस्लामी दस्ता हरकत कर रहा था। आख़िर बढ़ते-बढ़ते इस्लामी मुजाहिदों का यह दस्ता क़िले के नीचे पहुंच गया। हज़रत अली सदर दरवाज़े के सामने जा कर रुके। उन्हों ने सरसरी नज़र डाल कर यह मालूम कर लिया कि फ़सील जितनी मज़बूत है, दरवाज़े का लोहे का फ़ाटक इस से ज़्यादा मज़-बूत है। वह कुछ मिनट फाटक के सामने खड़े हो कर सोचते रहे।

आख़िरकार काफ़ी सोच-विचार के बाद घोड़े से उतरे और फाटक के क़रीब पहुंचे। उन्हों ने फाटक के सामने से हट जाने का इशारा किया। मुसलमान फाटक के सर दो सिरे पर परे बांध कर खड़े हो गये।

अब हज़रत अली रज़ि० लोहे के फाटक की मोटी-मोटी सलाख़ें पकड़ और घुटनों के बल बैठ कर किवाड़ों को उभारा।

मुसलमान हैरत से उन की कार्रवाई देख रहे थे। सब जानते थे कि फाटक निहायत वज़नी और मज़बूत है। उस का अपनी जगह से हरकत करना भी नामुम्किन है।

हज़रत अली रज़ि० ने दरें ख़ैबर को उभार कर दोनों हाथों से अपनी ताक़त से खड़खड़ाया और अल्लाहु अक्बर का नारा लगाकर फाटक उखाड़ा और साठ मन पक्के वज़न के फाटक को अपने हाथों पर उठा कर चर्ख़ दिया और बीस फ़िट के फ़ासले पर फेंक दिया।

तमाम मुसलमान, और सारे यहूदी आप की यह ताक़त देख कर दंग रह गये।

मुसलमानों की हैरत दूर हुई, तो उन्हों ने अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा बुलन्द किया। इस नारे से फ़सील कांप गयी, मैदान कांप उठा और यहूदी थर्रा गये।

क़िले का दरवाज़ा खुल गया।

यहूदी जो अन्दर की तरफ़ दरवाज़े की हिफ़ाज़त पर तैनात थे, घबरा कर पीछे हटे।

शेरे ख़ुदा उठ कर चले और मुसलमानों का दस्ता भी उन के पीछे चला।

यहूदियों को मुसलमानों को आते देखा, तो उन पर घबराहट छा गयी और जितने यहूदी फ़सील पर मौजूद थे, वे जल्दी-जल्दी नीचे उतरे और तलवारें म्यानों से खींच कर लड़ने पर तैयार हो गये।

मुसलमानों ने तलवारें चमकायीं और यहूदियों पर जा डटे।

यहूदी पहले ही से तैयार थे, इसलिए तुरन्त लड़ाई शुरू हो गयी। इंसान कट-कट कर गिरने लगे। ख़ून पानी की तरह बहने लगा। अगर मुसलमान जोश व ग़ज़ब में भरे हुए थे, तो यहूदी भी ग़ैज़ व ग़ज़ब में थे।

दोनों फ़रीक़ बड़े जोश से लड़ रहे थे।

कनाना बिन रबीअ़ क़िला क़मूस का सरदार था। वह और उस की ख़ूबसूरत बीबी सफ़िया दोनों यहूदी फ़ौज में खड़े हुए अपने सिपाहियों के दिल बढ़ा रहे थे।

पर यहूदियों के हौसले और हिम्मतें पस्त हो चुकी थीं। वे ग़ैरत दिलाने पर भी आगे न बढ़ते थे।

मुसलमानों ने संभल कर एक आम हमला किया।

यहूदियों ने मुसलमानों के इस हमले को रोकने के लिए ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, पर इस्लामी मुजाहिद रुकने और पीछे हटने के लिए न बढ़े थे।

इसलिए उन्हों ने बढ़ कर और दबा दिया।

यहूदियों के पांव और उखड़ गये और हर यहूदी अपनी जान बचाने के लिए भागा और छिपने लगा।

कनाना भी भागा और उसकी ख़ूबसूरत बीवी भी भागी।

सरदार के भागते ही यहूदियों के बाक़ी सिपाही भी घबरा कर भागे।

मुसलमान पूरे क़िले में फैल गये और जो उन के सामने आया, उसी को मार डाला और जो भी ज़रा उलझा, मौत की गोद में पहुंचा दिया।

अब यहूदियों ने हथियार फेंक दिए और हाथ उठा कर अमान-अमान पुकारने लगे।

इस हालात को देख कर हज़रत अली रज़ि० ने फ़ौरन लड़ाई बन्द करने का एलान कर दिया और यहूदियों को गिरफ़्तार कर लेने का हुक्म दे दिया।

लड़ाई बन्द हो गई।

यहूदी मर्द, औरतें और बच्चे गिरफ़्तार किए जाने लगे।

जब गिरफ़्तारी अमल में आ रही थी, तो बहुत से यहूदी अपनी बीवी-बच्चों को ले कर चुपके से क़िले से बाहर निकल गए।

लगभग दो ही घंटे में तमाम यहूदी गिरफ़्तार कर लिए गए।

दूसरे दिन जबकि सूरज निकल रहा था, दूसरे क़िलों के सरदार यहूदी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हों ने खेतों और बाग़ों की आधी पैदावार ख़िराज के तौर पर देने का इक़रार कर के सुलह की दर-ख़्वास्त की।

हुज़ूर सल्ल० ने उन की यह दरख़्वास्त मंज़ूर कर ली।

जब सुलहनामा मुकम्मल कर के वे लोग चले गए, तो क़मूस क़िले के क़ैदी और ग़नीमत का माल मुसलमानों में बांट दिए गए।

सफ़िया कनाना की बीवी हज़रत वह्या के हिस्से में आयी।

चूंकि सफ़िया एक हाकिम की बीवी और हुक्म बिन अख़्तब की बेटी थी, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने उसे वह्या से ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और उन से कह दिया कि तुम आज़ाद हो, जहां चाहे चली जाओ।

सफ़िया पर हुज़ूर सल्ल० की इस मेहरबानी का बड़ा गहरा असर हुआ और उस ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा इरादा मुसलमान होने का है।

हुज़ूर सल्ल० ने उसे मुसलमान कर लिया और उन की ख़्वाहिश पर हुज़ूर सल्ल० ने उन से अपना अक़्द कर लिया।

उस रात को सलाम मुश्कम यहूदी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर सल्ल० की दावत कर गया।

हुज़ूर सल्ल० रात को हज़रत बिश्र बिन बरा के साथ खाना खाने गए।

यहूदियों को तो हुज़ूर सल्ल० से ख़ुदाई बैर था। वे ज़ाते अक़्दस को नुक़्सान पहुंचाने की तदबीर करते रहते थे।

अगरचे हुज़ूर सल्ल० भी उन की दुश्मनी को जानते थे, पर आप इतने मुरव्वत वाले थे कि उनकी बातें मान लेते थे। चुनांचे इसी मुरव्वत की वजह से आप ने दावत क़ुबूल कर ली थी।

जब हुज़ूर सल्ल० सलाम की दावत में शिर्कत के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे, तो हज़रत सफ़िया ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के हबीब ! आप यहूदियों के यहां क्यों जा रहे हैं ? वे तो आप के सब से बड़े दुश्मन हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं जानता हूं, लेकिन सफ़िया ! कब तक वे

दुश्मनी करते रहेंगे ?

हुज़ूर सल्ल० ! हज़रत सफ़िया ने फ़रमाया, वे आप से और मुसलमानों से उस वक़्त तक दुश्मनी करते रहेंगे, जब तक कि एक यहूदी भी ज़िंदा है।

ख़ुदा मुझ को और मुसलमानों को उन की शरारत से बचाए रखेगा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

मेरे सरताज ! मुझे सलाम और उस की बीवी ज़ैनब की तरफ़ से अंदेशा है।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर कहा, तुम अंदेशा न करो, ख़ुदावन्दे आलम मेरी हिफ़ाज़त करेगा।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० हज़रत बिश्र के साथ सलाम के मकान पर पहुंचे।

आप के सामने खाना चुना गया। बकरी का गोश्त और क़ुलचे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने एक लुक़्मा मुंह में रखा।

आप ने तुरन्त थूक दिया।

हज़रत बिश्र से कहा, बिश्र ! थूक दो, मत खाओ, खाने में ज़हर मिला हुआ है।

बिश्र लुक़्मा हलक़ के नीचे उतार चुके थे। उस ने फ़ौरन असर किया और वे तुरन्त अल्लाह के प्यारे हो गए।

हुज़ूर सल्ल० को बड़ा अफ़सोस हुआ।

आप ने सलाम की तरफ़ देखा, सलाम डर गया।

उस ने हाथ जोड़ लिए और क़सम खा कर कहा, मैं क़सम खा कर कहता हूं कि मुझे मालूम नहीं कि किस बदबख़्त ने यह नामुनासिब हरकत की है। मेरे ख़्याल में यह ज़ैनब की कारंवाई है।

अपनी बीवी को बुलाओ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हम मुसलमानों में यह क़ायदा है कि जो आदमी किसी को क़त्ल कर डालता है, उसे मक़्तूल के वारिसों को सुपुर्द कर दिया जाता है। वे चाहें तो क़त्ल करें, चाहें ख़ून बहा ले कर छोड़ दें।

फ़ौरन ज़ैनब हाज़िर की गयी।

उस ने इक़रार किया कि खाने मे उस ने ज़हर मिलाया था।

हुज़ूर सल्ल० उसे और हज़रत बिश्र को लाश को इस्लामी फ़ौज में लाये और ज़ैनब को हज़रत बिश्र के वारिसों के सुपुर्द कर दिया गया।

ज़ैनब समझ गयी कि वह ज़रूर क़त्ल कर डाली जाएगी।

उस ने फ़ौरन कहा, मैं मुसलमान होना चाहती हूं, इसलिए मुझे मुसल-

मान कर के क़त्ल करना।

चुनांचे उसे मुसलमान कर लिया गया।

उस के मुसलमान होने पर हज़रत बिश्र के वारिसों ने उस से बदला लेने से इंकार कर दिया और कह दिया कि अब यह मुसलमान हो गयी है, इसलिए हम इस से बदला नहीं ले सकते।

ज़ैनब मुसलमानों का यह त्याग देख कर हैरान रह गयी।

यहूदियों को बहुत ताज्जुब हुआ।

कई यहूदी भी मुसलमानों की इस कारंवाई से मुतास्सिर हो कर मुसलमान हो गये और दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल० जीतने वाले मुसलमानों के साथ मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हो लिए।

सीधी-सच्ची बातें

मुसलमानों ने जब से ख़ैबर पर फ़ौज से हमला किया था, उस वक़्त से तमाम अरब की निगाहें इस लड़ाई के नतीजे पर लगी हुई थीं, ख़ैबर के यहूदी निहायत मालदार और तायदाद में ज़्यादा थे। उन के क़िले मज़बूत, लड़ाई के सामान बहुत ज़्यादा थे। बड़े-बड़े दिलावर और जोशीले लोग फ़ौज में मौजूद थे।

मदीने के मुनाफ़िक़ों और अरब के मुश्रिकों का यह ख़्याल था कि ख़ैबर के यहूदी मुसलमानों को हरा कर मदीना मुनव्वरा और तमाम उन जगहों और क़िलों पर क़ाबिज़ हो जाएंगे, जिन पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा है और फिर या तो मुसलमान मज़हब से फिर कर यहूदियों का मज़हब अपना लेंगे या बुतपरस्त हो जाएंगे या अरब की धरती से निकल जाएंगे।

जिस ज़माने का हाल हम लिख रहे हैं, उस ज़माने में पैग़ाम पहुंचाने का कोई इन्तिज़ाम न था। दूर मंज़िलों के फ़ासले की ख़बरें तो महीनों और वर्षों में पहुंचा करती थीं, चुनांचे ख़ैबर की जीत की भी ख़बरें देर से फैलीं। लोगों ने हैरत से इन ख़बरों को सुना।

हुज़ूर सल्ल० भी ख़ैबर से कुछ ज़्यादा दूर न पहुंचे थे कि मुसलमानों को एक क़ाफ़िले का सामना हुआ।

यह क़ाफ़िला हब्शा से आया था।

हुज़ूर सल्ल० ने मक्का से रवाना होने से पहले अम्र बिन उमैया को हब्शा रवाना किया था और उन्हें शाहे हब्श के नाम एक ख़त भी लिखा था।

हज़रत अम्र हब्शा से इन मुसलमानों को ले आए थे, जो मक्का वालों के ज़ुल्म से तंग आ कर हिजरत कर गये थे।

इन वापस आने वालों में हज़रत जाफ़र, हज़रत अली के भाई और उन की बीवी हज़रत अस्मा, साथ ही उन के लड़के अब्दुल्लाह, औन, मुहम्मद और ख़ालिद बिन सईद, अबू मूसा अशअरी, हारिस बिन ख़ालिद, मामर बिन अब्दुल्लाह, अबू हातिब बिन उमर और मलिक बिन रबीआ वग़ैरह थे।

हुज़ूर सल्ल० और तमाम मुसलमान, मुसलमानों को देख कर बहुत ख़ुश हुए। वे अपने इन बिछड़े हुए सितम रसीदा भाइयों से इस तरह गले मिले, जैसे कि वे उन के सगे भाई हों।

जब तमाम गले मिल चुके तो अम्र ने एक नवजवान को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया, निहायत अदब से हुज़ूरे अकरम सल्ल० को सलाम किया और आप ने उसे दुआ दी।

यह नवजवान ख़ूबसूरत था, क़ीमती कपड़े पहने था, उस की ज़ाहिरी शान कह रही थी कि वह कोई शाहज़ादा है।

अम्र! यह नवजवान कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने अम्र से पूछा।

यह हब्श के बादशाह असम्हं का बेटा है, अम्र ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के सलाम के लिए हाज़िर हुआ है। इस का बाप मुसलमान हो गया है और उस ने हुज़ूर सल्ल० के नाम यह ख़त दिया है।

अम्र ने ख़त हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया।

हुज़ूर सल्ल० को यह सुन कर बड़ी ख़ुशी हुई कि ईसाई बादशाह मुसलमान हो गया है।

आप ने अरहा के सर पर हाथ रख कर कहा, नूर चश्मी! ख़ुदा तेरी हर ख़्वाहिश को पूरा करेगा।

मालूम होता है अल्लाह ने यह दुआ क़ुबूल कर ली थी।

चुनांचे अरहा की हर ख़्वाहिश पूरी हुई और वह तमाम ज़िंदगी न दुखी हुआ, न ग़मगीन।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र को ख़त पढ़ने के लिए दे दिया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ख़त खोला और पढ़ना शुरू किया।

यह ख़त है नजाशी इब्ने ज़ियर की तरफ़ से, जो हब्श का बादशाह है, मुमहम्मद रसूलुल्लाह की ख़िदमत में।

ऐ ख़ुदा के नबी! आप पर अल्लाह की सलामती और रहमत और बरकतें नाज़िल हों। मैं इक़रार करता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई

माबूद नहीं है और आप ख़ुदा के रसूल हैं।

हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान मेरे पास पहुंचा। हज़रत ईसा के बारे में आप ने जो लिखा है, वह इस से ज़र्रा बराबर भी बढ़ कर नहीं है। ईसाई ग़लती पर हैं और धोखे में पड़े हुए हैं कि वे उन्हें ख़ुदा का बेटा बताते हैं।

पहले मेरा भी अक़ीदा था······किस क़दर ग़लत अक़ीदा था। मेरा ख़ुदा मुझे माफ़ करे। सच यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा का बेटा नहीं हैं और वे उस के बन्दे और रसूल थे, गोया ख़ुदा के महबूब नबी।

मैं आप के फ़रमान के मुताबिक़ इस्लाम मज़हब अपनाता हूं और आप के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र के हाथ पर बैअत कर ली है। अफ़सोस है कि मैं मुसलमानों की ख़िदमत न कर सका। काश, मैं पहले ही मुसलमान हो जाता।

मैं इक़रार करता हूं कि पूरी ज़िंदगी हुज़ूर सल्ल० का ख़ादिम बन कर रहूंगा। मैं अक़ीदत ज़ाहिर करने के लिए अपने बेटे अरहा को ख़िदमत में रवाना कर रहा हूं। अगर हुज़ूर सल्ल० का हुक्म होगा, तो मैं भी दरबारे रिसालत में हाज़िर हूंगा।

मुझे बिल्कुल यक़ीन है कि हुज़ूर सल्ल० जो कुछ फ़रमाते हैं, वह हक़ है।

ऐ ख़ुदा के रसूल! आप पर सलाम, एक बार नहीं, हज़ार बार सलाम!

तमाम लोग इस ख़त को सुन कर बहुत ख़ुश हुए।

उन्हों ने शाहज़ादा की ख़िदमत और मेहमानी में कोई कमी नहीं की।

मुसलमान ख़ैबर से चल कर फ़िदक पहुचे।

फ़िदक वालों ने फ़िदक के बाग़ हुज़ूर सल्ल० के हवाले कर हुज़ूर सल्ल० से समझौता कर लिया।

मुसलमान फ़ौज फ़िदक से चल कर वादिल क़ुरा पहुंची। इस जगह भी यहूदी आबाद थे। वे क़िला बन्द हो गये और मुसलमानों से लड़ने की तैया-रियां करने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने मुसलानों को क़िले पर हमला करने का हुक्म दिया।

मुसलमान पूरे जोश और हौसले के साथ आगे बढ़े।

यहूदियों ने ज़ोरदार तीरंदाज़ी शुरू कर दी, पर मुसलमानों के बढ़ते क़दम को पीछे न धकेल सके।

दोपहर से पहले ही क़िला फ़त्ह हो गया।

हुज़ूर सल्ल० वादिल क़ुरा से चल कर तीमा पहुंचे। यहां भी यहूदी

आबाद थे। उन्हों ने भी कुछ शर्तों के साथ समजौता कर लिया।

अब मुसलमान फ़ौज तीमा नामी जगह पर निहायत शान व दबदबा के साथ मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुई।

यहां मुसलमानों को जीतने वाली इस फ़ौज के आने से ख़ुशी हुई।

वहां मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों को कमाल दर्जे का रंज व अफ़सोस हुआ। ख़ास तौर से इस वजह से कि ख़ैबर की जीत से ग़नीमत के मालों और खेती की जमीनों की वजह से मुसलमानों की ग़रीबी दूर हो गयी, उन की परेशान-हाली जाती रही, वे ख़ुशहाल हो गये, साथ ही इस वजह से भी कि मुसलमानों के क़ब्ज़े में बहुत से क़िले और सैकड़ों मील का रक़बा आ गया था।

अब उन की मुस्तक़िल हुकूमत क़ायम हो गयी थी। इस्लाम का सिक्का चारों तरफ़ बैठ गया था और चूंकि इस्लाम की तरक़्क़ी का मतलब कुफ़्र व शिर्क की तनज़्ज़ुली है, इसलिए मुश्रिकों को इस से बड़ा सदमा पहुंचा था।

अभी हुज़ूर सल्ल० को मदीना में तश्रीफ़ लाए हुए कुछ ही दिन हुए थे कि हारिसा मय अपने साथियों के मदीने में दाख़िल हुआ और मस्जिदे नबवी के क़रीब ठहरा।

उसने इस्लाम और मुसलमानों के बारे में मालूमात शुरू कीं।

उसे मालूम हुआ कि मुसलमानों से बेहतर इंसान और इस्लाम से बेह-तर मज़हब कोई नहीं है।

चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मय अपनी तमाम जमाअत के मुसलमान हो गया।

मुसलमान होने के बाद उस ने तमाम वाक़िआ मुसलमानों को सुनाया।

जमीला का ज़िंदा दफ़्न किया जाना, उस का निकालना, जमीला का मिलना, उस का सलमा और जमीला का परवरिश करना वग़ैरह-वग़ैरह, जितनी बातें थीं, सब उस ने बता डालीं।

उस की दास्तान सुन कर तमाम मुसलमानों को बड़ा अफ़सोस हुआ।

उन्हें उस से और उस के साथियों से बड़ी हमदर्दी हो गयी।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने तमाम मुसलमानों को जमा किया।

उन्हें एक ख़ुदा की इबादत पर उभारा। इस्लामी समाज पैदा करने पर तैयार किया, ख़ुदा को ख़ुश करने का तरीक़ा बताया और यह भी कि जो अल्लाह की ख़ुशी के लिए काम करेगा, जन्नत का हक़दार बन सकेगा और जिस ने उस को नाराज़ किया, वही दोज़ख़ की सज़ा पायेगा और उसे भुगतेगा।

आप ने फ़रमाया—

मुसलमानो ! ख़ुदा की इबादत करो, नमाज़ दिल को तस्कीन देती है। कोई आदमी कितना ही ग़मगीन और फ़िक्र मंद क्यों न हो, नमाज़ उसे तसल्ली दे कर उसके ग़म व फ़िक्र को दूर कर देती है।

नमाज़ माबूद और बन्दे के दर्मियान इबादत का रिश्ता है। ख़ुदा हर नमाज़ पढ़ने वाले बन्दे पर मेहरबानी करता है, जो ख़ुदा को याद करे, ख़ुदा उसे याद करता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है, जो मुझे याद करता है, मैं उसे याद करता हूं।

सोचो, इस से ज़्यादा क्या खुशनसीबी हो सकती है कि ख़ुदा बन्दे को याद करे।

क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ के बारे में सवाल किया जाएगा। वे मुसलमान टोटे में रहेंगे, जो नमाज़ नहीं पढ़ते या ग़फ़लत से वक़्त, बे-वक़्त पढ़ते हैं। ऐसे मुसलमान दोज़ख़ का ईंधन बनेंगे।

दोज़ख़ बहुत बुरी जगह है, जिस में आग के शरारे बुलंद हैं, आग के सांप, आग के बिच्छू और आग के दूसरे ऐसे जानवर हैं, जिन के डंक का असर कई वर्ष तक इंसान की रूह को खौलाता रहेगा। कौन ऐसा बद-बख़्त मुसलमान है, जो नमाज़ को छोड़ कर दोज़ख़ में जाना पसन्द करेगा।

ख़ुदा उस से ख़ुश होता है, जो उस की इबादत करता है। ऐसा आदमी जन्नत में दाख़िल होगा। जन्नत एक रौनक़दार बाग़ का नाम है, जिस की मिसाल दुनिया में नहीं मिलती। इस बाग़ में अजीब व ग़रीब मज़ेदार मेवे, तकल्लुफ़ वाले मकान हैं, बेहतरीन सजावट, नफ़ीस ग़लीचे, उम्दा मसह-रियां और ख़ालिस सोने-चांदी के तख़्त, बेहतरीन ख़िदमत गुज़ार जिन्हें ग़िलमान कहते हैं, ख़ूबसूरत लौंडियां, जो हूरें कहलाती हैं, साथ ही जिनकी ख़ूबसूरती को दुनिया की ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत औरतें नहीं पहुंच सकती, मौजूद हैं।

सफ़ेद और मीठे चश्मे के पानी जारी हैं, जो जन्नत में दाख़िल हुआ होगा, उस ने दुनिया की नेमतें पा लीं।

ख़ुदापरस्तो! पड़ोसियों से नेकी करो, मां-बाप का कहा मानो, जो औलाद मां-बाप को सताती है और बुरा कहती है या जो औरत अपने शौहर को तक्लीफ़ देती है, उस की ख़िदमत नहीं करती, उस का कहना नहीं मानती, जो शौहर अपनी बीवी को तक्लीफ़ देता है, उस पर तोहमत लगाता है, उसे खाने की तक्लीफ़ देता है या जो बाप अपनी औलाद की तबियत अच्छी

तरह नहीं करता, ये सभी खुदा की नाफ़रमानी करते हैं, इसलिए खुदा उन को दोजख में दाखिल करेगा, साथ ही जिन लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न किया गया है, खुदा उन के बे-रहम मां-बाप से मालूम करेगा कि तुम ने इन मासूम बच्चियों को ज़िंदा दफ़न किया था?

वे कुछ जवाब न दे सकेंगे। ऐसे इंसान भी दोजख का ईंधन बनेंगे।

कुछ नासमझ अरब अपनी औलाद को इसलिए क़त्ल कर डालते है कि वे उन की परवरिश का बोझ नहीं उठा सकते, यह भी बुरी बात है।

मुसलमानो! हमेशा मिल-जुल कर रहना। तुम सब आपस में भाई-भाई हो। भाइयों की लड़ाई खानदान को तबाह कर देती है। खुदा तुम से खुश रहेगा, जब तक तुम मिल-जुल कर रहोगे। ज़िना, जुआ, शराब, ग़ीबत, चुग़लखोरी, छिप कर किसी की बातें सुनना, बहुत बुरी बातें हैं। इन से खुदा नाखुश होता है। इन में से कोई बात भी तुम न करना।

परहेज़गारी बड़ी अच्छी चीज़ है, तुम नमूना बनो, नेकी का, तक़्वा और खुदा परस्ती का। हद से आगे बढ़ने से बचो, हर बात में बीच का रास्ता अपनाओ।

मुसलमान वह है, जो एक वक़्तकी भी नमाज़ क़ज़ा न करे, रोज़े रखे, ज़कात दे, हज करे, अपने मुसलमान भाई के साथ नेकी करता रहे। पड़ोसियों को तक्लीफ़ न दे, किसी को बुराई की नज़र से न देखे। ज़िना न करे, शराब न पिये, जुआ न खेले और कोई बुरा काम न करे, मां-बाप की बात माने, बच्चों को मुहब्बत से पाले, तालीम दिलाये, तर्बियत करे, अदब सिखाये। मेरी दुआ है कि खुदा मुसलमानों को बुरी बातों से बचाये और नेक काम करने की तौफ़ीक़ दे।

फिर आप ने उन नासमझों की बात की जो अपनी औलाद को इसलिए क़त्ल कर डालते हैं कि वे उन के पालने-पोषने का बोझ नहीं उठा सकते। यह भी बुरी बात है।

आप ने एक लम्बी तक़रीर फ़रमायी, मिंबर से नीचे आये।

मुसलमानों पर इस तक़रीर का बड़ा असर हुआ।

तमाम मुसलमानों ने अह्द कर लिया कि वह खुदा और रसूल के तमाम हुक्मों को पूरा करेंगे।

कुछ दिनों के बाद हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वह मक्का चल कर हज करने की तैयारियां करें।

हुदैबिया में जो सुलहनामा कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ हुआ था, उस में पहली शर्त यही थी कि इस साल मुसलमान हज न करें, अगले साल आकर

हज करें।

अब साल खत्म हो चुका था, चुनांचे आप ने इस साल हज करने का इरादा किया।

मुसलमानों ने भी तैयारियां शुरू कर दीं। निहायत शौक़ और बड़े जोश से तैयारियां की जाने लगीं।

हर मुसलमान तैयारी करता ही नज़र आ रहा था।

आफ़ताबे आलम मक्का में

ज़ीक़ादा सन ०७ हि० की पहली दहाई में हुज़ूर सल्ल० मक्का रवाना होने के इरादे से मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए।

हुज़ूर सल्ल० के साथ दो हज़ार मुसलमान थे।

बहुत सी औरतें और बच्चे भी शामिल हो गये थे।

हुज़ूर सल्ल० ने इस बार हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीने का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।

मुसलमान बड़े शौक़ और निहायत शान के साथ मक्के की तरफ़ चले।

क़ुर्बानी के ऊंटों की क़तार क़ाफ़िले से आगे दूर तक फैली हुई थी। जिस रास्ते से काबे की ज़ियारत करने वालों का यह क़ाफ़िला गुज़रा, अरब के मुश्रिकों पर रौब व दाब का सिक्का बिठाता चला गया।

चूंकि ख़ैबर के जीतने की ख़बरें अब तमाम अरब में फैल गयी थीं, इसलिए मुसलमान अब जीतने वाली क़ौम गिने जाने लगे थे।

अब मुश्रिक मुसलमानों से डरते और दबते थे।

जब यह शानदार क़ाफ़िला मक्का के क़रीब पहुंचा, तो मक्का वाले उन्हें देखने के लिए उमंड आए।

वे मुसलमानों का साज़ व सामान देख कर हैरान रह गये।

मुसलमान मुफ़्लिस क़ौम थी या इस्लाम मुफ़्लिसों से शुरू हुआ था, मगर ख़ैबर जीत लेने के बाद मुसलमानों में दौलत की रेल-पेल हो गयी थी। इस वक़्त पूरी शान से वे हज करने आये थे। तमाम मुसलमान लड़ाई के सामानों से लदे हुए थे।

कुफ़्फ़ार का लश्कर बद्र, उहद और मदीने में जिस शान और जिस साज़ व सामान से जा चुका था, मुसलमानों के इस क़ाफ़िले की यह शान देख कर काफ़िर रौब खा गये और डरे।

चूंकि मुसलमानों को डर था कि कहीं कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बद-अहदी कर के

इस बार भी उन्हें उमरे से न रोकें, इसलिए वे तमाम हथियारों से लैस हो कर आये थे ।

कुफ़्फ़ारे मक्का से कुछ नामुम्किन न था कि वे मुसलमानों को इस बार भी हज करने से रोक देते, लेकिन मुसलमानों की भारी तायदाद और लड़ाई के सामान की ज़्यादती को देख कर उन्हें हिम्मत न हो सकी ।

जब हाजियों का यह क़ाफ़िला मर्रज़्ज़हरान में पहुंच कर ठहरा, तो कुफ़्फ़ार की तरफ़ से कर्ज़ बिन हफ़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ, उस ने निहायत अदब के साथ हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया—

ऐ मुहम्मद ! जब आप हज करने के इरादे से आए हैं तो यह हथियारबन्दी क्यों है ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसलिए कि कुफ़्फ़ार बद-अहदी न करें ।

आप ने फ़रमाया, तुम इत्मीनान रखो, यह हथियारबन्दी तुम को नुक़सान नहीं पहुंचाएगी । मैं खूरेज़ी को पसन्द नहीं करता, मगर जब हालात मजबूर कर देते हैं तो अपनी हिफ़ाज़त के लिए लड़ना पड़ता है। कुफ़्फ़ारे मक्का से कह दो कि वे खौफ़ न करें । हम मुसलमान हैं और मुसलमान कभी वायदा के खिलाफ़ नहीं करते ।

कर्ज़ वापस चला गया ।

दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल० ने वहां से कूच किया ।

एहराम बांधे और क़ाफ़िले को इस शान से रवाना किया कि मीलों लम्बा हो गया । दूर तक ऊंटों और घोड़ों की क़तारें फैल गयीं ।

चूंकि हज का ज़माना है, अरब के मुश्रिक भी हज किया करते थे, इस लिए चारों तरफ़ से आराबी आये थे । मुसलमानों को देखने के लिए मक्का के रास्तों पर दोहरी क़तार बना कर खड़े हो गये, औरतें और बच्चे मकानों और दुकानों की छतों पर जा चढ़े ।

आखिर मुसलमान निहायत शान के साथ मक्के में दाखिल हुए और बैतुल्लाह की तरफ़ बढ़ने लगे ।

उन्हों ने मक्के में दाखिल होते ही अल्लाहु अक्बर का ज़ोरदार नारा लगाया ।

इस ज़ोरदार नारे को सुन कर तमाम कुफ़्फ़ार डर और सहम गये ।

वे घबरायी और सहमी हुई नज़रों से मुसलमानों को देखने लगे ।

मुसलमान बड़ी बे खौफ़ी के साथ सर झुकाये हुए चले जा रहे थे ।

क़ुर्बानी के ऊंट आगे थे । उन के पीछे तमाम मुसलमान चार-चार की

क़तार में एहराम बांधे हुए सिपाहियाना अन्दाज़ में फ़ौजियों की शान से पैदल चल रहे थे।

उन का तांता दूर तक लगा हुआ था।

उन के पीछे उन की सवारियों और सामान ढोने वाले घोड़ों और ऊंटों की क़तार भी दूर तक फैली हुई थी। आज तक कोई भी क़ाफ़िला इस शान व शौकत से हज के इरादे से मक्के में दाखिल नहीं हुआ था, जिस शान से मुसलमान दाखिल हुए।

हुज़ूर सल्ल० मुसलमानों के बीच में थे।

आप के चारों तरफ़ आप के फ़िदाकार और जां-निसार साथी थे।

खुदा की शान है कि वही मुसलमान, जिन पर मक्का की ज़मीन तंग हो गयी थी, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने दर्दनाक ज़ुल्म किए थे, जिनको तीन साल तक बे आब व दाना शाबे अबी तालिब में क़ैद कर रखा था, जो हिजरत पर मजबूर कर दिये गये थे, जिन के मकान मक्का के मुश्रिकों ने ज़ब्त कर के अपने क़ब्ज़े में कर लिए थे, साथ ही जिन का दुश्मन मक्के का बच्चा-बच्चा था। आज वही मुसलमान बड़ी शान से मक्के की गलियों और रास्तों को तै कर रहे थे और सारा अरब आंखे फाड़-फाड़ कर उन्हें देख रहा था, जिस ने इस्लाम को मिटाने और मुसलमानों को फ़ना करने की इंतिहाई कोशिश की थी।

पर तमाम कोशिशों के बावजूद इस्लाम फैल रहा था और मुसलमानों की तायदाद बराबर बढ़ रही थी। चुनांचे आज उन की ताक़त इतनी बढ़ गयी थी कि कुफ़्फ़ारे मक्का को उन्हें हज से रोकने का हौसला न हुआ।

मुसलमान बढ़ कर बैतुल्लाह के सामने पहुंचे।

यहां पहुंच कर हुज़ूर सल्ल० ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि कंधों को नंगा कर लो और एहराम का कपड़ा बग़ल के नीचे से निकाल कर गरदन के गिर्द लपेट लो और पूरी मुस्तैदी और सरगर्मी से दौड़ कर तवाफ़ करो।

मुसलमानों ने फ़ौरन इन हुक्मों को पूरा किया।

वे तेज़ी से दौड़-दौड़ कर तवाफ़ करने लगे।

मुश्रिक मुसलमानों की जफ़ाकशी, मुस्तैदी और शौकत व ताक़त को देख कर हैरान रह गये।

हुज़ूर सल्ल० और तमाम मुसलमान हज की रस्मों से फ़ारिग़ हो कर बैतुल्लाह के सामने वाले मैदान में ठहर गये और वहीं क़ुर्बानियां कीं।

हज से अगले दिन बनू खुज़ाआ के लोग हाज़िर हुए और सुलह की दरख्वास्त की।

उन में से एक आदमी ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ! हमें बनी बक्र की तरफ़ से अंदेशा है, चूंकि आप से हम ने समझौता कर लिया है, इसलिए डर है कि कहीं वह हम को बर्बाद न कर दें।

मुझे मालूम है कि बनी बक्र क़ुरैश के दोस्त हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क़ुरैश ने हम से दस साल के लिए समझौता किया है। अहदनामा की एक शर्त यह भी है कि जो क़बीला जिस फ़रीक़ से चाहे, समझौता करे, कोई रोक-टोक न होगी और ये दोस्त क़बीले भी दस साल तक इस समझौते के पाबन्द रहेंगे, इसलिए बनू बक्र से अंदेशा न करो और अगर उन्हों ने समझौता तोड़ा और क़ुरैश ने सज़ा न दी, तो अहदनामा ख़त्म हो जाएगा और फिर हम समझौता तोड़ने वालों को सज़ा देंगे।

बनी ख़ुज़ाआ यही चाहते थे।

असल में वे बनू बक्र से डरे हुए थे।

हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद से उन्हें तसल्ली हो गयी और वे चले गये।

इसी दिन मग़्रिब के वक़्त हुज़ूर सल्ल० हरम शरीफ़ में पहुंचे।

आप ने हज़रत बिलाल को हुक्म दिया कि मीनार पर चढ़ कर अज़ान दो।

हज़रत बिलाल रज़ि० ने हुक्म की तामील की।

जब वह अज़ान दे रहे थे कि अरब के मुश्रिक निहायत ग़ैज़ व ग़ज़ब से भर कर हरम की ओर चले, वे किसी तरह गवारा न कर सकते थे कि बैतुल हराम में बुतों की मौजूदगी में ख़ुदा का नाम पुकारा जाए।

लेकिन जब वह हरम में पहुंचे और उन्हों ने तमाम मुसलमानों को एक जगह जमा देखा, तो कुछ कहने की जुर्रात न हुई और ख़ामोश खड़े रहे।

अज़ान के बाद जमाअत खड़ी हुई।

हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ पढ़ानी शुरू की। बड़े अच्छे अन्दाज़ में क़ुरआन की तिलावत शुरू की।

ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस दोनों कुफ़्र की हालत में थे।

दोनों अज़ान की आवाज़ सुन कर मुसलमानों को डांट-फटकार करने आये थे। बड़े बहादुर, बड़े जांबाज़ और बड़े निडर थे, लेकिन जब वे हरम में दाख़िल हुए, तो अज़ान ख़त्म हो कर नमाज़ शुरू हो गयी थी।

वे एक तरफ़ खड़े हो कर मुसलमानों को देखने लगे और क़ुरआन मजीद सुनने लगे।

हुज़ूर सल्ल० कलाम मजीद की यह आयत तिलावत कर रहे थे —

तर्जुमा— सब कुछ फ़ना होने वाला है, सिर्फ़ तेरा परवरदिगार, बड़े

मर्तबे वाला और बड़ी मेहरबानी वाला बाक़ी रहेगा, पस अपने परवरदिगार की कौन सी नेमत झुठलाते हो ? ज़मीन वाले और आसमान वाले उसी से मांगते हैं, जो कुछ उन की ख़्वाहिश होती है। पस अपने परवरदिगार की कौन सी नेमत झुठलाते हो ?

अम्र ! ख़ालिद ने कहा, यह कैसा मीठा कलाम है, हुबल की क़सम ! मैं ने ऐसा मीठा कलाम पहले कभी नहीं सुना। यह कलाम इंसान का कलाम नहीं हो सकता।

अम्र कलामे पाक सुनने में मह्व रहे। उन्हों ने चौंक कर कहा, वाक़ई बहुत मीठा और बहुत ज़ोरदार और असरदार कलाम है। मुहम्मद तो बिल्कुल अनपढ़ है, वह ऐसा कलाम नहीं कह सकता। कुछ शक नहीं कि यह कलाम ख़ुदा का कलाम है।

आओ, लौट चलें, कहीं इस कलाम के सुनने ही से मुसलमान न हो जाएं, ख़ालिद ने कहा।

हां, चलो, अम्र ने कहा, अगर थोड़ी ही देर और रुके, तो यक़ीनन मुसलमान हो जाएंगे। उफ़ ! कैसा मीठा कलाम है, कैसा रस टपकता है, कैसा दिल की गहराइयों में उतरता चला जाता है……क्या बुतों के अलावा वाक़ई कोई रब है ?

मैं नहीं जानता, ख़ालिद ने कहा, हां इतना कह सकता हूं कि जो कलाम इस वक़्त पढ़ा जा रहा है, वह इंसान का कलाम नहीं है।

दोनों जल्दी से लौटे और लम्बे-लम्बे क़दम रखते हुए चले गये।

हुज़ूर सल्ल० नमाज़ ख़त्म कर के अपने ठहरने की जगह पर आ गए। तीन दिन तक वहीं ठहरे रहे।

चौथे दिन सुहैल और ख़ुवैतब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, आज आप को तीन दिन हो चुके हैं। अब आप को अहदनामा के मुताबिक़ वापस चले जाना चाहिए।

तुम्हारी याददेहानी की ज़रूरत न थी, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बल्कि मैं ख़ुद ही आज चले जाने की तैयारियां कर रहा हूं, चुनांचे आप ने मुसलमानों को कूच करने का हुक्म दिया और तमाम मुसलमान तैयार हो गये।

सब जिस शान से आये थे, उसी शान से चले।

जब आप मक्का से बाहर निकले, तो एक ख़ूबसूरत लड़की दौड़ती हुई आयी और हुज़ूर सल्ल० के पास आकर बोली, चचा जान ! मुझे भी अपने साथ ले चलो।

यह मासूम लड़की हज़रत अमीर हमज़ा सैयिदुश शुहदा की साहबज़ादी थी।

हुज़ूर सल्ल० ने उसे गोद में उठा कर सीने से लगाया, भींचा और प्यार किया।

इतने में हज़रत अली रज़ि० तशरीफ़ लाये। उन्हों ने फ़रमाया—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह लड़की मुझे दे दीजिए। इस यतीम बच्ची को मैं पालूंगा।

हज़रत ज़ैद बिन हारिस ने कहा, नहीं ! नहीं ! अमीर मेरे दीनी भाई थे, इस लड़की पर मेरा हक़ है और यह मेरे हवाले की जाए।

हज़रत जाफ़र बिन तालिब भी कहीं से आ गये।

उन्हों ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ! यह लड़की मेरी चचेरी बहन है। मेरी बीवी इस की ख़ाला है, इस लिए मेरा हक़ सबसे ज़्यादा है।

हुज़ूर सल्ल० ने सब के दावे सुन कर फ़रमाया—

बेशक जाफ़र ! तुम्हारा हक़ सब से ज़्यादा है। एक तो वह तुम्हारे चचा की लड़की है, दूसरे उस की ख़ाला तुम्हारी बीवी है। ख़ाला मां की जगह होती है और मां की तरह अपनी बहन की औलाद की परवरिश करती है, इसलिए तुम इस लड़की को लो और इस की परवरिश करो, लेकिन सुनो, कभी इस का दिल मैला न होने देना। अगर इस मासूम बच्ची को ज़रा भी तक्लीफ़ होगी, तो इस के बाप हमज़ा की रूह बहिश्त में बेक़रार हो जाएगी, इस बात का ख़्याल रखना।

हज़रत जाफ़र ने लड़की को गोद में ले लिया और अपने साथ हौदज में बिठा लिया।

अब यह शानदार क़ाफ़िला मंज़िल-ब-मंज़िल कूच करता हुआ मदीने की तरफ़ रवाना हुआ।

समझौता तोड़ दिया गया

जब मुसलमान वायदे के मुताबिक़ हज कर के चले, तो मुश्रिकों को इत्मीनान हुआ और वे अपने कारोबार में लग गये।

लेकिन ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस का दिल किसी काम में न लगता था।

ये दोनों क़ुरैश के सरदार थे। दोनों रईसों की तरह ज़िंदगी गुज़ारते थे।

दोनों को शिकार का शौक़ था, आए दिन शिकार में लगे रहते थे।

मगर जब से उन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ की कुछ आयतें सुनी थीं, उस वक़्त से उन के दिल इस्लाम की तरफ़ झुकते जा रहे थे।

चुनांचे एक दिन दोनों हरम शरीफ़ में इकट्ठा हुए।

ख़ालिद ने कहा, अम्र ! मेरे दिल को कोई ताक़त इस्लाम की तरफ़ खींच रही है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मेरा बाप ज़िंदगी भर इस्लाम और मुसलमानों की मुख़ालफ़त करता रहा। मैं भी उन का दुश्मन रहा। उहद में मैं ने पहाड़ी की घाटी से निकल कर उन पर हमला किया और उन्हें तबाह करने के लिए अपनी पूरी ताक़त लगा दी, लेकिन...... अब इस्लाम और मुसलमानों से मुहब्बत हो गयी है। नहीं जानता कि यह इंक़िलाब मेरी तबियत में क्यों पैदा हो गया है।

ख़ालिद ! अम्र ने कहा, मेरी भी बिल्कुल यही कैफ़ियत है। मेरे बाप आस की और मेरी इस्लाम दुश्मनी मशहूर है। मुझे मुसलमानों और उनके नबी से ख़ुदाई बैर था. मगर अब दुश्मनी ख़्वाब व ख़्याल हो गयी है। दुश्मनी की जगह हमदर्दी ने ले ली है। अगर मुझे यह शर्म न होती कि मुख़ालफ़त करते रहे हैं, तो शायद मैं अब तक मुसलमान हो गया होता।

मैं सोचता हूं, ख़ालिद ने कहा, कि ये बुत जो सदियों से इस हरम में रखे हुए पूजे जाते हैं, माबूद नहीं है, पत्थरों की मूर्तियां, धातुओं के पुतले ख़ुदा नहीं हो सकते। ये बुत न सुनते हैं, न देखते हैं, न हरकत करते हैं। ये हमारी ज़रूरतें क्या पूरी करेंगे? मेरा तो ख़्याल है कि बुज़ुर्गों ने यकसूई से इबादत करने के लिए बुत बनाये थे। इस दुनिया का नाम जिस में हम तुम रहते-बसते हैं, इन बुतों के अलावा कोई और ही पैदा करने वाला है, वही ज़िंदगी और मौत पर क़ुदरत रखता है।

तुम ने ठीक समझा ख़ालिद ! अम्र ने कहा, मैं बहुत सोच-विचार के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि ख़ुदा वही है कि जिस की इबादत की मुहम्मद बात करते हैं, देखो, मुहम्मद उम्मी हैं, लिखना-पढ़ना नहीं जानता, मगर जो कलाम वह पढ़ता है, वह कैसा मीठा होता है, फिर वह बुराइयों से रोकता है और नेक कामों की तर्ग़ीब देता है, मैं बुतपरस्ती से उकता गया हूं।

ख़ालिद ने बात काटते हुए कहा, और मैं भी उकता गया हूं। अम्र ! चलो, मदीना चलो और वहां चल कर मुसलमान हो जाएं। जिस ख़ुदा से हम आज तक सरकशी करते रहे, जिस ख़ुदा को हम बुरा कहते रहे, उसी ख़ुदा के सामने अपना सर झुका दें।

यह तो तुम ने मेरे दिल की बात कही, अम्र ने कहा।

एक आवाज़ आयी, यह चुपके-चुपके क्या मश्विरा कर रहे हो तुम ?

ख़ालिद व अम्र ने नज़रें उठा कर देखा, तो सामने से उस्मान बिन तलहा मुस्कराता हुआ आ रहा था। यह भी मक्का का रईस था, ख़ालिद और अम्र का दोस्त था।

वह भी आ कर उन दोनों के पास बैठ गया।

उस्मान ! ख़ालिद ने कहा, हम सोच रहे हैं कि जिस मज़हब पर हम क़ायम है, क्या वह मज़हब हक़ है ? क्या बुत ही दुनिया के पैदा करने वाले हैं ?

मेरे दिल में भी यही ख़्याल बार-बार आता है, उस्मान ने कहा, बड़े ग़ौर व फ़िक्र के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि बुत ख़ुदा नहीं है, ख़ुदा और कोई हस्ती है ?

अम्र ने जल्दी से पूछा, क्या तुम भी उसी ख़ुदा के क़ायल हो, जिस को मुसलमान मानते हैं और क्या मुसलमानों का मज़हब सच्चा है ?

मेरा ऐसा ही ख़्याल है, उस्मान ने कहा, सोचो हमारे मज़हब में शराब हलाल है, हालांकि शराब पीने वाला अपने होश व हवास में नहीं रहता। गन्दी नालियों में लोटने लगता है। मां-बहन और बीवी में तमीज़ नहीं करता।

जुआ हमारे यहां जायज़ है। एक जुआरी अव्वल दर्जे का बेहया और गुण्डा बन जाता है। जब खेलने वाला हारने लगता है, तो बीवी-बच्चे तक को दांव पर लगा देता है और फिर चोरी-डकैती पर उतर आता है, किसी को क़त्ल भी कर डालता है। ये बातें उस के नज़दीक कोई अहमियत नहीं रखतीं।

कितना बुरा काम है यह ज़िना, जिस को हम बुरा नहीं समझते।

ग़रज़ दुनिया भर की बुराइयां हम में मौजूद हैं, यह सब मज़हब की पस्ती की वजह सेहै।

इस्लाम इन तमाम बातों से रोकता है, परहेज़गारी पर उभारता है। मेरे ख़्याल में इस्लाम सच्चा मज़हब है।

अगर यह बात है, ख़ालिद ने कहा, तो क्यों न हम तीनों चल कर मुसलमान हो जाएं ?

निहायत नेक सलाह है यह, उस्मान ने कहा।

तीनों इस बात पर राज़ी हो गये।

चूंकि उन्हें अन्देशा था कि अगर उन के मदीना जाने से इस्लाम के झुकाव का राज़ खुल गया, तो कुरैश उन के रोकने के लिए हर मुम्किन

कोशिश करेंगे। इसलिए उन्हों ने ख़ुफ़िया तैयारियां कीं।

पन्द्रह-बीस दिन के बाद एक दिन सुबहे सादिक़ मे पहले तीनों दोस्त घोड़ों पर सवार हो कर रात के अंधेरे में बड़ी ख़ामोशी से मक्के से निकले और मदीने की तरफ़ रवाना हो गये।

जब सूरज निकला, तो लोगों को उन की रवानगी का हाल मालूम हुआ।

मगर क़ुरैश जानते थे कि वे तीनों इस्लाम और मुसलमानों के साथ बहुत ज्यादा दुश्मनी रखते हैं।

इसलिए उन्हें यह ख्याल ही नहीं हुआ कि वे मदीना में दरबारे रिसा-तल में हाज़िर होने के लिए चले गये हैं, बल्कि उन्हों ने यह समझा कि तीनों शिकार के शौक़ीन हैं, शिकार खेलने के लिए गये हैं।

कुफ़्फ़ारे मक्का ने भी ख्याल कर लिया कि दो-चार दिन में शिकार खेल कर वापस आ जाएंगे।

मगर जब हफ़्ता गुज़रने के बाद भी वे वापस न आये, तो उन को बड़ी चिन्ता हुई और वे उन की खोज में लग गये।

हम पहले बयान कर आए हैं कि बनू ख़ुज़ाआ ने मुसलमानों से और बनू बक्र ने कुफ़्फ़ार से समझौता कर लिया था।

ये दोनों क़बीले एक दूसरे के सख़्त दुश्मन थे।

क़बीला ख़ुज़ाआ कमज़ोर था और क़बीला बनू बक्र बड़ा ताक़तवर था, इसलिए बनू बक्र वाले ख़ुज़ाआ वालों को पीस डालने की चिन्ता में रहते थे, पर ये दोनों क़बीले हर दो फ़रीक़ से अलग-अलग समझौता कर चुके थे, इसलिए उन्हें दस साल तक सुलह व अम्न के साथ रहना चाहिए था, पर अक्सर कम समझ इंसान ताक़त ही को सब कुछ समझते हैं।

बनू बक्र वाले यह समझ कर कि मुसलमान मदीने में सैकड़ों मील के फ़ासले पर रहते हैं, बनी ख़ुज़ाआ की मदद के लिए क्या आएंगे, बनी ख़ुज़ाआ वालों पर ज़ुल्म ढाने लगे।

बनू ख़ुज़ाआ वालों ने उन्हें बहुत समझाया, अहदनामा की तरफ़ तव-ज्जोह दिलायी, मुसलमानों की बड़ाई और ताक़त से डराया, मगर वे बाज़ न आए और एलानिया उन को सताने लगे।

एक दिन मुहल्ला वतीरा में, जहां बनू ख़ुज़ाआ रहते थे, बनू बक्र के कुछ गुन्डे पहुंचे और औरतों को छेड़ने लगे।

बनू ख़ुज़ाआ ने अब भी सब्र किया और तरह दे कर वक़्त गुज़ारना चाहा।

लेकिन बनू बक्र गोया लड़ने के लिए तैयार थे। उन में से एक आदमी ने कहा, तुम मुसलमानों के भरोसे पर फूले हुए हो। कान खोल कर सुन लो, मुसलमान हमारा कुछ नहीं कर सकते।

इतनी बकवास न करो, बनू खुज़ाआ के एक आदमी ने इस का जवाब दिया।

बनू बक्र लड़ने का बहाना ढूंढ़ ही रहे थे, उन्हों ने फ़ौरन तलवारें खींच लीं और बिना कुछ कहे-सुने बनू खुज़ाआ को काटना शुरू कर दिया।

बनू खुज़ाआ कमज़ोर थे, भाग निकले।

वतीरा का बाज़ार बन्द हो गया। लोग बदहवास हो कर भागने लगे।

संगदिल और गुण्डे बनू बक्र ने बीस आदमियों को क़त्ल कर डाला।

शाम के वक़्त जब वहां से वापस हुए, तब जाकर अम्न व अमान क़ायम हुआ।

सूरज डूबने से पहले बनू खुज़ाआ के सरदार जमा हुए और दिन के वाक़िए पर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो गये कि नौफ़ुल से चल कर शिकायत करें।

नौफ़ुल बनू बक्र का सरदार था। निहायत चालाक और बेरहम था।

बनू खुज़ाआ उस के मकान पर पहुंचे और उस से शिकायत की कि उस के क़बीले वालों ने बे-वजह उन के बीस आदमी मार डाले हैं।

नौफ़ुल ने तमाम वाक़िआ सुन कर कहा—

बहुत अच्छा हुआ। तुम मुसलमानों से समझौता कर के इतराने लगे हो, सो अब मुसलमानों को अपनी मदद के लिए बुला लाओ।

लेकिन आप क़ुरैश वालों के दोस्त हैं, बनू खुज़ाआ के सरदार ने कहा, और उन का मुसलमानों से समझौता है। आप बद-अहदी कर के लड़ाई की आग को न भड़काएं।

बेवक़ूफ़ो ! नौफ़ुल ने हंस कर कहा, इस से लड़ाई की आग नहीं भड़क सकती। हम ने अहद किया हुआ है जो लोग मुसलमानों से समझौता करेंगे, हम उन सब को क़त्ल कर डालेंगे।

कमीनो ! उस ने आगे कहा, तुम ने क़ुरैश को छोड़ कर मुसलमानों से क्यों समझौता किया। अब उस का मज़ा चखो, एक आदमी भी तुम्हारे क़बीले का ज़िंदा न रहने पायेगा।

बनू खुज़ाआ मायूस हो कर वापस लौटे।

जब वे वापस लौटे तो नौफ़ुल ने सफ़वान बिन उमैया, इक्रिमा बिन अबू जह्ल, और हब्ब बिन अम्र वग़ैरह को बुला कर तमाम वाक़िया सुनाया

और कहा—

मौक़ा है कि हम आज रात बनू ख़ुज़ाआ को पीस डालें, इस से उन लोगों पर, जो मुसलमानों से समझौता कर चुके हैं, असर पड़ेगा और वे हमारी तरफ़ झुकेंगे और फिर हमारी ताक़त बहुत कुछ बढ़ जाएगी।

बहुत अच्छी तदबीर है, सफ़वान ने कहा, तुम ने पहले ही यह बात क्यों न सोची।

हर काम का वक़्त मुक़र्रर होता है, नौफ़ुल ने कहा, इस का वक़्त अभी आया है। तुम अपनी फ़ौज को बुला लो और रात को बनू ख़ुज़ाआ पर जा चढ़ो।

तमाम लोगों ने अपने-अपने ग़ुलाम भेज कर फ़ौज बुला ली।

नौफ़ुल ने भी अपनी फ़ौज बुला ली थी।

ये सब सरकश, बद-अह्द और मक्कार लोग रात की तारीकी में अपनी ज़ालिमाना हरकतों से अहदनामे की धज्जियां उड़ाने के लिए रवाना हुए।

आधी रात के क़रीब मुहल्ला वतीरा में पहुंचे।

अंधेरी रात थी। हर तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था। सितारे आसमान पर बिखरे हुए चमक रहे थे। कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा ख़ामोश था।

बनू ख़ुज़ाआ बेफ़िक्री से घरों में घुसे आराम की नींद सो रहे थे कि अचानक सुकून छिन गया। मुख़्तलिफ़ आवाज़ों से मुहल्ला गूंज उठा।

बनू बक्र और क़ुरैश वालों की बेपनाह तलवारें मज़्लूम बनू ख़ुज़ाआ को क़त्ल करने लगीं।

मर्दों-औरतों और बच्चों में कोई फ़र्क़ न रहा। जो सामने आ गया, मार दिया गया।

बनू ख़ुज़ाआ इस अचानक मुसीबत से घबरा गये। वे घबरा कर दौड़े और हरम शरीफ़ में जा छिपे।

अरबों का यह पहले क़ानून था कि जो आदमी हरम में पनाह ले लेता था, उसे क़त्ल न किया जाता था। ख़्याल करते कि वह बुतों की पनाह में आ गया है।

मगर बनू ख़ुज़ाआ को वहां भी पनाह न मिली। वे हरम में भी क़त्ल किये गए।

कुफ़्फ़ारे मक्का को इस बात पर ग़ुस्सा था कि बनू ख़ुज़ाआ ने मुसलमानों से क्यों समझौता किया। वे जानते थे कि मुसलमान सैकड़ों मील के फ़ासले से उन की मदद को न आएंगे।

इसलिए उन पर संगदिलाना और बेरहमाना सितम कर रहे थे।

बुदैल बिन वरक़ा क़बीला बनू ख़ुज़ाआ का सरदार था।

जब कुफ़्फ़ारे मक्का उस के घर में घुस कर उस का सामान लूटने लगे तो उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा—

ऐ शाहे मदीना ! ऐ ख़ातमुन्नबीयीन ! हमारी फ़रियाद सुनिये, हम पर इसलिए ज़ुल्म किया जा रहा है कि हम ने आप से समझौता क्यों किया। आइए और हम को इन भेड़ियों से बचाइए।

उस वक़्त एक रौबदार आवाज़ आयी—

लब्बैक-लब्बैक ऐ बनू ख़ुज़ाआ !

सब इस आवाज़ को सुन कर हैरान हुए।

कुफ़्फ़ारे मक्का पर भी रौब सा छा गया।

उन्हों ने क़त्ल और ग़ारतगारी बन्द कर दी और अपने आदमियों को लेकर वापस लौट गये।

जब सुबह हो गयी और सूरज तबाह शुदा मुहल्ला वतीरा पर निकला, तो हर घर से रोने-पीटने की आवाज़ उभरी।

मर्द, औरतें और बच्चे अपने मक़्तूल रिश्तेदारों को याद कर के रो रहे थे।

चूंकि बेचारे कमज़ोर थे, दुश्मनों से बदला न ले सकते थे, इसलिए आंसू बहा-बहा कर इंतिक़ाम की आग को ठंडी कर रहे थे।

बुदैल बिन वरक़ा ने अम्र बिन सालिम को बुला कर कहा, अम्र ! बताओ, हम को क्या करना चाहिए। ज़ालिमों ने हम को बिल्कुल बर्बाद कर दिया है।

सिवाए इस के कि हम, अम्र ने कहा, शाहेमदीना के हुज़ूर में फ़रियादी बनें, और क्या कर सकते हैं?

यही मेरा इरादा है, बुदैल ने कहा, आओ, मैं और तुम दोनों चलें। चलिए, अम्र ने कहा, उस के दरबार में चलिए, जो बड़ा रहम दिल और तमाम इंसानों का बड़ा हमदर्द है।

दोनों ने जल्दी-जल्दी तैयारी की और दोपहर के वक़्त तेज़ धूप में हुज़ूर सल्ल० को अपना हालेज़ार सुनाने के लिए रवाना हो गये।

इस्लामी मुजाहिदों का कूच

हुज़ूर सल्ल० और तमाम मुसलमान हज से फ़ारिग़ हो कर पूरी तरह

खैरियत के साथ मदीना पहुंच गये थे, चूंकि मुसलमानों के सब से बुरे दुश्मन कुफ़्फ़ारे मक्का और यहूदी थे। यहूदी तो फ़रमांबरदार बन चुके थे और कुफ़्फ़ारे मक्का से समझौता हो गया था, इसलिए अब किसी दुश्मन का डर बाक़ी न रह गया था। मुसलमानों को ख्याल होने लगा था कि अब वे अम्न व चैन से रह सकेंगे।

मक्के से समझौते के कुछ ही दिनों बाद खालिद, अम्र बिन आस और उस्मान मदीना पहुंचे।

चूंकि ये तीनों बड़े सरदारों में थे, इसलिए मुसलमानों ने इन के आने को हैरत से देखा।

ये तीनों सीधे मस्जिदे नबवी में पहुंचे।

चूंकि तीनों बड़े सरदार थे, हुजूर सल्ल० ने आदत के मुताबिक़ खुले दिल और हंसते चेहरे से उन का स्वागत किया।

जब वे बैठ गये, तो हुजूर सल्ल० ने पूछा—

ऐ मक्का के सरदारो! तुम किस लिए आए हो?

मुसलमान होने के लिए, खालिद ने कहा।

यह सुन कर हुजूर सल्ल० का चेहरा खिल गया।

मुबारक हो, ऐ मक्का के सरदारो! मुबारक, हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया लेकिन खालिद! तुम तीनों सरदार हो, रईस हो, अपने क़बीले के सरदार हो, तुम में सरदारी की बू है, खानदानी शराफ़त का घमंड है और इस्लाम सरदारी और खानदानी घमंड को मिटाने आया है। क्या तुम इस बात को गवारा कर लोगे कि खानदानी घमंड को भूल जाओ, छोटे से छोटे मुसलमान को अपना भाई समझो, घमंड और दिखावे को दिल व दिमाग़ से निकाल दो।

खानदान पर फ़ख्र और सरदारी पर घमंड जाहिलों का काम है, खालिद ने कहा, हम तो जिहालत के अंधेरे को छोड़ कर इस्लाम के साए में पनाह लेने आए हैं।

तब तो तुम हज़ार बार तारीफ़ के क़ाबिल हो, हुजूर सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया।

इस के बाद हुजूर सल्ल० ने इन तीनों को मुसलमान कर लिया।

इन के मुसलमान होने से मुसलमान बहुत खुश हुए।

मदीने में घर-घर उन के आने और मुसलमान होने की खबर पहुंच गयी। हर वह मुसलमान, जो मक्के का रहने वाला था, इन तीनों से मुसाफ़ा करने दौड़ पड़ा।

उन के बाद मदीने वालों ने मुसाफ़ा किया।

ख़ालिद, अम्र और उस्मान मुसलमानों का भाईचारा देख कर बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए।

आम मुसलमानों ने उन की दावतें शुरू कीं। अर्से तक वे मुसलमानों के मेहमान रहे।

एक रात को हुज़ूर सल्ल० उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना के कमरे में बैठे हुए तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिए वुज़ू कर रहे थे कि आप ने बनू ख़ुज़ाआ की आवाज़ सुनी।

आप ने बे-साख़्ता फ़रमाया, लब्बैक ! लब्बैक ! लब्बैक ! या बनू ख़ुज़ाआ।

हज़रत मैमूना ने फ़रियाद की आवाज़ न सुनी थी। उन्हें ताज्जुब हुआ कि हुज़ूर सल्ल० ने लब्बैक-लब्बैक या ख़ुज़ाआ क्यों फ़रमाया है, चुनांचे उन्हों ने अर्ज़ किया—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ने यह लब्बैक किस की आवाज़ पर कहा।

हुज़ूर सल्ल० का चेहरा उस वक़्त कुछ बदला हुआ था, जलाल की निशानियां पायी जाती थीं। आप ने किसी क़दर सख़्त लेहजे में कहा—

मैमूना ! क़ुरैश वालों ने बद-अहदी की। आज उन्हों ने बनू ख़ुज़ाआ पर ज़ुल्म का हाथ उठा कर उन्हें तबाह व बर्बाद कर दिया है। मज़्लूम ख़ुज़ाआ ने मुझ से फ़रियाद की है और मैं ने उन की फ़रियाद पर लब्बैक कहा है।

क्या हुज़ूर सल्ल० क़ुरैश पर लश्करकशी करेंगे ? हज़रत मैमूना ने पूछा।

हां, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं अहदनामा की धज्जियां उड़ाने वालों की धज्जियां उड़ा दूंगा। ये काफ़िर ख़ुद भी आराम से नहीं रहते और हमें और हमारे दोस्तों को भी आराम से नहीं रहने देते।

इस के बाद हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ने लगे।

जब सुबह हो गयी, तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से कहा—

अफ़सोस! रात बनू बक्र और क़ुरैश ने मिल कर बनू ख़ुज़ाआ को क़त्ल कर दिया है।

क्या हुज़ूर सल्ल० का गुमान है कि क़ुरैश बद-अहदी करेंगे ? हज़रत आइशा ने अर्ज़ किया।

हां, उन्हों ने बद-अहदी की और कमज़ोर क़बीला बनू ख़ुज़ाआ को

कुचल डाला।

यह बात तमाम मदीने में आम हो गयी।

मुसलमानों को ख्याल हो गया कि मक्का पर लश्करकशी की जाएगी।

कुछ दिनों के बाद बुदैल बिन वरक़ा और अम्र बिन सालिम पहुंचे।

निहायत परेशान हाल और ग़मगीन।

जिस वक़्त ये दोनों मस्जिदे नववी में पहुंचे, तो उस वक़्त मुसलमान अस्र की नमाज़ पढ़ रहे थे।

जब वे नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो ये दोनों हुज़ूर सल्ल० के क़रीब गये, सलाम किया और पास बैठ कर कहा—

हुज़ूर सल्ल०! हम को क़ुरैश ने घायल कर दिया है। हम आप के पास फ़रियादी बन कर आए हैं।

मुझे अल्लाह ने पहले ही इत्तिला दे दी है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम ने फ़रियाद के बाद मेरी आवाज़ मक्का में न सुनी थी?

हुज़ूर सल्ल०! सुनी थी, बुदैल ने कहा।

बद-बख़्त क़ुरैश और घमंडी बनू बक्र ने हम को कुचल डाला कि हमने आप से क्यों सुलह की? अम्र बिन सालिम ने कहा, ऐ फ़रियाद सुनने वाले! ऐ शाहे मदीना! हमारी फ़रियाद सुनिये, आह! हम बर्बाद कर दिये गये।

फिर उस ने अरबी शेर पढ़े, जिस का तर्जुमा इस तरह है—

क़ुरैश ने आप के साथ वायदा खिलाफ़ी की,
और उन्हों ने उस मज़बूत समझौते को जो आप से किया था, तोड़ डाला,
और हमें सूखी घास की तरह कुचल डाला है,
वे समझते हैं कि हमारी मदद के लिए कोई न आएगा,
वह और फ़लां हैं, थोड़ी तायदाद में हैं,
और उन्हों ने हमारे मुहल्ले वतीरे में हम पर सोते में हमला किया।

इन शेरों को सुन कर तमाम मुसलमानों पर रंज व अफ़सोस का गहरा असर पड़ा।

हुज़ूर सल्ल० बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुए। आप ने फ़रमाया—

ऐ मज़्लूम बनी ख़ुज़ाआ! इत्मीनान रखो तुम्हारा बदला लिया जाएगा। अबू सुफ़ियान अहद को नया करने के लिए मक्के से रवाना हो चुका है, मगर वह नाकाम वापस जाएगा।

इस्लाम अम्न व सुलह का पैग़ाम ले कर आया है। मुसलमान बेकसों और मज़्लूमों के हामी हैं, दुनिया से ज़ुल्म व सितम की लानत दूर को

जाएगी। ज़ालिमों और सरकशों को तलवार के ज़ोर से सीधा किया जाएगा। तुम ठहरो और उस वक़्त का इन्तिज़ार करो, जबकि ख़ुदा का हुक्म नाज़िल हो और इस्लामी फ़ौज मक्का को जीतने के लिए रवाना हो।

बुदैल और अम्र दोनों इस तसल्ली से ख़ुश हो गये।

दिन गुज़रते गये और दोनों सरदार मुसलमानों के मेहमान रह कर उन के रहन-सहन और खान-पान को खुली आंखों से देखते रहे।

उन्हों ने देखा, मुसलमानों में सादगी है, इंतिहाई सादगी। अगरचे वे मालदार हैं। दौलत उन के क़दमों में पड़ी हुई है, उन के बच्चे रुपए और अशर्फ़ियों से खेलते हैं, मगर उन में न फ़िज़ूलख़र्ची है, न किसी क़िस्म का कोई घमंड।

निहायत सादा कपड़े पहनते हैं, निहायत सादा खाना खाते हैं और निहायत सादा तरीक़े पर रहते हैं।

हर मुसलमान अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे किरदार का मालिक है। उन में आपस में इतनी मुहब्बत और भाईचारा है कि अगर एक मुसलमान को भी ज़रा सी भी तक्लीफ़ पहुंचती है, तो सारे मुसलमान बेक़रार हो जाते, उस की देख-भाल करने लगते हैं और हर आदमी बीमार का काम बड़े फ़ख़्र और बड़ी दिलचस्पी से करता है।

कोई ग़ुलाम हो या आज़ाद, रईस हो या ग़रीब, सब एक ही रंग में रंगे हुए हैं। सब ख़ुश हैं और ऐसे मालूम होते हैं, जैसे एक ही आदमी की औलाद हों।

फिर भाई-भाई भी आपस में किसी बात पर तेज़ हो जाते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, मगर मुसलमान ऐसे भाई हैं, जो कभी किसी से तेज़ हो कर भी न बोलते थे, निहायत नर्मी और मुलायमत से बातें करते थे।

उन के बच्चे आपस में बड़े प्यार व मुहब्बत से रहते थे।

औरतों में इतना मेल-जोल था कि सगी बहनें मालूम होती थीं।

कोई मुसलमान फ़िक्रमन्द या ग़मगीन नज़र न आता था। सब ख़ुश थे, ऐसे ख़ुश, जैसे वे दुनिया के फ़िक्रों से बे-नियाज़ हो गये हों।

मुसलमानों की ज़रूरतें कम थीं, वे ऐश व इशरत से कोसों दूर थे या दूर रहना चाहते थे, इसलिए उन्हें कोई परेशानी या कोई फ़िक्र न था।

मुसलमान एक दूसरे से तो मुहब्बत करते ही थे, मगर एहतराम भी ज़्यादा करते थे। हर छोटी उम्र का आदमी अपने से बड़ी उम्र वाले का बड़ा अदब करता था। जो बात कोई बुज़ुर्ग कह देता था, उसे फ़ौरन मान लेता था।

हुज़ूर सल्ल० का तमाम मुसलमान इतना एहतराम करते थे कि कोई क़ौम किसी बादशाह का भी इतना न करती होगी।

जब हुज़ूर सल्ल० अपने मकान से निकलते तो देखने वाले परवाने की तरह टूट पड़ते। हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत के लिए इतनी भीड़ हो जाती कि रास्ते बन्द हो जाते, इंसानों का समुन्दर लहरें लेने लगता। सब निहायत खामोशी और अदब से हुज़ूर सल्ल० के पीछे-पीछे धीरे-धीरे चलते थे। कभी कोई मुसलमान हुज़ूर सल्ल० के आगे या बराबर चलने की जुर्रत भी न करता था।

चूंकि अब मदीने में मुसलमानों की तायदाद बहुत हो गयी थी, इसलिए कई मस्जिदें मुहल्लों में तामीर कर ली गयी थीं, अलबत्ता जुमा की नमाज़ मस्जिदे नबवी में होती थी। तमाम मुसलमान अज़ान की आवाज़ सुनते ही मस्जिदों में पहुंच जाते थे। किसी को चाहे जितना ज़रूरी काम हो, अज़ान सुनते ही तमाम काम छोड़ देता, यहां तक कि दुकानदार अगर किसी को सौदा तौल कर दे रहा होता, तो तौलना बन्द कर के मस्जिद की तरफ़ चल देता।

जुमा के दिन जुमा की नमाज़ से पहले कोई मुसलमान कोई काम न करता। बाज़ार बन्द और सारे कारोबार मुअत्तल रहते। सुबह ही से मुसलमान कपड़े बदलने और नहाने की ऐसी तैयारियां शुरू कर देते, जैसे इस ज़माने के मुसलमान ईद की तैयारियां करते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि जुमा मोमिनों की ईद है। मुसलमान ईद से ज़्यादा उस दिन का एहतराम करते और नमाज़ के लिए बड़े शौक़ से तैयारियां किया करते थे.

बुदैल और अम्र को मुसलमानों की हर बात निराली और भली मालूम होती थी।

कोई मुसलमान शरीअत के हुक्मों से एक इंच भी इधर-उधर न होता था।

कुछ दिनों के बाद मालूम हुआ कि अभी अबू सुफ़ियान आया है और समझौते को नया करना चाहता है।

चूंकि तमाम मुसलमानों को मालूम था कि क़ुरैश ने अहद तोड़ डाला है और मज़लूम क़बीला बनू ख़ुज़ाआ को ज़ुल्म का निशाना बनाया है, इसलिए सारे मुसलमान तमाम क़ुरैश से सख़्त बेज़ार और नाख़ुश थे।

अबू सुफ़ियान हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचा और निहायत आजिज़ी के लहजे में बोला, हुज़ूर! क़ुरैश के कुछ नासमझ मुसलमानों ने समझौते की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है, तमाम मक्का वालों को उन की इस नामुनासिब हरकत

पर अफ़सोस है, इसलिए मुझे मेरी क़ौम ने अपना दूत बना कर समझौते को नया करने के लिए आप की खिदमत में रवाना किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने इस बात का कोई जवाब न दिया, खामोश रहे।

अबू सुफ़ियान ने फिर कहा, शायद हुज़ूर सल्ल० यह ख्याल करते हैं कि समझौते को सिर्फ़ क़ुरैश ने तोड़ा है, यह बात नहीं है। झगड़े की शुरूआत बनू खुज़ाआ की तरफ़ से हुई है मगर हम फिर भी अपनी तरफ़ से समझौते को नया करने को तैयार हैं। अगर आप को यह मंज़ूर नहीं, तो इस का मतलब यह होगा कि अरब का अम्न व अमान खत्म हो जाए और लड़ाई की आग भड़क कर इंसानों को जला डाले।

अगरचे इस वक़्त मुसलमानों की ताक़त बढ़ गयी है, मगर इतना नहीं बढ़ी है कि वे मक्का का मुक़ाबला कर सकें। मेरे ख्याल में तो यह बेहतर है कि सुलहनामा दोबारा तर्तीब दे लिया जाए।

अबू सुफ़ियान! हुज़ूर सल्ल० बोले, तुमने और तुम्हारी क़ौम ने समझौते की खिलाफ़वर्ज़ी की है, अब तुम दरपरदा लड़ाई की धमकी देने और अपना रौब डाल कर सुलह करने के लिए आए हो। यह तुम्हारा भ्रम है। तुम ने बनू खुज़ाआ को इसलिए मसल डाला कि वे मुसलमानों के साथ थे, यह ख्याल कर लिया कि मुसलमान उन की मदद न करेंगे। हम ने तै कर लिया है कि हम बनू खुज़ाआ की मदद कर के तुम से और तुम्हारी क़ौम से तुम्हारी वहशियाना संगदिली का बदला लेंगे। अगर तुम यह चाहते हो कि तुम पर लश्करकशी न करें, तो तुम्हारे लिए मुनासिब है कि तुम बनू खुज़ाआ को राज़ी कर लो।

बनू खुज़ाआ को राज़ी करें? अबू सुफ़ियान बात काटते हुए बोला, गोया उन की खुशामद करें। यह नामुम्किन है।

बस तो समझौते का नया करना भी नामुम्किन है, हुज़ूर सल्ल० ने भी ज़ोर दे कर कहा।

अबू सुफ़ियान यह सुन कर कुछ ग़म में डूब गया और उठ कर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की खिदमत में पहुंचा, बोला, अबूबक्र! तुम नेकदिल और बा-मुरव्वत इंसान हो, मक्का तुम्हारा वतन है और मक्का वाले तुम्हारे वतन के लोग हैं, क्या तुम यह गवारा कर लोगे कि तुम्हारा वतन बर्बाद हो और वतन वाले क़त्ल व ग़ारत हो जाएं?

मुझे वतन और वतन वालों से मुहब्बत है, हज़रत अबूबक्र ने कहा, अगरचे मेरे वतन वालों ने मुझे निकाल दिया था, वे मुझे भूल गये, मगर मैं नहीं भूला, लेकिन तुम ने······समझौते की खिलाफ़वर्ज़ी की है। अहद-

नामा की धज्जियां उड़ा दी हैं। बनू खुज़ाआ को बिला क़सूर कुचल डाला है। हुज़ूर सल्ल० तुम से नाराज़ हो गये हैं। अब यह किसी की जुर्रत नहीं है कि हुज़ूर सल्ल० से तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके।

शायद तुम यह समझते हो, अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम्हारी ताक़त इस क़दर बढ़ गयी है कि तुम मक्का पर लश्करकशी कर सकते हो, लेकिन अबू बक्र! हमारे तमाम क़बीले मुत्तहिद हो कर तुम्हारा मुक़ाबला करेंगे और आसानी से तुम मक्का में कभी न दाखिल हो सकोगे।

इसे खुदा ही जानता है, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, कोई मुसलमान आगे के बारे में कुछ नहीं कह सकता।

अबू सुफ़ियान मायूस हो कर उठा और हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंचा।

हज़रत उमर उसे देख कर ही बद-दिल हो उठे।

अबू सुफ़ियान अगरचे समझ गया कि वे नाराज़ हैं, फिर भी उस ने कहा—

उमर! तुम क़ुरैश के क़रीबी हो, मक्का वालों के हमेशा मददगार रहे हो। मक्का तुम्हारा वतन है। सुनता हूं कि मुहम्मद तुम्हारी बात मानते हैं। क्या तुम हम पर इस क़दर एहसान कर सकते हो कि हुज़ूर सल्ल० से अहदनामा को नया करा दो और उसे आगे बढ़ाने की सिफ़ारिश कर दो।

हज़रत उमर रज़ि० का लहजा सख्त हो गया। बोले

अबू सुफ़ियान! तुम ने और तुम्हारी क़ौम ने अपनी ताक़त के घमंड में एक मज़लूम क़बीले को पीस डाला। तुम ने हमें और हमारे दोस्तों को नाचीज़ समझा। बेरहम इंसान! जब तुम्हारे आवारा लड़के और संगदिल गुन्डे! अहदनामा की धज्जियां बिखेर रहे थे और बेरहमी से एक बेकस क़बीले को कुचल रहे थे, उस वक़्त अंजाम पर नज़र क्यों नहीं कर ली थी? क्यों न समझ लिया था कि मुसलमान तुम्हारा सर कुचलने के लिए, तुम्हारे दिमाग़ की इस्लाह के लिए तुम्हारे सरों पर पहुंचेंगे। अब आए हो आजिज़ी कर के अहदनामे को नया करने। बद-बख्तो! अहदनामा तुम्हारे लिए एक नेमत था। तुम ने खुद इस नेमत की क़द्र न की और इसे अपने से दूर कर के लानत मोल ली है। अब तुम्हारे साथ अहदनामा नहीं किया जा सकता, किसी आदमी में न यह ताक़त है, न जुर्रत कि हुज़ूर सल्ल० से तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके। जाओ और इन्तिज़ार करो कि कब इस्लामी लश्कर तुम्हारे घमंड का खात्मा करने के लिए मक्के के सामने पहुंचता है।

उमर! तुम में बड़ा गुस्सा है, बड़ा जोश है, अबू सुफ़ियान ने कहा, पर जानते हो इस जोश और गुस्से का नतीजा क्या होगा?

हज़रत उमर ने ग़ज़बनाक हो कर अबू सुफ़ियान की तरफ़ देखते हुए कहा —

जानता हू, मेरी तलवार होगी और तुम जैसे ख़ुद्दारों का सर होगा। ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम हमारे मेहमान न होते, तो तलवार सर व तन का फ़ैसला कर चुकी होती।

अबू सुफ़ियान जानता था कि हज़रत उमर रज़ि० तेज़ मिज़ाज और बहादुर हैं। उसे और कुछ कहने सुनने की जुर्रात न हुई।

वह उठ कर हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में बैठा।

अली तुम मेरी मदद करो, अबू सुफ़ियान ने आजिज़ी के साथ कहा, और हुज़ूर सल्ल० से सिफ़ारिश कर दो। जिन शर्तों पर वह सुलह फ़रमाएं, कर लें।

किसी आदमी में भी यह ताक़त नहीं, हज़रत अली ने फ़रमाया, कि हुज़ूर सल्ल० से तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके।

फिर मैं क्या करूं ? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

तुम मस्जिदे नबवी में एलान कर दो कि मैं क़ुरैश का दूत हूं। अहदनामे को नया करने आया था, मुसलमान सुलह नहीं करते, लेकिन मैं अपनी तरफ़ से सुलह किये जाता हूं। हज़रत अली ने मश्विरा दिया।

अगरचे हज़रत अली रज़ि० ने यह बात हंसी के तौर पर की थी, लेकिन अबू सुफ़ियान इस हंसी को न समझ सका और उस ने मस्जिदे नबवी में पहुंच कर एलान कर दिया और उसी दिन वहां से मक्का को चल पड़ा।

हुज़ूर सल्ल० को क़ुरैश की बदअहदी का मलाल था। आप ख़ामोश थे। आप की ख़ामोशी से मुसलमानों को उलझन सी हो रही थी, पर किसी को जुर्रात न होती थी कि कुछ पूछ सकता।

आख़िर एक दिन सुबह, जबकि मुसलमान फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए हुज़ूर सल्ल० ने एलान कर दिया कि मुसलमान लड़ने के लिए तैयारियां शुरू कर दें।

फिर कुछ दिनों बाद हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद ही फ़रमाया कि मक्के पर लश्करकशी की जाएगी।

इस एलान से मुसलमानों में जैसे जान आ गयी हो। अगरचे वे जानते थे कि क़ुरैश और उन के साथी क़बीलों की तायदाद बहुत ज़्यादा है। वे मुक़ाबले में एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देंगे, फिर भी ज़ालिम की जड़ काटने के लिए अल्लाह के भरोसे उन्हों ने तैयारियां शुरू कर दीं।

एक दिन मस्जिदे नबवी में बैठे थे। हज़रत उमर, हज़रत अबूबक्र, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत ज़ुबैर और दूसरे सहाबा किराम हुज़ूर सल्ल० के पास बैठे थे। हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश थे और सर झुकाये हुए थे। सहाबा भी चुप थे। अचानक आप ने सर उठाया और हज़रत अली और ज़ुबैर से मुख़ातब हो कर फ़रमाया—

मुझे ख़ुदा ने ख़बर दी है कि इस वक़्त एक औरत मक्का जाने के लिए क़ुबा की तरफ़ जा रही है। उस के पास क़ुरैश के नाम एक ख़त है, उसको गिरफ़्तार कर लाओ।

फ़ौरन हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर उठे। मस्जिद से निकले और घोड़ों पर सवार हो कर क़ुबा की तरफ़ दौड़े।

थोड़ी ही देर में उन्हों ने एक ऊंट पर सवार को जाते देखा।

वह क़ुबा में दाख़िल होना चाहती थी कि ये दोनों बुज़ुर्ग उस के क़रीब पहुंचे।

हज़रत अली ने डपट कर कहा, ठहर जा, ओ ग़द्दार!

औरत ने ऊंट रोक लिया।

उस ने इन दोनों की तरफ़ देखा, तो उस का चेहरा पीला पड़ गया। आंखें ख़ौफ़ से अन्दर धंस गयीं।

हज़रत अली रज़ि० ने क़रीब पहुंच कर कहा—

मक्कारा! वह ख़त हमारे हवाले कर दो, जो मक्का ले जा रही हो।

औरत या तो कांप रही थी या संभली और उस ने कहा, ख़त······मेरे पास कोई ख़त नहीं।

झूठ बकती है, हज़रत अली रज़ि० ने ग़ुस्से से भर कर कहा, ख़ैरियत इसी में है कि ख़त हमें अभी दे दे।

आप मेरी तलाशी ले लीजिए, औरत ने कहा, मेरे पास कोई ख़त नहीं है। यह कहते ही उस ने ऊंट बिठाया।

हज़रत अली ने घोड़ा बढ़ाया और उस के क़रीब पहुंच गये।

उन्हों ने तलाशी लेनी शुरू की। हर चीज़ देख डाली, मगर ख़त न मिला।

औरत निहायत इत्मीनान से बैठी थी।

हज़रत अली को हैरानी हो रही थी।

तुम ने तलाशी ले ली, औरत ने मुस्करा कर कहा।

पर हुज़ूर सल्ल० कभी ग़लत इत्तिला नहीं दे सकते, हज़रत अली ने कहा, अच्छा, तुम हमारे साथ चलो। वह ख़ुद तलाशी ले लेंगे, पर यह सोच लो

कि अगर उन की तलाशी के वक़्त ख़त तुम्हारे पास से निकला, तो फ़ौरन तुम्हारा सर उड़ा दिया जाएगा।

औरत यह सुन कर डर गयी।

वह कुछ सोचने लगी और थोड़ी देर बाद बोली, अगर मैं ख़त तुम्हारे हवाले कर दूं ?

तो तुम्हारी सलामती का वायदा किया जाता है, हज़रत अली ने कहा।

औरत ने अपने जूड़े में से ख़त निकाल कर हज़रत अली को देते हुए कहा, ख़त लीजिए। मैं जान गयी हूं कि जिस ख़ुदा ने अपने रसूल को मेरी रवानगी की ख़बर दी है, वह ख़त छिपाने की जगह भी बता देगा और फिर मेरी ज़िंदगी ख़त्म कर दी जाएगी। लेकिन आप ने मेरी हिफ़ाज़त का वायदा भी कर लिया है।

हां, और पूरा किया जाएगा, हज़रत अली ने फ़रमाया, आओ, तुम हमारे साथ वापस चलो।

औरत ने ऊंट को इशारा किया, वह खड़ा हुआ।

फिर ये तीनों मदीने की तरफ़ वापस हुए।

तेज़ी से चल कर मस्जिद के सामने पहुंचे, अपनी-अपनी सवारियों से उतरे और मस्जिद में दाख़िल हो कर हुज़ूर सल्ल० के सामने जा खड़े हुए।

हज़रत अली ने बढ़ कर ख़त हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश किया।

आप ने हज़रत अबूबक्र को देकर कहा, इसे खोलो और पढ़ो।

हज़रत अबूबक्र ने खोल कर पढ़ना शुरू किया।

यह ख़त है हातिब बिन अबी बलतआ की तरफ़ से अहले मक्का के नाम !

ऐ बदअह्द मक्का वालो ! तुम्हारी बर्बादी का वक़्त आ गया है। इस्लामी फ़ौज तुम्हारा सर कुचलने के लिए आने वाली है। जितनी जल्द मुम्किन हो सके, अपनी हिफ़ाज़त कर लो।

तमाम मुसलमान, ख़ुद हुज़ूर सल्ल० इस ख़त को पढ़ कर बड़े ग़मगीन हुए।

हातिब फ़ौरन तलब किये गये।

वह अपनी इस हरकत पर शर्मिन्दा थे, उन्हें इस ग़लती का अफ़सोस था।

यह ख़त तुम ने लिखा है ? हुज़ूर ने पूछा।

मुसलमान झूठ न बोलते थे। हातिब ने तुरन्त कहा—

हुज़ूर सल्ल० मैं ने ग़लती की है। मुझ से यह क़सूर हो गया है।

क्यों ? हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा पूछा।

इसलिए कि मेरे घर वाले मक्का में हैं। मुझे डर हुआ कि कहीं बेरहम व ज़ालिम मक्का वाले उन का ख़ात्मा न कर दें। इसलिए मैं ने सोचा कि अगर मैं मुसलमानों की फ़ौज की उन्हें इत्तिला कर दूंगा, तो वे मेरे एहसानमंद होकर मेरे बाल-बच्चों पर हाथ न उठाएंगे, हज़रत हातिब ने बताया।

हुज़ूर सल्ल० ! मुजरिम ने जुर्म क़ुबूल कर लिया है । जुर्म की वजह लचर है। यह मुनाफ़िक़ है और इस की गरदन उड़ा दिये जाने का हुक्म दे दीजिए। हज़रत उमर ने ग़ुस्से में कहा।

यह कहते ही हज़रत उमर ने तलवार म्यान से निकाल ली और हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखने लगे।

नर्मी करो उमर ! हुज़ूर ने फ़रमाया। हातिब बद्री हैं, मुनाफ़िक़ नहीं हैं। बाल-बच्चों की मुहब्बत ने ग़लती करा दी है।

फिर हातिब को आप ने ख़िताब करते हुए कहा—

हातिब ! तुम्हारा क़सूर माफ़ किया जाता है, पर इक़रार करो कि आगे कभी ऐसा काम न करोगे।

हज़रत हातिब को माफ़ी मिलने की उम्मीद न थी। वह ज़िंदगी से मायूस हो गये थे, पर हुज़ूर सल्ल० ने माफ़ कर दिया, तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई। फ़रमाया—

ऐ पैकरे रहम व करम ! अब ज़िंदगी भर ऐसी ग़लती न होगी और मैं अपनी इस ग़लती पर ज़िंदगी भर शर्म के आंसू गिराता रहूंगा। भाई उमर ! तुम भी मुझे माफ़ कर दो।

यह कहते ही वह हज़रत उमर की तरफ़ बढ़े।

हज़रत उमर ने जल्दी से तलवार म्यान में की और बढ़ कर हातिब से बग़लगीर हो गये। बोले—

हातिब ! तुम को रसूले ख़ुदा ने माफ़ कर दिया है। अब मेरी क्या मजाल है कि मैं तुम से नाराज़ रह सकूं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने औरत का क़सूर भी माफ़ कर दिया।

यह वाक़िआ सन ०८ हि० के रमज़ान की पहली तारीख़ का है।

हुज़ूर सल्ल० ने उसी मज्मे में यह भी एलान कर दिया कि फ़ौज ११ रमज़ान को रवाना होगी। जो लोग अपनी तैयारी पूरी नहीं कर सके हैं, वे अब कर लें।

मुसलमानों ने बड़े ज़ोर-शोर से तैयारी शुरू कर दी।

११ रमज़ान को फ़ौज बड़ी शान से मदीने से रवाना हुई।

मीलों तक फैली हुई दस हज़ार की फ़ौज थी यह।

जब फ़ौज दूर निकल गयी और गर्द व ग़ुबार मिटा-मिटा सा नज़र आने लगा, तो मदीना के पहुंचाने आये हुए लोग वापस लौट गये।

मुसलमानों ने अस्र की नमाज़ पढ़ी और कामियाबी की दुआ मांगी।

फ़त्हे मक्का

क़बीला बनू बक्र और क़ुरैश के सरदारों ने अपनी वह्शियाना ताक़त के घमंड में मज़्लूम व बेकस बनू खुज़ाआ पर रात के वक़्त हमला कर के बड़ी बेरहमी से उन्हें कुचल डाला था। वे समझते थे कि मुसलमान सैकड़ों मील दूर हैं, वे इन की मदद को क्या आएंगे, लेकिन किसी ग़ैबी ताक़त ने उन के दिलों में यह डर पैदा कर दिया कि मुसलमान बनू खुज़ाआ का बदला लेने के लिए मक्का पर ज़रूर धावा बोलेंगे, शायद इसी लिए उन्होंने अबू सुफ़ियान को सुलहनामा नया करने के लिए मदीना भेजा था।

अबू सुफ़ियान के नाकाम वापस आने पर अब बनू बक्र और क़ुरैश के सरदार घबरा गये। उन्हें यक़ीन हो गया कि अब क़ुरैश के ज़वाल का वक़्त क़रीब आ गया है। उन्हों ने फ़ौरन इधर-उधर क़ासिद दौड़ाये।

हर खानदान और हर क़बीले से मदद की दरख़्वास्त की गयी।

कुछ ही दिनों में अरबों के दस्ते के दस्ते आने शुरू हो गये और लड़ने की तैयारियां शुरू हो गयीं।

अगरचे अभी तक मुसलमानों के हमले की इत्तिला मक्के में नहीं पहुंची थी, पर मक्के वालों पर मुसलमानों का इतना डर छाया हुआ था कि रात में वे सपने में डर-डर कर उठ बैठते थे।

क़ुरैश के सरदार ज़्यादातर मक्के से निकल कर दूर तक देख आते थे कि इस्लामी फ़ौज के आने का कोई निशान नज़र तो नहीं आता।

एक दिन जब दिन छिप गया, तो अबूसुफ़ियान और हकीम बिन हिज़ाम घोड़ों पर सवार मक्का की गलियों को तै करने लगे।

जब वे बैतुल हराम के क़रीब पहुंचे, तो उन्हों ने लोगों को खड़े हो कर कुछ फुसफुसाते हुए देखा।

ये दोनों उन के क़रीब पहुंचे।

तुम यह धीरे-धीरे क्या बातें कर रहे हो? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

सय्यिदी! मैं अभी मर्रुज़्ज़हरान से आ रहा हूं। वहां एक फ़ौज उतरी हुई है, बड़ी शानदार फ़ौज। शायद बनू खुज़ाआ अपने दोस्त क़बीलों को जमा कर के चढ़ा लाये हैं। मैं इन से फ़ौज का ज़िक्र कर रहा हूं, एक ने बताया।

बनू खुज़ाआ शानदार फ़ौज नहीं ला सकते, कहीं मुसलमान तो नहीं चढ़ आये, अबू सुफ़ियान ने शुबहा ज़ाहिर किया।

मुम्किन है, उस ने जवाब दिया।

अच्छा, तुम इक्रिमा बिन अबू जह्ल, सफ़वान बिन उमैया और सुहैल बिन अम्र को इसकी इत्तिला कर दो, अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं और हकीम खबर लेने जाते हैं।

अरब आगे बढ़ गया।

अबू सुफ़ियान और हकीम वहां से चले और मक्का से बाहर निकल कर मर्रुज़्ज़हरान को तरफ़ तेज़ी से रवाना हुए।

ये दोनों लगभग एक घंटे में उस जगह के क़रीब पहुंच गये।

उन्हों ने दूर से सैकड़ों जगह आग की रोशनी देखी आग की रोशनी में खेमे छोलदारियां और आदमी नज़र आए। उन्हें दूर-दूर तक आग ही आग जलती नज़र आयी।

हकीम! वाक़ई शानदार फ़ौज है, अबू सुफ़ियान ने हकीम से कहा, देखते हो, कितने लोग हैं, इस किनारे से उस किनारे तक फैले हुए।

हां, जहां तक नज़र जाती है, आग ही आग नज़र आती है, हकीम ने कहा, मैं तो यक़ीनन कह सकता हूं कि यह फ़ौज मुसलमानों की है। बनू खुज़ाआ इतनी बड़ी फ़ौज नहीं ला सकते। आओ, जल्दी चलो और लड़ने की तैयारी करो।

ठहरो, पहले खूब जांच-पड़ताल कर लो, अबू सुफ़ियान बोला, कि फ़ौज किस की है, कितनी है। हमारे जासूस कमबख्त! पता नहीं कहां मर गये?

शायद वे मुसलमानों से मिल गये, हकीम ने कहा, अबू सुफ़ियान! इतनी फ़ौज देख कर मुझ पर हौल छा गया है। यह फ़ौज बनू खुज़ाआ की हो या मुसलमानों की, मक्का वालों को कुचल कर रख देगी।

मेरा भी यही ख्याल है, अबू सुफ़ियान ने कहा।

हकीम कुछ कहना चाहता था कि आवाज़ आयी, अबू सुफ़ियान···

अबू सुफ़ियान और हकीम दोनों चौंक उठे।

दोनों ने इधर-उधर देखा। उन्हें दाहिने हाथ वाले रेत के टीले से एक खच्चर सवार निकल कर उन की तरफ़ बढ़ता नज़र आया।

दोनों हैरत और डर भरी नज़रों से उसे देखने लगे।

जब सवार क़रीब आ गया, तो दोनों ने पहचाना, वह हज़रत अब्बास थे।

अबू सुफ़ियान ने खुश हो कर कहा, अब्बास! तुम कहां? तुम तो

मदीना रवाना हो गये थे।

हज़रत अब्बास इन दोनों के क़रीब आ कर खड़े हो गये।

हां, मैं चला गया था, उन्हों ने फ़रमाया, मगर रास्ते ही से वापस आना पड़ा। अबू सुफ़ियान ! मैं आज तुम को तलाश करने के लिए निकला था, सुनो, खतरा क़रीब आ गया है और भागने की कोई शक्ल नहीं। दो ही बातें हैं, या तो तुम मुसलमान हो जाओ और इज़्ज़त की ज़िंदगी बसर करो या काफ़िर रहो और ग़ुलाम बन कर जियो।

अब्बास ! अबू सुफ़ियान ने कहा, पहले मुझे यह बताओ कि यह फ़ौज किस की है ?

मुसलमानों की, हज़रत अब्बास ने कहा।

अबू सुफ़ियान और हकीम दोनों के चेहरे यह सुन कर पीले पड़ गये।

अबू सुफ़ियान ! हज़रत अब्बास ने फिर कहा, वक़्त बहुत कम है, मैं छिप कर तुम को इत्तिला करने आया हूं। अब मुसलमान होने ही में खैर है।

मैं तैयार हूं, अबू सुफ़ियान ने कहा, मगर क्या रसूले खुदा मेरा क़सूर माफ़ कर देंगे ?

उन के ऊंचे अख़्लाक़ को देखते हुए मैं यक़ीन से कह सकता हूं कि वह ज़रूर माफ़ कर देंगे, हज़रत अब्बास ने बताया।

क्या तुम मुझे अपनी हिफ़ाज़त में लेना मंज़ूर करोगे ? अबू सुफ़ियान ने पूछा।

हां, मैं तुम को अपनी हिफ़ाज़त में लेने के लिए तैयार हूं, अब्बास बोले।

शुक्रिया ! अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया। हकीम तुम मक्का जाओ और क़ुरैश के सरदारों को इस फ़ौज के आने की खबर दे दो और कह दो कि खैरियत इसी में है कि तुम सब मुसलमान हो जाओ।

हकीम वापस चला गया।

अबू सुफ़ियान हज़रत अब्बास के साथ फ़ौज की तरफ़ बढ़े।

यह फ़ौज वाक़ई मुसलमानों की थी।

रात को जब फ़ौज आराम कर रही थी, हुज़ूर सल्ल० एक निगरानी दस्ता बना देते थे, जो रात भर गश्त लगाता रहता था। उस रात को निगरां दस्ते के ज़िम्मेदार हज़रत उमर थे।

जिस वक़्त हज़रत अब्बास और अबू सुफ़ियान फ़ौज के क़रीब पहुंचे,

तो इत्तिफ़ाक़ से यह दस्ता भी उधर से गुज़रा।

उस दस्ते को देख कर ये दोनों ठिठक गये।

जब दस्ता आगे निकल गया, तो आगे बढ़े।

अभी वह फ़ौज में दाख़िल भी नहीं हुए थे कि एक रौबदार आवाज़ आयी।

कौन ? अबू सुफ़ियान ? ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल का दुश्मन ?

दोनों ने घबरा कर पीछे देखा। हज़रत उमर लंबे-लंबे क़दम भरते हुए आ रहे थे।

जब वह क़रीब आये तो हज़रत अब्बास ने फ़रमाया, उमर ! इस वक़्त अबू सुफ़ियान मेरी हिफ़ाज़त में है।

मगर तुम ने इस्लाम के दुश्मन को हिफ़ाज़त में लिया क्यों ? हज़रत उमर ने सवाल किया।

यह मैं रसूले ख़ुदा से अर्ज़ करूंगा, हज़रत अब्बास ने फ़रमाया।

अच्छा, तो रसूले ख़ुदा के पास ले चलो, हज़रत उमर ने जवाब दिया।

फ़ौज में दाख़िल हो कर जब अबू सुफ़ियान ने चारों तरफ़ नज़र की, तो उसे मुसलमानों की टिड्डी दल फ़ौज नज़र आयी। हर फ़ौजी किसी न किसी काम में लगा हुआ था।

अबू सुफ़ियान पर मुसलमानों की सादगी और बे-ख़ौफ़ी का बड़ा असर हुआ।

वह हज़रत अब्बास के साथ हुज़ूर सल्ल० के ख़ेमे पर पहुंचा। हुज़ूर सल्ल० का ख़ेमा फ़ौज के बीच में था। आप के ख़ेमे पर इस्लामी झंडा लहरा रहा था, वहां सहाबा किराम के बीच में आप तशरीफ़फ़रमा थे,

हज़रत अब्बास और अबू सुफ़ियान सवारियों से उतरे और हुज़ूर सल्ल० के सामने पहुंचे।

अबू सुफ़ियान ने निहायत अदब से झुक कर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया।

अबू सुफ़ियान ! किस लिए आये हो ? हुज़ूर सल्ल० ने पूछा।

मुसलमान होने के लिए, अबू सुफ़ियान ने शर्म से नज़रें झुका लीं।

क्या मौत की डर से ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया।

नहीं, अपनी ख़ुशी से, अबू सुफ़ियान ने कहा।

इस बीच में हज़रत उमर रज़ि० भी आ गये। आप ने आते ही फ़रमाया—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह काफ़िर आज बे-शर्त क़ाबू में

आ गया है। हुक्म दीजिए, मैं इसके वजूद से दुनिया को पाक कर दूं।

यह मुसलमान होना चाहता है, हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया।

तब तो मजबूरी है, हजरत उमर ने धीरे से कहा।

हज़रत अब्बास और अबू सुफ़ियान दोनों बैठ गये और हज़रत उमर अपने गश्त में चले गये।

अबू सुफ़ियान! हुजूर सल्ल० ने कहा, मेरे दिल से यह बात नहीं निकलती कि तुम मौत से डर कर मुसलमान नहीं होते। मेरा ख्याल है कि तुम मुसलमानों की भारी फ़ौज देख कर डर गये हो और डर कर मुसलमान होते हो। सुनो! हम किसी को डरा कर या लालच देकर मुसलमान नहीं किया करते। इसलिए तुम्हें एक रात की मोहलत दी जाती है, कल बताना।

जैसी हुजूर सल्ल० की मर्जी! अबू सुफ़ियान ने कहा।

हुजूर सल्ल० ने हजरत अब्बास से कहा, चचा! तुम अबू सुफ़ियान को अपने खेमे में ले जाओ। यह अपनी क़ौम का सरदार है, इस की खातिर-बात करो, सुबह इस से पूछो कि यह मुसलमान होना चाहता है या नहीं। अगर यह मुसलमान होना चाहे, तो मेरे पास ले आना, वरना इसे फ़ौज से बाहर छोड़ आना।

हज़रत अब्बास अबू सुफ़ियान को साथ ले कर चले और अपने खेमे पर पहुंच कर उस के लिए बिस्तर बिछा दिया।

वह बिस्तर पर पड़ गया और रात भर इस्लाम अपनाने के बारे में सोचता रहा। आखिर में उस ने फ़ैसला कर ही लिया कि उसे मुसलमान हो ही जाना चाहिए।

अबू सुफ़ियान ने यह बात अपने दिल में तै कर ली और सुबह जब उठा तो अजान हो रही थी।

अजान की यह आवाज पूरी फ़ौज के तमाम खेमों में गूंज उठी।

अबू सुफ़ियान उठा, खेमे से बाहर आया।

मुसलमान जरूरतों से फ़ारिग़ हो कर वुज़ू कर रहे थे और लश्करगाह से बाहर खुले मैदान में जमा हो रहे थे।

थोड़ी देर में हुजूर सल्ल० उस मैदान में तशरीफ़ ले गये।

आप ने मुसलमानों को सफ़ें तर्तीब देने का हुक्म दिया।

मुसलमान सफ़ ब सफ़ खड़े हो गये। दूर तक सफ़ें फैल गयीं और हुजूर सल्ल० ने नमाज पढ़ाना शुरू किया।

अबू सुफ़ियान उन्हें देखता रहा। हैरत भरी नजरों से देखता रहा।

उस ने आज तक इतने मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते नहीं देखा था। उस का दिल ख़ुदापरस्ती के जज़्बे से भर गया।

जब नमाज़ ख़त्म हुई तो वह बढ़ कर हज़रत अब्बास रज़ि० के पास पहुंचा और बोला, अब्बास ! मुझे हुज़ूर सल्ल० के पास ले चलो।

हज़रत अब्बास उसे अपने साथ ले कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे। इससे पहले कि हुज़ूर सल्ल० कुछ मालूम करें, अबू सुफ़ियान ने कहा—

ऐ शहंशाहे अरब व अजम ! मुझे मुसलमान कर लीजिए।

अबू सुफ़ियान ! हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम ख़ुशी से मुसलमान होते हो ?

हां, हुज़ूर सल्ल० ! ख़ुशी से ! अबू सुफ़ियान ने कहा, मुझे अफ़सोस है कि मैंने क्यों इस्लाम और मुसलमानों की मुख़ालफ़त की और क्यों अब तक मुसलमान न हो गया।

हुज़ूर सल्ल० ने उसे कलिमा पढ़ा कर मुसलमान कर लिया।

सब ने ख़ुश हो कर अल्लाहु अक्बर का नारा लगा दिया। इस नारे से तमाम शहर गूंज उठा।

हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुश हो कर यह एलान भी फ़रमा दिया कि मक्के में दाख़िले के वक़्त जो क़ाफ़िर ख़ाना काबा में पनाह लेगा, उसे अमान दी जाएगी और जो आदमी अबू सुफ़ियान के घर में दरवाज़ा बन्द कर के बैठा रहेगा, उसे भी अमान दी जाएगी और जो आदमी बग़ैर हथियार लगाये रास्ते में मिलेगा, उसे भी अमान दी जाएगी।

अबू सुफ़ियान अपनी यह इज़्ज़त देख कर बहुत ख़ुश हुए।

चूंकि अबू सुफ़ियान मक्का में जा कर यह मुनादी करना चाहते थे कि जो आदमी उन के घर में पनाह लेगा, उसे अमान दी जाएगी, इसलिए वह घोड़े पर सवार हुए और चल दिये।

अभी वह वादी के सिरे पर ही पहुंचे थे कि इस्लामी फ़ौज की बाढ़ मक्के की तरफ़ रवाना हुई। वह एक बुलन्द टीले पर चढ़ कर इस्लामी फ़ौज का नज़ारा देखने लगे।

फ़ौज धीरे-धीरे मक्के की तरफ़ रवाना हुई।

सब से आगे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद इस्लामी झंडा हाथ में लिए पांच सौ आदमियों के दस्ते के साथ चल रहे थे।

उन के पीछे हज़रत उमर झंडा लिए पांच सौ मुजाहिदों के साथ कूच कर रहे थे।

उन के पीछे हज़रत अली, फिर हज़रत ज़ैद, अबू जुन्दल, अबू उबैदा और दूसरे लोग अपने-अपने दस्तों को कमान कर रहे थे।

हर सरदार के हाथ में झंडा था। खुले हुए मैदान में हर तरफ़ झंडे लहरा रहे थे।

अबू सुफ़ियान इस्लामी फ़ौज के कूच का यह शानदार मंज़र देख कर हैरान रह गये। उन्हों ने धीरे से कहा—

खुदा की क़सम! मैं ने ऐसी शानदार फ़ौज इस शान व दबदबे के साथ कूच करते कहीं नहीं देखा है। बेशक यह फ़ौज मक्के को जीतेगी, तमाम अरब को क़ब्ज़े में करेगी।

अबू सुफ़ियान टीले से नीचे उतरे और एक नज़दीकी पगडंडी पर तेज़ी से चल पड़े।

यह रास्ता क़रीब का था। वह बहुत जल्द मक्का में दाखिल हो गये।

मक्का वाले चिन्ता में पड़े हुए थे। उन्हों ने अबू सुफ़ियान को देखा कि वे दौड़ कर उन के पास आए, पूछा, क्या वाक़ई मुसलमान चढ़ आए? हकीम कहता है कि बहुत बड़ी फ़ौज आयी है।

सही है, अबू सुफ़ियान ने कहा, मुसलमान ऐसी भारी फ़ौज लाये हैं और उस में ऐसे-ऐसे बहादुर हैं कि वे एक ही हमले में मक्के को जीत लेंगे और लड़ने वालों को खीरे ककड़ी की तरह काट कर डाल देंगे। मेरे ख्याल में लड़ना फ़िज़ूल है। मुसलमानों की बात मान लेने में ही भलाई है।

वाहियात! लोगों ने मुंह बना कर कहा, क्या तुम मुसलमानों से मिल गये हो? क्या तुम को उन्हों ने रिश्वत दी है, इसलिए तुम मुसलमानों की हैबत हम पर बिठाना चाहते हो? हम ने तै कर लिया है कि ज़िंदगी की आखिरी सांस तक लड़ेंगे। हमारे जीतेजी मुसलमान मक्के में दाखिल न हो सकेंगे।

बस, तो तुम्हारी ज़िंदगी का खात्मा क़रीब है, अबू सुफ़ियान ने जल्दी से कहा।

मगर हम क़िस्मत आज़माई के लिए तैयार हो गये हैं, एक आदमी ने कहा। देखो, हमारी शानदार फ़ौज मुसलमानों को कुचल डालने के लिए इक्रमा, सफ़वान, और सुहैल वग़ैरह की क़ियादत में जा रही है।

अबू सुफ़ियान ने नज़र उठा कर देखा, तो उसे कुफ़्फ़ार का लश्कर कूच करता हुआ नज़र आया। उस ने कहा—

यह ग़लती है ज़बरदस्त ग़लती। इस से क़ौम तबाह हो जाएगी, खानदान मिट जाएंगे और क़ुरैश तबाह हो जाएंगे।

तुम फ़िक्र न करो, एक अरब ने कहा, अपनी आंखों से देखोगे कि मुसलमानों का क्या अंजाम होता है ?

अच्छा तुम नहीं मानते हो, सुनो, अबू सुफ़ियान ने कहा; मुसलमानों के सिपहसालारे आज़म शहंशाहे अरब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमान है कि जो आदमी ख़ाना काबा में पनाह लेगा, जो आदमी मेरे मकान में जा छिपेगा, जो आदमी अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर के बैठा रहेगा, जो आदमी बिना हथियार लगाये रास्ते में मिलेगा, उसे अमान दिया जाएगा।

इत्मीनान रखो, हमें अमान मांगने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, कुछ लोगों ने हंस कर कहा।

इस के बावजूद अबू सुफ़ियान ने तमाम मक्के में मुनादी करा दी।

कुफ़्फ़ार की फ़ौज मक्का का रास्ता तै कर के बाहर निकल रही थी। इक्रिमा, सफ़वान और सुहैल इस फ़ौज के सरदार थे जो बहादुरी के घमंड में झूमते हुए बढ़े चले आ रहे थे।

मक्का से निकल कर यह फ़ौज जादिया पहुंची और मुसलमानों से मुक़ाबला के लिए लाइनें बनाने लगी।

सामने से इस्लामी फ़ौज आती हुई नज़र आयी। सब से आगे हज़रत ख़ालिद हाथ में झंडा पूरी शान से लिए चले आ रहे थे।

हज़रत ख़ालिद बड़े बहादुर थे। आज तक बीसियों लड़ाइयां कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ चुके थे।

वह कुफ़्फ़ार की फ़ौज को सामने देख कर रुके और अपने दस्ते को सफ़बस्ता करने लगे।

उन्हों ने बहुत जल्द सफ़ों को तर्तीब दे कर तीन बार अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया, और साथ ही बड़ी बहादुरी और बड़े जोश व ख़रोश से हमला कर दिया। उन का दस्ता शेरों की तरह कुफ़्फ़ार पर टूट पड़ा।

कुफ़्फ़ार पहले ही से यह चाहते थे। उन्हों ने भी तलवारें खींच लीं और बड़े जोश व ग़ज़ब से लड़ने लगे।

लड़ाई शुरू हो गयी। तलवारें उठ-उठ कर सूरज की किरनों में चमकने लगीं और लड़ने वाले की आंखों में चकाचौंध पैदा करने लगीं।

हर दो फ़ौजों में लड़ाई शुरू होते ही ख़ामोश फ़िज़ा में शोर व गुल से एक हलचल सी पैदा होने लगी।

क़ौमी नारों की आवाज़ और जांबाज़ों की ललकार और पुकार से तमाम मैदान गूंज उठा।

कुफ़्फ़ार निहायत जोश व ख़रोश और बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे।

इक्रिमा, सफ़वान और सुहैल उन्हें जोश दिला रहे थे। उन के हमले के अंदाज़ कह रहे थे कि वे तमाम इस्लामी फ़ौज को हराने का इरादा कर चुके हैं।

मगर मुसलमान कुछ इस जांबाज़ी से लड़ रहे थे कि कुफ़्फ़ार का पूरा जोश बचकानी हरकत से ज़्यादा कुछ नहीं लग रहा था।

हर मुसलमान सर झुकाये, दाढ़ी दांतों में दबाये, बड़ी बे-जिगरी और पूरी ताक़त से लड़ रहा था।

हर मुजाहिद की तलवार ख़ूंख़ार बनी हुई थी। जिस काफ़िर के सर पर पड़ती, उस के सर के दो टुकड़े कर के हलक़ तक उतर जाती और फिर तो एक ख़ौफ़नाक चीख़ की आवाज़ ही सुनायी देती।

लड़ाई का मैदान बड़ा ख़ौफ़नाक हो गया था।

दूर तक सफ़ें फैल गयी थीं और चूंकि फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई शुरू हो गयी थी,इस लिए मुसलमान काफ़िरों में और काफ़िर मुसलमानों में घुस गये थे, इस सेकोई निज़ाम, कोई ज़ाबता क़ायम न रह सका था।

गोया हर आदमी अपने मुक़ाबले के आदमी से उलझा हुआ था।

लड़ाई बड़े ज़ोर व शोर से होने की वजह से इस्लामी फ़ौज के आगे बढ़ने में रुकावट पैदा हो गयी थी और रास्ता बन्द हो गया था।

अगरचे तमाम मुजाहिद लड़ने के लिए बेक़रार हो रहे थे और निहायत बेचैनी से हमले का हुक्म मिलने का इंतिज़ार कर रहे थे, लेकिन न इतना मैदान था, जिस में पूरी फ़ौज सफ़ बस्ता हो सकती और न इस की ज़रूरत थी, क्योंकि कुफ़्फ़ार की फ़ौज ज़्यादा से ज़्यादा छः हज़ार थी और इतनी फ़ौज के लिए पूरी इस्लामी फ़ौज का लड़ाई में शरीक होना बेकार था।

इस वजह से हज़रत ख़ालिद, हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ि० पांच-पांच सौ दस्तों के साथ मुक़ाबला कर रहे थे, गोया छः हज़ार कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सिर्फ़ डेढ़ हज़ार मुसलमान मुनासिब समझे गये और वही लड़ाई लड़ते रहे।

दोनों फ़रीक़ बड़ी बहादुरी और बड़े जोश व ख़रोश से लड़ रहे थे।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० इस बे-जिगरी से लड़ रहे थे कि उन को अपने तन-बदन तक का होश न था, गोया जो उन के सामने आ जाता, उस के टुकड़े कर डालते थे।

जिस पर वह झपट कर हमला करते, उसे क़त्ल किये बिना न छोड़ते थे। उन की ख़ून से सनी हुई तलवार कुफ़्फ़ार के टुकड़े-टुकड़े उड़ा रही थी

वह अपने घोड़े को एड़ लगा कर झपट-झपट कर हमले कर रहे थे।

वह जिस सफ़ पर हमलावर होते थे, उसे तोड़-फोड़ बिना न छोड़ते थे। कुफ़्फ़ार उन का जोश, उन की बहादुरी और लड़ने का उन का तरीक़ा देख-देख कर उन से डरे हुए और वहशतज़दा हो गये थे।

हज़रत उमर रज़ि० भी जांबाज़ी और बहादुरी का कमाल दिखाते हुए सरफ़रोशाना हमले कर रहे थे। लड़ाई ज़ोरों पर थी।

कुफ़्फ़ार मुसलमानों को पसपा करने की चिंता में थे और मुसलमान कुफ़्फ़ार को पसपा करने के लिए पूरी शान से लड़ रहे थे।

हज़रत उमर जिस तरफ़ निकल जाते थे, जिस पर हमलावर होते थे और जिस गिरोह पर तलवार ले कर टूटते थे, कुश्तों के पुश्ते लगाते चले जाते थे। वह क़त्ल करने में इतने लालची हो गये थे कि सारे लश्करे कुफ़्फ़ार को खुद ही क़त्ल कर डालना चाहते थे।

जिस मुसलमान को आप घेरे में देखते, दूर ही से झपट कर आ पहुंचते, कुफ़्फ़ार को क़त्ल करते और मुसलमान को दुश्मनों के घेरे से बचा लेते।

कुफ़्फ़ार पर उन का रौब छा गया। वे हज़रत उमर से ऐसे डरने लगे थे, जैसे वह मौत का परवाना हों।

उन्हें देख कर किनारा पकड़ लेते और उन की तलवार की धार देख कर कांप उठते।

इस के बावजूद वह एक-एक काफ़िर को ढूंढ़-ढूंढ़ कर उसे जहन्नम में भेज रहे थे। उन्हें भी अपने तन-बदन का बिल्कुल होश न था। बाएं हाथ में झंडा लिए और दाहिने हाथ से क़त्ल करते फिर रहे थे।

हज़रत अली रज़ि० भी उसी शान से अपने जौहर दिखा रहे थे।

कुफ़्फ़ार सब से ज़्यादा आप से डरते थे। आप की नंगी तलवार जिस आदमी के सर पर पड़ती थी, सर को ककड़ी की तरह काट कर दूसरी तरफ़ निकल जाती।

आप घोड़े को कुदा कर जिस गिरोह पर टूटते, जब तक उस गिरोह के तमाम आदमियों को क़त्ल न कर डालते, वापस न लौटते थे।

आप ने भी कुश्तों के पुश्ते लगा दिये थे। बड़े-बड़े सरकश और बहादुर काफ़िरों को क़त्ल कर के मौत की गहरी नींद सुला दिया था।

आप इक्रिमा और सफ़वान दोनों को क़त्ल करने की फ़िक्र में थे, इसलिए बड़े जोश और ताक़त से हमले कर के दोनों सरदारों की तरफ़ बढ़े चले जा रहे थे।

इस फ़ौज के साथ कुछ ऐसे लड़के भी आए थे, जिन की उम्रें सोलह-

सोलह, सत्तरह-सत्तरह साल की थीं। बहादुरी का जोश और शहादत का शौक़ उन्हें उन के घरों से निकाल लाया था।

उन्हों ने हुज़ूर सल्ल० से लड़ाई की इजाज़त ली। आप ने लड़ाई की इजाज़त दी।

वे घोड़े दौड़ाते आये और कुफ़्फ़ार पर इस तरह टूट पड़े, जिस तरह भेड़ों के गल्ले पर भेड़िये टूट पड़ते थे।

उन्हों ने कुफ़्फ़ार के बायें हिस्से पर हमला किया। इस बे-जिगरी और ऐसे जोश से हमला किया कि बावजूद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के उन्हें क़त्ल कर के पीछे धकेलने लगे।

इन लड़कों ने कई दस्ते बना लिये और हर दस्ता पूरी बहादुरी से लड़ने लगा।

वे बे-धड़क कुफ़्फ़ार की सफ़ों में घुस गये और अपनी छोटी-छोटी ख़ून में सनी तलवारों से बड़े-बड़े बहादुर काफ़िरों को क़त्ल कर के ज़मीन के फ़र्श पर गिराते चले गये।

इन होनहार, मगर कम उम्र वाले बच्चों की लड़ाई ने कुफ़्फ़ार को हैरत में डाल दिया। वे समझ ही न सके कि किस चीज़ ने उन्हें इस क़दर जोशीला कर दिया था और क्यों वे इतने बे-बाकाना अन्दाज से लड़ाई में लगे हुए हैं।

जब कुफ़्फ़ार की हैरत दूर हुई तो उन्हों ने तैश में आ कर लड़कों पर बड़े जोश से हमला कर दिया और उन को अपने घेरे में ले कर उन पर तलवारों की बारिश कर दी।

लड़कों ने अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया और निहायत जोश व ख़रोश से चारों तरफ़ से हमले शुरू कर दिये और बड़ी बे-ख़ौफ़ी और बड़ी बे-जिगरी से लड़ने लगे।

इन मासूम चेहरों से जोश व ग़ज़ब की निशानियां ज़ाहिर हो रही थीं वे बहादुरी से लड़ रहे थे। उन्होंने बहुत जल्द हमलावरों को या मार-मार कर ढेर कर दिया या उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया।

जब लड़कों ने अपने गिर्द से मुश्रिकों को हटा दिया और उन्हों ने मिल कर एक जोशीला हमला किया, तो उस वक़्त वे कुफ़्फ़ार की फ़ौज में घुस गए और वे उन के मुक़ाबले की ताब न ला कर भाग खड़े हुए थे।

दाहिने हाथ की फ़ौजों में हज़रत उमर और हज़रत अली थे।

इन दोनों ने बड़े ज़ोर से हमला किया।

कुफ़्फ़ार जैसे उन के हमलों का इंतिज़ार कर रहे थे और हमलावर

होते ही फ़ौरन भाग खड़े हुए।

अब बाएं हाथ का दस्ता रह गया। लड़कों ने बायें हिस्से पर जोशीला हमला कर दिया।

चूंकि मुश्रिकों का बीच और दाहिने हाथ का हिस्सा हार खा कर भाग खड़ा हुआ था, अब बायें हाथ का हिस्सा भी फ़रार हो गया। मुसलमानों ने कुछ दूर तक उन का पीछा किया।

जब दूर निकल गये तो मुसलमान वापस लौटे और अपनी तर्तीब क़ायम कर के मक्के की तरफ़ बढ़े।

कुफ़्फ़ार का भागा हुआ लश्कर कुछ मुसलमानों के डर और हार के शर्म की वजह से मक्का न गया, बल्कि जिस का जिस तरफ़ मुंह उठा, भाग निकला।

इस्लामी फ़ौज निहायत शान और दबदबे के साथ रवाना हो कर मक्का के सामने पहुंची और रुक गयी।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ख़ालिद से कह दिया कि जब तक ज़रूरत बहुत ज़्यादा न हो, मक्के के अन्दर ख़ूरेंज़ी न की जाए।

बात यह थी कि मक्का बैतुलहराम था। बैतुलहराम में लड़ाई करना मुनासिब न था।

हुज़ूर सल्ल० की यह दिली ख़्वाहिश थी कि ख़ाना काबा में जो ख़ुदा का घर कहलाता है, ख़ून न बहाया जाए, इसलिए हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने हज़रत ख़ालिद और तमाम मुसलमानों को बग़ैर इंतिहाई ज़रूरत के लड़ाई से मना कर दिया।

मुसलमानों का ख़्याल था कि मक्का के मुश्रिक मक्का के सामने ज़रूर लड़ेंगे, इसलिए इस्लामी फ़ौज मक्का के सामने आ कर रुक गयी थी, लेकिन देर तक इंतिज़ार करने पर भी कोई मुक़ाबले के लिए न आया, तो हज़रत ख़ालिद ने अपने दस्ते को बढ़ाया।

आप ने हुक्म दिया कि तमाम फ़ौज नंगी तलवारें हाथ में लिए मक्का मे दाख़िल हो, ताकि कुफ़्फ़ार पर मुसलमानों का रौब बैठ जाए।

चुनांचे हज़रत ख़ालिद के दस्ते ने हिदायत के मुताबिक़ तलवारें उठायीं और मक्के में दाख़िल हुए।

मक्का में दाख़िल होने पर उन्हों ने देखा कि तमाम रास्ते और गलियां सुनसान पड़ी हैं। इंसान तो इंसान, चिड़िया तक का पता न था।

वे शानदार तरीक़ेसे फ़ातिहाना अन्दाज़ में बढ़े और बैतुलहराम के सामने जा कर रुके और एक तरफ़ सफ़ बांध कर खड़े हो गये।

इस्लामी फ़ौज का हर दस्ता बैतुल्लाह शरीफ़ के सामने वाले बड़े मैदान में सफ़ें बांध कर खड़ा होता गया।

हुज़ूर सल्ल० की सवारी शाहाना अज़मत व जलाल के साथ तमाम रास्तों और गलियों से गुज़र कर खाना काबा के सामने पहुंची।

उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० का मुबारक चेहरा खुशी से लाल हो रहा था।

एक दिन वह था, जबकि कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप को और आप के जां-निसारों को इतना तंग किया था कि सब को हिजरत करनी पड़ी थी। आज वह दिन आया था कि हुज़ूर सल्ल० मय सहाबा किराम रज़ि० शाहाना अज़्मत व शौकत के साथ एक बे-मिसाल जीतने वाले (फ़ातेह) की हैसियत से मक्के में दाखिल हुए।

यह बात कुछ कम हैरत में डालने वाली और खुशी की न थी।

हुज़ूर सल्ल० ने सवारी पर चढ़े-चढ़े सात बार खाना काबा का तवाफ़ किया।

चूंकि बैतुलहराम में ताला लगा हुआ था, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने कुंजी बरदार को तलब किया और शहर में मुनादी करा दी कि तमाम मक्का वालों को अम्न दिया गया, किसी से छेड़खानी न की जाएगी।

लोग इस मुनादी की आवाज़ सुन कर घरों से निकले और इस्लामी फ़ौज के पास आ-आ कर शर्म और लाज से सर झुका-झुका कर खड़े हो गये।

ग़य्यान बिन तलहा, जो कुंजी बरदार था, उस ने आते ही हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और कुंजी हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश करते हुए कहा—

ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ऐ शाहे अरब ! ऐ फ़ातिहे मक्का ! मक्का की फ़त्ह मुबारक हो। यह बैतुलहराम की कुंजी हाज़िर है। सदियों से हमारा खानदान कुंजी बरदारी के अहम ओहदे पर चला आ रहा है। यह यक़ीन है कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० भी इस ओहदे पर रख कर मेरी इज़्ज़त बढ़ायेंगे।

बैतुलहराम खुदा का घर है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, खुदा के घर में ताले और कुंजी की ज़रूरत नहीं। यह जाहिलियत के दौर की एक बेहूदा रस्म है। मैं इस रस्म को तोड़ता हूं। खाना काबा हर आदमी के लिए हर वक़्त खुला रहेगा।

आप ने कुंजी ले कर ताला खोला और खाना काबा में दाखिल हुए।

सिर्फ़ कुछ सहाबा ही साथ गये, बाक़ी पूरी फ़ौज बाहर खड़ी रही।

आप ने अन्दर पहुंचते ही खुद बुतों को गिराना और तोड़ना शुरू कर

दिया।

हुज़ूर सल्ल० को इस काम में लगा देख तमाम सहाबा भी बुतशिकनी करने लगे।

सारे बुत एक-एक कर के तोड़ डाले गये और टूटे बुत बाहर फेंक दिये गये।

बुतपरस्त अपने ख़ुदाओं को, जिन की वे ख़ुद और उन के बाप-दादा पूजा करते चले आये थे, यह कैफ़ियत देख कर ग़मगीन हुए। उन का ख्याल था कि बुत नाराज़ हो कर बुतशिकनों को फ़ना कर देंगे और कोई कड़कदार आवाज़ इन सब को मार डालेगी, लेकिन जब देखा कि किसी बुतशिकन का कान तक न गर्म हुआ, तो शर्म के मारे पानी-पानी हो गये।

जब तमाम बुत तोड़ कर फेंक दिये गये और ख़ाना काबा को बुतों के वजूद से पाक कर दिया गया, तो हुज़ूर सल्ल० ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर आप बाहर आये।

उस वक़्त हज़ारों क़ुरैश और दूसरे क़बीलों के मुश्रिक इस्लामी फ़ौज के क़रीब आ कर खड़े हो गये थे। आप ने बाहर आते ही एक ज़ोरदार तक़रीर की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

ऐ क़ुरैश के लोगो! मैं ने तुम से कहा था, ख़ुदा एक है, बुत ख़ुदा नहीं हैं, लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ना, बुरा काम है। ज़िना, जुआ, शराबख़ोरी और दूसरी गन्दी रस्में छोड़ दो, लेकिन तुम ने·····लेकिन तुम ने मुझे तक्लीफ़ दी।

मेरे सहाबा किराम को इतनी तक्लीफ़ें पहुंचायीं कि मजबूर हो कर उन्हें हिजरत करना पड़ा।

तुम समझते थे कि ख़ुदा नहीं है, न वह किसी को मदद करता है, लेकिन देखो, ख़ुदा ने मेरी मदद की और उस ने अपना वायदा पूरा कर दिखाया।

आज सारे गिरोह और तमाम क़बीले हार कर भाग गये। सुनो और कान खोल कर सुनो।

आज मक्का से कुफ़्र का ख़ात्मा हो गया। कुफ़्फ़ार ज़लील और रुसवा हुए। सदियों के बाद ख़ाना काबा बुतों के वजूद से पाक हो गया और अब किसी क़ौम के लिए यह जायज़ नहीं है कि ख़ाना काबा में ख़ूंरेज़ी करे।

यह बैतुलहराम है और इस जगह का अदब व एहतराम ज़रूरी है, इतना एहतराम कि यहां का कोई हरा-भरा पेड़ भी न काटा जाए।

ऐ मक्का वालो ! आज एक ख़ुदा ने मुसलमानों के ज़रिये से जाहिलियत की तमाम रस्मों को पामाल कर दिया है।

सिर्फ़ काबे की मुजावरी और हाजियों को आबे ज़मज़म पिलाना बाक़ी रखा गया। यह क़ियामत तक बाक़ी रहेगा।

ऐ गिरोह क़ुरैश ! आज जाहिलियत के दिनों के घमंड और नसबी ग़ुरूर भी मिट गये हैं।

ख़ानदान या क़ौमी शराफ़त कोई चीज़ नहीं रही, बल्कि अब शरीफ़ वह जो सब से ज़्यादा परहेज़गार और ख़ुदा का इबादत गुज़ार हो।

याद रखो, तमाम आदमी हज़रत आदम से पैदा हुए हैं और आदम मिट्टी से बनाये गए हैं, इसलिए मिट्टी के पुतले को फ़ख़्र व ग़ुरूर मुनासिब नहीं।

अल्लाह ने क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया है—

ऐ लोगो ! हम ने तुम को एक औरत और एक मर्द से पैदा किया है और हम ने कुम्बे और क़बीले बनाये, ताकि एक दूसर को पहचानो।

अल्लाह के नज़दीक बुज़ुर्ग वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है। अल्लाह सब कुछ जानने वाला और ख़बरदार है।

हुज़ूर सल्ल० ने यह तक़रीर फ़रमा कर क़ुरैश वालों से ख़िताब फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया—

ऐ गिरोहे क़ुरैश ! तुम को मालूम है कि मैं तुम्हारे साथ क्या सुलूक करूंगा ?

यह सुनते ही तमाम अहले क़ुरैश के चेहरों से दहशत के निशान ज़ाहिर हो गये और ख़ौफ़ व हरास भरी निगाहों से हुज़ूर सल्ल० के मुबारक चेहरे की तरफ़ देखने लगे।

कुछ बड़े लोगों ने कहा—

हुज़ूर सल्ल० ! हम आप से ख़ैर व बरकत के उम्मीदवार हैं, क्योंकि आप अच्छी आदतों वाले हैं। आप क़ुरैश के सब से बुज़ुर्ग क़बीले बनू हाशिम से हैं और इस क़बीले के सबसे बुज़ुर्ग इंसान आप ही हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने मुस्करा कर फ़रमाया—

सुनो, आज मैं तुम से वही चाहता हूं, जो हज़रत यूसुफ़ ने अपने भाइयों से किया था। तुम पर कोई मलामत नहीं है। तुम सब के सब आज़ाद हो।

अहले क़ुरैश यह सुनकर बहुत ख़ुश हो गये। उन में से कुछ लोगों ने कहा, ऐ मुहम्मद ! तुम बेशक ख़ुदा के सच्चे रसूल हो। यह हलीमी, यह करीमी, ये मेहरबानियां पैग़म्बरों की ही निशानियां हैं।